गजेन्द्र ठाकुरक दस मैथिली कथासंग्रहक ८३७ कथाक सार

कथा-संसार

STORY-WORLD

PART I · ORIGINAL MAITHILI

PART II · ENGLISH TRANSLATION

गजेन्द्र ठाकुर

GAJENDRA THAKUR

VIDEHA · २०२६

कथा-संसार

STORY-WORLD

PART I · ORIGINAL MAITHILI

PART II · ENGLISH TRANSLATION

GAJENDRA THAKUR / गजेन्द्र ठाकुर

कथा-संसार

STORY-WORLD

दस मैथिली कथासंग्रहक ८३७ कथाक सार

PART I · ORIGINAL MAITHILI

PART II · ENGLISH TRANSLATION

कथा-शतत्रयी · कथा-त्रिधारा · पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

इजोत—जनम-जनमक कथा · स्मृतिक दोसर दिस · नव पाँखि

२०२६

प्रकाशन आ सर्वाधिकार

पोथीक नाम : कथा-संसार / STORY-WORLD

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

प्रस्तुत संस्करण : भाग I — मूल मैथिली कथासार (८३७); भाग II — ओहि ८३७ कथासारक अंग्रेजी अनुवाद

संकलन : १० कथासंग्रहक ८३७ कथाक सार

संयुक्त संकलन संस्करण : २०२६

संकलन आ प्रस्तुति © २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

मूल कृतिसभक पूर्व-प्रकाशन, सह-अधिकार आ अन्य संस्करणक अधिकार यथावत्।

PUBLICATION AND COPYRIGHT

Title: Katha-Sansar / STORY-WORLD · Author: Gajendra Thakur

Part I: Original Maithili story summaries (837). Part II: English translations of all 837 summaries.

Collected from ten Maithili story collections. Combined edition: 2026.

Compilation and presentation © 2026 Gajendra Thakur / Preeti Thakur. All rights reserved.

Rights in previous publications, jointly held rights and other editions of the original works remain unaffected.

विस्तृत अनुक्रमणिका

प्रथम भाग · मैथिली कथासार | दस खण्ड · ८३७ कथा

१ कथा-शतत्रयी · खण्ड–१ 58

१ खिड़कीक गमला 58
२ छुट्टीक आवेदन 58
३ देरि सँ आयल चिट्ठी 59
४ बरखा रुकलाक बाद 59
५ साँझक बस 59
६ खाली पलंग 60
७ पेंशनक दिन 60
८ दू अक्षर 60
९ चाबी सौंपबाक दिन 61
१० दू कप चाय 61
११ सड़कक ओहि पार 62
१२ नाम कटबाक सूचना 62
१३ कापीक अन्तिम पन्ना 62
१४ आमक सूखल डारि 63
१५ बेरोजगार दुपहरिया 63
१६ फोन नहि आयल 63
१७ छोट पुरस्कार 64
१८ नव पड़ोसी 64
१९ कुर्सीक चरमराहट 64
२० सबेरे सात बजे 65
२१ दू टिकट 65
२२ कंगनक डिब्बा 65

२३ एक रुपैया कम....66
२४ फोटो स्टूडियो....66
२५ लाल स्वेटर....66
२६ चाबी....67
२७ दस मिनट....67
२८ अन्तिम ग्राहक....67
२९ टूटल घड़ी....68
३० मिठाइक डिब्बा....68
३१ छोट विज्ञापन....68
३२ नील पेन....69
३३ काठक घोड़ा....69
३४ सिलाइ मशीन....69
३५ एक जोड़ी जूता....70
३६ खोआइल पर्स....70
३७ किरायाक कमरा....71
३८ बिना नामक पार्सल....71
३९ तस्वीरक पाछाँ....71
४० दू दीप....72
४१ पछिला पंगति....72
४२ चारि हाथ कपड़ा....72
४३ बाँटल छाँह....73
४४ एक दिनक छुट्टी....73
४५ जमानतक टीन....73
४६ आधा बोरा....74
४७ दोसर दर....74
४८ पाँच कुर्सी....74

४९ धोबीक निशान....75
५० मजदूरीक घंटा....75
५१ लाल मुहर....76
५२ साझा मेड़....76
५३ एक थारी भात....76
५४ किरायाक ठेला....77
५५ तीन गिलास पानी....77
५६ नामक पाँति....77
५७ फसलक नमूना....78
५८ छोट छज्जा....78
५९ साबुनक टिकिया....78
६० हिसाबसँ बाहर....79
६१ भित्तिक दोसर जनम....79
६२ दू रंगक सूत....79
६३ बगियाक बाट....80
६४ बिनु नाँवक चित्र....80
६५ सात मिनटक आवाज....80
६६ माटिक कटोरा....81
६७ छतक तारा....81
६८ पातर परदा....81
६९ छाँहक नाप....82
७० दूनू घरक दीप....82
७१ ओसाराक पाठ....83
७२ खिलौनाक तल्लामे नाँव....83
७३ टूटल सुर....83
७४ नदीक दोसर नाँव....84

७५ दू किसिमक बीआ....84
७६ पुस्तकक भीतरक पात....84
७७ छतक बाँटल समय....85
७८ अधूर नाटक....85
७९ चन्द्रमाक हिस्सा....85
८० नब आँगन....86
८१ एकतीसम खाट....86
८२ पाछाँक सीढ़ी....87
८३ रातिक पर्ची....87
८४ दू बटन....87
८५ बन्द खिड़कीक भाड़ा....88
८६ ईंटक निशान....88
८७ जेबक हिसाब....88
८८ साँझक कुर्सी....89
८९ पाँचम बाल्टी....89
९० रद्दी परिचय-पत्र....89
९१ आधा हस्ताक्षर....90
९२ बन्द पेटी....90
९३ किरायाक इजोत....90
९४ छोट ताला....91
९५ दू मिनटक देरी....91
९६ गील धानक तौल....92
९७ खाली थारी....92
९८ तीन रुपैयाक पर्ची....92
९९ पछिला बत्ती....93
१०० गिनतीक बाहर....93

२ कथा-शतत्रयी • खण्ड–२ 94

१ बाँधक ओहि पार 94
२ रिक्त पद 94
३ जमीनक आवाज 94
४ आधा समोसा 95
५ बरामदाक विश्वविद्यालय 95
६ प्रेमक उधार 95
७ एक कप मुफ्त चाय 96
८ बूढ़ा आ रेडियो 96
९ छाता साझा 96
१० पाँच रुपैयाक राजा 97
११ भातक सुगन्ध 97
१२ प्रेम-पत्रक व्याकरण 97
१३ पानवाला दार्शनिक 98
१४ किरायाक कुकुर 98
१५ खाली जेबक भोज 98
१६ टूटा छाता संघ 99
१७ भुलक्कड़ प्रेमी 99
१८ नि:शुल्क हजाम 99
१९ दादीक मोबाइल 100
२० एक प्लेट पकौड़ी 100
२१ चप्पलक जोड़ी 100
२२ घरक सबसँ धनी आदमी 101
२३ हँसीक बचत 101
२४ चाबी 101
२५ दस मिनट 102

२६ अन्तिम ग्राहक....102
२७ टूटल घड़ी....102
२८ मिठाइक डिब्बा....103
२९ छोट विज्ञापन....103
३० नील पेन....103
३१ काठक घोड़ा....104
३२ सिलाइ मशीन....104
३३ एक जोड़ी जूता....104
३४ हेरायल पर्स....105
३५ किरायाक कमरा....105
३६ बिना नामक पार्सल....105
३७ तस्वीरक पाछाँ....106
३८ दू दीप....106
३९ उधारक साड़ी....106
४० पाँच धुर जमीन....107
४१ मेजबान....107
४२ नव मोबाइल....107
४३ दहेजक पंखा....108
४४ बड़का दरवाजा....108
४५ सम्मान-पत्र....108
४६ एक प्लेट कम....109
४७ नगरक पता....109
४८ फोटोमे मुस्की....109
४९ कर्जक भोज....110
५० किरायाक कार....110
५१ सोना जेकाँ....110

५२ दस किलो चाउर......111
५३ महँग जूता......111
५४ खाली लिफाफा......111
५५ निमंत्रण......112
५६ छतरीवाला......112
५७ नम्बर प्लेट......112
५८ गामक मंच......113
५९ खिड़की लग बैसल लड़की......113
६० परदेसियाक बेटी......113
६१ अधूरा गीत......114
६२ नदीक पाती......114
६३ छोट नौकर......114
६४ माएक बक्सा......115
६५ पाठशालाक आँगन......115
६६ सिंदूरक डिबिया......115
६७ गाछक झूला......116
६८ माटिक बाँसुरी......116
६९ एकटा नाम......116
७० साँझक पाठ......117
७१ सीमाक मेला......117
७२ नीमक छाँह......117
७३ कागजक नाव......118
७४ चुप्पी......118
७५ पोस्टकार्ड......118
७६ झरोखाक फूल......119
७७ पहिल कमाइ......119

७८ लौटैत गीत.....119
७९ सीमाक कागज.....120
८० बाढ़ि शिविर.....120
८१ लाल कम्बल.....120
८२ नाम पूछू नहि.....121
८३ रजिस्टर.....121
८४ खुलल दरवाजा.....121
८५ तीन मिनट.....122
८६ कपड़ा.....122
८७ स्टेशनक कोठरी.....122
८८ मौन गवाही.....123
८९ दू शव.....123
९० कर्फ्यूक दूध.....123
९१ टूटा चप्पल.....124
९२ बन्द कमरा.....124
९३ दाग.....124
९४ रातिक ट्रक.....125
९५ पहचान-पर्ची.....125
९६ बच्चाक प्रश्न.....125
९७ गवाहीक मूल्य.....126
९८ नदी पार.....126
९९ कुर्थीक दालि.....126
१०० एक बीघाक सपना.....127

३ कथा-शतत्रयी · खण्ड–३.....128

१ खाली थैला.....128
२ रौदक एक टुकड़ा.....128

३ नाव बान्हल रहल....128

४ फ्रिजक आवाज....129

५ किरायाक महीना....129

६ नीला मग....129

७ चार्जर....130

८ कपड़ा सुखेबाक तार....130

९ बन्द नल....130

१० आधा किलो चाउर....131

११ बालकोनीक गमला....131

१२ गलत नम्बर....131

१३ पुरान परदा....132

१४ सिलिन्डर खत्म....132

१५ दू प्लेट....132

१६ पड़ोसीक टीवी....133

१७ बन्द लिफ्ट....133

१८ किराना पर्ची....133

१९ पुरान गद्दा....134

२० दरबज्जाक घंटी....134

२१ बचल तरकारी....134

२२ बन्द खिड़की....135

२३ रविक दिनक कपड़ा....135

२४ सरिसो कटबाक बाद....135

२५ चरबाहाक पगडंडी....136

२६ पोखरिक रखबार....136

२७ बथानक साँझ....136

२८ आमक बगीचा....137

२९ कमलाक धार....137
३० धानक गन्ध....137
३१ गाछक छाँह....138
३२ डोमक बाँसुरी....138
३३ झोपड़ीक नक्शा....138
३४ गोरूक घंटी....139
३५ कच्ची सड़क....139
३६ पथारक रक्षक....139
३७ धान रोपनीक गीत....140
३८ बरगदक नीचाँ रजिस्टर....140
३९ बाढ़िक निशान....140
४० पहिल ट्रैक्टर....141
४१ सिमानक खूँटा....141
४२ खाली बथान....141
४३ आखिरी कटनी....142
४४ प्रमाण-पत्रक गाम....142
४५ स्वच्छता दिवस....142
४६ पढ़ल-लिखल सभा....143
४७ आदर्श चौक....143
४८ विकासक फीता....143
४९ प्रतिष्ठित परिवार....144
५० अफवाहक दिन....144
५१ टॉपरक फोटो....144
५२ सभसँ स्वच्छ घर....145
५३ सम्मान समारोह....145
५४ नकल-विरोधी भाषण....145

५५ पुस्तकालय उद्घाटन....146
५६ जातिक कुर्सी....146
५७ डिजिटल गाम....146
५८ गरीबक प्रमाण....147
५९ मौन समिति....147
६० आदर्शविवाह....147
६१ सभक विचार....148
६२ पुरस्कारक पात्र....148
६३ नया नियम....148
६४ भीतरक आलमारी....149
६५ छत परक दू घंटा....149
६६ बहूक कमरा....149
६७ मायकेक चाबी....150
६८ सिलाइ खर्च....150
६९ परीक्षा फार्म....150
७० रसोइक दरबज्जा....151
७१ लाल बक्सा....151
७२ बहिनक फोन....151
७३ किरायेदार कन्या....152
७४ उपहारक साड़ी....152
७५ भोजनक मेज....152
७६ चुप्पीवाली मामी....153
७७ पार्लरक शीशा....153
७८ नौकरीक पहिल महीना....153
७९ पुरान पेटीकोट....154
८० अतिथि कमरा....154

८१ गुप्त बचत......154
८२ फोटोमे नहि रहल स्त्री......155
८३ नामक प्लेट......155
८४ तीसरी सीढ़ी......155
८५ उल्टा कैलेंडर......156
८६ बन्द कमराक हवा......156
८७ बिना मालिकक छाया......156
८८ स्टेशन जे नक्शामे नहि......157
८९ आधा बजल घड़ी......157
९० दोसर दरबज्जा......157
९१ नाम बदलैत गली......158
९२ एक अतिरिक्त खिड़की......158
९३ आवाजक कमरा......158
९४ बस संख्या शून्य......159
९५ कागजक वर्षा......159
९६ नक्शाक पोखरि......159
९७ उलटल प्रतिबिम्ब......160
९८ गायब बुधदिन......160
९९ पाँचम कोना......160
१०० अपरिचित अपन घर......161

४ कथा-त्रिधारा · खण्ड–१......162

- कथा ००१–०२०

००१ आवाज नहि देनिहार घंटी......162
००२ उल्टा रास्ता......162
००३ रातिक दोसर आकाश......163
००४ प्याज काटैत स्त्री......163

००५ बसक शीशा 163
००६ पानि भरबाक बेर 164
००७ खाली कॉपी 164
००८ टूटल कंघी 165
००९ तरकारी चुनैत हाथ 165
०१० जाड़क धूप 165
०११ दूध उफनल 166
०१२ लिफाफा खोलबाक पहिने 166
०१३ शीशामे सफेद केश 167
०१४ खाली कटोरी 167
०१५ खिड़की पर चिड़ै 167
०१६ एक शब्द गलत 168
०१७ नव चप्पल 168
०१८ दुपहरियाक मौन 168
०१९ टूटैत नख 169
०२० फल काटबाक गन्ध 169

- कथा ०२१–०४०

०२१ पंखाक नीचे 170
०२२ अधलिखल नाम 170
०२३ दीप मिझेबाक पहिने 170
०२४ लाल धूर 171
०२५ तीन मिनटक जुलूस 171
०२६ फाटल ढोल 172
०२७ रातिक ट्रक 172
०२८ राख पर फूल 172
०२९ लोहारक हथौड़ा 173

०३० लालटेनक शीशा....173
०३१ पुलक नीचे....173
०३२ कागज आ लाठी....174
०३३ कटहरक गन्ध....174
०३४ पाँच गोलीक अफवाह....175
०३५ फाटल झण्डा....175
०३६ बूटक निशान....175
०३७ रातिक नाव....176
०३८ काँचक टुकड़ा....176
०३९ राख भेल खेत....176
०४० बन्दूक बिना पहरा....177

- कथा ०४१–०६०

०४१ धुआँक बीच गीत....177
०४२ एक मिनटक बिजली....178
०४३ रक्त नहि, सिंदूर....178
०४४ हमर महान व्यापार....178
०४५ तीन बेरक बराती....179
०४६ उधारक दार्शनिक....179
०४७ पंचायतक विशेषज्ञ....179
०४८ हमर अमीर मामा....180
०४९ हरायल बकरीक बयान....180
०५० मोबाइल गुरु....181
०५१ विवाहक बजट....181
०५२ महान कविक पड़ोसी....181
०५३ किरायाक विद्वान....182
०५४ गामक मौसम विज्ञानी....182

०५५ मुफ्त सलाह....183
०५६ चुनावक चाय....183
०५७ माइकवाला काका....183
०५८ एक किलो प्रतिष्ठा....184
०५९ नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक....184
०६० चन्दा विशेषज्ञ....185

• कथा ०६१–०८०

०६१ मुफ्तक फोटो....185
०६२ समय पर नहि, बात पर....186
०६३ हम दोषी कतय छी?....186
०६४ धर्मपरायण चोर....186
०६५ सदाचार समिति....187
०६६ पवित्र पार्किंग....187
०६७ दानक फोटो....188
०६८ महान त्यागी....188
०६९ सत्यवादी व्यापारी....189
०७० पुण्यक रसीद....189
०७१ सभ्य परिवार....189
०७२ उपदेशक यात्री....190
०७३ शुद्ध भोजन....190
०७४ क्षमाक समारोह....191
०७५ दयालु मालिक....191
०७६ सत्यक पोस्टर....192
०७७ भलमानुसक गवाही....192
०७८ दान पेटीक सिक्का....192
०७९ सज्जन चालक....193

०८० चरित्र प्रमाण-पत्र......193

• कथा ०८१–१००

०८१ उपवासक भोज......194

०८२ नम्रताक पुरस्कार......194

०८३ अन्तिम पाँति......195

०८४ नदीक कागज......195

०८५ ईंटक नम्बर......195

०८६ जंगलक रास्ता......196

०८७ मजूरीक हस्ताक्षर......196

०८८ कटान क्षेत्र......197

०८९ राशनक दिन......197

०९० स्कूलक दूरी......198

०९१ पत्थर तोड़ैत गीत......198

०९२ वनक अधिकार......198

०९३ पुलक मुआवजा......199

०९४ मजदूरक फोटो......199

०९५ लाल कार्ड......200

०९६ बालू घाट......200

०९७ अस्थायी बस्ती......201

०९८ जंगलक स्कूल......201

०९९ हस्ताक्षरक शक्ति......201

१०० मजदूरीक आधा दिन......202

५ कथा-त्रिधारा · खण्ड–२......203

१ चारि मुट्ठी बीआ......203

२ हलक बाट......203

३ आधा बाँस........203
४ गोठक पहिल दूध........204
५ मचानक राति........204
६ भूसाक भाग........204
७ पोखरिक दू घाट........204
८ उधारक खाता........205
९ खेतक छोरक आम........205
१० रोपनीक दू दिन........205
११ बाछीक देखभाल........206
१२ तेलीघरक खली........206
१३ चरवाहीक सीटी........206
१४ कुम्हारक आगि........206
१५ किरायाक पम्प........207
१६ दू पसेरी मड़ुआ........207
१७ बाँधक घास........207
१८ सूखल कुइयाँक पाल........207
१९ कटनीक पछिला दिन........208
२० मेड़क नाम........208
२१ सूखल नहरक लेखनी........208
२२ कुलुप पर तीन खरोंच........209
२३ डाकघरक तेरहम थैला........209
२४ पनचक्कीक उलटल पाँख........209
२५ उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु........209
२६ कचहरीक गुम जूता-चिन्ह........210
२७ आधा घण्टा बजैत घड़ी........210
२८ निर्जन घाटक तानल रस्सी........210

२९ नीला काँचक शीशी....211

३० खोइछामे भेटल चाबी....211

३१ सिझल धानक गन्ध....211

३२ छाजन पर तीन चोट....212

३३ काठक पेटीक ताप....212

३४ माटिक देबालक भीतरक खटखट....212

३५ घुरैत मोहर....213

३६ ओसक सीधा पट्टा....213

३७ टूटल दर्पणक पछिला भाग....213

३८ ओसारा पर लाल सूत....214

३९ खसैत अक्षर....214

४० अन्तिम लालटेनक कालिख....214

४१ नाम-पट्टीक सात मिलीमीटर....215

४२ दू हस्ताक्षरक बीचक खाली जगह....215

४३ प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य....215

४४ छुट्टीक आवेदनक छुट्टी....215

४५ खाली दराजक सूची....216

४६ पीयर फीता वली नस्ती....216

४७ पदनामक आधा अक्षर....216

४८ प्रमाण-पत्रक जन्म-दिन....217

४९ घंटीक अधिकार....217

५० चारि मोहरक पाँचम जगह....217

५१ सेवा-झरोखा नम्बर नौ....217

५२ फाटकक पासक टेबुल....218

५३ लाल पेंसिलक पदोन्नति....218

५४ छायाप्रतिमे हरायल गुलाबी कात....218

५५ दिनांकक खाली खाँचा......219

५६ पाँच मिनट देरक प्रमाण......219

५७ नस्तीक कपड़ाक रंग......219

५८ एक कार्यालय, दू नाम......219

५९ सीढ़ीक दोसर पायदान......220

६० अन्तिम पाँतिक अधिकारी......220

६१ तीन ठाम उपस्थित......220

६२ बन्द कोठरीक खुलल शाखा......221

६३ उच्चारणक दोसर नाम......221

६४ प्रपत्र जे अपन उत्तर पहिने माँगैत अछि......221

६५ आधा दिनक कर्मचारी......221

६६ मोहरबन्द कोठरीक काज......222

६७ अनुवादित गाम......222

६८ छुट्टीक दिनक उपस्थितिक आदेश......222

६९ शिकायत जे पूछलासँ जन्मल......223

७० स्कैनरक कारी छाँह......223

७१ बाहर पठाओल भीतरक पत्र......223

७२ नियुक्तिक पहिल दिन......223

७३ एके नामक दू वेतन......224

७४ उपस्थितिक प्रमाण लेल अनुपस्थित......224

७५ सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ......224

७६ प्रेषक-विहीन लिफाफा......225

७७ छायाहस्ताक्षर......225

७८ क्रमांक ०००......225

७९ जीवितक गवाह......225

८० बन्द विभागक अन्तिम काज......226

८१ दू टिकट......226
८२ कंगनक डिब्बा......226
८३ लाल स्वेटर......227
८४ पोखरिक ओहि पार......227
८५ तीनटा खाली कुर्सी......227
८६ बान्ह पर साँझ......227
८७ अन्तिम लोकल......228
८८ आधा गिलास पानि......228
८९ ओसाराक बल्ब......228
९० दू कट्ठा बालू......229
९१ बन्द रेडियो......229
९२ छत पर राखल जूता......229
९३ एक कप चाय कम......229
९४ बाँसक पुल......230
९५ अधकटल आम......230
९६ माछक जाल......230
९७ भोरक धुआँ......230
९८ बिना घंटीक साइकल......231
९९ पाँच मिनट देरी......231
१०० उजड़ल मेड़......231

६ कथा-त्रिधारा · खण्ड–३......232

१ विद्यालयक जूता......232
२ धानक बोरा......232
३ पंचायतक नल......232
४ गोरूक दाम......233
५ मजदूरी......233

६ आधारक औंठा........233
७ मकईक खेत........234
८ बाढ़िक ऋण........234
९ छोट मास्टर........234
१० चूल्हिक धुँआ........235
११ एक कट्ठा पोखरि........235
१२ बीजक थैली........235
१३ दू बकरी........236
१४ श्रम कार्ड........236
१५ माटिक घर........236
१६ कर्जक कागज........237
१७ सामुदायिक धान........237
१८ पहिल फसल........237
१९ मधुबनीक बन्द कोठली........238
२० घंटीक आवाज........238
२१ पोखरिक आँखि........238
२२ दीवार भीतर........239
२३ कालिख........239
२४ लालटेन........239
२५ सात सीढ़ी........240
२६ बन्द घड़ीघर........240
२७ सफेद पाँख........240
२८ अन्तिम चित्र........241
२९ तरहड़िक पानि........241
३० रातिक पाँति........241
३१ साँकल........242

३२ धड़कन......242

३३ काला दर्पण......242

३४ छत पर पएर......243

३५ चिट्ठीक गन्ध......243

३६ नीलकंठ......243

३७ दोसरा कोठली......244

३८ माटिक भीतर......244

३९ मुद्रांक......244

४० नस्तीक आत्मकथा......245

४१ कुर्सी नम्बर सत्रह......245

४२ नामक वर्तनी......245

४३ महान निरीक्षण......246

४४ पंखाक प्रस्ताव......246

४५ दफ्तरक देवता......246

४६ हस्ताक्षर......247

४७ विशेष टोपी......247

४८ चाय समिति......247

४९ बिलायल घंटी......248

५० प्रमाणित प्रतिलिपि......248

५१ मेजक ऊँचाई......248

५२ लाल फीता......249

५३ बिसरल आदेश......249

५४ सरकारी छाता......249

५५ उपस्थिति......250

५६ छायाचित्रयुक्त पहचान......250

५७ स्वागत द्वार......250

५८ वार्षिक प्रतिवेदन....251

५९ अनुमति....251

६० प्रतीक्षा कक्ष....251

६१ नम्बर....252

६२ खुलल मुकदमा....252

६३ सीमा....252

६४ सत्यापन....253

६५ बन्द लिफ्ट....253

६६ खाली मुहर....253

६७ रातिक आदेश....254

६८ अदृश्य कर....254

६९ बेठीक जन्मतिथि....254

७० एक केवाड़ी कम....255

७१ घुरती....255

७२ अनुवाद....255

७३ खाली कुर्सीक आदेश....256

७४ प्रवेश-पर्ची....256

७५ बन्द खाता....256

७६ अन्तिम मंजूरी....257

७७ निषिद्ध प्रश्न....257

७८ केवाड़ीक पहरा....257

७९ लहेरियासरायक साँझ....258

८० पुल पर रोशनी....258

८१ बन्द पुस्तकालय....258

८२ मेला समाप्त....259

८३ सिनेमा सँ बाहर....259

८४ ओसाराक बल्ब....259

८५ चाह दोकानक शीशा....260

८६ रेलवे घोषणा....260

८७ धूपक पट्टी....260

८८ संगीतक टुकड़ा....261

८९ बन्द दोकान....261

९० छज्जा....261

९१ साइकिल....262

९२ पानिक गिलास....262

९३ जुलूस....262

९४ छोट अएना....263

९५ छत पर कबूतर....263

९६ घड़ीक काँटा....263

९७ अन्तिम पन्ना....264

९८ सबेरे पहिल बस....264

९९ अनन्त पञ्जी....264

१०० मिथिलाक पुस्तकालय....265

७ पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल....266

• लघुकथा खण्ड

१ सिद्ध महावीर....266

२ नवी मुम्बै....266

३ नई दिल्ली....267

४ तस्कर....267

५ संघर्ष....268

६ लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी....268

७ डोमा, बुधन आ....268

८ आत्महत्या....269

९ गंधर्व लेटरबम....269

- दीर्घकथा खण्ड

१० मधुबनी मोड्यूल....270

११ शब्दशास्त्रम्....270

१२ महिसबार ब्राह्मणक गाम....271

- बीहनि-कथा खण्ड

१३ रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर....271

१४ नकली नोट....271

१५ पानिबला रोड....272

१६ जी सर....272

१७ दू टा कैदी....272

१८ अपन-अपन भाग्य....272

१९ प्रवचन....273

२० गछल गप....273

२१ भूरा बाल....273

२२ आत्म-गौरव....273

२३ छाह....274

२४ वाटर कूलर....274

२५ तोँ अखन एतेक पैघ नै भेल छैँ बाउ....274

२६ एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा....274

२७ स्निफर डॉग आख्यान....275

२८ यातायात निअम — भाग ०....275

२९ यातायात निअम — भाग १....275

३० यातायात निअम — भाग २....275

३१ यातायात निअम — भाग ३....276

३२ जातिवादी मराठी.....276

३३ थेथर मनुक्ख.....276

३४ बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा.....276

३५ स्त्री-बेटी.....277

३६ बिआह आ गोरलगाइ.....277

३७ प्रतिभा.....277

३८ जाति-पाति.....277

३९ अनुकम्पाक नोकरी.....278

४० पैरवी-पैगाम आ हाकिम.....278

४१ नूतन मीडिआ.....278

४२ मिथिलाक उद्योग.....278

४३ बाढ़ि, भूख आ प्रवास — भूख (१).....279

४४ बाढ़ि, भूख आ प्रवास — भूख (२).....279

४५ बाढ़ि, भूख आ प्रवास — बाढ़ि.....279

४६ बाढ़ि, भूख आ प्रवास — प्रवासमे वज्रपात.....279

४७ नव-सामन्त.....280

४८ चारिम स्थान.....280

४९ भोट.....280

५० मसुआइ.....280

५१ साइबेरिया कैम्प.....281

५२ मीत भाइ श्रृंखला — १. चन्सगर.....281

५३ मीत भाइ श्रृंखला — २. गढ़नि.....281

५४ मीत भाइ श्रृंखला — ३. चयन.....281

५५ मीत भाइ श्रृंखला — ४. मीत भाइ आ चोर बजार.....282

५६ मीत भाइ श्रृंखला — ५. मास्टरी.....282

५७ मीत भाइ श्रृंखला — ६. पसीझक काँट.....282

५८ मीत भाइ श्रृंखला — ७. टेलीफोन डायरी......282
५९ मीत भाइ श्रृंखला — ८. गोबर काढ़ब......283
६० मीत भाइ श्रृंखला — ९. अधिक फलम् डूबाडूबी......283
६१ मीत भाइ श्रृंखला — १०. मीत भाइक बेटा......283
६२ मीत भाइ श्रृंखला — ११. भा. प्र.से......283
६३ मीत भाइ श्रृंखला — १२. महादेवक दूध पीबाक सोर......284
६४ बिहारी......284
६५ फिल्डिंग......284
६६ स्किल......284
६७ डिसीप्लीन......285
६८ साइंस — १. साइंस शिक्षा......285
६९ साइंस — २. रसायनशास्त्र......285
७० साइंस — ३. भौतिकी......285

८ इजोत—जनम-जनमक कथा......286

- इजोत — मूल त्रि-आन्दोलन

१ पाँजिक चोर......286
२ फेर सँ देखल घर......286
३ मुक्त राज्यमे......287
४ जल समाधि......287
५ जातिक बाहर......287
६ ओछाइनक हिसाब......288
७ दोसर बियाह......288
८ गजलक बहर......289
९ पाहुनक कोठली......289
१० कुहेस......289
११ न्यायक सीमा......290

१२ आखर....290

• गोतगोत

१३ पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि)....291

१४ जुड़वा....291

१५ गोतिया....291

१६ छिपल शाखा....292

१७ दत्तक....292

१८ जाति-पार....293

१९ डायरी....293

२० नकली वंश....294

२१ परदेशी जड़ि....294

२२ पुरोहिताई....294

२३ रागिनी-वंश....295

२४ मातृवंश....295

• तत्त्व-कथा

२५ प्रमाण....296

२६ माया....296

२७ रस....296

२८ नियति....297

२९ शब्द-ब्रह्म....297

३० अनित्य....298

३१ आत्म-अनात्म....298

३२ कार्य-कारण....298

३३ मौन....299

३४ स्वप्न....299

३५ संशय....300

३६ मोक्ष....300

• पिप्रा

३७ छठ....300

३८ राग....301

३९ अदालत....301

४० डाकिया....302

४१ परदेस....302

४२ डूम....302

४३ भूत....303

४४ मास्टर साहेब....303

४५ चित्रकार....304

४६ घुरनाइ....304

४७ नाह....304

४८ छठ फेर सँ....305

• समापनिका

४९ विदेह....305

९ स्मृतिक दोसर दिस....307

१ दू जनकपुर....307

२ भूलल शास्त्रार्थ....307

३ समयक पोखरि....307

४ अक्षरक नगर....308

५ अन्तिम टीका....308

६ नकाशा जे बढ़ैत रहल....308

७ एक लेखक, दू जन्म....309

८ स्मृतिक शब्दकोश....309

९ शून्य अध्याय......309

१० प्रतिलिपिकार......310

११ तीसर इतिहास......310

१२ अनुवादक......310

१३ नामहीन देवता......311

१४ समयक पगडंडी......311

१५ दर्पणक वंश......311

१६ अदृश्य पुस्तक......312

१७ सातम दिशा......312

१८ अन्तिम पाठक......312

१९ पोखरिक घटना......313

२० दरबारक राति......313

२१ चोरीक मूर्ति......313

२२ सीमाक गोली......314

२३ विवाहक विवाद......314

२४ बाढ़िक नाव......314

२५ चित्रकारक मृत्यु......315

२६ पुरान मुकदमा......315

२७ मेला राति......315

२८ वीरक कथा......316

२९ अन्तिम भोजन......316

३० कवि आ राजा......317

३१ दुर्घटनाक मोड़......317

३२ झूठक पुरस्कार......317

३३ गामक आगि......318

३४ नदीक पार......318

३५ राजमिस्त्रीक गिरावट....318

३६ पुरान तस्वीर....319

३७ रातिक आवाज....319

३८ ककर दोष....319

३९ मखानक गन्ध....320

४० पीयर फूल....320

४१ दुपहरियाक मेज....320

४२ काजर....321

४३ नव परदा....321

४४ सुगन्ध....321

४५ चाँदीक कटोरी....322

४६ बाल सुकबैत....322

४७ सफेद फूल....322

४८ छोट पार्टी....323

४९ रेशमी दुपट्टा....323

५० खिड़कीक वर्षा....323

५१ नींबूक स्वाद....324

५२ गुलाबी कप....324

५३ धूपक गन्ध....324

५४ कानक बाली....325

५५ लाल नेलपॉलिश....325

५६ झीना परदा....325

५७ इलायची....326

५८ फूलदान....326

५९ सूखल कमला....326

६० बालुकाक घर....327

६१ बाँसक आवाज....327
६२ धूलिक पगडंडी....327
६३ खाली पोखरि....328
६४ कटान....328
६५ माटिक गन्ध....328
६६ बिना छत घर....329
६७ नदी बोलल....329
६८ धसान....329
६९ कासक मैदान....330
७० तिरहुतक धूलि....330
७१ तीन कब्र....330
७२ बाढ़िक निशान....331
७३ छोड़ल इनार....331
७४ मकईक सूखल पात....332
७५ अन्तिम नाव....332
७६ गाछक ठूँठ....332
७७ धुँआ....333
७८ मौन गाम....333
७९ तीन बरखाक बीच....333
८० घुरबाक कारण....334
८१ बहिनसभ....334
८२ पुरान डॉक्टर....335
८३ घर नम्बर पाँच....335
८४ फोटो एल्बम....335
८५ एक निर्णय....336
८६ मित्रक बेटी....336

८७ बस-ठाम......336
८८ विवाहक बाद......337
८९ माएक मित्र......337
९० पत्र जे भेजल नहि गेल......338
९१ दू शहर......338
९२ बीस बरख बाद......338
९३ मौसीक घर......339
९४ लाल पेटी......339
९५ संगीत शिक्षक......339
९६ अलग बाट......340
९७ खोआइल वर्ष......340
९८ अन्तिम यात्रा......341

१० नव पाँखि......342

१ काल-स्थान विस्थापन......342
२ बैसाखीपर जिनगी......343
३ हम नै जाएब विदेश......343
४ प्रवास......344
५ हराहरी......345
६ पोखरिक तरे भोरुक तारा......345
७ गामक पुरान पुस्तकालय......346
८ खस्सी घंटीक रहस्य......347
९ बाढ़िमे बचल पोथी......347
१० नेनाक विज्ञान-मेला......348
११ आमक गाछक निर्णय......349
१२ मोबाइल बिनु एक दिन......350
१३ चिरैयाँ गिननिहार बालक......350

१४ माटिक रोबोट......351
१५ जंगलक बाट, घरक गप......352
१६ गाछ पर बनल पाठशाला......352
१७ सूरुजघड़ी बनौने बालिका......353
१८ नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली......354
१९ चाँदनी रातिक मानचित्र......355
२० हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी......355

PART II · ENGLISH TRANSLATION

KATHA-SHATATRAYI · VOLUME I — STORIES 1–100

1. The Flowerpot at the Window 357
2. The Application for Leave 357
3. The Letter That Arrived Late 357
4. After the Rain Stopped 358
5. The Evening Bus 358
6. The Empty Bed 358
7. Pension Day 359
8. Two Letters 359
9. The Day of Handing Over the Keys 359
10. Two Cups of Tea 360
11. Across the Road 360
12. Notice of the Removal of a Name 360
13. The Last Page of the Notebook 360
14. The Dry Branch of the Mango Tree 361
15. An Unemployed Afternoon 361
16. The Call That Did Not Come 361
17. A Small Award 362
18. New Neighbours 362
19. The Creak of the Chair 362
20. Seven in the Morning 362
21. Two Tickets 363
22. The Box of Bangles 363
23. One Rupee Short 363
24. The Photo Studio 364
25. The Red Sweater 364
26. The Key 364
27. Ten Minutes 364
28. The Last Customer 365
29. The Broken Clock 365
30. The Box of Sweets 365
31. A Small Advertisement 366
32. The Blue Pen 366
33. The Wooden Horse 366
34. The Sewing Machine 366
35. A Pair of Shoes 367
36. The Lost Wallet 367
37. The Rented Room 367
38. The Unnamed Parcel 368
39. Behind the Photograph 368
40. Two Lamps 368
41. The Last Row 368
42. Four Hands of Cloth 369
43. Shared Shade 369

44. A Day's Leave 369
45. The Tin Box Held as Security 370
46. Half a Sack 370
47. The Other Entrance 370
48. Five Chairs 370
49. The Washerman's Mark 371
50. The Hours of Labour 371
51. The Red Seal 371
52. A Common Field Boundary 372
53. A Plate of Rice 372
54. The Rented Handcart 372
55. Three Glasses of Water 372
56. The Line for a Name 373
57. A Sample of the Harvest 373
58. The Little Awning 373
59. A Bar of Soap 373
60. Beyond the Accounts 374
61. The Wall's Second Life 374
62. Threads of Two Colours 374
63. The Path Through the Orchard 375
64. A Painting Without a Name 375
65. Seven Minutes of Voices 375
66. The Earthen Bowl 376
67. The Star Above the Roof 376
68. The Thin Curtain 376
69. Measuring the Shade 376
70. Lamps in Both Homes 377
71. Lessons on the Veranda 377
72. A Name Beneath the Toy 377
73. The Broken Note 378
74. The River's Other Name 378
75. Two Kinds of Seed 378
76. The Leaf Inside the Book 378
77. Shared Hours on the Roof 379
78. The Unfinished Play 379
79. A Share of the Moon 379
80. The New Courtyard 380
81. The Thirty-First Bed 380
82. The Back Staircase 380
83. The Night Slip 380
84. Two Buttons 381
85. Rent for a Shut Window 381
86. The Mark on the Brick 381
87. The Account of a Pocket 382
88. The Evening Chair 382
89. The Fifth Bucket 382
90. The Discarded Identity Card 382

91. Half a Signature 383
92. The Locked Trunk 383
93. Light for Hire 383
94. The Small Padlock 384
95. Two Minutes Late 384
96. Weighing Wet Paddy 384
97. The Empty Plate 384
98. The Three-Rupee Receipt 385
99. The Last Light 385
100. Beyond the Count 385

KATHA-SHATATRAYI · VOLUME II — STORIES 1–100

101. Beyond the Embankment 387
102. The Vacant Post 387
103. The Voice of the Land 387
104. Half a Samosa 388
105. The University of the Veranda 388
106. Love on Credit 388
107. A Free Cup of Tea 388
108. The Old Man and the Radio 389
109. Sharing an Umbrella 389
110. The Five-Rupee King 389
111. The Scent of Rice 390
112. The Grammar of a Love Letter 390
113. The Betel-Seller Philosopher 390
114. The Rented Dog 390
115. A Feast with Empty Pockets 391
116. The Broken Umbrella Association 391
117. The Forgetful Lover 391
118. The Barber Who Charged Nothing 391
119. Grandmother's Mobile Phone 392
120. One Plate of Pakoras 392
121. A Pair of Sandals 392
122. The Richest Man in the House 393
123. Savings of Laughter 393
124. The Key 393
125. Ten Minutes 393
126. The Last Customer 394
127. The Broken Watch 394
128. The Sweetmeat Box 394
129. The Small Advertisement 395
130. The Blue Pen 395
131. The Wooden Horse 395
132. The Sewing Machine 395
133. A Pair of Shoes 396
134. The Lost Purse 396
135. The Rented Room 396

136. The Nameless Parcel 396
137. Behind the Photograph 397
138. Two Lamps 397
139. The Saree Bought on Credit 397
140. Five Dhurs of Land 398
141. The Host 398
142. The New Mobile Phone 398
143. The Dowry Fan 398
144. The Grand Gate 399
145. The Certificate of Honour 399
146. One Plate Less 399
147. An Address in the City 399
148. The Smile in the Photograph 400
149. The Feast Paid for by Debt 400
150. The Hired Car 400
151. Like Gold 400
152. Ten Kilograms of Rice 401
153. Expensive Shoes 401
154. The Empty Envelope 401
155. The Invitation 402
156. The Man with the Umbrella 402
157. The Number Plate 402
158. The Village Stage 402
159. The Girl by the Window 403
160. The Migrant's Daughter 403
161. An Unfinished Song 403
162. A Letter by the River 403
163. The Little Servant 404
164. Mother's Trunk 404
165. The School Courtyard 404
166. The Vermilion Box 404
167. The Swing in the Tree 405
168. The Clay Flute 405
169. A Name 405
170. The Evening Lesson 405
171. The Fair at the Border 406
172. The Neem Tree's Shade 406
173. The Paper Boat 406
174. Silence 406
175. The Postcard 407
176. The Flower at the Lattice Window 407
177. First Earnings 407
178. The Returning Song 407
179. Papers at the Border 408
180. The Flood Relief Camp 408
181. The Red Blanket 408
182. Do Not Ask Their Names 408

183. The Register 409
184. The Open Door 409
185. Three Minutes 409
186. Clothing 410
187. The Room at the Station 410
188. Silent Testimony 410
189. Two Bodies 410
190. Milk under Curfew 411
191. The Broken Slipper 411
192. The Locked Room 411
193. The Scar 411
194. The Night Truck 412
195. The Identity Slip 412
196. A Child's Question 412
197. The Price of Testimony 412
198. Across the River 413
199. Horse Gram Dal 413
200. The Dream of One Bigha 413

KATHA-SHATATRAYI · VOLUME III — STORIES 1–100

201. The Empty Bag 414
202. A Patch of Sunlight 414
203. The Boat Remained Tied 414
204. The Sound of the Fridge 414
205. A Month's Rent 415
206. The Blue Mug 415
207. The Charger 415
208. The Clothesline 415
209. The Dry Tap 416
210. Half a Kilo of Rice 416
211. The Balcony Flowerpot 416
212. The Wrong Number 416
213. The Old Curtain 417
214. The Empty Gas Cylinder 417
215. Two Plates 417
216. The Neighbour's Television 417
217. The Broken Lift 418
218. The Grocery List 418
219. The Old Mattress 418
220. The Doorbell 418
221. The Leftover Vegetables 419
222. The Closed Window 419
223. Sunday Clothes 419
224. After the Mustard Harvest 419
225. The Herdsman's Footpath 420
226. The Pond Keeper 420
227. Evening at the Cattle Shed 420

228. The Mango Orchard 420
229. The Kamala's Course 421
230. The Scent of Paddy 421
231. The Tree's Shade 421
232. The Dom's Flute 421
233. The Plan of a Hut 422
234. The Ox's Bell 422
235. The Earthen Road 422
236. Guardian of the Grazing Ground 423
237. The Paddy-Planting Song 423
238. The Register Beneath the Banyan 423
239. The Flood Marks 423
240. The First Tractor 424
241. The Boundary Post 424
242. The Empty Cattle Shed 424
243. The Last Harvest 424
244. The Village of Certificates 425
245. Cleanliness Day 425
246. The Assembly of the Literate 425
247. The Model Square 426
248. The Ribbon of Development 426
249. A Distinguished Family 426
250. The Day of the Rumour 426
251. The Topper's Photograph 427
252. The Cleanest House 427
253. The Felicitation Ceremony 427
254. A Speech Against Cheating 427
255. The Library Inauguration 428
256. The Chairs of Caste 428
257. The Digital Village 428
258. Proof of Poverty 428
259. The Silent Committee 429
260. The Ideal Marriage 429
261. Everyone's Opinion 429
262. The Recipient of the Award 430
263. A New Rule 430
264. The Cupboard Inside 430
265. Two Hours on the Roof 430
266. The Daughter-in-Law's Room 431
267. The Key to Her Parents' Home 431
268. The Cost of Sewing 431
269. The Examination Form 431
270. The Kitchen Door 432
271. The Red Box 432
272. The Sister's Telephone 432
273. The Young Woman Who Rented a Room 432
274. The Gift of a Sari 433

275. The Dining Table 433
276. The Aunt Who Kept Silent 433
277. The Mirror at the Beauty Parlour 434
278. The First Month at Work 434
279. The Old Petticoat 434
280. The Guest Room 434
281. Hidden Savings 435
282. The Woman Missing from the Photograph 435
283. The Nameplate 435
284. The Third Step 435
285. The Calendar in Reverse 436
286. Air from the Closed Room 436
287. A Shadow Without an Owner 436
288. The Station Absent from the Map 437
289. The Clock That Chimed Halfway 437
290. The Second Door 437
291. The Lane That Changed Its Name 437
292. One Window Too Many 438
293. The Room of Voices 438
294. Bus Number Zero 438
295. A Rain of Paper 438
296. The Pond on the Map 439
297. The Reversed Reflection 439
298. The Wednesday That Vanished 439
299. The Fifth Corner 440
300. An Unfamiliar Home of His Own 440

KATHA-TRIDHARA · VOLUME I — STORIES 1–30

301. The Bell That Never Rang 441
302. The Road That Turned Back 441
303. The Other Night Sky 441
304. The Woman Cutting Onions 442
305. The Bus Window 442
306. The Hour for Filling Water 442
307. The Empty Notebook 443
308. The Broken Comb 443
309. Hands Choosing Vegetables 443
310. Winter Sunlight 444
311. The Milk Boiled Over 444
312. Before Opening the Envelope 444
313. White Hair in the Mirror 445
314. The Empty Bowl 445
315. The Bird at the Window 445
316. One Word Wrong 445
317. New Sandals 446
318. The Silence of the Afternoon 446
319. The Splitting Fingernail 446

320. The Scent of Cut Fruit 447
321. Beneath the Fan 447
322. A Half-Written Name 447
323. Before the Lamp Goes Out 448
324. Red Dust 448
325. The Three-Minute Procession 448
326. The Torn Drum 448
327. The Truck at Night 449
328. Flowers upon the Ashes 449
329. The Blacksmith's Hammer 449
330. The Glass of the Lantern 450

KATHA-TRIDHARA · VOLUME I — STORIES 31–60

331. Beneath the Bridge 450
332. Paper and the Stick 450
333. The Scent of Jackfruit 451
334. The Rumour of Five Shots 451
335. The Torn Flag 451
336. The Imprint of a Boot 452
337. The Boat in the Night 452
338. A Shard of Glass 452
339. The Field Turned to Ash 453
340. A Watch Without a Gun 453
341. A Song Through the Smoke 453
342. One Minute of Electricity 454
343. Not Blood, but Vermilion 454
344. My Magnificent Business 454
345. A Wedding Party, Three Times Over 455
346. The Philosopher of Credit 455
347. The Panchayat's Expert 455
348. My Rich Uncle 456
349. The Statement of a Missing Goat 456
350. The Mobile-Phone Guru 456
351. The Wedding Budget 457
352. The Great Poet Next Door 457
353. The Scholar for Rent 457
354. The Village Meteorologist 458
355. Free Advice 458
356. Election Tea 458
357. Uncle with the Microphone 459
358. A Kilogram of Reputation 459
359. Not a Leader Who Forgets Names, but a Teacher 459
360. The Fundraising Expert 460

KATHA-TRIDHARA · VOLUME I — STORIES 61–90

361. The Free Photograph 460

362. Not by the Clock, but by Agreement 460
363. Where Am I to Blame? 461
364. The Devout Thief 461
365. The Committee for Good Conduct 461
366. Sacred Parking 462
367. A Photograph of Charity 462
368. The Great Renouncer 462
369. The Truthful Merchant 463
370. The Receipt for Merit 463
371. A Respectable Family 463
372. The Preaching Passenger 464
373. Pure Food 464
374. The Ceremony of Forgiveness 465
375. The Kind Employer 465
376. The Poster of Truth 465
377. The Good Man's Testimony 466
378. The Coin in the Donation Box 466
379. The Courteous Driver 466
380. The Character Certificate 467
381. The Fasting Feast 467
382. The Prize for Humility 467
383. The Last Row 468
384. The River on Paper 468
385. The Number on the Brick 468
386. The Path Through the Forest 469
387. The Signature for Wages 469
388. The Quarry Zone 469
389. Ration Day 470
390. The Distance to School 470

KATHA-TRIDHARA · VOLUME I — STORIES 91–100

391. The Song of the Stone-Breakers 470
392. The Right to the Forest 471
393. Compensation for the Bridge 471
394. The Labourer in the Photograph 471
395. The Red Card 472
396. The Sand Landing 472
397. The Temporary Settlement 472
398. The School in the Forest 473
399. The Power of a Signature 473
400. Half a Day's Wages 473

KATHA-TRIDHARA · VOLUME II — STORIES 1–20

401. Four Handfuls of Seed 475
402. The Plough's Journey 475
403. Half a Bamboo Pole 475

404. The First Milk in the Cowshed 475
405. A Night on the Watch Platform 476
406. A Share of the Chaff 476
407. The Pond's Two Ghats 476
408. The Credit Ledger 476
409. The Mango Tree at the Field's Edge 477
410. Two Days of Paddy Transplanting 477
411. Caring for the Calf 477
412. Oil-Cake from the Press 477
413. The Herdsman's Whistle 477
414. The Potter's Fire 478
415. The Hired Pump 478
416. Two Paseris of Finger Millet 478
417. The Grass on the Embankment 478
418. The Rim of the Dry Well 479
419. The Last Day of Harvest 479
420. The Name of the Boundary Ridge 479

KATHA-TRIDHARA · VOLUME II — STORIES 21–50

421. The Writing of the Dry Canal 479
422. Three Scratches on the Padlock 480
423. The Post Office's Thirteenth Mailbag 480
424. The Watermill Wheel Turning Backwards 480
425. Black Dots on the White Screen 480
426. The Missing Shoeprint at the Courthouse 481
427. The Clock That Chimed at Half Past 481
428. The Rope Stretched across the Deserted Ghat 481
429. The Blue Glass Vial 481
430. The Key Found in the Fold of a Sari 482
431. The Smell of Boiled Paddy 482
432. Three Blows on the School Roof 482
433. The Warmth of the Wooden Chest 482
434. Knocking Within the Earthen Wall 483
435. The Wandering Seal 483
436. A Straight Strip Without Dew 483
437. Behind the Broken Mirror 483
438. Red Thread on the Veranda 484
439. Falling Letters 484
440. Soot on the Last Lantern 484
441. Seven Millimetres on a Nameplate 484
442. The Blank Space Between Two Signatures 485
443. Chair Number Zero in the Waiting Room 485
444. Leave for an Application for Leave 485
445. The Inventory of an Empty Drawer 485
446. The File with the Yellow Ribbon 485
447. Half a Letter in the Job Title 486
448. The Birthday of a Certificate 486

449. The Authority of the Bell 486
450. The Fifth Space for Four Seals 487

KATHA-TRIDHARA · VOLUME II — STORIES 51–80

451. Service Window Number Nine 487
452. The Table Beside the Gate 487
453. The Promotion of the Red Pencil 487
454. The Pink Margin Lost in the Photocopy 488
455. The Empty Box for a Date 488
456. Proof of Being Five Minutes Late 488
457. The Colour of the File Cloth 488
458. One Office, Two Names 489
459. The Second Step of the Staircase 489
460. The Officer in the Last Row 489
461. Present in Three Places 489
462. An Open Branch in a Closed Room 490
463. The Other Name in a Pronunciation 490
464. The Form That Demands Its Answer in Advance 490
465. The Half-day Employee 490
466. Work in the Sealed Room 491
467. The Translated Village 491
468. An Attendance Order on a Holiday 491
469. The Complaint Born of an Enquiry 491
470. The Black Shadow of the Scanner 492
471. The Internal Letter Sent Outside 492
472. The First Day of Appointment 492
473. Two Salaries under One Name 492
474. Absent to Prove Attendance 493
475. The Original Page in the Register of Corrections 493
476. The Envelope Without a Sender 493
477. The Shadow Signature 493
478. Serial Number 000 494
479. A Witness to the Living 494
480. The Last Task of a Closed Department 494

KATHA-TRIDHARA · VOLUME II — STORIES 81–100

481. Two Tickets 494
482. The Box of Bangles 495
483. The Red Sweater 495
484. Across the Pond 495
485. Three Empty Chairs 495
486. Evening on the Embankment 496
487. The Last Local Train 496
488. Half a Glass of Water 496
489. The Verandah Bulb 496
490. Two Kathas of Sand 497

491. The Silent Radio 497
492. Shoes Left on the Roof 497
493. One Cup of Tea Less 497
494. The Bamboo Bridge 498
495. The Half-Cut Mango 498
496. The Fishing Net 498
497. Smoke at Daybreak 498
498. A Bicycle Without a Bell 498
499. Five Minutes Late 499
500. The Broken Field Boundary 499

KATHA-TRIDHARA · VOLUME III — STORIES 1–40

501. School Shoes 500
502. The Sacks of Paddy 500
503. The Panchayat Tap 500
504. The Price of an Ox 500
505. Wages 501
506. The Aadhaar Thumbprint 501
507. The Maize Field 501
508. The Debt Left by the Flood 501
509. The Little Teacher 502
510. Smoke from the Hearth 502
511. A One-Katha Pond 502
512. The Packet of Seeds 503
513. Two Goats 503
514. The Labour Card 503
515. The House of Earth 503
516. The Loan Document 504
517. Paddy in the Common Granary 504
518. The First Harvest 504
519. The Locked Room in Madhubani 505
520. The Sound of a Bell 505
521. The Pond's Eye 505
522. Inside the Wall 505
523. Soot 506
524. The Lantern 506
525. Seven Steps 506
526. The Closed Clock Tower 506
527. A White Feather 507
528. The Last Portrait 507
529. Water in the Basement 507
530. A Line in the Night 508
531. The Door Chain 508
532. A Heartbeat 508
533. The Black Mirror 508
534. Footsteps on the Roof 509
535. The Smell of a Letter 509

536. The Neelkanth 509
537. The Other Room 509
538. Beneath the Earth 510
539. The Official Stamp 510
540. The Autobiography of a File 510

KATHA-TRIDHARA · VOLUME III — STORIES 41–70

541. Chair Number Seventeen 511
542. The Spelling of a Name 511
543. The Great Inspection 511
544. A Proposal for a Fan 512
545. The God of the Office 512
546. The Signature 512
547. The Special Cap 513
548. The Tea Committee 513
549. The Missing Bell 513
550. A Certified Copy 514
551. The Height of the Desk 514
552. Red Tape 514
553. The Forgotten Order 515
554. The Government Umbrella 515
555. Attendance 515
556. Photographic Identification 516
557. The Welcome Gate 516
558. The Annual Report 516
559. Permission to Live 517
560. The Waiting Room 517
561. The Number 517
562. The Case That Remains Open 518
563. The Boundary 518
564. Verification 518
565. The Closed Lift 519
566. The Blank Seal 519
567. The Order at Midnight 519
568. The Invisible Tax 520
569. The Wrong Date of Birth 520
570. One Door Too Few 520

KATHA-TRIDHARA · VOLUME III — STORIES 71–100

571. The Return 520
572. Translation 521
573. The Order from the Empty Chair 521
574. The Admission Slip 521
575. The Frozen Account 521
576. Final Approval 522
577. The Forbidden Question 522

578. The Guarded Door 522
579. Evening in Laheriasarai 523
580. Lights on the Bridge 523
581. The Closed Library 523
582. After the Fair 523
583. Leaving the Cinema 524
584. The Veranda Light 524
585. The Glass at the Tea Stall 524
586. The Railway Announcement 525
587. A Band of Sunlight 525
588. A Fragment of Music 525
589. The Shuttered Shop 525
590. The Eaves 526
591. The Bicycle 526
592. A Glass of Water 526
593. The Procession 527
594. The Small Mirror 527
595. Pigeons on the Roof 527
596. The Hand of the Clock 527
597. The Last Page 528
598. The First Bus of the Morning 528
599. The Endless Genealogical Register 528
600. The Library of Mithila 529

PARVAT UPAR BHAMRA JE SUTAL · STORIES 1–30

601. Siddha Mahavir 530
602. Navi Mumbai 530
603. New Delhi 530
604. The Abductor 531
605. Struggle 531
606. The Letter in the Letterbox 531
607. Doma, Budhan and... 532
608. Suicide 532
609. Gandharva Letterbomb 532
610. The Madhubani Module 533
611. Shabdashastram 533
612. The Village of the Mahisbar Brahmins 534
613. A Rickshaw Ride and the Fear of Robbery 534
614. The Counterfeit Note 534
615. The Waterlogged Road 534
616. Yes, Sir 534
617. Two Prisoners 535
618. Each to His Own Luck 535
619. The Sermon 535
620. The Promised Word 535
621. Brown Hair 535
622. Self-Respect 536

623. The Portrait 536
624. The Water Cooler 536
625. You're Not Such a Big Man Yet, Boy 536
626. The Electrician at the Ambience Mall Campus 536
627. A Sniffer-Dog Tale 537
628. Traffic Rules — Part 0 537
629. Traffic Rules — Part 1 537
630. Traffic Rules — Part 2 537

PARVAT UPAR BHAMRA JE SUTAL · STORIES 31–60

631. Traffic Rules — Part 3 538
632. The Caste-Prejudiced Marathi 538
633. The Hard-Hearted Human 538
634. Polygamy and the Eunuch 538
635. Women and Daughters 538
636. Marriage and the Touching of Feet 539
637. Talent 539
638. Caste and Rank 539
639. A Job on Compassionate Grounds 539
640. Recommendations, Messages and the Officer 539
641. The New Media 540
642. Industry in Mithila 540
643. Flood, Hunger and Migration — Hunger (1) 540
644. Flood, Hunger and Migration — Hunger (2) 540
645. Flood, Hunger and Migration — The Flood 540
646. Flood, Hunger and Migration — A Blow in Exile 541
647. The New Feudal Lord 541
648. Fourth Place 541
649. The Vote 541
650. Masuai 541
651. The Siberian Camp 542
652. Meet Bhai Series — 1. Chansagar 542
653. Meet Bhai Series — 2. Complexion 542
654. Meet Bhai Series — 3. Selection 542
655. Meet Bhai Series — 4. The Thieves' Market 542
656. Meet Bhai Series — 5. Teaching 543
657. Meet Bhai Series — 6. The Pasiij Thorn 543
658. Meet Bhai Series — 7. The Telephone Directory 543
659. Meet Bhai Series — 8. Clearing Dung 543
660. Meet Bhai Series — 9. The Greater Reward 543

PARVAT UPAR BHAMRA JE SUTAL · STORIES 61–70

661. Meet Bhai Series — 10. Meet Bhai's Son 544
662. Meet Bhai Series — 11. The Indian Administrative Service 544
663. Meet Bhai Series — 12. The Rumour of Mahadev Drinking Milk 544
664. Bihari 544

665. Fielding 545
666. Skill 545
667. Discipline 545
668. Science — 1. Science Education 545
669. Science — 2. Chemistry 545
670. Science — 3. Physics 546

IJOT — LIGHT: STORIES ACROSS LIFETIMES · STORIES 1–20

THE ORIGINAL THREE MOVEMENTS

671. The Thief of the Genealogical Register 547
672. The House Seen Again 547
673. In a Free State 547
674. Water Burial 548
675. Outside the Caste 548
676. The Reckoning of the Bed 548
677. A Second Marriage 549
678. The Metre of a Ghazal 549
679. The Guest Room 549
680. Mist 550
681. The Limits of Justice 550
682. The Letter 550

GOTGOT

683. The Register's Final Entry 551
684. Twins 551
685. Kinsfolk 551
686. The Hidden Branch 552
687. Adoption 552
688. Beyond Caste 552
689. The Diary 553
690. A False Lineage 553

IJOT — LIGHT: STORIES ACROSS LIFETIMES · STORIES 21–49

691. Roots in a Foreign Land 553
692. The Priesthood 554
693. A Lineage of Melodies 554
694. The Maternal Line 554

TATTVA-KATHA

695. Evidence 555
696. Maya 555
697. Rasa 555
698. Destiny 556
699. The Word as Brahman 556

700. Impermanence 556
701. Self and Non-Self 557
702. Cause and Effect 557
703. Silence 557
704. Dream 558
705. Doubt 558
706. Liberation 558

PIPRA

707. Chhath 559
708. Raga 559
709. The Court 559
710. The Postman 560
711. In a Foreign Land 560
712. Doom 560
713. The Ghost 561
714. Master Sahib 561
715. The Painter 561
716. The Return 562
717. The Boat 562
718. Chhath Once More 562

SAMAPANIKA

719. Videha 563

SMRITIK DOSAR DIS — THE OTHER SIDE OF MEMORY

720. Two Janakpurs 564
721. The Forgotten Debate 564
722. The Pond of Time 564
723. The City of Letters 565
724. The Final Commentary 565
725. The Map That Kept Growing 565
726. One Writer, Two Births 565
727. A Dictionary of Memory 566
728. Chapter Zero 566
729. The Copyist 566
730. A Third History 566
731. The Translator 567
732. The Nameless Deity 567
733. The Pathway Through Time 567
734. The Lineage of the Mirror 568
735. The Invisible Book 568
736. The Seventh Direction 568
737. The Last Reader 568
738. The Incident at the Pond 569
739. The Night at the Royal Court 569

740. The Stolen Idol 569
741. The Shot at the Border 570
742. The Wedding Dispute 570
743. The Flood Boat 570
744. The Painter's Death 570
745. The Old Lawsuit 571
746. The Night of the Fair 571
747. A Tale of Heroes 571
748. The Last Meal 572
749. The Poet and the King 572
750. The Accident at the Bend 572
751. The Prize for a Lie 572
752. The Fire in the Village 573
753. Across the River 573
754. The Mason's Fall 573
755. The Old Photograph 574
756. The Voice in the Night 574
757. Whose Fault? 574
758. The Scent of Makhana 574
759. The Yellow Flower 575
760. The Luncheon Table 575
761. Kajal 575
762. The New Curtain 575
763. Fragrance 576
764. The Silver Bowl 576
765. Drying Their Hair 576
766. White Flowers 577
767. A Small Party 577
768. The Silk Dupatta 577
769. Rain at the Window 577
770. The Taste of Lemon 578
771. The Pink Cup 578
772. The Scent of Sunlight 578
773. The Earrings 578
774. Red Nail Polish 579
775. The Sheer Curtain 579
776. Cardamom 579
777. The Flower Vase 579
778. The Dried Kamala 580
779. A House of Sand 580
780. The Sound of Bamboo 580
781. The Dusty Footpath 581
782. The Empty Pond 581
783. Erosion 581
784. The Scent of Earth 581
785. The Roofless House 582
786. The River Spoke 582

787. The Ground Gives Way 582
788. The Field of Kans Grass 583
789. The Dust of Tirhut 583
790. Three Graves 583
791. The Flood Mark 583
792. The Abandoned Well 584
793. The Dry Maize Leaves 584
794. The Last Boat 584
795. The Tree Stump 585
796. Smoke 585
797. The Silent Village 585
798. Between Three Years 585
799. The Reason for Returning 586
800. The Sisters 586
801. The Old Doctor 586
802. House Number Five 587
803. The Photo Album 587
804. One Decision 587
805. A Friend's Daughter 588
806. The Bus Stop 588
807. After Marriage 588
808. Mother's Friend 588
809. The Letter Never Sent 589
810. Two Cities 589
811. Twenty Years Later 589
812. At Aunt Malati's House 590
813. The Red Trunk 590
814. The Music Teacher 590
815. Different Paths 591
816. The Missing Years 591
817. The Last Journey 591

NAV PANKHI — NEW WINGS

818. Displacement in Space-Time 592
819. A Life with Crutches 592
820. I Will Not Go Abroad 593
821. Migration 594
822. An Exchange of Fortunes 594
823. The Morning Star Beneath the Pond 595
824. The Village's Old Library 595
825. The Mystery of the Goat's Bell 596
826. The Book Saved from the Flood 596
827. The Children's Science Fair 597
828. The Mango Tree Decision 598
829. A Day Without a Mobile Phone 598
830. The Boy Who Counted Birds 599
831. The Clay Robot 599

832. The Forest Path and the Talk at Home 600
833. The School Among the Branches 600
834. The Girl Who Made a Sundial 601
835. The Friends Who Set Out to Save the River 601
836. A Map of the Moonlit Night 602
837. The Cheerful Watchman and the Missing Key 603

खण्ड १

कथा-शतत्रयी • खण्ड–१

१०० कथाक सारांश

कथा १ · खिड़कीक गमला

जिला शिक्षा कार्यालयमे पैंतीस बरख बितौने शशिभूषण बाबू सेवानिवृत्तिक निकट छथि। कार्यालयक खिड़की पर राखल सदाबहारक गमला हुनकर रोजक देखरेख सँ जीवित अछि। अन्तिम दिन कार्यालयक जरूरी काजक कारण विदाइ समारोह छोट भऽ जाइत अछि। नव लिपिक नीरजक कहला पर ओ गमला घर लऽ अनैत छथि। घरमे दिवंगत पत्नी मालतीक खाली कुर्सी, पुरान दिनचर्या आ आगाँक अनिश्चित समय हुनका सोझाँ अबैत अछि। दोसर दिन कार्यालय फोन करबाक इच्छा रोकि ओ गमला मालतीक कुर्सी पर राखैत छथि। एहि छोट परिवर्तनमे नौकरीक बाहरी परिचयसँ अलग एक नव जीवनक आरम्भक आभास अछि।

कथा २ · छुट्टीक आवेदन

विद्यालयमे निरन्तर जिम्मेदारी निभबैत शिक्षिका प्रभा मिश्राक माए अस्वस्थ छथि, मुदा विद्यालयक काजक चिन्तामे ओ तीन दिनक छुट्टी घटबैत एक दिनक कऽ दैत छथि। माएक घर पहुँचि ओ हुनकर देखभाल करैत छथि। बरखाक साँझ माएक सहज प्रश्नसँ प्रभाक भीतर दबायल पति अरुणक मृत्युजनित एकाकीपन बाहर अबैत अछि। माए हुनका बुझबैत छथि जे ककरो दुःख जानब आ ओहि दुःखक बात सुनब अलग-अलग बात अछि। विद्यालय घुरलापर प्रभा फेर दू दिनक छुट्टी माँगैत छथि, जखन कि माए आब स्वस्थ छथि। ई निर्णय अपन मन आ सम्बन्ध लेल समय निकालबाक दिशा मे हुनकर परिवर्तन अछि।

कथा ३ · देरि सँ आयल चिट्ठी

शारदा देवीकेँ पुरान सन्दूकमे पति हरिनारायण बाबूक नाम लिखल बीस बरख पुरान बन्द चिट्ठी भेटैत अछि। ओहि समय बेटा मनोज अपन पसिनक विवाहक प्रसंगमे पितासँ विवाद कऽ दिल्ली गेल छल। दुनू पति-पत्नीकेँ शंका होइत अछि जे चिट्ठी मनोजक हो सकैत अछि। ओकरा खोलब कि नहि, एहि दुविधामे ओ सभ पुरान मौन, तिक्तता आ एक-दोसरासँ नहि कहल चिन्ताक चर्चा करैत छथि। मनोजक संग वर्तमान सम्बन्ध सामान्य भऽ चुकल अछि, मुदा पुरान प्रश्न अनुत्तरित अछि। अन्तमे चिट्ठी बिना पढ़नहि दुनू संग बैसि चाह पीबैत छथि; चिट्ठीक रहस्यसँ बेसी महत्त्वपूर्ण हुनकर साझा उपस्थिति बनि उठैत अछि।

कथा ४ · बरखा रुकलाक बाद

बाढ़िक पानि उतरला पर रामलोचन यादव आ बिन्देश्वर मिश्रक खेतक बीचक मेड़ बहि जाइत अछि। पहिने एहि सीमा लेल दुनूक बीच कटु विवाद भऽ चुकल छल। मुदा बाढ़ि आ घर-खेतक क्षतिसँ जूझैत दुनू पड़ोसी एक-दोसराक सहायता करैत छथि। नव मेड़ बनबैत काल पुरान नाप आ वर्तमान जरूरतक बीच फेर प्रश्न उठैत अछि। धीरे-धीरे दुनूक व्यवहारमे कठोरताक स्थान पर परस्पर चिन्ता अबैत अछि। स्पष्ट क्षमा वा मेल-मिलापक घोषणा बिना ओ सभ अपन-अपन घर घुरैत छथि। रामलोचनकेँ अन्तमे बिन्देश्वरक कुदारिक ढीला मूठ ठीक करबाक बात मोन पड़ैत अछि; ई स्मृति टूटल सम्बन्धक सम्भावित मरम्मतिक सङ्केत बनैत अछि।

कथा ५ · साँझक बस

निरंजन झा पदोन्नतिक समाचारक संग चारि बरख बाद गाम घुरि रहल अछि। बसमे ओकर भेट पुरान शिक्षक रमेश्वर सरसँ होइत अछि, जे छात्र, गाम आ लोकक छोट-छोट जरूरत सभ मोन रखने छथि। निरंजन अपन सफल व्यावसायिक जीवनक तुलना शिक्षकक सरल, सम्बन्धमय संसारसँ करैत अछि। बात-बातमे ओकरा विद्यालय, पुरान सहपाठी आ छूटि गेल लोकक स्मृति घेरैत अछि। बससँ उतरि घर जाएबाक बीच ओ पुरान विद्यालय देखबाक निर्णय करैत अछि। ओकर पदोन्नति नहि बदलैत अछि, मुदा सफलताक अर्थ

ओकरा लेल विस्तृत भऽ जाइत अछि—ओहि लोकसभक स्मरण धरि, जे जीवनक यात्रामे पछड़ि गेलाह अथवा एखनहुँ ओकर नाम मोन रखने छथि।

कथा ६ · खाली पलंग

बेटी अनुपमाक विवाहक बाद कौशल्या देवी ओकर खाली कोठली आ नीला फूलवला चादर देखैत छथि। बेटी घरसँ दूर अपन नव जीवनमे बसबाक प्रयास कऽ रहल अछि, मुदा माएक लेल ओकर अनुपस्थिति घरक प्रत्येक वस्तुमे उपस्थित अछि। पति महेश्वर बाबू, पड़ोसी आ बेटी सँ भेल बातचीत बीच कौशल्या बुझैत छथि जे अपन खालीपन बेटी पर थोपब उचित नहि। अनुपमाक सामान, पुरान सूची आ कोठलीक उपयोगक प्रश्न हुनका बारम्बार बेटी दिस घुरबैत अछि। अन्तमे ओ तुरन्त घरक काजमे नहि दौड़ि, खाली पलंग लग किछु क्षण बैसैत छथि। ई मौन बेटीकेँ स्वतंत्र छोड़बाक आ अपन विरहकेँ स्वीकार करबाक साधना बनि जाइत अछि।

कथा ७ · पेंशनक दिन

सेवानिवृत्त भुवनेश्वर बाबू पेंशनक नब प्रविष्टि देखबा लेल बैंक जाइत छथि। मोबाइलक सूचनासँ बेसी हुनका पासबुकक छपल हिसाब पर विश्वास अछि। बैंकमे प्रतीक्षा, परिचित लोकक भेट आ पेंशनधारी शम्भुनाथसँ बातचीत हुनका अपन बदलैत दिनचर्याक बोध करबैत अछि। घर घुरि ओ पड़ोसक किशोर सोनूक आवेदन देखबाक काज करैत छथि आ पुरान कार्यालयक सहकर्मी सँ फोन पर बात होइत अछि। पेंशनक राशि खातामे आबि चुकल अछि; तथापि अगिला मासक सात तारीख हुनका मोन रहैत अछि। लाल कलमक संग नील कलम राखबाक छोट क्रियामे हिसाब-किताबसँ आगाँ उपयोगी बने रहबाक आ नव दिनचर्या खोजबाक भाव प्रकट होइत अछि।

कथा ८ · दू अक्षर

सुधांशु बाबूक घरमे छओ बरख सँ मित्र रमाकान्त चौधरीक पुरान धूसर छाता टाँगल अछि। ओकर मूठ पर खोंचल दू अक्षर मित्रक स्मृति सँ जुड़ल अछि। बरखाक दिन अपन छाता खराब भेला पर सुधांशु ओहि छाताक उपयोग करैत छथि। विद्यालय आ बाटमे भेल

छोट प्रसंगसभ हुनका रमाकान्तक संग पुरान सम्बन्ध आ अन्तिम भेट मोन पाड़ैत अछि। मित्रक बीमारीक समय अपन व्यस्तताक कारण हुनका पर्याप्त संग नहि देबाक पछतावा पुनः उभरैत अछि। स्मृति केँ बदलल नहि जा सकैत, मुदा ओ मृत मित्रक परिवार दिस फेर हाथ बढ़ा सकैत छथि। अन्तमे ओ रमाकान्तक परिजनक समाचार लेबाक सन्देश पठबैत छथि।

कथा ९ · चाबी सौंपबाक दिन

रामचरित काका बरखों सँ विद्यालयक फाटक, कोठली आ घण्टी सँ जुड़ल छथि। सेवा समाप्तिक दिन हुनका एगारह चाबीक पुरान गुच्छा दोसर व्यक्तिक हाथमे सौंपबाक अछि। विद्यालयक दैनिक स्वर, विद्यार्थी आ शिक्षकसभक अपनापन हुनकर जीवनक अभिन्न हिस्सा बनि चुकल अछि। औपचारिक विदाइ भेलापर हुनका घरक निस्तब्धता आ काल्हि सँ विद्यालय नजेबाक सत्यक सामना करय पड़ैत अछि। डायरीमे ओ लिखैत छथि जे विद्यालय चलैत रहत आ ओ घरमे रहताह। ई दुनू वाक्यक बीच ओ अपन नब अस्तित्व खोजैत छथि। अन्तमे घरक ढीला किवाड़ ठीक करबाक लेल पेचकस खोजब हुनकर काज करबाक स्वाभाविक प्रवृत्तिक निरन्तरता देखबैत अछि।

कथा १० · दू कप चाय

देवकी देवीक घरमे एक साँझ फेर तीन कप चाह राखल जाइत अछि, मुदा परिवारक भीतर पुरान सहजता नहि अछि। ताराकान्त बाबूक आगमन आ हुनकर बातक बीच देवकी आ हरिनाथक सम्बन्धमे जमल मौन स्पष्ट होइत अछि। हैदराबादसँ आएल पारिवारिक समाचार, पुरान सूटकेस आ अलग-अलग ढङ्ग सँ परोसल चाह हुनका सभकेँ नहि कहल बातक स्मरण करबैत अछि। दिन बीतैत दुनू बीच आवश्यक घरेलू बातचीत चलैत रहैत अछि, मुदा भावनात्मक दूरी एकाएक नहि मेटाइत अछि। अन्तिम दृश्य मे दुनू चाह पिबैत छथि आ पुरान सूटकेस धूरिसँ भरल पड़ल रहैत अछि। कथा घरेलू निकटता, दूरी आ अधूरा संवादक सूक्ष्म चित्र अछि।

कथा ११ · सड़कक ओहि पार

तीन बरख सँ असगरे रहैत शिवकान्त बाबूक ओसारा मुख्य सड़क दिस खुलैत अछि। सड़कक ओहि पारक घर आ ओकर रोशनी हुनकर दिनचर्याक परिचित हिस्सा बनि गेल अछि, यद्यपि ओतयक लोकसँ खास परिचय नहि अछि। ओहि घरक गतिविधिमे परिवर्तन हुनका बेचैन करैत अछि। घरक भीतरक एकाकीपन आ दोसरक जीवनक प्रति संकोच बीच ओ कखनो फाटक धरि जाइत छथि, कखनो प्रश्न मनमे रोकि लैत छथि। धीरे-धीरे सड़कक दुनू कातक लोक एक-दोसराक उपस्थितिक महत्त्व बुझैत अछि। अन्तमे अपन ओसाराक बत्ती जरैत छोड़ि देब शिवकान्त बाबूक छोट, किन्तु अर्थपूर्ण उत्तर बनैत अछि।

कथा १२ · नाम कटबाक सूचना

रघुनाथ मिश्रक मृत्युक आठ मास बाद घरक सरकारी अभिलेखसँ हुनकर नाम हटेबाक प्रक्रिया शैलेन्द्रकेँ पूरा करय पड़ैत अछि। कागज पर ई साधारण संशोधन अछि, मुदा घरमे पिताक कुर्सी, लाठी आ स्मृतिसँ जुड़ल वस्तु सभ ओहिना पड़ल अछि। प्रमाणपत्र, कार्यालयी प्रश्न आ परिवारक सदस्यसभक नव सूची बनबैत शैलेन्द्र केँ अनुभूति होइत अछि जे अभिलेखमे ककरो नाम कटब आ जीवनसँ ओकर उपस्थिति मेटा देब एक्के बात नहि। नव सूचीमे कमला देवी आ परिवारक अन्य सदस्य बचैत छथि। कथा समाप्त होइत अछि ओसारामे जरैत बत्ती आ दीवार पर पड़ल लाठीक छायाक संग।

कथा १३ · कापीक अन्तिम पन्ना

शिक्षिका सुधा मिश्रकेँ एक छात्रा पल्लवीक कापीक अन्तिम पन्नामे ओकर घरक कठिनाई आ पढ़बाक इच्छाक लिखल पाँति सभ भेटैत अछि। छोट भायक देखरेख, गृहकाज आ विद्यालयक जिम्मेदारी बीच पल्लवी अपन पढ़ाइ बचबैत अछि। सुधाकेँ एहि पाँति सभसँ अपन बचपनक अनुभव सेहो मोन पड़ैत अछि। ओ पल्लवीसँ बात करैत छथि, ओकर परिस्थिति बुझबाक प्रयास करैत छथि आ अधूर काजो आनि देबाक साहस दैत छथि। कापी जाँचबाक मामूली काज बालिकाक मौन संघर्ष बुझबाक अवसर बनैत अछि। कथा शिक्षाक भीतर अंकसँ आगाँ सुनबाक, समय देबाक आ भरोसा जगएबाक महत्त्व देखबैत अछि।

कथा १४ · आमक सूखल डारि

मालती पैतृक घरक बिक्रीक पूर्वसन्ध्या पर पहुँचैत अछि आ आँगनक आमक पुरान डारि कटल देखि दुखी होइत अछि। भाइ प्रभाकर बतबैत अछि जे डारि भीतरसँ खोखर भऽ खतरनाक भेल छल। घरक सामान समेटैत दुनू केँ माए-बाबूक जीवन, बाल्यकाल आ अपन-अपन स्मृति मोन पड़ैत अछि। घर राखबाक व्यावहारिक जिम्मेदारी उठेबा लेल मालती तैयार नहि अछि, मुदा घर बेचब स्वीकारब सेहो सहज नहि। घरक रजिस्ट्रीक बाद ओ माएक लोहेक छोट डिब्बा अपन संग लऽ जाइत अछि। पछाँ नहि मुड़बाक ओकर निर्णय घरक स्मृतिसँ मुक्ति नहि, बदलल जीवनक कठोर सत्य स्वीकार करबाक सङ्केत अछि।

कथा १५ · बेरोजगार दुपहरिया

अनिरुद्ध बेरोजगारीक दिनसभ चौकक लखनक चाह-दोकान पर बितबैत अछि। नौकरीक परीक्षा, परिणामक प्रतीक्षा आ घरक अपेक्षा ओकर आत्मविश्वासक परीक्षा लैत अछि। दोकानपर बातचीत आ एक बालिका निधिक पढ़ाइ सँ जुड़ल प्रसंग ओकरा अपन उपयोगिता पर फेर सोचय लेल बाध्य करैत अछि। ओ जानैत अछि जे असफलताक भय वास्तविक अछि, मुदा ओकर कारण रोजक प्रयास छोड़ि देब समाधान नहि। दुपहरियाक अन्तमे नौकरीक स्थिति अथवा परिणाम नहि बदलैत अछि। तथापि ओ चाह-दोकान सँ उठि सड़क पार करैत पुस्तकालयक बाट पकड़ैत अछि। एहि मामूली निर्णयमे ठहरल जीवनक भीतर आगाँ बढ़बाक इच्छा भेटैत अछि।

कथा १६ · फोन नहि आयल

मधुबनीमे असगरे रहैत गोपाल बाबू प्रत्येक रविवार बेंगलुरुमे बसल बेटा नीरजक फोनक प्रतीक्षा करैत छथि। एक दिन निर्धारित समय पर फोन नहि अबैत अछि, तऽ हुनकर पूरा दिन प्रतीक्षा आ आशङ्कामे बीतैत अछि। पत्नी शैलजाक मृत्यु बाद बेटाक साप्ताहिक बातचीत हुनकर दिनचर्याक आधार बनि गेल अछि। धीरे-धीरे ओ घरक पिछुआरिमे पौधा आ माटिसँ जुड़ल काजमे ध्यान लगबैत छथि। अगिला रविदिन फोन बजैत अछि, मुदा ओ पहिने

अमरूदक पौधाक मेड़ पूरा करैत छथि, तखन फोन उठबैत छथि। प्रतीक्षासँ परे अपन दिनक अर्थ खोजबाक एहि परिवर्तनमे कथा सम्पन्न होइत अछि।

कथा १७ · छोट पुरस्कार

शशिकान्त मिश्रकेँ स्थानीय साहित्य परिषद्सँ साहित्य-सम्मान भेटबाक समाचार अबैत अछि। पुरान लेखनक मान्यता हुनका प्रसन्न करैत अछि, मुदा समारोहक औपचारिकता, भाषण आ तसवीरक बीच ओ अपन लिखनाइ लगभग छोड़ि देबाक सत्य अनुभव करैत छथि। बादमे एक बच्चीक सरल प्रश्न—ओ आब किएक नहि लिखैत छथि—हुनका पुरस्कारक प्रशंसासँ बेसी भीतर धरि छूबैत अछि। घर घुरि ओ डायरीमे एहि प्रश्नक उल्लेख करैत छथि आ बहुत दिन बाद एक नब पाँति लिखैत छथि। पाँति हुनका पूरा पसिन नहि पड़ैत, मुदा ओ ओकरा काटैत नहि छथि। पुरस्कार लेखकीय जीवनक अन्तिम मोहर नहि, पुनः आरम्भक प्रेरणा बनैत अछि।

कथा १८ · नव पड़ोसी

सरस्वती देवीक बगलमे पाँच बरखसँ बन्द घरमे अभिनव आ नीलिमाक परिवार आबि बसैत अछि। आरम्भिक संकोचक बाद रोजक छोट-छोट सहायता, बीमारीक समय दवा आनब, बगियाक धनियाँ आ घरेलू बातचीत सँ परिचय अपनापनमे बदलैत अछि। सरस्वती देवीक अपन सन्तान दूर अछि, आ नब पड़ोसीसँ बनल सम्बन्ध हुनकर एकाकी दिनमे नब गति अनैत अछि। किछु मास बाद ओ परिवार फेर घर खाली कऽ चलि जाइत अछि। फाटक फेर बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा सरस्वती देवीक बगियामे रोपल-पालल हरियर पात रहि जाइत अछि। कथा अस्थायी पड़ोसक स्नेह आ बिछोहक शान्त अनुभूति अछि।

कथा १९ · कुर्सीक चरमराहट

रामलोचन यादव पुरान नाली-योजनाक कागजक बहाने पंचायत भवन पहुँचैत छथि। असलमे एहि भवन आ ओतयक पुरान कुर्सी सँ हुनकर सार्वजनिक जीवनक कतेको स्मृति जुड़ल अछि। बदलबैत व्यवस्था, नव जिम्मेदार व्यक्ति आ पुरान परिचित भोला-रघुनन्दन सँ बातचीतमे ओ अनुभव करैत छथि जे समयक संग अपन स्थान बदलैत अछि। कुर्सीक

चरमराहट हुनका पुरान अधिकार आ ओहि पदसँ दूर होएबाक अनुभूति दैत अछि। ओ धीरे-धीरे अपन बात कहबाक बदला दोसरक बात ध्यानसँ सुनय लगैत छथि। अन्तिम दृश्य मे भोलाक कथन फेर सुनबाक हुनकर आग्रह एहि आन्तरिक परिवर्तनक सङ्केत अछि।

कथा २० · सबेरे सात बजे

सेवानिवृत्त शिक्षक रघुनाथ झा एखनहुँ पहिने जकाँ भोरमे उठैत छथि। बरखों तक सबेरे सात बजलाक अर्थ विद्यालयक दिशा मे निकलनाइ छल। आब घरक ओसारा, चाह, साइकिल, घरेलू काज आ पत्नी कमला देवीक संग बितल क्षण हुनकर नव दिनचर्या बनबय लगैत अछि। बीच-बीचमे विद्यालयक घंटी आ पुरान विद्यार्थीसभक स्मृति हुनका अपन पुरान भूमिकामे घुरा लैत अछि। ओ घरक छोट-छोट वस्तु आ समय केँ ध्यान सँ देखबाक सीखैत छथि। अन्तमे सात बजैत घंटी सुनि हुनकर पएर क्षणभरि दरबज्जा दिस बढ़ैत अछि, मुदा ओ घड़ी देखबा नहि उठि चाहक कप हाथमे बैसि रहैत छथि।

कथा २१ · दू टिकट

रामविलास चौधरी बसमे प्रायः संग-संग दू टिकट किनैत छथि, यद्यपि यात्रा असगरे करैत छथि। महेश टिकट-विक्रेता सहित आन लोक एहि आदतक कारण बूझि नहि पबैत अछि। एक दिन पटना मेडिकल जाएवाली एक स्त्री आ ओकर बीमार बच्चाकेँ सीट चाही, तखन रामविलास अपन दोसर टिकट ओकरा दैत छथि। यात्रामे ओ बहुत पहिनेक एक अनजान स्त्रीक सहायता स्मरण करैत छथि, जकर कारण एक बालिकाक भविष्यक बाट खुलल छल। एहि अनुभवक स्मृतिमे ओ दोसर सीट किनबाक आदत बनौने छथि। अगिला मास फेर दू टिकट माँगैत छथि; बगलमे कियो एखनहुँ नहि अछि, मुदा सम्भावना खुलल अछि।

कथा २२ · कंगनक डिब्बा

मालती देवी मृत्युसँ पहिने बेटी सुमित्राकेँ नीला मखमलक डिब्बा दऽ गेलीह आ कहलनि जे नन्दिनीक विवाहसँ सात दिन पहिने खोलब। डिब्बाक रहस्यक खोज सुमित्राकेँ हरिलाल लग पहुँचबैत अछि। ओतय बुझाइत अछि जे माए आ बाबू रमेश्वर झा बरखों धरि किस्त जमा कऽ कंगन बनबौने छथि। माएक मृत्यु बादो बाबू ओहि संकल्पकेँ पूरा करैत रहलाह।

विवाहक दिन कंगन नन्दिनीकेँ भेटैत अछि। डिब्बामे बचल रसीदसभ पर माता-पिताक अलग-अलग हस्ताक्षर हुनकर साझा स्नेह आ दीर्घ त्यागक साक्षी बनैत अछि।

कथा २३ · एक रुपैया कम

बरही बजारक पुरान किराना-दोकानक मालिक गिरीश साह हिसाबक एक-एक पाई मिलबय लेल प्रसिद्ध छथि। फुलकली देवीक नाम पर बाकी एक रुपैयाक प्रविष्टि हुनका व्यथित करैत अछि। बही, खुदरा आ ग्राहकसँ भेल बातक बीच ओ एक रुपैयाक अन्तर बुझबाक प्रयत्न करैत छथि। छोट रकमक विवाद हुनका व्यावसायिक कठोरता आ मानवीय स्मृतिक सम्बन्ध पर सोचय लेल बाध्य करैत अछि। हिसाब अन्ततः पूरा होइत अछि, मुदा एहि घटनासँ हुनका बुझाइत अछि जे बहीक अंकसँ बेसी महत्त्वपूर्ण लोकक संग जोगायल विश्वास आ स्मृति अछि। खाली खुदरा-कटोरी देखि हुनका अपन पुरान व्यवहार नव ढङ्ग सँ बुझाइत अछि।

कथा २४ · फोटो स्टूडियो

बेंता चौकक ‘ज्योति फोटो स्टूडियो’क मालिक पंकज झा मोबाइलक समयमे फोटो खिंचबाक बदलैत जरूरत देखैत छथि। पुरान ग्राहक अनिरुद्ध आ शैल देवीक फोटो बनबैत हुनका अनुभव होइत अछि जे तसवीर केवल चेहरा ठीक करबाक वस्तु नहि, व्यक्तिक जीवनक साक्ष्य सेहो अछि। ककरो चिह्न, चश्मा वा झुर्री हटबैत चित्र सुन्दर बनि सकैत अछि, मुदा ओकर अपन पहिचान कमि सकैत अछि। एहि अनुभूतिक प्रभाव पंकजक अपन परिवार पर पड़ैत अछि। अन्तमे ओ अपन बाबूक फोटो हुनकर वास्तविक चश्मा, उज्जर केश आ माथक रेखासहित खींचैत छथि।

कथा २५ · लाल स्वेटर

महिला बुनकर सहकारीमे उषा देवी तैयार स्वेटरसभक नाप आ गुणवत्ता जाँचैत छथि। लाल स्वेटरक नाप पर्चीसँ छह इंच कम निकलला पर ओ ओकरा अस्वीकार करैत छथि, मुदा बनौनिहार गीता अपन पक्ष पर अडिग रहैत छथि। ग्राहक सुलेखा देवी अपन बेटा चन्दनक संग एला पर नापक पाछाँक वास्तविक आवश्यकता सामने अबैत अछि। नियम,

कारीगरक अनुभव आ ग्राहकक देहक बीचक अन्तर स्पष्ट होइत अछि। उषा देवी मानैत छथि जे एहि प्रसंगमे गीता पर्चीसँ बेसी ठीक बुझने छलीह। अन्ततः अभिलेखमे नब पाँति जुड़ैत अछि; कथा नियमक उपयोगिता संग मानवीय सुनबाक आवश्यकता देखबैत अछि।

कथा २६ · चाबी

चौदह बरख सँ एक घरमे रहैत कमला देवी आब सामान बान्हि दोसर ठाम जाए रहल छथि। ओहि घरमे घरेलू जीवनक संग बच्चासभक साँझक पढ़ाइ सेहो चलैत रहल अछि। घरमालिक हरिमोहन बाबू आ कमलाक बातचीतमे पुरान सहायताक स्मृति उभरैत अछि। कमला अपन निवास छोड़ैत छथि, मुदा पढ़ाइक क्रम समाप्त नहि होए, एहि लेल चाबी आ कापी नव हाथमे पहुँचबैत छथि। अन्तमे छोट कोठलीमे रिंकी बच्चीसभक संग पढ़ाइ शुरू करैत अछि आ नब तारीख लिखैत अछि। मुख्य फाटक बन्द होइत अछि, मुदा गलीक छोट दरबज्जा खुलल रहैत अछि—साझा काजक निरन्तरताक रूपमे।

कथा २७ · दस मिनट

ललिता देवी दरभंगा स्टेशन पर पटना जाएवाली गाड़ी पकड़य दौड़ैत छथि। भानजी रेणुक कागज सत्यापन लेल पहुँचेनाइ अत्यन्त जरूरी अछि। प्लेटफॉर्म, सीढ़ी, झोरा आ समयक भाग-दौड़मे हुनकर भेट युवक शशांकसँ होइत अछि, जे अपन कागज लऽ ओही गाड़ी दिस जा रहल अछि। छोट-छोट सहायता आ बातचीतमे दुनू यात्राक उद्देश्य स्पष्ट होइत अछि। अन्तिम क्षणमे जरूरी लिफाफा सही हाथमे पहुँचैत अछि, आ ट्रेन अपन समय पर चलि जाइत अछि। दस मिनटक हड़बड़ीमे अनजान लोकक बीच भरोसा आ सहयोगक सम्बन्ध बनैत अछि; अन्तमे दुनू हलुक झोरा आ खाली हाथक भिन्न अनुभूति संग धीरे चलैत छथि।

कथा २८ · अन्तिम ग्राहक

रामसेवक ठाकुर अपन पुरान केश-कर्तन दोकान बन्द करबाक अन्तिम दिन सामान समेटैत छथि। पुरान कंघी, कैंची, आइना आ दोकानक बोर्ड हुनकर दीर्घ श्रमजीवनक साक्षी अछि। शिष्य नन्दू एहि वस्तु सभक भावी उपयोगक चिन्ता करैत अछि। दिनक अन्तिम ग्राहक मोन्टूक बाल काटैत समय गुरु-शिष्यक सम्बन्ध आ सेवा-कौशलक स्मृति उभरैत

अछि। रामसेवक अन्तिम दिनो तय शुल्क बदलैत नहि छथि। दोकानक शटर बन्द होइत अछि, मुदा नन्दूक हाथमे बचल उज्जर कपड़ाक गठरी सँ बुझाइत अछि जे एक व्यवसाय बन्द भेलाक बादो ओकर हुनर आ अपनापन दोसर हाथमे जीवित रहि सकैत अछि।

कथा २९ · टूटल घड़ी

माधवी कैँ घरमे एक एहन पुरान घड़ी भेटैत अछि जकर काँटा आ अंक उलटा चलैत अछि। पहिने ई ओकरा टूटल वा गलत बनावट बुझाइत अछि। घड़ीक कारीगर बद्री साह आ परिवारक लोकसँ बात कएला पर पता चलैत अछि जे ओकरा विशेष प्रयोजनसँ एना बनाओल गेल छल। बीमार नानीक ओछाओन, कोठलीक पुरान व्यवस्था आ आईनामे देखाइत प्रतिबिम्ब सँ एहि उलटा समयक कारण स्पष्ट होइत अछि। माधवीकैँ बुझाइत अछि जे कोनो वस्तुक अर्थ ओकर देखबाक दिशासँ बदलि सकैत अछि। अन्तमे दीवार पर घड़ी उलटा चलैत रहैत अछि, मुदा आईनामे समय सीधा आगाँ बढ़ैत देखाइत अछि।

कथा ३० · मिठाइक डिब्बा

सीमा देवी घरमे अतिथि लेल एक सुन्दर क्रीम रंगक मिठाइक डिब्बा चाहैत छथि। बेटी मृणाल कहैत छथि जे स्वाद मुख्य अछि, मुदा सीमा देहाती-सामाजिक मान-सम्मानक चिन्तामे महँग डिब्बा लैत छथि। डिब्बाक नीचाँ चिन्हित नम्बर आ ओकर जमा रुपैयाक व्यवस्था सँ ओहि देखाबाक वास्तविकता बादमे सामने अबैत अछि। बातचीतमे पड़ोसी देवकीनन्दन बाबूक अनुभव हुनका बुझबैत अछि जे सुन्दर डिब्बा घुरि सकैत अछि, मुदा सम्बन्धक मूल्य अलग अछि। अन्तमे डिब्बा दोकान घुरि जाइत अछि आ घरक तीन सदस्य बचल दू पेड़ा बाँटि खाइत छथि। सीमा देवी लेल सुनहला किनारि अपन आकर्षण हरा दैत अछि।

कथा ३१ · छोट विज्ञापन

निलेश झा छओ माससँ नौकरीक खोजमे दर-दर आवेदन दैत अछि। अखबारक ‘काज चाही’ विज्ञापन देबाक विचार पहिने ओकरा संकोच करबैत अछि। छोट विज्ञापन छपलापर लोक हुनका फॉर्म भरबाक, आवेदन लिखबाक आ कागज सम्हारबाक काज लेल सम्पर्क

करय लगैत अछि। ओ प्रत्येक काजमे समय लगबैत अछि आ अपन श्रमक मूल्य नब ढङ्ग सँ बुझैत अछि। फोटोकॉपी-दोकानदार जावेदक संग ओकर काजक सम्भावना बनैत अछि। ओकरा नियमित नौकरी एखन नहि भेटल अछि, मुदा अखबारक छोट काटल विज्ञापन आब असफलताक प्रमाण नहि, अपन हुनरसँ बाट बनएबाक पहिल चिह्न अछि।

कथा ३२ · नील पेन

छात्रवृत्ति नवीकरणक फॉर्ममे ममता अपन माए फूलकुमारी देवीक हस्ताक्षर लऽ अबैत अछि, मुदा विद्यालयक पुरान अभिलेखमे माएक अँगूठाछाप दर्ज अछि। लिपिक विनोद झा दुनू चिह्नक अन्तर पूछैत छथि। एहि प्रश्नक संग स्पष्ट होइत अछि जे फूलकुमारी वयस्क उमेरमे धीरे-धीरे अक्षर सीखलनि आ नील पेनसँ अपन नाँव लिखबाक अभ्यास कएलनि। विद्यालयमे जाँच होइत अछि आ हुनकर पहिचान मानल जाइत अछि। फूलकुमारी अपन लिखल नामक संग पुरान अँगूठाछापक सीमा पार करैत छथि। कथा साक्षरताकेँ केवल औपचारिक शिक्षा नहि, आत्मसम्मान आ अपन पहिचान लिखबाक अधिकारक रूपमे देखबैत अछि।

कथा ३३ · काठक घोड़ा

आँगनबाड़ी केन्द्रक सुशीला एक टुटल-फुटल काठक झुलनिहार घोड़ा मिस्त्री धर्मनाथ लग मरम्मति लेल अनैत अछि। घोड़ाक पुरान रंग, टूटल कान आ ढीला पाटा देखिकए ओकर अनुपयोगी होएबाक आशङ्का होइत अछि। धर्मनाथ पुरान बनावट बुझि आवश्यक मरम्मति करैत छथि। बच्चासभ फेर एक-एक कऽ घोड़ा पर बैसय लगैत अछि। कारीगरकेँ बुझाइत अछि जे पुरान वस्तु केवल संग्रहमे रखबाक लेल नहि, उपयोगमे घुरबाक लेल सेहो होइत अछि। अपन बहीमे ओ वस्तुक इतिहासक विस्तार लिखबाक बदला ‘फेर चलल’ लिखैत छथि। एहि छोट वाक्यमे श्रम, स्मृति आ नब जीवन जुड़ैत अछि।

कथा ३४ · सिलाइ मशीन

पुरान दर्जी शिवनाथ ठाकुरक सम्मान करबाक निर्णय व्यापारी संघ लैत अछि। सभ लोक हुनकर नाम आ दोकानक प्रसिद्धि जानैत अछि, मुदा मशीन चलबैत रहलीह हुनकर पत्नी

सावित्री। समारोहक तैयारीमे ई अनदेखल श्रम सामने अबैत अछि। शिवनाथ स्वीकार करैत छथि जे ग्राहक सँ बात, नाप आ कटाइ हुनकर जिम्मामे छल, मुदा सिलाइक मुख्य श्रम सावित्रीक छल। सार्वजनिक सम्मानमे पत्नीकेँ उचित स्थान देबाक निर्णय होइत अछि। दोकानक पट्ट पर अन्ततः दुनूक नाम जुड़ैत अछि। नीरा मशीन चलबय सीखैत अछि। कथा स्त्रीक अदृश्य श्रमक पहिचान आ परम्परागत कौशलक अगिला पीढ़ी धरि पहुँचनाइ देखबैत अछि।

कथा ३५ · एक जोड़ी जूता

महिला छात्रावासक नव अधीक्षिका मधु झा पुरान सामानक सूची बनबैत एक जोड़ी कारी जूता पबैत छथि। परिचारिका विमला दीदी बतबैत छथि जे ई जूता बरखों सँ जरूरतमन्द छात्रासभक बीच घूमैत रहल अछि। निशा परीक्षा अथवा नौकरीक प्रयोजनसँ ओकर उपयोग करैत अछि आ फेर घुरा दैत अछि। निरीक्षणक समय एकरा ककरो निजी सम्पत्ति मानबाक बदला साझा सामग्रीक रूपमे दर्ज कएल जाइत अछि। जूताक मालिकक नाँव अज्ञात रहब आब समस्या नहि रहैत अछि। अन्तिम दृश्य मे जूता अगिला जरूरतमन्दक प्रतीक्षा करैत अछि; कथा गरिमा, सहयोग आ वस्तुक साझा उपयोगक अर्थ उभारैत अछि।

कथा ३६ · खोआइल पर्स

बस-पड़ावक साइकिल-मिस्त्री रघुवीर मंडलकेँ एक पर्स भेटैत अछि। ओकर भीतर रुपैया आ परिचयपत्रक संग अनेक छोट-छोट कागज पर लोकक नाम आ रकम लिखल अछि। पर्सक मालिक बस-परिचालक देवेन्द्रक खोज करैत रघुवीर बुझैत अछि जे ई पर्चीसभ साधारण उधारीक हिसाब नहि, लोकक परस्पर विश्वासक स्मृति अछि। हिसाब मिलबैत ओकरा अपन देबाक बाकी रुपैयाक बातो मोन पड़ैत अछि। पर्स सही मालिककेँ घुरि जाइत अछि। बादमे रघुवीर छोट रकमक एक नब पर्ची बनबैत कहैत अछि जे पाइ छोट भऽ सकैत अछि, मुदा मोन रखबाक बात छोट नहि होइत अछि।

कथा ३७ · किरायाक कमरा

दरभंगाक शारदा देवीक घरक छोट किरायाक कमरा अनेक विद्यार्थिनीक अस्थायी आश्रय रहल अछि। बेटी किरण नील रजिस्टरमे किराया आ खाली भेल दिनक हिसाब देखैत अछि। पूर्व किरायेदार रीता अपन बचल दू दिनक किराया आगाँक परीक्षार्थी लेल छोड़ि गेल छलीह। एहि क्रममे शिक्षक-परीक्षा देबा आएल सोनमकेँ एक रातिक आश्रय भेटैत अछि। रजिस्टरमे नाम आ तारीख जुड़ैत अछि, मुदा ओहि रातिक किराया दोबारा नहि लेल जाइत अछि। कथा देखबैत अछि जे किरायाक कोठली केवल लेन-देनक स्थान नहि, अजनबी लोकक बीच भरोसा आ अवसर बाँटबाक ठाम सेहो बनि सकैत अछि।

कथा ३८ · बिना नामक पार्सल

माए कौशल्या देवीक मृत्यु बाद अरुण झाक पीयर फाटकवला घरमे बिना भेजनिहारक नामक एक पार्सल पहुँचैत अछि। अरुण आ नीलिमा ओकर भीतरक बन्हन, नाम आ पुरान कागजक सहारे पड़ोसक लोकसभसँ जुड़ल कथा बुझय लगैत छथि। पता चलैत अछि जे कौशल्या देवी अनेक घरक बीच सामान, किताब आ छोट आवश्यक वस्तु भरोसाक आधार पर पहुँचबैत रहलीह। पार्सल कोनो रहस्यमय उपहार नहि, ओहि अधूरा आवागमनक कड़ी अछि। अरुण-नीलिमा बाकी सामान सही लोक धरि पहुँचेबाक जिम्मेदारी लैत छथि। अन्तमे माएक खाली झोरा हुनका कमी नहि, दोसरक लेल बचल जगहक प्रतीक बुझाइत अछि।

कथा ३९ · तस्वीरक पाछाँ

विजयकान्त झाक घरमे टाँगल पुरान पारिवारिक तस्वीरकेँ सभ एक संग जुटल परिवारक स्मृति मानैत अछि। फ्रेमक मरम्मतिक समय ओकर पाछाँक अभिलेख आ नरेश फोटो-सर्विसक पुरान रजिस्टरसँ खुलैत अछि जे तस्वीर अलग-अलग ठाम खिंचल अनेक फोटोक जोड़ि बनाओल गेल छल। पहिने एहि सत्यसँ परिवारक सदस्यसभ विचलित होइत छथि। स्रोत तसवीरसभ देखलापर ओ सभ गौरी देवीक ओहि इच्छाकेँ बुझैत छथि, जाहिसँ दूर-दूर बसल लोक एक चित्रमे संग रहि सकथि। तस्वीर ऐतिहासिक रूपेँ एक बेरक जुटान नहि, अलगावक बीच पारिवारिक एकताक सचेत रचना बनैत अछि।

कथा ४० · दू दीप

पीपरवला गलीमे पक्का बाट आ कच्चा टोला बीच अन्हारक अन्तर अछि। दीपावलीक अवसर पर मंगला काकीक कहला अनुसार एक दीप घरक चौखट पर आ दोसर गलीक मोड़ पर राखल जाइत अछि। नयन पहिने एहि व्यवस्थाकेँ अनावश्यक बुझैत अछि, मुदा अन्हारमे बाट चलनिहार लोकक कठिनाई आ मोड़क इजोतक आवश्यकता ओकरा स्पष्ट होइत अछि। दीपक लेल तेल, बाती आ छोट खर्चक व्यवस्था साझा चिन्ताक विषय बनैत अछि। बादमे मोड़क दीप केवल पर्वक सजावट नहि रहैत अछि। राति घनगर भेलापर कियो ओकरामे फेर तेल दैत अछि; कथा सार्वजनिक बाटक सामूहिक जिम्मेदारी पर केन्द्रित अछि।

कथा ४१ · पछिला पंगति

बिजुली-मिस्त्री माधवकेँ सुरेश बाबूक बेटी अंजलीक विवाहक निमन्त्रण भेटैत अछि आ सजावटक विद्युत्-व्यवस्थाक काज सेहो सौंपल जाइत अछि। समारोहमे ओ कखनो अतिथि, कखनो मजदूर बुझल जाइत छथि। प्रकाशक खराबी ठीक करबाक कारण भोजनक व्यवस्था आ सम्मानक प्रश्न आरम्भ होइत अछि। निमन्त्रण-पत्रक उपस्थिति आ मजदूरीक पावतीक बीच हुनकर सामाजिक स्थान अलग-अलग गिनल जाइत अछि। अन्ततः माधव अपन श्रमक मूल्य लऽ चलि जाइत छथि। हुनकर झोरामे निमन्त्रण आ मजदूरीक पावती एक संग रहैत अछि। कथा विवाहक उजासक पाछाँ श्रमिकक अदृश्य श्रम आ अतिथि-श्रमिकक भेद पर प्रश्न उठबैत अछि।

कथा ४२ · चारि हाथ कपड़ा

विद्यालयक नव सत्रमे नेहाक पोशाक लेल चारि हाथ कपड़ा किनबाक सूची अबैत अछि। रमा देवी बाजारमे कपड़ाक मोल आ नाप मिलबैत छथि, मुदा अलग-अलग चौड़ाइक थानमे एक्के ‘चारि हाथ’ बराबर वस्त्र नहि दैत अछि। दर्जिन विमला, दोकानदार बद्री साह आ विद्यालयक अभिभावक-सभामे एहि अन्तर पर चर्चा होइत अछि। पता चलैत अछि जे पोशाकक पुरान निर्देश ओहि कपड़ाक चौड़ाइ पर आधारित अछि जे आब सभ ठाम समान

नहि। सूची आ रसीदक हिसाब नब ढङ्ग सँ बुझल जाइत अछि। रमा दू भिन्न नापक रसीद सूची संग राखैत छथि, जाहिसँ अगिला बेर भ्रम नहि हो।

कथा ४३ · बाँटल छाँह

फुटपाथ पर रामसागर आ नसीमा खातूनक लगलग ठेला अछि। घामसँ बचबाक लेल साझा जाल लगबैत दुनूकेँ राहत भेटैत अछि, मुदा नगर निकायक आवंटित सीमा पार करबाक नियम सँ जाल हटेबा पड़ैत अछि। लोकहित लेल सार्वजनिक छाँह बनेबाक आवेदन आ कार्यालयी जाँच चलैत अछि। नियमक पर्ची जालकेँ अवैध कहैत अछि, आ साझा उपयोगक सत्यापन सेहो अधूरा रहैत अछि। सरकारी जाल ठेलाक नीचाँ सुरक्षित रहि जाइत अछि, जखन कि बीचक बाट पर घाम ओहिना पड़ैत अछि। कथा कागजी सीमारेखा आ वास्तविक सामूहिक आवश्यकताक बीचक विरोधाभास देखबैत अछि।

कथा ४४ · एक दिनक छुट्टी

सुधा झा घरेलू कामगार मालती देवीक मासिक मजूरीमे कटौती करैत छथि, कारण ओ एक दिन काज पर नहि अयलीह। मुदा मालतीक कार्यदिवस, अतिरिक्त काज आ बदलीमे कएल श्रमक हिसाब स्पष्ट नहि अछि। सुधा आ मालती बातचीत कऽ ओहि दिनक वास्तविक स्थिति मिलबैत छथि। ई प्रश्न उठैत अछि जे घरक कामगारक समय आ छुट्टीकेँ कोन शब्दमे दर्ज कएल जाए। अन्ततः मजूरी आ अनुपस्थितिक व्यवहार स्पष्ट करबाक लेल लिखित पंजी बनैत अछि। मालती अगिला बुध दिनक लेल ‘छुट्टी’ चुनैत छथि, बदली दिन नहि। दूनू अभिलेखमे एक्के अर्थ सँ ‘मंजूर छुट्टी’ लिखल जाइत अछि।

कथा ४५ · जमानतक टीन

साइकिल-मिस्त्री नसीम अंसारीक दोकानमे गोविन्दक पुरान हरियर टीनक बक्सा चारि माससँ जमानत जकाँ राखल अछि। बक्साक ऊपर नाम आ रकम लिखल अछि, मुदा ओकर भीतरक वस्तु आ मालिकक वास्तविक परिस्थिति सभकेँ स्पष्ट नहि। गोविन्द अन्ततः पत्नी आ बच्ची संग घुरैत छथि। बक्सा वापस लेबाक समय पुरान लेन-देनक संग मानवीय भरोसाक बात सामने अबैत अछि। नसीम परिवारकेँ सामान लऽ जाएबामे सहायता करैत

छथि। बसक छत पर हरियर टीन लदैत अछि आ दोकानमे ओकर पड़ल ठाम पर साफ चौकोर निशान बचैत अछि। कथा गरीबीक बीच विश्वास आ जमानतक अर्थक सूक्ष्म चित्रण अछि।

कथा ४६ · आधा बोरा

बटाइदार रामलोचन यादव आ खेतमालिक शशिभूषण झाक बीच धानक उपज आधा-आधा बाँटबाक समझौता अछि। खलिहानमे तराजू पर बोरा तौलल जाइत अछि, मुदा भीजल आ सुखल धानक वजनक अन्तर सँ बराबरी कठिन होइत अछि। तुलसी साहक हिसाब आ दानाक नमी देखैत दुनू पक्ष फेर गणना करैत छथि। माप सही रखबाक ई प्रयासमे श्रम, भरोसा आ प्राकृतिक परिस्थितिक प्रश्न उठैत अछि। अन्ततः धान बाँटल जाइत अछि। खलिहानक बचल छोट हिस्सा मुर्गीसभकेँ देल जाइत अछि; तराजू हटि गेलाक बाद ओतय पहिल बेर कोनो काँटा नहि हिलैत अछि।

कथा ४७ · दोसर दर

आशा आरोग्य केन्द्रमे निःशुल्क स्वास्थ्य-शिविरक रोगी लेल ‘दोसर दर’क संकेत लगाओल जाइत अछि, जखन कि नियमित रोगीक प्रवेश मुख्य दरसँ अछि। नीलम आ स्वास्थ्यकर्मी सभ देखैत छथि जे एहि विभाजनसँ लोकक बीच अनावश्यक भ्रम आ अन्तर बनैत अछि। एक समय दरक भेद हटला पर रोगीसभक आवागमन सहज भऽ जाइत अछि। डॉक्टर नेहा सेहो दू प्रवेशक आवश्यकतापर प्रश्न करैत छथि। तथापि अगिला शिविरक तैयारी-सूचीमे पुरान नियम दोहराओल जाइत अछि। नीलम ओहि पाँतिक बगलमे प्रश्नचिह्न लगा दैत छथि। कथाक अन्त कोनो सरल समाधान नहि, व्यवस्था बदलबाक विचारक आरम्भ अछि।

कथा ४८ · पाँच कुर्सी

विद्यालयक बैठक लेल पाँच लाल कुर्सी पर पदाधिकारीसभक नामवला पर्ची राखल जाइत अछि। तेज बरखाक कारण निर्धारित अतिथि पहुँचि नहि पबैत छथि। बैठकक बीच उपस्थित लोक, कर्मचारी आ ग्रामवासी सभक वास्तविक आवश्यकता पदानुक्रमित आसन-व्यवस्थासँ

बेसी महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। एक भीजल साड़ीक निशान कुर्सी पर रहि जाइत अछि, जकरा बादमे समेटि राखल जाइत अछि। अध्यक्षक अनुपस्थिति मे बैठक सम्पन्न भऽ जाइत अछि। प्रतिवेदन बनबैत नन्दकिशोर 'बैठक सम्पन्न' लिखैत छथि, मुदा 'बैठबाक व्यवस्था'क खाना खाली छोड़ैत छथि। कथा कुर्सीक औपचारिक प्रतिष्ठा आ मनुष्यक वास्तविक उपस्थितिक अन्तर उजागर करैत अछि।

कथा ४९ · धोबीक निशान

प्रभा देवी धुलल कपड़ाक गठरी खोलि साड़ी गिनैत छथि आ एक वस्तुक हिसाब पर संशय उठैत अछि। धोबीक घर, छोटनक कापी आ शशिकलाक संग भेल बातचीतमे गिनतीक गलतीक प्रश्न धीरे-धीरे विश्वासक संकट बनि जाइत अछि। कपड़ाक खोज आ पुनर्गणना होइत अछि, मुदा लोकक बीच उच्चरित शङ्का अपन अलग निशान छोड़ि जाइत अछि। अन्ततः कपड़ाक सही संख्या पाँच दर्ज होइत अछि। धोबी भोला कपड़ाक भीतर छोट नील चिन्ह लगबैत अछि, जाहिसँ आगाँ पहचानमे भूल नहि हो। मुदा कथाक अन्तिम टिप्पणी स्पष्ट करैत अछि जे गलीमे लागल अविश्वासक निशान कपड़ाक चिन्हसँ बेसी गहिर अछि।

कथा ५० · मजदूरीक घंटा

निर्माणाधीन भवनक फाटक पर मजूरसभक प्रवेश-निर्गमक समय चौकीदार कैलाश लिखैत छथि। ठेकेदारक मजदूरी-पर्चीमे काजक समय अलग दर्ज भेला सँ बुधन आ आन मजदूरक मासिक मजदूरी कमि जाइत अछि। फाटक पर पहुँचनाइ, औजार लेबाक पाँतिमे ठाढ़ रहनाइ आ वास्तविक काज शुरू होएबाक बीचक मिनट सभ गणनामे कतय जाएत, एहि पर विवाद उठैत अछि। दू अलग रजिस्टर आ मालिक-विनोद साहक संग बातचीत सँ पुरान व्यवस्था पर प्रश्न होइत अछि। नब हिसाबमे मजदूरक समयक पहचान स्पष्ट कएल जाइत अछि। भवन बनबाक संग ओकरा बनौनिहार लोकक अदृश्य समय सेहो मान्यता पबैत अछि।

कथा ५१ · लाल मुहर

विधवा शकुन्तला देवी पेंशनक आवेदन लेल आवश्यक कागज नील खोलमे राखि प्रखण्ड कार्यालय पहुँचैत छथि। प्रमाणपत्र आ आवेदन सभ उपलब्ध रहितहुँ लाल मुहरक आवश्यकता हुनका एक मेजसँ दोसर मेज धरि दौड़बैत अछि। बेटी पायल हुनकर यात्राक खर्च आ औषधिक हिसाब देखैत अछि। अधिकारीसभक पूछताछक बीच प्रक्रिया आगाँ बढ़ैत अछि आ आवश्यक मुहरक स्थिति स्पष्ट होइत अछि। मुदा कागज पूरा होएब पेंशन भेटि जाएबाक समान नहि अछि। घर घुरला पर शकुन्तला कहैत छथि जे पहिल पेंशन एला परहि शेष हिसाब बुझल जाएत। पायल खर्चक रेखाक नीचाँ खाली जगह छोड़ि दैत अछि।

कथा ५२ · साझा मेड़

बरखाक बाद गोपाल यादव आ रघुनन्दनक खेतक बीचक मेड़ पर घास कटबाक प्रश्न उठैत अछि। मेड़ सीमा सेहो अछि, मुदा ओकर दूब, माटि आ पानिक उपयोग दुनू खेतसँ जुड़ल अछि। घास पर अधिकारक चर्चा धीरे-धीरे सीमा, श्रम आ जिम्मेदारीक बहस बनैत अछि। छोट-छोट नाप आ पुरान बातक बीच दुनू अपन-अपन भूल बुझबाक प्रयास करैत छथि। अन्तमे मेड़ पर उगल घासक प्रश्न निस्तेज पड़ैत अछि आ माटिक साझा उपयोगिता सामने अबैत अछि। कथा स्पष्ट करैत अछि जे अलग खेतक बीचक मेड़ दुनू पक्षक पानि सम्हारैत साझा जिम्मेदारी सेहो बनैत अछि।

कथा ५३ · एक थारी भात

‘जनक भोजनालय’क मालिक जगदीश साह थारीक दाम आ उधारीक हिसाब कठोरतासँ रखैत छथि। एक जरूरतमन्द ग्राहक मुरलीक भोजनक प्रश्न हुनका पुरान नियम पर फेर सोचय लेल बाध्य करैत अछि। मुरली सेहो अपन कापीमे हिसाब रखैत अछि, ई जानि जगदीश समझैत छथि जे सहायता गरिमा बचौने सेहो दऽ सकैत अछि। ओ निश्चित सीमाक भीतर बाकी रकम लिखि भोजन देबाक व्यवस्था करैत छथि, मुदा अभिलेखमे ओकर उल्लेख अनिवार्य रखैत छथि। अन्तमे भोजनालयक बहीमे सभ थारी स्पष्ट दर्ज रहैत अछि।

कथा दान आ उधारीक बीच श्रमजीवीक आत्मसम्मान आ व्यवस्थित सहयोगक स्थान देखबैत अछि।

कथा ५४ · किरायाक ठेला

सरिता देवी प्रतिदिन भोला साहसँ पाँच नम्बरक ठेला किराया पर लैत छथि। ठेलाक दैनिक सत्तर रुपैयाक किराया हुनकर व्यापारक समय आ कमाइक हिसाब प्रभावित करैत अछि। एक दिन ठेला दोसर व्यक्तिकेँ देल जाएबासँ सरिता आ भोला बीच प्रश्न उठैत अछि जे पूरा दिनक किराया देलाक बाद खाली समयक अधिकार ककरा अछि। बातचीत आ गिनती सँ ठेलाक उपयोगक समय बाँटबाक सम्भावना बनैत अछि। बहीमे नब ढङ्ग सँ हिसाब रखबाक आरम्भ होइत अछि। एक्के चारि चक्का आ एक्के उज्जर पाँच नम्बर रहितहुँ सरिताक लेल समयक आर्थिक मूल्य आब स्पष्ट भऽ उठैत अछि।

कथा ५५ · तीन गिलास पानी

निजी चिकित्सालयमे रोगी आ सहचर लेल पानि निःशुल्क अछि, मुदा स्टीलक गिलास लेल बीस रुपैयाक जमानत देब पड़ैत अछि। सीमा देवीकेँ तीन गिलासक उपयोग आ जमानत घुरेबामे अनेक मेज पर जाए पड़ैत अछि। कतार, पर्ची आ समयक गिनती सँ निःशुल्क सुविधाक वास्तविक कठिनाई सामने अबैत अछि। ओ एहि व्यवस्थाक उलझनक प्रश्न उठबैत छथि। बादमे व्यवस्था एना बदलैत अछि जे गिलास घुरौने पर रुपैया लेबाक प्रक्रिया सरल होइत अछि। अन्तिम दृश्य मे सीमा बुझैत छथि जे पानि पहिनो निःशुल्क छल; असल परिवर्तन जमानत घुरेबामे लगैत अनावश्यक श्रम आ समयक कमी अछि।

कथा ५६ · नामक पाँति

बाढ़ि-शिविरक उपस्थितिपंजी घरक मुखियाक नाम पर सदस्यसभक संख्या दर्ज करैत अछि। मंजरी देवी राहत वितरणक दौरान बुझैत छथि जे कुल गिनतीमे हुनकर अपन नाम उचित स्थान पर नहि अछि। परिवारक सूची, सदस्यक पहचान आ स्थायी अभिलेख बदलएबाक प्रश्न हुनका अनेक कार्यालयी चरण पार करबैत अछि। अस्थायी राहत-पाँजिमे हुनकर नाँव लिखल रहितहुँ स्थायी घर-पाँजिमे जगह बनेबामे बेसी समय लगैत अछि।

बाढ़िक पानि बहुत पहिने उतरि गेलाक बादो अभिलेखक सुधार चलैत अछि। कथा देखबैत अछि जे राहतक गिनतीमे उपस्थित मानल जाएब आ अपन नामसँ दर्ज होएब अलग अधिकार अछि।

कथा ५७ · फसलक नमूना

धान-खरीद केन्द्रमे किसानसभक बोरा पहिने निबन्धन, फेर गुणवत्ता-जाँच आ तौलसँ गुजरैत अछि। नमूना लेबाक क्रम आ तौलसँ पहिने दाना निकालबाक ढंग पर किसान किरण प्रश्न उठबैत छथि। केन्द्रक कर्मचारी शशिभूषण आ अन्य लोकक संग चर्चा होइत अछि जे नमूनाक वजन कोन पक्षक हिस्सा मानल जाए। नियम बदलि नमूना तौलक बाद लेबाक व्यवस्था बनैत अछि। साँझ धरि नब क्रममे खरीद होइत अछि। धान, कटोरी, परखी आ तराजू वएह रहैत अछि, मुदा मुट्ठीभरि दानाक समय बदलला सँ किसानक हिस्साक हिसाब न्यायसंगत बनबाक सम्भावना बढ़ैत अछि।

कथा ५८ · छोट छज्जा

किरायेदार ममता देवी अपन कोठलीक दरबज्जा पर बरखाक पानि रोकबाक लेल छोट टीनक छज्जा लगबबैत छथि। घरमालिक शिवकान्त अनुमति आ दीवारक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। पेचक स्थान, पानिक ढलान, पलस्तर आ नालीक दिशा जाँचला पर बुझाइत अछि जे किरायेदारक सुविधा आ मकानक सुरक्षा एक-दोसरासँ अलग नहि। मिस्त्रीक सहायतासँ सुधारक बाट निकलैत अछि। छज्जा ममताक सामान रहैत अछि, दीवार शिवकान्तक सम्पत्ति; मुदा बरखाक पानि दुनूक जिम्मेदारी जोड़ि दैत अछि। कथा स्वामित्वक सीमा आ साझा रखरखावक व्यावहारिक सचाई उजागर करैत अछि।

कथा ५९ · साबुनक टिकिया

महिला छात्रावासमे प्रत्येक छात्राकेँ मासमे एक टिकिया नहबाक साबुन भेटबाक नियम अछि। वितरणक हिसाब मिलबैत एक टिकियाक कमी सामने अबैत अछि, आ आरम्भमे प्रश्न उठैत अछि जे साबुन के लऽ गेल। अधीक्षिका कौशल्या देवी, परिचारिका आ छात्रासभ सूची जाँचैत छथि। जाँचसँ स्पष्ट होइत अछि जे वस्तु चोरी वा गुम नहि भेल छल; एक

छात्राक नाम वितरणपंजीमे छूटि गेल छल। नब छात्राक उपस्थितिक संग कुल गिनती सुधरल जाइत अछि। कथा नियमक बराबरी आ अभिलेखमे व्यक्तिक सही स्थानक सम्बन्ध रेखांकित करैत अछि—उनचास नाम लिखब टिकियाक संख्या जतेकहि आवश्यक अछि।

कथा ६० · हिसाबसँ बाहर

शरद हाट समाप्त होएबाक राति मसाला-दोकानदार रामलोचन साह आमदनी आ खर्च जोड़ैत छथि। परिवारक सदस्य सुषमा, माया देवी आ आन लोक दुकान सम्हारब, सामान सजाएब आ घरक काज करबामे श्रम देने छथि, मुदा नगद बहीमे ओकर मूल्य नहि देखाइत अछि। बहस होइत अछि जे जे श्रमक अलग मजदूरी नहि देल गेल, ओहि श्रमकेँ लाभक हिसाबसँ बाहर रखब उचित अछि कि नहि। अन्ततः नगद बचतक पाँतिक संग पारिवारिक श्रमक सूची सेहो लिखल जाइत अछि। पेटीक रुपैया कम नहि होइत, मुदा लाभक संख्या अपन पाछाँक अदृश्य श्रम सँ आब अलग नहि रहैत अछि।

कथा ६१ · भित्तिक दोसर जनम

बरखासँ पहिने रामदुलारी देवीक घरक पुरान भित्ति मरम्मतिक आवश्यकता देखबैत अछि। भित्ति पर बनल परम्परागत चित्र उतारल गेल तऽ स्मृति नष्ट होएबाक चिन्तासँ अनुपमा विचलित होइत छथि। ओ पहिने चित्रक मुख्य रूप, रंग आ रेखासभक अभिलेख बनबैत छथि। तकर बाद मिस्त्री चन्देश्वर पुरान गील लेप हटबैत छथि आ भित्तिक पुनर्निर्माण होइत अछि। रामदुलारी देवी अनुपमाकेँ केवल पुरान रूप नकल करबाक बदला अपन हाथसँ नब चित्र बनएबाक उत्साह दैत छथि। नब भित्तिक चित्र पूरा भेलाक बाद अनुपमा बचल खाली स्थानमे फोटो देखबा बिना रेखा खींचय लगैत छथि। परम्परा संरक्षणक संग नब सृजन बनि उठैत अछि।

कथा ६२ · दू रंगक सूत

बुनकर नीरा अठारह हाथ नील कपड़ा बुनलाक बाद देखैत अछि जे नवम हाथक बाद रंगक गहराइ बदलि गेल अछि। एक्के नामसँ मँगाओल सूतक खेप वास्तवमे रंगमे समान नहि। ग्राहकक निर्धारित बीस हाथक आदेश, मजदूरी आ वस्त्रक गुणवत्ता पर प्रश्न उठैत अछि।

सावित्री देवीक सलाहसँ नीरा कपड़ाक भिन्न हिस्सामे चिन्ह लगबैत अछि आ नियम सुधारबाक बात करैत अछि। तत्काल आदेशक पूरा पारिश्रमिक नहि भेटैत, मुदा भविष्यक लेल धागाक खेप पहिनहि जाँचबाक व्यवस्था बनैत अछि। कथा देखबैत अछि जे दोष भेटलाक बाद चिन्ह लगेनाइ मात्र पर्याप्त नहि; काज शुरू करबासँ पहिने स्रोतक अन्तर बुझब आवश्यक अछि।

कथा ६३ · बगियाक बाट

पिताक मृत्यु बाद शशिधर झाकेँ भेटल बगियामे गाछक बीच एक टेढ़-मेढ़ पुरान बाट अछि। फल ढोएबाक सुविधाक लेल ओ बाट सोझ करबय चाहैत छथि। माप आ नब समतलीकरणसँ किछु दिन सुविधा भेटैत अछि, मुदा बरखा, जड़ि आ पानिक बहाव नब बाटक कमजोरी देखबैत अछि। माए शारदा देवी बुझबैत छथि जे पुरान बाट ऋतु, गाछ आ लोकक आवागमनसँ धीरे-धीरे बनल छल। अन्विता एहि अनुभवक आधार पर नब नक्सा बनबैत छथि। अन्तमे बगियाक टेढ़ापन त्रुटि नहि, पर्यावरण आ उपयोगक दीर्घ अनुभवसँ उपजल ज्ञान बुझाइत अछि।

कथा ६४ · बिनु नाँवक चित्र

विद्यालयक पुरान ओसाराक उज्जर भित्ति पर मंजरी आ रेणु मिलि चित्र बनबैत छथि। धूपक बदलैत चौकोर आकार, गाछ आ छाँह सँ प्रेरित एहि चित्रमे दुनूक रेखा आ रंग परस्पर मिलल अछि। विद्यालयक अभिलेखमे कलाकारक नाम एकटा लिखबाक व्यवस्था हुनकर साझा श्रमकेँ ठीकसँ दर्शा नहि पबैत अछि। चित्रक भूमिका, संशोधन आ सहयोग दर्ज करबाक नब ढंग खोजल जाइत अछि। अन्तमे भित्ति पर बनल इजोत स्थिर रहैत अछि, वास्तविक इजोत आगाँ बढ़ि जाइत अछि। पाँजिक खाली पाँति एहि अन्तर जकाँ सृजनक ओहि हिस्साक स्मरण करबैत अछि जकरा एक नाममे नहि समेटल जा सकैत अछि।

कथा ६५ · सात मिनटक आवाज

सौरभ प्रत्येक बातचीत लेल कापीमे सात विषयक छोट गोल बनबैत अछि। दूर रहनिहार माए रमा देवीसँ फोन पर बात करबाक समय सीमित अछि, ताहि लेल ओ गणित, नानीक

स्वास्थ्य, अपन जूता आ रोजक छोट प्रश्न व्यवस्थित करैत अछि। बातचीतक संग-संग ओकरा माएक काज, रेलयात्रा आ व्यस्तताक एहन पक्ष बुझाइत अछि जे पहिने प्रश्न-सूचीमे नहि अटैत छल। मौन सेहो संवादक हिस्सा बनैत अछि। सौरभ सातम गोलमे कखनो चुप्पीक उल्लेख करैत अछि, कखनो खाली छोड़ि दैत अछि। कथा समय-सीमा सँ घेरल मातृ-पुत्र सम्बन्धमे सुनबाक, प्रतीक्षाक आ शब्दसँ बाहरक स्नेहक अर्थ खोजैत अछि।

कथा ६६ · माटिक कटोरा

कुम्हार दीपककेँ शहरक भोजनालय लेल सय एक्के आकारक माटिक कटोरा बनएबाक आदेश भेटैत अछि। हाथसँ बनल कटोरामे स्वाभाविक अन्तर रहैत अछि, जखन कि ग्राहककेँ ढेरी लगबैत आ परोसैत समय सुविधा चाही। दीपक आ दादा रामचरण माप, पियाली आ आकारक अनेक प्रयोग करैत छथि। धीरे-धीरे दुनू बुझैत छथि जे हूबहू रूपक नकलसँ बेसी आवश्यक अछि उपयोगक सीमा आ क्षमता समान रखब। आदेश पूरा होएबाक बादो घरक पुरान कटोरा अपन अलग रूपक कारण निष्फल नहि अछि। कथा हस्तकला, मानकीकरण आ वस्तुक वास्तविक प्रयोजन बीच सन्तुलन खोजैत अछि।

कथा ६७ · छतक तारा

अदिति विज्ञानक अभ्यासमे बीस दिन धरि साँझ एक्के समय आकाशक तारा देखबाक आ अवलोकन लिखबाक संकल्प लैत अछि। मुदा घरक साझा छत पर पापड़, कपड़ा, अचार आ लोकक आवागमन ओकर दृष्टि रोकैत अछि। पहिने ओ एहि व्यवधानसँ चिढ़ैत अछि, तकर बाद परिवारक दैनिक उपयोग, सूर्यक दिशा आ बदलैत समयक सेहो लेखा बनबय लगैत अछि। मंजुला देवीक संग बातचीतमे वैज्ञानिक अवलोकन आ घरक श्रम एक्के छत पर जगह पबैत अछि। अन्तमे अदिति तय करैत अछि जे पहिने पापड़ देखत, फेर तारा; मेघ रहत तऽ मेघ लिखत। कथा जिज्ञासाक विस्तारित दृष्टि अछि।

कथा ६८ · पातर परदा

विवाहक बाद ललिता अमरेशक संयुक्त परिवारमे अबैत छथि। निजता लेल लगाओल पातर परदा घरक ओसारा, दादी सरस्वती देवीक चलबाक बाट आ कोठलीक इजोत बदलि

दैत अछि। परदाक ऊँचाइ, किनारी, हवा आ प्रकाशक प्रश्न घरेलू मर्यादा तथा सुविधा सँ जुड़ि जाइत अछि। ललिता आ घरक लोक बेराबेरी नाप-जाँच कऽ एहन व्यवस्था खोजैत छथि जाहिमे नव दम्पतिक अपन स्थान रहय आ बुजुर्गक आवागमन बाधित नहि हो। अन्तमे बच्ची पिहू नब खुलल बाटसँ भीतर अबैत अछि, आ इजोतक रेखा नहि टूटैत अछि। कथा घरेलू सीमाक परस्पर सहमतिसँ फेर बनबाक प्रक्रिया चित्रित करैत अछि।

कथा ६९ · छाँहक नाप

विद्यालयक पुरान नीमक गाछ भवनक भित्ति मे फाट आ जड़िक दबावक कारण विवादक विषय बनैत अछि। छात्रसभ गाछक छाँह बचाबय चाहैत अछि, जखन कि अभियन्ता आ प्रधानाध्यापिका सुरक्षा आ देवालक मरम्मतिक प्रश्न उठबैत छथि। गाछ, छाँह, जड़ि आ विद्यालयक उपयोगक अलग-अलग नाप लेल जाइत अछि। अन्ततः सुरक्षा-सम्बन्धी निर्णयक संग नब छाँह आ गाछ-पौधा लेल व्यवस्था होइत अछि। मधुरा पुरान नीमक ठाम मात्र नहि तकैत, सूर्यक दिशा आ नब बनैत छाँह कैँ देखैत अछि। नापक पट्टी पर लिखल रहैत अछि जे छाँह फेर नापल जाएत। कथा प्रकृतिक संरक्षण आ सामूहिक सुरक्षाक कठिन सन्तुलन देखबैत अछि।

कथा ७० · दूनू घरक दीप

चित्रक कक्षामे अन्वीकैँ ‘हमर घरक दीप’ विषय पर चित्र बनएबाक अछि। ओकर जीवन माए आ बाबूक दू अलग घरक बीच बँटल अछि, ताहि लेल एकटा घर चुनब ओकरा उचित नहि लगैत अछि। कार्तिकक पर्वमे ओ दुनू घरक रीति, सफाइ, अरिपन आ दीपक अनुभव करैत अछि। अपन सम्बन्धकैँ कोनो एक घरक विरोधमे देखबाक बदला ओ दूनूक स्थान स्वीकार करैत अछि। अन्ततः चित्रमे बाम घरक दुआर पर अरिपन, दहिना सीढ़ी पर दीप आ बीचमे खुलल राह रहैत अछि। ई राह अन्वीक ओहि दुनू घरक बीच आवागमन आ अपनापनक प्रतीक अछि।

कथा ७१ · ओसाराक पाठ

पुरान प्रधानाध्यापकक घरक ओसारा सप्ताहमे दू दिन पढ़बाक सामूहिक ठाम बनैत अछि। स्थानीय इतिहासक एक पुस्तकमे बाढ़ि, राहत आ विद्यालयक निर्माणक वर्णन पढ़ैत स्त्रीसभ प्रश्न उठबैत छथि जे भोजन बनेनिहार, सामान सम्हारनिहार आ दिन-रात श्रम देनिहार लोकक नाम कतय अछि। सुरमा देवी, फुलकली काकी, जमुना देवी आ रीतू विभिन्न गवाहक बात लऽ मूल पाठक पूरक रूपमे काजक विवरण बनबैत छथि। पुरान पुस्तक फाड़ल वा अस्वीकार नहि होइत; ओकर बगलमे नब काज-पात राखल जाइत अछि। कथा इतिहासक लिखल वाक्यक संग छुटल लोकक आवाज जोड़बाक अभ्यास अछि।

कथा ७२ · खिलौनाक तल्लामे नाँव

‘माधव खिलौना-घर’मे काठक घोड़ा, बैलगाड़ी आ आन खिलौना अनेक हाथक श्रमसँ बनैत अछि। पुरान खिलौनाक पहचान आ निर्माता-नामक प्रश्न उठला पर ईरा देखैत अछि जे काठ काटब, रूप देब, रंग करब आ पहिया जोड़ब अलग-अलग कारीगरक काज अछि। एक खिलौनाकेँ एक्के व्यक्तिक नाम दऽ देब ओकर निर्माणक पूरा इतिहास नहि बतबैत। कार्यशालामे तल्ला पर क्रम-अंक आ अभिलेखमे ज्ञात कारीगरसभक भागीदारी दर्ज करबाक व्यवस्था बनैत अछि। जे जानकारी उपलब्ध नहि ओकरा अनुमानसँ भरबाक बदला खाली छोड़ल जाइत अछि। अन्तमे खिलौनाक तल्लामे ओकर निर्माणक बाट सुरक्षित रहैत अछि।

कथा ७३ · टूटल सुर

मृणालिनी अपन दादी जानकी देवीक पुरान गीत अभिलेखित करय चाहैत छथि। हारमोनियमक बीचक एक सुर खराब अछि, ताहि कारण धुन कखनो घूमि जाइत अछि, कखनो अधूरी बुझाइत अछि। बाजा ठीक करबाक संग ई प्रश्न उठैत अछि जे पहिले गाओल भिन्न धुनकेँ गलत कहि मेटा देब उचित अछि कि नहि। दादी आ नातिन गीतक अलग-अलग प्रस्तुतिकरण रिकॉर्ड करैत छथि। नचिकेता सेहो सुरक फर्क पर ध्यान दैत अछि। अन्तमे

तीनू ध्वनि-दर्ज ‘बीचक गीत—तीन बाट’ नामसँ सुरक्षित राखल जाइत अछि। बाजा सुधरैत अछि, मुदा पहिल गायनक स्मृति मेटाओल नहि जाइत अछि।

कथा ७४ · नदीक दोसर नाँव

विद्यालयक नब नक्शामे नन्दिनी अपन गाम लगक नदीकेँ एक नीला रेखा आ एक आधिकारिक नामसँ देखैत अछि। घर आ घाट पर ओहि धारक अलग-अलग स्थानीय नाँव सुनाइत अछि। शिक्षकक सहायता सँ नन्दिनी नाविक, वृद्ध आ नदीक कात रहनिहार लोकक बात नोट करैत अछि। ओकरा स्पष्ट होइत अछि जे किछु नाँव मौसमी जलरूप, किछु धारक विभाजन आ किछु नाविकक पहिचान सँ जुड़ल अछि। स्थानीय नामसभकेँ एक-दोसराक पर्याय मानब गलत होयत। अन्तमे नक्शाक रेखा ओकरा गलत नहि लगैत; केवल बुझाइत अछि जे नक्शा आ बहैत नदीक अपन-अपन काज अछि।

कथा ७५ · दू किसिमक बीआ

अभय खेतीमे नब किसिमक बीआक प्रयोग करय चाहैत अछि, जखन कि दादी लग पुरान बीआक पोटरी सुरक्षित अछि। डीह आ चउरक अलग माटि, बरखाक अनिश्चितता आ पानिक ठहराव दुनू किसिमक बीआक परीक्षा लैत अछि। अभय खेतीक नाप, समय, उपज, स्वाद आ दानाक व्यवहार कापीमे लिखैत अछि। दादीक अनुभव ओकर गणनाक आवश्यक पूरक बनैत अछि। फसलक बाद ओ अगिला बरख लेल दुनू किसिमक बीआ अलग रखैत अछि। प्रश्न केवल ‘कोन बीआ नीक’ नहि रहैत, बल्कि ‘कोन खेतमे, कोन मौसममे आ ककर उपयोग लेल’ बनि जाइत अछि।

कथा ७६ · पुस्तकक भीतरक पात

नगर पुस्तकालयमे पुरान पोथीसभक सफाइ करैत एक किताबक भीतर दबाओल सुखायल पात आ पाठकक टिप्पणी भेटैत अछि। पुस्तकपाल रामलोचन झा आ सहयोगीसभ प्रश्न करैत छथि जे पुस्तककेँ नमीसँ बचाबय पात निकालल जाए, मुदा पाठकक स्मृति कोना सुरक्षित रहय। प्रवेश-अंक, पृष्ठ-संख्या आ भेटबाक समय दर्ज कऽ पात अलग खोलमे राखल जाइत अछि। नब पाठकक टिप्पणी लेल सेहो एहन व्यवस्था

बनैत अछि जाहिसँ मूल पन्ना खराब नहि हो। अन्तमे पुरान पात आ नब टिप्पणी सुरक्षित अलग रहैत अछि, आ पुस्तक फेर पढ़बाक लेल खुलल। कथा संरक्षण आ पाठकीय स्मृतिक संगति स्थापित करैत अछि।

कथा ७७ · छतक बाँटल समय

चारि-मंजिला आवासीय भवनक साझा छत पर कपड़ा सुखेब, टहलनाइ, खेल आ सौर-पट्टक देखरेख सभ चलैत अछि। एहि उपयोगसभक बीच जगह आ समय लेल विवाद होइत अछि। रश्मि आ निवासीसभ नाप, खड़िया आ बातचीतसँ अलग-अलग गतिविधिक समयक व्यवस्था खोजैत छथि। स्थायी रेखासँ समस्या पूरा हल नहि होइत, कारण दिनक घाम, लोकक जरूरत आ मौसम बदलैत रहैत अछि। अन्ततः लचीला व्यवस्था बनैत अछि; छत पर स्थायी बाँट नहि कएल जाइत। रश्मि बुझैत छथि जे साझा स्थानक बाट लिखल नियमसँ बेसी परस्पर ध्यान आ समायोजनसँ चलैत अछि।

कथा ७८ · अधूर नाटक

विद्यालयक वार्षिक नाट्य-सन्ध्या लेल छात्र-छात्रासभ नाटकक अभ्यास करैत छथि। कथा एक एहन दृश्य पर अटकैत अछि जतय मीरा नामक पात्रक प्रतिक्रिया स्पष्ट लिखल नहि। शिक्षिका मालती झा, रितु, रेणु आ आन विद्यार्थी विभिन्न अभिनय-सम्भावना आजमबैत छथि। संवाद, मौन, हाथक गति आ मंच पर ठाढ़ होएबाक ठाम बदलला सँ दृश्यक अर्थ बदलैत अछि। विद्यार्थीसभ अधूर स्थानकेँ एक मनमाना वाक्यसँ भरबाक बदला ओकर भिन्न रूपक अभ्यास लिखैत छथि। अन्तमे पटकथाक खाली पाँति ओहिनहि रहैत अछि, मुदा ओकर चारूकात नब चौठम सम्भावनाक बाट खुलैत अछि। कथा रचनात्मक सहयोग आ खुलल अर्थक पक्षमे अछि।

कथा ७९ · चन्द्रमाक हिस्सा

सँकरी गलीक दू घरक बीच पातर खुलल आकाशसँ नैना आ रितु चन्द्रमा देखैत छथि। एक घरपर नब पानिक टंकी आ पाइप लगबाक योजना एहि दृश्यकेँ रोकि सकैत अछि। घरक उपयोगी जल-व्यवस्था आ बच्चीसभक आकाश देखबाक रुचि बीच परिवारसभ चर्चा

करैत अछि। टंकीक जगह आ पाइपक लम्बाइ बदलि दूनूक जरूरत सम्हारबाक समाधान निकलैत अछि। बादमे चन्द्रमा अपन चालसँ गलीक फाँकक बाहर चलि जाइत अछि, मुदा आकाशक बाट खुलल रहैत अछि। अन्तिम भाव ई जे आकाशक छोट टुकड़ा ककरो व्यक्तिगत सम्पत्ति नहि अछि।

कथा ८० · नब आँगन

पुनर्वास-भवनक बीचक पक्का खुलल स्थल कागजमे केवल 'मध्य खुलल स्थल' अछि। अलग-अलग महलाक निवासी ओतय चलैत, बच्चासभ खेलैत आ स्त्रीसभ अपन घरेलू काज सम्हारैत छथि। ईशा, नीतू आ अन्य बच्चा आँगनमे सामूहिक आकृति बनबैत छथि, मुदा बीचमे जानि-बुझि खाली जगह छोड़ैत छथि। प्रशासनिक नियम आ लोकक वास्तविक उपयोग बीच चर्चा होइत अछि। धीरे-धीरे निवासीसभ बुझैत छथि जे साझा आँगनक अर्थ कोनो एक परिवारक अधिकार नहि, सभक आवागमन लेल ठाम बचाओल अछि। अन्तमे ईशा सीढ़ी उतरि लोकक बीच पहुँचैत छथि; कियो विशेष स्थान नहि बनाएने अछि, तइयो हुनका लेल जगह अछि।

कथा ८१ · एकतीसम खाट

महिला रात्रि-आश्रयक फाटक पर तीस खाटक संख्या लिखल अछि। चम्पा देवी खाटसभक अवस्था आ ओकर उपयोग करनिहार लोककेँ नीकसँ चिन्हैत छथि। आश्रयक काज करनिहार चम्पाक अपन राति विश्रामक व्यवस्था मुदा एहि तीस खाटमे शामिल नहि अछि। अतिरिक्त आवश्यकता उठला पर अधिकारी अभिलेख जाँचैत छथि आ छुटल गिनतीक प्रश्न सामने अबैत अछि। अन्ततः एक मोड़ल खाट अलग राखल जाइत अछि, जकरा जरूरत भेला पर उपयोग कएल जा सकैत अछि। चम्पाकेँ ओहि राति ओकरा पर सुतबाक आवश्यकता नहि पड़ैत, मुदा खाट ३१क उपस्थिति ककरो दयासँ नहि, संस्थाक गिनतीमे सुधारसँ सम्भव भेल अछि।

कथा ८२ · पाछाँक सीढ़ी

‘अमलतास भवन’क मुख्य प्रवेश पर उठान-यन्त्र अछि, मुदा घरेलू कामगार सविता देवी आ आन सेवाकर्मी लेल पाछाँक ‘सेवा-पथ’ निर्धारित अछि। ओहि सीढ़ी पर अन्हार, रखल सामान आ सफाइक अभाव रोजक जोखिम बढ़बैत अछि। सविता एहि कठिनाइकेँ मालिक आ भवनक जिम्मेदार लोकक सोझाँ रखैत छथि। दोसर मंजिलक अवरोध हटैत अछि, बत्ती बदलल जाइत अछि आ खिड़की साफ कएल जाइत अछि। सुधारक बादो सविता जानैत छथि जे रोज चलल जाएवला बाटक देखरेख एक बेरक जाँचसँ पूरा नहि होइत। अन्तमे हुनका सीढ़ीक मोड़ पर अन्हारमे देवाल टटोलबाक जरूरत नहि पड़ैत अछि।

कथा ८३ · रातिक पर्ची

जिला अस्पतालमे राति मुख्य आगन्तुक-पंजी बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा रोगीक परिजन, दवा आ आवश्यक सामान लेल लोकक आवागमन चलैत रहैत अछि। देवनाथ रातिक पर्चीसँ एहि लोकसभक गिनती आ पहिचान सम्हारैत छथि। पर्ची पर लिखल अंक, आगमनक समय आ एक्के रोगी लेल अबैत अनेक लोकक हिसाब सँ कठिनाई होइत अछि। कर्मीसभ बातचीतसँ तय करैत छथि जे आवश्यक सूचना सुरक्षित रहय, मुदा अनावश्यक कागज पर निर्भरता नहि बढ़य। निर्मला देवी सहित परिजनसभक रातिक आवागमन दर्ज होइत अछि। अन्तमे देवनाथकेँ ककरो चेहरा मनमे राखि अपनहि हिसाब चलएबाक आवश्यकता नहि रहैत अछि।

कथा ८४ · दू बटन

विवाह-भवनमे सेवा करनिहार मजदूरसभकेँ उज्जर कुरता देल जाइत अछि, आ घुरबैत समय कोनो दोष देखल गेल तऽ मजूरी कटबाक नियम अछि। सुरेशक कुरतामे दू अलग रंगक बटन देखिकए दोषक आरोप उठैत अछि। सिलाइ करनिहार कमला देवी पुरान मरम्मतिक चिन्ह देखबैत छथि, मुदा ठेकेदारक पाँजिमे कपड़ाक पहिल अवस्था दर्ज नहि। बातचीतक बाद कुरताकेँ संख्या देल जाइत अछि आ लेबाक समयक अवस्था लिखबाक नब क्रम शुरू होइत अछि। आब पुरान बटनक कारण नब मजदूर पर कटौती नहि होएत। कथा

देखबैत अछि जे वस्तुक इतिहास दर्ज नहि रहला पर श्रमिकक अधिकार प्रभावित होइत अछि।

कथा ८५ · बन्द खिड़कीक भाड़ा

सुनयना किरायाक कोठलीमे सिलाइक काज करैत छथि। खिड़की सँ अबैत उजास हुनकर सुई-सूतक काज लेल आवश्यक अछि। घरमालिकक नब भण्डार बनेलासँ ओ खिड़की आ प्रकाश बाधित होइत अछि। सुनयना भाड़ाक रकमसँ आगाँ रहबाक सुविधा आ काजक वास्तविक शर्तक प्रश्न उठबैत छथि। खिड़कीक जाली, सुरक्षा आ छज्जाक व्यवस्था पर बातचीत होइत अछि। अस्थायी रूपेँ उजास घटबाक कारण भाड़ामे छूट दर्ज होइत अछि, आ सुधारक बाद पुरान भाड़ा घुरैत अछि। सुनयनाकेँ बुझाइत अछि जे घरक मूल्य ईंट-देवालक संख्या नहि, ओकर भीतर जीबि आ काज कऽ सकबाक परिस्थितिसँ सेहो बनैत अछि।

कथा ८६ · ईंटक निशान

ईंट-भट्ठा पर कौशल्या गील ईंटक कोन पर बनल दू तिरछा रेखा चिन्हैत छथि। ई निशान पहिने रघुनीक टोलीक काज चिन्हबैत छल, मुदा बरख बदलैत रहलापर एक्के निशानक आधार पर मजदूरी आ बकायाक हिसाब जोड़ल जाए लागैत अछि। कौशल्या पुरान खेप, तारीख आ कारीगरक भिन्नता जाँचबाक आग्रह करैत छथि। अभिलेखक प्रमाण भेटला पर किछु देनदारी स्वीकार होइत अछि आ आधारहीन प्रविष्टि हटैत अछि। नब चिन्हक संग तारीख, खेप आ काज करनिहारक नाम अलग-अलग लिखबाक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि। कथा श्रमिकक पहिचानकेँ भट्ठाक एक चिह्नक भीतर स्थायी रूपेँ कैद करबाक विरोध करैत अछि।

कथा ८७ · जेबक हिसाब

कुसुम धोबीघरमे झुनिया देवी कपड़ा धोएबासँ पहिने जेब जाँचैत छथि। कपड़ामे भेटल सिक्का, कागज आ निजी वस्तु दर्ज करबाक पुरान नियम अछि। मुदा अभिलेखमे वस्तुक विवरण आ ओकर सम्भावित अर्थ बीच भेद नहि रखल गेल अछि, जाहिसँ ग्राहकक निजता पर प्रश्न उठैत अछि। रविक कपड़ासँ भेटल मोड़ल कागजक प्रसंग बाद धोबीघर वस्तुक

प्रकार, जेब आ खोलक अंक अलग-अलग लिखबाक व्यवस्था बनबैत अछि। झुनिया पुरान नियम 'जे भेटल से लिखू'क नीचाँ ओकर सीमा सूचित करनिहार वाक्य जोड़ैत छथि। अन्तमे हिसाब वस्तुक रहैत अछि, व्यक्तिक निजी मनक नहि।

कथा ८८ · साँझक कुर्सी

औषधि-दोकानक बाहर 'ग्राहक लेल' लिखल हरियर कुर्सी पर बैसबाक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। गोविन्द देखैत अछि जे थाकल ग्राहक, दवा बनेबाक प्रतीक्षा करैत वृद्ध आ दोकानमे काज करनिहार लोकसभक जरूरत अलग-अलग समय पर बदलैत अछि। स्थायी कुर्सीक जगह आ बीचक बाटक बाधासँ विवाद होइत अछि। दीवाल पर मोड़ायल आसन लगबैत उपयोगक नव व्यवस्था बनैत अछि। कखनो ग्राहक, कखनो गोविन्द आ कखनो आन लोक ओहि आसनक उपयोग करैत अछि। अन्तमे कुर्सी ककर, एहि प्रश्नसँ बेसी जरूरी बनैत अछि जे एखन के थाकल अछि आ ककरा बैसबाक जरूरत अछि।

कथा ८९ · पाँचम बाल्टी

चारि आवासवला 'सारदा सदन'मे पानिक किल्लत होएबापर चारि घरक हिसाबसँ बाल्टी बाँटल जाइत अछि। मुदा गेट लगक कोठलीमे रहनिहार देखरेखिया बासुदेव, पत्नी सीता आ बेटी रूपाक पानिक जरूरत एहि गिनतीसँ बाहर अछि। बासुदेव दया नहि, नियममे अपन स्थान माँगैत अछि। पीबाक पानि, घरक अधिकार आ साझा काजक बीचक भेद पर चर्चा होइत अछि। अन्ततः पाँचम बाल्टी आ ओहि परिवारक गिनती अभिलेखमे ठाम पबैत अछि। साँझक खाली लाल बाल्टी भले सीढ़ी लग उलटल पड़ल अछि, मुदा ओकरा कारण तीन लोक आब कागज पर अदृश्य नहि रहल अछि।

कथा ९० · रद्दी परिचय-पत्र

पैकिंग कारखानामे चन्दा देवी आ आन बारह ठेका-मजदूरक काज एक्के साँझ समाप्त भऽ जाइत अछि। हुनकर परिचय-पत्र रद्दी मानि जमा करबाक निर्देश अछि। मुदा अन्तिम मजूरी आ देनदारीक हिसाब एखन बाकी अछि, आ फाटक पर प्रवेशक अधिकार समाप्त भेलासँ कागज जाँचबा आ बकाया पाबय कठिन होइत अछि। मजदूरसभ एहि अन्तरकेँ

उठबैत छथि। नब पर्ची आ नामवार अनुमति सँ ओ सभ लेखा-कक्ष पहुँचि अन्तिम भुगतानक प्रक्रिया पूरा करैत छथि। पुरान परिचयपत्र जमा भऽ सकैत अछि, मुदा ओहि अवधि कएल श्रमक देनदारी समाप्त नहि होइत। कथा श्रमिकक पहचान आ मजदूरीक अधिकार बीचक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि।

कथा ९१ · आधा हस्ताक्षर

नगर-परिषदक पुरान गोदामक छाजन मरम्मतिक ठेकामे जगरनाथ पासवान आ रेहाना सहित अनेक मजदूर काज करैत छथि। औजार टूटबाक आरोप आ मजदूरी कटौतीक समय ककर जिम्मेदारी अछि, से पाँजिमे स्पष्ट नहि। जगरनाथ अधूर हस्ताक्षर करैत रुकैत छथि, कारण ओ बिना प्रमाण गलत हिसाब स्वीकार नहि करय चाहैत छथि। अभियन्ता अनामिका झा आवश्यक विवरण अलग लिखबाक बात उठबैत छथि। मजदूरक काज, औजारक हिसाब आ कटौतीक कारण लेल अलग अभिलेख बनैत अछि। भुगतानक प्रक्रिया कने लम्बा होइत अछि, मुदा मनमानी कटौती पर रोकक बाट खुलैत अछि। जगरनाथकेँ अपन आधा लिखल नाम मोन रहैत अछि—रुकि प्रश्न करबाक अधिकारक रूपमे।

कथा ९२ · बन्द पेटी

बस-पड़ावक ‘हरायल वस्तु’ कोठरीमे बहुत दिनसँ जमा सामानक नीलामीक तैयारी चलैत अछि। मालती सहित समिति पुरान पेटीक भीतर कपड़ा, औजार, निजी छायाचित्र आ चिट्ठी देखैत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे सार्वजनिक रूपेँ बेचबाक योग्य वस्तु आ ककरो निजी स्मृतिक कागज एक्के नियमसँ कोना निपटाओल जाए। खोजबीनमे एक औजारक थैलाक मालिक भेटैत छथि, जकरा थैला गुम भेला सँ आर्थिक हानि उठाबय पड़ल छल। वस्तु घुरेबा आ निजी सामग्री सुरक्षित रखबाक नियम सुधरल जाइत अछि। पेटी पर ताला फेर लगैत अछि, मुदा ओकर भीतरक वस्तु आ बाहरी मालिक बीच नब अभिलेखी बाट खुलैत अछि।

कथा ९३ · किरायाक इजोत

रातिक हाटमे ठेलावला लोकसँ बिजुली आ देखरेखक नाम पर समान शुल्क लेल जाइत अछि। सरोजा सहित विक्रेता प्रश्न उठबैत छथि जे सबहक बत्ती, यन्त्र आ उपयोगक समय

एक समान नहि। निजी तार, साझा बाटक प्रकाश आ विद्युत्-दरक हिसाब जाँचबाक बाद अलग-अलग व्यवस्था बनैत अछि। निजी जोड़ पर शुल्क ओकर वास्तविक उपयोगसँ जुड़ैत अछि, जखन कि बीचक सार्वजनिक बत्ती सभ लेल जरैत रहैत अछि। प्रयोगक बादो किछु कठिन प्रश्न बाकी अछि, मुदा विक्रेता आब निजी उजास खोलब-बन्द करबाक अलग अधिकार पबैत छथि। कथा कागजी बराबरीक बदला मापनीय आ न्यायपूर्ण हिस्सेदारीक खोज अछि।

कथा ९४ · छोट ताला

‘माधवी आवास’क साझा भवनमे अनेक परिवार छोट-छोट बन्द पेटीमे निजी कागज आ वस्तु राखैत छथि। एक सन्देहक बाद पेटी खोलबाक माँग होइत अछि, मुदा ओकर भीतर भाड़ा-वृद्धिक पत्र, गहना आ व्यक्तिगत सामग्री सेहो अछि। निवासी रश्मि, रीना, सकीना आ आन लोक प्रश्न उठबैत छथि जे साझा चाबी रहला सँ बिना मालिकक उपस्थितिमे निजी पेटी खोलबाक अधिकार नहि भेटैत। समाधान लेल चाबी, ताला, खोलबाक कारण, समय आ गवाहक लिखित नियम बनैत अछि। ताला ओहिना छोट रहैत अछि, मुदा आब ओकरा खोलबाक प्रत्येक क्रियाक संग अभिलेखक पाँति जुड़ैत अछि। कथा सुरक्षा आ निजताक सन्तुलन पर केन्द्रित अछि।

कथा ९५ · दू मिनटक देरी

भोजन पहुँचौनिहार नवलकेँ एक ग्राहक धरि भोजन पहुँचबामे कथित दू मिनटक देरीक कारण बीस रुपैया कटौतीक सामना करय पड़ैत अछि। भवनक फाटक पर पहुँचनाइ, उठान-यन्त्र धरि जाएब, घंटी देब आ ग्राहकक भोजन लेब—एहि सभक समय अलग-अलग पाँजिमे अछि। सरोज आ मृणालिनी सहित लोकसभ रजिस्टरक अन्तर जाँचैत छथि। समय दर्ज करबाक ढंग बदलैत अछि आ नवलक कटौतीक रुपैया घुराओल जाइत अछि। कथा अन्तमे एक्के भोजनक दू प्रविष्टि रखैत अछि, ताकि दोष अनुमानसँ नहि, वास्तविक हस्तान्तरणक आधार पर तय हो। दू मिनट छोट समय अछि, मुदा ओकर अर्थ न्याय लेल पैघ बनैत अछि।

कथा ९६ · गील धानक तौल

बरखाक बाद धान गील रहिते रामलोचन आ मजदूर फुलमतिक बीच मजदूरीक बोरा तौलबाक प्रश्न उठैत अछि। भीजल धानक वजन सुखलाक बाद घटि जाइत अछि; जँ दुनू पक्ष अलग अवस्थामे तौल लेत, बराबरीक हिसाब भ्रामक बनत। फुलमति एक्के शर्त पर तौल करबाक आग्रह करैत छथि। खेत, खलिहान आ गोदामक जरूरत मिलबैत गील तथा सुखायल वजन अलग-अलग दर्ज होइत अछि। अन्तमे बोरा पर तिथिक संग ‘गील’ शब्द लिखल रहैत अछि। अठारह किलो अठारहे अछि, मुदा ओकर माप कखन लेल गेल, एहि आवश्यक सत्यक उल्लेख आब संग अछि।

कथा ९७ · खाली थारी

विवाह-मण्डपक पाछाँ भानसघरमे अतिथिसभक भोजन बनबैत लोक दिन-रात श्रम करैत छथि। भोजक गिनतीमे अतिथि लेल सभ व्यवस्था अछि, मुदा रसोइया, परोसनिहार आ सफाइकर्मीक अपन भोजन प्रायः पाछाँ छूटि जाइत अछि। मालती आ अन्य कर्मी एहि अभाव पर प्रश्न करैत छथि। भोजनक लागत, समय आ पाँजिमे श्रमिकक नाम दर्ज करबाक नब व्यवस्था बनैत अछि। अन्ततः गणेश सहित श्रमिकसभ लेल भोजनक थारी अलग गिनल जाइत अछि। कथाक अन्तमे एक थारी खाली अछि, कारण ओकर उपयोगकर्ता जा चुकल अछि, नहि कि ओकर भोजनक अधिकार बिसरल गेल। थारी खाली रहैत अछि, गिनती नहि।

कथा ९८ · तीन रुपैयाक पर्ची

बस-पड़ावक सार्वजनिक शौचघरमे उपयोगक शुल्क तीन रुपैया अछि। परिचारिका सरोजा पबैत छथि जे वसूली आ पर्चीक गिनतीमे अन्तर अछि। जाँचमे खुलैत अछि जे कतेको उपयोगकर्ताक रुपैया पर्ची बिना जमा भेल अथवा पर्चीक हिसाब अलग पड़ि गेल अछि। रमेश बाबू आ अन्य कर्मी रुपैयाक गिनती, छुट्टा-पाइ, पर्ची आ घुरल रकमक अलग अभिलेख बनबैत छथि। ओ सभ व्यवस्था एना सुधारैत छथि जे प्रत्येक रकमक चिह्न रहय

आ अनावश्यक कटौती वा संशय नहि हो। अन्तिम पर्ची ‘मिलल’ लिखि सुरक्षित राखल जाइत अछि। छोट शुल्कक पारदर्शिता श्रमिकक विश्वासक प्रश्न बनैत अछि।

कथा ९९ · पछिला बत्ती

बस-पड़ाव पर अन्तिम बस गेलाक बादो सफाइकर्मी कमलीक काज समाप्त नहि होइत अछि। बसक कचरा हटेब, फाटकक सुरक्षा आ रातिक बत्ती बन्द करबाक समय बीच अन्तर अछि। ठेका-पत्रक घड़ी अनुसार कमलीक अतिरिक्त श्रम स्पष्ट नहि देखाइत। सीमा झा, रघुनाथ आ अन्य कर्मी समयक पाँजि जाँचि अन्तिम बस तथा अन्तिम काजक भेद दर्ज करैत छथि। आवश्यकता अनुसार बत्ती जरेबाक व्यवस्था सेहो सुधरैत अछि। अन्तिम दृश्य मे अनावश्यक बत्ती बुझि जाइत अछि, मुदा खुलल बाटक प्रकाश रहैत अछि। पाँजिमे कमलीक अन्तिम काजक समय ओकर अपन नामक संग सुरक्षित रहैत अछि।

कथा १०० · गिनतीक बाहर

बाढ़िक बाद क्षतिक सर्वेक्षणमे मकान आ परिवारक गिनती एक्के मानल जा रहल अछि। मुदा एक मकानमे कतेको किरायेदार, अलग रसोई करनिहार परिवार आ अस्थायी रूपेँ रहनिहार लोक होइत छथि। मृणालिनी आ सर्वेक्षण-दल घर-घर जा कऽ वास्तविक स्थिति देखैत छथि। देवालक क्षति, मालिकक अधिकार आ प्रभावित परिवारक आवश्यकताकेँ अलग-अलग दर्ज करबाक प्रस्ताव बनैत अछि। गिनतीमे छुटल लोकक ठाम जोडला सँ भवन आ परिवारक संख्या अलग होइत अछि। अन्तमे एक्के ठामक दू गिनती—संरचना आ रहनिहार परिवार—दुनू सही मानल जाइत अछि। बाढ़िक रेखासँ संग कागज पर लोकक उपस्थितिक नब रेखा बनैत अछि।

खण्ड २

कथा-शतत्रयी • खण्ड–२

१०० कथाक सारांश

कथा १०१ · बाँधक ओहि पार

बाँधक कारण पुरनका बहुअरा उजड़लाक चौदह बरख बाद नव बहुअरामे देवस्थान बनेबाक प्रश्न उठैत अछि। रघुनन्दन झा आ आन लोक देवस्थानक ठाम आ अधिकारपर बहस करैत छथि। देवकली देवीक सुरक्षित राखल 'दीप-बारी' पाँजि हुनकर पोता चन्दन केँ बुझबैत अछि जे पुरान देवस्थान कोनो जाति वा कुलक एकाधिकार नहि, सभ घरक साझा जिम्मेदारी छल। नव आ पुरान परिवारक नाम जोड़ि खुला चबूतरा बनैत अछि। मधुबाला आ हुनकर बेटी रानी पहिल दीप जरबैत छथि। पुरनका ठामक स्मृति आ नव गामक सामूहिक जीवनक निरन्तरता एहि दीपमे जुड़ैत अछि।

कथा १०२ · रिक्त पद

बेलाही स्वास्थ्य केन्द्रमे चिकित्सकक पद पाँच बरखसँ खाली अछि। केन्द्र खोलनिहार जमुना देवी चिकित्सक नहि भेटलासँ घुरि जाएवाला प्रत्येक रोगीक स्मृतिमे रस्सी पर एक गाँठ बान्हैत छथि। निरीक्षणक दिन दोसर केन्द्रसँ चिकित्सक आनल जाइत छथि, मुदा अगिला दिन फेर कुरसी खाली रहि जाइत अछि। सीता, फूलो आ गामक लोक गाँठदार रस्सी जनसुनबाइमे लऽ जाइत छथि; दू सय चौदह गाँठ प्रशासनिक उपेक्षाक वास्तविक पीड़ा सामने अनैत अछि। सप्ताहमे दू दिन चिकित्सक पठेबाक व्यवस्था शुरू होइत अछि। जमुना पुरान गाँठ नहि खोलैत छथि, कारण भेल कष्ट मेटाओल नहि जा सकैत।

कथा १०३ · जमीनक आवाज

हरिहरपुरक सदा टोलीसँ मुख्य सड़क जाएवाला 'बीचक बाट' घेरबाक लेल धनेश्वर साह अपन जमीनक नक्शा देखबैत छथि। टोलीक लोकक जीवन, बरखाक आवागमन आ रोगी

लऽ जाएबाक आवश्यकता ओहि बाटसँ जुड़ल अछि। जसोदा सदा आ वृद्धा कुसुमी सदा पुरान इनारक स्मृति आ रास्ताक घुमावक प्रमाण आगाँ रखैत छथि। नापी, स्थानीय गवाही आ सामूहिक आग्रहक बीच निजी स्वामित्व आ लोकप्रयोगक टकराव खुलैत अछि। अन्ततः चलैत आएल बाट बचेबाक उपाय निकलैत अछि; जमीनक आवाज कागज मात्र नहि, ओकरा पर चलैत लोकक पएर सेहो अछि।

कथा १०४ · आधा समोसा

बस-पड़ाव पर मजूरीक प्रतीक्षामे बैसल जीबछ आ बासोक लग एकटा समोसाक मात्र दाम अछि। समोसा आधा करिते दुनू बराबरीक प्रश्नमे उलझि जाइत अछि। टुकड़ाक आकार, आलू, खस्ता भाग, वजन आ फेर सँ बाँटबाक अनेक उपाय सभ विवाद बढ़बैत अछि। दोकानदार, तरकारीवाली आ आन लोकक सलाहो अन्तिम फैसला नहि दैत। मजूरीक काज भेटला पर दुनू हँसैत समोसा खा लैत अछि। अगिला दिन दूटा समोसा किनलाक बादो पैघ के अछि, से प्रश्न फेर उठैत अछि। कथा भूखक बीच दोस्ती आ बराबरीक हास्यपूर्ण जिद देखबैत अछि।

कथा १०५ · बरामदाक विश्वविद्यालय

पुरान डाकघर लगक ओसारामे बेरोजगार नवल, रमाकान्त, सदन आ परमानन्द सभ विषयपर बहस करैत ‘विश्वविद्यालय’ चलबैत छथि। रमाकान्त केँ साक्षात्कारक पत्र भेटैत अछि, मुदा बस-भाड़ाक अभाव ओकर उत्साह रोकैत अछि। चारू मिलि मेहनतिक काज करैत छथि, अर्जित धनसँ यात्राक व्यवस्था होइत अछि आ मालती काकीक चाहक उधार सेहो घटैत अछि। व्यवहारिक श्रम हुनका सभकेँ ओ शिक्षा दैत अछि जे लम्बा भाषण नहि दऽ सकल। ओसाराक चूऔत छप्पर सेहो ओ सभ स्वयं सुधारैत छथि। रमाकान्त घुरला पर मित्रसभ फेर चाह संग जुटैत छथि; बहस आ काजक बीच नव सम्बन्ध बनैत अछि।

कथा १०६ · प्रेमक उधार

रामदेव साहक किराना-दोकानक उधार-पाँजिमे रकमक संग गाहकक ‘कहल बात’ सेहो दर्ज होइत अछि। बेटी कुसुम एहि पाँजिमे साइकिल-मरम्मतक मजदूर माधवक उधार आ

ओकर स्वाभिमानी, हँसोड़ वाक्य लिखैत जाइत अछि। माधव अपन बीमार माएक सामानक दाम चुकाबय चाहैत अछि, दया नहि। धीरे-धीरे कुसुम आ माधवक बीच उधारक हिसाबसँ भिन्न आत्मीयता उपजैत अछि। मजदूरी भेटला पर आर्थिक ऋण शून्य भऽ जाइत अछि, मुदा पुरान पाँजिक बात सभ बचल रहैत अछि। नव पाँजिक खाली पन्ना आ अनकहल प्रेम ओकर सम्बन्धक अगिला सम्भावना बनैत अछि।

कथा १०७ · एक कप मुफ्त चाय

बेलवा चौकक बुधन साह प्रतिदिन एक कप मुफ्त चाह ‘अचिन्हार’ लेल रखैत छथि, शर्त ई जे ओ चाहक सच्ची राय देत। अनजान पिबनिहारक टिप्पणीसँ दोकानक बेंच, सफाइ आ धुआँक व्यवस्थामे सुधार होइत अछि। सड़क बन्द रहला पर कोनो नव लोक नहि अबैत आ राखल चाह ठंढा पड़ि जाइत अछि। अन्तमे सोनबरसा जाएवाली एक युवती पूछैत छथि जे चाह पहिनेसँ भरि किएक राखल जाइत अछि। हुनकर सलाह पर बुधन खाली कप राखबाक आ अचिन्हार अएलाक बादे ताजा चाह देबाक नियम बनबैत छथि। ई कथा आलोचना सुनबाक विवेक आ आतिथ्यक सहजता देखबैत अछि।

कथा १०८ · बूढ़ा आ रेडियो

बरदाहाक महेश्वर झा साँझ-साँझ रेडियो पर उद्घोषक शिवनाथ मिश्रक आवाज सुनैत छथि आ विश्वास करैत छथि जे उद्घोषक हुनका व्यक्तिगत रूपसँ चिन्हैत छथि। पोता नीलू एहि विश्वासपर प्रश्न करैत अछि। रेडियोक विद्युत-कोष समाप्त भेला पर बूढ़ काका दोसर घर जा कऽ प्रसारण सुनबाक प्रयत्न करैत छथि। बादमे उद्घोषकक ओरसँ आएल पातीमे हुनका प्रणाम आ मचियाक उल्लेख भेटैत अछि। नीलू केँ ई पहिल ठोस प्रमाण बुझाइत अछि, मुदा महेश्वरक लेल अपनापन पहिनेसँ आवाजक भीतर छल। कथा अनदेखल सम्बन्ध, सुनबाक संवेदना आ पीढ़ीक अलग-अलग दृष्टिक संगम अछि।

कथा १०९ · छाता साझा

सकरी हाटसँ घुरैत जूता-सिलाइ करनिहार लखनक छाता खराब भऽ जाइत अछि। बरखामे सलीम नामक बोझा ढोअनिहार युवक ओकरा संग छाता सम्हारैत चलैत अछि। दुनू

छाताक छाँह बराबर बाँटबाक खेलमे भीजैत, हँसैत आ एक-दोसराक जीवन बुझैत आगाँ बढ़ैत अछि। सलीमक डोरीसँ छाताक घेरा बँधि जाइत अछि। पीपर मोड़ पर अलग भेला समयो छाता के लऽ जाएत, एहि पर दुनूक उदारताक टकराव होइत अछि। अगिला हाटमे छाता ठीक भऽ गेलाक बादो दुनू संग चलैत अछि; आब छाता नहि, मित्रता संग चलबाक कारण अछि।

कथा ११० · पाँच रुपैयाक राजा

नओ बरखक गोपी साग बाँधबामे मायक सहायता करबाक मजूरीमे पाँच रुपैयाक एक सिक्का पाबि स्वयं कैँ राजा बुझय लगैत अछि। सिक्काक अर्धचन्द्राकार खरोंच ओकर 'राजचिन्ह' बनैत अछि। माय छुट्टा लेल सिक्का उधार लैत छथि; ओ सिक्का सीतो काकी, दूधवाला, मिस्त्री आ डाकबाबूक हाथ घूमैत फेर गोपी लग पहुँचैत अछि। एहि यात्रासँ बालक धनक आवागमन, उधार आ अपन अधिकारक वास्तविक अर्थ बुझैत अछि। अगिला भोर सीतो काकी फेर छुट्टा माँगैत छथि तँ गोपी मुस्कुरा कऽ सिक्का दैत अछि, मुदा साँझ धरि ओकर खबरि चाहैत अछि।

कथा १११ · भातक सुगन्ध

दरभंगामे पढ़ैत माधव किरायाक कोठरीमे रहैत अछि, मुदा पढ़ाइ आ अभावक कारण अपन चूल्हि प्रायः नहि जरबैत। पड़ोसिन कमला काकीक हाँड़ीसँ उठैत भातक सुगन्ध ओकरा माएक घर याद दिअबैत अछि। कमला काकी ओकर स्वाभिमान बचबैत अपन चूल्हिक बचल आँचपर माधवक चाउर पकाबय लगैत छथि। माधव लकड़ीक टहनी आनिक अपन हिस्सा जोड़ैत अछि। एक चूल्हि पर दू हाँड़ीक ई व्यवस्था धीरे-धीरे पारिवारिक स्नेह बनि जाइत अछि। गामसँ आएल नवधानक भातमे दुनू घरक सुगन्ध मिलैत अछि। छुट्टीमे माधव गाम जाइत अछि, मुदा छोट हाँड़ीक ठाम सुरक्षित रहैत अछि।

कथा ११२ · प्रेम-पत्रक व्याकरण

दीपक अपन प्रेमिका सुगनी कैँ पत्र लिखबाक लेल गुरुजी रमानन्द झाक लग व्याकरण सुधरबय अबैत अछि। गुरुजी देखबैत छथि जे चान-सितारा, जीवन-मरण आ अनन्त प्रेमक

अतिशयोक्ति लिखबाक अपेक्षा अपन देखल-सुनल साँच कहब बेसी आवश्यक अछि। दीपक पत्रमे सुगनीक धीरज, पुस्तकालयमे भेल भेट आ अपन प्रेमक स्पष्ट स्वीकृति रखैत अछि। ओ उत्तर देबाक हुनकर स्वतन्त्रता सेहो मानैत अछि। प्रेम-पत्र भाषाक अभ्याससँ सम्मानपूर्ण संवाद बनि जाइत अछि। सुगनीक उत्तरक बाद रविदिन पाँच मिनट भेटबाक प्रसंग गुरुजीक हाटक सूचीमे सेहो दर्ज भऽ जाइत अछि।

कथा ११३ · पानवाला दार्शनिक

पीपर चौकक पानवाला बदरी साह लोकक चिन्ता सुनि तुरन्त उपदेश नहि दैत छथि। पान बनबैत-बनबैत ओ पूछैत छथि जे एहि घड़ी कएल की जा सकैत अछि। गाहक सभ एहि सरल प्रश्नसँ अपन समस्या छाँटि लैत अछि। मुदा घरमालिक सत्रह बरख पुरान दोकान खाली करबाक सूचना दैत छथि तऽ बदरी स्वयं असमंजसमे पड़ैत छथि। परिचित लोकक सहयोगसँ नव ठाम भेटैत अछि, आ हुनका बुझाइत अछि जे पाँच मिनटमे उत्तर नहि, आगाँ बढ़बाक साहस भेटैत अछि। नव दोकान पर परीक्षा सँ डेरायल किशोर कैँ ओ पढ़बाक लेल घर पठबैत छथि।

कथा ११४ · किरायाक कुकुर

दर्जी महेन्द्रक घरमे गाहकक कपड़ा आ सिलाइ-मशीन सुरक्षित रखबाक चिन्ता अछि, मुदा पहरेदार कुकुर किनबाक साधन नहि। अब्दुल चाचा अपन कालू नामक कुकुर रातिमे महेन्द्रक ओसारामे सुतबाक लेल देबाक प्रस्ताव रखैत छथि; बदलामे ओकरा सप्ताहमे एक बेर नहायब पड़त। कालू अपन पुरान बोरा संग दूनू घरक बीच नियमित आवागमन करय लगैत अछि। कखनो बकरी रोकबामे असफल, कखनो फाटक खसलासँ पहिने भुकि कऽ सावधान करैत अछि। बादमे महेन्द्र अपन कुकुर किनि सकैत छथि, मुदा कालू संगक आत्मीय व्यवस्था नहि तोड़ैत। ओकरा दू घर आ दूनू परिवारकैँ सहयोग भेटैत अछि।

कथा ११५ · खाली जेबक भोज

ललनक प्रशिक्षण परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक खुशीमे चारि मित्र भोज करबाक निश्चय करैत छथि, मुदा सभक जेब खाली अछि। ललन, फेकन, जमील आ भोला बिना माँगने अपन

श्रमसँ भोजन जुटाबय चाहैत छथि। फलविक्रेताक खसल अमरूद समेटबाक बदला अमरूद आ ठेलाक चक्का निकालबाक बदला भुजल चना भेटैत अछि। ओ नगरक सफाइकर्मीक टोकरी सेहो उठाबैत छथि। पोखरि लग अमरूद, चना, नून आ सार्वजनिक नलक पानिसँ भोज होइत अछि। शून्य खर्चक एहि उत्सवमे मित्रता, परिश्रम, आत्मसम्मान आ साझी हँसीक समृद्धि देखाइत अछि।

कथा ११६ · टूटा छाता संघ

बरखामे फँसल दर्जी शिवनाथ, साइकिल-मरम्मतक करीम आ बोरा तौलनिहार जगदीश लग तीनटा अलग-अलग खराब छाता अछि। एकर कपड़ा, दोसरक डाँटी आ तेसरक डण्डा जोड़ि ओ सभ एकटा हरियर-नील छाता बनबैत छथि। मुदा एक छाता नीचाँ तीन लोकक बराबर ठामक प्रश्न उठैत अछि। भीजैत-हँसैत ओ सभ बीस-बीस डेग पर पकड़नी बदलबाक नियम बनबैत छथि। पछिला दिन ‘टूटल छाता संघ’क मरम्मत आ स्वामित्वक चर्चा होइत अछि। अन्तमे छाता ककरो अकेलाक वस्तु नहि रहैत; आवश्यकता पड़ला पर सभक उपयोगक साझा साधन बनैत अछि।

कथा ११७ · भुलक्कड़ प्रेमी

नन्दू कँ अपन स्मृतिपर बहुत भरोसा अछि, मुदा मधुरीक जन्मदिन सत्ताइसमक बदला सत्रहम सुनि लैत अछि। ओ दस दिन पहिने जलेबी आ मोट जिल्दवाली नस्ती-पुस्तिका लऽ बधाइ देबाक लेल पहुँचि जाइत अछि। मधुरी आ हुनकर माय हँसि कऽ भूल समझबैत छथि। मधुरी पुस्तिकामे नन्दूक बेठीक तिथि आ अपन सही जन्मदिन लिखि दैत छथि। सत्ताइसम कँ नन्दू फेर पहुँचैत अछि, एहि बेर बिना उपहार, मुदा सही तिथिक संग। खीर, हँसी आ पुस्तिकाक पाँति सभ प्रेममे याददाश्तसँ बेसी ध्यान, विनम्रता आ सत्यापनक महत्त्व देखबैत अछि।

कथा ११८ · नि:शुल्क हजाम

मंगल हजाम अपन पुरान मित्र धीरूक बाल मुफ्त काटबाक जिद करैत अछि। धीरू दाम देबय चाहैत अछि, आ मंगलक धीमा, बारीक काज तथा लगातार ‘दर्शन’ पर ठट्ठा करैत

अछि। मंगल विशेष ध्यानसँ दहिना घुमरी आ पुरान दाग ढाँपैत केश सँबारैत अछि। धीरू बदलामे दोकानक ढीला कुर्सीक बाँह कसि दैत अछि, मुदा दुनू एहिकेँ ग्राहक-मजूरीक हिसाब नहि मानैत। धीरू प्रशंसा करैत अछि, आ पछिला दिन आन गाहको मंगलक कला सराहैत छथि। मित्रताक बेदाम सेवा, श्रमक गौरव आ चुहलसँ दोकान गुञ्जैत रहैत अछि।

कथा ११९ · दादीक मोबाइल

धनवंती दादी मोबाइलक चिन्ह आ बटन नहि बुझि पबैत छथि; पोती अनिमा हुनका बारम्बार सिखबैत छथि। दादी फोनक संख्या गनबाक गुणसँ बेसी लोकक आवाज, चिन्ता आ परस्पर पूछताछक महत्त्व बुझैत छथि। एक दिन मोबाइल बन्द भऽ जएबासँ परिवार आ परिचित लोक एक-दोसरासँ सम्पर्क करय लगैत छथि, आ संवादक नव अवसर बनैत अछि। नव तार लगलाक बाद दादी मानैत छथि जे मोबाइल लोककेँ जोड़ैत अछि, मुदा कखनो ओकर चुप रहबो आवश्यक होइत अछि। संचारक साधन आ सजीव सम्बन्धक बीचक अन्तर हलुक हास्यमे उभरैत अछि।

कथा १२० · एक प्लेट पकौड़ी

हाटक बाद रामचरितक दोकान पर जुटल पाँच मित्र एक प्लेट पकौड़ी मँगबैत छथि। एगारहम पकौड़ी के खायत, एहि प्रश्नपर सभ एक-दोसरक पुरान उपकार गनाबय लगैत छथि। कियो दोकान सम्हारने छल, कियो बच्चाकेँ पढ़ौने, कियो असुखमे सहायता कएने छल। धन्यवादक एहि हिसाबमे पकौड़ी ठंढा होमय लगैत अछि। रामचरितक बेटी गुड़िया व्यावहारिक बुद्धिसँ बात सुलझबैत अछि। दोसर प्लेटमे जानि-बुझि एगारह पकौड़ी राखल जाइत अछि आ अतिरिक्त पकौड़ी गुड़ियाक लेल अलग कऽ देल जाइत अछि। मित्रताक मूल्यक गणना असम्भव होएब कथाक विनोदी आशय अछि।

कथा १२१ · चप्पलक जोड़ी

शिवमन्दिरमे पूजा करबाक लेल आएल नन्दकिशोर आ रामबिलासक परिवार अनजान होइतो लगभग एक्के रूपक कारी चप्पल रखैत अछि। बरखा आ भीड़मे दुनूक चप्पल आपसँ बदलि जाइत अछि। नील सूत आ तलक गोल दाग चिन्हि जोड़ी घुराओल जाइत

अछि। छज्जा तर बरखा थमबाक प्रतीक्षामे दुनू परिवारक परिचय होइत अछि। एक मास बाद हाटमे फेर भेंट होइछ; आब चप्पल पर अलग रङ्क धागा बान्हल अछि। चप्पलक भ्रम दूर होएबाक संग अपरिचित लोक परिचित बनि जाइत छथि।

कथा १२२ · घरक सबसँ धनी आदमी

पुरान पोथीक जिल्द बनौनिहार जगदीश झाक आमदनी सीमित अछि, मुदा हुनकर घरमे बाटक अतिथि, विद्यार्थी आ परिचित लोकक आबाजाही रहैत अछि। बेटी मुनिया 'घरक सभसँ धनी आदमी' विषयपर लिखबाक लेल धनक अर्थ पूछैत अछि। घरमे भोजन कम रहितो अतिथि सभ अपन-अपन सामग्री आ श्रम जोड़ि सामूहिक भोजन बनबैत छथि। मुनिया देखैत अछि जे चारि थारीवाला घर अनेक लोककेँ आश्रय दैत अछि। ओकर निबन्धमे बाबूक उदारता धनक नव माप बनैत अछि। अन्तमे एकटा आओर यात्री रात्रि बिताबय अबैत छथि, आ ओसाराक चटाइ फेर बिछैत अछि।

कथा १२३ · हँसीक बचत

सरिता कें विद्यालयसँ घरक बचतपर निबन्ध लिखबाक काज भेटैत अछि। दादा रामलोचन मिश्रक पुरान पाँजिमे औषधि, बेटी-विवाह आ छप्परक खर्चसँ जमा धन फेर-फेर समाप्त भेलाक इतिहास अछि। दादी सुरजी आ दादा नव छोट बचत शुरू करबाक निश्चय करैत छथि। सहकारी खाताक चर्चा आ पित्तरिक डिबियामे धीरे-धीरे रुपैया जमा होइत अछि। सरिता अपन निबन्धमे देखबैत अछि जे पैसा घटि-बढ़ि सकैत अछि, मुदा घरक साझा हँसी पहिने सँ बचल अछि। दादा-दादीक बचतमे आर्थिक सावधानी आ जीवट दुनू रहैत अछि।

कथा १२४ · चाबी

सात बरख किरायाक घरमे रहि चुकल माधव झा परिवार संग नव ठाम जाय लगैत छथि। पुरान कोठरीमे राखल तालाबन्द काठक सन्दूक आ ओकर अनजान चाबी सदिखन रहस्य बनल छल। घरमालिक शशिधर बाबू बतबैत छथि जे सन्दूक दिवंगत पत्नीक स्मृति अछि; भीतरक सामान पहिने बाँटल जा चुकल अछि। विदाक समय ओ सन्दूक आ चाबी माधवकेँ

दऽ दैत छथि। नव घरमे माधवक बेटी मीरा पहिल वस्तुक रूपमे अपन चित्रक कापी ओहिमे रखैत अछि। रिक्त सन्दूक पुरान घरक स्मृतिसँ नव परिवारक स्मृति धरि सेतु बनैत अछि।

कथा १२५ · दस मिनट

अविनाश प्रशिक्षणक लेल रेल पकड़बाक प्रतीक्षामे अछि, मुदा जन्मतिथिक सुधारल प्रमाण-पाती गुरुजी आनबाक छथि। स्टेशनपर दस मिनट बचल अछि। ओतहि कौशल्या देवी अपन बेटाक बाट तकैत छथि। दुनू एक-दोसरक सामान आ चिन्ताक रखवारी करैत समय बितबैत छथि। गुरुजीक अबैत काल तक प्रतीक्षा, रेलक सीटी आ चढ़बाक आपाधापी एक्के संग बढ़ैत अछि। आवश्यक पाती आ यात्राक सामान सम्हारि अन्तिम घड़ीमे यात्रा सम्भव बनैत अछि। कथा देखबैत अछि जे दस मिनटक अल्प समयमे अनजान लोकक बीच सहयोगक स्थायी स्मृति बनि सकैत अछि।

कथा १२६ · अन्तिम ग्राहक

दोकान बन्द करैत जयराम हजाम लग शशिकान्त नामक युवक अन्तिम ग्राहक बनि पहुँचैत अछि। ओकर बटुआ हेरायल अछि, मुदा जयराम दाम बिना दाढ़ी बना दैत अछि आ कहैत अछि जे अवसर भेटला पर दोसराक छोट काज मुफ्त करिह। पछिला दिन जयरामकेँ अपन आवश्यक नस्ती सँ सम्बन्धित कार्यालयक काज पड़ैत अछि। ओतहि शशिकान्त भेटि कागजक मोड़ खोलि उचित प्रक्रियासँ काज बढ़बैत अछि। युवक पाछाँ दाम देबय चाहैत अछि, मुदा जयराम सेवा केँ परस्पर हिसाब नहि बनबय दैत। अन्तिम दृश्य मे फेर कम पैसा लऽ आएल गाहक केँ ओ बैसा लैत अछि।

कथा १२७ · टूटल घड़ी

अमरेश माधवीक बन्द पड़ल पुरान कलाई-घड़ी दीनानाथक दोकानमे सुधारबय लऽ जाइत अछि। घड़ी पाँच बजि सोलह मिनट पर रुकल अछि। धीरे-धीरे पता चलैत अछि जे ओहि क्षण माधवीक बाबू रघुनाथ पहिल बेर अमरेश केँ बाहरी अतिथि नहि मानि भीतरक खूँटी पर छाता टाँगबाक अनुमति देने छलाह। एहि छोट स्वीकृतिकेँ माधवी प्रेम-विवाहक बाट खुलबाक संकेत बुझि घड़ी जानि-बुझि रोकि देने छलीह। सुधारल घड़ीक खरोंच अमरेश नहि

हटबैत अछि। रघुनाथक घरमे विवाहक चर्चा शुरू भेला पर पाँच सोलहक स्मृति नव अर्थ पबैत अछि।

कथा १२८ · मिठाइक डिब्बा

शैलजा विशेष शुभकामनाक अवसरपर निर्मलाक घर लेल महँग केसर-मखान मिठाइक सजल डिब्बा किनैत छथि। डिब्बा बिना खोलने उपहारक रूपमे एक घरसँ दोसर घर घूमैत अन्ततः शैलजाक घरे घुरि अबैत अछि। निर्मला आ शैलजा पहचानैत छथि जे बाहरी चमक आ उपहार देबाक प्रतिष्ठाक बीच मिठाइ खेबे नहि भेल। अन्ततः डिब्बा खोलि सभ मिलि मिठाइ खाइत अछि। बेटी ईरा खाली डिब्बा सूत रखबाक लेल लऽ लैत अछि। घुमन्तू उपहारक हास्यमय प्रसंगमे वस्तुक वास्तविक उपयोग, स्नेह आ दिखावटक अन्तर खुलैत अछि।

कथा १२९ · छोट विज्ञापन

निरंजन काजक खोजमे कम रुपैयाक छोट समाचार-पत्र विज्ञापन छपबैत अछि। शब्द घटेबाक बाध्यतामे ओकर कामक विवरणो कटैत अछि। विज्ञापन पढ़ि पुरान मित्र हरिनाथ ओकरा भेटय अबैत अछि। आठ बरख पहिने निरंजन हरिनाथक प्रशिक्षण-शुल्क लेल अपन जमा रुपैया देने छल। आब हरिनाथ ओही ऋणक रकम घुरबैत अछि आ पुरान सम्बन्ध फेर जुड़ैत अछि। निरंजन फेर काजक विज्ञापन छपबय जाइत अछि, मुदा बूझि चुकल अछि जे छोट विज्ञापन केवल रोजगार नहि, बिसरल मित्रता आ ऋणक स्मृति सेहो खोजि अनने अछि।

कथा १३० · नील पेन

परीक्षाक दिन मिथिलेश घबरा रहल अछि। मित्र राघव अपन ‘भाग्यशाली’ नील पेन ओकरा दैत अछि, जाहिसँ ओ पहिने सफल भेल छल। पेनक इतिहासमे मिथिलेशक सहायता आ दूनूक साझा अभ्यास निहित अछि। परीक्षा समय पेनमे खराबी आ ओकर सुधारक प्रसंग देखबैत अछि जे वस्तुसँ बेसी महत्त्व मेहनत आ भरोसाक अछि। परिणाममे मिथिलेशक चयन होइत अछि। राघव फेर पेन देबय चाहैत अछि, मुदा मिथिलेश कहैत अछि

जे पेन एक अंक लिखने छल, बाकी उत्तर ओ स्वयं लिखने अछि। सौभाग्यक आड़मे मित्रक सहयोग आ अपन श्रम उजागर होइत अछि।

कथा १३१ · काठक घोड़ा

बढ़ई भोलनाथ अपन पुत्र संतोष लेल कटहरक काठक घोड़ा बनबैत अछि, जाहिमे एक नीमक चक्का अलग आवाज करैत अछि। भोलनाथ बीमार पड़ला पर औषधि किनबाक लेल संतोष घोड़ा हाटमे हबीब मियाँ कैँ बेचि दैत अछि। पिता बेटाक त्याग बुझैत छथि, मुदा काजक उचित दाम लेबाक बातो सिखबैत छथि। बादमे हबीब मियाँ चारि लट्टूक बदलामे ओ घोड़ा घुरबैत छथि। संतोष घोड़ाकैँ घरक औजारक पेटीपर सम्हारि रखैत अछि आ आन बच्चाकैँ सेहो खेलेबैत अछि। श्रमक मूल्य, परिवारक आवश्यकता आ स्मृतिक आकर्षण एहि खेलौनामे जुड़ैत अछि।

कथा १३२ · सिलाइ मशीन

लीला सिलाइ-मशीन चलाकऽ घरक आय जुटबैत छथि। पति हरिनारायणक जन्मदिनपर उपहार, मशीनक मोटर आ तत्काल धनक अभावसँ एक उलझन उपजैत अछि। लीला चालू मशीन बन्धक रखि धनक व्यवस्था करैत छथि, आ पुरान बेकार मशीनक पुर्जा सम्बन्धी सौदा सेहो होइत अछि। हरिनारायण आरम्भमे चकित छथि, मुदा सिलाइ सँ अर्जित धन द्वारा मशीन फेर छुड़ाओल जाइत अछि। बद्री मिस्त्री मोटर लगबैत छथि आ पएरक पैडल पर निर्भरता घटैत अछि। लाल किनारीक गमछा, बन्धकक पावती आ मशीनक आवाज दाम्पत्यक साझा परिश्रमक साक्षी बनैत अछि।

कथा १३३ · एक जोड़ी जूता

नवल अपन बहिन मृणालक महाविद्यालय नामांकन लेल आवश्यक धन जुटाबय अपन पुरान कारी जूता बेचि दैत अछि। जूताक नील सियाहीक अर्धचन्द्राकार दाग ओकर पहचान अछि। मृणाल नामांकनक बाद ई त्याग जानि लेत अछि आ छात्रवृत्तिसँ भेटल धनक एक हिस्सासँ रहीमक दोकानसँ ओही जूता घुरा अनैत अछि। भाई पहिने चप्पल पहिरि काज

चलबैत रहल छल। जूताक लौटब केवल वस्तुक पुनर्प्राप्ति नहि, बहिनक पढ़ाइ आ भाईक प्रेमक परस्पर सम्मान अछि। नील दाग दूनूक साझा स्मृति बनि रहैत अछि।

कथा १३४ · हेरायल पर्स

रिक्शाचालक रघुवीरक चालन-पत्र मरम्मतक कमी कारण रोकल गेल अछि; घरमे बेटी अनुष्काक शुल्कक चिन्ता सेहो अछि। एक यात्रीक हेरायल पर्स घुरेबा समय पता चलैत अछि जे ओ अधिकारी अशोक झाक अछि, जिनकर कार्यालयमे ओकर कागज अटकल अछि। रघुवीर पर्सक बदला न विशेष लाभ चाहैत अछि, न पैघ पुरस्कार; ओ नियमअनुसार मरम्मत आ जुर्माना पूरा करैत अछि। अधिकारी सेहो पक्षपात बिना चालन-पत्र घुरबैत छथि आ बाँकी पाँच टाकाक रिक्शा-भाड़ा चुकबैत छथि। ईमानदारी कैँ लाभक सौदा नहि बनेबाक आत्मसम्मान कथा मे प्रकट होइत अछि।

कथा १३५ · किरायाक कमरा

शिक्षक-प्रशिक्षणक विद्यार्थी सुमन मंडल तीन बरखसँ हरिमोहन ठाकुरक कोठरीमे भाड़े रहैत अछि। भाड़ाक हिसाबक एक अतिरिक्त रकमपर शंका आ आर्थिक दबावसँ ओ नव कोठरीमे चलि जाइत अछि। परीक्षा-शुल्क जमा करबाक समय पता चलैत अछि जे हरिमोहन ओकरा लेल धन सुरक्षित राखि शुल्क भरि देने छथि। भलमनसाहत भेलो पर बिना पूछने कएल व्यवस्था सुमनक निर्णयक अधिकार कैँ ठेस पहुँचबैत अछि। दूनू अपन-अपन भूल बुझैत छथि। सुमन परीक्षा उत्तीर्ण भऽ भविष्यक शुल्कक अलग बचत शुरू करैत अछि।

कथा १३६ · बिना नामक पार्सल

शिवकान्त मिश्रक घरमे भेजनिहारक नाम बिना उपयोगी वस्तु भरल पार्सल आबय लगैत अछि। परिवारमे आश्चर्यक संग संदेह सेहो फैलैत अछि, कारण पार्सलमे घरक भीतरक आवश्यकताक चीज रहैत अछि। अन्तमे शिवकान्त दरभंगा मालघरमे राति-पालीमे काज करनिहार पुत्र नन्दू कैँ पहचानैत छथि। नन्दू अपन कमाइ सँ माय लेल चादर, घरक मरम्मतक सामान आ आन सामग्री पठबैत रहल, मुदा गरीबी आ अनिश्चित काजपर

अनावश्यक प्रश्नसँ बचबाक लेल नाम नहि लिखने छल। पिता बुझैत छथि जे पुत्रक देर धरि सुतब आलस्य नहि, रातिक श्रमक परिणाम अछि।

कथा १३७ · तस्वीरक पाछाँ

पुरान घरक सामान छाँटैत उदयन आ स्वर्णलता कैं एक छायाचित्रक पाछाँ लिखल पाँति भेटैत अछि। वृद्ध फुआ विमला बतबैत छथि जे बाढ़िक राति कौशल्या नामक स्त्री नावसँ आबि प्रसवमे सहायता कएने छलीह, जाहिसँ हुनकर माय आ नवजात हरिनारायण दुनूक प्राण बचल। परिवारक इतिहासमे ओ स्त्रीक स्थान लगभग बिसरल गेल छल। कौशल्याक परिवार संग सम्पर्क होइत अछि, आ छायाचित्र बेचल नहि जाइत। ओसारमे तस्वीरक संग हुनकर नाम आ योगदान प्रकाशित होइत अछि। घरक मरम्मतसँ पहिने स्मृतिक सुधार होइत अछि।

कथा १३८ · दू दीप

दीपावली पर नितिन बचल मजूरीसँ दू माटिक दीप किनैत अछि। एकटा घरक दुआर लेल, दोसर श्मशान घाटक एकान्त चौकीदार लेल, जकर लालटेन टूटल अछि। घाटपर जा कऽ ओ देखैत अछि जे चौकीदार वास्तवमे ओकर बाबू रघुनाथ छथि, जिनकर रातिक कठिन काजक बात परिवार खुले रूपमे नहि करैत रहल। नितिन बाबूक परिचय बुझि हुनकर श्रम आ संकोचक अर्थ नव रूपमे देखैत अछि। माय मालती पहिने सँ ई बात जनैत छथि। दुआर आ घाटक दू दीप घरक उजास आ अनदेखल श्रमक सम्मानक प्रतीक बनैत अछि।

कथा १३९ · उधारक साड़ी

शैलबाला भानजीक विवाहमे नीक देखेबाक लेल चारि हजार दू सय टाकाक लाल किनारीवाली साड़ी किस्तपर किनैत छथि। विवाह बीतलाक बादो साड़ीक ब्याज आ बाकी रकम घरक औषधि, भोजन आ पढ़ाइक खर्चपर बोझ बनि रहैत अछि। तीन बरखमे साड़ी बहुत कम पहिरल जाइत अछि; विवाहक फोटोमे सेहो ओकरा कियो खास याद नहि करैत। अन्तमे शैलबाला बिना निमन्त्रण वा उत्सवक दिन साड़ी पहिरि बजार जाइत छथि। दोसराक

नजरिक लेल किनल वस्तु पर अपन अधिकार फेर स्थापित करबाक ई शान्त निर्णय कथा कैँ पूर्ण करैत अछि।

कथा १४० · पाँच धुर जमीन

पैतृक पाँच धुर जमीनक बाँटपर रघुनाथ आ जयनाथ भाइमे विवाद अछि। मुख्य बाट लगक एहि छोट टुकड़ाक दाम बढ़लासँ नापी, ईंट आ अदालतक चर्चा शुरू होइत अछि। तखने सड़क चौड़ीकरणक अधिसूचना अनुसार लगभग पूरा जमीन बाटमे जाएबाक बात स्पष्ट होइत अछि। दुनू भाइ मिलि कागज आ क्षतिपूर्तिक प्रक्रिया सँ जुड़ैत छथि। जमीनपर दुकान खोलबाक सपना देखनिहार दीपक लेल जयनाथ अपन दोसर ठाम प्रस्तावित करैत छथि। पाँच धुरक स्वामित्वक झगड़ा मेटैत भाइचारा धीरे-धीरे घुरि अबैत अछि।

कथा १४१ · मेजबान

गाममे प्रतिष्ठित रघुनाथ चौधरी अपन नव ओसारक अवसरपर पैघ भोज देबाक निर्णय करैत छथि। पिता द्वारा देल पुरान भोजक कीर्ति निभेबाक इच्छामे अतिथिक गिनती आ खर्च बढ़ैत जाइत अछि। भोजनक बाद रसोइया आ मजदूरक मेहनताना पहिने चुकाओल जाइत अछि, मुदा बचेबाक बदला घरपर उधार चढ़ैत अछि। रघुनाथ खर्चक नील पाँजि बनाकऽ किस्त चुकबय लगैत छथि। बादमे आन मेजबान हुनकासँ सलाह माँगैत छथि तँ ओ अपन सामर्थ्य अनुसार निमन्त्रणक बात कहैत छथि। एक दिनक प्रतिष्ठा आ महीनासभक आर्थिक भारक अन्तर कथा मे खुलैत अछि।

कथा १४२ · नव मोबाइल

विद्यार्थी अनिरुद्ध अपन पुरान मोबाइलपर मित्रसभक हँसीसँ लजा कऽ घरसँ आएल आवश्यक धन द्वारा नव मोबाइल किनि लैत अछि। मोबाइलक किस्त आ आयमे देरीक कारण परीक्षा-शुल्क जमा नहि भऽ पबैत अछि। निर्धारित दिन खिड़की बन्द भऽ जाइत अछि आ ओ परीक्षा दऽ नहि सकैत अछि। पिता लग पहिने बात नुकाबय चाहैत अछि, मुदा अन्ततः सभ सच कहि दैत अछि। पिता आगाँक अवसर ताकबाक सलाह दैत छथि। अनिरुद्ध

नव यन्त्र बेचि अगिला परीक्षाक शुल्क अलग राखैत अछि आ पुरान मोबाइल फेर उपयोग करय लगैत अछि।

कथा १४३ · दहेजक पंखा

मधुक विवाहमे मायकेसँ आएल ठाढ़ पंखाक नीचाँ ‘मधु विवाह’ लिखल कागज चिपकल अछि। एहि चिन्हक कारण पंखा घरक उपयोगी वस्तुसँ अधिक दहेज आ प्रतिष्ठाक स्मरण बनि जाइत अछि। पंखाक मरम्मत, मायकेक ऋण आ ससुरालक अभिमानपर बात बढ़ि दुनू परिवारक सम्बन्धमे दूरी अनैत अछि। बादमे मधु उमसभरि रसोइघरमे पसीना बहबैत सासु शान्ति देवी लेल ओही पंखा लऽ जाइत छथि। कागज रहलो पर पंखाक हवा सभक साझा आवश्यकता बनैत अछि। कथामे वस्तुक उपयोग मनमुटावसँ पैघ सिद्ध होइत अछि।

कथा १४४ · बड़का दरवाजा

नन्दकिशोर यादव घरक आगाँ ऊँच, भव्य फाटक बनबैत छथि, जखन कि पुरान छत चूअैत अछि। नव फाटकक नीचक सीमेंटक पट्टी बरखाक पानिक निकास रोकि दैत अछि; आँगनमे जलजमाव आ घरमे चुहानी बढ़ैत अछि। पत्नी विमला आ बेटी गौरीक चिन्ता सुनि नन्दकिशोर क्रमशः छत आ नालीक काज करबैत छथि। अन्तमे फाटकक सजावट अधूरी रहैत अछि, मुदा छत सुधरैत अछि आ पानिक बाट खुलैत अछि। बाहरी प्रदर्शनक तुलनामे घरक वास्तविक सुरक्षा आ उपयोगिता महत्त्वपूर्ण ठहरैत अछि।

कथा १४५ · सम्मान-पत्र

लेखक महेन्द्रनाथ झा कें साहित्य-सम्मानक निमन्त्रण भेटैत अछि, मुदा समारोह, स्मारिका, यात्रा आ भोजनक व्यय हुनकासँ भराओल जाइत अछि। कार्यक्रममे सम्मान-पत्र भेटैत अछि, तैयो नव कथा पढ़ेबाक अवसर नहि भेटैत आ प्रकाशित परिचयमे पोथीक नामक वर्तनी बिगड़ि जाइत अछि। घर घुरला पर ओ देखैत छथि जे सम्मान-पत्र टाँगबाक देबालमे सीलन अछि आ छत ठीक करब बाकी अछि। ओ कारीगरक बकाया चुकबैत छथि आ फेर नव कथाक संशोधनमे लगि जाइत छथि। बाहरी सम्मानक चमकसँ बेसी लेखकक वास्तविक साहित्यिक साधना केन्द्रमे रहैत अछि।

कथा १४६ · एक प्लेट कम

सुचित्राक विवाह-भोजमे एकटा पात जानि-बुझि पाँतिसँ हटाओल गेल अछि। भतीजी मैथिली एहि कमी कैँ देखैत अछि, आ सामाजिक दूरीक असमान व्यवहार सतहपर अबैत अछि। रातिक बरखामे अस्थायी रसोईक देबाल झुकि पड़ला पर जे लोक आ बच्चा संकटमे पड़ैत छथि, हुनकर रक्षा आ सहयोग पुरान भेदक अर्थ बदलैत अछि। बादमे चारि पात एक पाँतिमे बिछैत अछि आ भोजन परोसल जाइत अछि। भोरमे मैथिली पूछैत अछि जे काल्हि एक प्लेट कम कएल गेल छल ने। रामलोचन गिनती फेर सँ करबाक बात मानैत छथि।

कथा १४७ · नगरक पता

नगरमे रहनिहार अमरेश अपन गाम सोनबरसाक विस्तृत पता लिखबामे संकोच करैत अछि। रोजगारक आवेदनमे वर्तमान आ स्थायी दुनू पता ‘विद्यापति नगर’ भरि दैत अछि। सत्यापनक समय कागजक विसंगति सामने अबैत अछि आ संशोधन समयपर नहि भेला सँ एक अवसर छुटि जाइत अछि। गाम घुरला पर पूरा ठेगानावाली चिट्ठी ओकरा सही पहुँचित अछि। ओ बुझैत अछि जे पहचान नुकाएबासँ लाभ नहि, बाधा होइत अछि। अगिला आवेदनमे ओ गामक स्थायी पता आ शहरक वर्तमान पता दुनू स्पष्ट लिखैत अछि।

कथा १४८ · फोटोमे मुस्की

पिता विनोद बाबूक निधनक बाद चारू सन्तान श्राद्धक समय मुस्कुराइत एक सामूहिक छायाचित्र खिंचबैत छथि। सामाजिक माध्यमपर फोटो ‘आदर्श पारिवारिक एकता’क चिह्न बनैत अछि। मुदा घरक चाबी, सम्पत्ति आ देखभालक जिम्मेदारीपर हुनका सभमे मतभेद अछि। छोट बेटी सुधा पिता बीमारीक अन्तिम बरखमे घर रहि सेवा कएने छलीह, मुदा ओकर समयक गिनती धनक हिसाबमे नहि छल। बादमे देखभालक उपस्थितिक अलग लेखा शुरू होइत अछि। तस्वीरक मुस्की पाँच क्षणक छल; सम्बन्धमे न्यायपूर्ण बातचीतक आवश्यकता ओकर बादो बनल रहैत अछि।

कथा १४९ · कर्जक भोज

जगेसर मण्डलक निधनक बाद तेरहमीक भोजक सामाजिक दबावमे पुत्र हरिनारायण कर्ज लैत छथि आ बहिन नीलिमाक पढ़ाइ लेल रखल रुपैया खर्च भऽ जाइत अछि। भोजक प्रशंसा किछु दिन चलैत अछि, मुदा नीलिमाक सवारी-भाड़ा आ अध्ययनक साधन नहि जुटला सँ ओकर एक सत्र छूटि जाइत अछि। हरिनारायण धानक अग्रिम आ किस्तद्वारा कर्ज चुकबैत छथि। नीलिमा फेर बचत शुरू करैत अछि, तखन पढ़ाइ आगाँ बढ़ैत अछि। सामाजिक प्रदर्शनक अस्थायी यश आ एक विद्यार्थिनीक स्थायी शैक्षिक हानि कथा कैँ मार्मिक बनबैत अछि।

कथा १५० · किरायाक कार

रविक विवाहमे प्रतिष्ठा देखेबाक लेल नन्दकिशोर चमचम करैत महँग किरायाक मोटरगाड़ी सजबैत छथि आ वाहन-सेवाक चिन्ह ढाँपि दैत छथि। बारातक बाटमे गाड़ी बिगड़ि जाइत अछि। समय बचाबय साधारण जीप आनल जाइत अछि, जाहिपर किरायाक सेवा साफ लिखल अछि। विवाह निर्विघ्न होइत अछि, आ किछु समय बाद केओ गाड़ीक चर्चा नहि करैत। उलटे पट्टी ढाँपबाक कारण सफाइक अतिरिक्त शुल्क लगैत अछि। नन्दकिशोर अन्तमे सहजतासँ साधारण जीप स्वीकार करैत छथि।

कथा १५१ · सोना जेकाँ

पुरान सन्दूकमे सुनहर आभूषण भेटला पर रघुनाथ झा आ हुनकर परिवार ओकरा माएक असली सोना बुझैत अछि। गहना सुरक्षित रखबाक चिन्तामे चाबी, ताला आ बँटवाराक संदेह बढ़ैत अछि; पत्नी पुष्पापर निराधार शंका सेहो उठैत अछि। जाँचमे पता चलैत अछि जे गहना असली सोना नहि, पुरान नकली आभूषण अछि। परिवार बुझैत अछि जे चमकक लोभमे विश्वासक कतेक हानि भऽ गेल। अन्तमे एक हार विद्यालयक नाटक लेल देल जाइत अछि, बच्चा सभ कंगन सँ खेलैत अछि, आ डिबिया फेर खुलल रहैत अछि।

कथा १५२ · दस किलो चाउर

पंचायतक दस किलो चाउर सहायता-वितरणमे मालती देवी आ आन परिवारक छायाचित्र एक्के बोरा हाथमे देलाक बाद खींचल जाइत अछि। फोटो बनिते बोरा फेर लऽ लेल जाइत अछि; बदला केवल ‘प्राप्त’ पर्ची भेटैत अछि। बालक छोटू बोरा पर नील सूतक चीरा चिन्हैत अछि आ ओकरा सँ खसल पाँच दाना बचौने अछि। शिक्षक रमानन्दक सहयोगसँ फोटो आ गोदामक पाँजिक अन्तर खुलैत अछि। जाँचमे सामने अबैत अछि जे वास्तविक वितरण बिना कागजपर पूर्ण सहायता चढ़ा देल गेल छल। बालकक सूक्ष्म अवलोकन सरकारी प्रदर्शनक असत्य उद्घाटित करैत अछि।

कथा १५३ · महँग जूता

रामबाबू पदोन्नतिक साक्षात्कार लेल दू हजार आठ सय टाकाक चमकैत नव जूता किनैत छथि, कारण हुनका कहल गेल जे पहिल प्रभाव पएरपर पड़ैत अछि। साक्षात्कारमे मुदा पुरान प्रशिक्षण-प्रमाणपत्रक मोहर अस्पष्ट रहला सँ सत्यापित प्रति मँगाओल जाइत अछि। ओ दूर प्रशिक्षण-केन्द्र दौड़ि आवश्यक कागज अनैत छथि, मुदा प्रविष्टिमे देरीसँ हुनकर नाम पदोन्नति-सूचीमे नहि अबैत। महँग जूता एड़ी काटैत अछि आ सन्दूकमे पड़ल रहि जाइत अछि। नियम, कागज आ वास्तविक कामक मूल्यक सामने बाहरी चमक निरर्थक सिद्ध होइत अछि।

कथा १५४ · खाली लिफाफा

बेटी गौरीक विवाहक उपहारक लिफाफा गनैत हरिनाथ केँ रामविलासक खाली लिफाफा भेटैत अछि। परिवारमे शंका उठैत अछि, मुदा बादमे ज्ञात होइत अछि जे विवाहक राति विद्युत-व्यवस्था बचाबय हरिनाथ स्वयं ओहिसँ तीन हजार टाका निकालने छलाह आ हिसाब लिखब बिसरि गेल छल। आन किछु लिफाफा सेहो तत्कालीन आवश्यकतामे खोलल गेल छल। ओ परिवारकेँ अनुमानसँ रकम नहि भरबाक बात कहैत छथि। रामविलास केँ घटना न बतबैत हरिनाथ पाँजिमे वास्तविक व्यय लिखैत छथि। खाली लिफाफा उत्सवक चमकपाछाँक खर्च आ स्मृतिक अनिश्चितताक चिह्न बनैत अछि।

कथा १५५ · निमंत्रण

सौम्याक विवाहक निमन्त्रण सभ पड़ोसीकेँ भेटैत अछि, मुदा परिवारक पुरान घनिष्ठ शशिभूषण आ मालती केँ नहि। हुनका सभकेँ अपन सम्बन्ध उपेक्षित लगैत अछि। विवाहक आयोजन बाहरी प्रबन्धकक हाथमे अछि; छपल कार्डक सूचीमे अतिथि आ आयोजकक भेदसँ कतेको आत्मीय लोक छुटि जाइत छथि। मदनमोहन बादमे स्वयं आनि क्षमा माँगैत छथि। मालती बुझैत छथि जे छपल कार्ड सम्बन्धक पूर्ण प्रमाण नहि, तथापि अनदेखीक चोट वास्तविक अछि। ओ नव कार्ड पुरान स्मृतिक बक्सामे 'भूल'क रूपमे राखि दैत छथि।

कथा १५६ · छतरीवाला

रामनारायणक घरमे अतिथि-सत्कारक लेल नव सजल बैठक अछि। पुरान सेवक रघुनाथ बरखामे भीजल पएर आ पैबन्दवला छाता संग पहुँचैत अछि, ताहि लेल ओकरा भीतर बैसबामे संकोच कराओल जाइत अछि। वर्षाक पानि छतसँ चूअब शुरू भेला पर रघुनाथ अपन पुरान छाताकेँ उल्टा टाँगि पानि बाल्टीमे उतारबाक उपाय करैत अछि। बैठकक अधिकांश सामान बचि जाइत अछि। घरक लोक ओकरा भीतर सादर बजबैत छथि। अगिला दिन ओकर छाता बाहरी देबालक सहारे नहि, बैठकक भीतरक नव खूँटी पर टाँगल रहैत अछि।

कथा १५७ · नम्बर प्लेट

रमाकान्त अपन नव गाड़ी लेल विशेष '७७७७' नम्बर पाबय अनौपचारिक अतिरिक्त धन खर्च करैत अछि। ई चारि अंक ओकर प्रतिष्ठाक प्रतीक बनैत अछि। बरखामे गाड़ीसँ दुर्घटना भेलाक बाद ओ रुकि घायल वृद्धक सहायता करबाक बदला भीड़सँ डेरा कऽ चलि जाइत अछि। विद्यार्थी नीरज गाड़ीक अलग नम्बर मोन रखैत अछि आ पुलिसक सामने गवाही दैत अछि। नम्बरक आधार पर गाड़ी आ चालक चिन्हल जाइत अछि। जे अंक प्रदर्शन लेल चुनल गेल छल, ओही जवाबदेहीक प्रमाण बनि जाइत अछि।

कथा १५८ · गामक मंच

विद्यालयक मैदानमे 'गाम एक, मान एक' लिखल मंच सजैत अछि। बाँसक काज करनिहार फेकन आ ध्वनि-व्यवस्था सम्हारनिहार हुनकर बेटा केदार आयोजनमे परिश्रम करैत छथि। मुदा भोजक समय मजदूर आ नदी-पारक बस्तीक लोककेँ देबालक पाछाँ अलग पाँतिमे बैसाओल जाइत अछि। केदार अपन परिवारक संग भोजन करैत अछि आ मंचक एकताक नारा आ व्यवहारक भेदक विरोधाभास देखैत अछि। साँझ मंच खोलबाक समय ओ भोजनक पाँति बाँटनिहार रस्सी 'गाम एक, मान एक'वला पट्टीक चारू कात लपेटि दैत अछि।

कथा १५९ · खिड़की लग बैसल लड़की

पन्द्रह बरखक माधवीक पढ़ाइ आठम कक्षा बाद रोकि देल गेल अछि, कारण नव विद्यालय तीन कोस दूर अछि। ओ खिड़कीसँ सहपाठी लड़कीसभकेँ साइकिलपर विद्यालय जाइत देखैत रहैत अछि। पाती पहुँचौनिहार रघुनाथक सहयोगसँ ओ अपन पुरान प्रधानाध्यापिका केँ नामांकनक उपाय पूछैत लिखैत अछि। उत्तर अबैत अछि आ पिता धीरे-धीरे ओकर पढ़ाइ जारी रखबाक अनुमति दैत छथि। प्रमाणपत्र लऽ पिता संग चलैत माधवी केँ रघुनाथ पूछैत छथि जे आइ खिड़की खाली किएक अछि। ओ कहैत अछि जे आइ ओ बाटपर अछि।

कथा १६० · परदेसियाक बेटी

सीमापार विराटनगरक गोदाममे काज करनिहार हरिनारायण घर कम अबैत छथि, मुदा बेटी कुसुम केँ पाती पठबैत रहैत छथि। कुसुम केवल रुपैयाक खबरि नहि, पिताक श्रम, गोदामक लोक आ हुनकर जीवनक कथा जानय चाहैत अछि। ओ पिता लिखल कथापर प्रश्न करैत अछि; उत्तरमे पात्रक नाँव, अनुभूति आ श्रमिकक स्वाभिमानक नव विवरण जुड़ैत जाइत अछि। पिता घुरला पर दूनू कथा लिखबाक सहयात्री बनैत छथि। सीमाक अलग-अलग माटि छूबैत दू जूताक कथा पिता शुरू करैत छथि आ आगाँ लिखबाक ठाम कुसुम लेल छोड़ैत छथि।

कथा १६१ · अधूरा गीत

गामक पुरान रोपनी-गीत कौशल्या दादीक स्मृतिमे जीबैत अछि, मुदा गीतक दोसर स्वर देनिहार झुनकी आब नहि छथि। पोती मृणाल एहि गीतकेँ नव ढंगसँ सजाबय चाहैत अछि। दादी ओहि जगहक खालीपन भरबाक लेल मनगढन्त शब्द जोड़बाक विरोध करैत छथि, कारण गीत दू स्त्रीक मिलल स्वर छल। मृणाल पहिने मूल धुन आ ओहिमे पड़ैत मौन सुरक्षित करैत अछि, तकर बाद अपन पीढ़ीक स्वर अलग जोड़ैत अछि। एहि तरहें अधूरापन मिटाओल नहि जाइत, बल्कि बीतल समय आ वर्तमानक बीच संवादक जगह बनैत अछि।

कथा १६२ · नदीक पाती

बाढ़िक बाद नदीक बदलल धार माधवी आ सुधा केँ एक-दोसरासँ दूर कऽ दैत अछि। दुनू सहेली नदीक कात पुरान घैल लग माटिक टुकड़ापर लिखल पाती छोड़ि अपन सम्पर्क बनौने रखैत अछि। एक बेर टुटल पातीमे ‘हम आब नहि’ मात्र बचलासँ आशंका जन्मैत अछि, जखन कि पूरा बात छल—‘हम आब नहि डेराइत छी’। नदी फेर किनार बदलैत अछि तँ दुनू बिनु खतरा उठौने पाती राखबाक नव सुरक्षित ठाम खोजैत छथि। पाती सम्पर्कक साधन रहैत अछि, मुदा एक-दोसराक वचन पूरा बुझबाक सावधानी सेहो सिखबैत अछि।

कथा १६३ · छोट नौकर

एक घरमे छोट बालक ईशानक बढ़ैत कद नापि काठक चौखटपर चिन्ह लगाओल जाइत अछि। ओही घरमे काज करनिहार हमउमेर कन्हैया अपन कद दोसर कात चिन्हित करैत अछि। घरक लोक पहिने केवल ईशानक चिन्ह पर ध्यान दैत छथि; कन्हैयाक बढ़ैत देह, परिश्रम आ बचपन ओझराएल रहैत अछि। घरक चौखट बदलल जाएबाक समय दुनू कातक चिन्ह सामने अबैत अछि। पुरान काठक टुकड़ा सुरक्षित राखल जाइत अछि आ दुनू बालकक बढ़बाक कथा एकसंग देखल जाइत अछि।

कथा १६४ · माएक बक्सा

ललिता देवीक निधनक बाद हुनकर तीन बेटी मंजरी, रेणु आ तारा माएक पुरान बक्सा खोलैत छथि। ओहिमे राखल अलग-अलग अधूरा पातीमे माँ अपन तीनू बेटी लग किछु अनकहल बात, अपन चूक आ स्नेह प्रकट करबाक प्रयास कएने छलीह। बहिनसभ पहिने एहि अधूरा शब्दक अर्थ अलग-अलग बुझैत छथि, फेर माएक जीवन आ आपसक दूरी पर बातचीत शुरू करैत छथि। कियो पातीक छुटल पाँति अपन दिससँ पूरा नहि करैत अछि। बक्सामे भेटल अधूरापन हुनका सभकेँ जीवित सम्बन्धमे बाँकी रहल बात कहबाक अवसर दैत अछि।

कथा १६५ · पाठशालाक आँगन

कम विद्यार्थी रहबाक कारण गामक पाठशाला बन्द करबाक प्रस्ताव अबैत अछि। शिक्षक रत्नेश्वर विद्यालय बचाबय चाहैत छथि, मुदा नामांकन घटल अछि। गामक सुभद्रा देवी साँझक कक्षामे अपन नाम लिखब सीखैत छथि आ परिवारसभसँ बच्चाकेँ पाठशाला पठेबाक बात करैत छथि। नव नामांकन बढ़ैत अछि, विद्यालय बन्द करबाक प्रस्ताव रुकैत अछि। पाठशालाक आँगन केवल बच्चाक पढ़ाइ तक सीमित नहि रहैत; ओतय प्रौढ़क अक्षर-परिचय आ गामक सामूहिक जिम्मेदारी सेहो स्थान पबैत अछि।

कथा १६६ · सिंदूरक डिबिया

रेवती अपन दादी कमला देवीक पुरान सिन्दूरक डिबिया पबैत अछि आ ओकरा देखिकऽ जिज्ञासु होइत अछि। दादी पति मरलाक बाद सिन्दूर हटेबाक ओहि दिनक स्मृति सुनबैत छथि, जखन हुनकर नन्ही बेटी मालती बदलल रूप देखिकऽ अपन माएकेँ चिन्हबामे ठमकि गेल छलीह। विधवापनक सामाजिक नियम आ माए-बेटीक आत्मीय परिचयक बीचक पीड़ा एहि डिबियामे संचित अछि। दादी एहि स्मृति कैँ छिपबैत नहि छथि; रेवतीक संग बाँटैत छथि, जाहिसँ डिबिया चुप्पीक वस्तु नहि, पीढ़ीक बीच समझक सेतु बनैत अछि।

कथा १६७ · गाछक झूला

कुसुम अपन बेटी मानसी केँ लऽ मायके अबैत अछि तँ पुरान आमक गाछपर झूलबाक स्मृति जागैत अछि। मुदा गाछक कमजोर भऽ चुकल डार आ जड़ लोकक सुरक्षाक लेल संकट बनल अछि। शारदा दादी पुरान झूला आ गाछ सँ जुड़ल याद सुनबैत छथि, मुदा ओकरा बचाबय लेल जोखिम उठेबाक पक्षमे नहि छथि। गाछ हटाओल जाइत अछि, आ परिवार नव पौधा लगबैत अछि। झूलाक रस्सी सुरक्षित राखल जाइत अछि, जे भविष्यक हरियर छाँह आ अगिला पीढ़ीक खेलक प्रतीक्षा करैत अछि।

कथा १६८ · माटिक बाँसुरी

कुम्हारक बेटा नीलू माटिक बाँसुरी बनबैत अछि, मुदा ओकर एक स्वर प्रचलित नापसँ अलग सुनाइत अछि। संगीतक गुरु देवव्रत पहिने ओकरा त्रुटि बुझैत छथि। नीलू फूँक आ अंगुरीक भिन्न प्रयोगसँ ओही बाँसुरीमे इच्छित धुन निकालि देखबैत अछि। गुरु सीखैत छथि जे साधनक बनावट मात्र नहि, कलाकारक सुनबाक शक्ति आ प्रयोग सेहो महत्त्व रखैत अछि। बाँस आ माटिक बाँसुरीक आदान-प्रदानसँ परम्परागत ज्ञान आ बालकक नव प्रयोग एक-दोसराकेँ समृद्ध करैत अछि।

कथा १६९ · एकटा नाम

दत्तक बालक अंशु केँ अपन पुरान आश्रयगृहमे कहल जाएवाला नाम ‘कुश’क पता लगैत अछि। ओ बुझय चाहैत अछि जे अपन पहिल नामक स्मृति राखब नव परिवारसँ प्रेममे कोनो कमी तँ नहि अनैत। माँ शैलजा पहिने एहि प्रश्नसँ असहज होइत छथि, कारण हुनका डर रहैत अछि जे दू नाम हुनका अपनत्वमे दूरी ने आनय। बेटाक सहज जिज्ञासा हुनका बुझबैत अछि जे पूर्व जीवनक स्मृति मेटौने बिना वर्तमान सम्बन्ध सुदृढ़ रहि सकैत अछि। अन्तमे माँ ओकरा ‘कुश’ कहिकऽ बजबैत छथि; अंशु अपन दुनू नाम संग स्वीकारल जाइत अछि।

कथा १७० · साँझक पाठ

नयन अपन दादी सरयूक मुँहसँ सुनल ‘छाँह खोजैत चिरैयाँ’क कथा लिखबाक प्रयास करैत अछि। दादी चाहैत छथि जे घटनाक संग हुनकर बोली, विराम आ स्वरक अर्थ सेहो बचल रहय। साँझक एहि पाठमे भूमिका बदलैत अछि; नयन दादीकेँ अपन नाम लिखब सिखबैत अछि आ दादी ओकरा मौखिक कथाक बारीकी बुझबैत छथि। स्लेटपर दुनू पीढ़ीक नाम आ कथाक शब्द एकसंग अबैत अछि। पढ़ब-लिखब आ कथा सुनब परस्पर सम्मानक साझा सीख बनैत अछि।

कथा १७१ · सीमाक मेला

जनकपुरक मेलामे रानी नामक छोट बच्ची भीड़मे मायेसँ बिछुड़ि जाइत अछि। मञ्जु, देवेश आ बेटी गौरी ओकरा भेटैत छथि; बादमे भारतक दिससँ आएल सविता, रमेश आ हुनकर बेटा अभय सेहो खोजमे जुड़ैत छथि। बच्चीक घरक पहचान ओकर स्मृतिमे बचल दू गाय, लाल देबाल आ उज्जर फूलक निशानसँ होइत अछि। दुनू परिवार ओकरा घर पहुँचा दैत अछि। नेपालक गौरी आ भारतक अभयक संग बैसल रानी अपन परिचय ‘हम एतयक’ कहिकऽ दैत अछि। सीमाक दुनू दिसक अपरिचित लोकक सहयोगसँ बच्ची सुरक्षित घर घुरैत अछि।

कथा १७२ · नीमक छाँह

घरक काज करनिहार जमुना काकी ज्वरक कारण किछु दिन नहि अबैत छथि तँ परिवार हुनकर प्रतिदिनक श्रमक वास्तविक विस्तार बुझय लगैत अछि। नीमक छाँहमे बैसि ओ घरक बच्चासभक चिन्ता सुनैत छलीह, कम अंकक कागज देखैत छलीह आ छोट-छोट बात सम्हारैत छलीह। अनुपस्थितिमे घरक लोक काज बाँटब सीखैत छथि। घुरलापर हुनका पूरा मासक मेहनताना देल जाइत अछि, कारण लिखल काजसँ बाहर हुनकर योगदानक हिसाब नहि बनि सकल। जमुना काकी परिवारकेँ अपन जिम्मेदारी बाँटने रखबाक आग्रह करैत छथि। नीमक छाँह साझेदारी आ सम्मानक ठाम बनैत अछि।

कथा १७३ · कागजक नाव

माएक निधनक बाद भाई नरेश आ बहिन सुधा पुरान घरक हिस्सा बाँटैत छथि। आँगनमे तनल डोरी आ नालीक बाँट पर विवाद उठैत अछि। बरखाक पानिमे बहैत कागजक नाव हुनका सभकेँ बचपनक ओहि छोट पुलक याद दियबैत अछि जे दुनू मिलि बनौने छलाह। स्मृति जमीनक हिसाब समाप्त नहि करैत, मुदा साझा बाटक महत्त्व फेर सामने अनैत अछि। दुनू अमीनसँ नव नापी करबा कऽ बीचमे छह हाथ सार्वजनिक बाट आ पानिक निकास छोड़बाक सहमति करैत छथि। अलग घरक बीच पानिक साझा बाट बाँचि जाइत अछि।

कथा १७४ · चुप्पी

सरोजिनी देवी आ पुत्रवधू रीता एक्के घरमे रहितो अपन बात मनोजक माध्यमसँ कहैत छथि। दैनन्दिन आलोचना आ संकोचसँ हुनका बीच चुप्पीक देबाल बनि गेल अछि। रीताक बेटी अदिति बीमार पड़लापर अस्पतालमे दुनू स्त्रीकेँ राति भरि एकसंग ओकर देखभाल करय पड़ैत अछि। डर, थकान आ चिन्ताक बीच पहिल बेर ओ सीधे एक-दोसरासँ बात करैत छथि। अदितिक स्थिति स्थिर होइत अछि आ दुनू घर घुरैत छथि। पुरान दूरी तुरन्त नहि मिटैत, मुदा आब छोट-छोट प्रश्न लेल मनोजक मध्यस्थता आवश्यक नहि रहैत अछि।

कथा १७५ · पोस्टकार्ड

विद्यालयक बच्चासभ वृद्ध-निवासक लोककेँ पोस्टकार्ड लिखैत अछि। नयनक भेजल पाती गोमती देवी धरि पहुँचैत अछि, जिनकर नाम सुनि नयनक दादी भवानी देवीक पुरान सम्बन्धक स्मृति जागैत अछि। दुनू स्त्री बरखोंसँ एक-दोसरासँ दूर छलीह। नयनक माध्यमसँ भवानी देवी स्वयं काँपैत हाथसँ पाती लिखैत छथि, आ अन्तमे दुनूक भेंट होइत अछि। ओ दुनू नयनकेँ पोस्टकार्डपर ‘बाट भेटि गेल’ लिखि पठबैत छथि। हाथसँ लिखल किछु शब्द पुरान चुप्पी तोड़ि सम्बन्धक बाट फेर खोलैत अछि।

कथा १७६ · झरोखाक फूल

विद्यालय जाएवाला दिवाकर प्रतिदिन पुरान घरक झरोखामे राखल फूल देखैत अछि आ फूलक रंगसँ अपन दिनक अर्थ जोड़ि लैत अछि। भीतर रहनिहार वृद्धा कमला देवी पहिने ओहि अनजान बालकक जिज्ञासा देखैत छथि। फूल नहि भेटलाक दिन दिवाकर चिन्तित होइत अछि आ क्रमशः दूनूक परिचय बढ़ैत अछि। झरोखाक पाछाँसँ शुरू भेल बातचीत वृद्धाक एकान्त घटबैत अछि। एक दिन फूल झरोखाक बदला दुआरिक पीढ़ापर रहैत अछि, कारण कमला देवी एखन ओतय धरि चलि सकैत छथि। दिवाकर एहि छोट परिवर्तनक आनन्द बुझैत आगाँ बढ़ि जाइत अछि।

कथा १७७ · पहिल कमाइ

पोथीक दोकानमे बारह दिन काज कऽ मंजरी कैँ पहिल कमाइक एक हजार छओ सय अस्सी रुपैया भेटैत अछि। ओ माए सुलोचना देवी लेल नव चप्पल किनय चाहैत अछि, मुदा माए अपन पुरान चप्पलक केवल खराब पट्टी बदलबैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे बेटीक महाविद्यालयक नामांकन आ पोथी लेल रुपैया पहिले सुरक्षित रहय। मंजरीक मनमे उपहार देबाक इच्छा आ आगाँक पढ़ाइक आवश्यकता एकसंग अछि। माएक चुनल छोट मरम्मत आ बेटीक झोरामे राखल पोथी दुनू पहिल कमाइक अर्थ बनैत अछि।

कथा १७८ · लौटैत गीत

सात बरख बाद परदेससँ गाम घुरल राघव बदलिएल बाट, घर आ पोखरि देखि अपन परिचित संसारसँ अपरिचित भऽ जाइत अछि। धान फटकैत फुलकुमारी काकीक मुँहसँ सुनल पुरान रोपनी-गीत ओकरा बालपनक अधूरा पाँति याद दियबैत अछि। काकी आ राघवक माए मिलि गीतक अलग-अलग पाँति सुधारैत आ हँसैत छथि। राघव गाममे बसबाक कोनो निर्णय नहि करैत, मुदा बुझैत अछि जे भौतिक बाट बदललाक बादो लोकक स्वर आ उत्तर देबाक ढंग स्मृतिमे बचल रहैत अछि।

कथा १७९ · सीमाक कागज

सीमा पार कऽ बेटीक घरसँ बेटाक घर घुरैत वृद्धा देवकी देवी कैँ परिचयक कागज नहि भेटलासँ चौकीपर रोकल जाइत अछि। बेटी मुनिया दोसर दिस, बेटा शम्भू एहि दिस पहुँचैत छथि; पुरान कागज जुटेबामे कठिनाइ होइत अछि। स्थानीय परिचय आ अभिलेख जाँचलाक बाद देवकी देवी कैँ पार जाएबाक अनुमति भेटैत अछि। हुनकर आँचरमे दुनू घरक चाबी छल, मुदा ओहि कागजकैँ एक ठाम रखबाक प्रश्नपर बेटा चुप भऽ जाइत अछि। सीमा दुनू दिशाक घर आ सम्बन्धकैँ कागजक एकरेखीय परिचयसँ अलग देखबैत अछि।

कथा १८० · बाढ़ि शिविर

बाढ़िसँ बेघर भेल रतना अपन बेटी चुनमुन संग राहत शिविरमे रहैत छथि। मंचपर स्त्री-सुरक्षाक घोषणा होइत अछि, मुदा वितरण-पर्चीक बहाने स्वयंसेवक हरिनन्दन हुनका एकान्त गलियारामे रोकि अभद्र व्यवहार आ यौन उत्पीड़न करैत अछि। रतना विरोध करैत बाहर निकलैत छथि आ नीलम, सुगनी तथा आन स्त्रीक सहयोगसँ शिकायत सामने रखैत छथि। हरिनन्दन कैँ कार्यसँ हटाओल जाइत अछि; रोकल गेल पर्ची भेटैत अछि। शिकायत पेटीक ठाम, प्रकाश, वितरणक निगरानी आ खुला गलियाराक व्यवस्था बदलैत अछि। सुरक्षा घोषणासँ नहि, उत्तरदायी व्यवहारसँ बनैत अछि।

कथा १८१ · लाल कम्बल

दंगाक राति चिकित्सालयमे मृत भेटल अचिन्हार बालकक देह लाल कम्बलसँ ढाकल अछि। दू मुहल्लाक लोक ओकरा अपन-अपन हरायल बच्चा बुझि दाबी करैत छथि आ कम्बलक सिलाइक चिन्हसँ पहचान जोड़य लगैत छथि। मंगला देवी आ सीता मुसहरिन बतबैत छथि जे ई कम्बल नगरपालिकाक एक्के खेपमे बनल अनेक कम्बलमे सँ एक अछि। बालकक वास्तविक पहचान नहि भेटैत अछि, तैँ ओकर देह कोनो पक्षकैँ नहि सौंपल जाइत। अपन-अपन बेटा खोजैत दू माँ चिकित्सालयक दुआरि लग एक-दोसरासँ रोटी बाँटैत छथि। सामुदायिक दावाक बीच अचिन्हार बच्चाक मनुष्यत्व बचल रहैत अछि।

कथा १८२ · नाम पूछू नहि

रेलगाड़ीक दुर्घटनाक बाद अस्थायी उपचार-ठाममे परिचारिका प्रज्ञा देवी घायलक नाम पूछबाक पहिने साँस आ चोट जाँचबाक आग्रह करैत छथि। बाहर नाम, धर्म आ मृतकक अप्रमाणित संख्या पर अफवाह फैलि रहल अछि। भीतर दीपक रक्तसमूहक आधारपर दाता आ रोगीकेँ जोड़ैत अछि; रमजान अंसारी हरिशंकर पासवान लेल रक्त दैत छथि, मुदा दूनू एक-दोसराक परिचय नहि जनैत। परिजन खोजबाक सूचीमे नाम सत्यापित होइत जाइत अछि। उपचारक क्रम आ परिचयक खोज अलग रखलासँ असली सहायता सम्भव होइत अछि आ अफवाहक विभाजनक विरोधमे मानवीय आवश्यकता अग्रणी बनैत अछि।

कथा १८३ · रजिस्टर

देवकी महतो घरसँ निपत्ता भेला पर माए भवानी देवी आ भाइ जोगेन्द्र थाना पहुँचैत छथि। पाँजिमे देवकीक सम्बन्ध गलत ढंगसँ ‘जोगेन्द्रक पत्नी’ लिखल जाइत अछि; काजक ठामक मालिकक एकपक्षीय बयान दर्ज होइत अछि, मुदा गालक चोट आ मजदूरीक विवाद उपेक्षित रहैत अछि। स्त्री-आश्रयमे सुरक्षित भेटल देवकी स्वयं अपन बात दर्ज करय चाहैत अछि। ओकर प्रश्नपर पुलिस पूर्व टिप्पणीक एकपक्षीय होयब लिखैत अछि आ नव सूचनामे ओकर वास्तविक परिचय जोड़ैत अछि। पाँजिक खाली स्थानपर अधिकार पाबब देवकी लेल अपन आवाज पुनः पाबब अछि।

कथा १८४ · खुलल दरवाजा

नगरमे काजक बहाने लऽ जाएल रेखा चौदह मासक शोषणक बाद मुक्त भऽ परिवार लग घुरैत अछि। घरक लोक ओकरा बचाबय चाहैत छथि, मुदा पड़ोसीक प्रश्न, घरक चुप्पी आ ओकर स्वतंत्रतापर आशंका ओकर घुरबाक अर्थ कठिन बनबैत अछि। रेखा कहैत अछि जे ओकर लौटब लुकेबाक बात नहि, मुदा सभ प्रश्नक उत्तर देबो आवश्यक नहि। ओ पुरान सिक्कीक डलिया बनेबाक काज फेर शुरू करैत अछि आ मालती काकीक सहयोगसँ हाट जाइत अछि। दुआरि खुलल होयबाक अर्थ ओकरा अपन पएर सँ बाहर जा फेर स्वेच्छासँ घर घुरबाक अधिकार भेटब अछि।

कथा १८५ · तीन मिनट

हाटमे ठेला आ साइकिलक मामूली टक्करक बाद भीड़ बढ़ैत अछि आ ‘मारलक’ सन अपुष्ट बातसँ हिंसाक सम्भावना बनैत अछि। गुड्डूक हाथमे ईंट आबि जाइत अछि आ किछु लोक चल-दूरभाषपर दृश्य उतारय लगैत अछि। नथुनी काका चुपचाप साइकिल उठाबय लगैत छथि; हुनकर हस्तक्षेपसँ भीड़क गोल टूटैत अछि, ईंट नीचाँ पड़ैत अछि आ मूल पक्षक बात सुनाइत अछि। बादमे तीन मिनटक चलचित्रमे आरम्भक धक्का आ पूरा स्पष्टीकरण नहि होयब काका देखबैत छथि। अधूरा दृश्य आ अफवाहक बीच एक साधारण हस्तक्षेप दू युवकक जीवन बदलि देबासँ रोकैत अछि।

कथा १८६ · कपड़ा

बाढ़ि राहत शिविरमे स्त्रीसभ लेल वस्त्रक गठरी तँ पहुँचैत अछि, मुदा कपड़ा बदलबाक गोपनीय ठाम नहि अछि। रूपकला देवी एहि अभावक दिस ध्यान देबैत छथि। अधिकारीक हिसाबमे आड़ बनेबाक अलग मद नहि रहितो ओ नाप नहि मिलल साड़ीसभ जोड़ि टूटल कोठरीमे परदा बना दैत छथि। सुलेखा आ आन स्त्री आब मर्यादाक संग कपड़ा बदलबैत छथि। वितरणक पाँजिमे कपड़ाक संख्या अछि, मुदा कपड़ासँ बनल आड़ केवल वस्तु नहि, स्त्रीक गरिमा आ निजी स्थानक आवश्यकता प्रकट करैत अछि।

कथा १८७ · स्टेशनक कोठरी

दरभंगा स्टेशनपर सात बरखक रवि भीड़मे परिवारसँ बिछुड़ि जाइत अछि। कुली बंशी आ रेलवे कर्मचारी रामविलास ओकरा सुरक्षित कोठरीमे रखैत छथि। बाहर लोक अनुमानक आधारपर ओकर अलग-अलग नाम आ परिचय जोड़ैत छथि, मुदा रवि अपन नामपर अडिग रहैत अछि। राति भरि खोजलाक बाद माए-पिता आ नन्ही बहिन राधिका भेटि जाइत छथि। रवि बहिन लेल बचौने मठरीक टुकड़ा ओकरा दैत अछि। परिवारक पुनर्भेंटमे बच्चाक अपन नाम आ अनुभवक महत्त्व अनुमानसँ ऊपर सिद्ध होइत अछि।

कथा १८८ · मौन गवाही

न्यायालयमे कुसुम एक आघातजनक घटनाक सम्बन्धमे गवाही देबाक लेल अबैत अछि। ओकर कम बाजबाकेँ आन लोक अपन-अपन ढंगसँ भय वा साहसक नाम देबय चाहैत छथि। सुनबाइक बीच कुसुम प्रश्नक उत्तर अपन गतिसँ दैत अछि आ लिखल बयानमे ‘बहुत भयभीत’ सन ओहि शब्दकेँ हटेबैत अछि जे ओ स्वयं नहि कहलने अछि। बाहर संवाददातासँ ओ कहैत अछि जे एहि विषयमे जे कहबाक छल, न्यायालयमे कहि देलक। माए सेहो सीखैत छथि जे बेटी अपन बात कहबाक अधिकार स्वयं रखैत अछि। मौन ओकर आवाजक अभाव नहि, चयनक अधिकार अछि।

कथा १८९ · दू शव

बाढ़िक बाद गाम लग दू अचिन्हार मृतदेह भेटैत अछि। लाल सूत, कारी डोरी आ भेटल स्थानक आधारपर लोक हुनकर धर्म आ टोल अनुमान करैत छथि। नाविक जमीर बुझबैत अछि जे उलटैत बाढ़िक धारसँ देहक मूल दिशाक अनुमान नहि लगाओल जा सकैत। स्वास्थ्यकर्मी रेखा कुमारी आ आन लोक पहचानक निश्चित जानकारी भेटय धरि दुनू देह सुरक्षित राखबाक पक्षमे छथि। अन्तमे दुनू मृतदेह शीतगृह पठाओल जाइत अछि, धर्मक कोठरी खाली रहैत अछि। अज्ञातकेँ जल्दबाजीमे गलत परिचय देबाक बदला सावधानी आ सम्मानक निर्णय होइत अछि।

कथा १९० · कर्फ्यूक दूध

निषेधाज्ञाक तीन दिन बाद दू टोलामे बच्चासभ लेल दूधक अभाव बढ़ैत अछि। बद्री ग्वाला अपन पुरान ग्राहकसभक घर दूध पहुँचाबय चाहैत अछि, मुदा दुनू दिसक लोक ओकर आवागमनपर सन्देह करैत छथि। महेश्वर साहक नतिनी लेल दूध लऽ जाइत बद्रीपर खबरि ढोएबाक आरोप लगैत अछि। ओ स्पष्ट करैत अछि जे ओ दूध बेचैत अछि आ लोकसभ एक बाटकेँ दू भागमे बाँटि देने अछि। अल्प छूटमे दूध बाँटल जाइत अछि। घरमे उत्तर आ दक्खिन टोलाक नाप-पात्र अलग राखल अछि, मुदा दूधक घैल एक्के अछि।

कथा १९१ · टूटा चप्पल

चौकपर भगदड़िक बाद पत्रकार अरुण झा सड़कपर पड़ल टूटल नील चप्पल आ लाल दाग देखिकऽ स्त्रीक मृत्यु सम्बन्धी अनुमान लिखि दैत अछि। जीवित शकुन्तला देवी समाचार पढ़ि ओकरा प्रश्न करैत छथि। ओ बतबैत छथि जे लाल दाग रक्तक नहि, कुचल टमाटरक अछि; पुरान चप्पलक पट्टी भागैत समय टूटल छल। अरुण तथ्य जाँचि सुधार छपबैत अछि आ चप्पल घुरबैत अछि। शकुन्तला ओकर मरम्मत कऽ फेर अपन ठेला लगबैत छथि। पत्रकारकेँ बुझाइत अछि जे वस्तुक छायाचित्रसँ ककरो पूरा जीवन वा मृत्यु घोषित नहि कएल जा सकैत।

कथा १९२ · बन्द कमरा

सिलाइक काज आ मजदूरीक आशा देखाकऽ नीलम, मालती आ रुखसाना केँ शहरक एक कोठरीमे बन्द राखि श्रम कराओल जाइत अछि। नीलम प्रत्येक दिनक हिसाब धागाक गाँठमे राखैत अछि। उद्धारक बाद बाहरक भीड़ आ छायाचित्र लैत लोक हुनका सभक निजी अधिकारपर फेर अतिक्रमण करय चाहैत छथि। आश्रयगृहमे नीलम अपन सुविधा अनुसार दुआर आध खोलैत आ फेर भीतरसँ बन्द करैत अछि। पुरान कैदक दुआर आ नव सुरक्षित कोठरीक दुआरक अन्तर चाबीक अधिकारमे अछि। दिनक गाँठसभ ओ सुरक्षित राखैत अछि, किएक तँ बितल अनुभव मेटाओल नहि जा सकैत।

कथा १९३ · दाग

हिंसाक शिकार बिमला देवीक बाँहिपर लागल दागक चिकित्सकीय विवरण आ बयान पहिनेसँ दर्ज अछि, तइयो सहायता-कक्षमे ओकरा फेर देखेबाक माँग उठैत अछि। किछु लोक प्रमाण आ सहानुभूतिक नामपर देहक चिह्न सार्वजनिक करय चाहैत छथि। बिमला कहैत छथि जे आवश्यक साक्ष्य देल जा चुकल अछि, सभक उत्सुकता न्याय नहि होइत। सभामे सेहो ओ अपना बारेमे बोलबाक अधिकार अपने रखैत छथि। बादमे दर्जिन नसीमा लग बाँहिक नाप दैत समय दागक चर्चा मात्र कपड़ाक सुविधा लेल होइत अछि। एहि साधारण व्यवहारमे बिमलाकेँ गरिमा भेटैत अछि।

कथा १९४ • रातिक ट्रक

काज छूटल बाइस प्रवासी मजदूर रातिमे घर घुरबाक लेल ललित साहक व्यवस्था कएल ट्रकपर निर्भर होइत छथि। भाड़ा, सीमा-पारक नियम आ सुरक्षित यातायातक प्रश्नपर चालक बद्री, कर्मचारी जयकान्त, मजदूर सीतो आ बिचौलियाक बीच टकराव होइत अछि। मजदूरक विवशताकेँ ‘सहायता’ कहिकऽ महँग भाड़ा लेल जाइत अछि। सीमा पैदल पार करय पड़ैत अछि, फेर ट्रकपर चढ़बाक बाध्यता रहैत अछि। तिरपालमे साँस लेबाक फाँक छोड़ि देल जाइत अछि। नियम, व्यापार आ दयाक अलग-अलग अर्थक बीच मजदूरक थाकल देह यात्राक असली मूल्य देखबैत अछि।

कथा १९५ • पहचान-पर्ची

उपद्रवक बाद चिकित्सालयमे अचिन्हार मृतदेहक कलाईपर ‘सम्भवतः पच्छिम टोला’ लिखल पर्ची लागैत अछि। सलमान आ जाहिरा अपन बहिन नसीम केँ पहचानैत छथि आ अनुमानक आधारपर बनेल गलत विवरण बदलय कहैत छथि। नसीमक नाम आ परिचय सत्यापित कऽ नव पर्ची लगाओल जाइत अछि; पुरान अनुमान आधिकारिक रूपसँ वापस लेल जाइत अछि। मुदा सत्यक सुधारसँ गामक भय तुरन्त नहि मिटैत। परिवार लेल नसीमक परिचय मात्र सामुदायिक गणना नहि, हुनकर सिलाइ, अधूरा काज आ माएक संगक जीवन अछि।

कथा १९६ • बच्चाक प्रश्न

बजारमे आगजनीक बाद राहत लेल जुटल लोककेँ पंचायतक आँगनमे बाँसक चटाइसँ दू भागमे राखल जाइत अछि। नौ बरखक नयन ‘ओ लोक’ सुनि-सुनि प्रश्न करैत अछि जे ओकर सहपाठी साहिल अचानक पराया कोना भऽ गेल। पैघ लोक पहिल पाथर, धर्म आ दोषक अलग-अलग बात कहैत छथि, मुदा कोनो एक उत्तर निश्चित नहि अछि। नयन अपन छोट बहिन रिन्नीकेँ साहिलक नाम आ परिचय कहैत अछि। ओ माएसँ पूछैत अछि जे दुनू दिसक लोक अपना केँ ‘हम’ कहैत अछि तँ ‘ओ’ के अछि। माए ओकरा जल्दी निष्कर्ष नहि बनेबाक सीख दैत छथि।

कथा १९७ · गवाहीक मूल्य

भट्ठापर दुर्घटनासँ जुड़ल गवाही देबाक लेल लखन सदा अदालत पहुँचैत अछि। मुंशी भुवनेश्वर ओकरा धमकी देने अछि जे सत्य कहला पर परिवारक तीनू सदस्यक काज छूटि जाएत। न्यायालयमे लखन बतबैत अछि जे क्षतिग्रस्त बाँस बदलबाक बदला काज जारी रखबाक आदेश देल गेल छल। ओकरा प्रश्नक कठघरामे अपमान आ रोजगारक भय झेलय पड़ैत अछि। अगिला दिन भट्ठाक कामक सूचीसँ ओकर आ भाइ हरिनाथक नाम हटा देल जाइत अछि, पत्नी बुधनीक नाम रहैत अछि। गवाही दर्ज भऽ जाइत अछि, मुदा ओकर आर्थिक आ मानवीय मूल्य देबाक क्रम एखन समाप्त नहि होइत।

कथा १९८ · नदी पार

बागमतीक बाढ़िमे बाँध कटि गेलाक बाद बंसी सहनीक नाव लोकसभकेँ ऊँच सड़क धरि पहुँचा रहल अछि। रामनारायण झा, झगरू पासवान, सकीना बीबी, फैजान आ वृद्ध महावीर मण्डल एक-दोसराकेँ सम्हारि नावसँ उतरैत छथि। राहतक ठाम एक्के कटोरीसँ पानि पिबैत हुनका सभमे जाति-धरमक प्रश्न नहि उठैत। सुरक्षित जमीनपर पहुँचला बाद लोक फेर अपन-अपन सामाजिक घेरा बना लैत अछि। दोसर खेप लेल बंसी केँ नावक पानि निकालबाक लोटा चाही तँ रामनारायण ओकरा देलनि। संकटमे बनल साझेदारी आ सामान्य जीवनक विभाजन दुनू एहि नदी-पारक यात्रामे उपस्थित अछि।

कथा १९९ · कुर्थीक दालि

रामलोचन आ सरस्वतीक घरमे कम कुर्थी अनाज अछि, मुदा बीमार जगमायाकेँ चिकित्सालय लऽ जाएबाक खर्च जुटेबाक आवश्यकता अछि। घरक भोजन, बीया आ बेचबाक हिस्सा अलग करैत दम्पतीकेँ कठिन निर्णय लेबय पड़ैत अछि। उपचार लेल अनाज बेचला बाद अगिला बोआईक बीया घटि जाइत अछि आ बजारमे ओकर दाम बढ़ि जाइत अछि। ओ सभ बचल कुर्थीक बीया विरल कऽ बोइत छथि आ खाली पट्टीमे मड़ुआ लगबैत छथि। जगमाया स्वास्थ्यलाभ करैत छथि। एक भोजन, एक बोआई आ एक रोगीक उपचारक बीच किसान परिवारक जीवनक जटिल हिसाब खुलैत अछि।

कथा २०० · एक बीघाक सपना

पाँच बरखसँ बटाईपर एक बीघा जमीन जोतनिहार शिवनाथ ओकरा किनबाक सपना देखैत छथि। मालिक देवनाथ चौधरी जमीन बेचबाक प्रस्ताव दैत छथि, मुदा खरीदक अगाऊँ रकम आ बेटी रमाक पढ़ाइ-छात्रावासक खर्च एक्के समय सामने अबैत अछि। रमा अपन पढ़ाइ टारबाक बात कहैत अछि, मुदा शिवनाथ अन्ततः ओकर शुल्क भरैत छथि। जमीन दोसर खरीदार किनि लैत अछि। नव मालिक फेर ओही खेत बटाईपर देबाक प्रस्ताव करैत अछि; शिवनाथ बीया आ खादक खर्च साझामे बाँटबाक शर्तपर स्वीकार करैत छथि। एक बीघा अपन नहि भऽ सकल, मुदा बेटी आगाँ पढ़ैत अछि आ शिवनाथ नव शर्तपर खेती जारी रखैत छथि।

खण्ड ३

कथा-शतत्रयी • खण्ड–३

१०० कथाक सारांश

कथा २०१ · खाली थैला

बीया बेचि जीवन बितौने गोपीनाथ साह पुरान थैला, तराजू, बटखरा आ हिसाबक पाँजि लऽ हाट जाइत छथि। हुनकर बेटी मंजू आब ग्राहक सम्हारब, वजन करब आ उधारक हिसाब रखब सीखि गेल अछि। गोपीनाथ धीरे-धीरे सभ सामान ओकर हाथमे सौंपि दैत छथि। घर घुरला पर थैला खाली अछि, मुदा एहि खालीपनमे जीविकाक समाप्ति नहि, उत्तराधिकारक हस्तान्तरण अछि। अगिला हाटक दिन ओ मंजूकेँ तिरपाल बान्हबाक डोरी दऽ घरहि रहि जाइत छथि।

कथा २०२ · रौदक एक टुकड़ा

जाड़क दिन जगदीश महतो छातीक कष्ट सँ आ बसन्ती देवी घुँट्ठीक पीड़ा सँ परेशान छथि। चिकित्सक दुनूकेँ रौदमे बैसबाक सलाह देने छथि, मुदा साँघुर आँगनमे रौदक छोट टुकड़ामे दू मचिया नहि अँटैत अछि। एक-दोसरकेँ रौद छोड़बाक चेष्टामे दुनू लगातार मचिया खिसकबैत छथि। अन्तमे पटिया बिछा एकसंग बैसैत छथि आ झुकैत रौदकेँ बाँटि लैत छथि। रौद समाप्त भेलापर एक-दोसरक हाथ पकड़ि भीतर जाएब हुनकर निःशब्द स्नेहक चरम क्षण बनैत अछि।

कथा २०३ · नाव बान्हल रहल

नदीक दोसर पार मेला आ विद्यालयक समारोह अछि। नाविक रघुनाथ सहनी भोरसँ यात्रिकेँ ओतय पहुँचबैत छथि; हुनकर पत्नी फूलो आ बेटी सुनीता सेहो कार्यक्रममे जाएत छथि। सुनीताक गीत तीन बजे अछि, मुदा रघुनाथ नाव घुरा कऽ अपन घाट पर बान्हि दैत छथि। मेला आ तालीक आवाज नदी पारसँ सुनाइत रहैत अछि, बेटीक गीतक शब्द स्पष्ट

नहि होइत। राति घुरनिहार सभ लेल घाट आ नाव सुरक्षित रखबाक दायित्व हुनका ओहि पारक उत्सवसँ दूर राखैत अछि।

कथा २०४ · फ्रिजक आवाज

बिजली कटला पर पुरान फ्रिजक आवाज बन्द होइतहि नरेश आ मीनाक घरक मौन आ दबायल आर्थिक चिन्ता उभरैत अछि। लोहेक छोट दोकानक घटैत बिक्री आ कर्जक कारण नरेश फ्रिज बेचबाक सोचैत छथि। मीना दूध-दही आ घरक रोजक खर्चक हिसाबमे ओकर उपयोगिता देखबैत छथि। फ्रिज फेर चलैत अछि, मुदा ओकरा राखब कि बेचब, एहि विषयक विवाद तुरन्त समाप्त नहि होइत। दूनू भोरक दूधक मात्रा तय करैत छथि आ खर्चक पाँजि एक-दोसरक आगाँ खोलैत छथि।

कथा २०५ · किरायाक महीना

अमरक गोदामक दू दिनक मजूरी छुटि गेल अछि आ बेटी रुचिक औषधिमे सेहो खर्च भेल अछि। मासक किराया चुकबैत समय ओ आ पत्नी ज्योति मकान-मालिक शशिकान्त बाबूसँ अपन कठिनाइ कहबामे संकोच करैत छथि। पुरान रसीद डगमग मेजक पाँय तर दबायल अछि; नब रसीदमे पाँच सय रुपैया बाकी रहि जाइत अछि। बातचीतक बाद शेष रकम स्पष्ट लिखल जाइत अछि। अमर पुरान रसीद मेजक नीचाँ सँ निकालि सुरक्षित रखैत अछि। अभाव बनल रहैत अछि, मुदा ओकरा लुकायब छोड़ि हिसाबक रूप देबाक शुरुआत होइत अछि।

कथा २०६ · नीला मग

रसोइमे प्रदीपक कोहनी लगलासँ सरिताक नीला मग टूटि जाइत अछि। टूटल साधारण वस्तुक बदला नब मग किनबाक खर्च, घरेलू निर्णय आ एक-दोसरक बात सुनबाक अधिकार पर पुरान असहमति खुलैत अछि। दूनू स्टीलक गिलास सँ चाह पीबैत छथि आ सत्तर रुपैयाक हिसाब पर बातचीत करैत छथि। सरिता अपन चुनल माटि-रंगक नब मग अनैत छथि। मग आ गिलासक अदला-बदलीक छोट क्षणमे कड़वाहट कने ढील होइत अछि।

विवाद पूरा नहि सुलझैत, मुदा मगक खर्च आब आपत्ति नहि, स्वीकारल आवश्यकता बनैत अछि।

कथा २०७ · चार्जर

घरक एकमात्र चार्जर अपन कीलसँ गायब देख मनोज बेटी नीरा आ पत्नी कुसुमक झोरा पर सन्देह करैत छथि। नीरा मना करैत रहितो ओ ओकर निजी सामान खोलि देखैत छथि। बादमे चार्जर तख्ताक पाछाँ खसल भेटैत अछि। वस्तु भेटलापर असल प्रश्न चार्जरक नहि, विश्वास आ निजी सीमाक बनि जाइत अछि। मनोज नीरा सँ बिना अनुमति ओकर झोरा नहि खोलबाक वचन दैत छथि। बरखामे झोरा भीजबाक आशंका भेलापर सेहो ओ पहिने नीराक स्वीकृति लैत छथि।

कथा २०८ · कपड़ा सुखेबाक तार

बरखाक बाद कपड़ा सुखेबाक पुरान तार पर शारदा देवी आ पड़ोसिन कमली देवीक बीच झगड़ा उठैत अछि। तार दूनू आँगनक सीमाक कात तनल अछि; ओकरा सँ जुड़ल पुरान बाढ़ि, उज्जर चादर आ अनबुझल अपमानक स्मृति फेर खुलैत अछि। परिवारक नव पीढ़ी दुनूक अलग-अलग अनुभव सुनैत अछि। समाधानमे एकटा नब तार तनैत अछि, मुदा पुरान तार हटाओल नहि जाइत। दूनू तार अलग-अलग हिलैत छथि, तइयो सीमा-देबालक पुरान काँटा साझा रहैत अछि।

कथा २०९ · बन्द नल

भोरमे घरक नल बन्द अछि आ पानिक प्रबन्धक पूरा भार कल्याणी देवीक माथ पड़ैत अछि। पति दीनेश, बेटी माधवी आ पुत्र चन्दन अपन-अपन समयक चिन्ता करैत छथि, जखन कि कल्याणीक सिलाइक ग्राहक सेहो प्रतीक्षा करैत छथि। पानि देर सँ अबैत अछि; एहि बीच परिवार बुझैत अछि जे घरेलू श्रम अपने-आप नहि होइत। नल खुललापर दीनेश पानि भरब आ नल बन्द करबाक जिम्मा लैत छथि। कल्याणी फेर सिलाइ-कल पर बैसि सकैत छथि, बिना एक-एक आवश्यकताक लेल सभकेँ हुनकेँ पुकारबाक।

कथा २१० · आधा किलो चाउर

मालती देवीक भाँड़मे रातिक भोजन लेल बस मुट्ठीभरि चाउर बचल अछि। शशिकान्त आधा किलो चाउर किनबाक बात पर उधार-पाँजिमे अपन नाम देखय सँ लजाइत छथि। पत्नी अपन सिलाइक कमाइ सँ घरक जरूरत सम्हारैत छथि आ पति सँ साफ हिसाब साझा करैत छथि। दुकानदार बासुदेव साहक पाँजि गरीबीक अपमान नहि, बाकी रकमक अभिलेख बनि सकैत अछि—ई बात शशिकान्त धीरे-धीरे स्वीकार करैत छथि। अन्तमे ओ फेर चाउर अनैत छथि, उधार दर्ज होइत अछि आ एहि बेर झोरा लुकबैत नहि छथि।

कथा २११ · बालकोनीक गमला

बालकोनीमे रौदक अधिकतासँ अड़हुलक पौधा मुरझा रहल अछि। रजनी आ विनय पौधाक ठाम बदलबाक बहाने अपन घरक स्थिति आ रहबाक दोसर सम्भावनापर बातचीत शुरू करैत छथि। विनय दू घरक भाड़ा आ सुविधा देखल छथि, मुदा रजनीकेँ पूरा जानकारी पहिने नहि देल गेल अछि। दूनू घर देखबाक समय तय करैत छथि, खर्च जोड़ैत छथि आ पौधाकेँ रौदक पाटीसँ हटा दैत छथि। पौधा तुरन्त हरियर नहि होइत, घर बदलबाक फैसला सेहो तत्काल नहि होइत; मुदा निर्णयक सभ कागज आब दूनूक आगाँ खुलल अछि।

कथा २१२ · गलत नम्बर

पत्नी-वियोगक बाद हरिनारायण झाक दिनचर्या अनिश्चित भऽ गेल अछि। एक गलत नम्बर सँ सरोज देवी लेल स्वास्थ्य-स्मरणक फोन अबैत अछि आ हुनकर दिनमे निश्चित समय, दूध, भोजन आ प्रतीक्षाक क्रम फेर बनैत अछि। फोन कखनो बजैत, कखनो नहि, मुदा अजनबीक नामक संग आबि रहल अपन नियमिततामे ओ एक विचित्र सहारा पबैत छथि। बादमे बेटी संध्या एहि बातसँ परिचित होइत अछि। अन्तिममे फेर सरोज देवीक नामसँ गलत फोन अबैत अछि। हरिनारायण ओकरा स्वीकारि घड़ी नहि देखैत, चाह आ अखबारक संग अपन बिहान आगाँ बढ़ा दैत छथि।

कथा २१३ · पुरान परदा

पुरान किरायाक घर छोड़बाक समय रुचि एक बेरंग हरियर परदा फेंकि देबाक पक्षमे अछि, जखन कि माला आ सुधीर ओकर घिसल फाँस आ पुरान उपयोग याद करैत छथि। नब घरमे खिड़कीक ओट, माप आ सुविधा बदलि जाइत अछि। परदाकेँ फेंकबाक बदला अस्थायी रूपेँ राखल जाइत अछि आ ओकर उपयोगक नव सम्भावना देखल जाइत अछि। रुचि स्वयं ओकर फाँस देखैत अछि। अन्त धरि परदा ने केवल स्मृतिक पूजनीय वस्तु बनैत अछि, ने रद्दी; ओ अगिला निर्णयक प्रतीक्षामे घरक वस्तु बनल रहैत अछि।

कथा २१४ · सिलिन्डर खत्म

रातिमे भोजन बनबैत-बनबैत गैस-सिलिन्डर समाप्त भऽ जाइत अछि। अनिमा, शशांक आ बेटी शुचि भोजनक उपाय खोजैत छथि, तखने घरक पेटी, सामान आ शुचिक भविष्यसँ जुड़ल अनकहल तनाव खुलैत अछि। अनिमा आ शशांकक बीच निर्णय साझा नहि करबाक प्रश्न उठैत अछि; शुचि अपन विषयमे सच सुनबाक आग्रह करैत अछि। नब सिलिन्डर आ छोट बिजली-चूल्हि सँ भोजनक व्यावहारिक संकट टरि जाइत अछि। मुदा परिवारक आगूक व्यवस्था एखन निश्चित नहि अछि। शुचि पहिने रहबाक ठामक खिड़की, ताला आ पानि देखबाक बात कहि अपन निर्णय-क्षमता देखबैत अछि।

कथा २१५ · दू प्लेट

किरण आ सदानन्द एक अतिथिक प्रतीक्षामे मेज पर दू प्लेट सजबैत छथि, मुदा हुनकर अबबाक समय बीतैत जाइत अछि। नौकरीक सम्भावनासँ जुड़ल सदानन्दक नस्ती तीन मास बाद बाहर निकालल गेल अछि; घरक कम पाइ आ किरणक सिलाइक श्रम सेहो बातचीतमे अबैत अछि। अतिथि अन्ततः नहि पहुँचैत छथि, तइयो भोजन बेकार नहि जाइत। नब सम्पर्कसँ अगिला दिन एगारह बजे काजक भेट तय होइत अछि। किरण जरूरी छायाचित्र आ कागजक तैयारी करबैत छथि। प्रतीक्षाक अनिश्चितता बदलि निश्चित तैयारीमे परिणत होइत अछि।

कथा २१६ · पड़ोसीक टीवी

मालती देवीक देबाल-घड़ी रुकल अछि; ओ पड़ोसीक टीवीक कार्यक्रम सुनि दिनक समय नापैत छलीह। टीवीक आवाज बन्द भेलापर हुनकर मखान छाँटब, भोजन आ विश्रामक पुरान क्रम बिगड़ि जाइत अछि। पड़ोसीक परिवार आ ओकर दिनचर्याक वास्तविकता सँ परिचय बढ़ैत अछि। मालती घड़ी ठीक करबबैत छथि आ अपन समय स्वयं मिलबैत छथि। टीवी आब दूरक कोठरीमे अछि, मुदा पड़ोसक हलुक आवाजसभ एखनहुँ दूनू घरक बीच पहुँचैत अछि। कथा स्वावलम्बनक संग अनौपचारिक पड़ोसी सम्बन्धक बारीक उपस्थिति देखबैत अछि।

कथा २१७ · बन्द लिफ्ट

रीना देवी पाँचम महल पर आ विनोद ठाकुर सातम महल पर रहैत छथि, मुदा वर्षोसँ केवल औपचारिक नमस्कार होइत रहल अछि। एक दिन लिफ्ट बीचमे अटकि जाइत अछि आ दुनूकेँ अपन श्रम, रोजक आवागमन, आजीविका आ समयक बाध्यता पर बातचीत करबाक अवसर भेटैत अछि। लिफ्ट मरम्मतक काल सीढ़ी पर सेहो ओ एक-दोसरक कठिनाइ बुझैत छथि। लिफ्ट फेर चालू भेलापर रीना विनोदकेँ ऊपर सँ लेबाक लेल समय दैत छथि। हुनकर संवाद छोट अछि, मुदा अपरिचयक पुरान दूरी घटि चुकल अछि।

कथा २१८ · किराना पर्ची

घरमे चाउर घटलापर सुधा आ विनय किरानाक सूची बनबैत छथि। सीमित पाइमे चाउर, दालि, तेल, चीनी आ रोजक आवश्यकताक मात्रा तय करैत समय दूनूक अलग प्राथमिकता सामने अबैत अछि। दोकानदार महेश साहक आगाँ सेहो प्रश्न उठैत अछि जे अधिक मात्रा किनब सस्ता पड़त कि तत्काल बचत आवश्यक अछि। सूची पर काट-पीट आ जोड़-घटाव होइत अछि। अन्तमे दूनू अगिला खरीद सँ पहिने सूची एकसंग देखबाक बात मानैत छथि। पर्ची पर दुनूक लिखावट अलग रहितो ओकर खाली जगह साझा निर्णयक ठाम बनैत अछि।

कथा २१९ · पुरान गद्दा

रेणु आ माधव वर्षोसँ बिगड़ल रुइवला गद्दा उलटि-पलटि उपयोग करैत छथि। पीठिक पीड़ा, खर्चक डर आ 'एखन चलि रहल अछि' कहि असुविधा टारबाक आदत पर विवाद होइत अछि। नब गद्दा लेबाक उपाय पर विचारक संग पुरान खाटक मरम्मति सेहो कएल जाइत अछि। पुरान गद्दाक रुइ सँ छोट बैसनी बनैत अछि। नब गद्दा पर दुनू अपन-अपन कात सुतैत छथि आ बीचक समतल जगह अन्तमे भरि जाइत अछि। असुविधा स्वीकार कऽ ओकर समाधान खोजब दाम्पत्य संवादक आधार बनैत अछि।

कथा २२० · दरबज्जाक घंटी

मकान-मालिक गोविन्द बाबू रातिमे सम्भावित किरायेदार कैँ घर देखेबाक सूचना दैत छथि। श्यामानन्द, कमला आ हुनकर बच्चासभ घंटी बजबाक प्रतीक्षामे अपन सामान्य जीवन रोकि दैत छथि। एहि लम्बा रातिमे बढ़ैत भाड़ा, नब घरक खोज, बच्चाक पढ़ाइ आ परिवारक अलग-अलग डर-बात खुलैत अछि। घंटी गलत दबायल रहैत अछि; अपेक्षित अतिथि नहि अबैत। मुदा एहि प्रतीक्षामे परिवार वास्तविक समस्या पर बात कऽ सकैत अछि। अन्तमे श्यामानन्द विद्यालय लग सम्भावित घर सहित तीन विकल्पक सूची फेर खोलैत छथि।

कथा २२१ · बचल तरकारी

निर्मला देवीक कड़ाहीमे बचल तरकारी पुरान इस्पातक डिब्बामे राखल जाइत अछि, जाहि पर खुरचल 'म' आ 'र' अक्षर घरक बँटल सम्बन्धक स्मृति जगबैत अछि। भोजन राखबाक छोट काज सँ परिवारक अलग-अलग चूल्हि, हिसाब आ साझा वृद्ध माएक देखभालक प्रश्न खुलैत अछि। बीना आ निर्मला अपन-अपन समय आ भोजनक व्यवस्था फेर बनबैत छथि। अन्तमे दुनूक बचल तरकारी एके डिब्बामे समाइत अछि; बेटा सोनूक प्रश्न पर निर्मला ओकरा 'घरक' तरकारी कहैत छथि। डिब्बाक पुरान अक्षर रहैत अछि, मुदा नब सीमा-चिन्ह नहि बनैत।

कथा २२२ · बन्द खिड़की

किरायाक कोठरीक पाछाँ मसाला-पिसबाक चक्की राति धरि चलैत अछि। आवाजक कारण रश्मिक पढ़ाइ बाधित होइत अछि; नरेश आ मीनाक्षी टूटल खिड़की बन्द करबाक अस्थायी उपाय अपनबैत छथि। घरक भाड़ा, कम मजूरी, परीक्षा-शुल्क आ पंखाक मरम्मतिक खर्चक बीच कुन काज पहिने हो, ई प्रश्न उठैत अछि। बेटी रश्मि माए-बाबूसँ कहलैत अछि जे ओ सभ ओकर चिन्ता करैत छथि, मुदा अपन आर्थिक बात एक-दोसरसँ नहि कहैत छथि। अन्तमे वेतन-पर्ची आ खर्च खुलल रूपमे राखल जाइत अछि, खिड़की बन्द रहितो संवाद खुलि जाइत अछि।

कथा २२३ · रविक दिनक कपड़ा

माय कमला देवीक हाथमे तकलीफ अछि, तेँ रविक दिन दू बहिन मालती आ सुधा हुनकर कपड़ा धोय आ तह करय अयलीह। रोजमर्राक काज करैत पुरान सिलाइ-यन्त्र बेचबाक निर्णय, फोन नहि उठेबाक शिकायत आ एक-दोसरसँ उम्मीदक अन्तर खुलैत अछि। कपड़ा तह करब दुनूक अपन-अपन स्मृति आ असहमतिसँ टकराइत अछि। ओ सभ पुरान विवादक तत्काल निपटारा करबाक बदला अगिला रविक काज बाँटि लैत छथि। मायकेक कपड़ा समेटि जाइत समय विवाद बाँकी अछि, मुदा पारिवारिक सहयोगक बाट बन्द नहि अछि।

कथा २२४ · सरिसो कटबाक बाद

सरिसोक कटनीक बाद भोला मंडल आ रामविलास फसलक आमदनी आ श्रमक हिसाब मिलबैत छथि। बीस वर्ष पुरान आधा-आधा साझेदारी बैल, मशीन, मजूरी आ बदलैत खेतीक कारण आब पहिनेक जकाँ सरल नहि रहल अछि। जमीनक स्वामिनी जानकी देवीक घरसँ एके आदमीकेँ खेत देबाक सुझाव अबैत अछि, मुदा ओ पुरान भागीदारीक महत्त्व चिन्हैत छथि। नब फसल सँ पहिने साझेदारीक आधार लिखि तय करबाक प्रयास शुरू होइत अछि। खाली खेतमे बीआ नहि, सम्बन्धक नब हिसाब बोएबाक तैयारी चलैत अछि।

कथा २२५ · चरबाहाक पगडंडी

नब पक्की सड़क बनला सँ चरबाहा बुधन पासवानक पुरान पगडंडी कटि गेल अछि। बकरी आ बाछी लऽ चौर पहुँचब कठिन आ असुरक्षित भऽ गेल अछि। पोती रुनकी बाटक रेखा नापि कापीमे उतारैत अछि; गामक लोक, सड़कक किनार आ नालाक व्यावहारिक उपयोग पर विचार होइत अछि। पशुक आवागमन लेल पटिया आ सुरक्षित पारक व्यवस्था बनैत अछि। रुनकी बुझैत अछि जे दूरी घटब आ बाट छोट होएब एक बात नहि। घासक बीच पुरान गन्तव्य दिस पगडंडी फेर उगय लगैत अछि।

कथा २२६ · पोखरिक रखबार

कजराहा पोखरिक रखबार वंशी महतो वर्षोसँ बाँसक डाँड़ पर पानिक चढ़ान-उतारक निशान रखैत छथि। पोखरि सफा आ गहींर करबाक योजना अएलापर ठेकाक नाप आ हुनकर अनुभवमे अन्तर सामने अबैत अछि। वंशी बतबैत छथि जे कछेरक गाद, बरखाक प्रवेश-धार आ पानिक प्राकृतिक चालकेँ बिनु बुझने खुदाइ करब हानिकारक होएत। अभियन्ता अरुण हुनकर पुरान चिह्नक संग नव नाप दर्ज करबाक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि। योजना आगाँ बढ़ैत अछि आ पोखरिक देखभालक जिम्मा एक व्यक्तिसँ आगाँ नव पीढ़ी धरि पहुँचबाक सम्भावना बनैत अछि।

कथा २२७ · बथानक साँझ

बथानमे नरेश दूध, चारा आ खर्चक व्यवस्थित हिसाब लिखय लगैत अछि। पिता जगरनाथ बुझबैत छथि जे पशुक परिचर्या केवल दूधक संख्यामे नहि समा सकैत अछि। झुमकी, सुपती आ आन पशुक स्वभाव, बीमारीक छोट संकेत आ साँझक विश्राम सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। पिता-पुत्रक बहसक बीच पुरान अनुभव आ नब पाँजिक उपयोग एक-दोसरकेँ पूरा करय लगैत अछि। अन्तमे नरेश संख्याक संग ‘साँझ ठीक’ लिखैत अछि। बथानक शान्त साँस आ जुगाली हिसाबक ओहि रिक्त पक्षकेँ जीवन दैत अछि।

कथा २२८ · आमक बगीचा

शहर सँ अमरनाथ पत्नी कविता आ बेटी ऋचाकेँ लऽ पैतृक आमक बगीचा बेचबाक लेल अबैत छथि। जमीनक दाम तय अछि, मुदा आमक फल पर पहिनेसँ भेल सौदा आ रखबार बदरीक श्रम अलग हिसाब माँगैत अछि। बगीचाक मालिकाना, फलक अधिकार आ रखबारक जिम्मेवारी एकहि वस्तु नहि अछि—ई बात बातचीतमे स्पष्ट होइत अछि। निबन्धनक कागजक संग पुरान पावती सेहो सुरक्षित राखल जाइत अछि। मालिक बदलि जाइत अछि, मुदा जेठक आम आ गाछक देखभालक सम्बन्ध तुरन्त नहि बदलैत।

कथा २२९ · कमलाक धार

कमला नदी अपन धार मोड़ि देलाक कारण जमीनक पुरान सीमारेखा आ वर्तमान खेतीयोग्य भाग अलग भऽ गेल अछि। सुदामा यादव आ शहर सँ आयल भतीजा नीरज नाप-जोख करैत छथि। कागजक रकबा, पुरान खूँटा आ नव पानिक धार तीन भिन्न साक्ष्य बनैत अछि। जमीनक सौदाक चिन्ता बीच नीरज बुझैत अछि जे अनिश्चित भागकेँ निश्चित दाममे समेटब ठीक नहि। ओ नापमे भिन्न अवस्था अलग-अलग लिखैत अछि आ तिरछा बाँस नहि हटबैत। नदी बहैत रहैत अछि; मनुष्य ओकर कात अपन रेखा सुधारैत रहैत अछि।

कथा २३० · धानक गन्ध

सात बरख बाद कटनीक बेर गाम आएल अनिल धानक गन्धमे अपन बचपन आ घर खोजैत अछि। मुदा खेतमे हँसुआ पकड़िते ओकरा बुझाइत अछि जे स्मृति आ वास्तविक खेतीक श्रम एक नहि। राजेश, पिता आ खेतमे काज करनिहार लोकक योगदान, रुपैयाक हिसाब आ देखभालक बँटवारा पर बातचीत होइत अछि। अनिल फेर नगर घुरबाक अछि, राजेश खेती सम्हारत। ओ अपन नब पाँजिमे केवल आमदनी नहि, श्रमक दिन आ देखभालक खाँचा सेहो जोड़ैत अछि। धानक गन्ध पुरान भावुक स्मृति सँ हटि वर्तमान श्रमक साक्षी बनैत अछि।

कथा २३१ · गाछक छाँह

विद्यालयक विस्तार लेल नव कोठरी, नल आ ढलान बनबाक अछि। अभियन्ताक नक्शामे पीपरक गाछ आ वर्षाक पानिक पुरान चालक पर्याप्त ध्यान नहि देल गेल अछि। छेदी काकाक स्मृति सँ मुख्याध्यापिका सरोजा झा आ निर्माण-दल बुझैत छथि जे गलत ढलानसँ विद्यालय डूबि सकैत अछि। नब नाप आ पानि निकासक अनुसार योजना सुधारल जाइत अछि। बरखा भेलापर नाली पानि बाहर लऽ जाइत अछि आ कोठरी सुरक्षित रहैत अछि। पीपरक छाँह नव ढलान पर पड़ैत अछि; स्थानीय अनुभव निर्माणक हिस्सा बनि जाइत अछि।

कथा २३२ · डोमक बाँसुरी

ग्राम-उत्सवक कार्यक्रममे बाहरी गायक-दल लेल समय अछि, मुदा चन्देश्वर डोमक बाँसुरी पहिने सँ सूचीमे नहि अछि। मंचक प्रतिष्ठा आ जातिगत दूरी ओकर प्रस्तुतिक बाट रोकैत अछि। सुननिहार लोक, खास कऽ शिक्षिका रेखा, एहि उपेक्षाकेँ प्रश्न बनबैत छथि। बाँसुरीक धुन धीरे-धीरे भीड़केँ सुनबाक लेल विवश करैत अछि आ कार्यक्रमक पाँजिमे चन्देश्वरक नाम आ समय दर्ज होइत अछि। अगिला बरखक सूची सभक सहभागितासँ बनबाक बात उठैत अछि। सम्मानक अर्थ मंच पर नाम लिखब मात्र नहि, सुनबाक जगह देब होइत अछि।

कथा २३३ · झोपड़ीक नक्शा

फुलबसिया देवीक झोपड़ीक भीतर सँ सरकारी नालाक लाल नाप-रेखा गुजरैत अछि। परियोजनाक कागजमे पुरान घर मानो खाली जमीन अछि। फुलबसिया आ हुनकर परिवार पानिक प्राकृतिक ढलान देखबैत छथि; अभियन्ता शैलेन्द्र फेर नाप करैत छथि आ नालाक मोड़ बदलैत छथि। पहिल तेज बरखामे नब नाली सँ पानि सुरक्षित बहैत अछि। कार्य-नक्शामे घर 'वर्तमान आवास' रूपमे चिन्हित होइत अछि, मुदा जमीनक कानूनी स्वत्व एखन तय नहि। फुलबसिया एकरा आधा उपलब्धि मानैत छथि—घर कम सँ कम कागजक खालीपनसँ बाहर आएल अछि।

कथा २३४ · गोरूक घंटी

मोहन बैल हिरना आ कजरू केँ बेचि जुताइ-यन्त्र पर निर्भर होएबाक विचार करैत अछि। खर्चक पाँजिमे चारा, औषधि आ बैलक दाम लिखल अछि, मुदा बेचनक मजूरी, धानक हिस्सा आ वर्षोक मानवीय सम्बन्ध पूरा स्पष्ट नहि। बैल बिकैत अछि, बथान खाली होइत अछि आ बेचनक अगिला रोजी-रोटीक प्रश्न सामने अबैत अछि। मोहन नव हिसाब बनबैत अछि; नीलू पुरान पित्तरिक घंटी बजबैत अछि। यन्त्रक आगमन लाभकारी भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर संग जीबैत लोकक जीवन सेहो बदलैत अछि—कथा एहि अनगिनल हिसाबकेँ सामने अनैत अछि।

कथा २३५ · कच्ची सड़क

गाममे नियमित बस सेवा शुरू भेला सँ छात्र, बाजार जाएवला आ वृद्ध सभकेँ सुविधा भेल अछि। मुदा कच्ची सड़कक नीचाँ बरखाक पानि जमा होइत अछि आ बसक चक्का धँसबाक संकट बनैत अछि। लोक पहिने ईंट-माटि भरैत छथि, फेर बुझैत छथि जे पानिक निकास बिना स्थायी समाधान नहि। निजी खेत, सड़कक चौड़ाइ आ बस चलबाक जरूरत पर मतभेद उठैत अछि। नलिका बनलापर पानि नीचाँ सँ बहैत अछि आ बस ऊपर सँ निकलैत अछि। सड़क एखन कच्ची अछि, मुदा सामूहिक रखरखावक उत्तरदायित्व स्पष्ट होमय लगैत अछि।

कथा २३६ · पथारक रक्षक

दुखन महतो बीस वर्षसँ साझा पथारक बाट, मेड़ आ चरनिहार पशुक हिसाब स्मृतिमे रखैत छथि। पथारक एक भाग घेरि निजी चारा-व्यवस्था करबाक प्रस्ताव अएलापर वास्तविक उपयोगक विस्तृत अभिलेख चाही। दुखन पशुक आगमन, ऋतु आ पानिक संग बदलैत चरवाही लिखय लगैत छथि। बैसारमे कियो तत्काल भूमि घेरबाक अनुमति नहि दैत, ने प्रस्ताव स्थायी रूपेँ खारिज करैत। दू मासक निरीक्षण आ लागतक अलग हिसाब पर सहमति बनैत अछि। पथार खुलल रहैत अछि, आ मनुष्यक स्मृतिमे रहल ज्ञान सार्वजनिक निर्णयक प्रमाण बनैत अछि।

कथा २३७ · धान रोपनीक गीत

धान रोपनीमे सोनमती आ आन स्त्रीसभ गीतक लयमे एकसंग पाँति बनबैत छथि। पवन रोपनी-यन्त्र अनैत अछि, जाहिसँ कमरक श्रम घटैत अछि आ काज जल्दी होइत अछि। मुदा स्त्रीसभक मजूरी, आगामी काज आ पारस्परिक लय पर एकर प्रभाव देखाइत अछि। मशीनक सीधा कतार आ हाथसँ रोपल घुमावदार कोना अलग अनुभव देत अछि। कोनो यन्त्रकेँ पूर्ण दोष नहि दैत, ने बिना प्रश्न प्रशंसा करैत। साँझमे अधूरा गीत हवा संग रहि जाइत अछि; मेहनतक बदलैत रूपमे गीतक भविष्य एखन खुलल अछि।

कथा २३८ · बरगदक नीचाँ रजिस्टर

मुनिलाल बरगदक नीचाँ पुरान पाँजिमे नहरक पानि केकर खेत धरि पहुँचल, से वर्षोसँ लिखैत छथि। सरकारी अभिलेखमे पानि छोड़बाक दिन दर्ज अछि, मुदा नीचला सत्रह खेतक सूखल रहब ओहिमे देखाइत नहि। शिक्षिका सुधाक सहयोग सँ अधिकारी नहरक तेसर मोड़ पर गादक बाधा देखैत छथि। सरकारी जाँचमे वास्तविक पहुँच आ निर्णयक अनिश्चितता दर्ज होइत अछि। मुनिलाल पूरा निजी पाँजि सौंपबाक बदला केवल नहर-सम्बन्धी पन्नाक प्रति दैत छथि। दुनू अभिलेख अलग रहितो आब एक-दोसरक समक्ष सत्यक प्रश्न राखैत अछि।

कथा २३९ · बाढ़िक निशान

घरक पश्चिम देबाल पर चूना उतरबैत समय तीनटा बाढ़िक पुरान जल-रेखा भेटैत अछि। निखिल सभसँ ऊपरक निशानक आधार पर नव कोठरीक तल तय करय चाहैत अछि, मुदा दादी शारदा देवी बतबैत छथि जे तीनू बाढ़िक समय घरक ऊँचाइ आ रूपो बदलल छल। परिवार पुरान घटना, श्रम आ हानिक स्मृति जोड़ि नब सुरक्षित कोठरी बनबैत अछि। ओतय औषधि आ जरूरी कागज राखल जाइत अछि। देबाल फेर पोतल जाइत अछि; निशान आँखिसँ ओझल भऽ गेलो हुनकर सीख घरक नब रचनामे बाँचि जाइत अछि।

कथा २४० · पहिल ट्रैक्टर

नरेश ऋण लऽ गामक पहिल ट्रैक्टर अनैत छथि। जगेसर वर्षोसँ हुनकर परिवारक बैल जोतैत आबि रहल छथि आ माटिक चालक गहींर अनुभव रखैत छथि। मशीनक गति आ किरायाक तारीखक हिसाब कएक बेर भीजल जमीनक वास्तविकतासँ टकराइत अछि। नरेश धीरे-धीरे जगेसरक सावधानी स्वीकार करैत छथि; जगेसर सेहो मशीनक उपयोग बुझैत छथि। पुरान 'हलवाहा'क पहचान बदलि दुनूक बीच ज्ञानक आदान-प्रदानक सम्बन्ध बनय लगैत अछि। ट्रैक्टर चलैत अछि, मुदा खेतक माटि दुनूकेँ एक-दोसरसँ सीखय लेल बाध्य करैत अछि।

कथा २४१ · सिमानक खूँटा

नयन झा अपन आँगनक सीमा पर देबाल बनबय चाहैत छथि, मुदा पड़ोसी रामेश्वर मंडल एक इंच जमीनक विवाद उठबैत छथि। पुरान साल-काठक खूँटा सीमा मात्र नहि, दुनू परिवारक बच्चासभक ऊँचाइ मापबाक स्मृतियो रखैत अछि। मिस्त्रीक नाप आ पुरान कागज सँ अन्तिम सरल उत्तर नहि भेटैत अछि। निर्मलाक सुझाव पर साझा देबाल, साझा खर्च आ ऊपर खुलल जाली बनैत अछि। खूँटा साझा दरबज्जा लग फेर गाड़ल जाइत अछि, जतय नव पीढ़ीक ऊँचाइ दर्ज होइत रहत। भूमि-विवाद पीढ़ीगत स्मृतिक साझा स्वीकारमे बदलैत अछि।

कथा २४२ · खाली बथान

गामक पशु घटि गेल अछि आ शिवनाथ झाक पुरान बथान खाली पड़ल अछि। तइयो ओ सभ भोर ओकरा बुहारैत छथि। परिवार एहि सफाइकेँ निरर्थक मानैत अछि, मुदा बथान कखनो बच्चाक खेल, कखनो अस्थायी पशु-आश्रय, कखनो टीकाकरणक ठाम बनैत अछि। घर बढ़ेबाक समय शिवनाथ बथानक एक भाग बदलय दैत छथि, बाँकी खुलल रखैत छथि। बीमारीक दिन पोता नचिकेता स्वयं झाड़ू दैत अछि। ओ बुझि जाइत अछि जे खाली जगह साफ रखब केवल अतीतक मोह नहि, भविष्यक उपयोग लेल ओकरा खुलल रखब अछि।

कथा २४३ · आखिरी कटनी

पैतृक धानक खेत बेचबाक निबन्धन सँ पहिने हरिनारायण झाक परिवार अन्तिम फसल हाथसँ काटबाक निर्णय करैत अछि। बेटी रमा आ आन परिजन शहरक जीवन छोड़ि किछु दिन लेल खेतमे उतरैत छथि। ककरो हाथ छिलैत अछि, ककरो पाँति टेढ़ होइत अछि, मुदा श्रमक संग परिवारक पुरान सम्बन्ध फेर अनुभव होइत अछि। कटनीक बाद खेतक पाँतिसँ ककर हिस्साक श्रम बुझाइ नहि पड़ैत। छायाचित्र लेल हँसुआ नीचाँ रखल जाइत अछि। कागजमे जमीनक सौदा दर्ज होइत अछि, अन्तिम कटनीक सामूहिक अनुभूति नहि।

कथा २४४ · प्रमाण-पत्रक गाम

सोनबरसा गामक घर-घरमे सम्मान आ उपलब्धिक प्रमाण-पत्र टाँगल अछि। विद्यालयकेँ सेहो पूर्ण नामांकनक प्रशंसा भेटल अछि, मुदा शिक्षकक कमी आ वास्तविक पढ़ाइ प्रमाण-पत्रक चौखटमे नहि समायल अछि। बच्चा चन्दन सरल प्रश्न पूछि एहि अन्तरकेँ उजागर करैत अछि। गाम प्रशस्तिपत्रक प्रदर्शनक बदला विद्यालयक वास्तविक आवश्यकता दर्ज करबाक प्रयत्न करैत अछि। सरोजा झा देबाल पर शिक्षक आ विद्यार्थी सम्बन्धी संख्या फेर लिखैत छथि। चौखटा-विहीन कागज पर चन्दन शब्द पढ़य सीखैत अछि। सम्मानक मूल्य उपलब्धिक घोषणा सँ हटि अपूरा काजकेँ देखबाक साहसमे बसैत अछि।

कथा २४५ · स्वच्छता दिवस

गाममे स्वच्छता दिवस पर अतिथि, पट्ट आ छायाचित्रक धूम अछि, मुदा सड़कक मोड़ पर जमा कूड़ा उठेबाक गाड़ी सप्ताहोसँ नहि आयल। सफाइ-कर्मी मालती रोज झाड़ू दैत छलीह, तइयो कूड़ा ओतहि रहैत। बच्चा सोनू वास्तविक उठावक तारीख लिखय लगैत अछि। अन्ततः गाड़ी कूड़ा लऽ जाइत अछि, आ विद्यालयक पाँजिमे ‘सफाइ भेल’ आ ‘कूड़ा उठल’क अलग खाँचा बनैत अछि। रंगीन समारोहक छवि सँ बेसी महत्त्व नियमित व्यवस्था आ सत्य अभिलेखकेँ भेटैत अछि।

कथा २४६ · पढ़ल-लिखल सभा

‘साक्षर गाम’क समारोहमे अधिकारी आ शिक्षक भाषण दैत छथि, मुदा सामान्य आवेदनक कठिन प्रश्न स्वयं नहि बुझि पबैत छथि। दीपक कैँ अनुमानित संख्या लिखि सम्मानक दावा करबाक दबाव देल जाइत अछि। फुलकुमारी देवी पूछैत छथि जे पढ़ि सकब, अर्थ बुझब आ अपन आवेदन स्वयं भरब अलग-अलग बात किएक अछि। समारोहक बदला वास्तविक अभ्यासक बैठक होइत अछि। गामक लोक बैंक, विद्यालय आ अनुदानक आवेदन भरबाक अभ्यास करैत छथि। सत्यापनक बाद कम संख्या दर्ज होइत अछि, मुदा साक्षरताक अर्थ आब अपन काज स्वयं बुझब बनैत अछि।

कथा २४७ · आदर्श चौक

चौकक नाम बेर-बेर ‘युवा’, ‘समरसता’, ‘नवचेतना’ सँ ‘आदर्श’ धरि बदलैत रहल अछि, मुदा बीचक गहींर खाधि जसक तस अछि। जगदीश मिस्त्रीक नातिन सुमेधा पुरान पट्ट आ सरकारी पाँजि सँ बुझैत अछि जे मरम्मतिक दिन टारबामे गामक लोकक सेहो भूमिका छल। दुकान आ यातायात थोड़े समय रोकि खाधि भरबाक सामूहिक निर्णय होइत अछि। बरखामे पानि नहि जमिते काजक उपयोग स्पष्ट भऽ जाइत अछि। सुमेधा छठम नाम नहि जोड़ि खाधि भरल दिन लिखैत अछि।

कथा २४८ · विकासक फीता

एकहि नालीक नाम पर बेर-बेर लाल फीता कटैत अछि, जखन कि ओकर अन्तिम सात हाथ अधूर अछि। दर्जी जगमोहन आ नातिन आभा समारोहक फीता जोड़ि नापैत छथि आ वास्तविक अधूरापन देखबैत छथि। बरखाक पानि निकास रोकैत अछि, तैँ उद्घाटनक चमक निरर्थक सिद्ध होइत अछि। बादमे मिस्त्री पुरान निकास साफ कऽ शेष भाग बनबैत छथि। पानिक धार निर्बाध चललाक बाद हस्तान्तरण बिना नव समारोहक होइत अछि। लाल फीताक बदला नाप, मरम्मति आ कामक फल विकासक पहचान बनैत अछि।

कथा २४९ · प्रतिष्ठित परिवार

झा-परिवारक फाटक पर ‘प्रतिष्ठित परिवार’क चमकदार पट्ट लागैत अछि। घरमे पीढ़ीसभक पुरस्कार, प्रमाण-पत्र आ सम्मान सँ भरल कोठरी अछि, मुदा वृद्ध सुभद्रा देवीक लेल स्थिर निजी कमरा नहि। नातिन गौरी एहि अन्तरकेँ प्रश्न बनबैत अछि। परिवार सामान छाँटैत, पुरान सम्मान उचित ठाम पहुँचबैत आ एक कोठरी सुभद्रा देवीक स्थायी उपयोग लेल निर्धारित करैत अछि। फाटकक पट्ट बरखामे भीजैत रहैत अछि; भीतर पहिल बेर एक व्यक्तिक निजता आ सुविधा प्रतिष्ठासँ पैघ मानल जाइत अछि।

कथा २५० · अफवाहक दिन

गामक सन्देश-समूहमे अनाम सूचना फैलैत अछि जे नल-जाँच लेल दुआर पर नीला बाल्टी राखब जरूरी अछि। लोक बिना स्रोत जाँचने सन्देश आगाँ पठबैत आ राति भरि बाल्टीक रखवारी करैत छथि। कार्यालयसँ पता चलैत अछि जे एहन कोनो जाँच तय नहि। विद्यालयक अरुण सर चारि प्रश्न सिखबैत छथि—ठाम, तिथि, स्रोत आ उत्तरदायी। अगिला बेर बिजली बन्द होएबाक अफवाह आएलापर लोक ओकरा दोहरबैत नहि, प्रमाण पूछैत छथि। गाममे डरक जगह विवेकपूर्ण प्रश्नक व्यवहार बनय लगैत अछि।

कथा २५१ · टॉपरक फोटो

विद्यालयक ओसारामे विज्ञान विषयमे चौरानबे प्रतिशत अंक पाबनिहार रश्मिक छायाचित्र सम्मानसँ टाँगल अछि। ओकर ठीक सामने प्रयोगशाला बन्द अछि आ भीतर पुरान परीक्षाक पेटी जमा अछि। सम्मान समारोहमे रश्मि अपन अंकक संग वास्तविक प्रयोगक अभावक बात उठबैत छथि। छात्र नैना आ शिक्षकक सहयोग सँ प्रयोगशाला साफ होइत अछि, प्रयोग-सामग्री फेर उपयोगमे अबैत अछि आ नियमित प्रयोगक समय तय होइत अछि। छायाचित्र हटाओल नहि जाइत; मुदा ओकर सामनेक खुलल दरबज्जा अंक आ शिक्षाक बीचक अन्तर देखबैत अछि।

कथा २५२ · सभसँ स्वच्छ घर

‘सभसँ स्वच्छ घर’ प्रतियोगिता जीतबाक लेल सरिता देवी अपन आँगन चमकबैत छथि, मुदा अनावश्यक कचरा पड़ोसिन जयकलीक खेतमे फेंकल जाइत अछि। मूल्यांकन-दल कचराक वास्तविक गन्तव्य पूछैत अछि। सरिता परिवारसँ संग कचरा अलग करब, जैव-खाद बनब आ पुनःउपयोग योग्य वस्तु देबाक व्यवस्था शुरू करैत छथि। पुरस्कार हुनकर घरकेँ नहि भेटैत, तइयो पड़ोसक खेत साफ होइत अछि आ सम्बन्ध सुधरैत अछि। नीतूक प्रश्न सँ स्पष्ट होइत अछि जे घरक स्वच्छता ओकर देबालक पार धरि जिम्मेदारी माँगैत अछि।

कथा २५३ · सम्मान समारोह

चालीस वर्षक डाकसेवाक सम्मान लेल हरिनारायण झाक नाम चुनल जाइत अछि, मुदा बैनर आ प्रमाण-पत्रमे ‘हरिनन्दन’ छपि गेल अछि। समारोहक आयोजक छायाचित्र आ प्रतिष्ठाक चिन्ता करैत छथि, जखन कि सम्मानित व्यक्तिक सही नामक प्रश्न गौण बनि रहल अछि। सुधार करब पड़ैत अछि आ प्रमाण-पत्र पर स्पष्ट पट्टी लगैत अछि। लोक छायाचित्रक रूप पर टिप्पणी करैत अछि, मुदा हरिनारायण कहैत छथि जे नाम ठीक अछि, से पर्याप्त। बादमे सही नामक साधारण सरकारी लिफाफा हुनका औपचारिक सम्मानसँ बेसी सीधा पहचान दैत अछि।

कथा २५४ · नकल-विरोधी भाषण

विद्यालयमे नकल-विरोधी सप्ताह लेल निर्मल झा केँ मुख्य भाषण देबाक जिम्मा भेटैत अछि। भाषणक सामग्री तैयार करैत काल ओ दोसर स्रोतसँ लेल विचारक उल्लेखक प्रश्नसँ स्वयं टकराइत छथि। छात्रा अनुपमा आ विद्यालयक चर्चा हुनका बुझबैत अछि जे परीक्षा-कक्षमे नकल रोकबाक उपदेश दैत स्वयं स्रोत लुकायब विरोधाभास अछि। भाषणक बाद स्रोत दर्ज करबाक पाँजि बनैत अछि। परीक्षाक निरीक्षणमे निर्मल बाबू छात्रकेँ बिना अपमानित कएने अनुशासन राखैत छथि। ओ अपन खोज-इतिहास मेटबैत नहि, कारण भूलक स्वीकार शिक्षा बनि गेल अछि।

कथा २५५ · पुस्तकालय उद्घाटन

पुस्तकालयक उद्घाटन भव्य अछि, मुदा सोलह पुस्तकक रखवारी लेल अठारह ताला लागल अछि। छात्रा नैना पुस्तक पढ़य चाहैत अछि, मुदा चाबी, पाँजि आ अनुमति ओकर बाट रोकैत अछि। गामक चर्चा सँ स्पष्ट होइत अछि जे पुस्तक सुरक्षित राखबाक नाम पर पाठककेँ दूर करब पुस्तकालयक उद्देश्यक विपरीत अछि। अतिरिक्त ताला हटैत अछि, पुस्तक निर्गमक सरल नियम बनैत अछि आ बच्चासभ पुस्तक घर लऽ जाइत अछि। एक बरख बाद पुस्तकक मुड़ल कोना ओकर उपयोगक प्रमाण बनैत अछि, क्षतिक नहि।

कथा २५६ · जातिक कुर्सी

सामुदायिक घरमे अट्ठाइसटा एकसमान नीला कुर्सी अछि, मुदा बैठकमे जाति आ परिवारक पुरान पदक्रमक अनुसार लोक बैसैत छथि। बालिका नीलू कुर्सीक क्रमांक आ वास्तविक बैठकीक नक्शा बनबैत अछि। संख्या बदललापर सेहो पुरान स्थान-क्रम फेर उभरैत अछि। बातचीतमे लोक बुझैत छथि जे लिखल नियम नहि रहितो पुरखनक स्थान सभक शरीरमे बसल अछि। अगिला बैसारमे सुविधा आ काजक अनुसार लोक कुर्सी खिसकबैत छथि। नीलू लिखैत अछि जे स्थायी स्थान कोनो नहि; समान कुर्सी अन्ततः वास्तविक साझी बैठकी बनबाक अवसर दैत अछि।

कथा २५७ · डिजिटल गाम

बनकट्टा गामक प्रवेश पर ‘पूर्ण डिजिटल गाम’क चमकैत पट्ट अछि, मुदा अनेक टोलामे चल-दूरभाषक जाल नहि पहुँचैत। जनसेवा केन्द्रमे संगणक रहितो आवेदन चलब कठिन अछि। आरती अलग-अलग ठाम पर वास्तविक सिग्नल नापि नव नक्शा बनबैत अछि। अधिकारीक निरीक्षण आ बोर्डक सौर-बत्ती सेवा उपलब्धताक प्रमाण नहि बनि पबैत अछि। दक्षिण टोला एखनहुँ जालसँ वंचित अछि। आरती नक्शा अधूरा छोड़ैत अछि आ ‘पूर्ण’ शब्द लिखबासँ मना करैत अछि, कारण तकनीकी उपलब्धिक नाप वास्तविक उपयोगमे अछि।

कथा २५८ · गरीबक प्रमाण

कमली देवी पत्तल बनबैत आ खेतमे मजूरी करैत बेटी मीराक पढ़ाइ चलबैत छथि। छात्र-सहायता लेल गरीबीक प्रमाण-पत्र चाही, जे कागज पर निःशुल्क अछि। मुदा ओकरा बनबेबामे यात्रा, छायाचित्र, प्रतिलिपि, छुटल मजूरी आ माइक चारि दिनक श्रम लगैत अछि। मीरा वास्तविक खर्च अलग पन्ना पर लिखैत अछि। आवेदन अन्ततः स्वीकार भऽ जाइत अछि। फेर प्रमाण बनबेबा अबैत पड़ोसिनकेँ कमली शून्य शुल्कक पाँति संग वास्तविक खर्चक हिसाब देखबैत छथि। सरकारी 'निःशुल्क' आ गरीबक अनुभवक अन्तर कथा उजागर करैत अछि।

कथा २५९ · मौन समिति

महिला सिलाइ सहकारी केन्द्रमे मजूरी कम लिखल जाएबाक शिकायत अछि, मुदा शिकायत पेटीक 'गुप्तता'क नाम पर स्त्रीसभकेँ चुप रहबाक सलाह देल जाइत अछि। सुनीता आ आन कर्मी अपन बंडलक संख्या मिलबैत छथि। जाँच सँ पाँजि आ प्राप्ति संख्यामे अन्तर सामने अबैत अछि। समिति शिकायतकर्ताक नाम सुरक्षित राखैत तथ्य सार्वजनिक रूपेँ जाँचबाक व्यवस्था करैत अछि। पेटीक बगलमे विषय आ प्रगतिक पट्टी लगैत अछि। अन्तमे समितिक मौन लोककेँ दबेबाक नहि, ओकर बात सुनबाक मौन बनैत अछि।

कथा २६० · आदर्शविवाह

शशिभूषण झा दहेज-विरोधी अभियान चलबैत छथि, मुदा अपन पुत्र अनिरुद्धक विवाहक तैयारीमे सामान, पलंग, स्कूटर आ उपहारक नाम पर अपेक्षा धीरे-धीरे उभरैत अछि। कोमल पाँच प्रश्नक द्वारा घोषित आदर्श आ घरेलू व्यवहारक अन्तर चिन्हैत छथि। मृणालिनी अपन नव जीवन आ खर्चपर निर्णयक अधिकार चाहैत छथि। समारोहक नाराक स्थान पर परिवारक वास्तविक प्रश्न चर्चा बनैत अछि। विवाहक बाद दम्पती अपन पाइ सँ पलंग किनैत छथि। घरक 'दहेज-मुक्त' कथन सरल प्रमाण-पत्र नहि रहि स्वयं जाँचबाक प्रक्रिया बनैत अछि।

कथा २६१ · सभक विचार

पंचायतक बैसारमे सभ लोक एक स्वरमे कहैत अछि—‘हम सभ स्वतंत्र सोचैत छी’। मुदा निर्णय पहिनेसँ तय ढर्रा आ प्रभावशाली आवाजक अनुसार बनैत अछि। कनक अलग मत लिखबाक आग्रह करैत अछि। मतदानक पर्ची, मतक संख्या आ निर्णयक कारण अलग-अलग दर्ज होमय लगैत अछि। सबकेँ पूर्ण पसिन्न नहि भेलो मतभेद खुले रूपमे स्वीकार होइत अछि। पट्ट सँ सामूहिक ‘स्वतंत्र सोच’क वाक्य हटैत अछि, केवल ‘खुलल विचार बैसार’ बचैत अछि। अगिला बैठकमे एक स्वरक बदला अनेक स्वर सुनाइत अछि।

कथा २६२ · पुरस्कारक पात्र

नवल कुमार गामक लोकक आवेदन भरैत सहायता करैत अछि। वृद्ध सरयू काकाक सामाजिक सेवाक नामांकनमे सम्पर्कक खाँचा भरैत समय नवल अपन नाम लिखि दैत अछि। पुरस्कार ओकरा भेटि जाइत अछि, जखन कि वास्तविक काज सरयू काका करैत छथि। न्यासक नियम नाम बदलय नहि दैत। नवल बुझैत अछि जे कागजक सुविधा श्रेयक अन्याय बनि सकैत अछि। अगिला नामांकनमे ओ सेवा करनिहार सुषमा देवीक नाम स्पष्ट लिखैत आ स्वयंकेँ मात्र आवेदन भरनिहार चिन्हित करैत अछि। भेटल पुरस्कारक पित्तरि-पट्ट ओकर मेज पर कागज दबेबाक साधन बनि जाइत अछि।

कथा २६३ · नया नियम

सहकारी बीआ-भण्डारमे किसानक भीड़ सम्हारबाक लेल लगातार नब नियम लिखल गेल अछि। तथापि दुआर लग पाँति अटकैत अछि। नीलिमा पुरान आदेश आ वास्तविक बाट देखैत बुझैत छथि जे एक आलमारी प्रवेशमे बाधा बनल अछि। नियम अठारह, उन्नैस आ बीस बदलला सँ बेसी उपयोगी आलमारी हटेनाइ सिद्ध होइत अछि। दुआर खुलिते वितरण सुचारु होइत अछि। पुरान आदेश फेंकल नहि जाइत; ओकर ऊपर सीखक पर्ची राखल जाइत अछि—नब नियम बनबय सँ पहिने वास्तविक बाधा देखू।

कथा २६४ · भीतरक आलमारी

घरक भीजल देबाल मरम्मत करबाक लेल भीतरक लोहेक आलमारी हटेनाइ आवश्यक अछि। आलमारी खोलिते कागजक बँटवारा, मूल आ प्रति, वृद्ध कमलाक दस्तावेज आ सुषमाक अपने स्वास्थ्य-संबन्धी पत्रक उपेक्षा सामने अबैत अछि। परिवार नस्ती अलग करैत, तिथि लिखैत आ चाबीक अधिकार बाँटैत अछि। एक तह खाली छोड़ल जाइत अछि। सुषमा पुरान रक्त-जाँचक सलाह देखिकऽ अपने स्वास्थ्य केन्द्र जाएबाक निर्णय करैत अछि। कागज फेर राखल गेलो घरक देखभालक सारा भार आब ओकर अकेल जिम्मा नहि रहैत।

कथा २६५ · छत परक दू घंटा

बरियातमे सभ गेल अछि; घरमे घुट्ठीक पीड़ासँ रुकल शैलजा देवी आ बहू कनक छथि। जेठक राति छत पर बिताओल दू शान्त घंटा दुनूकेँ पहिल बेर बिना बाधा एक-दोसरक रुचि, थकान आ अनकहल अपेक्षा सुनबाक अवसर दैत अछि। सासि समझैत छथि जे कनकक फोन देखब उपेक्षा नहि; कनक बुझैत अछि जे शैलजाकेँ पढ़बाक अपन समय चाही। बादमे पुस्तकालय जाएबाक समय निकलैत अछि आ घरक काममे बातचीतक नब अवकाश बनैत अछि। दुनू बुझैत छथि जे सभ काज तत्क्षण पूरा करब आवश्यक नहि।

कथा २६६ · बहूक कमरा

नब घर बनलापर सासि सुधा देवी बहू माधवीकेँ अलग कमरा देबाक वचन पूरा करबाक चाहैत छथि। मुदा ओ कोठरी धीरे-धीरे घरक बक्सा, रजाइ आ भंडार-सामानसँ भरि जाइत अछि। माधवी अपन लेखन-बैसकीक ठाम चाहैत अछि। परिवार बहसक बाद ताखक किछु जगह खाली करैत अछि आ चौकी राखैत अछि। कमरा तत्काल पूरा निजी नहि बनैत। मुदा एक दिन सुधा देवी नब कम्बल भीतर राखबासँ पहिने माधवी सँ पूछैत छथि। एतबे छोट प्रश्न कमराक वास्तविक अधिकारक शुरुआत अछि।

कथा २६७ · मायकेक चाबी

अनिमाक चाबी-गुच्छामे मायकेक पुरान चाबी विवाहक बादो अछि। पति अजीत सहित परिवारक लोक एहि चाबीकेँ बदलैत घरक सम्बन्धक दृष्टिसँ देखैत अछि। मायकेक फाटक पर नव घंटी लगलापर चाबीसँ बिना पूछने भीतर पहुँचबाक पुरान अभ्यासो बदलैत अछि। अनिमा अपन ‘घर’ शब्दक अर्थ पर विचार करैत अछि। अन्तमे ओ चाबी सँ खाली मायकेक दुआर बन्द करैत अछि। घंटी बाहरी अतिथिक संकेत रहैत अछि, चाबी हुनकर अपन थैलामे। अपनापन समाप्त नहि होइत, मुदा ओकर रूप बदलैत अछि।

कथा २६८ · सिलाइ खर्च

सुधाक सिलाइ-कल घरक खर्च चलबैत अछि, मुदा हुनकर कमाइकेँ छोट आ अनिश्चित मानल जाइत अछि। प्रमोदक वेतन, घरक बीमा, बच्चाक आवश्यकता आ सिलाइक ग्राहकक खर्च एकहि घरेलू हिसाबमे मिसि गेल अछि। सुधा अलग नाप-पाँजि बना देखबैत छथि जे अपन काजक पाइ कतय-कतय गेल। परिवार धीरे-धीरे सिलाइकेँ वास्तविक आर्थिक योगदान मानब सीखैत अछि। बेटी रागिनी देखैत अछि जे शब्द बदलनाइ धीमा अछि, मुदा हिसाब पहिने बदलि सकैत अछि। छोट धागाक रील भरनाइ एही अदृश्य श्रमक ठोस रूप बनैत अछि।

कथा २६९ · परीक्षा फार्म

रागिनीक विज्ञान स्नातकक परीक्षा-फार्मक अन्तिम तारीख बारह सितम्बर अछि आ भाइ रौशनक कोचिंगक किस्त तेरह सितम्बर देबाक अछि। परिवारक पाइ सीमित अछि, मुदा आरम्भमे रौशनक खर्चकेँ बेसी जरूरी मानल जाइत अछि। रागिनी अपन अधिकारक लेल स्पष्ट आवाज उठबैत अछि; परिवार शिक्षा-सम्बन्धी प्राथमिकता फेर देखैत अछि। रागिनीक फार्म समय पर भरल जाइत अछि आ रौशन अपन किस्तक तारीख आगाँ सरकबैत अछि। देबालक कैलेंडरमे दुनू तारीख अलग चिन्हित होइत अछि। दू सन्तानक भविष्य आब एक-दोसरक बाट रोकैत नहि अछि।

कथा २७० · रसोइक दरबज्जा

रामबागक घरमे रसोइक दरबज्जा भोरसँ सभक आदेश सुनैत अछि। किरण एकहि समय ऋतुक विद्यालयक डिब्बा, शैलेशक रोटी, हरिमोहनक दलिया आ घरक आन आवश्यकता पूरा करैत अछि; संगमे काज करयवाली फूलोक समय सेहो छूटैत अछि। देरी भेलापर दोष किरणक माथ अबैत अछि। खड़ियासँ समय-सूची बनला पर सभकेँ बुझाइत अछि जे प्रत्येक काजक आपन सीमा अछि। फूलो सेहो अपन चाहक समय लिखैत अछि। खुलल दरबज्जा आब केवल आदेशक नहि, परस्पर समय बुझबाक ठाम बनैत अछि।

कथा २७१ · लाल बक्सा

भागीरथी देवीक लाल लोहेक बक्सा वर्षोसँ बन्द अछि। घरक लोकक उत्सुकता, बहूक दीर्घ सेवाक अधिकार-बोध आ पोती अदितिक निजीपनक विचारक बीच बक्सा विवादक विषय बनैत अछि। भागीरथी कखन, ककरा आ की देबाक, एहि पर अपन निर्णय सुरक्षित राखैत छथि। परिवार बुझैत अछि जे ककरो सेवा करब ओकर सभ निजी वस्तु पर अधिकार नहि दैत। अन्तमे दादी बक्सा नहि खोलैत छथि; पोतीकेँ छोट बटनक थैलीसँ चुनबाक अवसर दैत छथि। बन्द बक्सा ककरो हारक प्रतीक नहि रहैत।

कथा २७२ · बहिनक फोन

घरमे सभक फोन बजेबाक अपन-अपन समय अछि, मुदा बेटी मृणालिनीक रातिक फोन पर प्रश्न उठैत अछि। विद्यालयमे शिक्षिका मृणालिनी एक छात्रा काजलक संकटमे सहायता करैत अछि, जखन कि ओकर देर रातिक सम्पर्क परिवारक नजरिमे सन्देहक विषय बनैत अछि। काजलक असुविधा आ सुरक्षाक आवश्यकता सामने अएलापर फोनक उपयोगक अर्थ बदलैत अछि। मृणालिनीक कमरामे चार्जिंगक व्यवस्था बनैत अछि। अन्तमे काजलक साधारण सन्देश अबैत अछि, मुदा परिवार ओकर परिचय नहि पूछैत। फोन ओकर निजता आ उत्तरदायित्व दुनूक साधन बनैत अछि।

कथा २७३ · किरायेदार कन्या

अनामिका अस्पतालक नर्स अछि आ रातिक पालीक कारण देर सँ किरायाक घर घुरैत अछि। मकान-मालकिन रामप्यारी देवी फाटकक साँकल, पड़ोसक निगाहि आ स्त्रीक आवागमनक पुरान नियम सँ जकड़ल छथि। अनामिकाक काज आ सुरक्षित प्रवेशक आवश्यकता पर बातचीत सँ चाबीक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। ओकरा बाद आन स्त्रीसभक रातिक आवागमन सेहो मोहल्लाक साधारण जीवनक हिस्सा देखाइत अछि। अनामिका घर छोड़ला पर रामप्यारी देवी साँकलक प्रतीक्षा करैत छथि, मुदा अन्ततः पड़ोसी फाटकक खनक सुनि उठैत नहि छथि।

कथा २७४ · उपहारक साड़ी

रेणु दीदी स्नेहसँ मधुलिकाकेँ नील साड़ी उपहार दैत छथि। मुदा ओकरा कहिया, कोना पहिरब, सिलाइ-बचत कपड़ा केना उपयोग करब—एहि सभ पर उपहार देनिहारक अपेक्षा बनल रहैत अछि। मधुलिका कृतज्ञता आ अपन रुचिक बीच असमंजसमे पड़ैत अछि। बातचीतक बाद रेणु बुझैत छथि जे उपहार देनाइ वस्तुक उपयोग पर स्थायी अधिकार नहि। मधुलिका साड़ीक बचल कपड़ासँ चूड़ीक थैली बनबाक सोचैत अछि। एहि बेर कैंची उठेबासँ पहिने ओकरा ककरो अनुमति लेबाक बोध नहि होइत।

कथा २७५ · भोजनक मेज

घरमे चार कुर्सीवला भोजनक मेज अएलापर सबकेँ लगैत अछि जे पुरान पीढ़ा-वाला व्यवस्था बदलि गेल। मुदा भोजनक बारी, पुरुष-स्त्रीक बैठकी आ घरक श्रमक पुरान क्रम मेजक संगहि जीवित रहैत अछि। बच्चाक चित्र आ परिवारक रोजक व्यवहार सँ एहि अन्तरक प्रश्न खुलैत अछि। धीरे-धीरे मेज पर बैसबाक अधिकार बदलैत अछि। अन्तमे आयुष अपन चिन्हल कुर्सी पर माधवीकेँ बैसल देखि अतिरिक्त मोड़ल कुर्सी खोलि लैत अछि। चार कुर्सीक मेज पाँच लोकक संग बदली सामाजिक व्यवस्थाक चित्र बनैत अछि।

कथा २७६ · चुप्पीवाली मामी

घरक सभ लोक शारदा मामीकेँ चुप रहनिहार आ सहज मानि लेने छथि। नातिन अन्वी हुनकर मौनक भीतर दबायल इच्छा देखैत अछि। परिवार नीमक गाछ आ आँगनक व्यवस्था पर मामीक पक्ष पूछने बिना निर्णय करैत अछि। अन्वीक संग बातचीतमे मामी बतबैत छथि जे जखन आन लोक पहिनहि ककरो इच्छा तय करि दैत अछि, तखन अपन बात कहब कठिन भऽ जाइत अछि। धीरे-धीरे परिवार हुनकर उत्तरक प्रतीक्षा करय लगैत अछि। अन्तमे तुलसीक गमला कतय राखब, एहि प्रश्न पर मामी स्वयं 'एतय' कहैत छथि आ हुनकर निर्णय मानल जाइत अछि।

कथा २७७ · पार्लरक शीशा

विवाहसँ पहिने सुरभि पार्लरक पैघ शीशा आगाँ बैसैत छथि। मालती हुनका सजावट चुनबाक लेल पूछैत छथि, मुदा परिवार आ परिचित लोकक अनेक पर्ची हुनकर चेहराक रंग, केश आ रूप पहिनहि तय करबाक प्रयास करैत अछि। सुरभि अपन रुचि स्पष्ट करैत छथि, किछु सुझाव स्वीकार करैत आ किछु काटैत छथि। विवाहक बाद ओ छोट शीशामे थकान, हँसी, काजरक दाग आ अपन चुनल सजावट एकसंग देखैत छथि। बाहरी चौखट हटिते हुनका अपन चेहरा बेसी सम्पूर्ण लगैत अछि।

कथा २७८ · नौकरीक पहिल महीना

संजनाक पहिल नौकरी घरमे उत्सव जकाँ शुरू होइत अछि। वेतन अएलापर परिवारक विभिन्न सदस्य ओकर पैसाक उपयोग अपन-अपन हिसाबसँ तय करय चाहैत छथि। संजना घरक खर्चमे योगदान देबाक इच्छाकेँ स्वीकार करैत अछि, मुदा अपन सम्पूर्ण कमाइ पर दोसरक आदेश नहि चाहैत। ओ बस-पास, निज खर्च आ घरक हिस्सा अलग लिखैत अछि। पहिल मासक अनुभव सँ घरमे आर्थिक बातचीतक नब सीमा बनैत अछि। दोसर वेतन-पर्ची रखैत समय संजना बुझैत अछि जे ओकर तनखाह घरक महत्त्वपूर्ण हिस्सा अछि, मुदा पूरा घरक पर्याय नहि।

कथा २७९ · पुरान पेटीकोट

बरखासँ पहिने पुरान कपड़ा छाँटैत समय सुधा देवीक घिसल पेटीकोट सामने अबैत अछि। ओकर सीवन, अलग रंगक टाँका आ बारम्बार जोड़ल कपड़ा परिवारक वर्षोंक अभाव आ अनदेखल घरेलू श्रमक साक्ष्य अछि। नब पीढ़ी पहिले ओकरा रद्दी मानैत अछि, बादमे एक-एक सीवनक कथा सुनैत अछि। पुरान कपड़ाकेँ रखब कि फेर उपयोग करब, एहि पर सहज निर्णय नहि होइत। अन्विता अन्तमे नव पीयर टेढ़ टाँकाकेँ देखैत बुझैत अछि जे परिवारक इतिहास केवल उत्सवमे नहि, घिसल कपड़ाक अदृश्य मरम्मतिमे सेहो रहैत अछि।

कथा २८० · अतिथि कमरा

देवकी देवीक पैघ घरमे चारि सुतबाक कोठरी अछि, मुदा हुनकर अपन स्थिर कमरा नहि। परिवारक सदस्य आ अतिथिक सुविधानुसार हुनकर बिछाओन बेर-बेर बदलैत रहैत अछि। पोती ईशा एहि स्थिति पर प्रश्न उठबैत अछि। देवकी धीरे-धीरे अतिथि-कोठरीमे अपन वस्तु राखि एकटा निश्चित ठाम बनबैत छथि। कोठरीक दुआर पर ‘अतिथि’क पट्टी एखनहुँ अछि, मुदा भीतर हुनकर घड़ी टाँगल जाइत अछि। ओ पहिल बेर राति सुतबाक ठामक अनिश्चिततासँ मुक्त होइत छथि। निजी अधिकारक आरम्भ घरक नब निर्माण नहि, पुरान जगहक नब उपयोग सँ होइत अछि।

कथा २८१ · गुप्त बचत

मालती देवी अपन आपातकालीन बचत घरक कोनो एक बक्सामे नहि राखैत छथि। किराना, दूध, औषधालय आ तरकारीवालाक पाँजिमे छोट-छोट अग्रिम रकम हुनकर अदृश्य सहारा अछि। परिवारमे संकट अएलापर एहि बचतक उपयोगिता सामने अबैत अछि, संगहि पति जगदीश बाबूक प्रश्न उठैत अछि जे बचत पर निर्णयक अधिकार ककर। मालती स्पष्ट करैत छथि जे घरक खर्च सम्हारि बचल रकम पर हुनकर अपन अधिकार अछि। साझा आपातकालीन लिफाफा बनैत अछि, मुदा ओ अपन छोट बचतक क्रम बनौने रहैत छथि।

कथा २८२ · फोटोमे नहि रहल स्त्री

परिवारक पचासीम जन्मदिनक छायाचित्र-प्रदर्शन बनबैत ईशानीकेँ अचरज होइत अछि जे मंजरी देवीक चेहरा पुरान अलबममे नहि अछि, जखन कि सभ घटनाक तारीख, वस्तु आ व्यवस्था हुनकेँ मालूम। मंजरी परिवारक प्रत्येक अवसर सम्हारैत रहल छथि, मुदा स्वयं कैमरा पाछाँ रहि गेलीह। ईशानी हुनकर अनुपस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि। नब पारिवारिक छायाचित्रमे मंजरीक चेहरा स्पष्ट समाविष्ट होइत अछि। पाछाँ हुनकर नाम कोनो सेवा वा हिसाबक परिचय बिना लिखल जाइत अछि। परिवारक इतिहासमे ओ पहिल बेर केवल अपन व्यक्तित्वक आधार पर उपस्थित छथि।

कथा २८३ · नामक प्लेट

फाटकक ढीला नाम-पट्ट पर केवल सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक श्रीधर झाक नाम अछि। ओकर मरम्मति करैत परिवारकेँ पुरान पट्टक पाछाँ शैलजा देवीक लिखल तारीख, पेचक आकार आ देखभालक निशान भेटैत अछि। घरक काममे स्त्रीक योगदान रहितो बाहरी पहचान केवल पुरुषक नाम सँ जुड़ल अछि। नब पट्ट बनबाक चर्चा सँ सभ सदस्यक नामक प्रश्न उठैत अछि। अन्तमे श्रीधर, शैलजा, नवीन आ अर्चनाक नाम एके पट्ट पर लगैत अछि। बरखामे शैलजा ओकरा एक छोरसँ दोसर छोर धरि पोंछैत छथि—आब नामसभ बराबरीसँ देखाइत अछि।

कथा २८४ · तीसरी सीढ़ी

केदार मिश्रक घरक ओसारा पर सदिखन दू पायदान रहल अछि। एक राति पत्नी गिरिजा देवी लाठी टेकैत तेसर सीढ़ीक अनुभव करैत छथि, मुदा दिनमे ओ गायब अछि। परिवारक आन सदस्य सेहो कखनो असम्भव अतिरिक्त पायदान देखैत वा छूबैत छथि। गिनती आ नाप सँ निश्चित उत्तर नहि भेटैत अछि। गिरिजाक घुट्ठीक असुविधा देख परिवार मिस्त्रीसँ ढलुआ बाट बनबबैत अछि। सीढ़ी फेर सामान्य देखाइत अछि, मुदा गिरिजाक लाठीक टोंक पर माटिक तीन छोट घेरा रहि जाइत अछि। अनिश्चित घटनाक बीच वास्तविक सुविधा स्थायी बनैत अछि।

कथा २८५ · उल्टा कैलेंडर

पुरान घर बेचि नब घर जाएबाक तारीख तय अछि। सामान छाँटबाक समय नीलमणि झार्कें दिन-पाँजिमे 'एकतीस सितम्बर' आ फेर 'बत्तीस सितम्बर' जकाँ असम्भव तारीख देखाइत अछि। समयक एहि अजब विस्तारमे घर छोड़बाक पूर्वक अधूर निर्णय, पुरान कुर्सी, तुलसीक चौरा आ स्मृतिक सामान अलग-अलग सामने अबैत अछि। परिवार अन्ततः घर बदलैत अछि, मुदा अतिरिक्त पन्नाक रहस्य नहि सुलझैत। नब घरमे सामान्य तारीख चलैत अछि, असम्भव पन्ना पाछाँ दबा रहैत अछि। घर छोड़बाक मनोवैज्ञानिक समय कैलेंडरक सीधा गणनासँ भिन्न बनि जाइत अछि।

कथा २८६ · बन्द कमराक हवा

मरम्मतिक कारण तीन मास सँ बन्द कोठरीक महीन फाँकसँ अनोखी हवा अबैत अछि। बाहर कार्तिक रहितो भीतरक हवा कखनो फागुनक मंजरिक गन्ध, कखनो जेठक गरमी, कखनो सावनक नमी आ कखनो जाड़क अनुभूति दैत अछि। शिवकान्त, मालती, मीरा आ मिस्त्री कारण खोजैत छथि; दुआर खोलिते ओ विशेष ऋतु समाप्त भऽ जाइत अछि। मरम्मतिक बादो ई घटना रहैत अछि। मालती एक जाड़क राति बन्द काठक फाँकसँ गरम हवा अनुभव करैत छथि, मुदा दुआर नहि खोलैत। रहस्यक अस्तित्व ओकर अनिश्चितताामे सुरक्षित रहैत अछि।

कथा २८७ · बिना मालिकक छाया

मधुबनीक बजारमे दुपहरिया एक मानव-जेकाँ छाया नियमित रूपेँ चलैत देखाइत अछि, मुदा ओकरा संग कोनो देह नहि। सुलोचना आ आन दुकानदार ओकर दिशा, गति आ धूप-छाँहक संग ओकर व्यवहार देखैत छथि। छाया वस्तु पर चढ़ैत नहि, कखनो उजासक टुकड़ामे टुटि फेर जुड़ैत अछि। लोक पहिने ओकर मालिक खोजैत आ डरैत छथि, बादमे ओकर बाट चिन्हि दैनिक व्यवहार बदलैत छथि। ओकरा बुझब जरूरी नहि रहि जाइत। बजारक सभ परिचित देहक छायामे एक एहन छाया जुड़ि जाइत अछि जे अपनहि बाट चलैत अछि।

कथा २८८ · स्टेशन जे नक्शामे नहि

अभिलेखागारक लिपिक प्रभाकर मिश्र रेलक नियमित यात्रामे दू परिचित स्टेशनक बीच कदम्बबारी नामक अपरिचित स्टेशन देखैत छथि। रेलक नक्शा, पूछताछ आ आन यात्रिक अनुभव ओकर अस्तित्व सिद्ध नहि करैत। आश्चर्य ई जे स्टेशन केवल एक डिब्बाक चौठ खिड़कीक विशेष फाँक सँ देखाइत अछि; कैमरा ओकरा पकड़ि नहि पबैत। बादमे ओही डिब्बा रेल-अहातामे स्थिर रहितो ओहि खिड़की सँ कदम्बबारी देखाइत अछि। प्रभाकर नक्शामे बनाओल स्टेशनक बिन्दु काटि खिड़कीक छोट आयत बनबैत छथि। ठाम नक्शासँ बेसी दृष्टिक अजीब सीमामे उपस्थित अछि।

कथा २८९ · आधा बजल घड़ी

देवानन्द मिश्रक घरक देबाल-घड़ी कखनो पूरा घंटी नहि बजबैत, बीचमे अटकैत अछि। एहि अधबजल क्षणमे घरक मामूली क्रिया—दरबज्जा बन्द करब, धागा खींचब, पान मोड़ब वा पानिक बूँद खसब—अधूरा रहि जाइत अछि, फेर घंटी पूरा भेलापर गति फेर चलैत अछि। परिवार समयक ई अनोखा खण्ड गिनि आ लिखि देखैत अछि। घड़ीक मरम्मतिक विचारसँ सेहो अनुभवक रहस्य नहि मिटैत। वैदेही अपन पाँजिमे सामान्य तारीखक बदला ‘आधा बजल’ लिखैत अछि। कथा समयक माप आ अनुभूतिक बीचक विचित्र फाँक खोलैत अछि।

कथा २९० · दोसर दरबज्जा

महेन्द्र झाक किरायाक फ्लैटक पश्चिम देबालमे एक दिन अपने-आप दोसर दरबज्जा उगि अबैत अछि। ओकरा खोलिते घरक जे कोठरी ओहि समय खाली अछि, से देखाइत अछि; कियो ओतय प्रवेश करिते दृश्य बदलि जाइत अछि। परिवार पहिने कौतूहलसँ ओकर उपयोग करैत अछि, मुदा निजी कोठरी पर अनचाहल नजरि पड़बाक समस्या सेहो उठैत अछि। घर बदलबाक समय सामान हटिते खाली कोठरीसभ ओहि दरबज्जामे देखाइत रहैत अछि। परिवार नब घर चलि जाइत अछि, मुदा पुरान खाली फ्लैटमे रहि गेल एहि दरबज्जाक दृष्टिक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

कथा २९१ · नाम बदलैत गली

मधुबनीक एक गलीक नीला नाम-पट्ट सभ भोर बदलि जाइत अछि—कखनो नीम गली, कखनो कमला पथ, कखनो शीतल वा चाँदनी गली। पट्ट ढाँपि मुहर लगेलो नाम बदलैत अछि। इरा झा बदलैत नामक पाँजि रखैत अछि, मुदा लोकक स्मृतिमे काल्हिक नाम सेहो धीरे-धीरे अस्पष्ट होमय लगैत अछि। घरक संख्या आ गलीक वस्तु स्थिर अछि; नाम आ ओकर आवाज अनिश्चित। इरा स्थानक छोट रेखाचित्र बनबैत अछि, कारण केवल नाम सँ ठामक अनुभव नहि बाँचैत। रहस्यक बीच गली अपन साधारण दिनचर्या चलबैत अछि।

कथा २९२ · एक अतिरिक्त खिड़की

वैदेही आ नीलाभ अपन तीन खिड़कीवला पुरान घर बेचबाक निर्णय लैत छथि। दलालक छायाचित्र आ बिक्रीक पुस्तिकामे अचानक चारिम खिड़की देखाइत अछि, जखन कि वास्तविक देबालमे तीनिए अछि। छवि आ घरक अन्तर खरीदारसभकेँ उलझबैत अछि। कखनो खींचल नव चित्रमे तीन खिड़की देखाइत, पुरान छपल प्रति चारि रखैत अछि। घर अन्ततः दोसर परिवारक होइत अछि आ वैदेही छोट घरमे चलि जाइत छथि। बेटी अपर्णा दुनू छवि संग राखि बीचमे खाली कागज छोड़ैत अछि। दृश्य आ वास्तविकताक विरोध अनुत्तरित रहैत अछि।

कथा २९३ · आवाजक कमरा

किरायेदार गेलाक बाद रघुनाथ झाक घरक कोठरी खाली भऽ जाइत अछि। ओतय सँ एहन संवाद सुनाइत अछि जे वास्तवमे किछु दिन बाद नव किरायेदारक मुँहसँ निकलयवला अछि। आश्चर्य ई जे कोनो वाक्य पहिने सुनि लेलापर ओकर वास्तविक समयमे ओहि सुननिहारकेँ ओ बात फेर सुनाइ नहि पड़ैत। रघुनाथ भविष्यक आवाज पूरा सुनबाक लोभ आ वर्तमानक अनुभव गुमेबाक डरक बीच निर्णय लैत छथि। नव परिवार आबिते ओ अधूर वाक्यक शेष भाग पहिने नहि सुनैत। अन्तमे कोठरी वास्तविक लोकक आवाजसँ भरैत अछि आ ओ वर्तमानक पूरा बातचीत सुनि सकैत छथि।

कथा २९४ · बस संख्या शून्य

अस्थायी नौकरी समाप्त भेला पर इशानी मिश्र रातिक पुरान बस-पड़ावमे ठाढ़ अछि। मायके घुरब, सहकर्मीक लग रुकब कि पूर्णियाक नब नौकरी स्वीकार करब—तीन बाट खुलल अछि। ओ समय ‘शून्य’ संख्या लिखल विचित्र बस अबैत अछि, जकर पड़ाव यात्रीक अस्पष्ट आ स्पष्ट निर्णयसँ बदलैत जेकाँ लगैत अछि। आन यात्रिक अनुभव सँ इशानी बुझैत अछि जे बस निर्णयक भार नहि उठबैत। ओ एक पड़ाव पर उतरि अपन अगिला काज स्वयं करबाक सोचैत अछि। नब नियुक्तिक उत्तर एखन बाँकी अछि, मुदा गन्तव्यक प्रश्न सँ ओ भागैत नहि।

कथा २९५ · कागजक वर्षा

बरखाक पहिल बादरमे लहेरियासराय पर पानिक बदला कागज बरसय लगैत अछि। लोकक काटल, सुधारल आ अस्वीकारल वाक्य पन्ना बनि आकाशसँ खसैत अछि। भयवश लोक गलती काटब छोड़ि दैत छथि, फलतः लेखन आ निर्णय दूषित होमय लगैत अछि। बादमे वास्तविक बरखा कागजक ढेरकेँ भिजबैत अछि। छापाखानाक नन्दू एक गलत तारीख काटि सही लिखैत अछि, जखन कि विभा ओकरा सुधार करबाक लेल प्रोत्साहित करैत छथि। कागज फेर खसैत अछि, मुदा सुधार रोकल नहि जाइत। पुरान भूलक दृश्य डर सच्चाइ सुधारबाक कर्तव्य सँ पैघ नहि रहैत।

कथा २९६ · नक्शाक पोखरि

नगरक पुरान जमीन-नक्शामे मटियाही पोखरि अछि, मुदा वर्तमान मैदानमे ओकर चिन्ह नहि। नालीक योजना बनबैत मृदुला कर्ण देखि पबैत छथि जे नक्शाक नीला पोखरि आ धरतीक पानिमे विचित्र सम्बन्ध अछि। नक्शाक कोन फीका होइतहि मैदानक ओहि भागमे पानि प्रकट होमय लगैत अछि। अधिकारी आ स्थानीय लोक पानिक आवागमन सँ अपन व्यवहार बदलैत छथि। अन्तमे मूल नक्शाक दक्षिणी भाग उज्जर होइत अछि आ चाह-दोकान पाछाँ माटिमे छोट पोखरि उगि अबैत अछि। कागज आ धरती एक-दोसरक रूप बदलैत रहैत अछि।

कथा २९७ · उलटल प्रतिबिम्ब

मीरा एक भोर शीशामे देखैत अछि जे ओकर प्रतिबिम्ब वास्तविक शरीरक उलट वा अलग क्रिया करैत अछि। धीरे-धीरे बुझाइत अछि जे प्रतिबिम्ब तत्काल नकल नहि, कखनो अधूरा पुरान काज समय बाद पूरा करैत अछि। परिवार ढाँपि, जाँचि आ प्रतीक्षा कऽ एहि अजीब व्यवहारकेँ देखैत अछि। महीना पहिनेक विदाइक हाथ हिलेनाइ प्रतिबिम्बमे बहुत बाद पूरा होइत अछि। मीरा मुस्कराइत भीतर चलि जाइत अछि, मुदा शीशामे ओकर मुस्की एखन बाँकी रहैत अछि। आत्मछविक समय वास्तविक जीवनक समयसँ अलग भऽ गेल अछि।

कथा २९८ · गायब बुधदिन

सुधांशुक परिवार मंगल राति पाँचू कुर्सी पर भोजन करैत अछि, तकर बाद भोर सीधे बृहस्पति दिन होइत अछि; बुधदिन घरक अनुभवसँ गायब, जखन कि बाहरी लोक लेल ओ बीति चुकल अछि। जाँच सँ घरक लोक बुझैत छथि जे मंगल राति मेजक एक कुर्सी खाली रखलापर बुधदिन फेर सामान्य अबैत अछि। ओ सभ बेराबेरी पीढ़ी पर बैसि जगह खाली रखय लगैत छथि। समयक क्रम फेर चलैत अछि। ऋचा बुझैत अछि जे संकट बुधक खाली कुर्सीक नहि, मंगल राति सभ स्थान भरि देबाक अछि।

कथा २९९ · पाँचम कोना

सरोज मिश्रक पुश्तैनी घरक कागजवाली कोठरी बाहरसँ चौकोर अछि, मुदा भीतर एक असम्भव पाँचम कोना धीरे-धीरे बढ़य लगैत अछि। घर बँटबाक चर्चा, पुरान वस्तु आ अधिकारक हिसाबक बीच परिवार नाप करैत अछि। भित्ति बाहरसँ सीधा अछि, भीतरक कोण सरकैत अछि। परीक्षण सँ बुझाइत अछि जे कोनामे कोनो मनुष्य बैसल रहला पर ओकर बढ़ब रुकैत अछि। सरोज अन्तमे नापबाक चाक छोड़ि ओहि कोनामे पीढ़ी खिसका बैसैत छथि आ पुस्तक खोलैत छथि। अपारिभाषित जगहकेँ गिनबाक बदला ओहि मे रहबाक निर्णय कथा सम्पन्न करैत अछि।

कथा ३०० · अपरिचित अपन घर

तीन दिन बाद घर घुरल विनय झा देखैत छथि जे सभ परिचित वस्तु अपन-अपन जगहसँ बदलि गेल अछि। चाबी, ताला आ घर ओही अछि, मुदा बिछाओन, मसालाक डिब्बा, कुर्सी आ आलमारीक क्रम अजनबी लगैत अछि। ओ राति-राति बदलाव नापि दर्ज करैत छथि आ बुझैत छथि जे किछु व्यवस्था परिवारक दोसर सदस्यक पुरान चाह आ स्मृतिसँ मेल खाइत अछि। घर केवल हुनकर व्यक्तिगत आदतक प्रतिरूप नहि। अन्तमे ओ नब तरहें राखल कुर्सी पर बैसैत छथि आ खाली कुर्सी कने आगाँ खिसकबैत छथि। अपन घरकेँ अनिश्चितता सहित अपनायबाक शुरुआत होइत अछि।

खण्ड ४

कथा-त्रिधारा • खण्ड–१

१०० कथाक सारांश

कथा ००१–०२०

कथा ००१ · आवाज नहि देनिहार घंटी

लहेरियासरायक पैतृक घर बेचबाक तैयारीमे माधवी आ हुनकर बेटी ईरा कें दुआरक एक विचित्र घंटीक रहस्य बुझाइत अछि। ई घंटी बजैत नहि, मुदा एक बेर बटन दबिते घरमे जीयल कोनो घटना दुनूक स्मृतिसँ लुप्त भऽ जाइत अछि। उल्टा लगल टाइल, नानाक सहारा लेल लगल छड़ आ मायक सिनेहक प्रसंग क्रमशः अपरिचित होमय लगैत अछि। लिखि राखल विवरण घटनाक सूचना तँ बचबैत अछि, ओकर अनुभूति नहि। घंटी खोलि राखलापर गायब भऽ जाइत अछि आ फेर अपन ठाम प्रकट होइत अछि। अन्तमे माधवी ओकरा दबेबाक बदला दुआर पर तीन बेर ठोकैत छथि। एही आवाजसँ बचपनमे मायक दुआर खोलबाक एक जीवित स्मृति फेर जगि उठैत अछि।

कथा ००२ · उल्टा रास्ता

सड़कक नापजोख करनिहार अर्चना झा बेनीपुर लग बाढ़िक समय वैकल्पिक रास्ताक जाँच करय निकलैत छथि। मुदा जतय जाएबाक प्रयास करैत छथि, सड़क घुमा-फिरा हुनका पैतृक घरक फाटक पर पहुँचा दैत अछि। दूरी-मापक, नाप-पोथी आ चूनाक चिन्ह सभ ठीक रहितो घटनाक व्याख्या नहि दैत अछि। अनुभवी चालक जितन मियाँ सेहो संगमे एहि असम्भव घुमावक अनुभव करैत छथि। रेल आ खेतक मेड़ सँ अर्चना बाहर पहुँचि जाइत छथि, मुदा घरसँ सड़क द्वारा निकलनाइ फेर विफल होइत अछि। अन्ततः ओ बुझैत छथि जे ई उलझन हुनकर यात्राक अछि, सभक नहि। घर आबय लेल सड़क आ बाहर जाएबाक लेल पाछाँक मेड़ हुनकर अपन अलग-अलग बाट बनि जाइत अछि।

कथा ००३ · रातिक दोसर आकाश

विद्यालयक रातिक पहरेदार कैलाश मण्डल आधा रातिक किछु मिनट लेल आकाशमे अपरिचित नक्षत्र देखैत छथि। ध्रुव आ सप्तर्षिक परिचित विन्यासक बदला झुकल हँसिया आ सात ताराक घेरा देखाइत अछि। बालिका रागिनी हुनका बात पर विश्वास कऽ नियमित अवलोकन आ लेखा राखय लगैत अछि। शिक्षक लोकनि सेहो घटना देखैत छथि, मुदा दूरबीन आ मोबाइलमे साधारण आकाशे रहैत अछि। पोखरिक पानिमे प्रतिबिम्ब सेहो नहि बदलैत अछि। रागिनी पढ़ाइ लेल दरभंगा चलि गेलापर दू ठामसँ फोन पर जाँच करैत अछि; कैलाशक आँखिक आकाश अलग अछि, दुनूक यन्त्रमे एक्के। कथा देखल सत्य, मापल प्रमाण आ दू पीढ़ीक साझा विश्वासक बीचक दूरी केँ अनुत्तरित छोड़ैत अछि।

कथा ००४ · प्याज काटैत स्त्री

रसोइक पुनर्निर्माणक पहिने सरोजा देवी पुरान पाटी पर प्याज काटैत अपन जीवनक ओ निर्णय सभ स्मरण करैत छथि, जे परिवारक चर्चामे प्रायः बिसरा गेल। रसोइक खिड़कीक स्थान बदलनाइ, बेटीक परीक्षाक समय बच्चासभ संग अकेले रहनाइ, अपन नामसँ बैंक खाता खोलब आ महिलासभक बचत-समूह आरम्भ करब हुनकर निजी पहल छल। पोती अनु अपन नानीक जीवनक पाँच महत्त्वपूर्ण घटना लिखय चाहैत अछि। एहि बहाने सरोजा पहिल बेर अपन छोट बुझल काजसभक महत्त्व स्वयं स्वीकार करैत छथि। पुरान काटबाक पाटी हटैत अछि आ नव पाटी पर पहिल चक्कूक निशान पड़ैत अछि। नब रसोइक आरम्भ हुनकर ओहि आत्मपहिचानक संग जुड़ि जाइत अछि।

कथा ००५ · बसक शीशा

साँझक बसमे घर घुरैत माधव झा खिड़कीक शीशामे अपन प्रतिबिम्ब देखि विचलित होइत छथि। चेहरा हुनकरे अछि, मुदा ओ अपन भीतरक पहिचानसँ ओकरा मिलाबि नहि पबैत छथि। कार्यालयक पहिचान-पत्र लेल खिचाओल सजायल छायाचित्र आ बसक असंवारल प्रतिबिम्बक बीच भिन्नता हुनका परेशान करैत अछि। घरक दर्पणमे सेहो ओ अनायास केश आ ठोढ़ ठीक करय लगैत छथि। धीरे-धीरे हुनका बुझाइत अछि जे अपन चेहरा सेहो ओ

सदिखन दोसराक दृष्टिक अनुरूप बना रहल छलाह। फेर बसमे ओ प्रतिबिम्ब केँ बिना सुधारने देखैत छथि आ पत्नीसँ बिना पूर्वसूचनाक छायाचित्र खींचबाक आग्रह करैत छथि। हुनका लेल सहज हँसी बनल-बनाओल छविसँ बेसी अपन लगैत अछि।

कथा ००६ · पानि भरबाक बेर

मंजरी सरकारी अभिलेख-संरक्षणक तीन मासक प्रशिक्षण लेल चुनल गेल अछि, मुदा घरमे पानि भरब, भाइ अंशुक तैयारी आ अस्वस्थ मायक देखभालक कारण प्रवेश छोड़बाक सन्देश लिखि रहल अछि। नलक पाँतिमे अपन पीयर बाल्टी देखैत ओकरा बुझाइत अछि जे घरक सभ जिम्मेदारी ओकर अकेलेक नहि। ओ काजकेँ अलग-अलग बाँटि पिताक पानि भरब, भाइक अपन टिफिन सम्हारब, औषधिक बेर बदलनाइ आ पड़ोसिनसँ सहायता लेबाक उपाय सोचैत अछि। परिवारक आरम्भिक अनिच्छा धीरे-धीरे सहयोगमे बदलैत अछि। अन्तमे पिता स्वयं बाल्टी लऽ पाँतिमे जाइत छथि आ मंजरी बसक समय बुझय निकलैत अछि। ओकर स्थान घरक काज छोड़ने बिना प्रशिक्षणमे सुरक्षित रहबाक संभावना बनैत अछि।

कथा ००७ · खाली कॉपी

सेवानिवृत्त शिक्षक गोविन्दकान्त झा केँ विद्यालयक शताब्दी-स्मारिका लेल अपन शिक्षक-जीवनक पहिल दिन लिखबाक निमन्त्रण भेटैत अछि। खाली कॉपी हुनका ओहि बेर असहज करैत अछि, कारण प्रमाणित नियुक्तिक तारीख आ वास्तवमे शिक्षक बनबाक अनुभव एक नहि। पुरान पञ्जी, स्मृति आ भूतरंगक छात्रक प्रसंग हुनका शिक्षणक अभ्यस्त निर्णायक दृष्टि पर प्रश्न उठबैत अछि। ओ आरम्भमे लाल कलमसँ अपन लिखल पाँति काटैत-परखैत छथि, फेर स्वीकार करैत छथि जे खाली कॉपीक कारण बुझब शून्य अंक देबासँ कठिन अछि। अन्तमे ओ साफ-सुथरा आत्मप्रशंसात्मक लेख नहि, काटल-जोड़ल पन्नासहित अपन कॉपी पठेबाक निश्चय करैत छथि। एहि अपूर्णतामे हुनका अपन असल शिक्षकीय अनुभव भेटैत अछि।

कथा ००८ · टूटल कंघी

घरक रंग-रोगन लेल पुरान सामान छाँटैत शैलजा कैं मायक टिनमे तीन दाँत टूटल करिया कंघी भेटैत अछि। कंघी देखि बचपनमे माय द्वारा केश कंघी कए देबाक एक दृश्य याद पड़ैत अछि। मुदा माएसँ बात कएलापर ज्ञात होइत अछि जे ओ करिया कंघी केश लेल नहि, चादरक किनारक धागा सुलझेबाक लेल राखैत छलीह; केशमे लाल कंघी चलैत छल। शैलजा बुझैत अछि जे स्मृति अलग-अलग घटनाकैं मिला सकैत अछि। ओ टूटल कंघीक सहायतासँ पुरान चादरक फुँदना ठीक करय लगैत अछि। अन्ततः कंघी संग्रहक निष्क्रिय वस्तु नहि रहि, नव काजक उपकरण बनैत अछि; टूटल दाँतक खाली ठामो उपयोगी सिद्ध होइत अछि।

कथा ००९ · तरकारी चुनैत हाथ

रामलोचन झा सत्ताइस वर्षसँ तरकारीक ढेरीमे प्रत्येक भंटा, टमाटर आ परोर बहुत सावधानीसँ चुनैत आयल छथि। बजारक एहि आदति पर विचार करैत हुनका अपन बेटा अमरेशक पढ़ाइ सहित अनेक पारिवारिक निर्णय मोन पड़ैत अछि, जतय ‘तोहर निर्णय’ कहितो अपन तर्कसँ दोसरक विकल्प सीमित कऽ देलनि। एहि बेर ओ दागवला टमाटर आ टेढ़ लौकी लेबाक साहस करैत छथि। पत्नी मालती संग बातमे हुनका बुझाइत अछि जे खराब निकलबाक सम्भावना रहितो चुनाव अपना हाथमे लेब आवश्यक अछि। धीरे-धीरे ओ वस्तुक पूर्णता खोजबाक बदला अपन इच्छाक उत्तरदायित्व स्वीकार करैत छथि। तरकारीक सूची पाछाँ लिखल ‘हमर मन’ एहि सूक्ष्म परिवर्तनक चिह्न बनैत अछि।

कथा ०१० · जाड़क धूप

जानकी देवी जाड़क धूपक खिड़कीसँ सरकैत पट्टी देखि दिनक समय पहचानैत छथि। पोती काव्या विद्यालयक प्रयोग लेल भुइँ पर धूपक स्थान आ घड़ीक बेर अंकित करैत अछि। दादी ओकर सहायता करैत छथि, मुदा एक अवलोकन छूटि जाइत अछि आ दोसर बेर बादर धूप छिपा दैत अछि। सही-सही समय पकड़बाक चिन्ता हुनका अपन पाँच मिनट आगाँ चलाओल पुरान देवाल-घड़ीक स्मरण करबैत अछि। बच्चीक प्रयोग सँ हुनका ज्ञात होइत

अछि जे धूप नहि देखायलाक बादो समय चलैत रहैत अछि; प्रत्येक क्षण केँ दर्ज करब आवश्यक नहि। साँझ भुइँक चिन्ह पोछि देल जाइत अछि। जानकी देवी रातिक स्वतन्त्र अस्तित्व सेहो अनुभव करैत छथि, केवल अगिला बिहानक प्रतीक्षा नहि।

कथा ०११ · दूध उफनल

प्रमिला देवीक घरक सभ काज पर एहन पकड़ अछि जे दूध कखन उफनत, ककर वस्तु कतय अछि आ ककर आवश्यकता कहिया पड़त, सभ हुनका बुझल रहैत अछि। एक दिन दूध उफनि जाइत अछि आ घरक लोक अचम्भित होइत अछि। एहि छोट दुर्घटनासँ हुनका अपन 'कहियो चूक नहि करनिहार' छविक भार अनुभव होइत अछि। ओ बुझैत छथि जे पति आ सन्तानक काज स्वयं सम्हारि लेबाक हुनकर आदति दोसराक सीखबाक अवसर सेहो घटबैत रहल। चाह बनेबाक आ दूध देखबाक जिम्मेदारी क्रमशः बाँटल जाइत अछि। दोसर दिन मीरा दूध उफनय सँ रोकि दैत अछि, मुदा प्रमिलाक भीतर राहतक संग अपन अपरिहार्यता घटबाक हलुक पीड़ा सेहो उठैत अछि। ओ एहि भावकेँ स्वीकार कऽ खाली हाथ किछु क्षण शान्त बैसब सीखैत छथि।

कथा ०१२ · लिफाफा खोलबाक पहिने

सुधा झा केँ महाविद्यालयक अभिलेख शाखासँ एक पत्र भेटैत अछि, जकरा खोलबासँ ओ डरैत छथि। जवानीमे संगीतक पढ़ाइ छोड़बाक निर्णयक जिम्मेदारी ओ सदिखन पिताक एक वाक्य पर रखैत आयल छलीह। पुरान राग-परिचयक कॉपी आ महाविद्यालयक अभिलेख खोजैत हुनका बुझाइत अछि जे घटना ओतेक स्पष्ट नहि जतेक हुनकर बरखोंक स्मृति बतबैत अछि। पत्र खुललापर सेहो पिताक रोकब आ हुनकर अपन डरक बीचक सत्य निर्णायक रूपेँ स्पष्ट नहि होइत अछि। बेटी इरा संग बातचीतमे सुधा पहिल बेर मानैत छथि जे हुनका ठीक-ठीक मोन नहि। ओ संगीतक कॉपी आ अभिलेखक पत्र अलग राखैत छथि। निर्णयक अधूरा इतिहासकेँ ओ आब एकटा निश्चित आरोपमे नहि बदलैत छथि।

कथा ०१३ · शीशामे सफेद केश

माधवी झा अपन माथमे पहिल सफेद केश देखि चौंकैत छथि। सासुरक परिवार हुनका प्रायः ‘छोटकी’, ‘माए’ वा दोसर सम्बन्धक नामसँ बजबैत अछि। बजारमे अपरिचित दुकानदार जखन हुनका ‘माधवी जी’ कहैत अछि, तखन अपन व्यक्तिगत नाम सुनब असाधारण अनुभव बनैत अछि। सफेद केशक प्रसंग एहि बुझाइकेँ गहींर करैत अछि जे शरीर आ व्यक्तित्व केवल परिवारक भूमिका सभसँ निर्धारित नहि होइत। ओ केश उखाड़ब वा रंगब नहि चाहैत छथि। पति अरुणक मुँहसँ अपन नाम सुनि हुनका अलग आनन्द भेटैत अछि। अन्तमे घरक दैनिक क्रम पूर्ववत् रहितो ‘माधवी’ नाम हुनका लेल फेर अपन स्वतन्त्र अस्तित्वक परिचय बनैत अछि।

कथा ०१४ · खाली कटोरी

नओ वर्षक अंशु केँ नील किनारवाली अपन कटोरी प्रिय अछि। ओहि कटोरीमे भात-दालि खैत ओकरा आरम्भमे केवल स्वाद आ पेट भरबाक चिन्ता होइत अछि। मुदा ठेकेदारसँ पिताक मजूरीक पैसा नहि पहुँचला पर घरमे चाउरक अभावक आशंका उत्पन्न होइत अछि। अंशु बुझय लगैत अछि जे दोकानमे चाउर उपलब्ध होएब आ ओकरा किनि सकब दू अलग बात अछि। घरमे बचल दानाक नाप, अगिला दिनक भोजन आ विद्यालयक गणितक घटाव ओकर मनमे नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। खाली कटोरी भोजन समाप्त होएबाक चिह्न मात्र नहि रहैत; ओ आनेवला दिनक अनिश्चितताक माप बनैत अछि। अंशु भूख आ अभावमे अन्तर करब सीखैत अछि।

कथा ०१५ · खिड़की पर चिड़ै

प्रभा झाक घर-गृहस्थी निश्चित समय आ क्रम पर चलैत अछि। रसोइक खिड़कीक जालीक छोट उघड़ल कोन सिलबाक काज ठनैत-ठनैत टरैत रहैत अछि। एक चिड़ै खिड़की लग आबि ओहि कोनक संग खेलैत अछि आ प्रभाक दृष्टि अपन दिनचर्याक कठोर नियम दिस घुमबैत अछि। बेटी नैना द्वारा बनाओल कागजमे सेहो हुनकर परिचय प्रायः काज करनिहार ‘माए’क रूपमे अछि। प्रभा सोचैत छथि जे व्यवस्था आवश्यक अछि, मुदा ओकर

प्रत्येक क्षणकेँ अनिवार्य नियम बना देब जरूरी नहि। ओ जाली आवश्यकते भरि सिलैत छथि, भोजन पाँच मिनट देरीसँ परसैत छथि आ राति एकटा साफ कटोरी सुखेबाक लेल छोड़ि दैत छथि। छोट-छोट एहि विरामसभमे हुनका अपन समयक नब अवकाश भेटैत अछि।

कथा ०१६ · एक शब्द गलत

आँखिक शल्यक्रियाक बाद पैघ बहिन सरोज वसुधाक घर रहय अबैत छथि। बचपनमे माता-पिताक मृत्यु बाद सरोजे वसुधाक पालन-पोषण आ पढ़ाइ सम्हारने छलीह। बातचीतमे सरोजक मुँहसँ 'आधार'क बदला 'उधार' शब्द निकलिते वसुधा अपन सम्बन्धकेँ ऋण, त्याग आ हिसाबक दृष्टिसँ देखय लगैत छथि। पुरान शुल्क, सरोजक चूड़ी, पैसाक चिन्ता आ नव निर्भरताक प्रसंग फेर सामने अबैत अछि। धीरे-धीरे वसुधा बुझैत छथि जे प्रेमक भीतर भय, खर्च, आदति आ सहायता सभ रहि सकैत अछि; एक शब्द ओकर पूरा अर्थ नहि धऽ सकैत। ओ बहिनक प्रति अपराध-बोधक बदला हुनकर मानवीय कठिनाइकेँ बुझैत छथि। पुरान खर्चक लेखा रहैत अछि, मुदा 'दीदी' नामसँ नव हिसाब नहि खोलल जाइत अछि।

कथा ०१७ · नव चप्पल

उर्मिला झा पुरान घिसल चप्पल फेर सिलबेबाक लेल दोकान जाइत छथि, मुदा दुकानदार बतबैत अछि जे बामा तलवा एक कात बेसी घिसल अछि। नव चप्पल पहिरलापर हुनका अपन चाल, घरक सँकर गलियारा आ बासनक टोकरी सँ बचय लेल देह मोड़बाक आदति ध्यानमे अबैत अछि। ओ बुझैत छथि जे देह केवल बाट नहि चुनैत, रास्ताक बाधासभक अनुसार स्वयंकेँ बदलैत सेहो रहैत अछि। नव चप्पलमे चलनाइ हुनका धीरे-धीरे अपन गति पर ध्यान देब सिखबैत अछि। पुरान चप्पल पाछाँक काज लेल राखल जाइत अछि। अन्तमे ओ गलियारामे अपन देह टेढ़ करबाक बदला टोकरीकेँ सरका दैत छथि। छोट परिवर्तनसँ हुनकर चालक संग अपन ठाम बदलबाक सम्भावना खुलैत अछि।

कथा ०१८ · दुपहरियाक मौन

रविवारक भोजनक बाद घरक सभ लोक सुति जाइत अछि, मुदा सौम्या केँ नींद नहि अबैत अछि। पढ़बाक प्रयास विफल भेलापर ओ घरक अलग-अलग ठाम घुमैत अन्ततः

बैसारक खाली भुइँ पर पड़ि जाइत अछि। पंखाक आवाज, भुइँक ठंढक आ दीवानक नीचाँ पड़ल नीला बटनक बीच ओ एहन मौन अनुभव करैत अछि, जाहिमे ओकरा ककरो लेल किछु करबाक वा तुरन्त उत्तर देबाक आवश्यकता नहि। ई मौन ओकरा विद्रोही नहि बनबैत; केवल अपन इच्छा बुझबाक क्षण दैत अछि। साँझ घरक काज पूर्ववत् चलैत अछि, मुदा अगिला दिन पढ़ाइ सँ पहिने आराम करबाक बात ओ स्पष्ट कहि पबैत अछि। ‘किछु नहि’ सेहो ओकरा लेल अपन एक अर्थपूर्ण समय भऽ उठैत अछि।

कथा ०१९ · टूटैत नख

विद्यालयक लिपिक विभाक दहिना हाथक तर्जनीक नखमे दरार पड़ैत अछि। लिखनाइ आ घरेलू काजमे असुविधा भेला पर ओ बामा हाथक उपयोग करय लगैत छथि। माएसँ बातचीतमे ज्ञात होइत अछि जे बचपनमे विभा बामा हाथसँ लिखैत छलीह, मुदा अभ्यास करबा कऽ हुनका दहिना हाथसँ लिखब सिखाओल गेल छल। साफ अक्षरक पुरान दक्षता आ बिसरल सहजताक बीच ओ अपन पहिचान पर विचार करैत छथि। ओ परिवारकेँ दोष नहि दैत छथि, बल्कि अभ्यास आ स्वभावक परस्पर सम्बन्ध बुझैत छथि। विद्यालयमे एक नव बच्चा बामा हाथसँ नाम लिखैत अछि आ ओकर पिता ओकरा रोकैत नहि। विभा अपन दुनू हाथक अलग-अलग काज देखैत नव दृष्टिसँ पाँजि लिखय लगैत छथि।

कथा ०२० · फल काटबाक गन्ध

अनिरुद्ध झा दोहाक श्रमिक-आवासमे साथीसभसँ अनन्नास काटब सीखैत छथि। घरमे रहैत फल प्रायः माए वा पत्नी नीलिमा काटि दैत छलीह, मुदा परदेसमे साझाक रसोइ, श्रमक थकान आ मित्रताक बीच ई छोट काज हुनकर अपन अभ्यास बनैत अछि। गाम घुरलापर अनन्नासक गन्ध हुनका पैतृक आँगन नहि, दोहाक साथी, पंखा आ साझा थाल याद करबैत अछि। हुनका बुझाइत अछि जे घर केवल जन्मस्थान नहि; संग रहनिहार लोक, श्रम, जिम्मेदारी आ पुनरावृत्त छोट काजसँ सेहो बनैत अछि। माए, नीलिमा आ ईशानक बीच फल काटैत ओ तीन नहि, चारि ढेरी बनबैत छथि। अन्तिम हिस्सा पड़ोसक बच्चाक लेल रहैत अछि, आ साझा भोजन हुनकर अनेक ठामक स्मृतिकेँ जोड़ि दैत अछि।

कथा ०२१–०४०

कथा ०२१ · पंखाक नीचे

ज्वरक कारण बिछान पर पड़ल जयनारायण मिश्र दिन भरि छतक पंखाक एक पाँख पर लागल नील दाग गनैत छथि। प्रत्येक चक्कर एक्के जेकाँ बुझाइत अछि आ दिनसभक अन्तर मेटायल लगैत अछि। मुदा पत्नी शारदा हुनका याद करबैत छथि जे प्रतिदिनक औषधि, भोजन, सहाराक आवश्यकता आ स्वास्थ्यक छोट प्रगति अलग-अलग अछि। पुत्र नचिकेताक आबबाक प्रतीक्षा सेहो पंखाक समान घुमावमे नव अर्थ जोड़ैत अछि। स्वास्थ्य सुधरला पर ओ ओसारा धरि चलैत छथि आ बाहरक हवा अनुभव करैत छथि। फेर बिछान पर लौटि पंखा देखैत छथि, मुदा आब प्रत्येक चक्कर गनबाक बाध्यता नहि रहैत अछि; पुनरावृत्तिक भीतर परिवर्तन हुनका देखाय लगैत अछि।

कथा ०२२ · अधलिखल नाम

बरखासँ बचय नगर वाचनालयमे घुसल रेणुका मिश्र सदस्यता-पत्र भरबाक समय अनायास पहिने अपन बेटी अदितिक नाम लिखय लगैत छथि। घरमे बरखों धरि बेटीसभक विद्यालय, प्रतियोगिता आ आवेदन भरबाक अभ्यास हुनकर हाथक गति बनि गेल अछि। अधलिखल ‘अदि’ काटि अपन पूरा नाम लिखैत ओ अपन व्यक्तिगत रुचि दिस फेर ध्यान दैत छथि। बेटीकेँ अपन कागज स्वयं सँभारेब सिखाओलाक बादो रेणुकाक हाथ पुरान आदति छोड़ि नहि सकल छल। ओ पुरान आवेदन आ हस्ताक्षरक भिन्न अर्थ सोचैत छथि। अन्तमे वाचनालयमे अपन नामसँ सदस्य बनि अपरिचित लेखकक पुस्तक चुनैत छथि। काटल नामवला पन्ना हुनका लेल चूकसँ बेसी जीवनक पुरान सम्बन्धक चिन्ह रहैत अछि।

कथा ०२३ · दीप मिझेबाक पहिने

पैतृक घरक बँटबाराक कागज पर खींचल रेखा आँगनमे चूनाक रेखा बनि उतरैत अछि। नरेश आ महेशक परिवार आर्थिक स्पष्टताक लेल सहमत छथि, मुदा कुसुमकेँ धीरे-धीरे बुझाइत अछि जे रेखा केवल भूमि नहि, साझा बैठकी, बच्चाक पढ़ाइ आ रातिक दीपक उजास सेहो बाँटि रहल अछि। देबालि बनेलापर दुनू भागक आवागमन सीमित होइत अछि।

कुसुम आ परिजन एक-दोसराक आवश्यकताक किछु बाट खुलल रखबाक उपाय खोजैत छथि। नीचाँक तीन ईंटक खाली भागसँ पानि बही सकैत अछि, देबालिक माथ पर तन्वीक पुस्तक राखल जा सकैत अछि। दीप मिझिते बँटल घर अन्हारमे रहैत अछि, मुदा साझा जीवनक किछु सम्बन्ध बंद नहि होइत।

कथा ०२४ · लाल धूर

नयन छत पर नील पतंग उड़ा रहल अछि, जखन नीचाँ ओकर बाबू नन्दकिशोर आ रमानन्दक बीच खेतक सीमा नापबाक विवाद बढ़ैत अछि। अमीनक डोरी आ लोकक झगड़ासँ लाल धूर उठैत अछि, जाहिमे पतंगक डोरी उलझि जाइत अछि। नयन अपन पतंग खोजय खेत उतरैत अछि; ओकरा भूमि-अधिकारक अलग-अलग दाबी पूर्णतः बुझाइत नहि। पतंगक डोरी खेतक कतेको भाग पार कऽ ओकरा फाटल नील कागज धरि पहुँचा दैत अछि। पतंग टूटल अछि, मुदा बाँसक एक काँटी आ डोरी बचल अछि। घर घुरि नयन नव पतंग बनेबाक लेल डोरीमे गाँठ दैत अछि। धूरक रंग ओहि दिनक विवादक अनिश्चित चिन्ह बनि रहैत अछि।

कथा ०२५ · तीन मिनटक जुलूस

शिवमठक सँकर गलीमे एक जुलूस मात्र तीन मिनट लेल प्रवेश करैत अछि, मुदा ओकर धक्का आ भीड़सँ दूध खसैत, सकीना चाचीक अमरूद कुचलाइत आ नलक जोड़ टूटैत अछि। रामसेवक बढ़ई, नसीम, सकीना आ झिलमिल गलीमे भऽ गेल हानिक अलग-अलग हिसाब सम्हारैत छथि। एक बालकक छूटल चप्पल आ गलीमे रहि गेल कागज घटना केँ देर धरि उपस्थित रखैत अछि। झिलमिल घड़ीक अन्तर बतबैत अछि—जुलूस तीन मिनटमे गेल, ओकर बादक काज बहुत देर चलैत रहल। साँझ नल ठीक होइत अछि, मुदा दूधक कमी, कुचल अमरूद, अनाथ चप्पल आ दाग देखबैत अछि जे अल्पकालिक राजनीतिक प्रदर्शनक असर लोकजीवनमे कतबा काल रहि सकैत अछि।

कथा ०२६ · फाटल ढोल

सोनबरसाक फागुनी उत्सवमे पुरान ढोल गणेशी पासवानक जिम्मामे अछि। बेटा मोहन ढोलक कमजोर चाम बदलबाक आग्रह करैत अछि, मुदा गणेशी पुरान बाजाक स्वर बचाबय चाहैत छथि। उत्सवमे रस्सी आ अनेक हाथक खिंचावक बीच चाम फाटि जाइत अछि। तुरन्त अलग-अलग समूह एक-दोसरापर दोष रखय लगैत अछि। गणेशी ढोल वापस लऽ जाइत छथि; बादमे फाटल चाम सिलि विद्यालयमे बिना दोषीक नामक टाँगल जाइत अछि। बच्चासभ ओकर घटना पर अलग-अलग प्रश्न करैत अछि। नव चामक ढोल फेर बजैत अछि, मुदा सिलल पुरान चाम स्मरण करबैत अछि जे फाटनाइ अचानक होइतो ओकर पाछाँ पुरान तनाब जमा रहैत अछि।

कथा ०२७ · रातिक ट्रक

बाढ़िक राति राहतसामग्री लऽ चलैत ट्रक पर बैसल प्रत्येक यात्रीक चिन्ता अलग अछि। चालक सरोज सड़कक कटानसँ डरैत अछि; धनौती काकी घरमे छूटल बकरी लेल बेचैन छथि; रंजना कागज आ स्याही बचबैत अछि; दोसर लोक परिवार, कमाइ आ राहतक हिसाब सम्हारैत अछि। ट्रकक चक्का धँसबाक भय भेला पर किछु बोरा उतारल जाइत अछि आ बुधन बाँससँ बाट टटोलैत आगाँ बढ़ैत अछि। सभक सहयोगसँ ट्रक कटान पार करैत अछि। बरहमपुरमे राहत बाँटल जाइत अछि, किछु बोरा अगिला चक्कर लेल रहि जाइत अछि। यात्रा देखबैत अछि जे एक्के आपदाक भीतर अनेक निजी भय रहैत अछि, मुदा सुरक्षित बाट सभकेँ मिलि बनाबय पड़ैत अछि।

कथा ०२८ · राख पर फूल

आगिसँ धरमपुरक रामबाबू साहक घर झरि गेल अछि। सात वर्षक पोता नीरज जळल आँगनमे अपन फूटल गमला आ माटि खोजैत रहैत अछि। तेजनाथ काकाक सहायता सँ बच्चासभ राख हटबैत, माटि उलटैत, खाद मिलबैत आ बीज रोपैत अछि। तेजनाथ स्पष्ट करैत छथि जे केवल राख पड़लासँ फूल नहि होइत; परिश्रम, उचित माटि आ समय जरूरी अछि। नव घर बनबाक संग क्यारीमे गेंदा आ अनजान लाल फूल खिलैत अछि। दादीक

पुरान बीजक ठाम उगल पौधाक पहिचान निश्चित नहि रहितो नीरज ओकरा उखाड़ैत नहि अछि। अग्निक नष्टकारी स्मृतिक बगलमे सावधानीसँ जीवन फेर पनपैत अछि।

कथा ०२९ · लोहारक हथौड़ा

लोहार जगदीशक बेटी माधवी बचपनसँ भट्ठी, धौंकनी आ हथौड़ाक काज सीखने अछि। विवाह निश्चित भेलापर वरपक्षक अपेक्षा आ सम्भावित मोटरसाइकिलक माँगक प्रसंग परिवारमे तनाव अनैत अछि। वर राघव स्वयं लोहारखानामे पहुँचि स्पष्ट करैत अछि जे ओकरा एहन माँग नहि चाही। जगदीश ओकरा गरम लोहा पकड़बाक चिमटा दऽ अपन ढंगसँ परखैत छथि। विदाइ समय ओ बेटीकेँ ओकर पकड़क अनुसार बनाओल एक छोट हथौड़ा दैत छथि। माधवी पिताक पुरान वाक्य ‘पकड़ सीधा राखब’ स्मरण कऽ नव घर जाइत अछि। ओतय खिड़कीक ढीला कील देखिते बढ़ईक प्रतीक्षा करबाक बदला स्वयं हथौड़ा उठबैत अछि। ओ अपन अर्जित कौशल संग लऽ गेल अछि।

कथा ०३० · लालटेनक शीशा

बसहिया बजारमे किराना दुकानदार सुरेश साहु आ सिलाइ करनिहार रहीम अंसारीक बीच छोट-छोट तर्क रहितो बरखोंक पड़ोसी सम्बन्ध अछि। बिजली गेल राति बजारमे दंगाक अफवाह फैलैत अछि आ लोक डरि जाइत अछि। वास्तवमे अफवाहक धक्कामे ठेला उलटैत, एक वृद्ध खसैत आ किछु क्षति होइत अछि। रहीमक लालटेन बचबैत सुरेशक हाथ जरैत अछि आ पहिनेसँ दरारवाला शीशामे रेखा बढ़ैत अछि। बिहान पता चलैत अछि जे पैघ आगि वा दंगा नहि भेल, मुदा ‘किछुओ नहि भेल’ कहबो असत्य होएत। रहीम शीशा तत्काल नहि बदलैत छथि। साँझ लालटेनक दरारसँ निकलल उजास दुनू दोकान पर पड़ैत अछि—अफवाह, भय आ पारस्परिक साहचर्यक साझा स्मृतिसहित।

कथा ०३१ · पुलक नीचे

नव पुलक उद्घाटनक दिन ऊपर पताका, मंच आ भाषण चलैत अछि, मुदा पुलक सातम खम्भाक नीचाँ विमला, बिसेसर आ हुनकर बच्चासभ तिरपालक घरमे रहैत छथि। बिसेसर स्वयं पुल बनेबाक मजूरी कएने छथि, मुदा निर्माणक कारण उजड़ल परिवारकेँ वचन देल

पुनर्वास नहि भेटल अछि। बेटी काजल परीक्षाक तैयारी करैत पुल बनेनिहार श्रमिकक नाम आ अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि। उद्घाटनक लाल फीताक टुकड़ा छोटूक खेलौनाक गाड़ीमे बन्हि जाइत अछि। बिसेसर अपन नाम ठीक सँ दर्ज करय चाहैत छथि। राति पुल पर गाड़ी चलैत अछि आ नीचाँ पुरान चौखटा लगा घरक आभास बनाओल जाइत अछि। पुल किनार जोड़ैत अछि, मुदा ओकर नीचाँक लोकक जीवनक प्रश्न अधूरा रहैत अछि।

कथा ०३२ · कागज आ लाठी

सोनबरसामे हरिनारायणक खेत आ रामविलास पासवानक विधवा सरिताकेँ देल जमीनक बीच दखल-दिहानीक विवाद भड़कैत अछि। सरकारी आदेश, पुरान पर्चा, मेड़, लाठी आ वर्तमान जोताई अलग-अलग दावा प्रस्तुत करैत अछि। पुरान विद्यालयमे सुरक्षित नक्शा आ भरि गेल पइनक चिन्ह भेटलापर पुनः नाप होइत अछि। स्पष्ट होइत अछि जे सरिताक अधिकारवाली जमीन धानक खेत नहि, दक्षिणक परती पट्टीमे पड़ैत अछि, जतय गोहालक एक भाग हटेबाक अछि। महेश गोहाल हटबैत अछि; सरिता ओकर अपमान देखबाक बदला दूर रहबाक बात कहैत छथि। अन्तमे जमीनक चिन्ह दुरुस्त होइत अछि। कागजक अधिकार जमीन पर न्यायसंगत ढंगसँ उतारबाक लेल परस्पर समझ आवश्यक सिद्ध होइत अछि।

कथा ०३३ · कटहरक गन्ध

बस-स्टैण्डक छोट झगड़ाक अफवाह सोनबरसाक बजारमे सामुदायिक भय बना दैत अछि। किराना दुकानदार महेन्द्र साहु आ पड़ोसी नसीम मियाँ सेहो सावधान भऽ जाइत छथि। राति नसीमक आँगन दिस आवाज उठिते लोक शंका करैत अछि, मुदा महेन्द्र कटहरक गन्ध सँ बुझैत छथि जे पाकल फल वा डालिक कारण हलचल भऽ सकैत अछि। लोक मिलि खसल डालि हटबैत अछि। भोरमे पता चलैत अछि जे विवादमे जोड़ल धर्म आ जातिक कथासभ निराधार छल। नसीमक परिवार बचल कटहर महेन्द्रक घर पठबैत अछि, आ युवक बिनोद दू घरक बीच सहायता करैत अछि। गन्ध ओही रहैत अछि, मुदा भय घटला पर ओकर अर्थ बदलि जाइत अछि।

कथा ०३४ • पाँच गोलीक अफवाह

पुरान डाकघरक गलीमे दू-तीन तेज आवाज सुनिते छोटू ‘पाँच गोली’ कहि दौड़ैत अछि। कियो संख्या छओ करैत अछि, कियो सात; अफवाह बजारमे भय, बन्द दोकान आ भगदड़ अनैत अछि। प्रत्यक्षदर्शी कहौनिहार लोक वास्तवमे आवाज सुनने छथि, गोली देखल नहि। पुलिस कैँ गोलीक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि भेटैत; रूपान्तरकक फ्यूज आ विवाह-घरक पटाखाक घटना सामने अबैत अछि। तइयो अफवाह अलग-अलग संख्यामे फैलैत रहैत अछि। दूधक बोतल फुटि जाएबाक चिन्ता करनिहार पवन आ औषधि किननिहार लोकक कठिनाइ एहि भयक वास्तविक परिणाम अछि। भोरमे देवाल पर लिखल अंक मेटाइत अछि, मुदा स्मृतिमे अलग-अलग ‘गोली’ बचले रहैत अछि।

कथा ०३५ • फाटल झण्डा

पुरान बजारमे शान्ति देवीक सिलाइ-दोकानमे राजनीतिक जुलूसक दिन अलग-अलग झण्डा मरम्मतिक लेल अबैत अछि। फाटल कपड़ाक संग खिंचाव, जंग लागल तार आ रंगक राजनीतिक पहचान सेहो अबैत अछि। शान्ति देवी एक पक्षक झण्डा नहि, जे कपड़ा पहिने फाटल अछि ओकर मरम्मत करैत छथि। बेटी रेखा देखैत अछि जे सुईक लेल पहिने फाटल ठाम महत्त्वपूर्ण अछि। युवकसभ पैबन्द देखाइबाक चिन्ता करैत अछि, मुदा टिकाउ सिलाइए असल काज अछि। साँझ झण्डाक शोर थमिते विद्यालयक कुरती, एप्रन आ धानक बोरा फेर महत्त्व पबैत अछि। डिब्बामे अलग-अलग रंगक उपयोगी धागा एकसंग राखल जाइत अछि।

कथा ०३६ • बूटक निशान

साइकिल मरम्मत करनिहार हरिनाथ साहक घरमे पुलिस तामाक तारक चोरीक जाँच करय पहुँचैत अछि। घरक वस्तु उलट-पुलट होइत अछि, कादोमे सिपाहीक बूटक निशान पड़ैत अछि आ तुलसी लग रोपल गेंदा टूटि जाइत अछि। बारह वर्षक बेटी रेवतीक गणितक कॉपी पर सेहो बूटक छाप पड़ैत अछि। बादमे असल चोर पकड़ाइत अछि आ हरिनाथक नाम निर्दोष सिद्ध होइत अछि, मुदा लोकक आशंका आ परिवारक अपमान तुरन्त नहि मेटाइत। रेवती कादोक छापक चारूकात पेंसिलसँ रेखा खींचि सुरक्षित रखैत अछि। ओकर प्रश्न अछि

—कियो फेर कहत जे किछुओ नहि भेल तखन? बरखा बाहरी निशान मेटा दैत अछि, मुदा कॉपीमे घटना नापल रहि जाइत अछि।

कथा ०३७ · रातिक नाव

बाढ़िक राति जगरनाथ मल्लाह अपन थाकल नाव फेर निकालैत छथि, कारण घरमे फँसल गर्भवती सुनीताकेँ तत्काल सुरक्षित ठाम पहुँचेनाइ जरूरी अछि। नावमे बैसल लोकक बीच हरिनारायणक परिवारसँ सहायता-पुकार उठैत अछि, आ नदीक तेज धारमे ककरा पहिने बचाओल जाए से कठिन निर्णय बनैत अछि। सुनीताकेँ मचान पर पहुँचेबाक बाद नाव संकेत दैत हरिनारायणक घर दिस मुड़ैत अछि आ ज्वरग्रस्त बच्चासहित परिवारकेँ बचबैत अछि। भोरमे दोसर फँसल लोकक सहायता सेहो होइत अछि। बादमे गामक लोक नाविकक निर्णय पर अलग-अलग राय दैत अछि, मुदा जगरनाथ जानैत छथि जे रातिक अन्हारमे प्रत्येक निर्णय उपलब्ध जगह, भार, धार आ समयक आधार पर बदलैत अछि।

कथा ०३८ · काँचक टुकड़ा

रातिक दुर्घटनामे हरिनाथक चश्मा-दोकानक अगिला शीशा टूटि जाइत अछि। चालकक उत्तरदायित्व, मरम्मतिक खर्च आ टूटल काँचक सुरक्षा महत्त्वपूर्ण प्रश्न बनैत अछि। आठ वर्षक बेटी मीरा पुरान मोट काँचक एक घिसायल टुकड़ामे धूप पड़िते रंगक पातर पट्टी देखैत अछि। नव शीशा लगैत अछि, क्षतिक हिसाब अलग सँ रखल जाइत अछि, मुदा सुरक्षित काँचक टुकड़ा अध्ययन लेल बचाओल जाइत अछि। मीरा कतेको दिन धूपक सही कोणक प्रतीक्षा करैत अछि। पिता बुझबैत छथि जे किछु टूटल वस्तु फेंकय पड़ैत, किछु ठीक होइत आ किछुक काज बदलैत अछि। पुरान काँच दुर्घटनाक महिमामण्डन नहि, सावधानी आ प्रकाशक अनुभवक साधन बनैत अछि।

कथा ०३९ · राख भेल खेत

रातिक आगिमे रामलोचन यादवक गेहूँक फसल राख भऽ जाइत अछि। विनाशक भोर ओ सभसँ पहिने खेतक पुरान सीमा खोजैत छथि, कारण राखक एकरूप परतमे मेड़ आ नालीक चिन्ह मेटा गेल अछि। पड़ोसी किसानसभक संग चिन्ह स्थापित कऽ सरकारी जाँच

कराओल जाइत अछि। नापमे जतेक चूक भेटैत अछि, रामलोचन ओकरा तुरन्त ठीक करैत छथि। क्षतिपूर्तिक आरम्भिक लेखामे आठ कट्ठा घटि जाए पर ओ फेर संशोधन करबबैत छथि। क्षतिपूर्ति पूरा हानि नहि भरैत, मुदा नब बीज आ खाद जुटेबामे सहायता करैत अछि। राख माटिमे पलटि नब बुआइ शुरू होइत अछि; सीमा जोगेनाइ पुनर्निर्माणक आधार बनैत अछि।

कथा ०४० · बन्दूक बिना पहरा

सहकारी बीज-भंडारक बूढ़ पहरेदार जगत साहु लग बन्दूक नहि, पित्तरिक सीटी, चाबी आ नस्ती बुझबाक अभ्यास अछि। राति किछु लोक पुरान कागज देखबैत बीजक बोरा बाहर निकालय चाहैत अछि। जगत क्रमांकक असंगति पकड़ि लैत छथि आ असामान्य ढंगसँ सीटी बजा पड़ोसक पहरेदारकेँ बजा लैत छथि। अगिला जाँचमे अनियमितता सामने अबैत अछि। समिति हुनका बन्दूक देबाक बात करैत अछि, मुदा ओ बल्ब, नाली आ दू अधिकृत हस्ताक्षरक नियम माँगैत छथि। जगतक पहरा भय नकारबाक नहि, सामुदायिक सतर्कता आ जाँचक आधार पर उत्तरदायित्व निभेबाक उदाहरण अछि। राति सीटीक प्रत्युत्तर हुनकर सुरक्षा-व्यवस्थाक वास्तविक भरोसा बनैत अछि।

कथा ०४१–०६०

कथा ०४१ · धुआँक बीच गीत

गामक पुरान धान-गोदाममे आगि लगला पर धुआँक बीच लोक बाल्टी लऽ अव्यवस्थित दौड़य लगैत अछि। सबिता देवी रोपनीक परिचित धुन गुनगुना कऽ बाल्टीक पाँतिक हाथसभकेँ एक चालमे लबैत छथि। गोदाममे फँसल छोटन केँ बचाबैत समय सेहो ओही धुनसँ ओकरा बाहरक लोकक उपस्थिति सुनबैत छथि। दिनेश आ जावेद खिड़कीक बाँस काटि छोटन केँ निकालैत छथि। भोरमे हानिक हिसाब, बीज बचेनाइ आ आगिक कारणक जाँच होइत अछि। सबिता स्पष्ट करैत छथि जे गीत आगि नहि बुझौलक, पानि आ लोकक श्रम बुझौलक; धुन केवल सहयोगक गति बनौलक। किछु दिन बाद खेतमे ओही धुन पुनः अपन सामान्य शब्दक संग सुनाइत अछि।

कथा ०४२ · एक मिनटक बिजली

जिलाक पुरान अस्पतालमे मुसलाधार बरखाक बीच बिजली गेलापर रोगी आ कर्मचारी अन्हारमे परेशान होइत छथि। सेविका मालती हाथक दीप आ नियमसँ व्यवस्था सम्हारैत छथि। जनित्र केवल एक मिनट लेल चलाओल जाइत अछि, जाहिमे सभ अपन खाट आ प्रियजन देखबैत छथि। फेर अन्हार होइतहि एक रोगीक खाट खाली देखाइत अछि। खोजला पर रामचरित मण्डल पानि पीबय निकलला समय खसि पड़ल भेटैत छथि। हुनका सुरक्षित लौटेबाक बाद मालती नियमित नाम पुकारि रोगी गनबाक पद्धति लागू करैत छथि। एक मिनटक उजास केवल राहत नहि, अन्हारमे छिपल सुरक्षा-कमीक प्रमाण बनैत अछि।

कथा ०४३ · रक्त नहि, सिंदूर

मन्दिर-पथक हाटमे साइकिल बाँसक रैकसँ टकराएलापर मालती देवीक सिंदूरक पुड़िया फाटि पटरी लाल कऽ दैत अछि। बेटा रतनक कुहिन्नीमे मामूली खरोंच सेहो लगैत अछि। भीड़ लाल रंग केँ रक्त बुझि मारपीटक अफवाह फैलाबय लगैत अछि। घटनाकेँ देखनिहार आ केवल सुननिहार लोक अलग-अलग बात कहैत छथि। अन्ततः स्पष्ट होइत अछि जे रक्त दू बूँद मात्र छल, अधिकांश लालिमा सिंदूरक छल। साइकिलवाला क्षमा माँगैत अछि आ रैक ठीक करबाक बात होइत अछि। अगिला दिनो अफवाह सुनाइ पड़ला पर रतन ठोस तथ्यसँ सुधार करैत अछि। छोट दुर्घटनाक अर्थ शब्द बदललासँ कतबा पैघ भऽ सकैत अछि, से कथा देखबैत अछि।

कथा ०४४ · हमर महान व्यापार

पचरुखीक बुधहटियामे कथावाचक अपन ‘महान व्यापार’ आरम्भ करैत छथि—ग्राहकक गठरी नम्बर देबैत एक रुपैआमे सुरक्षित रखनाइ। पत्नी सरोजा पहिनेसँ हिसाबक कमजोरी देखैत छथि, मुदा कथावाचक अपन योजनाकेँ नवाचार मानैत छथि। बरखामे पत्तर भीजैत, नम्बर मेटाइत, गठरी गड़बड़ाइत आ एक सुराही हराइत अछि। क्षतिपूर्ति आ तिरपालक खर्चक बाद लाभक दाबी हास्यास्पद बनैत अछि। व्यापार बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा बजारक लोक अपन गठरी पर अलग चिन्ह लगाबय लगैत अछि। कथावाचक घाटाकेँ

विचारक विजय घोषित करैत छथि; सरोजाक ठोस हिसाब आ हुनकर महानताक भाषणक अन्तर सँ व्यंग्य उत्पन्न होइत अछि।

कथा ०४५ · तीन बेरक बराती

अमहीमे चचेरी बहिनक विवाहमे जाए निकलल कथावाचक लाल शामियाना, पोखरि आ ढोल कैँ दिशा-चिन्ह मानि बारम्बार बेठीक बराती दलमे पहुँचि जाइत छथि। बेलाही आ सोनबरसाक विवाहमे अपरिचित लोक हुनका अपन सम्बन्धी बुझि स्वागत करैत अछि; ओ परिस्थितिक संग परिचय बदलैत, भोजन आ बाजाक प्रसंगमे उलझैत छथि। अन्ततः ओ सीधे गाम आ कन्याक नाम पूछबाक महत्त्व बुझैत छथि। सही विवाहमे पहुँचला पर पहिल दू दलक परिचित लोक सेहो उपस्थित भेटैत छथि आ सभ हुनकर कथा सुनि हँसैत अछि। कथावाचक कहैत छथि जे विवाहक एक्के रंग-रूप आ सामान्य नामक भरोसापर मार्ग नहि चुनबाक चाही; अपना सम्बन्धक स्पष्ट पहचान आवश्यक अछि।

कथा ०४६ · उधारक दार्शनिक

गोपाल साह दोकान पर ‘उधार बन्द’क पट्टी टाँगि उधार-विरोधी एक सय सिद्धान्त लिखबैत छथि। मुदा विपन्न ग्राहककैँ सामान दैत ओ उधारकैँ ‘सामाजिक परिस्थिति’ कहि अपन पाँजिमे लिखैत रहैत छथि। बेटी कुसुम हुनकर वाक्पटुता आ वास्तविक बकायाक बीच विरोध देखबैत अछि। थोक-विक्रेताक भुगतान अटकला पर गोपाल साह ग्राहकसभक हिसाब साफ करैत छथि आ जतेक सम्भव उधार वसूल करैत छथि। अन्तिम सिद्धान्त उधार छिपेबाक बदला स्पष्ट लिखबाक होइत अछि। पट्टी बदलि ‘उधारक हिसाब साफ राखू’ बनैत अछि। तथापि गोपाल साह ज्ञानक दाम फेर बादमे लेबाक बात कहैत छथि—हुनकर दर्शन अपन हास्य सहित जीवित रहैत अछि।

कथा ०४७ · पंचायतक विशेषज्ञ

बरदाहामे विद्यालयक सामने पानि जमबाक समस्या दूर करबाक लेल पंचायत नाली बनेबाक बैठक करैत अछि। बटेसर काका बिना मापजोख हर विषयक विशेषज्ञ बनि सलाह दैत छथि। मिस्त्री रघुनन्दन वास्तविक ढाल नापैत अछि; एही बीच बटेसरक एक पुरान

नलीक स्मृति उपयोगी सिद्ध होइत अछि। बादमे विद्यालयक रसोइया मालती देवी राख फेकबाक पुरान गड्ढाक स्थान बतबैत छथि, जाहिसँ नालीक सुरक्षित मोड़ निकलैत अछि। निर्माण सफल होइत अछि, मुदा बटेसर अपन पोथीमे सभकेँ 'विशेषज्ञता'क प्रमाण बनबैत छथि। अगिला पंचायतमे बकरीक टीकाक विषय पर सेहो ओ निष्पक्ष विशेषज्ञ बनि उपस्थित भऽ जाइत छथि। कथा अनुभवक वास्तविक उपयोग आ सर्वज्ञताक दम्भक अन्तर पर व्यंग्य करैत अछि।

कथा ०४८ · हमर अमीर मामा

परिवारक दृष्टिमे नन्दकिशोर मामा बहुत अमीर छथि, कारण ओ पैघ बात करैत, उदार दिस पड़ैत आ मोट हिसाब-पाँजि रखैत छथि। नानीक चुबैत छप्परक मरम्मतिक समय हुनकर वास्तविक पूँजी आ देनदारीक भेद खुलैत अछि। कथावाचक बुझैत छथि जे मोट पाँजि सदिखन समृद्धिक नहि, अधूरा हिसाबक चिह्न सेहो होइत अछि। तथापि मामा मरम्मतिक काजमे बचत, सामग्रीक पुनः उपयोग आ व्यवहारिक समझ देखबैत छथि। छप्पर बनेलाक बाद ओ अपन निजी देनदारी परिवारक सामने पढ़ैत छथि आ छोट-छोट भुगतान शुरू करैत छथि। परिवार 'अमीर मामा' कहनाइ नहि छोड़ैत, मुदा आब धनक संग विश्वास, ऋण आ सम्बन्धक विडम्बना सेहो बुझैत अछि।

कथा ०४९ · हरायल बकरीक बयान

बुधनी काकीक चिन्हार बकरी धौरी खूँटासँ हराइतहि गामक लोक चोरी, सियार आ व्यापारीक षड्यन्त्रक अलग-अलग सिद्धान्त देबय लगैत अछि। बालिका मालती जमीन पर झरल चोकरक कण देखि रास्ताक संकेत पकड़ैत अछि। ओहि चिन्हक अनुसरण कऽ पता चलैत अछि जे ढीला खूँटा घिसटबैत बकरी पुरान तेलघरमे जा फँसल अछि। बकरी सुरक्षित भेटलापर सेहो सब 'विशेषज्ञ' अपन अनुमानकेँ सही सिद्ध करय चाहैत छथि। पंचायतक लिखल बयानमे अन्ततः केवल प्रत्यक्ष भौतिक चिन्ह आ पशुक भेटबाक बात दर्ज होइत अछि। मालतीक प्रश्न—'चोकर कतय झरल अछि?'—बिना प्रमाणक निश्चित दावीक विरुद्ध गामक नव कसौटी बनैत अछि।

कथा ०५० · मोबाइल गुरु

सेवानिवृत्त डाकिया रघुनाथ बाबू गामक वृद्ध लोककेँ मोबाइलक सुरक्षित प्रयोग सिखबैत छथि। हुनकर नियम अछि—पहिने पढ़ू, फेर दबाउ; अनचिन्हार सन्देश आ गुप्त अंकक प्रति सावधान रहू। एक दिन स्वयं गुरु अपन यन्त्रक कूट-अंक बिसरि जाइत छथि। विद्यार्थीसभ हुनका उपहास करबाक बदला पुरान नियम याद करबैत छथि। रघुनाथक डाक-बस्तामे सुरक्षित पुनर्प्रवेशक विवरण भेटैत अछि, जाहिसँ अधिकृत सहायता लऽ यन्त्र फेर खोलल जाइत अछि। अगिला पाठमे गुरु बिसरब स्वीकार करबाक महत्त्व सिखबैत छथि। रसीदा खाला हुनकेँ गुप्त अंक नहि देखेबाक नियम स्मरण करबैत छथि। गुरु आ विद्यार्थी दुनू दिस सीखबाक सम्बन्ध बनैत अछि।

कथा ०५१ · विवाहक बजट

कुमुदक विवाहमे अनावश्यक खर्च रोकबाक लेल पिता नवलकिशोर झा सत्तर हजार रुपैयाक सीमा तय करैत छथि। भोजनक संख्या, मड़बा, साज-सजावट आ मिठाइक मद पर मामूली निर्णय लेल सेहो बेराबेरी पारिवारिक बैठक होइत अछि। मामा गोविन्द खर्च-पाँजि सम्हारैत छथि, फूलो काकी परम्पराक पक्ष रखैत छथि आ रसोइया नथुनी महाराज लोकक वास्तविक संख्या अनुसार भोजन बनबयक सलाह दैत छथि। अन्ततः भोजमे बर्बादी कम होइत अछि आ विवाह निर्धारित सीमाक भीतर सम्पन्न होइत अछि। मुदा हिसाब जोड़बाक अन्तिम बेर गोविन्द बैठकसभक चाह, समोसा, जलेबी आ पुआ-परीक्षणक खर्च सामने अनैत छथि। नवविवाहिता कुमुद पाँजिमे लिखि दैत अछि जे अगिला विवाहक बैठक भोजन कएलाक बाद राखल जाए। खर्च घटेबाक चर्चा स्वयं एकटा अतिरिक्त भोज बनि गेल छल।

कथा ०५२ · महान कविक पड़ोसी

कथावाचक अपन पड़ोसी बटुकनाथ झाक लम्बा कविता-पाठसँ त्रस्त छथि। बटुकनाथ अपना कैँ महान कवि मानैत छथि आ दू पाँति सुनएबाक बहानासँ घण्टों पाठ करैत छथि। कथावाचक हुनका सँ बचबाक लेल गोहाल चलि जाइत छथि, मुदा कवि ओतहु पहुँचि जाइत छथि। अन्ततः श्रोता हुनकर पाठ सुनैत मटर छीलब, अरहरिमे कंकड़ चुनब आ आन घरेलू

काज करब शुरू करैत छथि। पुस्तकालयक साहित्य-साँझमे कथावाचक कविकेँ दू पन्नामे सीमित रहबाक स्पष्ट अनुरोध करैत छथि। बटुकनाथ छोट, रम्य कविता सुनबैत छथि आ श्रोतासँ प्रशंसा पबैत छथि। कथावाचक अनुभव करैत छथि जे लम्बा पाठसँ बचबाक चेष्टाक बावजूद कविक कतेको पाँति हुनकर स्मृतिमे बसि गेल अछि। व्यंग्य रचनाकारक अहंकारक संग श्रवण आ साहित्यक अप्रत्याशित सम्बन्ध देखबैत अछि।

कथा ०५३ · किरायाक विद्वान

सेवानिवृत्त लिपिक गोपीकान्त झा अपना केँ हर विषयक विशेषज्ञ बुझैत छथि। हुनकर घरमे रहि स्थानीय विवाहगीत आ घरेलू श्रम पर शोध करैत नीलाम्बर झा केँ ओ बेराबेरी सलाह दैत छथि आ शोधमे अपन नाम जोड़बाक संकेत करैत छथि। हुनकर अनेक दाबी हास्यास्पद अछि, मुदा एक दिन माएक पुरान स्मृतिसँ सुनाओल ‘सातम खूँटा’ सम्बन्धी बात नीलाम्बरकेँ महत्त्वपूर्ण शोध-संकेत दैत अछि। नीलाम्बर अन्य वृद्धासभसँ ओकर स्वतंत्र पुष्टि करैत छथि आ मौखिक परीक्षामे प्रमाणसहित ओकर विवेचन करैत छथि। उपाधिक कागज पर शोधार्थीक नाम मात्र रहैत अछि, मुदा आभार-खण्डमे गोपीकान्तक सहयोग दर्ज होइत अछि। ओ एहि पाँतिक प्रति चौखटामे सजबैत छथि आ नव किरायादारसभकेँ निःशुल्क शोध-सलाह देबाक घोषणा करैत छथि; कोठरीक किराया मुदा यथावत् रहैत अछि।

कथा ०५४ · गामक मौसम विज्ञानी

सोनबरसाक हरिनारायण काका चींटी, बगुला, पात आ पवन देखि मौसम बतबैत छथि, मुदा हुनकर भविष्यवाणी बहुधा गलत निकलैत अछि। तइयो गामक लोक हुनकासँ रोज मौसम पूछैत अछि। अनिरुद्ध आ मालती अनुमान, वास्तविक मौसम आ ओकर आधार पर कएल गेल काजक अलग-अलग हिसाब राखब शुरू करैत छथि। पता चलैत अछि जे काकाक गलत अनुमान सुनियोकऽ लोक अन्नक बोरा सुरक्षित करैत, नाली साफ करैत आ घरक छाजन दुरुस्त रखैत अछि। एक बेर काका बरखा नहि हेबाक घोषणा करैत छथि; सावधान गाम समय रहिते तैयारी कऽ लैत अछि, आ रातिमे सचमुच बरखा होइत अछि। काकाक ‘मौसम विज्ञान’ विश्वसनीय भविष्यवाणी नहि, मुदा सतर्कताक प्रेरक बनि जाइत अछि। मालतीक कहब अछि जे काका उत्तर नहि, प्रश्न उपस्थित करैत छथि।

कथा ०५५ · मुफ्त सलाह

बेलाही चौक पर महेश्वर झा मुफ्त सलाह देबाक लेल प्रसिद्ध छथि। ओ सभ विवादमे तीन प्रश्न रखैत छथि—तथ्य की अछि, अटकल की अछि आ तत्काल सभसँ उपयोगी छोट काज की भऽ सकैत अछि। मुदा अपन घरक रसोइक देवाल झुकला पर ओ एहि नियमकेँ बिसरि पड़ोसिन कलावती पर पानिक दोष मढ़ैत छथि। गामक लोक सलाहक ढेर लगा दैत अछि, जखन कि पप्पू मिस्त्री जाँचि देखैत छथि जे बन्द नाली, नीमक जड़ि आ गलत ढारक कारण पानि देवालक जड़मे जमा भऽ रहल अछि। उचित निकास बनलापर देवाल बचि जाइत अछि आ कलावतीक कोनो दोष नहि निकलैत अछि। महेश्वर अपन पट्टी पर जोड़ैत छथि जे अपन समस्या छिपौने तथ्य बदलैत नहि अछि। सलाहक सच्चा मूल्य ओकरा अपना जीवनमे आजमौलासँ स्पष्ट होइत अछि।

कथा ०५६ · चुनावक चाय

चुनावक समय चाह-दोकानदार कैलाश साहु सभ राजनीतिक दलक कार्यकर्ताकेँ चाह पियबैत छथि। अलग-अलग दलक लोक हुनकर सत्कारकेँ अपन समर्थनक प्रमाण मानि लैत अछि, मुदा कैलाश अपन मत ककरा देताह से कहबासँ मना करैत छथि। ओ प्रत्येक दलक नाम पर पियाओल गेल चाहक कप आ बकाया रकमक सुव्यवस्थित हिसाब रखैत छथि। मतदान समाप्त भऽ परिणाम घोषित भेलापर जीतनिहार आ हारनिहार दुनू गुट अपन-अपन दाबी करैत दोकान पहुँचैत अछि। कैलाश मतक रहस्य खोलबाक बदला सभक बकाया रकम सुनबैत छथि। कार्यकर्ता आपसक राजनीतिक विवाद छोड़ि हिसाब चुकबैत छथि। कथामे मतदानक निजी अधिकार आ व्यापारक सार्वजनिक लेखा बीच स्पष्ट भेदक माध्यमसँ चुनावी अवसरवाद पर व्यंग्य अछि।

कथा ०५७ · माइकवाला काका

विद्यालयक पचासम वर्षगाँठमे भुवनेश्वर काका माइक्रोफोन पर लम्बा-लम्बा घोषणा करबाक आदत छोड़ि नहि सकैत छथि। हुनकर भाषणसँ आवश्यक सूचना ओझरा जाइत अछि। प्रधानाध्यापिका निर्मला देवी घोषणा बारह शब्दक भीतर राखबाक नियम बनबैत

छथि। आरम्भमे काका एहि सीमासँ असहज होइत छथि, मुदा मंचक आवश्यक सूचना, औषधि लऽ अबैत नानी आ पोता सोनूकेँ बजेनाइ जेहन प्रसंगमे थोड़ शब्दक प्रभाव अनुभव करैत छथि। कार्यक्रमक बीच माइक्रोफोनक बिजली समाप्त भेला पर विद्यार्थी बिना यन्त्रक सहारे नाटक प्रस्तुत करैत अछि। काका बुझैत छथि जे सभ ठाम आवाज बढ़ेनाइ आवश्यक नहि; ककरा की बात कहब जरूरी अछि, से बुझब अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। अन्ततः हुनकर घोषणामे प्रदर्शनक बदला स्पष्टता अबैत अछि।

कथा ०५८ · एक किलो प्रतिष्ठा

हाटमे माधव साहुक पीयर एक किलोवला बाट हुनकर दोकानक प्रतिष्ठाक प्रतीक अछि। ओ बाटक चमक आ पुरान ख्यातिक आधार पर ओकर शुद्धता पर गर्व करैत छथि। नातिन गौरीक जिज्ञासा आ प्रतिद्वन्द्वी नथुनीक टिप्पणीक बाद आधिकारिक तौल-जाँचमे पता चलैत अछि जे बाट एक किलोसँ बारह ग्राम बेसी अछि। माधव आरम्भमे एहि अन्तरकेँ मामूली मानैत छथि, मुदा ग्राहकक लेल प्रत्येक माप सही रखबाक महत्त्व स्वीकार करैत छथि। ओ पुरान बाट हटाकऽ प्रमाणित, ठीक एक किलोवला कारी बाट उपयोग करैत छथि। पीयर बाटकेँ दोकानमे स्मृतिक वस्तु बना राखैत छथि। बाहरी चमक आ प्रतिष्ठाक तुलनामे वास्तविक ईमानदारीक माप तौलमे भेटैत अछि, एही पर कथा व्यंग्य करैत अछि।

कथा ०५९ · नाम भूलनिहार नेता नहि, शिक्षक

पचासी वर्षक सेवानिवृत्त शिक्षक शिवनारायण झा केँ पुरान विद्यार्थीक नाम प्रायः बिसरि जाइत अछि, मुदा हुनका छात्रसभक स्वभाव, घटना आ कक्षाक दृश्य खूब मोन अछि। युवा शिक्षिका नीलम पुरान, जलसँ क्षतिग्रस्त विद्यालय-पञ्जी पुनः तैयार करबाक क्रममे हुनकर स्मृतिक सहायता लैत छथि। शिक्षकक बताओल संकेत उपयोगी सिद्ध होइत अछि, मुदा अनुमानकेँ प्रमाण मानि लिखबाक जोखिम सेहो सामने अबैत अछि। नीलम निर्णय करैत छथि जे प्रत्येक नाम कमसँ कम दूटा स्वतंत्र अभिलेखसँ मिललाक बादे अन्तिम पञ्जीमे जाएत। बाइस मामलामे अठारहक पुष्टि होइत अछि आ चारि नाम अनिश्चित छोड़ल जाइत अछि। अलग पोथीमे शिक्षकक स्मृति-संकेत सुरक्षित राखल जाइत अछि, स्पष्ट लिखल रहैत

अछि जे संकेत प्रमाण नहि। स्नेहपूर्ण स्मृति आ ऐतिहासिक तथ्यक अन्तर कथाक केन्द्रीय विषय अछि।

कथा ०६० · चन्दा विशेषज्ञ

गंगाराम साह अपन जेबिसँ चन्दा नहि देबाक कारण गाममे कंजूस कहल जाइत छथि, मुदा आन लोकसँ सहयोग जुटेबामे हुनकर असाधारण कौशल अछि। पुस्तकालयक चुबैत छप्परक मरम्मति लेल हुनका चन्दा-संग्रहक नेतृत्व भेटैत अछि। ओ ककरोसँ नगद, ककरोसँ ईंट, बाँस, श्रम अथवा गाड़ीक व्यवस्था करबैत छथि, आ सामग्रीक दाममे मोलभाव कऽ खर्च घटबैत छथि। हिसाब सार्वजनिक राखल जाइत अछि आ मरम्मति पूरा भेलापर पुस्तकसभ सुरक्षित भऽ जाइत अछि। अन्तिम लेखामे गंगारामक व्यक्तिगत आर्थिक योगदान शून्य देखाइत अछि, मुदा सभ बुझैत अछि जे हुनकर समय, परिश्रम आ व्यवस्थापन बिना काज सम्भव नहि छल। गामक लोक फेर हुनका नव सामाजिक काजक लेल चन्दा जुटेबाक जिम्मेदारी दैत अछि।

कथा ०६१–०८०

कथा ०६१ · मुफ्तक फोटो

बेलही पंचायतक परिवार-मिलनमे निःशुल्क पारिवारिक छायाचित्रक घोषणा सुनि कथावाचक अपन पत्नी निर्मला आ बच्चा गौरी-नवलक संग सजि-धजि पहुँचैत छथि। फोटो लेल पहिल क्रमांक भेटलापर आयोजक हुनका नाम-पर्ची व्यवस्थित करबाक जिम्मेदारी दैत छथि। बरखा, बिगड़ल क्रमांक आ लिफाफाक गड़बड़ी सम्हारैत पूरा परिवार दिनभरि दोसरक फोटो खिंचबय आ बाँटबयमे लागल रहैत अछि। अन्तमे बुझाइत अछि जे अपन औपचारिक पारिवारिक छायाचित्र खिंचबेनाइए बिसरि गेलाह। छायाचित्रकारक यन्त्रमे एकटा सहज क्षणक छवि सुरक्षित भेटैत अछि, जाहिमे चारू सदस्य काज सम्हारैत एक संग देखाइत छथि। निर्मला ओहि छविकेँ घरमे सजा दैत छथि। कपड़ा देखेबाक उद्देश्यसँ आएल परिवारक छायाचित्रमे आखिरकार साझा श्रम आ सहभागिता देखाइत अछि।

कथा ०६२ · समय पर नहि, बात पर

बेलही गाममे दोकान, विद्यालय, पंचायत आ लोकक जेब-घड़ी सभ अलग-अलग समय बतबैत अछि। सभ अपन घड़ीकेँ सही मानैत अछि आ सामूहिक काजमे देरि होइत रहैत अछि। विधवा फूलो देवीक खेतमे धानक बिचड़ा रोपबाक समय निकलि रहल अछि, मुदा लोक अपन-अपन समयक हिसाब सँ पहुँचैत आ जाए चाहैत अछि। ज्योति प्रस्ताव करैत छथि जे घंटाक आधार पर नहि, खेतक पाँति बाँटि जिम्मेदारी निश्चित कएल जाए। जवान, वृद्ध आ उपलब्ध श्रमिकक सामर्थ्य अनुसार पाँति बँटैत अछि; एक-दोसरक काजमे हाथ बँटबैत रोपनी पूरा होइत अछि। किछु दिन बाद खेतक हरियरीमे ककर रोपल पाँति छल से भेद मेटा जाइत अछि। गामक घड़ीसभ अबहो अलग समय देखबैत अछि, मुदा लोक बुझि जाइत अछि जे सामूहिक काज स्पष्ट सहमति आ उत्तरदायित्व सँ चलैत अछि।

कथा ०६३ · हम दोषी कतय छी?

भोला झा केँ गाममे पौध-वितरणक जिम्मेदारी भेटैत अछि। कृषि-सेविका ज्योति देवी पूरा नाम, घरक क्रमांक आ उचित माटिक जानकारी लिखबाक सलाह दैत छथि, मुदा भोला अपन स्मृतिक भरोसे छोट-छोट अक्षरक संकेत बना दैत छथि। बरखामे ओ संकेत अस्पष्ट भऽ जाइत अछि आ आम, अमरूद, नीम आ आन पौध गलत परिवार वा अनुपयुक्त ठाम पहुँचि जाइत अछि। गामक लोक परस्पर चिन्हि, पौधक अवस्था जाँचि आ आवश्यक ठाम फेर रोपि समस्या सुधारैत अछि। भोला दोष अपन कहबासँ बचैत छथि, आ गलत वितरणकेँ लाभकारी परिणामक रूपमे देखेबाक चेष्टा करैत छथि। अगिला वर्ष समिति स्पष्ट पट्टी, घरक क्रमांक आ रंगीन सूतक नियम अपनबैत अछि। भोला अपन पुरान भूलसँ निकलल एहि सुझावसभकेँ ‘अनुभव’ कहैत छथि, मुदा दोष ककर छल, ताहि प्रश्नसँ फेर बाँचि जाइत छथि।

कथा ०६४ · धर्मपरायण चोर

धर्मपरायण कहल जाएवला देवकीनन्दन झा मन्दिरक काज लेल पड़ोसीक बाँस, लोटा, हथौड़ी आ आन वस्तु बिना पूछने लऽ जाइत छथि। ओ एहि आचरणकेँ चोरी नहि, ‘अस्थायी

पुनर्वितरण' कहैत छथि। एक दिन फूलमति काकीक घरक जरूरी मरम्मति लेल हथौड़ी नहि भेटलासँ अनर्थक स्थिति उत्पन्न होइत अछि। मन्दिर समितिक जाँचमे सत्ताइस वस्तुक मालिक आ अनुमति अस्पष्ट भेटैत अछि। देवकीनन्दनक अपन प्रिय छाताक प्रसंग हुनका दोसरक वस्तु पर अधिकारक अर्थ बुझबैत अछि। समिति मालिकक पूर्वस्वीकृति, वापसीक तिथि आ क्षतिपूर्तिक लिखित हिसाब अनिवार्य करैत अछि। देवकीनन्दन पुरान वस्तु सभ घुरबैत छथि आ नव काज लेल पहिने अनुमति माँगैत छथि। अन्ततः ओ स्वीकार करैत छथि जे धर्मक काजमे सेहो उधार उधारे होइत अछि, बिना अनुमति लेनाइ नहि।

कथा ०६५ · सदाचार समिति

बरही टोलाक सदाचार समिति सार्वजनिक विवाद निपटेबाक लेल नील शिकायत-पर्ची आ क्रमांकित पाँजि बनबैत अछि। आरम्भमे सभ व्यवस्था प्रशंसनीय लगैत अछि, मुदा समितिक सदस्य वा हुनकर निकट परिवारसँ जुड़ल शिकायतसभ मुख्य पाँजिमे नहि चढ़ि अलग धूसर लिफाफामे राखल जाइत अछि। वार्षिक खुलल बैठकमे निरंजनक हिसाबसँ चौरासी पर्चीमे केवल बावन निर्णय सामने अबैत अछि। फूलमति काकी अपन छूटल पर्चीक प्रमाण देखबैत छथि, तखन बत्तीस दबाओल शिकायत भेटैत अछि। सदस्यसभ स्वीकार करैत छथि जे अपन लोक लेल अलग नियम रखनाइ सदाचार नहि। सभ पर्ची मुख्य पाँजिमे चढ़ि निष्पक्ष सुनवाई होइत अछि। अगिला बेर सचिवक बकरी द्वारा सार्वजनिक फूल खेबाक शिकायत सेहो दर्ज होइत अछि, आ सचिव स्वयं क्षतिपूर्ति तथा सुधारक निर्णय लिखैत छथि।

कथा ०६६ · पवित्र पार्किंग

पिपरा शिवमन्दिरक उत्सवमे समिति सचिव रघुनन्दन झा चून सँ वाहन राखबाक चौखटा बनबा ओकरा 'पवित्र पार्किंग' नाम दैत छथि। ओ श्रद्धालुकेँ संयम आ दोसरक अधिकारक उपदेश दैत छथि। मुदा दानदाता महेन्द्र साह, आन प्रतिष्ठित आगन्तुक आ स्वयं नियम बनौनिहार लोक सुविधाक लेल रेखा तोड़ैत छथि; वृद्ध आ ठेलावालाक पैदल बाट बन्द भऽ जाइत अछि। प्रवचनक बाद गाड़ी निकलबाक समय अव्यवस्था स्पष्ट भऽ जाइत अछि। निरंजन आ बिन्दा काकीक प्रश्न पर समिति सबकेँ समान नियम मानय लेल बाध्य करैत

अछि। दान देबाक प्रतिष्ठा सड़कक उपयोग पर विशेष अधिकार नहि दैत अछि। रघुनन्दन 'पवित्र' शब्द हटाकऽ स्पष्ट तख्ती लगबैत छथि—गाड़ी राखबाक ठाम, पैदल बाट खाली राखू। अगिला दिन ओ अपन मोटरसाइकिल सभसँ पाछाँ, निर्धारित चौखटामे रखैत छथि।

कथा ०६७ · दानक फोटो

बेलाहीक दक्षिण टोलामे महेन्द्र साह अपन पिताक स्मृतिमे चाँपाकल लगबबैत छथि। उद्घाटनक दिन हुनकर प्राथमिक चिन्ता नाम-पट्टी, अपन साफ कुरता आ सुन्दर छायाचित्र अछि, जखन कि चाँपाकलक चारूकात कादो जमा होइत अछि आ पानिक निकास नहि बनल अछि। फोटो खिंचैत समय छोटू पएर खसका दैत अछि आ बुच्ची देवी ओकरा बचबैत छथि; महेन्द्रक कुरता पर छींट पड़ैत अछि। एहि घटनासँ हुनका वास्तविक समस्याक बोध होइत अछि। मिस्त्री सँ नाली बनबा जलनिकास ठीक कराओल जाइत अछि। बादमे छायाचित्रकारक ओ फोटो चुनल जाइत अछि जाहिमे लोक निश्चिन्त भऽ पानि भरि रहल अछि आ दाता किनारमे देखाइत छथि। महेन्द्र बुझैत छथि जे दानक मुख्य अर्थ अपन नाम देखबेनाइ नहि, सार्वजनिक सुविधाकेँ उपयोगी बनायब अछि।

कथा ०६८ · महान त्यागी

साझा बीआ-भँड़ारक चाभी राखनिहार जगदीश चौधरी अपन प्रत्येक छोट सेवाकेँ महान त्याग कहि बहीमे दर्ज करैत छथि। गाममे धानक बीआक अभाव भेला पर साझा भँड़ारक सामग्री पर्याप्त नहि पड़ैत अछि। जगदीशक निजी कोठरीमे पाँच वर्षसँ सुरक्षित कनकजीरक बीआ अछि, मुदा ओकरा बँटबाक विचारसँ ओ असहज छथि। पत्नी विमला, मंजरी देवी आ गामक लोक हुनका पर दबाव नहि दैत छथि, केवल आवश्यकता आ उपलब्ध विकल्पक चर्चा करैत छथि। अन्ततः जगदीश स्वेच्छासँ अठारह किलो तीन सय पचास ग्राम बीआ नौ परिवारमे बाँटि दैत छथि। कटनीक बाद परिवारसभ साझा भँड़ारमे अपन सामर्थ्य अनुसार बीआ घुरबैत अछि। जगदीश पहिल बेर अपन 'त्याग'क भाषण नहि लिखि केवल बीआक परिमाण दर्ज करैत छथि। सेवाक महत्त्व बड़बोली नहि, वास्तविक परिणाममे अछि।

कथा ०६९ · सत्यवादी व्यापारी

मधुबनीक वस्त्र-व्यापारी बंशीधर साह दोकान पर लिखबौने छथि जे वस्तु जेहन अछि, तेहने कहल जाएत। ओ ग्राहकसँ सीधे झूठ नहि बजैत छथि, मुदा हाथ सँ बनल चित्र, छापल रेखा पर हाथक रंग आ पूर्ण यांत्रिक छापक बीचक भेद तखने बतबैत छथि जखन ग्राहक ठीक प्रश्न पूछैत अछि। ग्राहक प्रमोद झाक बेटी मैत्रेयी एहि अधूरा सत्य पर प्रश्न उठबैत अछि—जे बात ग्राहक जानिते नहि, तकर प्रश्न कोना पूछत? बंशीधर अपन पद्धतिक त्रुटि स्वीकार कऽ वस्तुसभ तीन स्पष्ट वर्गमे राखैत छथि आ पूरा जानकारी लिखैत छथि। दोकानक तख्ती पर जोड़ैत छथि जे किनबाक लेल जरूरी बात बिना पूछने बताओल जाएत। अगिला ग्राहककेँ ओ तीनू श्रेणीक अन्तर बुझा कऽ स्वेच्छासँ चुनाव करय दैत छथि। कथामे सत्यक अर्थ केवल झूठ नहि बजेनाइ नहि, भ्रामक मौनसँ बचब सेहो अछि।

कथा ०७० · पुण्यक रसीद

सेवानिवृत्त रमानन्द चौधरी अपन भल काजक ‘पुण्यक हिसाब’ राखैत छथि। ओ वृद्धकेँ बाट पार करेनाइ सँ दान देबा धरि प्रत्येक काजक अंक, खर्च आ साक्षी दर्ज करैत छथि। मुदा अपन बनाओल चबूतरा आ नव दोकानक योजना पुरान सार्वजनिक नाला बन्द कऽ पानिक समस्या उत्पन्न करैत अछि। मिस्त्री आ वृद्ध हरिनारायण पासवान स्पष्ट प्रमाण देखबैत छथि, तइयो रमानन्द पहिने अपन निर्माण तोड़बाक निर्णय टारैत छथि। अन्ततः ओ किरायेदार गोपालक अग्रिम घुरेबाक जिम्मेदारी लैत, नव निर्माण हटबैत आ नाला पुनः खोलबैत छथि। पानि फेर सहज बहय लगैत अछि। एहि सुधारकेँ ओ पुण्य-अंक नहि दैत छथि, केवल ‘अपन देनदारी’ लिखैत छथि। अधूरा पावती-पत्रक खाली ठाम याद करबैत अछि जे अपन गलती सुधारब कोनो प्रदर्शनकारी दान नहि, सीधा उत्तरदायित्व अछि।

कथा ०७१ · सभ्य परिवार

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक विनयकान्त झा अपन परिवार लेल सभ्य व्यवहारक सात नियम चौखटामे टाँगि रखने छथि। विवाहक चालीसम वर्षक अवसर पर घरमे जुटान होमयवला अछि, मुदा वर्षो सँ घरेलू काज करैत चन्द्रकला मण्डलकेँ सभ ‘काकी’ कहैत

छथि, हुनकर पूरा नाम तक नहि जनैत अछि। पोती ईराक प्रश्नसँ परिवार अपन एहि उपेक्षाक बोध करैत अछि। चन्द्रकला सभ परिवारजनक नाम जानैत छथि आ अपन नाति निशान्तक विद्यालयी कार्यक्रममे जाएबाक लेल छुट्टी माँगैत छथि। जुटानक दिन परिवार स्वयं परोसनाइ आ व्यवस्था सम्हारैत अछि, चन्द्रकलाक नामसँ एक कुर्सी रखैत अछि। बादमे हुनका अपन नामक पर्ची देल जाइत अछि। विनयकान्त पुरान वेतन-हिसाबमे पहिल बेर हुनकर पूरा नाम लिखैत छथि। सभ्यताक नियम तखन सार्थक बनैत अछि जखन सम्मान व्यवहारमे उतरैत अछि।

कथा ०७२ · उपदेशक यात्री

शशिभूषण पाठक बसयात्रामे अनुशासन, पाँति, धीमा स्वर आ टिकट सम्हारबाक विषय पर सभ यात्रीकेँ लगातार उपदेश दैत छथि। ओहि बसमे वृद्धा, सहयात्री रामलोचन आ युवकसभ हुनकर नियम सुनैत छथि। अचानक शशिभूषणक अपन टिकट हराइत अछि आ निरीक्षक जाँच लेल चढ़ैत छथि। उपदेश देनिहार यात्रीक घबराहट बढ़ैत अछि, जखन कि जकरा ओ टोकैत छलाह सेहे लोक टिकट खोजयमे सहायता करैत अछि। अन्ततः पर्ची रामलोचनक गठरीक डोरीमे फँसल भेटैत अछि; सम्भवतः वृद्धाक सामान सम्हारैत शशिभूषणक जेबिसँ खसल छल। ओ अपन कट्टर स्वरक हास्य बुझैत छथि आ बादक यात्रा मे दोसरक असुविधा पर भाषणक बदला सहज सहायता करैत छथि। नियमक मूल्य कठोर उपदेशमे नहि, विनम्र आ सहयोगी आचरणमे उभरैत अछि।

कथा ०७३ · शुद्ध भोजन

शशिधर झा अपन रसोइक ‘शुद्ध अन्न, शान्त मन’ नियम पर गर्व करैत छथि। दालि, तेल, दूध आ तरकारीक स्रोत धरि लिखैत छथि, मुदा धीरे-धीरे वस्तुक शुद्धताक नियम लोकक प्रति शंका आ कठोर व्यवहारमे बदलि जाइत अछि। घरक भोजमे पत्नी मालती आ सहयोगी नीलिमाक परिश्रमक अपेक्षा शशिधर अपन व्यवस्थाक प्रशंसा करैत छथि। दुकानदार किशोर साहक देय रकम रोकलासँ ओकर बीमार माएक औषधिक व्यवस्था प्रभावित होइत अछि, जखन कि नीलिमा समय पर ओकर भुगतान करि दैत छथि। शशिधर अपन हठ स्वीकार करैत छथि आ किशोरसँ क्षमा माँगैत छथि। अपन पाँजिमे ओ पहिल बेर अन्नक

गुणवत्ताक बदला अपन व्यवहारक चूक लिखैत छथि। अन्तमे ओ बुझैत छथि जे भोजनक शुद्धता पर्याप्त नहि; मनुष्यक प्रति उचित व्यवहारो ओतबे आवश्यक अछि।

कथा ०७४ · क्षमाक समारोह

सकरीक दुग्ध-सहयोग समितिमे नमूनाक क्रमांक उलटि गेलासँ सरोजा देवी पर दूधमे पानि मिलबेबाक गलत सन्देह कएल जाइत अछि आ हुनकर दूध लेनाइ रोकि देल जाइत अछि। बादक जाँचमे त्रुटि समितिक सिद्ध होइत अछि। सचिव गौरीशंकर मिश्र क्षमा माँगबाक नाम पर सार्वजनिक समारोह रखैत छथि, जाहिमे घटना फेर सभक सामने सुनाओल जाइत अछि आ निर्दोष सरोजाकेँ माला आ प्रमाणपत्रसहित फोटो खिंचबेबाक कहल जाइत अछि। सरोजा अनुभव करैत छथि जे एहि प्रदर्शनमे हुनकर अपमान दोहराइत अछि। ओ कार्यालयमे वास्तविक आर्थिक हानि, रोकल भुगतान आ प्रक्रियागत सुधारक बात उठबैत छथि। सम्मानपत्र घर लऽ जाएबाक बदला छोड़ि दैत छथि। अगिला भोर केन्द्र पर हुनकर नामक उत्सवी पट्टी नहि, सामान्य दूधक दर टँगल रहैत अछि। क्षमा वास्तविक सुधारसँ होइत अछि, समारोहसँ नहि।

कथा ०७५ · दयालु मालिक

वाचस्पति झा गर्वसँ कहैत छथि जे पन्द्रह वर्षसँ काज करैत सुमित्रा हुनकर घरक सदस्य समान छथि। बीमारीमे सहायता आ अवसर पर उपहारक उदाहरण दैत छथि, मुदा नव घरक नक्शा बनबैत समय सुमित्राक विश्राम अथवा निवास लेल कोनो सम्मानजनक ठाम निर्धारित नहि करैत छथि। सुमित्रा नदी-कटानक बाद अपन बेटी संग अलग किरायाक कोठरी लैत छथि आ निर्धारित समय पर काज समाप्त कऽ घुरय लगैत छथि। घरक लोक हुनकर एहि स्वाधीनतासँ असहज होइत अछि। गृहप्रवेशक राति वाचस्पति हुनका ‘अपन घर’ बुझि रुकबाक कहैत छथि, मुदा जतय सुमित्रा सूति सकथि, से ठाम नहि भेटैत अछि। सुमित्रा अपन कोठरीक चाभी देखबैत घुरि जाइत छथि। नव घरक नक्शामे मेटाओल ‘कोठरी’ शब्दक निशान मालिकक दयालुताक दाबी आ वास्तविक व्यवहारक अन्तर उजागर करैत अछि।

कथा ०७६ · सत्यक पोस्टर

कमलपुर प्रखण्ड कार्यालयमे भ्रष्टाचार-विरोधी सप्ताहक संयोजक शशिनाथ चौधरी ‘सार्वजनिक धन, सार्वजनिक हिसाब’ लिखल भित्तिपत्र टँगबबैत छथि। मुदा लेखा-सहायक मंजुला कर्ण देखबैत छथि जे अभियानक छपाईक भुगतान बिना अनुमति दोसर मदसँ करबाक चेष्टा भेल अछि आ एक्के आदेशक खर्च दू बीजकमे बाँटल गेल अछि। शशिनाथ जनहितक उद्देश्य आ व्यक्तिगत लाभक अभावक तर्क दैत छथि, मुदा जाँचकर्त्री किरण स्पष्ट करैत छथि जे सही उद्देश्य अनियमित प्रक्रियाकेँ वैध नहि बनबैत अछि। अन्ततः शशिनाथ अपन हस्ताक्षरसँ पूर्व प्रविष्टि सुधारबाक प्रस्ताव पठबैत छथि आ कारीगरक देय भुगतान नियमपूर्वक निपटेबाक बात रखैत छथि। सार्वजनिक भित्तिपत्रक कात वास्तविक खर्चक विवरणो टाँगल जाइत अछि। सत्यक प्रचारक सच्ची परीक्षा अपन काजक हिसाब सार्वजनिक करब अछि।

कथा ०७७ · भलमानुसक गवाही

बाढ़िक बाद क्षति-सत्यापनमे सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक भवेश्वर मिश्र गामक लोकक भरोसामे साक्षी बनैत छथि। रामसेवकक देवाल खसबाक घटना ओ स्वयं नहि देखलनि, मुदा ओकर सहायता होए, एहि सदिच्छासँ प्रत्यक्षदर्शी प्रमाण पर हस्ताक्षर कऽ दैत छथि। जिला-कर्मीक प्रश्न पर हुनका अपन वाक्यक असत्यता स्पष्ट बुझाइत अछि आ ओ सच कहि दैत छथि जे देवाल खसैत नहि देखलहुँ। रामसेवककेँ फेर स्थलीय जाँचक अवसर भेटैत अछि, आ वास्तविक क्षतिक आधार पर ओकर नाम सहायता-सूचीमे रहैत अछि। आन जरूरतमन्द नसीमाक दावीक सेहो उचित सत्यापन होइत अछि। भवेश्वर बुझैत छथि जे दयाक नाम पर गलत गवाही देनाइ न्यायकेँ कमजोर करैत अछि। ओ आगाँ सँ केवल ओही बात पर हस्ताक्षर करैत छथि जकर प्रत्यक्ष जानकारी हुनका अछि।

कथा ०७८ · दान पेटीक सिक्का

पिपरा गामक पुरान इनारक मरम्मति लेल साझा दान-पेटी राखल जाइत अछि। नियम अछि जे दू चाभीसँ पेटी सभक सोझाँ खुलत आ धन सामूहिक कुल रकमक रूपमे दर्ज

होएत। अनाज-व्यापारी रतिनाथ चौधरी अपन एक रुपैयाक सिक्का पहिल दान कहि प्रतिष्ठा चाहैत छथि आ पर्ची पर अपन नाम लिखि पेटीमे रखैत छथि। खुलल गणनामे पर्चीसभ पेटीक भीतर क्रमसँ नहि भेटैत अछि; दानक कालक्रम सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि। कोषाध्यक्ष किरण पारदर्शी हिसाब रखैत छथि, मुदा दाताक नामक सार्वजनिक श्रेष्ठता-सूची नहि बनबैत छथि। इनारक जगत आ चरखी दुरुस्त होइत अछि, बाँकी धन आगामी मरम्मति लेल बचैत अछि। रतिनाथक नामवला पर्ची अभिलेखमे रहि जाइत अछि, जखन कि इनार लग सभक योगदान संयुक्त लेखामे समा जाइत अछि।

कथा ०७९ · सज्जन चालक

सवारी-गाड़ीक चालक नगेन्द्र झा अपना कैँ सभ्य मानैत छथि, कारण ओ कठोर बातक अन्तमे ‘जी’ जोड़ि दैत छथि। सड़क पर साइकिलवाला, वृद्ध आ ठेलावालाकैँ ओ अपमानजनक उपमा दैत, मुदा अपन भाषाकैँ सम्मानपूर्ण कहैत छथि। सहचालक बिजय आ बैठक संचालिका सरोजिनी हुनकर कहल वाक्यसभ जाँचि पूछैत छथि जे एहि सभमे बाटक उपयोगी निर्देश कतय अछि। नगेन्द्र बुझैत छथि जे सम्मानसूचक शब्द जोड़ि देलासँ असभ्य अर्थ नहि मेटैत अछि, आ हल्ला केलासँ सुरक्षित चाल चलबाक सूचना नहि भेटैत अछि। अगिला यात्रामे ओ छोट, स्पष्ट निर्देश देब शुरू करैत छथि—बाम कात रहू, पाछाँ गाड़ी अछि। यात्री समय पर कात होइत छथि आ शिकायत घटैत अछि। हुनकर गाड़ीक ‘विनम्र सेवा’ लिखल पाँति आब व्यवहारसँ मेल खाए लगैत अछि।

कथा ०८० · चरित्र प्रमाण-पत्र

अन्न-भंडारक अस्थायी पद लेल आवेदन करैत माधव मण्डलकैँ दू प्रतिष्ठित लोकक चरित्र प्रमाण-पत्र चाही। सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक भुवनेश्वर मास्टर प्रारम्भमे बिना पर्याप्त जानकारी सहज हस्ताक्षर करए चाहैत छथि। दोसर प्रतिष्ठित रमाकान्त साह माधवसँ समितिक रसीद-पाँजिमे पिछिला तिथि लिखबबए चाहैत छथि। माधव अनुचित तिथि बदलबाक आग्रह नहि मानैत अछि, तैँ रमाकान्त अपन हस्ताक्षर काटि दैत छथि। कठिनाईक बावजूद माधव सच जननिहार व्यक्तिसँ स्पष्ट आ सीमित प्रमाण लैत अछि, आ आवेदनमे वैध कागज जमा करैत अछि। काटल हस्ताक्षरवला प्रपत्र नियुक्तिक काममे नहि अबैत, मुदा

माधव ओकरा अलग सुरक्षित रखैत अछि। ओहि अस्वीकृत कागजमे ओकर वास्तविक चरित्र—दबावमे पड़िओ अभिलेख नहि बदलबाक साहस—सभसँ स्पष्ट रूपमे उभरैत अछि।

कथा ०८१–१००

कथा ०८१ · उपवासक भोज

निर्जला एकादशीक सामूहिक आयोजनमे रामकृपाल मिश्र फलाहारक नौ प्रकार, दानदाताक आसन आ परसनाइ क्रम तय करबाक लेल अत्यन्त सजग छथि। मुदा वृद्ध सीता देवीकेँ निश्चित समय पर औषधि लेबाक अछि, आ सेवा करैत किछु स्त्री देरि धरि उपवासे रहि जाइत छथि। समारोहक फोटो, शंख आ आसनक व्यवस्थामे अटकला कारण सीता देवी भोजनक प्रतीक्षा छोड़ि चलि जाइत छथि; चम्पा काकी सेहो बहुत पाछाँ खाइत छथि। अगिला दिन रामकृपाल सीता देवी लग पहुँचि अपन चूक अनुभव करैत छथि। ओ नव व्यवस्थामे आसनक रंग वा फलाहारक संख्या सँ पहिने लोकक औषधिक समय, घरक दूरी आ सेवकक भोजनक बेरा लिखबाक निर्णय करैत छथि। उपवासक महत्त्व भूख बढ़ेबामे नहि, उपवास रखनिहार मनुष्यक आवश्यकता बुझबामे अछि।

कथा ०८२ · नम्रताक पुरस्कार

नगर पुस्तकालयमे 'नम्रताक पुरस्कार' घोषित होइतहि अनेक प्रतिष्ठित लोक दोसरसँ अपन नामांकन करबबैत छथि। सभ कहैत छथि जे हुनका पुरस्कारक इच्छा नहि, मुदा अपन गुप्त सेवा, श्रेय-त्याग आ पाछाँ बैसबाक छायाचित्रक विस्तृत प्रमाण जमा करैत छथि। समिति अंक देबाक क्रममे बुझैत अछि जे नम्रता नापबाक प्रतिस्पर्धा स्वयं लोकक व्यवहार बदलि रहल अछि। सचिव मृदुला प्रश्न उठबैत छथि जे स्वयं श्रेय नहि लेबाक गुणक सार्वजनिक प्रमाण कोना जुटाओल जाए। समिति एहि वर्ष पुरस्कार नहि देबाक आ राशि पुस्तकालयक चुबैत ओसाराक छाजन ठीक करबामे लगबबाक निर्णय करैत अछि। काज पूरा भेलापर व्यक्तिगत नामवला पट्ट नहि लगाओल जाइत अछि। बरखामे बच्चाक पोथी सूखल रहैत अछि, आ नम्रताक साक्ष्यवला मोट नस्ती अलमारीमे चुपचाप पड़ल रहैत अछि।

कथा ०८३ · अन्तिम पाँति

नगर वाचनालयक स्थापना-दिवस पर पुरान दानदाता रमानन्द झा आमन्त्रणमे ‘विशिष्ट’ उपाधि नहि देख असन्तुष्ट छथि। ओ मंचक नजदीक आसन आ समूह-छायाचित्रमे अपन उपस्थिति चाहैत छथि। आसन लगौनिहार रामजतन हुनका पूछैत अछि जे जखन मंच देखाइत आ आवाज सुनाइत अछि, तखन आगाँ जाएबाक एतेक आग्रह किएक। बातचीतक क्रममे रमानन्द अन्तिम पाँतिक महत्त्व अनुभव करैत छथि आ ओतए बैसैत छथि। कार्यक्रममे समयक अभावसँ सहयोगी सदस्यक अलग फोटो नहि बनैत अछि। बादमे स्मारिकामे अपन मुख नहि भेटलापर क्षणिक खटास होइत अछि, मुदा हुनका ओहि पाँतिक स्थानसँ जुड़ल पिताक स्मृति मोन पड़ैत अछि। ओ बुझैत छथि जे समारोहमे सहभागिताक मूल्य केवल मंचक निकटता वा छायाचित्रमे देखाइ देबासँ नहि मापल जाइत अछि।

कथा ०८४ · नदीक कागज

कमला नदीक धार बदलला पर बसल गढ़िया टोलामे सैंतीस परिवार रहैत अछि, मुदा सरकारी राजस्व-नक्शामे ओ ठाम ‘बसोबास शून्य’ लिखल अछि। चम्पा सहनीक बेटी पूनमकेँ छात्रवृत्तिक पता-प्रमाण नहि भेटैत अछि, आ निर्माण विभाग ओहि कथित खाली भूमिपर सामग्री रखबाक तैयारी करैत अछि। चम्पा आ पूनम परिवारसभक नाम, पुरान सरकारी पर्ची, इनार, चाँपाकल, विद्यालयी आँगन आ बाढ़िमे नाव लगबाक बाटक विवरण संकलित करैत छथि। ओ सभ स्वामित्वक अप्रमाणित दावा नहि करैत, केवल वास्तविक बसोबास देखेबाक आग्रह करैत अछि। संयुक्त स्थलीय जाँचमे सैंतीस घर दर्ज होइत अछि, निर्माण-सामग्रीक ठाम बदलैत अछि आ नक्शामे सर्वेक्षणक टिप्पणी जुड़ैत अछि। कागजक खाली ठाममे जीवनक अस्तित्व दर्ज होनाइ कथाक उपलब्धि अछि।

कथा ०८५ · ईंटक नम्बर

ईंट-भट्ठामे रामदेव मण्डलकेँ अपन नामक बदला टीनक क्रमांक ‘३१’ भेटैत अछि। मजदूरी, अग्रिम आ ईंटक गिनती सभ ओही क्रमांकसँ चलैत अछि। पाँजिक पुरान प्रविष्टिसँ ओकर माथ अठारह सय ईंटक अनुचित कटौती लगबाक स्थिति उत्पन्न होइत अछि। आधा

बचल पावतीक आधार पर पता चलैत अछि जे ओ प्रविष्टि रामदेवसँ पहिने क्रमांक ३१ रहल दोसर मजदूरक छल। मालिक हिसाब सुधरबैत छथि, मुदा पुरान मजदूरक नाम तक ककरो नीकसँ मोन नहि अछि। खोजबीनक बाद सुरजन यादवक परिचय आ बाँकी मजदूरीक पता लगैत अछि। नव नियममे क्रमांकक संग मजदूरक नाम, गाम आ काज आरम्भक तिथि अनिवार्य होइत अछि। ईंटक पाँतिमे केवल अंक पर्याप्त अछि, मुदा मनुष्यक श्रमक हिसाबमे ओकर नाम आवश्यक अछि।

कथा ०८६ · जंगलक रास्ता

बेलसारक सखुआवन बीचक पातर बाटसँ तीन टोलक लोक दूध-संग्रह केन्द्र, विद्यालय आ बजार जाइत अछि। वनरक्षक बटेश्वर झा नव पौधरोपण लेल बाट बन्द करबैत छथि, कारण नक्शामे ई लोक-उपयोगक मार्ग दर्ज नहि अछि। सरोजा देवी यात्रिकसभक नियमित आवागमनक गणना करबैत छथि; एक्के दिन सैकड़ों लोकक आवश्यकता सामने अबैत अछि। वन-विभागक क्षेत्र-सहायक निरीक्षण कऽ निर्णय करैत छथि जे पौधरोपण बाटक दुनू कात होएत आ पैदल तथा साइकिल यात्रीक पुरान बाट बचाओल जाएत। दुनू मुहाने खम्भा लगाओल जाइत अछि जाहिसँ मोटरगाड़ी जंगलक भीतर प्रवेश नहि करय। नव नक्शामे बाटक वास्तविक रूप दर्ज होइत अछि। वन-संरक्षण आ स्थानीय जनजीवनक आवश्यकता एक-दोसराक विरोधी नहि, उचित व्यवस्था सँ संग-संग चलि सकैत अछि।

कथा ०८७ · मजूरीक हस्ताक्षर

बेलही पोखरिक गाद-सफाइमे काज करैत धनवंती पासवान अक्षर नहि पढ़ि सकैत छथि, मुदा अपन बारह दिनक श्रमक हिसाब हुनका मोन अछि। भुगतान-पाँजिमे हुनकर नामक आगाँ साढ़े दस माप-दिन दर्ज अछि। बरखाक दिन बोरा उठेनाइ आ निकासी साफ करबाक काज ‘अन्य काज’क खाँचामे दर्जे नहि भेल अछि। धनवंती ई अन्तर पकड़ैत छथि आ आन स्त्री मजदूरक हिसाब सेहो जाँच करबबैत छथि। जाँचक बाद छूटल श्रम-दिन जोड़ल जाइत अछि। ओ बेटी सुनीतासँ अपन नाम लिखब सीखैत छथि, मुदा हस्ताक्षर करबाक पहिने प्रत्येक खाँचाक हिसाब पढ़बाक महत्त्व बुझैत छथि। बादमे ओ रामपरी आ आन मजदूरकेँ

अपन दिन, माप, दर आ देय राशि देखबाक प्रेरणा दैत छथि। एतय हस्ताक्षर केवल नाम लिखनाइ नहि, श्रमक उचित मूल्य पर सजग अधिकार अछि।

कथा ०८८ · कटान क्षेत्र

कुशहा टोल लग पत्थर खननक सुरक्षा-रेखा बारम्बार सुगिया देवीक खेत दिस बढ़ैत अछि। लाल बाँस, पीयर चिन्ह, नीला झंडा आ चूनाक रेखाक कारण हुनकर खेती बाधित होइत अछि, मुदा कर्मचारी प्रभावित भागकेँ 'परती' दर्ज करय लगैत छथि। सुगिया पुरान पुलिया नम्बर चारि, रोकक पर्ची आ अपन नापी-सूचना सुरक्षित रखैत छथि। आधिकारिक अमीनक नापीमे स्पष्ट होइत अछि जे पट्टा-सीमा अलग अछि आ अस्थायी सुरक्षा-चिह्नक आधार पर जमीनक स्थायी सीमा नहि बदलल जा सकैत अछि। कार्यालय खेती बाधित होबाक वास्तविक कारण दर्ज करैत अछि, अस्थायी चिन्ह हटैत अछि आ स्थिर सीमा-खूँटा फेर चिन्हित होइत अछि। सुगिया फेर मटर बोइत छथि। कथामे सुरक्षाक वैध आवश्यकता आ किसानक अधिकारक बीच प्रमाणित सीमा राखबाक आग्रह अछि।

कथा ०८९ · राशनक दिन

सोनबरसाक बहत्तर वर्षीया सोनमती देवी मासक सातम तारीख राशन लेबाक पहुँचैत छथि, मुदा नव सरकारी सूचीमे हुनकर नाम 'स्थानान्तरित' भऽ गायब अछि। ओ वर्षोंसँ ओही घरमे रहैत छथि आ पुरान राशन-पर्चा पर नियमित अनाज लेबाक प्रमाण सुरक्षित अछि। कार्यालय हुनका अनेक कागज आ सत्यापनक लेल घुमबैत अछि। सोनमती निवास प्रमाण, ग्राम-सेवकक स्थलीय जाँच आ पिछिला मासक वितरण-पाँजि एक संग रखि प्रशासनसँ प्रश्न करैत छथि जे पुरान अभिलेखमे अनाज लेनिहार स्त्री अचानक अनुपस्थित कोना भऽ गेली। अन्ततः सुधारक आदेश पर ओहि मासक राशन भेटैत अछि आ अगिला सूचीमे हुनकर स्थिति 'उपस्थित' दर्ज होइत अछि। सोनमती सभ प्रमाण सुरक्षित रखैत छथि, कारण कागजमे दर्ज नामक अस्तित्व बारम्बार साबित करय पड़ैत अछि।

कथा ०९० · स्कूलक दूरी

कमलपुरक कंचन आठम कक्षाक बाद बेलही उच्च विद्यालयमे पढ़य चाहैत अछि, जे घरसँ दस किलोमीटरसँ बेसी दूर अछि। सरकारी साइकिल-सहायताक पात्रताक नियममे पहिने बीस दिन विद्यालयमे उपस्थित रहब आवश्यक अछि, मुदा साइकिल बिना ओ बीस दिन पहुँचबे कठिन अछि। प्रधानाध्यापिका माधवी झा पुरान नील साइकिल दुरुस्त करबबैत छथि आ ‘प्रवेश-साइकिल’ रूपमे अस्थायी रूपसँ देबाक व्यवस्था करैत छथि। कंचन रेखा आ सरिताक संग सुरक्षित यात्रा करैत उपस्थितिक शर्त पूरा करैत अछि। नव सहायता-साइकिल भेटलापर ओ पुरान साइकिल समुचित हिसाबसहित घुरा दैत अछि। तकर बाद ओही साइकिल दोसर नव छात्रा पूनमकेँ भेटैत अछि। दूरिक संख्या नहि घटैत अछि, मुदा आरम्भिक बीस दिनक बाधा साझा साधनसँ दूर होइत अछि।

कथा ०९१ · पत्थर तोड़ैत गीत

सोनबरसा बाटक कात जमुना देवी सहित बारह स्त्री पाथर तोड़ैत अपन काजक घटनाक अनुसार नित्य नव पाँतिवला गीत गबैत छथि। शिक्षिका अनुपमा सांस्कृतिक पुस्तिका लेल गीत संकलित करैत समय पानि, गाड़ी, टूटल हथौड़ी आ टोकरीक गिनतीवला पाँति हटाकऽ ओकरा सुन्दर साहित्यिक रूप दैत छथि। मजदूरीक भुगतानमे बाइस दिनक बदला अठारह दिन दर्ज भेला पर जमुना सभ गीतक पाँति द्वारा छूटल दिनक प्रसंग याद करबैत छथि। अनुपमाक मूल कापीमे सुरक्षित संकेत—मंगल हाट, लाल गमछा, पीयर गाड़ी—आ अन्य अभिलेखक मिलानसँ दिनक सत्यापन होइत अछि। अनुपमा गीतक साफ-सुथर बनाओल रूपक बदला बदलैत कामक पाँतिसभ सुरक्षित राखैत छथि। गीत केवल मनोरंजन नहि, श्रम-दिनक जीवित स्मृति सेहो अछि।

कथा ०९२ · वनक अधिकार

सिमरबन्नीक धनमाया देवीक बाँसक बाड़ी बीचसँ वन-विभागक नव सीधी सीमा-रेखा खींचल जाइत अछि। पोती कुसुम पुरान नस्ती, स्थिर सीमा-खूँटा आ कछुआ नालाक वास्तविक मार्गक मिलान करैत अछि। प्रमाणित पुरान विवरणमे सीमा मौसमी जलधाराक

संग चलबाक निर्देश भेटैत अछि, जखन कि नव नक्शामे नालाक मोड़ गायब अछि। विभागक संयुक्त जाँचमे ई भूल प्रमाणित होइत अछि आ सीमा-रेखा नालाक अनुसार सुधारल जाइत अछि। धनमायाक अधिकांश बाड़ी वन-सीमासँ बाहर निकलैत अछि, मुदा नालाक दोसर कात पड़ल सात बाँस वनभूमिमे रहैत अछि। परिवार एहि तथ्यकेँ सेहो स्वीकार करैत अछि। कथामे अधिकारक लड़ाइ तथ्यसँ चलैत अछि; सत्यापन केवल अपन लाभक बात नहि, अपन दावीक सीमा मानबो सिखबैत अछि।

कथा ०९३ · पुलक मुआवजा

कमला नदी पर पुल बनबाक समाचारसँ बसहीक लोक प्रसन्न अछि, मुदा पुलक चढ़ानमे झुमरी देवी सहित ग्यारह घर पड़ैत अछि। सरकारी अनुमति अनुसार झुमरी घरक काठ आ फेर उपयोगी सामग्री निकालि लैत छथि। बादक मुआवजा-मूल्यांकनमे ओहि कारण घरकेँ ‘पहिने सँ आंशिक टूटल’ मानि रकम घटेबाक चेष्टा होइत अछि। झुमरी पहिल निरीक्षण, सामग्री निकासी अनुमति आ बादक मूल्यांकनक क्रमबद्ध तिथि देखबैत छथि। ओ स्पष्ट करैत छथि जे पुलक विरोध नहि, मुदा अपन घरक वास्तविक मूल्यक अधिकार चाहैत छथि। संयुक्त जाँचक बाद आकलन सुधरैत अछि। मुआवजासँ नव घर बनैत अछि आ पुरान दरवाजाक साँकल ओतय फेर लागैत अछि। पुल खुललापर यात्रा सहज होइत अछि, मुदा झुमरीक पुरान घरक स्मृति आ न्यायपूर्ण क्षतिपूर्तिक दस्तावेज संगहि बचैत अछि।

कथा ०९४ · मजदूरक फोटो

शिवपुरक जलनिकासी नाला बनबैत मजदूर बुधन मण्डल एक दिन तेसर खण्डसँ दोसर खण्डमे काज करय पठाओल जाइत छथि। उपस्थिति आ भुगतानक अभिलेखमे खण्ड बदलबाक जानकारी नहि मिललासँ हुनकर मजदूरी पर प्रश्न उठैत अछि। प्रगति-प्रतिवेदनक छायाचित्रमे बुधन दोसर खण्डमे हाथ-ठोकनी चलबैत देखाइत छथि। छायाचित्र पर स्पष्ट दिनांक अछि, आ औजार क्रमांक बारहक जारी-पाँजि हुनकर ओहि दिनक काजसँ मेल खाइत अछि। एहि संयुक्त प्रमाणसँ मजदूरीक हिसाब सुधरैत अछि। आगाँ लेल छायाचित्रक संग क्रमांक, दिनांक, खण्ड आ उपस्थिति-पाँजिक सन्दर्भ जोड़बाक नियम बनैत अछि, मुदा

मजदूरक निजी विवरण सार्वजनिक करब आवश्यक नहि मानल जाइत अछि। चित्रमे नाम छपबासँ बेसी जरूरी अछि जे श्रमिकक नाम धरि प्रमाणित बाट उपलब्ध रहय।

कथा ०९५ · लाल कार्ड

बरैलक फुलमती देवी अपन पति हरिकिशुन आ तीन बच्चाक संग पैतृक आँगनक पाछाँ अलग गृहस्थी चलबैत छथि। चूल्हा, अनाज आ आमदनी अलग अछि, मुदा एक्के गृह-क्रमांक ‘४७’ होएबाक कारण हुनका खाद्य-सहायताक अलग लाल कार्ड नहि भेटैत अछि। काका भुवनेश्वरक परिवारक कार्ड पर फुलमतीक परिवारक कोनो नाम नहि अछि, तइयो कार्यालय दुनूकेँ एक परिवार मानैत अछि। वितरण-पाँजि आ स्थल-जाँचसँ स्पष्ट होइत अछि जे एक परिसरमे दू स्वतंत्र परिवार रहैत अछि। प्रशासन एक्के क्रमांकक भीतर ‘४७-क’ उपक्रमांक देबाक प्रावधान लागू करैत अछि। फुलमतीक पाँचू सदस्यक नाम अलग दर्ज होइत अछि आ उचित अनाज भेटैत अछि। ओ कहैत छथि जे घरक नम्बर एक छल, गृहस्थी दूटा पहिनहिसँ छल।

कथा ०९६ · बालू घाट

कमला नदीक सोनबरसा बालूघाट पर तीन मास लेल बालू उठेबाक अनुमति भेटैत अछि। भारी गाड़ी आ खनन-यन्त्रक काज शुरू भेला पर लगक इनारसभक पानि नीचाँ जाए लगैत अछि आ किछु इनारमे महीन बालू आबैत अछि। चाह बेचयवाली हरिप्रिया अपन इनारक रस्सीमे बान्हल गाँठक आधार पर पानिक स्तरक परिवर्तन प्रतिदिन दर्ज करैत छथि। बेटी मञ्जू आठम गाँठो जोड़ैत अछि। ग्रामीणसभक अभिलेखक आधार पर सरकारी जाँच होइत अछि; स्वीकृत खनन-पट्टी भीतर गड्ढा रहितो गाड़ी उतरबाक बाट पुरान जलधाराक निषिद्ध भाग धरि कटाओल भेटैत अछि। बाट आ सीमा सुधारल जाइत अछि, पानिक स्तर स्थिर होइत अछि। अनुमति समाप्त भेलापर हरिप्रिया आठम गाँठ नहि खोलैत छथि, कारण ओ नदीक बदलैत दशा पर सजग रहबाक स्मृति अछि।

कथा ०९७ · अस्थायी बस्ती

कमलाक बाढ़ि सँ विस्थापित अठारह परिवारक लेल बसाओल धरहरवाक ‘अस्थायी राहत बस्ती’ तीस वर्षमे छियालीस गृहस्थीक टोला बनि गेल अछि। तइयो प्रशासनिक अभिलेखमे पुरान अस्थायी नाम यथावत् अछि, जाहिसँ सुरक्षित स्थायी जल-नलीक काज रोकल जाइत अछि। मालती देवी आ गामक लोक पहिल राहत-आदेशमे तीन वर्ष बाद पुनरीक्षणक शर्त, वर्तमान घरक गिनती, नदीक दूरी आ पानिक अवस्थाक प्रमाण जुटबैत छथि। संयुक्त नापी आ जाँचक बाद अधिकारी स्वीकार करैत छथि जे अपुनरीक्षित पुरान टिप्पणीक आधार पर मूलभूत जल-सुविधा रोकल नहि जाए। भूमिक स्वामित्वक प्रश्न अलग राखि तीन सार्वजनिक नलसहित सुरक्षित जल-नली बिछाओल जाइत अछि। ‘अस्थायी’ शब्द तखन निरीक्षणक विषय बनैत अछि, स्थायी उपेक्षाक बहाना नहि।

कथा ०९८ · जंगलक स्कूल

सालक जंगल बीच बेलझरियाक प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक नरेश बाबू नियमित नहि पहुँचैत छथि। विद्यालयक चाभी राखनिहार सुगनी काकी कोठरी खोलि दैत छथि आ पाँचम वर्गक फुलकुमारी छोट बच्चासभकेँ उपलब्ध पोथीक आधार पर पढ़बय लगैत अछि। रघु आ चन्दा सेहो सहयोग करैत अछि, मुदा कठिन प्रश्नसभक उत्तर नहि भेटलासँ लाल थैलीमे पर्ची जमा होइत जाइत अछि। निरीक्षणमे शिक्षा-समन्वयक सुधांशु झा देखैत छथि जे कमरा खुलल रहब आ वास्तविक पढ़ाइ होएब अलग बात अछि। व्यवस्था बनैत अछि जे दोसर विद्यालयक शिक्षक नियत दिन अओताह आ अनुपस्थितिक लेल वैकल्पिक शिक्षक पहिनेसँ निर्धारित रहताह। बच्चाक प्रश्न-पाँजि सुरक्षित राखल जाइत अछि। नव व्यवस्थामे फुलकुमारी शिक्षकक कुर्सी छोड़ि फेर अपन विद्यार्थीवला ठाम बैसैत अछि।

कथा ०९९ · हस्ताक्षरक शक्ति

सोनबरसाक ‘अँजोर महिला बचत मंडली’क बारह महिला अपना-अपन नाम लिखब सीखने छथि। चन्द्रकला देवी हुनका सभकेँ हस्ताक्षरसँ ऊपर लिखल आशय पढ़बाक आग्रह करैत छथि। सामुदायिक धान-सुखौनी चबूतराक निर्माणक बाद ठेकेदार पक्षक ‘दोष-मुक्त’

प्रमाण पर हस्ताक्षर माँगल जाइत अछि, जखन कि चबूतरामे दरार आ जलनिकासक कमी अछि आ दोष-सुधारक अवधि बाँकी अछि। महिला मंडली नस्ती पढ़ि वास्तविक स्थिति दर्ज करबबैत अछि; जाँच आ मरम्मतिक बादे प्रमाणमे अपना देखल बात लिखैत अछि। हस्ताक्षर करबाक पहिने सभ पाँति पढ़ल जाइत अछि। मंडली निर्णय करैत अछि जे कोनो सदस्य खाली अथवा सन्दर्भसँ अलग पन्नापर हस्ताक्षर नहि करत। अक्षरज्ञान तखन अधिकार बनैत अछि जखन लिखल दायित्वक अर्थ सेहो बुझल जाए।

कथा १०० · मजदूरीक आधा दिन

बेलवाड़ा सहकारी धान-भंडारमे बच्चन मण्डल सहित छओ मजदूर चारि सय अस्सी बोरा उतरबाक पूरा दिनक काज-पर्ची पर काज करैत छथि। बरखाक आशंकासँ सभ मिलि निर्धारित काज दुपहरसँ पहिने पूरा कऽ दैत छथि, आ कार्यालय बन्द भेला कारण दोसर उपस्थितिपर्ची नहि बाँटल जाइत अछि। भुगतानक समय दूनू पर्ची नहि रहबाक आधार पर मजदूरी आधा करि देल जाइत अछि। बच्चन प्रश्न करैत छथि जे जँ आधा दिनक काज भेल तऽ बाँकी बोरा के उतारलक। काज-पर्ची, माल-प्राप्ति पाँजि आ उपस्थिति-लेखाक मिलानसँ पूर्ण कार्य सिद्ध होइत अछि। अधिकारी मूल प्रविष्टि नहि मेटि सुधार जोड़बबैत छथि, आ सभकेँ पूरा मजदूरी भेटैत अछि। अगिला बेर निर्धारित काज पूरा होएबाक आधार पर पूर्ण दिन मानबाक नियम लिखल जाइत अछि।

खण्ड ५

कथा-त्रिधारा • खण्ड–२

१०० कथाक सारांश

कथा १०१ · चारि मुट्ठी बीआ

गोपाल आ सुनैना बटाइ पर जोतल खेतक धानसँ प्रत्येक बोरा पर चारि मुट्ठी बीआ अलग रखैत छथि। मालिकक बेटा नरेश स्वयं खेती करबाक सोचैत अछि तँ एहि बीआक स्वामित्व आ सुनैनाक छँटाइ-सुखेबाक श्रम पर विवाद उठैत अछि। सभ मिलि बीआकेँ खेतक अगिला जोतदार लेल सुरक्षित रखबाक आ उपयोगक लिखित नियम बनबैत छथि। लाल-हरियर सूतसँ बान्हल बोरा खेतक निरन्तरता आ श्रमक मान्यताक प्रतीक बनैत अछि।

कथा १०२ · हलक बाट

जगेसर आ नन्दू साझा बैल-हलक आधा दिनक एक्के किराया लैत छथि। दूर खेतमे पहुँचेबाक बाट आ बैलक विश्रामक कारण मोहनकेँ नजदीकक किसानसँ कम जोत भेटैत अछि। भाइसभ अनेक पालिक वास्तविक बाट, जोत आ विश्राम नापैत छथि। किसानसभक विचारसँ जोतक अवधि आ बाटक अलग हिसाब तथा पशुक देखभालक व्यवस्था बनैत अछि। पुरान नियमकेँ बदलल परिस्थितिक अनुसार न्यायसंगत बनाओल जाइत अछि।

कथा १०३ · आधा बाँस

बिनती देवीकेँ छाजन लेल पूरा बाँस नहि, निश्चित नापक टुकड़ा चाही। बाँस बेचयवला रामचरितकेँ बुझाइत अछि जे आधा लम्बाइ आ आधा मूल्य एक्के बात नहि, कारण मोट-पातर भागक उपयोग अलग अछि। दोसर ग्राहकक माँग जोड़ि काटबाक खर्च, बचल टुकड़ा आ मजबूतीक हिसाब बनैत अछि। अन्ततः ओ ग्राहकक जरूरत पहिने नापि, टुकड़ासभक मेल बैसला पर बाँस काटबाक नब नियम अपनबैत अछि।

कथा १०४ · गोठक पहिल दूध

सुदामाक गाय गौरी देवीक गोठमे पलैत अछि। बाछा जनमलापर पहिल दूध, बाछाक हिस्सा आ देखभालक खर्चकेँ लऽ कऽ आधा-आधा दूध बाँटबाक मौखिक समझौता उलझैत अछि। गौरी बाछाक आवश्यकता पहिने रखि चारा, उपचार, श्रम आ बचल दूधक सही हिसाब माँगैत छथि। दूनू परिवार लिखित व्यवस्था बनबैत अछि, जाहिमे बाछाक पोषण आ देखभालक जिम्मेदारीक स्पष्ट स्थान रहैत अछि।

कथा १०५ · मचानक राति

चारि सटल खेतक रखबारी लेल किसानसभ साझा मचान बनबैत छथि। बुधन अपन बीमार माय लग गेलाक कारण पहर नहि दऽ पबैत अछि आ पशुसँ फसलक हानि भेला पर दोषक प्रश्न उठैत अछि। छूटल पहर, कमजोर बाड़ आ वास्तविक विवशताक अन्तर बुझल जाइत अछि। किसानसभ आपतकालमे बदली पहर, बाड़क मरम्मत आ श्रमक हिस्साक नब नियम बनबैत छथि। बुधन बाड़ सुधारि अपन उत्तरदायित्व निभबैत अछि।

कथा १०६ · भूसाक भाग

गेहूँक दवनीमे मशीन अएलापर पुरान मजदूरी आ भूसाक हिस्साक चलन पर विवाद होइत अछि। पार्वतीक टोलीक हाथसँ कएल काज मशीनक शुल्कक भीतर अदृश्य होएबाक खतरा उठैत अछि। विचार-विमर्श पछाति मशीनक देय, मजदूरक श्रम आ भूसा बाँटबाक मद अलग कएल जाइत अछि। अगिला मौसममे काज शुरू होएबासँ पहिनहि सभ शर्त लिखल जाइत अछि, जाहिसँ नव तकनीकक बीच पुरान श्रमक मान्यता बचैत अछि।

कथा १०७ · पोखरिक दू घाट

गरमीमे पोखरिक पानि घटिते स्त्रीसभक कपड़ा धोअन, पशु पिआएब आ माछक बच्चा बचएबाक जरूरत परस्पर टकराइत अछि। भोला सहनी माछ लेल एक भाग रोकैत छथि तँ मालती दैनिक उपयोगक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। गामक लोक जलस्तरक अनुसार

धोअन-पटिया, पशुक ढाल आ माछक शरण-ठाम निर्धारित करैत छथि। एहि व्यवस्थामे साझा पानिक संग उपयोगकर्ताक श्रम आ जिम्मेदारी सेहो बँटैत अछि।

कथा १०८ · उधारक खाता

देवकी महेन्द्र साहुक दोकानसँ घरक वस्तु आ औषधि उधार लैत छथि, मुदा सभ खर्च ससुरक परिवारक एक नाममे दर्ज रहैत अछि। एहि कारण ककर जरूरत आ ककर भुगतान, से अस्पष्ट होइत अछि। देवकी साझा खर्च आ अलग सदस्यक खर्चकेँ पहिचान देबाक आग्रह करैत छथि। दोकानदार तिथि, प्रयोजन आ संबंधित व्यक्तिक अलग पाँजी राखय लगैत छथि। सही हिसाब परिवार तोड़बाक नहि, ओकर भीतरक जिम्मेदारी बुझबाक माध्यम बनैत अछि।

कथा १०९ · खेतक छोरक आम

रघुनाथक खेतक छोरक आमगाछ ठेका पर देल गेल अछि। फल तोड़निहार मजदूर पड़ोसिन रामसखी देवीक मूँगक खेत पार करय चाहैत छथि, जाहिसँ हुनकर फसलक हानि सम्भव अछि। रामसखी बिना अनुमतिक प्रवेश रोकैत छथि। गाछ-मालिक, व्यापारी आ मजदूर मिलि अलग प्रवेश-बाट आ सुरक्षित ढुलाईक व्यवस्था करैत छथि। अगिला ठेकामे फलसँ पहिने पड़ोसीक अनुमति आ मार्ग बनएबाक जिम्मेदारी लिखल जाइत अछि।

कथा ११० · रोपनीक दू दिन

फूलमतीक रोपनीहार टोली दू दिनक ठेकापर रामचरितक खेतमे काज करैत अछि। तेज वर्षासँ दोसर दिन रोपनी रुकला पर मालिक केवल रोपल क्षेत्रक मजूरी देब चाहैत छथि। फूलमती स्पष्ट करैत छथि जे मालिकक आदेशपर प्रतीक्षा करबो मजदूरक समयक उपयोग अछि। बातचीतसँ काज शुरू होएबासँ पहिने रद्द करबाक नियम, खेत पहुँचलाक बाद प्रतीक्षाक दर आ विलम्बित निर्णयक जिम्मेदारी तय होइत अछि।

कथा १११ · बाछीक देखभाल

फूलकली देवी गामक अनेक घरक बाछा-बाछी चरबैत आ देखभाल करैत छथि, मुदा पाँजिमे केवल मालिक आ पशुक चिन्ह लिखल जाइत अछि। लाली नामक बाछी बीमार पड़लापर उपचार, टीका आ सूचना देबाक वास्तविक जिम्मेदारीक प्रश्न उठैत अछि। घटनाक बाद पशुक स्वास्थ्य, खर्च, खबरक क्रम आ फूलकलीक श्रम पाँजिमे दर्ज होइत अछि। मालिकाना पुरान रहैत अछि, मुदा प्राणीकेँ सम्हारनिहार व्यक्तिक काज पहिचान पबैत अछि।

कथा ११२ · तेलीघरक खली

जुगलक तेलीघरमे सरिसो पेरला पर तेलक नाप साफ अछि, मुदा बचल खलीक हिस्सा अस्पष्ट। मालती देवी अपन पशुक चारा लेल खली चाहैत छथि, जखन कि तेलीघर पुरान चलनक अलग व्याख्या करैत अछि। पेराइ शुरू होएबासँ पहिने दू स्पष्ट विकल्प बनैत अछि—पूरा शुल्क दऽ सभ खली लेब अथवा घटल शुल्क पर खलीक निश्चित हिस्सा तेलीघरकेँ देब। एहि सँ बादमे होएवला विवाद घटैत अछि।

कथा ११३ · चरवाहीक सीटी

साझा चरवाहीक पित्तरिक सीटी घर-घर घुमैत अछि आ प्रत्येक घरकेँ समान पालि देल जाइत अछि। मुदा सभ घरक पशुक संख्या आ देखभालक भार समान नहि। बुधनी देवी प्रश्न करैत छथि जे एक पशु आ पाँच पशु लेल श्रमक हिसाब एक्के किएक। गामक लोक पशुक वास्तविक संख्या, अनुपस्थिति आ बदली पहर अनुसार नब सूची बनबैत अछि। सीटी वैह रहैत अछि, मुदा ओकर संग जुड़ल उत्तरदायित्व बदलि जाइत अछि।

कथा ११४ · कुम्हारक आगि

चारि कुम्हार परिवार एके भट्ठीमे घड़ा, दीप आ हाँड़ी पकबैत छथि। एक खेपमे कतेको बरतन खराब भेला पर दोष एक-दोसर पर देल जाइत अछि। फुलकली सहित कुम्हारसभ लकड़ीक मात्रा, आगिक दिशा, हावाक फाँक आ बरतन राखबाक ठाम लिखैत छथि।

अगिला खेपमे ठाम बदलि परीक्षण कएलापर भट्ठीक एक कात ताप कम पहुँचबाक कारण बुझाइत अछि। आरोपक बदला सामूहिक सुधारक बाट निकलैत अछि।

कथा ११५ · किरायाक पम्प

बिसुन आ नन्दलाल पटवन लेल रघुनाथ साहक डीजल-पम्प लैत छथि। इंजन चालू भेल समयसँ भाड़ा गिनल जाइत अछि, मुदा पानि खेत धरि पहुँचेबामे नालीक टूटन, मशीनक तैयारी आ आन विलम्ब भऽ सकैत अछि। श्यामा देवीक उपस्थितिमे तैयारी, पम्पक त्रुटि, नालीक चूक, वास्तविक पटवन आ बन्दीक समय अलग लिखबाक व्यवस्था होइत अछि। एखन किराया आ जिम्मेदारी एक्के अस्पष्ट घड़ी पर निर्भर नहि रहैत।

कथा ११६ · दू पसेरी मड़ुआ

फूलमतीक परिवार धनेश्वर झाक खेतमे काजक बदला दू पसेरी मड़ुआक मजदूरी तय करैत अछि। भुगतानक समय बजारभाव आ पुरान उधार काटबाक हिसाब सँ विवाद उठैत अछि। अनाजमे निश्चित मजूरी, ओहि अनाजक नकद मूल्य आ उधारक तारीख एक्के नहि, से स्पष्ट होइत अछि। पक्षसभ विनिमयक आधार आ समय पहिनहि लिखबाक व्यवस्था करैत छथि, जाहिसँ अनाजक नाप स्थिर रहलो मजदूरक हक बदलि नहि जाए।

कथा ११७ · बाँधक घास

बाँध पर उगल घासक अधिकार केवल पुरान जमीनधारी घरसभकेँ देल जाइत अछि। दू बकरीवाली भूमिहीन जमुना देवी एहि सूचीसँ बाहर छथि, यद्यपि बाँधक देखरेखमे हुनकर श्रम लगैत अछि। ओ पशुक जरूरत आ सामूहिक रखबारीक आधार पर हिस्साक प्रश्न उठबैत छथि। विचारक बाद घासक बाँटमे वास्तविक पशु, सामग्री आ देखभालक पालि पहिचानल जाइत अछि। जमुनाक श्रम आ आवश्यकता दुनूकेँ मान्यता भेटैत अछि।

कथा ११८ · सूखल कुइयाँक पाल

बेलवाक पुरान कुइयाँ सूखि गेल अछि आ ओकर पाल टूटि रहल अछि। अधिकांश लोक मरम्मत बेकार बुझैत छथि, मुदा रुक्मिणी देवी दुर्घटनाक आशंका आ जलस्रोतक

दीर्घकालीन महत्त्व उठबैत छथि। पाल सुरक्षित करबाक संग निश्चित ठामसँ जलस्तर नापि नियमित पाँजी बनैत अछि। नापकेँ आसपासक जलस्तरक पूर्ण प्रमाण नहि, केवल उपलब्ध संकेत मानल जाइत अछि। सूखल कुइयाँ फेर सामूहिक ध्यानक विषय बनैत अछि।

कथा १११९ · कटनीक पछिला दिन

धान कटबाक टोलीकेँ अन्तिम दिन खलिहान समेटबाक बदला एक बोरा धान देबाक चलन अछि। आवश्यक कारणसँ नन्दू ओहि दिन अनुपस्थित रहैत अछि तँ ओकर हिस्सा पर विवाद उठैत अछि। टोली बुझैत अछि जे बोरा केवल उपस्थितिक पुरस्कार नहि, कटल धान, रस्सी, औजार आ खलिहान समेटबाक सामूहिक श्रमक बदला अछि। नन्दूक बदली काजक पालि तय होइत अछि आ ओकर हिस्सा बचैत अछि। अगिला मौसम लेल नियम शुरूहिसँ स्पष्ट कएल जाइत अछि।

कथा ११२० · मेड़क नाम

जीवछ महतोक तीन बेटामे जमीन बँटला पर खेतक सीमा तँ अलग होइत अछि, मुदा पटवनक पानि पुरान साझा मेड़सँ बहैत अछि। रघुनाथ, देवकान्त आ नवल पानि रोकबाक क्रमपर विवाद करैत छथि। तीनू मेड़क ढाल, फट्टाक ऊँचाइ आ जलक वास्तविक चाल नापैत छथि। अन्ततः जमीनक व्यक्तिगत सीमा बदलने बिना जलनिकासक साझा मुँह आ ओकर रखबारीक नियम निर्धारित कएल जाइत अछि।

कथा ११२१ · सूखल नहरक लेखनी

छओ वर्षसँ बन्द नहरक पुरान जलमापक रातिमे फेर रेखा खींचय लगैत अछि। हरिनाथ झा आ सहयोगीसभ बुझैत छथि जे भुलाओल सेवा-निकाससँ रातिक पानि छोड़ल जाइत अछि। खोजमे बीस वर्ष पुरान गलत जल-रपट आ बनसीलालक परिवारसँ भेल अन्याय सामने अबैत अछि। हरिनाथ दबाओल तथ्य आ अपन हस्ताक्षरक चूक स्वीकार कऽ सुधार लिखैत छथि। बादमे जल-प्रवाहक नियमित व्यवस्था शुरू होइत अछि आ मापक वास्तविक धारा दर्ज करैत अछि।

कथा १२२ · कुलुप पर तीन खरोंच

बालिका छात्रावासक बन्द भण्डारक कुलुप पर खरोंच देखिकऽ अधीक्षिका माधवीकेँ चोरीक शंका होइत छनि। पूर्व छात्रा वसुधा भीतर सुरक्षित पुरान व्यक्तिगत चिट्ठीसभ निकालबाक लेल अनुचित ढंगसँ प्रवेश करबाक प्रयास करैत छथि। खोजमे सत्ताइस पत्र भेटैत अछि। घटनाक कारण आ नियमभंग दर्ज होइत अछि, मुदा पत्रक निजता सुरक्षित राखि ओकरा उचित प्राप्तकर्ताक हाथ पहुँचाओल जाइत अछि। वसुधाकेँ अपन पिताक चिट्ठी भेटैत अछि।

कथा १२३ · डाकघरक तेरहम थैला

बन्द होएवला उपडाकघरमे बारह थैलाक अतिरिक्त तेरहम थैला भेटैत अछि। पूर्व डाकपाल शिवनाथ चौधरीकेँ अठाइस वर्ष पहिने गायब भेल डाक-थैला आ वाहक नारायण महतो पर उठल शंका मोन पड़ैत अछि। जाँचमे थैला बन्द रोशनदानक खोखल भागमे अटकल भेटैत अछि। शिवनाथ पहिने बिना गिनती प्रमाणित कएल आ सत्य दबाओल रहबाक चूक स्वीकार करैत छथि। पुरान निष्कर्षक पुनरीक्षण आरम्भ होइत अछि।

कथा १२४ · पनचक्कीक उलटल पाँख

पुरान पनचक्कीक पाँख उलटा घूमैत देखि बृजनन्दन साह पुरान दुर्घटनाक स्मृतिमे डूबैत छथि। जाँचसँ पता चलैत अछि जे किसानसभ खेत बचेबाक लेल नब अस्थायी जल-मार्ग बनौने छथि। एहि खोजक बीच लखनक दुर्घटना, खराब फाटक आ बदलल कार्यालयी रपट सम्बन्धी तथ्य सामने अबैत अछि। बृजनन्दन अपन गलत प्रविष्टि स्वीकार कऽ प्रमाण लिखैत छथि। वर्तमान जलक बाट दर्ज होइत अछि, यद्यपि ओकर वैधानिक स्थिति अलग जाँचक विषय रहैत अछि।

कथा १२५ · उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दु

बन्द छायाचित्रघरक उज्जर पर्दा पर कारी बिन्दुसभ उभरैत अछि। वृद्ध छायाकार भुवनेश्वर झाकेँ राहत-वितरणक पुरान दुर्घटना आ तखनक छवि नष्ट करबाक निर्णय स्मरण अबैत

अछि। अन्विता बचल नकार-पट्टिसभक संरक्षण करैत छथि। जाँचक क्रममे घटनाक अलग-अलग दृश्य सामने अबैत अछि आ पुरान आरोपक जटिलता प्रकट होइत अछि। केवल एक छविक आधार पर पूरा घटना तय नहि करबाक विवेकसँ दृश्य-सामग्री सुरक्षित रखल जाइत अछि।

कथा १२६ · कचहरीक गुम जूता-चिन्ह

जिला कचहरीक मालखानामे बन्द रैक लग जूताक चिन्ह देखाइत अछि, मुदा भीतर प्रवेशक पएर-निशान नहि। माधव मिश्र जाँच करैत छथि तँ छतक फाँकसँ बाँसक सहारे जूता दबाओल जाएबाक तरकीब भेटैत अछि। रागिनी अपन पिताक जमीनक मूल कागज खोजेबाक लेल ई उपाय कएने छथि। रैक नीचाँ मूल बिक्री-पत्र आ जप्ती-सूची भेटैत अछि। माधव अपन पहिनेक बिना देखल हस्ताक्षरक चूक स्वीकार करैत छथि; न्याय लेल जरूरी प्रमाण फेर सामने अबैत अछि।

कथा १२७ · आधा घण्टा बजैत घड़ी

पुस्तकालयक पुरान घड़ीमे घंटी हटल रहितो साढ़े बारह बजे टनकार होइत अछि। शिवनारायण मिश्र खोजैत छथि तँ पुरान आलमारी हिलेला पर तार घड़ीमे टकराएबाक कारण भेटैत अछि। आलमारीक पाछाँ सुधा अपन पिता नरेश पासवानक पुरान शिकायतक कागज खोजैत छथि। अभिलेखमे अनुचित निर्णय आ शिवनारायणक पुरान मौनक संकेत भेटैत अछि। ओ कागज बचा कऽ निर्णयक पुनःसमीक्षा शुरू करैत छथि; यान्त्रिक आवाज बन्द भऽ जाइत अछि।

कथा १२८ · निर्जन घाटक तानल रस्सी

पुल बनला बाद बन्द घोषित नदीघाट पर रातिमे रस्सी फेर तानल देखाइत अछि। हरिनारायण झा पहरा दैत बुझैत छथि जे सुधा आ फेकन सहनी दोसर कातक बस्तीमे रोगी आ औषधि पहुँचाबय डोंगी चलबैत छथि। सरकारी निषेधक बीच बस्तीक वास्तविक स्वास्थ्य-जरूरत अनदेखल अछि। पुरान नौका-दुर्घटनाक बदलल रपट परो जाँच होइत

अछि। हरिनारायण अपन गलत गवाही सुधरैत छथि आ सुरक्षित वैकल्पिक नावक व्यवस्था शुरू होइत अछि।

कथा १२९ · नीला काँचक शीशी

बन्द औषधालयक नील काँचक शीशी अलग-अलग ठाम भेटैत अछि। माधवी झा जाँच करैत छथि तँ मृणालिनीक पुरान दूषित औषधिक घटनासँ जुड़ल प्रमाण खोजबाक प्रयास सामने अबैत अछि। शीशीक सरकबाक दिशा आलमारी पाछाँक कागजक संकेत दैत अछि। आपूर्ति-पर्ची आ परिपत्र पुरान आरोप पर प्रश्न उठबैत अछि, मुदा स्थानीय देरीक जिम्मेदारी सेहो रहैत अछि। माधवी शीशी आ अभिलेख सुरक्षित रखैत छथि, बिना अधूरा प्रमाणक आधार पर अन्तिम निर्णय देने।

कथा १३० · खोइछामे भेटल चाबी

घर-बँटवाराक समय पुरान आलमारीक चाबी कमलाक खोइछामे भेटिते परिवारमे शंका उठैत अछि। अनसुना रहि गेल कागज आ देविकाक प्रयासक खोजमे जानकी देवी द्वारा सुरक्षित पुरान दस्तावेज सामने अबैत अछि। एहिसँ कमलाक अधिकार आ पोखरि जाएबाक साझा बाटक प्रश्न उभरैत अछि। आलमारी खोलि वैधानिक कागजक अर्थ जाँचल जाइत अछि। अन्तिम बँटवारामे कमलाक हिस्सा आ साझा बाट स्पष्ट कएल जाइत अछि; शंकाक स्थान पर वार्ता अबैत अछि।

कथा १३१ · सिझल धानक गन्ध

बरखोंसँ बन्द चाउर मिलसँ रातिमे सिझल धानक गन्ध अबैत अछि। नागेन्द्र झाकैं मिलमे भेल पुरान अन्याय आ बिसेसर सदायक घटना स्मरण अबैत अछि। नब परीक्षणक संग पुरान हिसाब, बदलल प्रविष्टि आ दबाओल तथ्य जँचल जाइत अछि। नागेन्द्र गलत लिखल कागज मेटेबाक बदला सुधार आ वर्तमान हिसाब अलग-अलग राखबाक स्वीकार करैत छथि। मिल नब यन्त्रसँ फेर चलैत अछि; पुरान भट्ठी स्मृति आ प्रमाण लेल बचाओल जाइत अछि।

कथा १३२ · छाजन पर तीन चोट

बन्द विद्यालयक छाजन पर रातिमे लगातार तीन चोट सुनाइत अछि। पूर्व प्रधानाध्यापक शिवनारायण झा खोज करैत छथि तँ विद्यालयक पुरान पाँजी आ रामवृक्षसँ जुड़ल दबाओल हिसाबक प्रश्न सामने अबैत अछि। चन्दा आ सहकर्मीसभक प्रयाससँ सुरक्षित कागज भेटैत अछि, जे पुरान आरोपक आधार पर पुनर्विचार करबैत अछि। शिवनारायण अपन पहिलुका जाँचक चूक लिखित रूपेँ स्वीकार करैत छथि। विद्यालयक भवन नब उपयोगमे जाएबासँ पहिने ओकर ऐतिहासिक कागज सुरक्षित होइत अछि।

कथा १३३ · काठक पेटीक ताप

संग्रहालयक बन्द कक्षमे काठक पेटी रातिमे असामान्य गरम भऽ जाइत अछि। बद्रीनारायण चौधरीक खोजमे दोहरी तली, नमीसँ कागज बचेबाक तिलोत्तमाक गुप्त उपाय आ संग्रह-वस्तुक पुरान निर्गमन-सूची सामने अबैत अछि। नियम तोड़बाक तथ्य अलग दर्ज होइत अछि; संरक्षणक नब व्यवस्था बनैत अछि। बद्रीनारायण पहिनेक देखल सत्य दबा देने रहबाक स्वीकार करैत छथि। पेटी ठंढा पड़ैत अछि, मुदा लापता प्रतिमाक सम्पूर्ण रहस्य अनसुलझल रहैत अछि।

कथा १३४ · माटिक देबालक भीतरक खटखट

माटिक पुरान देबालक भीतर खटखट सुनि निरंजन मिश्र परिवारक जमीन-बँटवाराक विवाद फेर देखैत छथि। खोजमे पुरान नापक कागज आ अनिमाक प्रयासक सुराग भेटैत अछि। पश्चिमक जमीन आ पोखरि जाएबाक साझा बाटक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। निरंजन बिना तात्कालिक फैसला सुनौने अभिलेख, वर्तमान खतियान आ मेड़ अमीनसँ जँचबैत छथि। अन्तिम निर्णय धरि विवादित बाट पर हल रोकल जाइत अछि आ कागज दुनू पक्षक पहुँचमे सुरक्षित राखल जाइत अछि।

कथा १३५ · घुरैत मोहर

पंचायत कार्यालयक गोल मोहर रातिक बाद अपन ठामसँ सरकल देखाइत अछि। हरिनाथ झा जाँच करैत छथि तँ टेढ़ मेज मोहर सरकबाक साधारण कारण निकलैत अछि। मुदा एहि खोजमे रंग-बिरंगक पुरान प्रपत्र, जाली प्रमाण आ निर्गमनक असंगति सेहो सामने अबैत अछि। रचना द्वारा कएल अतिरिक्त कार्यालयी काज आ भीजल मोहरक प्रश्न दर्ज होइत अछि। जाँच जे प्रमाणित करैत अछि से स्वीकारल जाइत अछि; जे अनिश्चित अछि से खुलल रहैत अछि।

कथा १३६ · ओसक सीधा पट्टा

हरिनन्दन यादवक सरिसबक खेतमे लगातार ओस नहि पड़बाक सीधा पट्टा देखाइत अछि। रातिक खोजमे जगेसरक परिवारक लोक द्वारा पुरान साझा बाट नापबाक लेल डोरी तानल जाएबाक बात बुझाइत अछि। जमीन खरीदला बादो लोकक आवागमनक अधिकारक प्रश्न अनसुलझल रहल छल। मालतीक आग्रह पर हरिनन्दन पुरान पत्र देखैत छथि आ दिनक उजासमे साझा नाप करबैत छथि। अन्तिम निर्णय धरि चिन्हक खूँटी रहैत अछि, मुदा रातिक गुप्त डोरी हटि जाइत अछि।

कथा १३७ · टूटल दर्पणक पछिला भाग

शारदा सिलाइघरक टूटल दर्पण पाछाँ कागज सरकबाक रहस्य पुरान धन-लेनदेनक साक्ष्य धरि पहुँचबैत अछि। जनकीक पन्द्रह हजार रुपैयाक लिफाफा हराएलापर कमला पर शंका कएल गेल छल। निष्ठाक सहयोगसँ भेटल पर्ची प्रमाण दैत अछि जे नवलकिशोर एहि रकमक अस्थायी उपयोग कएने छलाह। शारदा पाँजिमे सही तथ्य जोड़ि कमलाक नामसँ निराधार आरोप हटबैत छथि। रकमक हिसाब साफ भेला परो अन्यायसँ भेल मानवीय क्षतिक प्रश्न बचल रहैत अछि।

कथा १३८ · ओसारा पर लाल सूत

पुरान विवाह-घरक ओसारामे बारम्बार लाल सूत भेटला पर शारदा देवीकेँ मृणालक टूटल विवाह स्मरण अबैत अछि। पछाति बुझाइत अछि जे सूत पूर्वक कोठरी नापबाक डोरी अछि। ऋण चुकाबय कोठरी बेचबाक योजना अछि, मुदा मृणालक हिस्साक बात हुनकासँ पहिने नहि भेल। शारदा पुरान बँटवाराक कागज देखैत छथि आ किननिहारसँ पहिने मृणालक मत लेबाक आग्रह करैत छथि। सूतक रेखा सम्पत्तिक नाप आ दबाओल पारिवारिक संवादक प्रतीक बनैत अछि।

कथा १३९ · खसैत अक्षर

बन्द पड़ल मुद्रणालयक पेटीसँ धातुक अक्षर अपने खसैत देखाइत अछि। रघुनाथ झा आ नव सहयोगीसभ खोज करैत छथि तँ बगलक तेल-घानीक कम्पन आ टेढ़ पेटीक कारण भेटैत अछि। एहि विचित्र घटनासँ पुरान छपाइमे बाहर छोड़ल चारि व्यक्तिक नामक प्रसंग सामने अबैत अछि। रघुनाथ, नीरज आ कौशल पुरान अक्षरसँ ओ नाम फेर छापबाक निर्णय लैत छथि। पेटीक भौतिक चूक सुधरैत अछि, दबाओल वाक्य सेहो सार्वजनिक लिखाइमे घुरैत अछि।

कथा १४० · अन्तिम लालटेनक कालिख

तटबन्ध चौकीक पुरान लालटेन पर नव कालिख देखिकऽ नवलकिशोर मिश्रकेँ अठारह वर्ष पुरान बाढ़िक राति स्मरण अबैत अछि। मनोजक सहयोगसँ खतरा-सूचना देबाक वास्तविक समय आ बदली गेल कार्यालयी प्रविष्टि भेटैत अछि। नवलकिशोर दबावमे पहिल सूचनाक समय बदलल मानि लेने रहबाक स्वीकारोक्ति पुरान पाँजिक कात लिखैत छथि। भेल क्षति घुरि नहि सकैत, मुदा गलत अभिलेखकेँ सत्यक संग रहब आवश्यक अछि। कालिख जागल पहरक वास्तविक चिन्ह रहैत अछि।

कथा १४१ · नाम-पट्टीक सात मिलीमीटर

समाज-सहायता कार्यालयमे लेखा-सहायक गोपाल झाक नाम-पट्टी भूलसँ सात मिलीमीटर बेसी ऊँच बनि जाइत अछि। आगन्तुक हुनका अनुभाग प्रभारी जेकाँ मानय लगैत छथि आ व्यवहार बदलैत अछि। मुदा काठक पट्टी वास्तविक पद वा अधिकार नहि बदलि सकैत। जाँच पछाति पट्टी सही नापमे बदलबाओल जाइत अछि। गोपाल अपन पदक भीतर रहि आगन्तुकक कागज देखैत छथि। अनावश्यक पैघ पट्टी भण्डारमे ‘अनुपयोगी’ बनि रहि जाइत अछि।

कथा १४२ · दू हस्ताक्षरक बीचक खाली जगह

सहकारी कार्यालयक भुगतान-पर्चीमे दू आवश्यक हस्ताक्षरक बीच एकटा अनाम खाली चौकोर अछि। कर्मचारी ओकरा काल्पनिक तेसर स्वीकृति बुझि आवेदन रोकैत छथि। नव लिपिक माधव नियम आ छपाइक इतिहास जाँचि प्रमाणित करैत छथि जे एहन कोनो अधिकारी निर्धारित नहि। हरिनारायणक भुगतानक अड़चन हटैत अछि आ नब प्रपत्रसँ चौकोर हटैत अछि। मुदा ‘कार्यालयीय उपयोग’क अस्पष्ट रेखा फेर नब उलझनक सम्भावना छोड़ैत अछि।

कथा १४३ · प्रतीक्षालयक कुर्सी नम्बर शून्य

अस्पतालक नव प्रतीक्षालयमे अड़तालीस क्रमांकित कुर्सीक संग लाल शून्य लिखल पुरान नील कुर्सी अछि। रोगी ओकरा उपचारक विशेष क्रम बुझैत छथि, मुदा भण्डारमे ओकर सही अंक नहि। कर्मचारीसभ जाँचि कुर्सीकेँ उनचासम वस्तुक रूपमे दर्ज करैत छथि आ प्राथमिक-जाँचक प्रवेश-द्वार पर उपयोग करैत छथि। लोकक बोलीमे ओ ‘कुर्सी नम्बर शून्य’ रहैत अछि। वस्तुक अस्पष्ट स्थितिसँ रोगीसेवाक नब व्यवस्था विकसित होइत अछि।

कथा १४४ · छुट्टीक आवेदनक छुट्टी

महाविद्यालयक अवकाश-शाखामे अपूर्ण सत्यापनवला आवेदन लेल बनल अस्थायी श्रेणी निर्णय टारबाक माध्यम बनि जाइत अछि। कर्मचारीसभ स्वीकृति वा अस्वीकृतिक भार नहि

लऽ आवेदनकेँ अनिश्चित रखैत छथि। सुचित्राक अनुभवसँ ई चूक उघड़ैत अछि। समीक्षा पछाति कारणसहित लंबित अवस्था, निर्धारित समयमे निर्णय आ अनधिकृत श्रेणीक समाप्तिक नियम बनैत अछि। सुचित्राकेँ अपन आवश्यक अवकाश समय पर भेटैत अछि।

कथा १४५ · खाली दराजक सूची

नगर कार्यालयक लेखा-परीक्षणमे एकटा खाली दराज पर सवाल उठैत अछि। नीलाम्बर आ शम्भुनाथ ओकर पुरान उपयोग खोजैत छथि तँ गुम भेल मानचित्र आ पोखरिक निकास-मार्गक अभिलेख भेटैत अछि। जानकी देवीक मामलेमे नब जाँच सम्भव होइत अछि। दराजक वस्तु घुरि सुरक्षित ठाम राखल जाइत अछि आ दराज ‘प्रमाणित रिक्त’ घोषित होइत अछि। विडम्बना ई जे कागजक कमी रहितो आब कियो एहि दराजमे किछु रखय नहि चाहैत।

कथा १४६ · पीयर फीता वली नस्ती

कोषागारमे पीयर फीता अनौपचारिक रूपेँ तात्कालिक नस्ती पहिचानबाक संकेत बनि गेल अछि। अनुभवी बटेश्वरक निर्णय पर बहुत किछु निर्भर रहैत अछि, मुदा विशेष अग्रताक लिखित कारण नहि। माधवक प्रश्नक बाद निर्धारित पर्चीमे तात्कालिकताक कारण, तिथि आ जिम्मेदार पदाधिकारीक हस्ताक्षर अनिवार्य होइत अछि। फीताक रंग केवल पहचानक साधन रहैत अछि। विडम्बना ई जे एहि बदलावक आदेशक प्रति सभ पीयर फीतासँ बान्हि शाखासभमे पठाओल जाइत अछि।

कथा १४७ · पदनामक आधा अक्षर

कृषि विपणन कार्यालयमे उमाकान्त मिश्रक नाम-पट्टी पर ‘अवर’क पहिल अक्षर अधूरा रहला सँ ओ पैघ पदाधिकारी जेकाँ देखाइत छथि। एहि भ्रमसँ अधिकार आ किसानक अपेक्षा बीच टकराव बढ़ैत अछि। कौशल्याक तिल-भुगतानक शिकायतमे स्थानीय कार्यालयक जिम्मेदारी स्पष्ट होइत अछि। प्राथमिक शिकायतक पावती, परीक्षण आ जिला कार्यालय धरि पठेबाक नियम बनैत अछि। अधूरा अक्षर फेर पूरा कएल जाइत अछि, पद नहि बढ़ैत, मुदा सेवा स्पष्ट होइत अछि।

कथा १४८ · प्रमाण-पत्रक जन्म-दिन

पुरान प्रमाणपत्रसभकेँ अंकीय अभिलेखमे चढ़बैत नरेश देखैत छथि जे अनेक कागज पर केवल जारी होएबाक वर्ष अछि। यन्त्र पूरा तिथि माँगला सँ सुविधार्थ एक जुलाई भरल गेल अछि। लक्ष्मण मण्डलक जमीनक दावामे एहि मनगढ़न्त दिनांकसँ बाधा उठैत अछि। कार्यालय मूल कागजमे जतबा तिथि उपलब्ध अछि, ओतबे दर्ज करबाक व्यवस्था करैत अछि। सैकड़ों काल्पनिक ‘जन्म-दिन’ हटाओल जाइत अछि।

कथा १४९ · घंटीक अधिकार

उप-पंजीयन कार्यालयक घंटी लिखित नियम बिना काजक अग्रताक संकेत बनि गेल अछि। नवीनकेँ बुझाइत अछि जे घंटी बजलासँ नस्तीकेँ विशेष अधिकार भेटबाक भ्रम होइत अछि। जाँचक बाद घंटी केवल परिचर बजाबय लेल रहैत अछि; जरूरी नस्ती लेल कारणसहित लिखित पर्ची अनिवार्य होइत अछि। घंटीक उपयोगक पाँजी सेहो खुलैत अछि। नवीन बिना घंटीक संकेत एक वृद्ध किसानक सहायता करैत अछि।

कथा १५० · चारि मोहरक पाँचम जगह

सहायता-पत्रमे चारि आवश्यक मोहरक बाद पाँचम खाली चौकोर छपि जाइत अछि। कर्मचारी आ आवेदनकर्ता ओकरा लेल अस्तित्वहीन कार्यालय खोजय लगैत छथि। भोलानाथक जाँचमे नियमक चारिये स्वीकृति स्पष्ट भेटैत अछि। वर्तमान कागज पर अतिरिक्त खाँचा ‘लागू नहि’ लिखि काटल जाइत अछि आ नब छपाइमे हटैत अछि। काल्पनिक पाँचम मोहरक खोजमे भेल लोकक समयक हानि कागजी चूकक वास्तविक परिणाम बनैत अछि।

कथा १५१ · सेवा-झरोखा नम्बर नौ

रेल पार्सल कार्यालयमे आठ झरोखा अछि, मुदा शिकायतक पावती पर नवम झरोखाक उल्लेख अछि। करघाक पुर्जा लेबय आएल धनमन्ती अस्तित्वहीन झरोखा खोजैत भटकैत छथि। एहि चूकसँ कागजक मिलान आ सामान देबाक प्रक्रिया अटकि जाइत अछि।

हरिनारायण सहित कर्मचारीसभ अलग सहायता-मेज आ अनसुलझल मामिलाक पाँजी शुरू करैत छथि। मुदा बिना शिकायत दर्ज करौने घुरि गेल लोकक संख्या अनजान रहैत अछि। धनमन्तीक अनुभव सेवा-व्यवस्थाक त्रुटि देखबैत अछि।

कथा १५२ · फाटकक पासक टेबुल

भूमि-मापन शिविरमे फाटकक पास राखल टेबुल भीतर-बाहर सरकाओल जाइत अछि। पहरेदार जगेसर लग देल कागज औपचारिक प्राप्ति मानल नहि जाइत, जकरा कारण फुलपतियाकेँ बारम्बार घुरय आ मजदूरी छोड़य पड़ैत अछि। शिविरमे आवेदन लेबाक ठाम, पावती आ प्रवेश-तिथि स्पष्ट करबाक नियम बनैत अछि। फुलपतियाक निवेदन दर्ज भऽ मापनक सूचना भेटैत अछि, मुदा छूटल मजदूरी घुरैत नहि। सीमारेखाक जाँचसँ पहिने कार्यालयी प्रवेशक सीमा विवाद बनि गेल छल।

कथा १५३ · लाल पेंसिलक पदोन्नति

लेखा-परीक्षण शाखाक दिनेशकेँ भण्डारसँ भूलसँ लाल पेंसिल भेटैत अछि। वरिष्ठ अधिकारीक विशेष चिन्ह बुझल जाएवला लाल घेरा स्पष्ट टिप्पणी बिना लगिते आदेश जेकाँ प्रभाव पैदा करैत अछि। सरस्वतीक भुगतान-हिसाबमे भ्रम उत्पन्न होइत अछि। दिनेश अपना बनाओल घेराक जिम्मेदारी स्वीकार कऽ कागजक कात पूरा प्रश्न लिखैत छथि। बादमे ओ रंगक भरोसा छोड़ि कारण, तिथि आ अपन नामक संग आपत्ति दर्ज करैत छथि।

कथा १५४ · छायाप्रतिमे हरायल गुलाबी कात

हस्तशिल्प कार्यालयक अस्थायी प्रभारक अन्तिम तिथि आदेशक गुलाबी कात पर लिखल अछि। कारी-उज्जर छायाप्रतिमे ई महत्त्वपूर्ण जानकारी गायब होइत अछि, जाहिसँ राघव चौधरीक अधिकार कखन समाप्त भेल से अस्पष्ट बनैत अछि। सुनीता देवीक देनाइ रुकैत अछि। मीरा जाँच करैत छथि आ राघव अनिश्चित अधिकारमे अन्तिम स्वीकृति नहि दैत छथि। नब आदेशमे प्रभारक तिथि मुख्य पाठमे लिखबाक व्यवस्था बनैत अछि, ताकि रंग गायब भेलो अर्थ सुरक्षित रहय।

कथा १५५ · दिनांकक खाली खाँचा

बाढ़िमे जानकी देवीक घर एके दिन नहि, क्रमशः तीन दिनमे नष्ट होइत अछि। सहायता-प्रपत्र मुदा क्षतिक केवल एक 'ठीक दिनांक' माँगैत अछि। कुमुद झा रेनूक दिन-पाँजीमे बाड़ी, चूल्हि आ कोठरी टूटबाक अलग तिथि देखैत छथि। प्रक्रिया लेल बारह अगस्त मानल जाइत अछि। जानकी देवी सेहो बादमे अपन अनुभव ओही एक दिनक रूपमे कहय लगैत छथि। कथा सरकारी तिथिक सुविधासँ व्यक्तिगत स्मृति बदलि जाएबाक पीड़ा देखबैत अछि।

कथा १५६ · पाँच मिनट देरक प्रमाण

अभिलेखागारक मोहरबन्द चाबी-थैली देबामे पाँच मिनटक देरक आरोप उठैत अछि। नन्दकिशोर झा आ हरिनारायण पासवान जाँच करैत छथि तँ अलग-अलग घड़ीक समय नमिलबाक चूक भेटैत अछि। कनकलता देवीक मुआवजाक काज एहि हिसाबसँ प्रभावित होइत अछि। समय-मिलान, वास्तविक सुपुर्दगी आ हस्ताक्षरक नब पद्धति शुरू होइत अछि। चारि सेकण्डक अन्तर 'शून्य मिनट' लिखबाक विडम्बना रहितो चाबी देब-लेब स्पष्ट होइत अछि।

कथा १५७ · नस्तीक कपड़ाक रंग

सामाजिक सहायता कार्यालयमे नस्तीक कपड़ाक रंग शाखा पहिचानबाक मुख्य साधन बनि गेल अछि। बैंगनी कपड़ा समाप्त भेला पर विधवा-सहायताक नस्ती हरियर कपड़ामे बान्हल जाइत अछि आ गलत शाखामे पहुँचैत अछि। मैथिली चौधरी एहि चूकक श्रृंखला खोजैत छथि। नब व्यवस्थामे टिकाउ पट्टी पर शाखाक नाम आ पहिल पृष्ठक विषय पढ़ब जरूरी मानल जाइत अछि। आब कपड़ाक रंग विषयक स्थान नहि लैत अछि।

कथा १५८ · एक कार्यालय, दू नाम

लघु सिंचाइ आ जल-संरक्षणक दू शाखाक विलय भेलो कार्यालयमे दू मोहर, दू पत्र-मुख आ पुरान बैंक-परिचय चलैत अछि। प्रभाकर झा देखैत छथि जे एहि दोहरापनसँ कुंअरपुरक

सिंचाइ फाटकक काज अटकि जाइत अछि। बैंक सेहो कार्यालयक विधिक पहचान पर प्रश्न उठबैत अछि। अन्ततः एक नब नाम, खाता आ मोहर मान्य होइत अछि। पुरान मोहर इतिहासक रूपमे भण्डारमे रहैत अछि, नागरिकक पत्र पर नहि।

कथा १५९ · सीढ़ीक दोसर पायदान

जिला अभिलेख भवनक सीढ़ी टूटला पर ऊपरक शाखा धरि आगन्तुकक पहुँचनाइ कठिन होइत अछि। वरिष्ठ लिपिक शम्भुनाथ जनसहायता लेल सीढ़ीक दोसर पायदान लग अस्थायी मेज राखैत छथि। एहि ठाम खतियान आ नकलक प्रश्न पर सहायता भेटय लगैत अछि। सीढ़ी मरम्मत भेला बादो मेज जनताक उपयोग कारण बचल रहैत अछि। भवनक सूचीमे ओकर सही स्थान दर्ज होइत अछि, यद्यपि लोक 'दोसर पायदान' कहि चिन्हैत रहैत अछि।

कथा १६० · अन्तिम पाँतिक अधिकारी

जिला विकास कार्यालयक पद-पाँजीमे एक खाली अन्तिम पाँतिक सोझाँ वेतन-बजट लिखल अछि। राघव चौधरी जाँच करैत छथि तँ ई पुरान सारणी-चूक निकलैत अछि, स्वीकृत पद नहि। एहि बीच वास्तविक काज करैत रुक्मिणीक अस्थायी स्थितिपर विचार होइत अछि। हुनका लेल निश्चित अवधि, काज, पदनाम आ वेतनक स्वीकृति भेटैत अछि। खाली काल्पनिक पद हटैत अछि आ वास्तविक कर्मचारीक नाम अलग सूचीमे स्पष्ट दर्ज होइत अछि।

कथा १६१ · तीन ठाम उपस्थित

जगदीश पासवानक बेटी सुषमाक छात्रवृत्ति एहि कारण रोकल जाइत अछि जे समेकित पाँजी पिता कें तीन ठाम एकहि समय उपस्थित देखबैत अछि। गाममे माय, शहरमे परिवार आ रातिक भण्डारमे ड्यूटी—तीनू विवरण अलग सन्दर्भक अछि। प्रीमलता मिलानक त्रुटि खोजैत छथि। स्थायी पारिवारिक पता, वर्तमान निवास आ कार्यगत उपस्थिति अलग होइत अछि। सुषमाक सहायता चालू होइत अछि आ आन समान मामिलाक सुधार सेहो शुरू होइत अछि।

कथा १६२ · बन्द कोठरीक खुलल शाखा

जिला प्रमाण केन्द्रक कोठरी सत्ताइसमे शाखा नियमित चलैत अछि, मुदा अग्नि-सुरक्षा नक्शामे ओकरा स्थायी रूपेँ बन्द देखाओल गेल अछि। निरीक्षण भेलापर भवनक कागजी स्थिति आ वास्तविक कार्यालयक विरोधाभास उजागर होइत अछि। नरेश, रेवती आ चन्दन नागरिकक काज, सुरक्षित निकास आ अभिलेखक स्थिति एक संग सम्हारैत छथि। नव सुरक्षा-नक्शा आ व्यवस्था बनैत अछि। पुरान नक्शा अधूरा अभिलेखक उदाहरण बनि सुरक्षित रहैत अछि।

कथा १६३ · उच्चारणक दोसर नाम

स्वर-आधारित उपस्थितिक यन्त्र ‘क्षेमनारायण झा’क नाम सही नहि सुनि ‘सेम नारायण झा’ लिखैत अछि। यन्त्रक सुविधा लेल वास्तविक नाम बदलबाक प्रस्ताव उठैत अछि। अन्ततः अधिकृत नाम आ उच्चारण-संकेत अलग-अलग खाँचा बनैत अछि। क्षेमनारायण यन्त्रकेँ बुझए योग्य ध्वनि बोलि उपस्थिति दर्ज करबैत छथि, मुदा सेवा-पुस्तिकामे अपन मूल नामे रखैत छथि। ऋचा कर्णकेँ ओ समझबैत छथि जे यन्त्रक कान मनुष्यक पहचानक स्वामी नहि अछि।

कथा १६४ · प्रपत्र जे अपन उत्तर पहिने माँगैत अछि

प्रभा देवीक सिलाइ-समूह सहायता लेल आवेदन करैत अछि, मुदा प्रपत्र जमा होएबासँ पहिने ओहि आवेदनक अन्तिम अंक माँगैत अछि। लिपिक नवलकिशोर पूर्व-अंकक बाट खोजैत छथि। आवेदन आगाँ बढ़ि पहिल किस्त भेटैत अछि, मुदा एके मामलेक तीन अंक बनि जाइत अछि। प्रभाकेँ सभ अंकक सूची रखबाक पड़ैत अछि। बादक प्रपत्रमे पूर्व-अंक सेहो अनिवार्य भऽ नव गोलचक्कर बनैत अछि।

कथा १६५ · आधा दिनक कर्मचारी

शान्ति देवी भोर छओ सँ दस बजे धरि सफाइ करैत छथि, मुदा सरकारी प्रणालीमे ‘आधा दिन’ दुपहरिया पालि मानल गेल अछि। दुर्घटना-रपट आ चिकित्सकीय विश्रामक अधिकार

एहि चूकसँ अटकैत अछि। वास्तविक चारि घण्टा आ निश्चित घड़ीक समय अलग दर्ज करबाक निर्णय होइत अछि, जाहिसँ हुनकर मजूरी सुरक्षित होइत अछि। नब परिचय-पत्र पर फेर गलत दुपहरक समय छपि जाइत अछि। पहरेदार ओकर कात ‘भोर’ लिखि वास्तविकताक स्मरण करबैत छथि।

कथा १६६ · मोहरबन्द कोठरीक काज

शिक्षकसभक सेवा-अभिलेख राखल कोठरी लेखा-जाँचमे मोहरबन्द होइत अछि। चन्द्रकला देवीक पेंशनमे दू वर्षक सेवा छुटि गेल अछि, मुदा मूल पाँजी भीतर बन्द अछि। अभय आ निर्मला बाहर उपलब्ध प्रमाणसँ पुनर्निर्मित अभिलेख बनबैत छथि। कोठरी खुलला पर मूल आ नब प्रमाण एक-दोसरासँ मिलाओल जाइत अछि। चन्द्रकलाक पेंशन सुधरैत अछि आ हुनकर निजी प्रति सेहो जाँचक स्रोतक रूपमे बचल रहैत अछि।

कथा १६७ · अनुवादित गाम

अंकीय पता-प्रणाली ‘पिपराही’ आ ‘पिपरही’ नामक दू अलग गामकेँ रोमन अक्षरमे एक्के रूप दैत अछि। एहि कारण सहायता आ जाँचक पत्र गलत ठाम पहुँचैत अछि। मालती आ सुधीर स्थानीय नाम, प्रखण्ड आ स्थान-अंकक सहारे नागरिकक मामिला सुलझबैत छथि। मूल प्रणालीक नाम-चूक लम्बा समय धरि रहैत अछि। हाटमे दूनू गामक अलग पत्र-पेटी आ पूब-पच्छिमक संकेत लोकक वास्तविक बाट सुरक्षित रखैत अछि।

कथा १६८ · छुट्टीक दिनक उपस्थितिक आदेश

पहिनेसँ निर्धारित अनिवार्य पहचान-सत्यापनक दिन राजकीय छुट्टी घोषित होइत अछि। अर्चना झाकेँ छुट्टी आ कार्यालयमे उपस्थिति देबाक विरोधी आदेश मिलैत अछि। छुटल सत्ताइस कर्मचारी लेल दोसर अवसर आ शिविरमे उपस्थित तिरासी कर्मचारी लेल प्रतिपूरक विश्राम स्वीकृत होइत अछि। आगाँ छुट्टी घोषित भेलापर अनिवार्य शिविर बदलबाक नियम बनैत अछि। वास्तविक छुट्टी ओहि दिन स्थापित होइत अछि जखन कार्यालय नहि खोलल जाइत।

कथा १६९ · शिकायत जे पूछलासँ जन्मल

बाढ़ि-पुनर्वास सहायता लेल चन्द्रकला देवीक आवेदन चारि माससँ लंबित अछि। ओ केवल ओकर वर्तमान स्थिति पूछैत छथि, मुदा यन्त्र प्रश्नकेँ औपचारिक शिकायत मानि मूल आवेदन विवादित करैत अछि। विद्यापति मिश्र आ सहकर्मीसभ जिज्ञासा आ आपत्तिक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। त्रुटिपूर्ण शिकायत बन्द भेला पर सहायता चालू होइत अछि। प्रणालीमे बादमे 'स्थिति-जिज्ञासा'क अलग विकल्प जोड़ल जाइत अछि।

कथा १७० · स्कैनरक कारी छाँह

सुमित्रा देवीक पारिवारिक पेंशन पुरान सेवा-प्रमाणपत्रक अंकीय छविमे कारी रेखा देखिकऽ रोकल जाइत अछि। माधव झा मूल कागज आ ओही खेपक आन छवि जाँचि बुझैत छथि जे ई रद्दक चिन्ह नहि, स्कैनरमे क्लिपक छाँह अछि। साफ नब छवि बनैत अछि, पुरान छवि प्रमाणक इतिहास लेल बचैत अछि। सुमित्राक बकाया भुगतान जारी होइत अछि। केवल छायाकेँ निर्णयक आधार नहि बनएबाक नियम शुरू होइत अछि।

कथा १७१ · बाहर पठाओल भीतरक पत्र

बरखाक समय जिला अभिलेखागारक उत्तरी कोठरी भीजबाक खतरा मे अछि। अभिलेख सरकएबाक आन्तरिक आदेश भूलसँ बाहरी डाकमे चलि जाइत अछि, जाहिसँ कार्यालय अपनहि पत्रक प्रतीक्षा करैत अछि। कागजक औपचारिक यात्रा पूरा होएबासँ पहिनहि कर्मचारीसभ भीजैत गठरी सुरक्षित दक्षिण कक्षमे हटा दैत छथि। बादमे आन्तरिक आ बाह्य पत्रक अलग प्रक्रिया बनैत अछि। कथा वास्तविक संरक्षण आ आदेशक कागजी यात्राक अन्तर देखबैत अछि।

कथा १७२ · नियुक्तिक पहिल दिन

विनयकान्त नियुक्ति-पत्र लऽ भूमि-अभिलेख कार्यालयक पहिल दिन पहुँचैत छथि आ काज शुरू करैत छथि। मुदा कर्मचारी-अंक आ कार्यभार-पाँजिक मेल नहि बैसला सँ हुनकर आधिकारिक नियुक्ति-दिन विवादित होइत अछि। प्रवेशक समय, उपस्थितिक पत्र आ

कएल काजक प्रमाण अलग-अलग देखल जाइत अछि। कार्यभार-दिन निर्धारणक नब पाँजी खुलैत अछि। विनयकान्तक अपन निर्णय बाँकी रहितो अगिला कर्मचारीक पहिल दिनक प्रमाण सुरक्षित रखल जाइत अछि।

कथा १७३ · एके नामक दू वेतन

कृषि कार्यालयमे रामनरेश साह नामक दू कर्मचारीक पिताक नाम आ जन्मतिथि सेहो समान अछि। अंकीय यन्त्र हुनका एक व्यक्ति मानि अवकाश, वेतन आ पदोन्नतिक लेखा गड़बड़ करैत अछि। नीलिमा नियुक्ति-वर्ष, गाम, कर्मचारी-अंक आ वास्तविक उपस्थितिक सहायता सँ दूनूकेँ अलग पहिचान दैत छथि। पुरान अभिलेखक क्रमशः सुधार शुरू होइत अछि। प्रणालीमे एके नामक दू मनुष्यकेँ स्वतः एक नहि करबाक चेतावनी जोड़ल जाइत अछि।

कथा १७४ · उपस्थितिक प्रमाण लेल अनुपस्थित

कृषि क्षेत्र-सहायिका पूनम केँ अपन मैदानी उपस्थितिक प्रमाण लेल मुख्यालय जाए पड़ैत अछि। जखन ओ ओतय सत्यापन करबैत छथि तखन निरीक्षण-दल हुनका कार्यक्षेत्रमे अनुपस्थित मानैत अछि। एक्के समय दू ठामक अपेक्षाक विरोधाभास उघड़ैत अछि। मासिक सत्यापनक तिथि अलग-अलग आ आधा दिनक समय-सीमा बनैत अछि। फेरो सत्यापन लेल क्षेत्र छोड़बाक दबाव बचैत अछि, जाहिसँ असली कृषिसेवाक समय घटैत अछि।

कथा १७५ · सुधार-पाँजिक मूल पृष्ठ

भूमि-अभिलेखक मूल पृष्ठ काटल नहि जाइत, सभ सुधार अलग पाँजीमे लिखल जाइत अछि। सीता देवी आ रामवृक्षसँ जुड़ल जमीनक अनेक संशोधनक प्रभावी तिथि स्पष्ट नहि रहने वर्तमान स्वामित्व आ पुरान ऋणक उलझन उठैत अछि। नेहा आ सुरेश मूल अभिलेख, सुधार आ लागू होएबाक दिनक्रम मिलबैत छथि। सीता देवीक वर्तमान अधिकार स्पष्ट होइत अछि। प्रमाण बनबैत समय केवल आखिरी नाम नहि, संशोधनक समय सेहो जाँचेबाक नियम बनैत अछि।

कथा १७६ · प्रेषक-विहीन लिफाफा

सामाजिक सहायता कार्यालयक प्राप्ति-मेज पर एक मोहरबन्द लिफाफा भेटैत अछि जाहि पर प्रेषकक नाम नहि। अंकीय पाँजी अज्ञात व्यक्तिक पत्र स्वीकार नहि करैत अछि। रमा झा आ सहकर्मीसभ अस्थायी प्राप्ति-अंक देलाक बाद पत्र खोलैत छथि। भीतर सात लाभार्थीक गलत अभिलेख सुधरबाक सूचना भेटैत अछि, जे जाँचमे उपयोगी सिद्ध होइत अछि। बादमे अज्ञात प्रेषक लेल अलग खाँचा बनैत अछि, ताकि परिचयक अभावमे सत्यापन योग्य सूचना हराय नहि।

कथा १७७ · छायाहस्ताक्षर

सहायता-स्वीकृतिक प्रशिक्षण-प्रारूपमे अधिकारीक पुरान हस्ताक्षरक छवि नमूना रूपमे राखल जाइत अछि। ओ छवि वास्तविक पत्र पर छपि स्वीकृति बुझायल लगैत अछि आ कमला देवी सहित अनेक लाभार्थीकेँ विधिवत निर्णय सँ पहिने भुगतान होइत अछि। अधिकारी मीरा कर्ण स्पष्ट करैत छथि जे हस्ताक्षरक आकार हुनकर अछि, मुदा ओहि पत्रक निर्णय नहि। जाँच पछाति योग्य मामिलाक वास्तविक स्वीकृति देल जाइत अछि आ नमूना-हस्ताक्षर हटाओल जाइत अछि।

कथा १७८ · क्रमांक ०००

नब वर्षक पहिल आवेदन मालती देवी दैत छथि, मुदा क्रमांकन-प्रणाली हुनका ‘०००’ अंक दैत अछि जे परीक्षण लेल सुरक्षित मानल जाइत अछि। कागज जमा भेलो मान्य पावती नहि बनैत अछि। अर्चना झा प्राप्तिक समय आ सत्यापनक प्रमाण जुटबैत छथि। विशेष निर्णयसँ ‘०००’ वास्तविक आवेदन मानल जाइत अछि आ मालतीक सहायता स्वीकृत होइत अछि। नब नियम बनैत अछि जे सेवा शुरू होएबासँ पहिने यन्त्रक प्रारम्भिक परीक्षण समाप्त रहय।

कथा १७९ · जीवितक गवाह

देवनारायण मंडलक अंगुली-चिन्ह साफ नहि उठैत अछि, तेँ वृद्धावस्था सहायताक जीवित-प्रमाण लेल दू गवाह चाही। पहिल गवाह हरिहर अपन प्रमाण दैत छथि, मुदा दोसर

गवाहक सत्यापन सँ पहिने हरिहरक मृत्यु होइत अछि। यन्त्र पहिल गवाही अमान्य करैत अछि। रूपा बुझबैत छथि जे गवाहीक वैधता ओकर देल गेल क्षण पर आधारित होएबाक चाही। सुधारक बाद देवनारायणक सहायता चलैत अछि आ मृत गवाहक पहिने देल सत्य प्रमाण सुरक्षित रहैत अछि।

कथा १८० · बन्द विभागक अन्तिम काज

पुनर्वास प्रकोष्ठ औपचारिक रूपेँ समाप्त भऽ गेल अछि, मुदा कमला देवीक बारह वर्षसँ अटकल जमीन-मुआवजाक अन्तिम निर्णय बाँकी अछि। लिपिक शशिकान्त कार्यालयक नाम, मोहर, अधिकारीक अधिकार आ निष्क्रिय कर्मचारी-अंकक बीच कागज चलबैत छथि। विशेष आदेशसँ कमलाकेँ शेष मुआवजा भेटैत अछि। मुदा शशिकान्तक अपन मानदेय आ औपचारिक सेवा-समाप्ति अटकल रहैत अछि। विभाग बन्द भेलाक बादो ओकर मानवीय दायित्व स्वतः समाप्त नहि होइत।

कथा १८१ · दू टिकट

गणेशकेँ दिल्लीमे तीन मासक निर्माण-काज आ पत्नी ललिताकेँ पटनामे स्वास्थ्य-सहायिका प्रशिक्षणक अवसर भेटैत अछि। घरक बचत दुनूक खर्च नहि उठा सकैत। गणेश चुपचाप अपन टिकट घुराकऽ ललिताक शुल्क जमा करैत छथि, आ ललिता सेहो अपन टिकट घुराकऽ गणेशक पंजीयनक खर्च दैत छथि। स्टेशन पर दूनूकेँ एक-दोसराक त्याग बुझाइत अछि। रेलगाड़ी छूटि जाइत अछि, मुदा आगामी अवसरक आशा बचैत अछि। एक-दोसरसँ स्पष्ट बात करबाक महत्त्व सामने अबैत अछि।

कथा १८२ · कंगनक डिब्बा

सरिता माएक देल कंगन बेटी मंजरीक विवाह लेल बरखों सँजोने छथि। सोनारक जाँचमे ओ सोना नहि, सुनहरा परतवला पित्तरि निकलैत अछि। डिब्बाक नीचाँ माएक पत्र आ रसीदसँ बुझाइत अछि जे असली सोना पहिनहि बेचि परिवारक गिरवी पड़ल आँगन आ कोठली छुड़ाओल गेल छल। मंजरी विवाहमे ओ बनौटी कंगन आ पत्रकेँ परिवारक स्मृतिक रूपमे स्वीकार करैत छथि। असली सम्पदा धातुमे नहि, बाँचल घर आ मातृ-त्यागमे अछि।

कथा १८३ · लाल स्वेटर

मीरा अपन दिवंगत पिताक पुरान भूरा कम्बल फेंकय नहि चाहैत छथि, कारण ओकर संग बाढ़ि आ बचपनक अनेक स्मृति जुड़ल अछि। सरस्वती देवी सेहो बेटी लेल नव गरम वस्तु चाहैत छथि। दूनू अपन-अपन गुप्त प्रयत्नसँ पुनर्बुनाई केन्द्र पहुँचैत छथि। एक्के कम्बलक ऊनसँ बेटी लेल लाल स्वेटर आ माए लेल हलुक कम्बल बनैत अछि। दूनूमे बचल कारी तन्तु पुरान स्मृतिक जोड़ बनि रहैत अछि।

कथा १८४ · पोखरिक ओहि पार

माधव शहरसँ घुरि पोखरिक ओहि पारक जमीन नापबाक कागज लऽ पिता हरिमोहन झासँ बात करैत अछि। लाल सूतसँ बाँधल सीमापर गामक स्त्री-बच्चा रोज छोट बाटसँ गुजरैत छथि। जमीनक बढ़ैत दाम आ साझा आवागमनक बीच तनाव अछि। पिता माएक पुरान चलन स्मरण करबैत छथि। ढीला खूँटा लग बच्चासभकेँ पार करबैत माधव सूत उठबैत अछि आ खूँटा कठोर माटिमे भीतर गाड़बाक विचार करैत अछि। कथा निर्णायक घोषणाक बदला व्यवहारमे बदलैत संवेदनशीलता देखबैत अछि।

कथा १८५ · तीनटा खाली कुर्सी

अर्चनाक विवाहक भोजमे जनार्दन तीन कुर्सी विशेष रूपेँ अलग रखैत छथि। ई भानसिया रामचरित, पत्तल सम्हारनिहार फुलो काकी आ पानि दैत नन्दू लेल अछि। ओसभ दिनभरि पाहुनक सेवा करैत छथि आ अन्तिम पाँति धरि बैसि नहि पबैत। राति बैसबाक आग्रह भेलो अपन भोजन भानसघरमे करय जाइत छथि। तीनू कुर्सी खाली रहि जाइत अछि। बराबरीसँ बैसेबाक इच्छा आ श्रमिकक अपन आदतिक बीचक दूरी कथा उजागर करैत अछि।

कथा १८६ · बान्ह पर साँझ

नदीक कटाव भाइ जगदीश आ रमाकान्तक खेत निगलि रहल अछि। ओसभ पिता सँ भेटल नाप-डोरी लऽ बचल जमीनक सीमा देखय बान्ह पर अबैत छथि। मुदा टूटैत माटिक सामने खूँटाक पुरान अर्थ घटि जाइत अछि। दूनू लाल चिन्हवला बाँसक खूँटा खेतक सीमा

देखेबाक बदला बान्हक नालीक ढहैत माटि थामबाक काजमे लगबैत छथि। अमीनकेँ नाप पानि उतरला धरि टारबाक कहल जाइत अछि।

कथा १८७ · अन्तिम लोकल

एकतीस वर्षक नौकरीक बाद उपेन्द्र झा रातिक अन्तिम लोकलसँ घर घुरैत छथि। स्टेशन पर हुनकर भेट माधवसँ होइत अछि, जे पुरान धन्धा छोड़ि नब रातिक काज पकड़य जा रहल छथि। उपेन्द्रक निश्चित रेलयात्रा समाप्त होइत अछि, मुदा घरमे बदलल दिनचर्या अपरिचित अछि। माधवक अनिश्चित नब यात्रा शुरू भऽ रहल अछि। परिवार आ कामक स्मृति बाँटि दुनू एक डब्बामे चलैत छथि; एक गोटे उतरि जाइत छथि आ दोसर अन्हार दिस बढ़ैत छथि।

कथा १८८ · आधा गिलास पानि

अस्पतालक प्रतीक्षालयमे जयनारायण आ पत्नी कमला जाँचक परिणाम आ चिकित्सकक निर्णयक प्रतीक्षामे छथि। दुनूक बीच आधा गिलास पानि आ नस्तीक कागज अछि। भीतरी भयक विषय सीधा नहि कहि ओसभ बस, नून-तेल आ घरक साधारण बात करैत छथि। कमला जाँच लेल भीतर जाइत छथि, फेर घुरि आओत छथि; परिणाम एखन स्पष्ट नहि। गिलासक बचल पानि एक-दोसराकेँ देबाक छोट प्रयत्नमे अपनत्व आ चिन्ताक गहिर भाव प्रकट होइत अछि।

कथा १८९ · ओसाराक बल्ब

रामप्रसाद झाक साझा ओसाराक बल्ब बुझि जाइत अछि। अलग-अलग घरमे रहय लगल बेटा सुरेन्द्र आ नरेश अपन-अपन बल्ब अनैत छथि। समस्या बल्बमे नहि, पुरान साझा तारक ढीला जोड़मे अछि। दुनू मिलि चौकी सरकबैत, प्लास्टर खोलबैत आ तार ठीक करैत छथि। बत्ती जरैत अछि, मुदा फर्शक पुरान बँटवाराक रेखा एखनहुँ फिक्का देखाइत अछि। अन्तमे पिता बल्ब बुझा दैत छथि आ साझा चौकी बीचहि मे रहि जाइत अछि।

कथा १९० · दू कट्ठा बालू

नदीक कटावसँ शिवनाथ मंडलक खेतक भाग बालूसँ ढँकि गेल अछि। बेटा बिपिन संग ओ नाप लैत छथि, मुदा सब किछु समाप्त मानि नहि बैसैत। बचल पूबक खेतमे पानि टिकएबाक नाली बनैत अछि। पड़ोसी रामसेवकसँ श्रम आ अतिरिक्त धानक पौधाक साझेदारी होइत अछि। बचल खेतमे रोपनी होइत अछि आ बालूवला भाग खाली रहैत अछि। बिपिन नाप-डोरीक बेकार लगैत गाँठ काटय चाहैत अछि, मुदा पिता रोकैत छथि; हानि मानि आगाँक काज जारी रहैत अछि।

कथा १९१ · बन्द रेडियो

तीन वर्षसँ बन्द पुरान रेडियो पोता सोनू निकालैत अछि। रघुनाथ बाबू ओकरा नसीम मियाँसँ मरम्मत करबैत छथि, ताकि मौसम, नदीक जलस्तर आ खेतीक सूचना सुनल जा सकय। खराब डोरी बदलल जाइत अछि, मुदा पुरान टेढ़ पेंच अनावश्यक रूपेँ नहि हटाओल जाइत अछि। घरमे समाचार आ गीत फेर सुनाइत अछि। रघुनाथ बुझबैत छथि जे चलैत वस्तु केवल नब चमक लेल नहि बदलल जाइत।

कथा १९२ · छत पर राखल जूता

अभयकेँ सूरतक कपड़ा-कारखानामे काज लेल घर छोड़य पड़त। यात्रासँ पहिने ओ भीजल पुरान जूता छत पर सुखबैत अछि। माए, पिता आ नेहा सामान, टिकट, भोजन आ जूताक टूटल तलवाक बात करैत छथि, मुदा विदाइक दुःख स्पष्ट नहि कहैत। भोरमे अभय ओही जूता पहिरि निकलैत अछि। ओकर गेला बाद पिता छत पर जूताक सुखल निशान देखैत छथि आ ईंटसभ हटबैत छथि। साधारण वस्तु परिवारक मौन बिदाइ बनैत अछि।

कथा १९३ · एक कप चाय कम

हरिनाथक दोकानमे पहिले बिहान तीन कप चाह बनैत छल; पत्नी सुमित्रा दूध-संग्रह केन्द्रमे पाँजी लिखबाक नब काज पकड़लाक बाद दू कप रहि जाइत अछि। दोकानक उधार आ ग्राहकक सूक्ष्म जानकारीमे हुनकर पुरान श्रमक महत्त्व हरिनाथकेँ अनुभव होइत अछि।

ओ धीरे-धीरे अपन ढंगसँ नब पाँजी बनबैत आ ग्राहकक संग व्यवहार सीखैत छथि। उल्टा राखल तेसर कप बदलल दिनचर्याक मौन संकेत बनि रहैत अछि।

कथा १९४ · बाँसक पुल

बरखासँ गामक बाँसक पुल कमजोर भऽ जाइत अछि। बारह वर्षसँ जमीनक बाटक विवादमे नहि बजनिहार हरिप्रसाद आ रामजतन पुलक दू कात पहुँचैत छथि। पानिमे फँसल डाढ़ि हटेबा आ पुलकेँ सहारा देबामे दुनू मिलि काज करैत छथि। बच्चा आ वृद्धाकेँ पार करबैत छथि। अगिला भोर मरम्मत लेल बाँस लऽ फेर भेटैत छथि। पुरान विवाद समाप्त नहि भेल, मुदा संकट साझा श्रमक बाट खोलि दैत अछि।

कथा १९५ · अधकटल आम

घर बँटला बाद जनार्दन आ माधवक बीच देबाल अछि, मुदा पुरान आमगाछ साझा रहि गेल अछि। छाजन पर झुकल डाढ़ि काटैत समय बरखा भऽ जाएबासँ डाढ़ि आधा कटल रहैत अछि। राति माधव बाँस लगा ओकर भार थामैत छथि। भोरमे दुनू मिलि डाढ़ि सुरक्षित उतरबैत आ काँच आम जुटबैत छथि। अधकटल आमक दू फाँक अलग-अलग घरमे पहुँचैत अछि। गाछक कटल ठाम पर लेप लगबैत दुनू बचल सम्बन्धक सम्भावना राखैत छथि।

कथा १९६ · माछक जाल

कमला नदीक कटाव धरनीधरक घर लग बढ़ि रहल अछि। बेटा मोहन ऊँचका बारीमे सुरक्षित ठाम देखैत अछि आ बीआ-सामान सरकबैत अछि, मुदा पिता घर छोड़बाक बात नहि कहय चाहैत छथि। माछ मारय गेलापर नदीक खोखर किनार आ बदलल धार देखाइत अछि। ओसारामे दरार बढ़ला पर धरनीधर नब छाजनक तैयारी स्वीकार करैत छथि। भोरमे ओसभ पहिने माछक जाल ऊँचका बारीमे पसारैत छथि।

कथा १९७ · भोरक धुआँ

मालतीकेँ दूरक केन्द्रमे काज करबाक लेल घर छोड़ि बहिनक लग रहय पड़त। यात्राक भोरमे ओ सास-ससुर आ परिवार लेल रोज जेकाँ भोजन बनबैत छथि। सभ सामान आ

बाटक बात करैत छथि, मुदा बदलि रहल घरेलू जीवन पर मौन छथि। सास आगाँक काज सम्हारबाक भरोसा दैत छथि। मालती धानघरक चाबी ओतहि छोड़ि गाड़ीमे बैसैत छथि। चूल्हिक राखि नीचाँ सँ उठैत धुआँ घरक पुरान आत्मीयताक स्मरण बनि रहैत अछि।

कथा १९८ · बिना घंटीक साइकल

माधव झा पुरान साइकल केशो मिस्त्री लग मरम्मत लेल अनैत छथि। ओ रोक, पहिया आ भीतरक नली ठीक करबबैत छथि, मुदा घंटी, टेढ़ सामान-पाटी आ फाटल गद्दी अनावश्यक रूपेँ बदलबय नहि चाहैत। बादमे छड़ी नेने एक स्त्री अबैत छथि आ धीरे-धीरे साइकल फेर चलएबाक प्रयास करैत छथि। ओ बिना घंटी स्वयं आवाज दऽ लोककेँ बाट देबाक कहैत सड़क पर बढ़ि जाइत छथि। पुरान रूप बचबैत गतिशीलता घुरैत अछि।

कथा १९९ · पाँच मिनट देरी

नलकूपक सीमित पानि पाँच घरमे निर्धारित समय अनुसार बाँटल जाइत अछि। महेन्द्र अपन बाछा खोलबाक कारण पाँच मिनट देरीसँ आबैत छथि। बचपनक मित्र दयाकान्त लिखल नियमक आधार पर पानिक धार बदलि देने छथि। महेन्द्रक किछु क्यारी सुखल रहि जाइत अछि आ मित्रतामे ठंढापन अबैत अछि। सोनमाक पालि सेहो समय पर चलबाक अछि। अगिला पटवनमे दूनू फेर समयसँ पहिने एकसंग बैसैत छथि। नियम आ सम्बन्धक बीचक सूक्ष्म तनाव खुलल रहैत अछि।

कथा २०० · उजड़ल मेड़

भारी बरखासँ देवनाथ आ रघुनाथक खेतक बीच मेड़ तीन ठाम टूटैत अछि। पुरान पानिक विवादसँ दूनू परिवारक मेलजोल बन्द छल। बचल खेती लेल ओसभ एक संग माटि भरैत छथि आ पुरान जलनिकासक मुँहक जगह बाँसक नब बाट बनबैत छथि। नवल आ चन्दा फेर मेड़ परसँ विद्यालय जाए लगैत छथि। मेड़ ठाढ़ रहैत अछि, मुदा पानि आ लोकक गुजरबाक बाटो खुलल रहैत अछि।

खण्ड ६

कथा-त्रिधारा • खण्ड–३

१०० कथाक सारांश

कथा २०१ · विद्यालयक जूता

मोती पासवान कैँ अधिया पर छओ कट्ठा खेत भेटबाक अवसर भेटैत छनि, मुदा मकईक बीया किनबाक पाइ आ बेटी सरिताक फाटल विद्यालयक जूता बदलबाक खर्च एकसंग नहि जुटैत अछि। सरिताक घिसल एड़ी देखलाक बाद ओ जूता किनबाक निर्णय लैत छथि आ खेत दोसर किसानक हाथ चलि जाइत अछि। बादमे ओही खेतमे मजदूरी करैत हुनका मकई भेटैत छनि, जाहिमे सँ पाँचटा भुट्टा अगिला बोआईक बीया लेल सुरक्षित राखैत छथि। बेटीक पढ़ाइ आ खेतीक भविष्यक बीच हुनकर कठिन चुनाव कथा कैँ आकार दैत अछि।

कथा २०२ · धानक बोरा

रामबृक्ष यादव पत्नी दुलारीक औषधि लेल टाका जुटेबाक आशामे तेरह बोरा धान सरकारी खरीद केन्द्र लऽ जाइत छथि। नमीयुक्त कहि पूरा खेप घुरा देल जाइत अछि। विवश भऽ ओ एक बोरा कम दाम पर बेचि औषधि किनैत छथि आ बाँकी धान परिवारक संग सुखबैत छथि। दोसर बेर बारह बोरा स्वीकृत होइत अछि, मुदा घटल वजन, ढुलाई आ सस्ता बिक्रीसँ घाटा होइत छनि। रामबृक्ष आर्थिक नुकसानक हिसाब बुझैत छथि, संगहि समय पर औषधि पहुँचबाक आवश्यकताकैँ सेहो स्वीकारैत छथि।

कथा २०३ · पंचायतक नल

पछबरिया टोलाक लेल स्वीकृत सार्वजनिक नल नवलकिशोर सिंहक निजी फाटक भीतर लगा देल जाइत अछि। शुरूआतमे पानि सहज भेटैत अछि, मुदा क्रमशः समयक रोक आ घरक मनमाना नियम स्त्रीसभक दैनिक जीवन बाधित करैत अछि। मालती, शान्ति आ आन स्त्री मिलि तय करैत छथि जे एक गोटाकैँ रोकल जाए तँ सभ संग आवाज उठौत।

नवलकिशोर कैँ अपन मूँगक फसल बचेबाक लेल ओही स्त्रीसभक श्रम चाही होइत छनि। बातचीतक बाद बाँसक टाटसँ घरक निजता अलग होइत अछि आ नल तक निर्बाध पहुँच सुनिश्चित होइत अछि।

कथा २०४ · गोरूक दाम

दुखना यादवक बूढ़ गोरू बसन्त बारह वर्ष धरि परिवारक खेतीक आधार रहल अछि, मुदा आब ओकर पएर खराब अछि आ चारा तथा रबीक जोताइक खर्च बढ़ि रहल अछि। बेटा किशुन ओकरा बेचबाक पक्षमे अछि। दुखना केवल दाम नहि, खरीददार रामसेवकक बथान, पशुक विश्राम आ देखभालक व्यवस्था सेहो जाँचैत छथि। बिक्रीक पाइ सँ खेतक आवश्यक खर्च पूरा होइत अछि। किछु दिन बाद बसन्त कैँ हलुक गाड़ी खींचैत, स्वस्थ देखिकऽ दुखना आश्वस्त होइत छथि, यद्यपि पुरान संगक रिक्तता बनल रहैत अछि।

कथा २०५ · मजदूरी

ईंट-भट्ठा पर रामफल सदा आ हुनकर परिवारक मजदूरी हजार ईंटक गिनती पर निर्भर अछि। छोट-छोट बचल ईंटक संख्या पाँजिमे नहि जुड़लासँ परिवारक अर्जित मजदूरी गायब होइत रहल अछि। साँझक पाठशालामे पढ़निहार चन्दा हिसाब कऽ भेद पकड़ैत अछि आ शेष ईंट अलग चिन्हित करैत अछि। आन मजदूर परिवारक सहयोगसँ पूरा हजार आ बाकी गिनती मजदूरक सामने लिखबाक व्यवस्था बनैत अछि। पुरान सभ बकाया नहि भेटैत अछि, मुदा नव हिसाबमे पचास ईंटो बिना दर्ज भेल नहि रहैत अछि।

कथा २०६ · आधारक औंठा

वृद्धा फुलमन्ती देवीक घिसल अँगुरीक रेखा राशन वितरणक यन्त्र पर नहि पढ़ाइत छनि, फलतः हुनका अनाज नहि भेटैत अछि। पड़ोसी रामचरित अपन औंठा लगा कऽ हुनकर हिस्सा उठेबाक अनौपचारिक उपाय स्वीकार नहि करैत छथि; ओ अस्थायी रूपेँ दू सेर चाउर उधार दैत छथि आ उचित वैकल्पिक सत्यापनक लेल संग जाइत छथि। प्रमाणक आधार पर फुलमन्ती अपन नामसँ राशन पबैत छथि आ उधारो पूरा चुकबैत छथि। अगिला मास

असफल औंठाछाप पर वैकल्पिक प्रक्रिया उपलब्ध होइत अछि। कथा अधिकार, स्वाभिमान आ सहायता बीचक अन्तर उजागर करैत अछि।

कथा २०७ · मकईक खेत

मकईक खेतमे बनसूअरक उपद्रव रोकबाक लेल महेश्वर महतो राति-राति मचान पर पहरा दैत छथि। हुनकर बेटा रतन विद्यालयक गणित-जाँच आ खेतीक रखवारी बीच फँसि जाइत अछि। महेश्वर किछु कच्चा भुट्टा बेचि नुकसान घटबैत छथि आ नींद तथा थकानक कठिनाइ सहैत रतनकेँ परीक्षाक तैयारी लेल रातिक पहरासँ अलग करैत छथि। कटनीमे अनुमानसँ एक बोरा कम उपज भेटैत अछि, मुदा रतन पढ़ाइ समाप्त कऽ काजमे हाथ बँटबैत अछि। बाबू-पुताक बातचीत खेतीक श्रम आ शिक्षाक साझा उत्तरदायित्व देखबैत अछि।

कथा २०८ · बाढ़िक ऋण

कमला नदीक बाढ़ि लक्ष्मण महतोक अनाज, बीया आ खेतकेँ क्षति पहुँचबैत अछि। अगिला बोआई लेल लेल गेल ऋणक ब्याज चुकाबय ओ गेहूँक बदला तीन कट्ठामे जल्दी बिकयवला मटर लगबैत छथि। मटरक कमाइसँ ब्याज चुकैत अछि, मुदा मूल ऋण बाँकी रहैत अछि आ गेहूँक उपज घटैत अछि। कटनीक बाद तीन बोरा गेहूँ बेचि पहिल किस्त देल जाइत अछि। आगामी बाढ़िमे बीया बचाबय लक्ष्मण आ सरजू देवी घरक देवाल पर पहिने सँ ऊँच मचान बनबैत छथि।

कथा २०९ · छोट मास्टर

बेरोजगार स्नातक उपेन्द्र गामक पुरान तेलघानीक ओसारमे बच्चासभकेँ पढ़बैत अछि आ लोकक व्यंग्यसँ ‘छोट मास्टर’ कहबैत अछि। नौकरीक परीक्षामे सफलता नहि भेटलासँ ओकर अपन भविष्य अनिश्चित अछि, मुदा ओ गौरी आ आन बच्चाकेँ रटल उत्तरक बदला प्रश्न पुछब, कारण खोजब आ अपन बोलीमे बुझायब सिखबैत अछि। गौरीक बाबू आरम्भमे शंका करैत छथि, बादमे पढ़ाइ जारी रखबाक अनुमति दैत छथि। विवाहक कोलाहलमे सेहो बच्चासभ प्रश्न लऽ उपेन्द्र लग पहुँचैत अछि; ओकर शिक्षकक असल पहिचान ओतहि उभरैत अछि।

कथा २१० · चूल्हिक धुँआ

योजनासँ भेटल गैस-सिलिण्डर जमुना आ हरिनन्दनक घरमे धुँआ रहित भोजनक सुविधा अनैत अछि; वृद्धा महेसरीक खाँसी सेहो कम होइत अछि। मुदा सिलिण्डर खाली भेलाक बाद ओकर महँग रिफिल तुरन्त सम्भव नहि होइत अछि। परिवार फेर लकड़ीक चूल्हि जलबैत अछि आ बरखामे धुँआ बाहर निकालबाक लेल झिर्री पर टीनक ढलान बनबैत अछि। धीरे-धीरे पाइ जोड़ि गैस भराओल जाइत अछि, तथापि दुनू चूल्हि परिस्थिति अनुसार चलैत रहैत अछि। कथा घरेलू स्वास्थ्य, ईंधनक लागत आ असमान सुविधाक व्यावहारिक सन्तुलन देखबैत अछि।

कथा २११ · एक कट्ठा पोखरि

एक कट्ठाक पोखरिसँ छोट माछ पकड़ि झलो सहनी आ फूलो अपन घरक आवश्यक खर्च चलबैत छथि। डोमन चौधरी रोहू-कतला पालन आरम्भ कऽ पोखरिक घाट बाँस-रस्सीसँ घेरि दैत छथि, जाहिसँ झलोक जीविका प्रभावित होइत अछि। पोखरिमे पानि खराब भेला पर झलो अपन अनुभवसँ निकास आ ताजा पानिक उपाय सुझबैत अछि। डोमन कैँ बुझाइत छनि जे पोखरि सम्हारबाक लेल स्थानीय ज्ञान आवश्यक अछि। अन्तमे घाटक किछु भाग खुलैत अछि, छोट माछ पकड़बाक अधिकार आ माछपालन दूनू सीमित सहमतिसँ चलैत अछि।

कथा २१२ · बीजक थैली

श्यामनन्दन महतो बाजारक संकर भिण्डीक बीज जल्दी उपज आ नीक दामक आशामे किनैत छथि; पत्नी दुलारी घरमे सँ बचाओल देसी बीज सेहो रखैत छथि। बरखाक मारिसँ संकर फसलक किछु पाँति नष्ट होइत अछि। दुलारी पुरान बीज अंकुरा कऽ रिक्त ठाममे बोबैत छथि, जाहिसँ देरीसँ सही, उपज चलैत रहैत अछि। संकर बीज पहिल हाटमे लाभ दैत अछि, मुदा देसी बीज संकटमे सहारा बनैत अछि। अगिला मौसम लेल श्यामनन्दन संकरक कम थैली आ घरक देसी बीज दुनूक व्यवस्था चुनैत छथि।

कथा २१३ · दू बकरी

विधवा कमला देवीक दू बकरी धौरी आ कजरी, हुनकर बेटी सुनीताक महाविद्यालयक खर्च पूरा करबाक चल सम्पत्ति छथि। कजरीक मृत्यु आ धौरीक बीमारीसँ भावी आमदनीक आधार डगमगा जाइत अछि। सुनीताक परीक्षा-पत्र भरबाक लेल कमला चारि दिनक मजदूरी अग्रिम लैत छथि आ बादमे श्रम कऽ ओकर हिसाब चुकबैत छथि। सुनीता पढ़ाइक संग धौरीक देखभालमे हाथ बँटबैत अछि। कठिन बचत आ अतिरिक्त मजदूरीक बीच परीक्षा जारी रहैत अछि; कजरीक खाली खूँटा आ बचाओल रस्सी परिवारक क्षतिक साक्षी बनैत अछि।

कथा २१४ · श्रम कार्ड

सूरतक निर्माणस्थल पर काज करनिहार नन्दलाल पासवान आ आन प्रवासी मजदूरक श्रम कार्ड मजदूर-मुखिया जगेसर अपन बाकसमे राखि लैत अछि। एहि सँ मजदूर अपन पहचानक कागज पर पूर्ण अधिकार नहि रखैत छथि। नन्दलाल श्रमिक सहायता-शिविरमे जानैत छथि जे पाँजि सँ प्रति फेर भेटि सकैत अछि आ मूल कार्ड मजदूरक अपन लग रहबाक चाही। ओ नव प्रति हासिल कऽ जगेसरसँ मूल कार्ड घुरबैत छथि। धीरे-धीरे आन मजदूर सेहो अपन कार्ड लैत छथि। काजक शक्ति-सन्तुलन पूरा नहि बदलैत, मुदा पहचानक कागज द्वारा नियन्त्रण घटैत अछि।

कथा २१५ · माटिक घर

जितन पासवानकेँ आवास-सहायताक पहिल किस्त पर नव ईंटक घर बनबाक आशा जगैत अछि, मुदा दोसर किस्त नहि अएला सँ बरखाक पहिने छत अधूर रहि जाइत अछि। पुरान माटिक घरक टूटल कोठरीक बाँस, चौखटा आ खपड़ासँ परिवार नव देबाल भीतर अस्थायी छाहरि बनबैत अछि। आँधी-बरखामे ई उपाय धानक बोरा आ पोथी बचबैत अछि। जितन आ फुलकुमारी बचल सीमेंटसँ देबालक माथ सुरक्षित करबैत छथि। पक्काक स्वप्न अधूर अछि, मुदा पुरान घरक सामग्री नव घरकेँ तात्कालिक आश्रय दैत अछि।

कथा २१६ · कर्जक कागज

सुगना महतो खेती लेल अठारह हजारक ऋण लैत छथि, मुदा ऋणपत्रक शर्त आ ब्याजक हिसाब पढ़ि नहि सकैत छथि। बेटीक सहायता सँ ओ संख्या चिन्हब आ ब्याज जोड़ब सीखैत छथि। मकईक किछु भाग बेचि समय पर किस्त भरैत छथि, बाँकी अनाजक भाव चढ़बाक प्रतीक्षा करैत छथि। नव ऋणमे पुरान बारह हजार जोड़बाक प्रस्ताव एलापर ओ शर्त पढ़वा कऽ ओकरा टारि दैत छथि। अरहर आ गेहूँक कमाइसँ शेष किस्त चुकला पर रसीदक ‘बाकी—शून्य’ स्वयं चिन्हैत छथि।

कथा २१७ · सामुदायिक धान

सोनबरसा टोलाक सामुदायिक कोठारमे जमा धान संकटग्रस्त परिवारसभक सहारा अछि। सावनमे अनाजक दाम बढ़ला पर किछु सदस्य धान बेचि नगद कोष बनय चाहैत छथि, मुदा मुखिया विमला देवी आ आन लोक भुखायल परिवारक आवश्यकता आगाँ रखैत छथि। संयुक्त हिसाबसँ बुझाइत अछि जे कोठार बेचला सँ गामकेँ जतेक लाभ होएत, परिवारसभकेँ बाहरसँ अनाज किनबामे ताहिसँ बेसी खर्च पड़त। अन्तमे धान उधार बाँटल जाइत अछि, आ कटनी पर बुधनी पहिल बोरा संग निर्धारित अतिरिक्त धान घुरबैत छथि।

कथा २१८ · पहिल फसल

सूरतमे आठ बरख काज कऽ घुरल नयन मंडल खेतीक सभ लागत पाँजिमे लिखि पहिल फसलक योजना बनबैत अछि। ओ बारह मजदूर एक दिनमे भेटबाक अनुमान करैत अछि, मुदा रोपनीक समय पानि आ श्रमिकक उपलब्धता मिलि नहि पबैत अछि। देरिसँ रोपल भागक उपज घटैत अछि। अनुभवी बुधन पासवानसँ नयन सीखैत अछि जे खेतीक श्रम केवल नगद मजदूरी नहि, उपयुक्त समय पर परस्पर हाथ बँटेबाक व्यवस्था सेहो अछि। अगिला मौसमक हिसाबमे ओ ‘बेराबेरी’ आ श्रमक समय केँ स्पष्ट स्थान दैत अछि।

कथा २१९ · मधुबनीक बन्द कोठली

चित्रकार कौशल पासवान केँ अपन बन्द कोठलीक पुरान भित्तिचित्रमे माछक आँखि, कदम्बक डार आ तीन बिन्दु बदलैत देखाइत अछि। शिष्या चन्द्रकला चित्रक वास्तविक स्थिति जाँचैत अछि आ कौशलक हाथ पर ताजा रंगक चिन्ह देखैत अछि। अन्ततः कौशल स्वीकारैत छथि जे रेणुका एहि चित्रमे हुनकासँ बेसी काज कएने छलीह, मुदा ओ हुनकर योगदान दबा कऽ तीन बिन्दु मेटा देने छलाह। कोठली खुलल रहय लगैत अछि। नमी, पुरान रंग आ स्मृतिक कारण चित्रमे होइत देखाइल बदलाव पूर्ण रूपेँ निर्णीत नहि होइत, मुदा कलाकारक दबाओल सत्य प्रकट भऽ जाइत अछि।

कथा २२० · घंटीक आवाज

पुरान हवेलीक देबाल भीतर राति-राति घंटी सन टनकार सुनि शैलकान्त झा बेचैन होइत छथि। आवाज हुनका पुरान अपराध मोन पाड़ैत अछि: सेवक भोला बीमार बेटी पारोकेँ देखय गेल छल, मुदा मालिकक डर सँ शैलकान्त ओकर अनुमति देबाक बात नकारि देने छलाह, जाहिसँ भोलाक नौकरी आ मजदूरी गेल। भतीजीक सहयोगसँ ओ पुरान पाँजिमे सुधार-पत्र लिखि भोला केँ दैत छथि। मरम्मतमे भेटल ढीला जंग लागल तार टनकारक भौतिक कारण सिद्ध होइत अछि, मुदा कागज देलाक बादो तुरन्त क्षमा नहि भेटैत अछि।

कथा २२१ · पोखरिक आँखि

कजराही पोखरिक माछक पहरा देबाक लेल कथावाचक राति मचान पर रहैत छथि। जलघासक बीच कारी गोल चकती केँ ओ पोखरिक 'आँखि' मानि भयभीत होइत छथि। अनजान पदचिह्न, पानिक छपाक आ बदलैत गोल घेरा हुनकर संशय बढ़बैत अछि। एक राति मेड़क माटि धँसला पर ओ पाँकमे फँसि बचि निकलैत छथि। बौकू सहनी पुरान सोता आ पानिक भीतरक प्रवाहसँ घटनाक कारण बुझबैत छथि; मेड़ सुधारल जाइत अछि। तथापि जलघास हटला बादो पानिमे उठल गोल घेरा कथावाचकक भय आ अनिश्चितता पूर्णतः समाप्त नहि करैत अछि।

कथा २२२ · दीवार भीतर

पुरान घरक भीजल देबाल मरम्मत करबैत शशिभूषण चौधरी कें भीतर माटिक सीटीवला चिरै भेटैत अछि। ओ ओकरा अपन बचपन आ मञ्जरीसँ जुड़ल वस्तु मानैत छथि, मुदा बहिन आ पुरान कुम्हारसँ बातचीतमे यादक स्थान, रंग आ घटनासभ पर मतभेद उभरैत अछि। एक स्मृति दोसर स्मृतिसँ गुँथि जाइत अछि, आ वस्तु भेटलाक बाद पुरान दृश्य कतेक बदलि गेल, से तय नहि भऽ पबैत अछि। देबाल फेर बनि जाइत अछि; चिरै तख्ता पर राखल रहैत अछि, मुदा ओकर सत्यापित इतिहास अनिश्चित रहि जाइत अछि।

कथा २२३ · कालिख

पुरान रसोईक देबाल पर कालिखक चिन्ह बेराबेरी उभरैत अछि। मालती कें ओ चिन्ह गौरीक पढ़ाइ आ परीक्षा रोकबाक घटना मोन पाड़ैत अछि। कतेको वर्ष पहिने घरक डर सँ मालती पाछाँक फाटक नहि खोलने छलीह आ गौरी परीक्षा देबाक अवसर गँवा देने छलीह। गौरीसँ फेर भेंट पर ई दबाओल अपराधबोध सामने अबैत अछि। मिस्त्री तेलक पुरान छापक कारण धुँआमे आकृति उभरबाक सम्भावना बतबैत अछि, मुदा नव लेप पर फेर धब्बा उभरि जाइत अछि। कथा पछतावा, स्मृति आ भौतिक संयोगक अस्पष्ट सीमाकें खुलल छोड़ैत अछि।

कथा २२४ · लालटेन

पुरान बीज-भंडारक चौकीदार रामौतार बिजली रहितहुँ हर राति लालटेन जरौने रखैत छथि। सहायक बिरेन्द्र कें हुनकर भयक कारण तखन बुझाइत अछि, जखन आँधीमे लालटेन बुझला पर रामौतार पुरान राहत-अनाज चोरीक रातिक अपराध सुनबैत छथि। अधिकारीक कहला पर ओ फाटकक चाबी देने, लालटेन बुझौने आ निर्दोष मजदूर लक्ष्मण पर गलत साक्ष्य देने छलाह। फाटकक ढीला कड़ी आ छतक खराबी बादमे ठीक भऽ जाइत अछि, मुदा पुरान घटना हुनकर भीतर बनल रहैत अछि। बिरेन्द्र लालटेन सम्हारबाक अर्थ आब भिन्न रूपेँ बुझैत अछि।

कथा २२५ · सात सीढ़ी

छापाखानाक तरहड़ि धरि सात सीढ़ी अछि, मुदा मालिक नवल कैं सातम सीढ़ीक बाद रहस्यमय ‘ठक’ सुनाइत अछि। आवाज हुनका किशोरावस्थाक घटना मोन पाड़ैत अछि: अपन ममिऔत भाइ गोपालसँ ईर्ष्या कऽ ओ अन्हारमे काल्पनिक आठम सीढ़ीक बात कहलनि, जाहिसँ गोपाल गिरि कलाई घायल कऽ बैसल। वर्तमानमे मिस्त्री पता लगबैत छथि जे ढीला लोखंडी काँटी आ काठक टेक देरिसँ आवाज करैत अछि। मरम्मतक बाद ध्वनि बन्द भऽ जाइत अछि, मुदा नवलक भीतर अपराधक स्मृति रहि जाइत अछि; ओ सीढ़ी गिनब छोड़ि दैत छथि।

कथा २२६ · बन्द घड़ीघर

बेनीपट्टीक घड़ी-सुधारक कैं सामनेक बन्द घड़ीघरक काँटा चारि बजि बारह मिनट पर अटकल देखाइत अछि। एक राति सुनल घंटीक आठ चोट हुनका अठाइस वर्ष पुरान घटना मोन पाड़ैत अछि, जखन हुनकर अनुचित व्यवहारसँ घड़ीघरक कर्मचारी मजीद मियाँ पर दोष लागल छल। निरीक्षणमे ढीला धातुक पट्टी आवाजक सम्भावित कारण भेटैत अछि; दोसर साक्षी एक्के चोट सुनने छल। घड़ीसाज मजीदक बेटा समद कैं अपन पुरान झूठ स्वीकारैत छथि। घड़ीघर चुप रहैत अछि, मुदा हुनकर अन्तर्मनक अँटकल समयक सामना आरम्भ होइत अछि।

कथा २२७ · सफेद पाँख

बीज-दोकानदारक बन्द कोठलीमे बेराबेरी सफेद पाँख भेटबाक घटना हुनका अस्वस्थ करैत अछि। ओ पाँख गनैत, चिन्ह लगबैत आ राति जागि पहरा दैत छथि, मुदा पाँखक संख्या आ स्थानक स्मृति मेल नहि खाइत अछि। मरम्मत करैत महेन्द्र छतक पुरान नलीमे फँसल मृत कबूतर आ ओकर पाँख देखबैत अछि; छेद बन्द भेला पर नव पाँख आबब रुकैत अछि। तइयो काजरक बिन्दुवला पाँख बादमे पुरान पाँजिमे भेटैत अछि। ओ ओकरा जरा दैत छथि, मुदा अपन नींद आ स्मरणक विश्वसनीयता पर संशय रहि जाइत अछि।

कथा २२८ · अन्तिम चित्र

लहेरियासरायक छायाचित्रकार विनोद झा मृत व्यक्तिसभक अन्तिम चित्र बनबैत छथि। बाबूक पुरान काठक यन्त्रक धुँधला काँचमे एक अनचिन्हार युवकक मुख उभरैत देखिकऽ ओ व्याकुल होइत छथि। काँचक विशेषज्ञ दाग, इजोत आ कोणक कारण आकृति बनबाक बात बुझबैत छथि। नव काँच लगलापर काज सामान्य भऽ जाइत अछि, मुदा पुरान काँच पर मुख फेर देखाइत अछि। विनोद बुझैत छथि जे देखनिहारक मन अस्पष्ट दागमे पहचानक आकार भरि दैत अछि; अन्तिम चित्र बनबैत काल ई अनुभव हुनकर दृष्टि बदलि दैत अछि।

कथा २२९ · तरहड़िक पानि

बाढ़िक पानि उतरला बाद पित्तरि-काँसक कारीगर अमरेश साह कें अपन तरहड़िमे लगातार बूँद टपकबाक आवाज सुनाइत अछि, जखन कि छत आ देबाल पर नव पानि नहि देखाइत अछि। सहायक जुगल सेहो आवाज सुनैत अछि। नली बन्द करब, बिजलीक बत्ती लगायब आ दिशा चिन्हित करबाक प्रयासक बादो प्रत्येक ध्वनिक कारण स्पष्ट नहि होइत। कौशल्या हुनका निरन्तर माप-जाँचक बेचैनी बुझबैत छथि। अमरेश पाँच साँस लऽ परिस्थिति देखबाक अभ्यास करैत छथि; एक सूखल कटोराक रहस्यमय निशानक बादो ओ अपन काज जारी राखैत छथि।

कथा २३० · रातिक पाँति

मसान-घाटक अस्थायी रात्रि-अभिलेखपाल नीलकण्ठ झा कें मृतकक पाँजिमे अपन नाम धूसर छापक रूपमे देखाइत अछि। ओ पाँति रद्द करैत छथि, मुदा निरीक्षक समझबैत छथि जे ऊपर राखल कागज पर लिखावट दबला सँ छाप बनि सकैत अछि। सम्भावित स्रोत भेटलाक बादो अक्षरक स्थानक पूरा मिलान नहि होइत। पन्द्रह दिनक सेवा समाप्त कऽ नीलकण्ठ अपन नियमित कार्यालय घुरैत छथि। बादमे मसानक पाँजि देखैत ओ पाबैत छथि जे रहस्यक छाप मद्धिम भेल अछि, मुदा खाली पाँतिक प्रति हुनकर सावधानी बनि रहल अछि।

कथा २३१ · साँकल

सकरीक रूपा-कारीगर दीपनारायण साहक घरक मोट दरवज्जा रातिमे साँकल चढ़ाओल रहितहुँ खुलल भेटैत अछि। चोरीक डर सँ ओ राखि, धागा आ पहराक सहारा लैत छथि। रेलगाड़ीक कम्पनक समय दरवज्जाक बाम भाग हिलैत देखाइत अछि। बढ़ई रामउद्गार घुन खायल काठ आ ढीला धुरीक दोष पकड़ि मरम्मत करैत अछि। दरवज्जा फेर स्थिर रहैत अछि, मुदा रातिक हलुक धातुक 'टिक' सुनला पर दीपनारायण धातुक सिकुड़बाक सम्भावना मानैत सेहो साँकलक संग बाम कब्जा जाँचबाक आदति रखैत छथि।

कथा २३२ · धड़कन

चिकित्सक प्रभाकर मिश्र केँ अपन चिकित्सालयक पछिला बन्द कोठलीमे धड़कन जेकाँ आवाज सुनाइत अछि। ई ताल हुनका पुरान रोगी सरयू आ हुनकर मृत्युक समयक असमाप्त स्मृति दिस घुरबैत अछि। नलसाज नली भीतरक चमड़ाक टुकड़ी आ जंग लागल छल्ला खोजि निकालैत अछि, जकर टकराहटसँ आवाज होइत छल। नली हटला पर कोठली शान्त भऽ जाइत अछि, मुदा घरमे अपन नाड़ी सुनैत प्रभाकर फेर ओही ताल खोजय लगैत छथि। बाहरी आवाजक समाधान हुनकर स्मृतिजन्य प्रश्न समाप्त नहि करैत अछि।

कथा २३३ · काला दर्पण

मधुबनीक लहठी-सिन्दूर दोकान चलौनिहार मालती देवी केँ पुरान कारी धब्बावला दर्पणमे कखनहुँ प्रतिबिम्ब देरीसँ हिलैत देखाइत अछि। बेटी चन्दा अनेक बेर बतबैत अछि जे मालती अपन हाथ पहिनहि हिला लेने छलीह। काँचक कारीगर पुरान लेप आ दूहरी छायाक कारण बतबैत दर्पण सुधरैत अछि। नब लेपक बादो मालतीकेँ एक क्षणक विलम्ब बुझाइत अछि, मुदा ओ सम्भावना मानैत छथि जे भेद प्रतिबिम्बमे नहि, अपन देखबाक प्रक्रियामे अछि। अन्तमे ओ दर्पणक परीक्षा छोड़ि प्रत्यक्ष व्यक्ति आ हुनकर काज दिस ध्यान दैत छथि।

कथा २३४ · छत पर पएर

मृदंग मढ़निहार रामबल्लभ दास केँ रातिमे घरक छत पर भारी पएर पड़बाक आवाज सुनाइत अछि, जखन कि छत तक स्थायी सीढ़ी नहि अछि। राखि पसारि पदचिह्न जाँचल जाइत अछि, मुदा कोनो स्पष्ट चिन्ह नहि भेटैत। बरखाक पानि निकालनिहार पुरान बाँसक पनिहार देबालसँ टकरा आवाज देबाक कारण बुझाइत अछि। बान्हलाक बाद शान्ति होइत अछि, तथापि बीचमे फेर किछु धप सुनाइत अछि। पनिहार पूरा हटला बादो एक राति ध्वनि आ हलुक रगड़ सुनाइत अछि। रामबल्लभ रहस्यक पाछाँ दौड़बाक बदला अपन मृदंगक काजमे घुरि जाइत छथि।

कथा २३५ · चिट्ठीक गन्ध

सेवानिवृत्त डाककर्मी शशिनाथ झा केँ पैतृक सन्दूकक पुरान चिट्ठी सँ भिजल सन, माटितेल आ सियाहीक गन्ध बुझाइत अछि। ई गन्ध हुनका डाकघरक पुरान घटनाक स्मरण करबैत अछि, जाहिमे डाक-वस्तु खोलबाक दोष अस्थायी पहरेदार रामफल पर पड़ल आ शशिनाथ भयवश सत्य नहि कहने छलाह। चिट्ठी हवा लगला पर गन्ध घटैत अछि, मुदा बरखा आ आन वस्तुक गन्ध पुरान अपराधबोध फेर जगबैत अछि। शशिनाथ चिट्ठी नहि फेंकैत छथि आ स्मृतिक असहज उपस्थिति स्वीकारैत अपन नियमित काज करैत रहैत छथि।

कथा २३६ · नीलकंठ

मनीगाछीक फूलो देवी नीलकंठ पक्षीक आवाजकेँ अनिष्टक संकेत मानि घरक मखान फोड़बाक आ बाजार जाएबाक काज रोकि दैत छथि। कार्य-विलम्बसँ मालक मात्रा घटैत अछि, मुदा एकटा चोट आ पुरान पारिवारिक स्मृतिसँ हुनकर विश्वास मजबूत रहैत अछि। पुतोहु सरोजा देखैत छथि जे भयक नियम असहमत व्यक्ति सेहो सीखि लैत अछि। एक राति कड़ाहीक दरारसँ उठल आवाज नीलकंठ जेकाँ सुनाइत अछि। अगिला भोर पक्षी सचमुच बाजितहुँ परिवार काज जारी रखैत अछि आ फूलो देवी सेहो चूल्हि नहि बुझबैत छथि।

कथा २३७ · दोसरा कोठली

जयनगरक होटलमे ठहरल कथावाचक कैँ अठारह नम्बरक कोठलीक पाछाँ रातिमे एक दोसर किवाड़ देखाइत अछि, जकर नाम भवनक नक्शामे नहि अछि। भीजल देबालक लेप हटला पर मिस्त्री पुरान बन्द कएल किवाड़क आयताकार ईंट-जोड़ देखबैत अछि। नब लेप लगला बाद किवाड़क आकृति विलीन होइत अछि, मुदा फेर बरखामे नमी सँ उभरि जाइत अछि। भीतरसँ पन्ना उलटबाक आवाज सुनाइत अछि, जकर साधारण स्रोत पड़ोसी कोठली सेहो भऽ सकैत अछि। कथावाचक ठोस देबालक ज्ञान आ अनुभूत रहस्य दुनू संग होटल छोड़ैत छथि।

कथा २३८ · माटिक भीतर

खजौलीक पैतृक घरक धँसल आँगन खोदैत मजदूरसभ कैँ जंग लागल धातुक छोट डिब्बा भेटैत अछि। घरक मालिक कैँ ओकर कुंडी, स्थान आ भीतरक नील वस्तुक स्मरण असामान्य रूपेँ पहिनहि होइत अछि। ओ अपन बाल्यस्मृति आ अनुमान बीच भेद नहि कऽ पबैत छथि। एक राति देह मानो स्वयं पएर गनि आँगनक दोसर स्थान तक पहुँचैत अछि, मुदा ओतय खोदला पर किछु नहि निकलैत। आँगन समतल भऽ जाइत अछि; डिब्बा तख्ता पर रहैत अछि आ मालिकक भीतर देहक स्मृतिक प्रश्न जीवित रहैत अछि।

कथा २३९ · मुद्रांक

अंचल कचहरीमे सरकारी मुद्रांकक पित्तरिक गोल मुख गायब भऽ जाइत अछि, जाहिसँ प्रतिलिपि देबाक काज ठप पड़ैत अछि। कर्मचारी, अधिकारी आ सिपाही खोजब आ रपट लिखबमे उलझि जाइत छथि। अन्ततः मुद्रांकक मुख कार्यालयक सुरक्षित नमूना-नस्ती भीतर भेटैत अछि; ढीला पेचक कारण ओ अलग भेल छल। भविष्यक सुरक्षाक नाम पर मुद्रांक मेजसँ छोट साँकलमे बाँधल जाइत अछि। आब ओकरा खिड़की धरि लऽ जाएब सम्भव नहि होइत आ नागरिकक पाँति आरो लम्बा भऽ जाइत अछि।

कथा २४० · नस्तीक आत्मकथा

सिंचाइ नाला पार करबाक लेल टूटल साँघक मरम्मतिक माँगसँ जन्मल सरकारी नस्ती स्वयं अपन कथा कहैत अछि। सत्ताइस ग्रामीणक छोट निवेदन अलग-अलग शाखा, टिप्पणी, निरीक्षण आ उच्चाधिकारीक आदेशक बीच सात सँ उनसठ पन्नाक भऽ जाइत अछि। ताबत ग्रामीण स्वयं अस्थायी पार-पथ बना लैत छथि। कार्यालयक अन्तिम निर्णय पुनः निरीक्षण धरि सीमित रहैत अछि, आ नस्ती अभिलेखमे चलि जाइत अछि। किछु मास बाद ओही पार-पथक मरम्मति लेल नव निवेदन आबैत अछि। कथा कागजक विस्तार आ नागरिकक वास्तविक आवश्यकता बीचक दूरी पर व्यंग्य करैत अछि।

कथा २४१ · कुर्सी नम्बर सत्रह

सिंचाइ कार्यालयक लिपिक बाँकेश्वर झा खिड़की लगक कुर्सी नम्बर सत्रह पाबय चाहैत छथि। एहि आसक्तिमे ओ पदोन्नतिक अवसर धरि छोड़ि दैत छथि। अन्ततः हुनका सत्रह नम्बरक कुर्सी भेटैत अछि, मुदा ताबत खिड़कीक बाहर नव अभिलेख-भंडारक देबाल बनि चुकल रहैत अछि। धूप, हवा आ सड़कक दृश्य सभ हराइ जाइत अछि। नियमक कठोरताक हवाला दऽ ओ फेर बैसार बदलबाक प्रस्ताव अस्वीकार करैत छथि आ कुर्सीक लाल अंक नव सियाहीसँ गाढ़ करैत छथि। कथा पद आ स्थानक प्रतीकसँ जुड़ल आत्मप्रवंचना देखबैत अछि।

कथा २४२ · नामक वर्तनी

उद्यान कार्यालयक वार्षिक प्रतिवेदनमे अधिकारी नगेन्द्र झाक नाम ‘नागेन्द्र’ छपि जाइत अछि। एकटा अतिरिक्त मात्राक सुधार लेल समिति पर समिति बनैत अछि, लागतक हिसाब चलैत अछि आ ओलावृष्टिसँ पीड़ित किसानसभक आवेदन अटकैत अछि। अधिकारी स्वयं लिखि सुधार प्रमाणित करला पर काज आगाँ बढ़ैत अछि। शुद्धि-पर्ची आबैत-अबैत अधिकारीक स्थानान्तरण भऽ जाइत अछि। नव अधिकारीक हस्तलिखित नाममे फेर वर्तनीक अन्तर देखाइत अछि, मुदा एहि बेर लिपिक बालेश्वर पहिने आवेदनसभ निपटेबाक निर्णय लैत छथि।

कथा २४३ · महान निरीक्षण

माप-तौल कार्यालय निरीक्षणक खबरि पाबि धूर साफ करब, खराब यन्त्र लुकेब आ व्यवस्थित प्रदर्शन बनयबामे जुटि जाइत अछि। जिला निरीक्षक संयोगसँ लगक सहकारी धान-भंडार कैँ कार्यालय बुझि ओतय पहुँचि जाइत छथि। ओ वास्तविक तौल, किसानक शिकायत आ खुलल कार्यप्रणाली देखि प्रशंसात्मक टिप्पणी लिखैत छथि। सरकारी कार्यालय बादमे एहि टिप्पणीकैँ सच बनयब लेल भंडार लग नियमित सेवा आरम्भ करैत अछि। अगिला प्रतिवेदन बनबैत काल अधिकारी प्रदर्शनक बदला वास्तविक कार्यक अनुभव आधार बनबैत छथि।

कथा २४४ · पंखाक प्रस्ताव

अंचल कार्यालयक बिगड़ल पंखा बदलबाक लेल प्रस्ताव सात प्रशासनिक पड़ावसँ गुजरैत अछि। गरमीमे कर्मचारी ओसारामे मेज राखि काज चलबैत छथि, लोक हाथक बेनासँ हवा करैत छथि, मुदा स्वीकृतिमे बेर लगैत अछि। खरीदादेश पहुँचलापर पुरान दर पर पंखा नहि भेटैत, तें नब मूल्यक अनुमति चाही होइत अछि। आसिन धरि नव पंखा लगैत अछि, जखन गरमी घटि चुकल रहैत अछि। कर्मचारी ओसाराक मेज फेर भीतर नहि अनैत छथि, जाहिसँ आम लोकक सुविधा बनल रहय।

कथा २४५ · दफ्तरक देवता

अभिलेख कार्यालयक पुरान अलमारी ‘दफ्तरक देवता’ कहल जाइत अछि, कारण जटिल नस्ती ओतय राखला पर मानो गायब भऽ जाइत अछि। नव लिपिक सुदीप मिश्र चन्द्रेश्वर महतोक अटकल नस्ती खोजैत एहिमे शंका करैत अछि। मरम्मतिक समय अलमारी हटौला पर देबालक फाँकसँ एक सय सत्ताइस पुरान नस्ती निकलैत अछि। कार्यालयकैँ अदृश्य बकायाक वास्तविक भार स्वीकारि आवेदन फेर चलाबय पड़ैत अछि। अलमारी देबालसँ अलग राखल जाइत अछि; एक नव नस्ती देखिकऽ वरिष्ठ लिपिक सेहो ओकरा लुकायबाक बदला पढ़य बैसैत छथि।

कथा २४६ · हस्ताक्षर

कुम्हार रामलोचन पण्डित कैँ विद्युत् चाक लेल स्वीकृत सहायता निकालबाक वास्ते जिला शिल्प पदाधिकारीक एक हस्ताक्षर चाही। ओ कार्यालयक अनेक कोठली घूमैत छथि, जखन कि अधिकारी स्वयं सामान्य वेशमे चाह पीबैत भेटि जाइत छथि। परिचय खुलला पर अधिकारी तुरन्त हस्ताक्षर करि दैत छथि; जकर लेल पूरा दिन लागल, ओ काज किछु क्षणमे भऽ जाइत अछि। घुरैत समय रामलोचन देखैत छथि जे चाह बेचयवालाक भुगतानक कागज फेर सत्यापनक नाम पर भटकेबाक अछि। कथा पहुँचक असमानता आ कार्यालयी चक्करक विडम्बना देखबैत अछि।

कथा २४७ · विशेष टोपी

नव बीज-प्रमाणीकरण पदाधिकारी शम्भुनाथ कर्णक खादी टोपी पर नील धागाक दू टाँका अछि। कर्मचारी हुनकर पदोन्नति आ कार्यकुशलताक रहस्य टोपीमे खोजि एक-जकाँ टोपी बनबाबय लगैत छथि। मुदा पदोन्नति हुनका भेटैत अछि जे टोपी पहिरबे नहि करैत छथि—कर्मठ देवकान्त पासवान कैँ। बादमे बुझाइत अछि जे अधिकारी टोपी पुरान घावकेँ धूपसँ बचाबय पहिरैत छलाह आ नील टाँका हुनकर बेटी फाटल धार पर देने छलीह। तथापि कर्मचारी टोपीक प्रतीक छोड़ि नहि पबैत छथि।

कथा २४८ · चाय समिति

जल-निकासी कार्यालयक अधिकारी कैँ बरखों सँ चन्द्रकला देवीक दोकानसँ आबयवला चाह पसिन्न नहि पड़ैत अछि। चाहक स्वाद, गन्ध, ताप आ मूल्य जाँचबाक लेल समिति बनैत अछि, जकर पाँच बैसारमे चाह-पान पर भारी खर्च होइत अछि। समिति अंतमे अस्पष्ट सलाह दैत अछि, जखन कि चन्द्रकलाक पुरान बकाया भुगतान एखनहुँ अटकल रहैत अछि। दोकानक चाह लगभग पहिने जकाँ चलैत अछि; मात्रा आ चीनीमे छोट परिवर्तनक बीच समिति-व्ययक बिल पहिने निपटाओल जाइत अछि। कथा व्यर्थ प्रक्रियाक वास्तविक आर्थिक भार देखबैत अछि।

कथा २४९ · बिलायल घंटी

पथराही मध्य विद्यालयक १९५६ सँ लटकल पुरान घंटी गायब भऽ जाइत अछि। प्रधानाध्यापक मनबोध झा आ परिचारक महावीर खोज शुरू करैत छथि, मुदा बीचमे स्थापना-दिवस, दानदाता आ नाम दर्ज करबाक राजनीतिक होड़ उठैत अछि। पता चलैत अछि जे नाप लेबाक बहानासँ घंटी उतारि गोदाममे रखल गेल छल। पक्षसभ दोष आ श्रेय पर बहस करैत रहैत छथि, ताबत महावीर घंटी फेर टाँगि दैत छथि। घंटीक आवाजसँ विद्यालयक दैनिक समय-क्रम बहाल होइत अछि, जखन कि ओसारामे नामक विवाद चलिते रहैत अछि।

कथा २५० · प्रमाणित प्रतिलिपि

बाँसक शिल्पी भुवनेश्वर मण्डल कँ जिला मेलाक स्थान लेल आवेदन करैत समय अपन पुरान शिल्प-परिचयपत्रक प्रमाणित प्रतिलिपि चाही। मूल प्रमाणपत्र सामने रखितहुँ लिपिक प्रतिलिपि आ ओकर प्रमाणन माँगैत छथि; प्रत्येक प्रति लेल नब परिचय-कागज आ चक्कर जोड़ाइत अछि। अन्तमे आवेदन जमा होइत अछि, मुदा कार्यालय हुनकर वास्तविक बुनाइ देखबाक आवश्यकता नहि बुझैत अछि। भुवनेश्वर मूल प्रमाणपत्र आ रसीद सुरक्षित रखैत छथि; अपन हथेलीक कटान आ बुनाइक निशानकँ प्रमाणित प्रतिलिपिसँ बाहरक सच्चा परिचय बुझैत छथि।

कथा २५१ · मेजक ऊँचाई

कृषि-यन्त्र कार्यालयक नव पदाधिकारी घुटना टकराएबाक कारण अपन मेज दू इंच ऊँच करबैत छथि। मुदा साधारण बढ़ईगीरीक ई उपाय कर्मचारीसभक बीच पद-प्रतिष्ठाक प्रश्न बनि जाइत अछि। अनेक मेज पर गोटी, गत्ता आ पेंच बदलल जाइत अछि; लोक अपन मेजक ऊँचाई दोसरासँ तुलना करैत छथि। अन्ततः बढ़ई बुधन व्यक्तिगत बैसार आ काजक सुविधा देखिकऽ आवश्यक सुधार करैत अछि। कार्यालयक काज फेर सामान्य होइत अछि, यद्यपि किछु कर्मचारी प्रतीकात्मक ऊँचाई बचौने रखैत छथि।

कथा २५२ · लाल फीता

‘लाल फीता समाप्ति पखवारा’क सरकारी आदेशमे लंबित नस्ती चिन्हब लेल लाल पट्टी लगाबय कहल जाइत अछि। कर्मचारी फीता किनबाक निविदा आ प्रक्रिया बनाबैत छथि, मुदा लिपिक सुमन किछु अटकल नस्ती सीधे निपटाबय लगैत छथि। अनेक आवेदन आगाँ बढ़ैत अछि, जखन कि हजारो मीटर लाल फीता बादमे पहुँचैत अछि। अन्ततः वास्तविक कार्य प्राथमिक बनैत अछि आ बचल फीता भंडारमे राखल जाइत अछि। ‘अवशिष्ट सामग्री’क पर्ची ओही लाल फीता सँ बन्हल रहैत अछि—प्रक्रियाक विरोधाभासक दृश्य चिन्ह बनि।

कथा २५३ · बिसरल आदेश

जयनगरक सामग्री-भंडारमे भारी पाइप मुख्य खुलल फाटकसँ नहि, पोखरिक कातक लम्ब पाछाँ बाटसँ घुमाकऽ आनल जाइत अछि। नव भंडारपाल राघव मिश्र जाँच करैत छथि तँ बुझाइत अछि जे चारि वर्ष पहिलुक अस्थायी प्रतिबन्ध चढ़ान सुधरलाक बादो लागू चलि रहल अछि। मजदूर बेकारक अतिरिक्त श्रम करैत छथि। पुरान आदेश रद्द भेला सम्बन्धी कागज स्पष्ट नहि भेटला पर नव आदेश बनैत अछि आ मुख्य फाटक फेर खोलल जाइत अछि। पुरान दिशा-पट्ट संरक्षणक नाम पर भंडारमे दर्ज भऽ जाइत अछि।

कथा २५४ · सरकारी छाता

पथ-अनुरक्षण विभागक क्रमांक ३८वला छाता बरखों सँ निरन्तर मरम्मति पबैत रहैत अछि। भंडारपाल गोपाल ठाकुर ओकर मरम्मतिक कुल खर्च देखि अचरज करैत छथि, मुदा अधिकारी छाताकेँ सुरक्षित राखब प्राथमिक मानैत छथि। बारम्बारक खर्च रोकबाक लेल छाता टाँगबाक नव खूंटी आ खोल बनाओल जाइत अछि। मुसलधार बरखामे डाकघर जाएवला सेवक सहदेव सरकारी छाता उपयोग करबाक जोखिम नहि लैत आ अपन फाटल छाता लऽ निकलि जाइत अछि। सरकारी छाता पाँजिमे ‘चालू, सुरक्षित’ रहैत अछि, मुदा जनसेवाक उपयोगसँ बाहर।

कथा २५५ · उपस्थिति

सहकारिता कार्यालयमे देरिसँ आबनिहार कर्मचारीक उपस्थिति नियमित करबाक कठोर निर्देश निकलैत अछि। उपायस्वरूप उपस्थिति-पाँजि कर्मचारीसभक घर-घर घुमाओल जाए लगैत अछि, जाहिसँ हस्ताक्षर समय पर भऽ जाइत अछि, मुदा वास्तविक लोक कार्यालयमे देरिसँ पहुँचैत छथि। निरीक्षणक समय पाँजि भरल आ कुर्सी खाली भेटला सँ छल स्पष्ट होइत अछि। पाँजिक बाहर जेबाक व्यवस्था बन्द कएल जाइत अछि। धीरे-धीरे कर्मचारी स्वयं समय सँ पहुँचबाक प्रयास करैत छथि; नरेश परिचारी नियमित रूपेँ पाँजि मेज पर रखैत अछि। कथा दस्तावेजी उपस्थिति आ वास्तविक सेवाक अन्तर स्पष्ट करैत अछि।

कथा २५६ · छायाचित्रयुक्त पहचान

कार्यालयमे छायाचित्रयुक्त पहचान-पत्र अनिवार्य होइत अछि आ अनुभवी चौकीदार रामकिशुन केँ मुँहक चिन्हानसँ बेसी कागज पर भरोसा करबाक आदेश भेटैत अछि। बिजलीक दोकानदार महेन्द्र नकली परिचय-पत्र देखाकऽ कार्यालय भीतर घुसि जाइत अछि, जखन कि पुरान कर्मचारी सेहो पत्र बिसरला पर रुकैत छथि। घटना प्रकाशमे एलापर नव निर्देशमे छायाचित्र आ वास्तविक मुख मिलाबय कहल जाइत अछि। मुदा भोला झाक पुरान छायाचित्र वर्तमान रूपसँ नहि मिललाक कारण असली कर्मचारी फाटक बाहर अटकि जाइत छथि।

कथा २५७ · स्वागत द्वार

फुलपरासक जनसेवा केन्द्रक कठिन पहुँच सुधारबाक लेल रंगीन स्वागत-द्वार, पट्ट, बेंच आ दीपक लगाओल जाइत अछि। विभागीय निधिसँ भीतरक कर्मचारी संख्या नहि बढ़ि सकैत अछि, तें एकमात्र सहायक रामउद्गार केँ सेवा-खिड़की छोड़ि स्वागत-डेस्क पर बैसायल जाइत अछि। आगन्तुकक संख्या बढ़ैत अछि, मुदा आवेदन स्वीकारबाक काज लगभग रुकि जाइत अछि। विधवा पेंशनक सुधार लेल रमकली देवी बेराबेरी घुरैत छथि। जिला दल स्वागतक प्रशंसा करैत अछि, जखन कि भीतरक बन्द खिड़की मूल समस्या बनल रहैत अछि।

कथा २५८ · वार्षिक प्रतिवेदन

ग्रामीण निर्माण प्रमण्डलमे वार्षिक प्रतिवेदन समय पर भेजबाक होड़ लागल अछि। अधिकारी अधूरा निर्माणक छायाचित्र, बैसार आ प्रगतिक संख्या व्यवस्थित करैत छथि; किछु आँकड़ा सत्यापनसँ घटैत अछि। प्रतिवेदन ३१ मार्चक समयसीमा भीतर पहुँचि जाइत अछि आ कार्यालय एकरा प्रशासनिक उपलब्धि मानैत अछि। मुदा मजदूर लखन पासवानक भुगतान एक हस्ताक्षर लेल अटकल रहैत अछि, आ हाट-छाजन सहित किछु कार्य अधूर रहैत अछि। प्रकाशित प्रतिवेदनक सुघर पेटी आ प्रतीक्षारत मजदूर बीचक विरोधाभास कथा केँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।

कथा २५९ · अनुमति

रघुनन्दन चौधरीक तीन पीढ़ी पुरान घर पर निवास-अनुमति सत्यापनक सूचना चिपकैत अछि। अपना घरमे रहबाक स्वीकृति लेल हुनका अनेक दफ्तरक चक्कर काटय पड़ैत अछि। क्षेत्रीय कर्मचारी आ पड़ोसी हुनकर दशको पुरान निवास प्रमाणित करैत छथि, मुदा बिना सूचना जाँचक समय घर पर नहि भेटला सँ प्रक्रिया फेर दोहराइत अछि। अन्ततः डाकसँ स्थायी निवासक अनुमति ओही घरक पता पर अबैत अछि। रघुनन्दन देखैत छथि जे सरकारी कागजक अनुसार ओ आब स्वीकृतिक दिनसँ एतय रहैत छथि, भले जीवन भरि एतहि रहने होथि।

कथा २६० · प्रतीक्षा कक्ष

अनुमण्डलीय चिकित्सालयमे रोगीक भीड़ घटेबाक लेल रंगीन तीर आ अनेक प्रतीक्षा-कोठलीक नब व्यवस्था बनैत अछि। काँधक दर्द देखबय आएल किसान रामसेवक महतो एक कोठलीसँ दोसरमे चलैत-चलैत थाकि जाइत छथि। चिकित्सक आ रोगी अलग-अलग निर्देश पाबिकऽ एक-दोसराक प्रतीक्षा करैत रहैत छथि। रामसेवक अगिला कोठली जाएब छोड़ि दैत छथि, तखन चिकित्सक अन्ततः हुनका भेटि पाँच मिनटमे जाँच करैत छथि। मुदा औषधि लेबाक लेल फेर छठम प्रतीक्षा-कोठलीमे बैसब पड़ैत अछि।

कथा २६१ · नम्बर

जन-अभियोग भवनमे पक्षपात घटेबाक नाम पर शिकायतकर्ता सभकेँ नामक बदला अलग-अलग क्रमांक देल जाइत अछि। खेतक नाला-कार्यक क्षतिपूर्ति माँगय आएल रामलोचन यादव एक दिनमे कएक नम्बर पाबि अपन पहिचानक हिसाबमे उलझि जाइत छथि। भुगतान स्वीकृत भेलापर असली नाम आवश्यक पड़ैत अछि, मुदा पहचान फेर जोड़बाक शाखा बनले नहि अछि। अन्तमे कागज पर पहिनेसँ दबाओल नाम खोलि भुगतान आदेश पूरा कएल जाइत अछि। रामलोचन बुझैत छथि जे संख्या कार्यालयक सुविधा अछि, व्यक्तिक वास्तविक परिचय नहि।

कथा २६२ · खुलल मुकदमा

शिक्षक उदयकान्त पासवान पर विभागीय जाँच शुरू भेलाक पत्र अबैत अछि, मुदा आरोपक विवरण संलग्न नहि भेटैत अछि। ओ आरोप जनबाक आग्रह करैत छथि; कार्यालय आरोप प्राप्तिक स्वीकृति पहिने माँगैत अछि। अनेक चक्कर बाद खुलल लिफाफामे केवल सूचना भेटैत अछि जे मूल आरोप जिला कार्यालयमे राखल अछि। जिला कार्यालय प्रकरणक पंजीकरणक प्रमाण माँगैत अछि, जकरा लेल फेर आरोप चाही। जाँच नव क्रमांकसँ ‘खुलल’ रहैत अछि, आरोप अज्ञात। उदयकान्त ई अनिश्चितता बीच विद्यालयमे नियमित पाठ आ परीक्षा चलबैत रहैत छथि।

कथा २६३ · सीमा

सिरखरिया गाममे प्रशासनिक क्षेत्र ‘क’ आ ‘ख’क नब अदृश्य सीमा बनाएल जाइत अछि। दूध बेचय जाएवला देवनारायण महतो सहित गामक लोककेँ अपन दैनिक आवागमन लेल पर्ची चाही होइत अछि, जखन कि गामक वास्तविक बाट आ परिवार दूनू क्षेत्रमा पसरल अछि। अमीन पुरान पानिक धारसँ सीमा चिन्हबाक प्रयास करैत अछि, मुदा स्पष्ट रेखा नहि भेटैत। अन्ततः सामान्य दैनिक गतिविधि पर्चीसँ मुक्त कएल जाइत अछि, यद्यपि विशेष अवसरक विवाद बचैत अछि। बरखाक पानि बिना रोक दुनू प्रशासनिक क्षेत्र पार बहैत रहैत अछि।

कथा २६४ · सत्यापन

बयासी वर्षक तिलक पासवानक वृद्धावस्था पेंशन जीवित-सत्यापनक अभावमे रुकि जाइत अछि। कार्यालयक कहला पर ओ बेराबेरी घर छोड़ि सत्यापन लेल पहुँचैत छथि, मुदा कर्मचारी घर पर नहि भेटला सँ हुनकर स्थिति अस्पष्ट लिखैत अछि। अन्ततः कागजी सूचीमे हुनका मृत मानि प्रमाणपत्र तैयार कएल जाइत अछि। जीवित तिलक स्वयं अपन मृत्यु प्रमाणपत्र लऽ निरस्तीकरणक आवेदन दैत छथि। अगिला सत्यापन लेल फेर घरमे रहबाक निर्देश भेटैत अछि। कथा जीवनक प्रत्यक्ष साक्ष्य आ सरकारी प्रविष्टिक विपरीत चाल देखबैत अछि।

कथा २६५ · बन्द लिफ्ट

छह-मंजिला सहकारिता भवनक लिफ्टक बटन पर मंजिलक अंक हटाकऽ शाखाक नाम लिखल जाइत अछि। बारम्बार शाखा बदललासँ बटनक नाम वास्तविक मंजिलसँ मेल नहि खाइत अछि। सुरक्षा-परीक्षणमे स्थायी ठहराव-अंक चाही होइत अछि, मुदा अंक हटेबाक प्रशासनिक आदेश बाधा बनैत अछि। आंशिक संशोधन, नब पर्ची आ स्थानान्तरणक स्थगनक बीच लिफ्ट बन्द रहि जाइत अछि। अभिलेखवाहक दीनबन्धु आ आगन्तुक सीढ़ी पर फेर संख्या गनैत छथि, जखन कि लिफ्टक भीतर पुरान अंक एखनहुँ मौजूद अछि।

कथा २६६ · खाली मुहर

जिला कुटीर-उद्योग कार्यालयमे बिना अक्षरक रबरक मुहर लगौने कागज आगाँ नहि बढ़ैत अछि। नव कर्मचारी मुकुन्द प्रश्न करैत छथि जे खाली मुहर आखिर कोन बातक प्रमाण अछि। एहि बीच शिल्पकार चम्पा देवीक अनुदानक नस्ती एहि अनोखा नियममे अटकल रहैत अछि। जाँचक बादो अधिकारी पुरान परम्परा बनौने रखबाक निर्णय करैत छथि, आ निरीक्षणक कागज पर स्वयं मुकुन्दसँ खाली मुहर लगेबैत छथि। अर्थहीन छाप फेर कार्यालयक आवश्यक प्रमाण बनि जाइत अछि।

कथा २६७ · रातिक आदेश

आधि राति आएल प्रशासनिक आदेश एहन अस्पष्ट चिह्नमे लिखल अछि जे गामक कियो ओकर अर्थ नहि बुझि पबैत अछि। तथापि सभकेँ आदेशक पालनक विवरण देबाक कहल जाइत अछि। स्पष्ट निर्देश नहि भेटलासँ लोक साधारण काजो करबाक साहस नहि करैत। स्पष्टीकरणमे कहल जाइत अछि जे सम्भावित आशयक विरुद्ध कोनो काज नहि हो। अगिला राति मैथिलीमे दोसर आदेश अबैत अछि, जाहिमे पहिल आदेश बुझबाक आ ओकर पालन करबाक स्थिति अलग-अलग लिखबाक निर्देश अछि। मुदा पहिल आदेशक अर्थ एखनहुँ अनूदित नहि भेल रहैत अछि।

कथा २६८ · अदृश्य कर

साइकिल मरम्मत करयवला शम्भुनाथ साहक नाम पर ‘समेकित नागरिक सुविधा कर’क माँग अबैत अछि, मुदा ओकर आधार आ गणना कियो स्पष्ट नहि करैत अछि। प्रश्न उठौलापर हुनकर परिवारक नागरिक-सुविधा सम्बन्धी क्रमांक निष्क्रिय कऽ देल जाइत अछि। पुस्तकालय, वृद्धक यात्रा-रियायत, कूड़ा उठेनाइ आ नलक शिकायत—सभ अटकि जाइत अछि। अन्तमे ‘कर शून्य’क प्रमाण भेटैत अछि, मुदा निष्क्रिय क्रमांक चालू करबाक उपाय नहि। करक माँग कागज पर समाप्त होइत अछि, दैनिक असुविधा बनल रहैत अछि।

कथा २६९ · बेठीक जन्मतिथि

बाँसक कुशल कारीगर रामउदित मण्डल वृद्ध शिल्पी सम्मान-राशि लेल आवेदन दैत छथि। अड़तीस बरख पहिनेक पंजीकरणक तिथि गलतीसँ जन्मतिथिक स्थान पर चढ़ि गेल अछि; ताहि कारण कार्यालय हुनकर उमेर मात्र अड़तीस बरख मानैत अछि। अभिलेखक गलती मानल जाइत अछि, मुदा जन्मक दोसर प्रमाण बिना सुधार नहि होइत। दीर्घ अनुभव रहितो ओ वृद्ध शिल्पी-सहायतासँ वंचित रहैत छथि। उलटे कार्यालय हुनका आरम्भिक बाँस-बुनाइ प्रशिक्षणमे सम्मिलित होबाक निमन्त्रण पठबैत अछि।

कथा २७० · एक केवाड़ी कम

नन्दकिशोर साहक पुरान घरमे दू टा केवाड़ी अछि, मुदा नगरक स्वीकृत नक्शामे मात्र एकटा देखाओल गेल अछि। ताहि आधार पर पिछला केवाड़ी अवैध ठहरैत अछि। एक विभाग ओकरा बन्द करय चाहैत अछि, दोसर विभाग नाला तक पहुँच बनौने रखबाक आदेश दैत अछि। अन्ततः निचला भाग ईंटसँ चुनि ऊपर खुलल मार्ग छोड़ल जाइत अछि। सरकारी कागजमे दीवालि सीधा आ नियमसंगत बनि जाइत अछि, मुदा घरक लोककेँ ओहि आधा खुलल बाटसँ असुविधा सहित चलय पड़ैत अछि।

कथा २७१ · घुरती

चौबीस बरख सूरतक कारखानामे काज कएलाक बाद देवनारायण मण्डल स्थायी रूपेँ बेलौंचा गाम घुरैत छथि। मुदा पंचायतक नब व्यवस्थामे 'घुरती निवासी' पंजीकरण लेल पहिने गाम छोड़बाक सरकारी पर्ची अनिवार्य अछि, जे चौबीस बरख पहिने बनले नहि छल। पुरान डाकिया आ घरक लोकक साक्ष्य सेहो प्रविष्टिक अभाव पूरा नहि कऽ पबैत अछि। अन्तमे कर्मचारी एक्के दिन एक मिनटक अन्तर पर हुनकर 'निर्गमन' आ 'घुरती' दर्ज करैत अछि। माएक लेल चौबीस बरखक विरह रहैत अछि, सरकारी हिसाबमे परदेसक अवधि मात्र एक मिनट।

कथा २७२ · अनुवाद

कमला नदीक पुरान पुल पर भार-सीमाक आदेश चारि भाषामे टाँगल जाइत अछि, मुदा अनुवादसभमे समय आ निषेधक अर्थ अलग-अलग अछि। पुल-रक्षक अपन बुझल अर्थसँ दण्ड लगबैत अछि; घड़ा बेचयवला बुधन सदाय सहित अनेक लोक दण्डित होइत छथि। कार्यालय अर्थभेद मानैत अछि, मुदा अपीलक निर्णय रोकि बकाया वसूली जारी रखैत अछि। संशोधित आदेशमे सेहो अनुवादक गलती रहि जाइत अछि, आ पुरान दण्ड कायम राखल जाइत अछि। पुलक बाट पर नियमक अर्थ बदलैत रहैत अछि, मुदा जुर्मानाक अंक निर्विवाद बनल रहैत अछि।

कथा २७३ · खाली कुर्सीक आदेश

कृषि-बीज कार्यालयक पदाधिकारीक स्थानान्तरण भेला पर हुनकर कुर्सी खाली रहि जाइत अछि। नियमित काज नहि रोकबाक निर्देशसँ कर्मचारीसभ प्रस्ताव राखि, आपत्ति नहि अयला पर खाली कुर्सीक नामसँ आदेश जारी करय लगैत छथि। नब पदाधिकारी अविनाश कुमार आबि पुरान आदेशसभक समीक्षा चाहैत छथि, मुदा तत्काल ओकरा प्रभावी राखबाक हस्ताक्षरित आदेश देलाक बाद प्रशिक्षण लेल बाहर चलि जाइत छथि। कर्मचारी फेर खाली कुर्सीक मेज पर प्रस्ताव जमा करैत छथि। व्यक्तिक अनुपस्थितिमे चलल कार्यालयी आदेश-व्यवस्था आब वैध हस्ताक्षरक आश्रयमे पुनः चालू रहैत अछि।

कथा २७४ · प्रवेश-पर्ची

झंझारपुर चिकित्सालयमे घायल मजदूर रामजी पासवान कैं आपात उपचार लेल अनला पर प्रहरी पहिने प्रवेश-पर्ची माँगैत अछि। प्रवेशक समय लिखबाक नियम आ रोगीक वास्तवमे भीतर नहि पहुँचबाक कारण उपचारक प्रक्रिया उलझि जाइत अछि। चिकित्सक अनिरुद्ध आवश्यक सहायता देबैत छथि, जखन कि कर्मचारी पंजीकरणक घड़ीक हिसाब मिलबैत रहैत छथि। जाँचक बाद उपचारकैं ‘प्रवेश-पूर्व सहायता’ मानबाक टिप्पणी बनैत अछि आ पाँजिक मेज सरका देल जाइत अछि। रामजी बैसाखीक सहारे घर घुरि जाइत छथि, मुदा मानवीय आपात स्थिति आ कागजी प्रवेशक बीचक दूरी बनल रहैत अछि।

कथा २७५ · बन्द खाता

बाँस-कारीगर रामलोचन महतो अपन बेटी सरिताक प्रशिक्षण-शुल्क लेल सहकारी बैंकसँ धन निकालय चाहैत छथि। खातामे बचत रहितो सुरक्षा-जाँचक नाम पर निकासी रोकल गेल अछि। बैंकक व्यवस्था हुनका धन निकालय नहि दैत अछि, मुदा सन्देश-सेवा आ रखरखाव शुल्क काटि लैत अछि तथा ब्याज जोड़ैत रहैत अछि। पुनःसक्रियणक आवेदन अटकल रहैत अछि, आ सुरक्षा-निरीक्षण खाताधारीक एको निकासी नहि होएबकैं सफल नियन्त्रण मानैत अछि। रामलोचन अन्तमे बुझैत छथि जे खाता हुनका लेल बन्द, मुदा बैंक लेल चालू अछि।

कथा २७६ · अन्तिम मंजूरी

कमला-बाढ़िमे धानक क्षति लेल जगदीश मण्डलक आवेदन हुनकर मृत्युक सात मास बाद अन्तिम रूपेँ स्वीकृत होइत अछि। विधवा सुमित्रा देवी चौदह हजार आठ सय रुपैया पाबय मृत्यु प्रमाणपत्र संग कार्यालय जाइत छथि। मुदा व्यवस्था स्वीकृत लाभार्थीक व्यक्तिगत उपस्थिति माँगैत अछि आ उत्तराधिकारीक भुगतान अलग प्रक्रियामे अटकल रहैत अछि। जगदीशक मृत्यु दर्ज करबाक विकल्प नहि भेटलासँ हुनका बेराबेरी ‘अनुपस्थित’ लिखि नव सूचना पठाओल जाइत अछि। सुमित्रा मंजूरी-पत्र आ मृत पतिक नामक सूचना लऽ घुरैत छथि; स्वीकृत सहायता भुगतानक प्रतीक्षामे रहैत अछि।

कथा २७७ · निषिद्ध प्रश्न

लघु सिंचाइ कार्यालयमे नहर-मरम्मतिक मजदूरीक सात नस्ती हरियर आवरण नहि रहबाक कारण रोकल गेल अछि। कर्मचारी मधुकान्त मिश्र ई रंग-सम्बन्धी नियमक मूल स्रोत पूछैत छथि। जाँचक क्रममे हुनकर प्रश्न स्वयं अनुशासनक विषय बनि जाइत अछि, आ कार्यालय नब नियम निकालैत अछि जे प्रशासनिक परम्पराक स्रोत पूछबाक लेल पहिने अनुमति चाही। हरियर आवरणक खेप आबि गेलापर कमला देवी सहित मजदूरिनीसभक बकाया भुगतान भऽ जाइत अछि। मुदा मधुकान्तक प्रश्नक उत्तर नहि भेटैत; प्रश्न करबाक प्रक्रियाकेँ मात्र नब नियन्त्रण भेटि जाइत अछि।

कथा २७८ · केवाड़ीक पहरा

करघा-सहकारी समितिक नवीकरण लेल रमेश्वर दास केँ पुरान सहकारिता भवनक ‘प्रवेश चारि’ पर पठाओल जाइत अछि, जाहि केवाड़ी पर ताला आ पहरा लागल अछि। कार्यालय प्रतीक्षा करयवालाक संख्या गनि सेवाक उपलब्धि देखबैत अछि, मुदा भीतर प्रवेशक उपाय नहि बनबैत। लोकक आबनाइ बन्द भेला पर तीस दिनक निष्क्रियताक प्रमाण बनैत अछि आ आवेदन मुख्य फाटक दिस मोड़ल जाइत अछि। रमेश्वरक समितिक नवीकरण अन्ततः होइत अछि, मुदा देरीसँ करघा-परिवारसभक कमाइ घटैत अछि। बन्द केवाड़ी निष्क्रिय घोषित भेलो नव ताला आ पहरा सहित ठाढ़ रहैत अछि।

कथा २७९ · लहेरियासरायक साँझ

लहेरियासरायमे कार्यालयसँ साँझ देरि घुरैत अरुणेश झा घरक खर्च आ पत्नी कुमुदक हिसाब पुछबाक आदत सँ झुँझलायल रहैत छथि। बजारक एक ठेलाक काज करैत दू व्यक्तिक श्रम देखि हुनका अपन दाम्पत्यक अदेखल श्रम मोन पड़ैत अछि। ओ बुझैत छथि जे कुमुद पढ़ेबाक कमाइक संग घर चलबैत, प्रशिक्षण लेल बचत करैत आ अपन शारीरिक तकलीफ दबा कऽ काज करैत छथि। घर पहुँचि ओ पहिल बेर हुनकर कलाईक पीड़ा पुछैत छथि आ दुनूक आमदनी-खर्चक हिसाब संग बैसि करैत छथि। अंकक बीच दूनूक साझा जीवन स्पष्ट होइत अछि।

कथा २८० · पुल पर रोशनी

महाविद्यालयक छात्र नीलाभ तीन बरख पहिने सहपाठी रश्मिसँ भेटल एक अभ्यास-पोथी आ गीतक स्मृतिक आधार पर अपन मनमे प्रेमक कथा गढ़ने रहैत अछि। कमला पुल पर अचानक रश्मि आ हुनकर बहिन नेहासँ भेंट भेला पर ओ रश्मिक वास्तविक जीवन देखैत अछि—प्रयोगशालाक काज, माएक औषधि आ बहिनक जिम्मेवारी। साधारण गप्पमे पुरान संकेतसभक कल्पित अर्थ ढीला पड़ैत अछि। नीलाभ बुझैत अछि जे दोसर व्यक्तिक मन अपन इच्छाक अनुरूप भरि देब प्रेम नहि। ओ रश्मिसँ फेर भेंट चाहैत अछि, मुदा एहि बेर अपन कल्पना सिद्ध करबाक लेल नहि, हुनका मनुष्यक रूपमे जनबाक लेल।

कथा २८१ · बन्द पुस्तकालय

दरभंगाक पुरान पुस्तकालय वार्षिक पुस्तक-गणनाक कारण बन्द भेटला पर शोधार्थी माधवीक दिनचर्या अचानक रुकि जाइत अछि। पुरान मैथिली पत्रिकामे स्त्रीक निजी लेखन पर पाँच बरखसँ शोध करैत ओ अपन सम्बन्ध, भोजन, कोठली आ बहिन मीना सँ भेंट धरि ‘शोध पूरा भेलाक बाद’ लेल टारैत रहलीह। जिल्दसाज आ हुनकर बेटीसँ भेंट हुनका बुझबैत अछि जे आवश्यक काज करैतो जीवन स्थगित राखब जरूरी नहि। माधवी शोध छोड़ैत नहि छथि; ओ पुस्तकालयसँ लौटि बहिनक घर जेबाक निर्णय करैत छथि। हुनकर शोध आ निजी जीवन पहिल बेर एक्के वर्तमानमे ठाम पबैत अछि।

कथा २८२ · मेला समाप्त

जनकपुरक मेला उठलाक बिहान पन्द्रह बरखक मिहिर झोरा लऽ चलन्त चकरी-दलक संग नगर-नगर घूमय लेल पहुँचैत अछि। पन्द्रह दिन चाह-दोकानमे काज करैत ओकर मन मेलाक इजोत आ यात्राक आकर्षणमे लागल छल। मुदा दलक लोक मजदूरी, मौसम, कठिन समय-सारिणी आ घरक अनुमतिक व्यावहारिक बात बतबैत छथि। खाली होइत मैदान आ झूला खोलबाक श्रम देखि मिहिर अपन इच्छाक रूप फेर बुझैत अछि। ओ मामा रघुनाथ संग घर घुरैत अछि, मुदा अभ्यास-पोथीमे लिखल दूरक नगरसभक नाम नहि मेटबैत। यात्राक इच्छा बचैत अछि, ओकरा देखबाक दृष्टि बदलैत अछि।

कथा २८३ · सिनेमा सँ बाहर

मधुबनीमे चलचित्र देखि नवनीत झा नायकक साहसी पलायनसँ प्रभावित भऽ अपन कपड़ा-दोकानक नौकरी छोड़ि दिल्ली जाएबाक कल्पना करैत अछि। राति घर घुरैत रिक्शाचालक महेन्द्र सदायक श्रम, टूटल चेनक मरम्मत आ छोट-छोट खर्चक संघर्ष ओकरा यात्रा आ जीविकाक वास्तविक अर्थ बुझबैत अछि। ओ दिल्ली जाएबाक सम्भावना समाप्त नहि करैत, मुदा कारी चश्मा किनबाक चमकक बदला किराया, रहबाक ठाम, पहिल महीनाक मजदूरी आ पूँजीक हिसाब सोचय लगैत अछि। चलचित्रक नायकक जगह ओकर अपन निर्णयक वास्तविक जिम्मेवारी आगाँ अबैत अछि।

कथा २८४ · ओसाराक बल्ब

दरभंगाक अनिमा झा घरक ओसारामे राति सिलाइ आ कपड़ाक फेरबदल करैत छथि, मुदा पड़ोसी आ परिचितक छोट काज लेल प्रायः दाम नहि लैत छथि। बल्ब बुझि गेलाक एक राति हुनका अपन समय, धागा आ श्रमक लगातार अदेखल रहनाइ बुझाइत अछि। नव बल्ब लगलाक बाद ओ उषाक ब्लाउजक काजक पचास रुपैया लैत छथि, पहिल बेर सिलाइक आमदनी-खर्च अलग लिखैत छथि आ प्रतिदिन तीन सँ छह बजेक निर्धारित समय बनबैत छथि। बेटी रागिनी ओसाराक लेल पट्टी लिखैत छलीह। अनिमा अपन श्रमकेँ घरक सामान्य उपकार नहि, नियत काजक रूप दैत छथि।

कथा २८५ · चाह दोकानक शीशा

लहेरियासरायक शीशावला चाह-दोकानमे बसक प्रतीक्षा करैत अर्थशास्त्रक छात्रा श्रुति झा अपन कमाइसँ किनल आठ सय पचास रुपैयाक नील झोरा पर गर्व करैत छलीह। शीशाक ओहि पार नाली-सफाइक मजदूरिनी मालती आ संगिनीसभक आधा मजूरी, श्रम आ अगिला दिनक अनिश्चितता हुनकर दृष्टि बदलैत अछि। अपन ट्यूशनक कमाइ, घरसँ भेटैत सहारा आ मजदूरिनीक कठिनाईक बीच ओ अन्तर देखैत छथि, बिना अधूरा जानकारीसँ मजदूरीक अंक गढ़ने। बसमे चढ़लापर झोरा ओतबे मूल्यक रहैत अछि, मुदा ओकर अर्थ आब केवल निजी उपलब्धिक कथा नहि रहैत अछि।

कथा २८६ · रेलवे घोषणा

बहत्तरि बरखक साइकिल-मरम्मतकार विनोदनाथ महतो दरभंगा जंक्शन पर रेलक प्रतीक्षा करैत एक युवककेँ जमालपुर जाएवला गाड़ी पकड़बाक भयमे देखैत छथि। दृश्यसँ हुनका अपन यौवनक ओ अवसर मोन पड़ैत अछि जखन प्रशिक्षण लेल गाड़ी सामने रहितो ओ चढ़बाक साहस नहि कएने छलाह। परिवार लग ओ जीवन भरि कहैत रहलाह जे गाड़ी छूटि गेल छल, आ पछिला कारणसभ एहि बातकेँ ढाँपि देने छल। एखन ओ मनहि मन सही करैत छथि—गाड़ी छूटल नहि, ओ स्वयं नहि चढ़ल छलाह। अपन वर्तमान रेलमे बैसैत स्मृतिक एक पुरान वाक्य सच भऽ जाइत अछि।

कथा २८७ · धूपक पट्टी

ज्वरसँ उठि रहल बुन्नकर शिवनन्दन दास कोठलीमे पड़ैत धूपक पट्टीसँ दिनक समय गनय लगैत छथि। व्यापारीक तीसटा गमछाक आदेश पूरा करबाक दबावमे बेटा नवल राति-दिन करघा चलबैत थाकि जाइत अछि। खिड़कीक धूपक सरकैत स्थान आ धरातल पर खींचल रेखा देखैत शिवनन्दन समयक दोसर गति अनुभव करैत छथि। नवलक उलझल ताना आ घिसल एड़ी देखि ओ व्यापारी केँ अधूरा गमछा तत्काल देबाक बदला काजक उचित समय तय करैत छथि। अन्तमे ओ गणनाक चिन्तासँ हटि धूपक धीम चाल देखैत रहैत छथि।

कथा २८८ · संगीतक टुकड़ा

एक विवाहक बैंडमे बजल तीन छोट स्वर चौंसठि बरखक शशिकान्त चौधरी कैं तीस बरख पहिनेक बहिनक विवाह याद दिअबैत अछि। ओहि अवसर पर हुनका स्वयं राखल रुपैयाक लिफाफा बिसरि गेल छल आ बाजाबाला नसीम पर चोरीक शंका कएल गेल। शशिकान्त कैं बीचहि मे लिफाफाक सही ठाम मोन पड़ि गेल छल, मुदा अपन प्रतिष्ठाक असुविधासँ बचबाक लेल ओ तुरन्त नहि बाजलाह। नसीमक झोरा दोबारा खँगालल गेल, ओकर अपमान भेल। वर्तमानक संगीत हुनका बुझबैत अछि जे अपन ओहि दस मिनटक चुप्पीक भार तीस बरख बादो बचल अछि।

कथा २८९ · बन्द दोकान

खेलौनाक थोक-वितरण करयवला अनिरुद्ध कर्ण मधुबनीक पुरान बजारमे बाल्यकालक प्रिय लालबाबूक खेल-सामानक दोकान खोजैत छथि। दोकान बन्द भऽ गेल अछि; काठक लट्टू, काँचक गोली आ सुधारी सकयवला खेलौनाक जगह सस्ता प्लास्टिकक नव बजार आबि गेल अछि। अनिरुद्ध स्वयं ओहि नब व्यापारक हिस्सा छथि। गोदाममे टूटल घुमौनाक टुकड़ा देखैत हुनका पुरान वस्तुक स्पर्श आ मरम्मतिक संस्कृति मोन पड़ैत अछि। ओ अपन काज छोड़ैत नहि छथि, मुदा नब खेप सावधानीसँ कम मँगबैत छथि। पुरान दोकानक बन्द पट हुनकर स्मृतिमे अलग-अलग समयक रंग बनि रहैत अछि।

कथा २९० · छज्जा

बरखामे एक छज्जाक नीचाँ ठाढ़ नक्शा बनबयवला अनिरुद्धक भेंट सीमेंटक काज करयवला शिवचरनसँ होइत अछि। छज्जाक धारसँ पानि देबालि दिस घुरैत देखि शिवचरन बतबैत अछि जे बाहरी ढाल आ पानि-तोड़ खाँच नहि छोड़ल गेल अछि। अनिरुद्ध कैं अपन कार्यालयक एहन धारणा मोन पड़ैत अछि जे एहि छोट बातक जानकारी मिस्त्रीकैं स्वाभाविकैं रहबाक चाही। ओ अगिला भवनक नक्शामे खाँच आ ढाल स्पष्ट लिखि दैत छथि। वरिष्ठक प्रश्न पर उत्तर दैत छथि जे आवश्यक बात कागज पर रहब नीक। बरखा हुनका श्रम आ नक्शाक बीचक दूरी देखबैत अछि।

कथा २९१ · साइकिल

पच्चीस बरख गाम-गाम जा सिलाइ-यन्त्र सुधारयवला बासुदेव साह नव स्थायी दोकान खोलबाक खर्च लेल अपन पुरान साइकिल बेचबाक निर्णय करैत छथि। बेटी दीपा पाँजिमे ओकर अनुमानित मूल्य नौ सय रुपैया लिखैत छथि। हाटमे साइकिल आठ सय चालीस रुपैयामे बिकैत अछि। एहि बीच बासुदेवक गप्पसँ दीपा बुझैत छथि जे परिवारक कठिन वर्षसभमे साइकिलक मरम्मत टारि कतेको आन जरूरी खर्च पूरा कएल गेल छल। बासुदेव औजारक पेटी बाँधबाक पुरान जूटक डोरी राखि लैत छथि। दीपा मूल्यक हिसाब सुधारैत नव दोकान लेल पिताक मजबूत कुर्सी सेहो जोड़ि दैत छथि।

कथा २९२ · पानिक गिलास

मिथिला लघु उद्यम सम्मेलनक वक्ता अनिरुद्ध चौधरी व्यवस्थामे श्रमिकक भार बुझबाक महत्त्व पर भाषण दैत छथि। अपन भाषणमे पहियावला पानि-गाड़ीक आवाज नहि सुनबाक इच्छा कारण वृद्ध परिचारक रघुनाथ पासवान कैँ बेराबेरी सीढ़ी चढ़ि हाथैँ गिलास अनय पड़ैत अछि। हुनकर काँपैत हाथ देखि अनिरुद्ध कैँ अपन निर्देशक वास्तविक मूल्य बुझाइत अछि। अगिला सत्रमे ओ गाड़ीक स्वाभाविक आवाज नहि रोकबैत छथि आ भाषणक टिप्पणीमे ई प्रश्न जोड़ैत छथि जे श्रमक भार बाँटबाक व्यवस्था के बनबैत अछि। विचार आ व्यवहारक दूरी गिलासक पानिसँ उद्घाटित होइत अछि।

कथा २९३ · जुलूस

लहेरियासरायक टावर लग फूलक माला बेचयवाली सरिता आ हुनकर तेरह बरखक बेटा अभय चुनावी जुलूसक कारण बढ़ल बिक्रीसँ उत्साहित छथि। अभय ढोल, झण्डी आ वाहनक चकाचौंध देखि आकर्षित होइत अछि। जुलूस निकललाक बाद बरखा पड़िते फेंकल पर्चा आ प्लास्टिक नाली जाम करैत अछि, आ ठेलाक कात पानि भरय लगैत अछि। अभय बाँसक टुकड़ासँ जाली साफ करैत अछि। अगिला दिन चित्रकक्षामे ओ जुलूसक भीड़ संग बन्द नाली, कूड़ा आ सफाइकर्मी सेहो बनबैत अछि। ओकर चित्रमे सार्वजनिक उत्सवक अदेखल परिणाम सम्मिलित होइत अछि।

कथा २९४ · छोट अएना

बहत्तरि बरखक हरिनारायण मिश्र बेटा नचिकेत संग पुरान हजामघरमे केश कटबय जाइत छथि। छोट अएनामे हुनका अपन वृद्ध मुखक संग खातामे डूबल बेटाक झुकल माथ देखाइत अछि। हुनका बुझाइत अछि जे बेटाक व्यापारक चिन्ता ओ जनैत छथि, मुदा बेटा हुनकर एकान्तक दिनचर्या पूरा नहि जनैत; संगहि ओ स्वयं बेटाक दोकान पर संग बैसबाक आग्रह पहिले टारि चुकल छथि। केश कटेलाक बाद ओ नचिकेत कें गोदाम जाएबाक लेल कहैत अपन दोकान पर किछु बेर बैसबाक निर्णय करैत छथि। गलीक कीच पार करैत पिता-पुत्रक बीच छोट सहारा नव निकटता बनैत अछि।

कथा २९५ · छत पर कबूतर

छात्रवृत्ति परीक्षाक तैयारी करैत कनक अपन दिनचर्यामे ‘कोनो सहारा नहि’ लिखि सब काज अकेले करबाक प्रण लेने छलीह। छत पर कबूतरक झुंडक उड़ान, सहपाठी रुचिक अभ्यासमे सहायता आ पिताक बस-बाट सम्बन्धी जानकारी हुनका स्वतंत्रताक अर्थ पर पुनर्विचार करबैत अछि। ओ अपन परीक्षा स्वयं देबाक निर्णय कायम रखैत छथि, मुदा उपयोगी जानकारी आ अपनजनक संगकें कमजोरी नहि मानैत छथि। परीक्षाक पहिल साँझ ओ पढ़ाइ बीच परिवार संग भोजन करबाक समय निकालैत छथि। कबूतरसभक अलग-अलग दिशा मे संग उड़ान हुनका स्वतंत्रता आ सम्बन्धक सहअस्तित्व बुझबैत अछि।

कथा २९६ · घड़ीक काँटा

निजी वित्त-संस्थाक साक्षात्कार लेल प्रतीक्षारत अपूर्व झा देबालक घड़ी आ अपन पिताक सुधारल कलाई-घड़ीक बीच समयक एक मिनटक अन्तर देखैत छथि। घड़ीसाज पिता देवनारायणक वाक्य हुनका मोन पड़ैत अछि—समय देखू, मुदा घड़ीक कहला पर नहि चलू। नौकरीक तैयारीमे ओ अपन रुचि आ घड़ी सुधारबाक कौशल दबा देने छलाह। साक्षात्कारमे ओ रटल उत्तरक बदला अपन वास्तविक अनिश्चितता आ ध्यानक उपयोग करबाक इच्छा बतबैत छथि। चयन होएत कि नहि, स्पष्ट नहि; घर घुरि ओ पिताक दोकानमे घड़ी खोलि देखैत छथि, अपन बाट स्वयं बुझबाक लेल।

कथा २९७ · अन्तिम पन्ना

महिलासभक सिलाइ-एकाई चलबयवाली रजनी चौधरी उपन्यासक अन्तिम पन्ना पढ़ैत अपन माए शैल देवीक अधूरा शिक्षक-प्रशिक्षणक स्मृति फेर बुझैत छथि। माए घरक जिम्मेवारीक कारण स्वयं प्रशिक्षण लेल नहि जा सकलीह, मुदा बेटीकेँ पढ़य पठबैत छलीह। आब रजनी अपन बेटी ईराक रुचिक निर्णयमे शिक्षक-प्रशिक्षण केँ स्वतः उचित मानि रहल छलीह, जखन कि ईरा वस्त्र-संरक्षणक काजो सोचैत अछि। रजनी दुनू विकल्पक अलग बजट बनबैत, बेटी पर अपन अधूरा सपना नहि थोपबाक निर्णय करैत छथि। माएक त्याग आ अगिला पीढ़ीक स्वायत्तताक अर्थ हुनका नव ढंगसँ बुझाइत अछि।

कथा २९८ · सबेरे पहिल बस

सहरसाक पम्प-मरम्मति केन्द्रमे तीन मासक अधिक मजदूरी पाबय कृष्णमोहन पासवान झंझारपुरसँ भोरक पहिल बस पकड़ैत अछि। पत्नी माला यात्रा रोकय नहि चाहैत छथि, मुदा बिना चर्चा कएल घर छोड़बाक निर्णय आ अनुपस्थितिक खर्चक बात उठबैत छथि। बस-पड़ाव पर छात्र-छात्राक दिनचर्या देखैत कृष्णमोहन केँ बुझाइत अछि जे पानि भरब, बच्चाक देखरेख आ घरक काज ओकर बिना आन लोककेँ सम्हारय पड़त। ओ सहरसा जाएबाक निर्णय नहि बदलैत, मुदा अधिक कमाइक हिसाबमे परिवारक अदेखल श्रम आ समयक लागत जोड़बाक आवश्यकता बुझैत अछि।

कथा २९९ · अनन्त पञ्जी

सौराठक पञ्जीकार वाचस्पति झा भीजल पुरान वंश-पञ्जीक प्रति बनबैत आश्चर्यजनक एहन प्रविष्टि भेटैत छथि जाहिमे भविष्यक लोकक नाम लिखल अछि। अपन परिवारमे होमयवला नवजातक लेल सेहो ओहि पञ्जीमे नाम निर्धारित जेकाँ देखाइत अछि। मुदा बेटा नचिकेता आ मृणाल जन्मल बच्चाक नाम अपन निर्णयसँ चुनय चाहैत छथि। वाचस्पति भविष्यवला पाँति सुरक्षित उतारैत, स्पष्ट टिप्पणी जोड़ैत छथि जे काल सत्यापित नहि आ वर्तमान निर्णयक प्रमाण नहि। बच्चाक नाम पूछलापर ओ पहिने ओकरा देखबाक बात कहैत छथि। लिखल नाम आ जियल जीवनक स्वतन्त्रता कथा बीच ठाढ़ रहैत अछि।

कथा ३०० · मिथिलाक पुस्तकालय

पोखरि आ गामक स्मृति पर ग्रन्थ लिखयवला ईशान मिश्र दरभंगामे ‘मिथिलाक पुस्तकालय’ नामक विचित्र ठाम पहुँचैत छथि। ओतय लिखल, अलिखल, नष्ट आ अनिश्चित स्रोतसभक अनेक सम्भावित पोथी देखैत हुनका अपन मसौदाक अतिरञ्जना उद्घाटित होइत अछि। वृद्धा शारदा देवीक अनिश्चित स्मृतिकेँ ओ गलत ढंगसँ तीस दिनक बेगारक निश्चित विवरण बनौने छलाह। अगिला दिन वास्तविक अभिलेख आ मूल साक्षात्कार मिलाकऽ ओ असमर्थित संख्या काटि दैत छथि, कमजोर प्रसंग हटबैत छथि आ परस्पर विरुद्ध स्रोतक सीमा अलग लिखैत छथि। ग्रन्थ देरीसँ आ पातर हो सकैत अछि, मुदा ओकर कथन अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

खण्ड ७

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

७० कथाक सारांश

लघुकथा खण्ड

कथा १ · सिद्ध महावीर

विधवा अनमना दीदी नैहरमे अपन छोट घरक लग हनुमानजीक मन्दिर बनबैत छथि। वर्षानुवर्ष अपन पेट काटि मन्दिरक रखरखाव करैत छथि आ ओकर छत ढलबेबाक लेल अपन जमीनक आधा भाग बेचबाक निर्णय लैत छथि। भातिज अपन आप्तता आ धार्मिक भावनाक लाभ उठा कऽ सड़कक कातक जमीन लिखबा लैत अछि। शेष जमीनक बाट बन्द भऽ गेलासँ मन्दिरक निर्माण अधूर रहि जाइत अछि। ठगल अनमना दीदी शेष जमीनो भातिजकेँ लिखि दैत छथि आ धार्मिक चमत्कारपर विश्वास छोड़ि दैत छथि। किछु वर्षक बाद भातिजक हृदयाघातसँ मृत्युकेँ गामक एक पक्ष दैवी दण्ड मानैत अछि, मुदा अनमना दीदी एकरा रोग आ उपचारमे देरीसँ जोड़ैत छथि। हुनकर मृत्युक बाद मन्दिरक उत्सवमे श्रद्धा आ वैज्ञानिक तर्कक दुनू स्वर संग-संग सुनाइत रहैत अछि।

कथा २ · नवी मुम्बै

नवी मुम्बैमे कार्यरत कथावाचककेँ मैथिली बाजिते सुनि अपन गामक लोक चिन्हि लैत छथि। एहि संयोगसँ फुदो भाइ, हरी भाइ आ आन प्रवासी मैथिलक संघर्ष, पारिवारिक सम्बन्ध आ पुरान गामक स्मृति खुलैत अछि। हरी भाइ गाममे व्यापार चलाबऽ लेल सहयोग नहि पाबि मुम्बैमे मिठाइक दोकान खोलि सफल होइत छथि, मुदा परिवार बीमारी आ आर्थिक संकटसँ जूझैत रहैत अछि। कोरोना महामारीक समय प्रवासी जीवनक आशा आ असुरक्षा आरो तीव्र भऽ उठैत अछि। अस्पतालक बेड, ऑक्सीजन, दवाइ, कालाबाजारी आ असमय मृत्यु कथा भरि छिटकल अछि। फुदो भाइ स्वस्थ होइत छथि, हरी भाइक मृत्यु भऽ जाइत छन्हि। अन्तमे कथावाचक नवी मुम्बैक बन्दी-जकाँ जीवनमे छथि आ दिल्लीमे बेटाक

सातम दिनो नहि उतरल ज्वरक समाचारसँ व्याकुल छथि। एहि अनिर्णीत प्रतीक्षामे कथा समाप्त होइत अछि।

कथा ३ · नई दिल्ली

नववर्षक राति नव दिल्लीक भव्य विमानपत्तनपर कार्यरत कथावाचककेँ गामसँ समाचार भेटैत अछि जे मोहित बाबूक एकमात्र पुत्र अमर सड़क दुर्घटनामे मरि गेल। विमानपत्तनक उजाससँ यमुनापारक अन्हार आ अभाव दिस कथाक यात्रा राजधानीक दू विपरीत रूप देखबैत अछि। पुलिसक प्रक्रिया अनुसार मृतदेह लेबाक लेल मोहित बाबूकेँ गामसँ दिल्ली अबऽ पड़ैत छन्हि। पत्नी आ डेढ़ मासक बच्चाकेँ छोड़ि गेल अमरक निधन परिवारक भविष्यपर प्रश्नचिह्न लगा दैत अछि। यमुनाक कात दाह-संस्कारक विधि, पिताक हाहाकार आ नवविधवाक मौन पीड़ा एक-दोसरमे मिलि जाइत अछि। आधुनिक नगरीक वैभवक पाछाँ प्रवासी श्रमजीवी परिवारक असुरक्षा आ स्त्रीक पुरान सामाजिक नियति जसक तस ठाढ़ रहैत अछि।

कथा ४ · तस्कर

कवि मधुरापतिक पुत्र केशव बचपनसँ जमसम गामक मालतीक संग गाछी, पोखरि आ बाधमे खेलैत पैघ होइत छथि। दुनूक आत्मीयता प्रेममे बदलैत अछि आ परिवार सेहो विवाहक सम्भावना देखैत अछि। मुदा दरभंगाक महाराज बीरेश्वर सिंह अपन विवाहक प्रस्ताव मालतीक पिता खगनाथ झा लग पठा दैत छथि। राजसत्ताक दबावसँ मालतीक जीवन पराधीन होमऽ लगैत अछि। केशव साहस कऽ विवाहसँ पहिने मालतीकेँ संग लऽ जाइ छथि आ हुनके संग विवाह करैत छथि। अपमानित राजा पञ्जीकारसँ केशवक नामक संग ‘तस्कर’ जोड़बा दैत छथि। दीर्घ समयक बाद बदलि गेल गाममे केशव प्रेमक कोनो निशानी ताकैत छथि; राजाक बनाओल पोखरि, मन्दिर आ शालिग्राम अतीतक साक्षी बचैत अछि। कथा प्रेमक स्वतन्त्रता, जातीय पञ्जी आ राजकीय दमनक टकराव उघारैत अछि।

कथा ५ · संघर्ष

सोहागो बालविधवा छथि। ओ अपन एकमात्र बेटा अफेलकेँ कष्ट उठा कऽ पढ़बैत छथि; सरकारी सेवा शुरू कएने किछुए समय भेल रहैत अछि जे ओकर रहस्यमय मृत्यु भऽ जाइत अछि। सोहागो एकरा हत्या मानैत छथि, मुदा अदालतमे गबाह आ प्रमाणक संकट तथा चरित्रपर आरोपक कारण अभियुक्त जटाशंकर बचि जाइत अछि। वृद्धावस्थामे सेहो सोहागो हार नहि मानैत छथि। एखन हुनकर लड़ाइ सेवा-अभिलेखमे गलत लिखल जन्मतिथिक विरुद्ध अछि, जकर कारण हुनकर सेवाक पाँच वर्ष कटि रहल अछि। एकटा युवा अधिकारी धूलि भरल अभिलेख जाँचि प्रमाण जुटबैत छथि आ स्थानान्तरणसँ पहिने आवेदन दाखिल करैत छथि। किछु वर्ष बाद ज्ञात होइत अछि जे सोहागोक आवेदन स्वीकार भऽ गेल। हुनकर अटूट जिद्द अधिकारीकेँ सेहो अपन पराजयक भावनासँ बाहर निकालैत अछि।

कथा ६ · लेटरबॉक्समे आयल चिट्ठी

मादक पदार्थक तस्करीमे पकड़ायल तमिल युवक मुतालिफकेँ देखिते जाँच अधिकारीकेँ संदेह होइत छन्हि जे वास्तविक सूत्रधार कियो आन अछि। हबीबुल्ला द्वारा रोजगारक लोभ देखाकऽ युवककेँ तस्करीमे फँसेबाक वृत्तान्त खुलैत अछि। अधिकारीक खोज मादक पदार्थ, उग्रवादी संगठन, गुप्त सूचना आ सत्ताक बहुस्तरीय जाल धरि पहुँचैत अछि। एक रहस्यमय पत्रक संकेतक पाछाँ जाइत ओ हिंसक संगठनक पकड़मे पड़ि जाइ छथि; मुक्त भेलाक बादो शत्रु आ सहायकक पहचान स्पष्ट नहि रहैत छन्हि। कथा बीच अधिकारीक पुरान दुर्घटना, पुत्र आ परिवारक स्मृति तथा सशस्त्र धमकी क्रमशः उभरैत अछि। पुत्रक मृत्यु अधिकारीक जीवन तोड़ि दैत अछि। अन्ततः ओ संगठनक अड्डापर निहत्था ठाढ़ रहि मुतालिफक निर्णयक प्रतीक्षा करैत छथि। जीत, हारि आ मुक्तिक अर्थ अनिर्णीत रहि जाइत अछि।

कथा ७ · डोमा, बुधन आ...

बुधन अपन छोट भाय डोमाकेँ पढ़ेबाक लेल चण्डीगढ़मे रिक्शा चलबैत छथि। सरकारी निःशुल्क पुस्तक योजना सेहो गामक जातीय शक्ति-सम्बन्धक कारण अपना उद्देश्य धरि

नहि पहुँचि पबैत अछि। कालान्तरमे डोमा गाममे शिक्षक बनैत छथि आ बुधनक बेटा पढ़ि-लिखि एकटा पैघ व्यवसायिक संस्थानमे उत्तरदायित्वपूर्ण पद धरैत छथि। कथावाचकक संग बुधनक बेटाक संवादमे अतीतक छुआछूत, विद्यालय, आरक्षण, अन्तर्जातीय विवाह, धार्मिक ग्रन्थक व्याख्या आ आत्मसम्मानक प्रश्न खुलैत अछि। ओ बदलावक उपलब्धि मानैत छथि, मुदा जातिक सामाजिक अस्तित्व आ राजनीतिक जाति-व्यवस्थाक बीच अन्तर सेहो देखबैत छथि। अन्तमे शिक्षा आ आर्थिक साधनक संग मानवीय गरिमाक वास्तविक विस्तारक आकांक्षा कथा कैँ आगू बढ़बैत अछि।

कथा ८ · आत्महत्या

विवाहक बाद सासुरमे कथावाचकक परिचय किशोरी आर्यासँ होइत अछि। आर्याक पिता मद्यपानक कारण घरमे कलह उत्पन्न करैत छथि; परिवार समाजक तिरस्कार आ घर खाली करबाक धमकी सेहो सहैत अछि। किछु समय बाद पिताक मृत्युकैँ आत्महत्या मानल जाइत अछि आ परिवारक जटिल सम्बन्ध आरो उलझि जाइत अछि। आर्याक एक युवकसँ सम्बन्ध, ओकर टूटब आ स्वयं आर्याक आत्महत्याक समाचार कथावाचककैँ विचलित करैत अछि। आर्याक परिचित युवकसँ भेल संवादमे आत्महत्याक प्रत्यक्ष घटना आ ओकर पाछाँक मनोवैज्ञानिक तथा पारिवारिक कारणक पड़ताल होइत अछि। कथा प्रश्न उठबैत अछि जे व्यक्तिगत त्रासदीकैँ केवल एक व्यक्ति अथवा एक घटनाक दोष कहि समेटब कतेक अधूर अछि।

कथा ९ · गंधर्व लेटरबम

गामक कम कदक बालक लेटरा उपहासक पात्र बनैत अछि, मुदा संगीतमे ओकर असाधारण प्रतिभा अछि। परिवारक विवशतामे पिता ओकरा नाटक कम्पनीक हाथ सौंपि दैत छथि। ओतऽ छोट कदक कलाकारक संग रहि लेटरा नाटकसँ शास्त्रीय संगीतक साधना धरि पहुँचैत अछि। गुरु भट्टजी प्रतिभा चिन्हि गहन प्रशिक्षणक अवसर दैत छथि। लेटरबम आगाँ सम्मानित शिक्षक आ कलाकार बनैत छथि। सार्वजनिक भेदभाव आ छोट कदक व्यक्तिक वास्तविक आवश्यकता हुनकर अनुभवमे उभरैत अछि। वृद्धावस्थाक अभिनन्दनमे ओ केवल अपन नहि, समस्त 'बाणवीर' समाजक सम्मानक माँग करैत छथि।

दीर्घकथा खण्ड

कथा १० · मधुबनी मोड्यूल

मधुबनीक युवक अहमद अन्तर्जालक सम्पर्कसँ उग्रवादी संगठनक प्रभावमे आबि स्लीपर सेलसँ जुड़ि जाइत अछि। ओकर पूछताछ करैत अधिकारीकेँ दिल्लीमे अपन पुरान घरक मरम्मतिक समय भेटल कारीगर सभक स्मृति जागैत अछि—नबी बकस, ओकील, सर्फुद्दीन, खलील आ हुनकर परिवार। विशेष रूपसँ नबी बकसक विधवा मायक संघर्ष, भाइ सभक बीच सम्बन्ध आ बाढ़िक त्रासदी कथा केँ मानवीय गहराइ दैत अछि। अधिकारी बुझै लगैत छथि जे वर्तमान अभियुक्तक जीवन एहि पुरान सम्बन्धसँ जुड़ल अछि। अहमदक कथनसँ अन्तर्जालपर कट्टरपन्थी प्रभाव, गुप्त संगठन आ नियोजित हिंसाक सूत्र भेटैत अछि। सूचना पर अभियान चलैत अछि आ ‘मधुबनी मोड्यूल’ समाप्त कएल जाएबाक घोषणा होइत अछि। मुदा अन्तक संवाद एकटा आन गतिविधिक जटिल आर्थिक जाल खोलैत अछि, जतऽ नाम आ पहचान सेहो स्थिर नहि रहैत अछि।

कथा ११ · शब्दशास्त्रम्

नैय्यायिक मितू आ चर्मकार परिवारक आनन्दा एक-दोसरसँ प्रेम करैत छथि। मितूक पिता श्रीकर मीमांसक तालपत्रक प्राचीन पोथी सभक संरक्षण लेल चिन्तित रहैत छथि। आनन्दाक बुद्धिमत्ता आ संरक्षणक कौशल देखिते ओ जातिगत आपत्तिक विरुद्ध दुनूक विवाह स्वीकार करैत छथि। विवाहक बाद आनन्दा घर, परिवार, लोकगीत आ विद्या-परम्पराक संरक्षण करैत छथि; हुनकर बेटी मेधा आ वल्लभा तथा पुत्र मेघ पैघ होइत छथि। वृद्धावस्थामे आनन्दाक मृत्यु भेलापर मितू स्मृति, शब्द, ध्वनि आ भ्रमक प्रश्नमे डूबि जाइ छथि। श्रीकरक दर्शन, मण्डन मिश्र, भामती आ लोकगीतक स्वर हुनकर शोकसँ गुँथि जाइत अछि। बचलू द्वारा स्मरण कएल पुरान घटना आ मितूक मानसिक स्थिति कथा केँ अतीत-वर्तमानमे चलबैत अछि। अन्तमे आनन्दाक स्मृति आ ध्वनि एकरङे जीवित रहैत अछि, आ मितूक मृत्यु हुनकर प्रेमकेँ मार्मिक परिणति दैत अछि।

कथा १२ · महिसबार ब्राह्मणक गाम

ई एक मनुक्खक नहि, गढ़ नारिकेल गामक सामूहिक कथा अछि। पोखरि, कमला-बलान, कोसी, बान्ह, चौरी, चरागाह आ जमीन्दारीसँ वर्णन गामक सामाजिक जीवन धरि पहुँचैत अछि। महिसबार ब्राह्मणक पशुपालनक संग डोम, धोबी, दुसाध, चर्मकार, मुसलमान आ आन समुदायक श्रम तथा परस्पर निर्भरता उभरैत अछि। जातीय दम्भ, अस्पृश्यता, ऐतिहासिक स्मृति, महामारी आ जमीनक नियन्त्रणपर कथा आलोचनात्मक दृष्टि रखैत अछि। लोकगीत, नाच, कहावत, धान, साग, तरकारी, बाढ़ि आ माछक विवरणसँ गामक सांस्कृतिक भूगोल सजीव बनैत अछि। अन्ततः गाम अपन लोकक बोली, शक्ति, श्रम आ जीवनयापनक माध्यमसँ एक सामूहिक चरित्र बनि उभरैत अछि।

बीहनि-कथा खण्ड

कथा १३ · रिक्शाक सवारी आ लूटिक डर

पटना मे आधा राति दू यात्री पुनाइचक जेबाक लेल रिक्शा ताकैत छथि। रिक्शाचालक एहि डरें मना करैत अछि जे घुरती काल ओकर कमाएल भाड़ा उचक्का छीन लेत। यात्रीक एक संगी मजाकमे कहि दैत छथि जे उचक्का ओ सभ स्वयं छथि। एहि उलट जवाबसँ रिक्शाचालक निश्चिन्त भऽ सवारी करबा लेल तैयार भऽ जाइत अछि।

कथा १४ · नकली नोट

पटना विमानपत्तनपर एकटा यात्री टैक्सीक भाड़ा देबाक लेल अपन एक हजार टाकाक नोट खुदरा करबैत छथि। नोट असली अछि कि नहि, से हुनकेँ पक्का नहि बुझल छन्हि। गाड़ीचालक हुनकर पक्षमे पार्किङकर्मीक आगाँ एतेक विश्वाससँ बाजैत अछि जे अन्ततः नोट बदलि देल जाइत अछि। यात्रीक आशंका आ चालकक अभिनय प्रसंगकेँ हास्यमय बना दैत अछि।

कथा १५ · पानिबला रोड

बाढ़िक अनुभवसँ अपरिचित अधिकारी कुशेश्वरस्थान क्षेत्रमे पदस्थापित होइत छथि। उग्रतारा स्थान जेबाक लेल ओ बरखा नहि रहल समयकेँ यात्राक अनुकूल मानैत छथि। स्थानीय सम्बन्धी बुझबैत छथि जे एखन टूटल सड़कसँ घंटों लागत, मुदा बाढ़ि एलापर नावसँ बीस-तीस मिनटमे पहुँचल जा सकैत अछि। कथा जलप्लावित क्षेत्रक जीवनानुकूल यात्राबोध उघारैत अछि।

कथा १६ · जी सर

एकटा कर्मचारी सभ प्रश्नक उत्तर ‘जी सर’ कहि देबाक अभ्यस्त भऽ गेल छथि। कार्यालयक एहि आदति एतेक गहींर जमा गेल छन्हि जे घरमे बेटाक आग्रहपर सेहो अनायास ‘जी सर’ निकलि पड़ैत छन्हि। छोट प्रसंग पदानुक्रमक मनोवैज्ञानिक प्रभाव देखबैत अछि।

कथा १७ · दू टा कैदी

जेलमे एक कैदी जेलरक मारि-पीटक शिकायत करैत अछि। दोसर कैदी ओकरा चोरी आ छिनतईक मामूली अपराधी बुझि डाँटैत अछि, मुदा ओ आगाँ देखबैत अछि जे जेलर जकर हालचाल श्रद्धासँ पूछि रहल छथि, ओकरापर हत्याक आरोप अछि। व्यवहारक एहि उलटबाँसीसँ जेलक भीतर प्रतिष्ठा आ अपराधक विचित्र सम्बन्ध उभरैत अछि।

कथा १८ · अपन-अपन भाग्य

दू प्रशासनिक अधिकारीक परिवारक सदस्य अपन-अपन कठिन पदस्थापनाक बखान करैत छथि। एक अधिकारीकेँ सूखाग्रस्त पहाड़ी इलाकामे पठाओल गेल, मुदा भूकम्पक बाद राहतक धनसँ ओकर कमाइ बढ़ल। दोसरकेँ बाढ़िक इलाकामे पठाओल गेल, मुदा ओतऽ सूखा पड़ि गेल। प्राकृतिक विपदाक संग अवैध लाभक अपेक्षा जोड़निहार मानसिकतापर कथा व्यंग्य करैत अछि।

कथा १९ · प्रवचन

दिल्लीमे प्रसिद्ध स्वामी अपन प्रवचनमे पटनाक राजेन्द्र नगरक सम्बन्धमे मनगढ़न्त प्रसंग सुनबैत छथि। कथावाचककेँ हुनकर यात्रा आ कथनक असंगति बुझा पड़ैत अछि। प्रश्न कएलापर स्वामी स्वीकार करैत छथि जे श्रोतासँ धन पाबऽ लेल एहन बात कहब पड़ैत अछि। धार्मिक प्रवचनक आड़मे प्रदर्शन आ स्वार्थक विडम्बना खुलैत अछि।

कथा २० · गछल गप

घटक अपन वचनक अनुसार वस्तु नहि देबाक शिकायत गोनर भाइसँ करैत छथि। गोनर भाइ कहैत छथि जे विवाहक धुनमे दोसर लोक जे-जे कहैत गेल, ओ ‘हँ’ कहैत गेलाह; आब कोन वस्तु देबाक वचन देलनि, से यादे नहि अछि। प्रसंग विवाहक समयक अस्पष्ट आश्वासन आ पछिला विवादकेँ हास्यक रूपमे देखबैत अछि।

कथा २१ · भूरा बाल

चारि संगीक गपमे जाति-सम्बन्धी छोट नाम आ पुरान पूर्वग्रहक चर्चा शुरू होइत अछि। एक गोटे अलग-अलग समुदायपर प्रचलित कटाक्ष करैत छथि। दोसर अपन जातिक विषयमे एहन फकड़ा नहि बनल हेबाक कारण ऐतिहासिक पछड़ापन कहैत छथि आ सामाजिक उन्नतिक संग नव फकड़ा बनबाक सम्भावना देखबैत छथि। संवाद जातीय व्यंग्यक भितरी राजनीति देखबैत अछि।

कथा २२ · आत्म-गौरव

यातायातक नियम तोड़लाक बाद सतर्कता विभागक एक पैघ अधिकारी सिपाहीकेँ घूस देबाक प्रयास करैत छथि। हवलदार नोट घुरा दैत अछि आ कहैत अछि जे गाममे ओकर इज्जत अछि। ओ पीयर बत्तीपर गाड़ी बढ़ा देबाक कारण चेतावनी दऽ छोड़ैत अछि, मुदा लाल बत्ती तोड़ितथि तँ नहि छोड़ितय। एक साधारण कर्मचारीक आत्मसम्मान पैघ पदाधिकारीकेँ स्मरणीय पाठ पढ़बैत अछि।

कथा २३ · छाह

एकटा संगी बारम्बार प्रश्न करैत अछि जे कथावाचक अपन फोटो किए बनबेलन्हि आ फ्रेम किए लगबा रहल छथि। कथावाचक चुपचाप फोटो लेल माला किनबाक बात करैत छथि। सुनिनिहार मानि लैत अछि जे चित्र दिवंगत पिताक अछि। एहि एक अनुमानसँ जिबैत लोकक फोटो आ मृतकक स्मृति सम्बन्धी सामाजिक आदति खुलैत अछि।

कथा २४ · वाटर कूलर

सरदार गुरमीत राहगीरक प्यास बुझेबाक लेल पुरान बजारसँ जलशोधक किनि घरक बाहर लगबैत छथि। किछु दिन बाद माय शिकायत करैत छथि जे शराब पीनिहार लोक पानि पीबि प्लास्टिकक गिलास फेकि जाइत अछि। नि:स्वार्थ सार्वजनिक सुविधाक संग घरक सफाइ करबाक भार बढ़ि जाइत अछि। कथा सदाशयताक अनपेक्षित परिणामपर हँसैत अछि।

कथा २५ · तोँ अखन एतेक पैघ नै भेल छेँ बाउ

क्रिकेट मैच देखैत एकटा दर्शक बाउण्ड्रीपर ठाढ़ सुरेश रैनाकेँ अपन बाल्यसंगी कहि बेर-बेर आवाज दैत अछि। खिलाड़ी घुरि नहि देखैत छथि। बादमे नव खिलाड़ी विद्युतकेँ सेहो ओ बजबैत अछि; उत्तर नहि भेटलापर कहैत अछि जे ओ एखन एतेक पैघ खिलाड़ी नहि भेल अछि जे ओकरा अनठा दे। दर्शकक आत्मीय दाबी आ आहत प्रतिष्ठा सभकेँ हँसाबैत अछि।

कथा २६ · एमबियेन्स मॉल कैम्पसक मिस्त्रीक खिस्सा

एकटा कुशल मानल जाएबला बिजली-मिस्त्री अपन अनोखा कार्यप्रणालीक कारण रोजगारसँ निकालल जाइत अछि। पानिमे ठाढ़ भऽ तार जोड़बाक जोखिम ओकरा सामान्य लगैत अछि, मुदा व्यवस्थापककेँ दुर्घटनाक भय होइत अछि। साक्षात्कारमे बिजलीक गति आ बसक यात्रासमयकेँ एक मानि ओकर उत्तर आरो विसंगति उत्पन्न करैत अछि। कथा व्यावहारिक अनुभवक दाबी आ वैज्ञानिक समझक बीच अन्तर उभारैत अछि।

कथा २७ · स्निफर डॉग आख्यान

सन्दिग्ध सामानमे मादक पदार्थ हेबाक आशंकासँ प्रशिक्षित सूँघनिहार कुकुर बजाओल जाइत अछि। कुकुर बैग फाड़ि भीतरक मांस खा जाइत अछि। हवलदार एकरा प्रशिक्षणक धनमे भ्रष्टाचारक परिणाम बतबैत अछि। सुरक्षा-अभियानक गम्भीरता एकाएक भूख आ उपेक्षाक व्यंग्यमे बदलि जाइत अछि।

कथा २८ · यातायात निअम — भाग ०

पटना मे शिक्षक दिल्लीक सुदृढ़ यातायात व्यवस्थाक प्रशंसा करैत छथि, जतऽ निश्चित गतिसँ चलबापर लगातार हरियर बत्ती भेटबाक बात छल। दिल्ली आबि कथावाचक देखैत छथि जे संकेतक व्यवस्था बदलि गेल, चौराहा सभपर नव रोक-टोक लागि गेल। योजना आ व्यवहारक बदलैत दूरी एहि प्रसंगक केन्द्र अछि।

कथा २९ · यातायात निअम — भाग १

दिल्लीमे मोटरसाइकिलपर पाछाँ बैसल यात्रीकेँ सेहो हेलमेट पहिराओल जाइत अछि। राज्यक सीमा पार कऽ उत्तर प्रदेश पहुँचिते चालक दुनू हेलमेट उतारि लैत अछि, मानू सुरक्षा नियम सीमा पार करिते अप्रासंगिक भऽ गेल। छोट घटना कानूनक भौगोलिक असंगति आ लोकक सुविधा-आधारित अनुशासन देखबैत अछि।

कथा ३० · यातायात निअम — भाग २

दिल्लीसँ नोएडा गेल कथावाचक मोड़पर संकेतक जरा कऽ गाड़ी घुमबैत छथि, मुदा साइकिलसँ टक्कर होइत-होइत बचैत अछि। स्थानीय निरीक्षक बुझबैत छथि जे एतऽ संकेतक देखिकऽ बाट देबाक भरोस नहि करब; शीशा खोलि हाथसँ संकेत आ हॉर्न दुनू चाही। यातायातक स्थानीय व्यवहार नियमक औपचारिकतासँ अलग अछि।

कथा ३१ · यातायात निअम — भाग ३

एक मिनट लेल सड़कक कात गलत ठाम कार रोकलाक बाद कथावाचक घुरैत छथि तँ कार गायब भेटैत अछि। हवलदार कहैत अछि जे चोर लेने होयत तँ पता नहि, मुदा यातायात पुलिस उठेने होयत तँ थानामे भेटत। थानामे कार भेटलापर कथावाचक अपनाकेँ धन्य मानैत छथि जे चोर नहि लेने छल।

कथा ३२ · जातिवादी मराठी

पुणेमे एक मराठी व्यक्ति प्रश्न करैत अछि जे मिथिला-बिहारक लोक अधिकारी सेहो बनैत छथि आ रिक्शाचालक, रसोइया सेहो—ई केहन बात? सिंह साहेबकेँ अपन सरकारी पद आ भाइकेँ छापाखानाक साधारण काममे कोनो विरोध नहि देखाइत छन्हि। कथावाचक एहि प्रश्नक भितर प्रवासी श्रमक प्रति जातीय आ वर्गीय पूर्वग्रह चिन्हैत छथि।

कथा ३३ · थेथर मनुक्ख

एकटा पक्षीक संगिनी ओहि ठाम नहि रहैत अछि, आ दुइ दिन धरि उदास बैसल पक्षी अन्तमे अपन ठाम छोड़ि चलि जाइत अछि। एहि प्रसंगपर नानी मनुक्खक तुलना करैत छथि—परिजनक मृत्यु आ सम्बन्धक विघटनक बादो मनुक्ख थोड़े दिन शोक कऽ फेर सामान्य भऽ जाइत अछि। मानवीय ‘थेथरपन’ आ जीवक संवेदनाक तुलना कथाक तीख व्यंग्य अछि।

कथा ३४ · बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

एक पुरुषक तेसर पत्नी मरि जाइत अछि। गामक गपमे पहिल दू विवाहसँ सन्तान नहि भेलाक बाद तेसरो विवाहक निर्णयपर प्रश्न उठैत अछि। ओ पुरुष दोष तेसर पत्नीपर थोपैत अछि, मुदा ग्रामवासी हुनके पुरुषत्वक विषयमे कटाक्ष करैत छथि। कथा स्त्रीकेँ सन्तानहीनताक एकल दोषी ठहरायब आ बहुविवाहक सामाजिक क्रूरतापर व्यंग्य अछि।

कथा ३५ · स्त्री-बेटी

छोट बुचिया पिता संग खेबाक चाहैत अछि, मुदा माय ओकरा अलग बैसाबि दैत छथि। पिता आ भाइ सभ नीक तरकारी आ दूध खा चुकैत छथि; बुचिया आ मायक भागमे बचल-खुचल भोजन अबैत अछि। एहि स्मृतिसँ गप स्त्री-बेटीक शिक्षा, भोजन आ सम्मानमे पुरान भेदभाव दिस बढ़ैत अछि।

कथा ३६ · बिआह आ गोरलगाइ

विवाहमे बेटीकेँ सम्पत्ति आ धन देनिहार पिता आगन्तुक जमायक पएर छुबि प्रणाम स्वीकार करैत छथि। जमाय गोरलगाइक दक्षिणा नहि लेबाक आग्रह करैत छथि। ससुर एक सय टाकाक संग एक टाकाक सिक्का जोड़ि दैत छथि आ अपन पुरान विचारक स्मरण करैत छथि। छोट आदान-प्रदान पीढ़ीक बदलैत सम्बन्ध आ परम्पराक आत्मीयता देखबैत अछि।

कथा ३७ · प्रतिभा

प्रशासनिक सेवाक प्रशिक्षणक समय एक नवचयनित अधिकारी अपन चयनकेँ असाधारण बुद्धिक प्रमाण मानैत अछि। ओकर संगी स्कूलक कमजोर प्रदर्शन आ प्रश्नक नमूनापर कठोर अभ्यासक स्मरण करा दैत अछि। सफलता महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा केवल प्रतियोगिताक तैयारीकेँ जन्मजात प्रतिभाक पर्याय मानि लेब कथाक आलोचनाक विषय अछि।

कथा ३८ · जाति-पाति

पुलिस प्रशिक्षणक एक मद्यपानक सभामे अधिकारी अपन राजपूत जातिक नामपर रोब देखबैत अछि। ओकर दोसर संगी कहैत अछि जे दुनू समान पदपर अछि, मुदा ओ अपन डोम जातिक नाम ताहि तरहें छाती पीटि कऽ नहि बजा सकैत अछि। एहि विरोधसँ जातिगत गर्वक असमान सामाजिक स्वीकृति उजागर होइत अछि।

कथा ३९ · अनुकम्पाक नोकरी

एक स्वतंत्रता सेनानीक प्रतिभावान पैघ बेटा असाध्य रोगसँ मरि जाइत अछि। पिता ओकर सेवा करैत-करैत टूटि जाइत छथि। नोकरी पाबऽ लेल आतुर छोट बेटाकेँ पिता मृत भायक शैक्षणिक प्रमाणपत्र दऽ दैत छथि। ओ ओही परिचयसँ कलकत्ताक कम्पनीमे रोजगार पाबि लैत अछि। अनुकम्पाक रोजगारक प्रचलित अर्थ एहि कथामे विचित्र रूपसँ उलटि जाइत अछि।

कथा ४० · पैरवी-पैगाम आ हाकिम

एक इमानदार पुलिस अधीक्षकक कुटुम अपन दू पुतोहुक शिक्षक-प्रशिक्षणमे नामांकन लेल पैरवी चाहैत छथि। अधिकारी आन विभागपर अनुचित दबाव देबाक पक्षमे नहि छथि। आग्रही कुटुमकेँ ओ व्यंग्यपूर्वक कहैत छथि जे कॉलेजक गेटपर बम फोड़ि दिअ, तखन प्रधानाचार्य पुलिस लग एताह आ बात भऽ सकत। कुटुमक आग्रह तत्क्षण थमि जाइत अछि।

कथा ४१ · नूतन मीडिआ

नगरमे डकैतीक बाद समाचार माध्यम सभ तुरन्त गिरफ्तारी नहि भेलापर पुलिसकेँ अकर्मण्य ठहरबैत अछि। दबावमे एक व्यक्ति पकड़ायलाक बाद मारि-पीटसँ अपराध स्वीकार करबा लेल बाध्य कएल जाइत अछि। मुदा ओ अपन तीन सहअपराधीक नाम नहि बता सकैत अछि, किएक तँ ओ डकैती कएने नहि छल। सनसनीखेज समाचार आ पुलिसक प्रदर्शन सत्यक खोजकेँ पछाड़ि दैत अछि।

कथा ४२ · मिथिलाक उद्योग

गामक प्रभावशाली चौधरीजी यात्राबाहक बस चलाबऽ लगैत छथि। गामक रौब नगरक बस-अड्डाक प्रतिस्पर्धी मालिकक सोझाँ नहि चलैत अछि। चालक-खलासी पिटाइत छथि आ बस बन्द भऽ मन्दिर लग ठाढ़ भऽ जाइत अछि। किछु दिनमे बसपर कदीमाक लत्ती चढ़ि

जाइत अछि। एहि दृश्यसँ क्षेत्रीय उद्यमक पथमे बाहुबल, एकाधिकार आ उद्योगहीनताक कथा उभरैत अछि।

कथा ४३ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — भूख (१)

बरियातीमे पप्पू भाइ भरपेट मांस-भात खा चुकल छथि, तैयो घोषणा करैत छथि जे आब विवाहमे नहि जेता, किएक तँ ओतऽ खएबाक लेल किछुओ नहि भेटैत अछि। कथावाचक हुनकर सोझाँ हाड़क ढेरी देखि हँसी रोकि नहि पबैत छथि। भोजनक लालसा आ शिकायतक एहि विरोधाभाससँ हास्य उपजैत अछि।

कथा ४४ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — भूख (२)

बहीनक घरमे नवबियाएल महीसक दूध पीबाक आशा लऽ पप्पू भाइ पहुँचैत छथि। स्नेहक गपमे बहीन दूध देनाइ बिसरि जाइत छथि। पप्पू भाइ चूल्हि धरि नमहर साँप देखबाक काल्पनिक वर्णन करैत छथि, जाहिसँ बहीनक ध्यान औंटैत दूधपर जाए। चतुर संकेत सफल होइत अछि।

कथा ४५ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — बाढ़ि

कोसीक बाढ़ि खेतमे रेत छोड़ि जाइत अछि आ अन्य अन्नक अभावमे पप्पू भाइकेँ बेर-बेर अल्हुआ खए पड़ैत छन्हि। ताहि समय हरिद्वारसँ भातिजक पत्र अबैत अछि जे ओतऽ वैदिक पाठक बाद खीर-पूड़ी भेटैत अछि। पप्पू भाइ स्वादिष्ट भोजनक आशामे प्रवासक निर्णय लैत छथि।

कथा ४६ · बाढ़ि, भूख आ प्रवास — प्रवासमे वज्रपात

हरिद्वार पहुँचि पप्पू भाइ वैदिक पाठ करैत छथि आ साँझक खीर-पूड़ीक प्रतीक्षा करैत छथि। मुदा पहिनेसँ ओहि भोजनसँ उबाएल पण्डित सभ नियम बदलि अल्हुआ आ दूध देबाक निर्णय लऽ लेने छथि। अपन गामक अभावसँ भागल पप्पू भाइक सोझाँ फेर अल्हुआ आबि ठाढ़ होइत अछि। ई प्रवासक करुण-हास्य अछि।

कथा ४७ · नव-सामन्त

गाममे झगड़ालू स्वभावक एक युवक दिल्ली पहुँचियो सभकेँ गोली मारबाक धमकी दैत रहैत अछि। बीस-चालीस किलोमीटर दूरक लोककेँ दस मिनटमे पहुँचेबाक ओकर माँगक असम्भवता देखाओल जाइत अछि। सामान्य शिक्षा पूरा नहि कऽ सकल युवक अपन 'स्तर'सँ छोट बुझि नोकरी छोड़ि देने अछि। खोखल दबंगता आ श्रमक प्रति तिरस्कारक आलोचना कथा करैत अछि।

कथा ४८ · चारिम स्थान

नगरक अखाड़ाक पहलमान हाफ मैराथनमे भाग लैत छथि। रस्तामे दू युवक हुनका चारिम स्थानपर बताकऽ उत्साहित करैत अछि। पदक पाबऽ लेल ओ सामर्थ्यसँ बेसी दौड़ि फिनिश लाइन पार कऽ बेहोश-जकाँ भऽ जाइत छथि। परिणाममे आठम स्थान सुनि हुनका ठकबाक बोध होइत अछि। चारिम स्थानक लोभ देखाकऽ कसकऽ खटेबाक विडम्बना कथा उजागर करैत अछि।

कथा ४९ · भोट

गढ़ नारिकेल पंचायतक मुखिया चुनावमे पैघ गामसँ सात उमेदवार ठाढ़ होइत छथि, जखन कि छोट पड़ोसी गामसँ एक्केटा। हारिक आशंका देखिकऽ गामक लोक आपसी मतदानसँ एक उम्मीदवार चुनबाक योजना बनबैत छथि। मुदा एक प्रत्याशी सेवानिवृत्त शिक्षककेँ चुनाव आचारसंहिताक भय देखाकऽ व्यवस्था रुकबा दैत छथि। अन्तमे सातो उम्मीदवार चुनावमे बनल रहैत छथि आ छोट गामक जीतक सम्भावना बढ़ि जाइत अछि।

कथा ५० · मसुआइ

गाममे खरहा आ आन जन्तुक मांस खेबाक सांस्कृतिक परम्परा एकटा विद्यालयक प्रसंगमे विवाद बनि जाइत अछि। नन्हा बालक विद्यालयक पालतू खरहा घर लऽ जा मसुआइ बना कऽ खेबाक इच्छा प्रकट करैत अछि। शिक्षिका एकरा क्रूरता आ बच्चाक

परवरिशक समस्या बुझैत छथि। पिता खानपानक सांस्कृतिक अन्तर बुझबैत छथि, मुदा हुनकर चिन्ता दूर नहि होइत अछि।

कथा ५१ · साइबेरिया कैम्प

अफगानिस्तानसँ विस्थापित भऽ जर्मनीक नागरिक बनल एक सरदारक साइबेरियामे दोकान अछि। हुनकर कटल आंगुर देखिकऽ एक व्यक्ति साइबेरियाक कैम्पक इतिहाससँ सम्बन्ध जोड़ैत अछि। व्यापारी स्पष्ट करैत छथि जे ओतऽ व्यापार सेहो होइत अछि; अत्यधिक शीतमे नशाक बाद दस्ताना उतारि देलासँ हाथ ठरि कऽ आंगुर कटेबाक नौबत आबि जाइत अछि। पूर्वधारणा आ प्रत्यक्ष अनुभवक अन्तर कथा देखबैत अछि।

कथा ५२ · मीत भाइ शृंखला — १. चन्सगर

मीत भाइक विवाहक सम्बन्ध देखबऽ आयल लोककेँ घटक हुनकर धन-धान्यक बखान करैत छथि। सम्पूर्ण बाध मीत भाइकेँ भेटल अछि, से दावा कएल जाइत अछि। खेतक बीच-बीचमे आरि देखिकऽ प्रश्न उठैत अछि तँ बाढ़ि आ ढालू जमीनक तर्कसँ बात सम्हारल जाइत अछि। विवाहक बाजारमे चतुर वाक्चातुर्यक चित्रण अछि।

कथा ५३ · मीत भाइ शृंखला — २. गढ़नि

मीत भाइक बहुत गहींर वर्णकेँ लऽ कऽ लोक तरह-तरहक टिप्पणी करैत अछि। विवाहक बाद पत्नी केहन छथिन्ह पुछलापर ओ हुनकर रूपक तुलना प्रसिद्ध अभिनेत्री सँ करैत छथि, मुदा रंग अपनासँ आरो गहींर बतबैत छथि। रूप, रंग आ सामाजिक सौन्दर्य-बोधक अन्तरपर ई छोट हास्यात्मक प्रसंग अछि।

कथा ५४ · मीत भाइ शृंखला — ३. चयन

एक व्यक्ति आश्चर्य करैत अछि जे एतेक पैघ देश भारत छोट-छोट देशसँ खेलमे केना हारि जाइत अछि। मीत भाइ सहज उत्तर दैत छथि जे क्रिकेट आ फुटबॉलमे सम्पूर्ण देश नहि,

निर्धारित गोटेक खिलाड़ी खेलैत छथि। जनसंख्याक आकार आ कुशल खिलाड़ी चयनक अन्तर एक वाक्यमे स्पष्ट होइत अछि।

कथा ५५ · मीत भाइ शृंखला — ४. मीत भाइ आ चोर बजार

दिल्लीक चोर बजारमे सस्त आ मूल्यवान जुत्ता भेटबाक लोभ मीत भाइकेँ आकृष्ट करैत अछि। विक्रेता हुनका अनमोल वस्तुक भ्रम देखाकऽ लगभग सभ पाइ लऽ लैत अछि। चारि दिनमे जुत्ताक सोल उखड़ि जाइत अछि। अपन ठकल जेबाक अनुभव सुनबैत मीत भाइ बजारक ठग सभकेँ अद्भुत बुद्धिमान मानि व्यंग्यपूर्वक सम्मानक योग्य ठहरबैत छथि।

कथा ५६ · मीत भाइ शृंखला — ५. मास्टरी

मीत भाइ कहैत छथि जे मास्टरीक दरमाहा आ खेतीक आमदनीसँ ओ निरन्तर धन जमा करैत छथि। मुदा कन्याक सम्बन्ध लऽ कऽ जेबाक समय लोक हुनकर आर्थिक क्षमता नहि मानैत अछि। जमा पूँजी अछैत शिक्षकक आयकेँ लऽ कऽ बनेल सामाजिक पूर्वधारणापर हुनकर आक्रोश प्रसंगक मूल अछि।

कथा ५७ · मीत भाइ शृंखला — ६. पसीझक काँट

मीत भाइ पसीझक काँटक रससँ पोखरिमे माछ मारैत छथि, मुदा अनजाने एक बीमार बच्चाकेँ सेहे रस पिआबाक सलाह दऽ दैत छथि। समयपर चेतावनी भेटलासँ बच्चा बचि जाइत अछि। पश्चात्तापमे मीत भाइ कंठी लैत छथि, मुदा स्वयं माछ खेनाइ नहि छोड़ैत छथि। माछ मारब आ खायबक बीच हुनकर विचित्र तर्क हास्य उत्पन्न करैत अछि।

कथा ५८ · मीत भाइ शृंखला — ७. टेलीफोन डायरी

गोनर झा बहुत लोकक दूरभाष संख्या लिखल पुस्तिका देखैत छथि। मीत भाइ आशंका जगबैत छथि जे पुलिस एतेक संख्या देखिकऽ हुनका आतंकवादी मानि सकैत अछि। भयभीत गोनर झा तत्काल अपन उपयोगी पुस्तिका फाड़ि फेकि दैत छथि। काल्पनिक भयक कारण वास्तविक हानिक प्रसंग अछि।

कथा ५९ · मीत भाइ शृंखला — ८. गोबर काढ़ब

पोखरि दिस जाइत मीत भाइ जगन्नाथकेँ गोबर काढ़ैत देखैत छथि। उपस्थित पत्नी लग ओ मौन रहैत छथि; बादमे एकान्तमे विवाह आ धनक प्रसंग उठबैत छथि। अपन विवाहमे धन नहि लागल आ पत्नी एतेक दुलारू नहि छथि, तेँ गोबर काढ़बाक विवशता नहि, से कहि ओ घरेलू श्रमपर सामाजिक व्यंग्य करैत छथि।

कथा ६० · मीत भाइ शृंखला — ९. अधिक फलम् डूबाडूबी

अत्यन्त मितव्ययी बच्चा बाबू गुड़क चाह अथवा नेबोक चाहक गुण बखान करैत खर्च घटेबाक प्रयास करैत छथि। मीत भाइ तीर्थस्थलमे कुसियार छोड़ि देबाक अपन प्रतिज्ञा बतबैत छथि आ दूधबला चाहपर अड़ि जाइत छथि। फलतः बच्चा बाबूकेँ खर्च उठाबऽ पड़ैत छन्हि। कंजूसीकेँ चातुर्यसँ परास्त करबाक हास्य अछि।

कथा ६१ · मीत भाइ शृंखला — १०. मीत भाइक बेटा

मीत भाइक बेटा घरसँ चलि जाइत छथि, तेँ ओ बेटा आ रोजगारक खोजमे दिल्ली बिदा होइत छथि। रेलमे सहयात्रीसँ झंझट होइत छन्हि आ पुलिस खेसारीक बिड़ियाकेँ गाँजा बताकऽ हुनकर अधिकांश पाइ छीनि लैत अछि। दिल्ली पहुँचला पर बेटाक घर घुरि एबाक समाचार भेटैत अछि। मीत भाइ नोकरीक आशा छोड़ि गाम घुरबाक निर्णय लैत छथि।

कथा ६२ · मीत भाइ शृंखला — ११. भा. प्र.से.

मीत भाइ कलक्टरसँ अपन घनिष्ठ परिचयक बखान करैत ‘भा. प्र.से. प्रशांत’ नाम दोहरबैत छथि। बुझाओल जाइत छन्हि जे भा. प्र.से. व्यक्ति-नामक अंश नहि, भारतीय प्रशासनिक सेवाक संक्षेप अछि। पदनामक बाहरी चमक आ वास्तविक जानकारीक अन्तर एतऽ विनोदमय बनैत अछि।

कथा ६३ · मीत भाइ शृंखला — १२. महादेवक दूध पीबाक सोर

मीत भाइ तीन कुकुरक कथा सुनबैत छथि, जे एक मिठाइबला लग जा कऽ मारि खेनो अपन अपमान नुका कऽ सत्कारक झूठ बखान करैत अछि। तकर तुलना ओ शिवलिङ्गक दूध पीबाक अफबाहसँ करैत छथि। स्वयं विपरीत प्रमाण देखलाक बादो लोकक प्रश्नपर चमत्कारकेँ नकारबाक साहस नहि होइत छन्हि। कथा सामूहिक दबाव आ झूठक प्रसार बुझबैत अछि।

कथा ६४ · बिहारी

कार्यालय परिसर साफ करेबाक प्रसंगमे एक कर्मचारी ‘चारिटा बिहारी’ मजदूर बजा देबाक बात कहैत अछि। कथावाचक उत्तर दैत छथि जे तीन गोटे बजाउ, एक बिहारी तँ हम स्वयं छी। संवादमे बिहारी शब्दकेँ केवल मजदूरीक पर्याय बना देबाक मानसिकतापर व्यंग्य अछि।

कथा ६५ · फिल्डिंग

एक व्यक्ति क्रिकेट खेलनाइ छोड़ि देबाक कारण बतबैत अछि जे ओकरा सदिखन क्षेत्ररक्षण करऽ पड़ैत छल, बल्लेबाजीक अवसर भेटिते आउट भऽ जाइत छल। कथावाचक क्षेत्ररक्षण आ गेन्दबाजीक महत्त्व उठबैत छथि। कथा केवल बल्लेबाजीकेँ खेल माननिहार दृष्टिकोणक सीमा देखबैत अछि।

कथा ६६ · स्किल

कार्यालयमे एक कर्मचारी तकनीकी प्रक्रियाकेँ जल्दी सम्पन्न कऽ प्रशंसा पबैत अछि। मुदा शिकायत करैत अछि जे लोक आन सभकेँ परिश्रमी आ ओकरा मोबाइलमे लगल मानैत अछि। जकर काज अधिक कुशलतासँ कम समयमे होइत अछि, ओकर श्रमक मूल्यांकन नहि होइब कथाक विडम्बना अछि।

कथा ६७ · डिसीप्लीन

एकटा सहकर्मी आश्चर्य करैत अछि जे बॉसक गारि सुनियो दोसर कर्मचारी तामस नहि देखबैत अछि। ओ स्वीकार करैत अछि जे ओकरो तामस होइत अछि आ ओ बॉसकेँ खूब गारि दैत अछि—मुदा केवल मोनमे। बाह्य अनुशासन आ भितरी प्रतिरोधक एहि दूरीमे हास्य अछि।

कथा ६८ · साइंस — १. साइंस शिक्षा

विद्यालयक अन्तिम दिन विद्यार्थी सभ एक-दोसराक कमीजपर स्मृतिचिह्न लिखैत छथि, मुदा विज्ञान पढ़निहार बेटाक कमीज खाली अछि। बेटा एकरा विज्ञान-वर्गक गम्भीरता बतबैत अछि; कथावाचककेँ ओतऽ उमंगक अभाव आ मानसिक दबाव देखाइत अछि। शिक्षा आ सहज किशोरजीवनक असन्तुलनपर प्रसंग संकेत करैत अछि।

कथा ६९ · साइंस — २. रसायनशास्त्र

चोरी करैत पकड़ायल रसायनशास्त्रक स्नातकक आँखिमे गामक लोक आकक दूध देबाक निर्णय लैत अछि। चोर अपन वैज्ञानिक जानकारीक भरोसे करू तेलसँ आँखि खराप होएबाक बात कहैत अछि, जाहिसँ लोक उनटे करू तेल सेहो दऽ दैत अछि। एक आँखि नष्ट होइत अछि, मुदा दोसर बचि जाइत अछि। कथा हिंसक अन्धविश्वास आ आधा-अधूर बुझाइकेँ विचित्र व्यंग्य बनबैत अछि।

कथा ७० · साइंस — ३. भौतिकी

टिकट बिना यात्रा करैत पकड़ाएल एक भौतिकी स्नातक भागैत काल खेतमे एक चप्पल छोड़ि दैत छथि, मुदा दोसर हाथमे लऽ चलि जाइत छथि। बादमे पहिल चप्पलो लऽ अनैत छथि। गामक लोक अनुमान करैत छथि जे दुनू चप्पल खेतमे छोड़ि देलासँ दोसर चप्पल सेहो कियो उठा लैत। एहि तर्कसँ गाममे विज्ञान पढ़बाक नव उत्साह जागैत अछि।

खण्ड ८

इजोत—जनम-जनमक कथा

४९ कथाक सारांश

इजोत — मूल त्रि-आन्दोलन

कथा १ · पाँजिक चोर

पुरान वंश-पाँजिक संरक्षण करैत निरंजनकेँ उदयनपुर शाखामे जानि-बुझि खुरचल एक प्रविष्टि भेटैत अछि। शिवकान्तक असहज चुप्पी, हरिनारायणक चिट्ठी आ सुभद्राक मौखिक स्मृतिसँ महेसर नामक एक विस्मृत मनुष्यक संकेत भेटैत अछि। सुभद्रा एक फाटल कागज सेहो अनैत छथि, मुदा ओकरा मूल पाँजिक प्रमाणित अंश मानबाक पर्याप्त आधार नहि अछि। निरंजन सम्भावना आ प्रमाणक अन्तर बचा कऽ मेटाओल प्रविष्टिक तथ्य दर्ज करैत अछि, निश्चित नाँव नहि गढ़ैत अछि। कथामे वंशक इतिहाससँ मनुष्यकेँ मेटेबाक हिंसा उद्घाटित होइत अछि। अन्तमे स्पष्ट होइत अछि जे चोर केवल एक व्यक्ति नहि; सामूहिक चुप्पी सेहो स्मृतिक चोरी करैत अछि।

कथा २ · फेर सँ देखल घर

बड़की काकीक मृत्युक बाद माधवी तीस बरखक अन्तरालपर अपन गामक घर अबैत अछि। बदलल आँगन, बन्द कोठली आ मायक दीपसँ पड़ल धुआँक दाग ओकरा बचपन दिस घुरबैत अछि। पढ़ाइ लेल घर छोड़बाक पुरान संघर्षमे ओ मायकेँ निष्क्रिय मानैत रहल छल, मुदा स्मृति आ परिजनक छोट-छोट बातसँ मायक चुप्पीक भीतर सम्भावित सहयोगक आभास होइत अछि। भाइ अशोक घरक भविष्य आ सम्भावित बिक्रीक प्रश्न उठबैत अछि। माधवी भोरमे घरकेँ बाहरसँ देखैत मायक वाक्यक नब अर्थ पबैत अछि—घरक भीतर रहि कऽ सभक ठाम बुझल नहि जाइत। ओ निश्चित फैसला बिना घुरैत अछि, मुदा माय आ घरकेँ देखबाक ओकर दृष्टि बदलि चुकल रहैत अछि।

कथा ३ · मुक्त राज्यमे

ई कथा परदेसमे श्रम करैत अनेक लोकक जीवनकेँ अलग-अलग नगरक दृश्यसँ जोड़ैत अछि। दिल्लीक अस्पतालमे रातिक रखबारी करैत बिनोदकेँ जाति-गोत्रक पुरान परिचयसँ मुक्ति भेटैत अछि, मुदा प्रवासी जीवनक थकान आ अस्थायित्व ओकरा जकड़ने रहैत अछि। आन श्रमिकसभक कोठली, वेतन, घर पठाओल रुपैया आ घुरबाक अधूर योजना प्रवासक वास्तविक मूल्य देखबैत अछि। कोलकातामे किरण बेटी सोनमक आगाँक पढ़ाइक व्यवस्था सोचैत अछि। कारखानामे काज करैत नरेश घर जेबाक टिकट, अग्रिम ऋण आ कामक दबावक बीच फँसल रहैत अछि। कोमलक लाल फ्रॉक पहिरि स्टेशनपर प्रतीक्षा करबाक सन्देश ओकर अन्तर्द्वन्द्व तीव्र करैत अछि। कथाक ‘मुक्त राज्य’ आर्थिक निर्भरता आ अधूरी स्वतन्त्रताक विरोधाभास बनि उठैत अछि।

कथा ४ · जल समाधि

मालतीक पति सुबोध गायब छथि; नदीक कात साइकिल भेटल, मुदा देह नहि। परिवार हुनका डूमल मानि लेबय चाहैत अछि, जखन कि मालती अनिश्चित सत्यक संग जीबैत अछि। पुरान पारिवारिक पोथीमे चन्द्रकलाक नामक आगाँ ‘जल मानल’ लिखल भेटैत अछि। खोजबीनमे संकेत भेटैत अछि जे चन्द्रकला नदीमे डूमल नहि, सम्भवतः घरसँ बाहर पठाओल गेलीह। सासुक अनुभवसँ मालती बुझैत अछि जे स्त्रीक अनुपस्थितिकेँ जल-समाधिक नाम दऽ परिवार अपन प्रतिष्ठा बचबैत रहल अछि। नदीक स्वर आ भयक बीच मालती घाटपर जाइत अछि, मुदा डूमबाक बदला बस पकड़ि मायघर चलि जाइत अछि। ओ अपन जीवनक अर्थ दोसरक लिखल निर्णयक हाथ नहि छोड़ैत अछि।

कथा ५ · जातिक बाहर

एक स्त्रीक परिवारक नाँव प्रतिष्ठित वंश-पाँजिमे नहि अछि, मुदा एक दिन खुरचल प्रविष्टिक खोज ओकर आँगन धरि पहुँचैत अछि। नीलाभक जाँचमे धरनी नामक पूर्वज स्त्रीक संकेत भेटैत अछि, जिनकर जीवनकेँ ऊँच जातिक घरसँ जुड़ल एक विवादित सम्बन्ध धरि सीमित कऽ देल गेल छल। कथावाचिका धरनीक श्रम, सूप बुनबाक कला, बाढ़िमे

बालक बचेनाइ आ गीत गेनाइक स्मृति एकत्र करैत अछि। ओ अनुमानकेँ प्रमाण नहि बनबैत अछि आ अपन परिवारक मौखिक परम्पराक सीमा सेहो लिखैत अछि। अन्तमे ‘लोक’ नामक बहीमे ओ वंशक संकीर्ण घेरासँ बाहर रहल लोकसभक नाँव दर्ज करैत अछि। धरनी आब केवल खुरचल प्रविष्टि नहि, पूरा जीवनक स्मृति बनैत छथि।

कथा ६ · ओछाइनक हिसाब

सोनमती बियाहक पहिल रातिएँ बुझि जाइत अछि जे घरमे ओकरा लेल खाटपर सेहो पूरा ठाम नहि। पति मोहनक ‘थोड़ेक सरकू’ सँ शुरू भेल अनुभव समयक संग स्त्रीक श्रम, निजी अधिकार आ परिजनक अपेक्षाक हिसाब बनि जाइत अछि। सोनमती अपन बहीमे खाटक छोट-पैघ बँटवारा लिखैत अछि आ नव पुतोहू रीनाक ठाम बचबैत अपन पुरान अनुभवक पुनरावृत्ति रोकैत अछि। बाबूजीकेँ बीमारीमे अपन खाट स्वेच्छासँ देबाक बाद ओ छीना गेल ठाम आ प्रेमसँ देल ठामक अन्तर बुझैत अछि। मोहनक मृत्युक बाद पूरा खाट भेटितो खालीपन रहैत अछि। अन्तमे नातिन अनन्या लेल ओ अपन इच्छासँ सरकैत अछि; एहि बेर हिसाबमे त्याग संग अपन निर्णयक स्वतन्त्रता लिखल जाइत अछि।

कथा ७ · दोसर बियाह

विधवा पद्माक दोसर बियाहक चर्चा परिवार आ गाममे चलैत अछि, मुदा पद्माक अपन आवाज सभसँ पाछाँ सुनल जाइत अछि। बेटी तृषाक पढ़ाइ, पहिल ससुरारक सम्पत्ति, सासु भवानी देवीक देखभाल आ प्रस्तावित वर चन्द्रकान्तक घरक अपेक्षा अलग-अलग दबाव बनबैत अछि। एहि बीच पद्मा अपन सिलाइक काज बढ़बैत अछि आ दू युवतीकेँ रोजगार दैत अछि। औपचारिक बैठकमे सभ गोटे ओकर भविष्यक अर्थ अपन हिसाबसँ खोलैत छथि। पद्मा सिलाइकक बही, बेटीकेँ पढ़ेबाक पर्ची आ सासुक दवाईक हिसाब सोझाँ राखि अपन वास्तविक जीवनक जिम्मेदारी देखबैत अछि। चन्द्रकान्त पहिल बेर सीधा पूछैत छथि जे ओ की चाहैत अछि। पद्मा बियाहक सहमति दैत अछि, मुदा घर छोड़बाक शर्त अस्वीकार करैत अछि।

कथा ८ · गजलक बहर

नसीमा बीक जीवन उस्ताद करीम बख्शक शिक्षासँ शुरू भऽ महफिल, रिकॉर्डिंग, व्यावसायिक दबाव आ बदलैत पीढ़ीक बीच पसारैत अछि। गजलक बहर आ रदीफ सिखैत-सिखैत ओ बुझैत छथि जे एकहि पदक अर्थ जीवनक अलग क्षणमे बदलि जाइत अछि। गायिकाक नाँव छोट करबाक, शेर काटबाक आ कलाकारक इतिहासक सीमित प्रस्तुति करबाक प्रयासक ओ प्रतिरोध करैत छथि। बेटी सबाक सामाजिक संकोच आ शिष्यसभक नब आकांक्षा हुनका जीवनमे दोसर संघर्ष आनैत अछि। वृद्धावस्थाक छोट महफिलमे रुखसाना गजल उठबैत छथि आ नसीमा अगिला पीढ़ीकेँ नियम आ बन्धनक अन्तर बुझबैत छथि। कथा स्वरक उत्तराधिकारकेँ स्थिर पुनरावृत्ति नहि, बदलैत अनुभवक जीवित क्रम रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

कथा ९ · पाहुनक कोठली

बाबूक मृत्यु पर विदेशसँ घुरल अनामिका अपन पुरान घरक पाहुनक कोठलीमे माय संग राति बितबैत अछि। ओ बरखो सँ एहि कोठलीकेँ अपन घरसँ अलग कऽ देबाक संकेत मानैत रहल छलीह। बातचीतमे स्पष्ट होइत अछि जे पढ़ाइ लेल बाहर जेबाक संघर्षमे मायक गुप्त सहयोग निर्णायक छल आ पाहुनक कोठली ओकर विश्राम लेल चुनल गेल छल। एके घटनाक माय आ बेटी दू भिन्न अर्थ बना लेने छलीह। अनामिका अपन बेटी ईराकेँ सेहो बिना पूछने अलग कोठलीमे राखबाक आदतपर सोचैत अछि। पीढ़ीक बीच गलतफहमी कम होइत अछि, कारण ओ निर्णय सुनयबाक बदला इच्छा पूछबाक महत्त्व बुझैत अछि। कोठली बदलैत नहि; ओकरा देखबाक दृष्टि बदलैत अछि।

कथा १० · कुहेस

लम्बा प्रवासक बाद बिनोद दिल्लीक नौकरी छोड़ि गाम घुरैत अछि। कुहेससँ ढाकल बाट, बदलल पोखरि आ नव मकान ओकर स्मृति आ वर्तमानक अन्तर खोलैत अछि। ग्राम-अभिलेख केन्द्रमे निरंजनसँ भेंट होइत अछि, जतय मेटाओल नाँव, अधूर प्रमाण आ लोकक कथा पर बातचीत होइत अछि। बिनोद बुझैत अछि जे पूरा परिचय-पत्रो मनुष्यक पूरा जीवन

नहि कहि सकैत। घरमे रेणु ओकर प्रवासक अनिश्चित समाप्ति पर प्रश्न करैत अछि। बिनोद गामक माटिसँ एक गमला भरैत अछि, अस्पतालक पुरान नाम-पट्टी खिड़कीपर राखैत अछि, मुदा रहबाक कोनो पैघ प्रतिज्ञा नहि करैत। कुहेस पूरा नहि हटैत; तथापि घर देखाइत अछि आ ओ दिन गनबाक बदला प्रतिदिनक जीवनक सामना करबाक बाट चुनैत अछि।

कथा ११ · न्यायक सीमा

नव्य-न्यायक अध्येता रत्नेश्वर झाक जीवन नाति अनयक सड़क-दुर्घटनामे मृत्युसँ बदलि जाइत अछि। दुर्घटनाक कारण जाँचैत ओ प्रत्यक्ष तथ्य आ अनुमानकेँ अलग राखबाक आग्रह करैत छथि, मुदा बेटी मृणालक शोकक सोझाँ हुनकर दार्शनिक भाषाक सीमा खुलैत अछि। कागज, जाँच आ विधिक प्रक्रियामे हुनकर सूक्ष्मता उपयोगी सिद्ध होइत अछि, किन्तु कोनो तर्क मृत बालकक अनुपस्थिति नहि मेटा सकैत। बेटी हुनकासँ सिद्धान्त नहि, अपन कात बैसब चाहैत छथि। विश्वविद्यालय घुरलापर रत्नेश्वर ज्ञानक सीमा पर पहिने जकाँ पढ़बैत छथि, मुदा प्रश्नक अधूरापन स्वीकारैत छथि। पाण्डुलिपिक खाली टिप्पणी आब हुनका दोष नहि, मानवीय अनुभवक मर्यादाक चिह्न बुझाइत अछि।

कथा १२ · आखर

सरस्वती देवी अपन नातिन ईरा लेल पुरान मैथिलाक्षरमे चिट्ठी लिखैत छथि, जखन कि ईरा ओ लिपि पढ़ि नहि सकैत अछि। चिट्ठीमे मातृभाषा, लिपि, पीढ़ीक दूरी, बोलबाक साहस आ स्मृतिक अर्थपर नानीक आत्मीय विचार अछि। ओ भाषा बचयबाक आज्ञा नहि दैत छथि; केवल एकटा आखर सीखबाक समय माँगैत छथि। हुनकर मृत्युक बाद ईराकेँ कापीक बीच चिट्ठी भेटैत अछि। काकीसँ पढ़बैत समय ओ यन्त्रमे आवाज कैद करबाक बदला ध्यानसँ सुनैत अछि। अन्तक खाली पाँतिमे ईरा देवनागरीमे लिखैत अछि जे ओ अगिला दिन पहिल आखर सीखत। पुरान लिपि आ नब लिखावट एक पन्नापर आबी पीढ़ीसभक बीच सम्भावित संवादक रूप लेइत अछि।

गोतगोत

कथा १३ · पाँजी (अन्तिम प्रविष्टि)

पंजीकार हरिनारायणक पौत्र ईशानकेँ जमीनक विवादमे पुरान वंश-पाँजिक एक पाँतिक सत्यता जाँचबाक आग्रह होइत अछि। प्रविष्टिमे विमलकेँ दुर्गानन्द आ कमलाक पुत्र कहल गेल अछि। परिवारक आवेदन, पंचक कागज आ साक्ष्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे विमल जन्मसँ कमलाक बहिनक पुत्र छल, मुदा दुर्गानन्द आ कमला ओकरा अपन पुत्र जकाँ पोसने छलाह। पारिवारिक अपनत्व, उत्तराधिकार आ बादमे जोड़ल अभिलेखक बीच जटिल सम्बन्ध बनल अछि। ईशान अपन दादाक लिखल पाँति मेटबैत नहि, बल्कि ओकर समय, आशय आ सीमाकेँ स्पष्ट करैत नव टिप्पणी जोड़ैत अछि। जमीनक अधिकारक निर्णय अलग कागजपर छोड़ल जाइत अछि। एहि संशोधनसँ पाँजिमे दादाक त्रुटि आ पोताक उत्तरदायित्व दुनू सुरक्षित रहैत अछि।

कथा १४ · जुड़वा

मायक शल्य-चिकित्साक समय अमितेश अपन रक्त-समूह आ माता-पिताक समूहमे असामान्य अन्तर देखैत अछि। चिकित्सक जल्दबाजीमे निष्कर्ष नहि निकालबाक चेतावनी दैत छथि। पुरान अस्पतालक अभिलेख खोजैत अमितेशक भेंट एकहि जन्मतिथिवला राघव मण्डलसँ होइत अछि; दुनू परिवारक प्रमाणसभ जन्मक समय शिशु बदलि जेबाक सम्भावना मजबूत करैत अछि। सत्यक असर केवल जैविक सम्बन्धपर नहि, तीन दशकक पालन-पोषण, भाषा, पेशा आ स्नेहपर पड़ैत अछि। दुनू परिवार कोनो एक झटकामे अपन जीवन न बदलैत अछि, न पहिल अभिभावककेँ त्यागैत अछि। अमितेश आ राघव बुझैत छथि जे जन्मक आकस्मिक चूकसँ हुनकर बनल जीवन असत्य नहि होइत। पारिवारिक सम्बन्ध रक्तक प्रमाणसँ व्यापक बनि उभरैत अछि।

कथा १५ · गोतिया

दोहामे पैघ भेल अयनकेँ विद्यालयक ‘स्थायी पता’क खानामे लिखल मिथिलाक गाम एक विचित्र पहिचान लगैत अछि। दादा उमाकान्तक मृत्युक बाद पुरखा-घरक नामान्तरण लेल

पिता प्रणवकेँ गोतिया लोकक गवाही आ सरकारी वंशावली चाही। भूमि-विवाद, रिश्तेदारक अनिच्छा, पितृपक्ष आ मातृपक्षक अलग स्मृति, सरकारी प्रविष्टिक उलटल अंक—सभ मिलि परिवारक इतिहासकेँ एकरेखीय बनबाक विरोध करैत अछि। प्रक्रिया पूरा होइत अयन बुझैत अछि जे प्रमाणपत्रक नाँव आ अपनत्वक सम्बन्ध समान वस्तु नहि। गामक सुभद्रा काकी, विवाद करयवला जगदीश काका आ अपन माय सभ ओकर परिचयमे छथि। दोहा घुरैत ओ स्थायी पताक अर्थ फेर सोचैत अछि—घर ओतहु अछि जतय लोक फॉर्म बिना ओकरा मोन रखैत अछि।

कथा १६ · छिपल शाखा

नव विवाहिता कीर्तिकेँ ससुरारक सीढ़ीक नीचाँ बन्द पेटीमे पुरान चिट्ठी आ फोटो भेटैत अछि। पत्रसभमे मंजरी, सुधा आ दीपकक उल्लेख एक एहन पारिवारिक शाखा दिस संकेत करैत अछि जकर चर्चा घरमे दबा देल गेल छल। कीर्ति आ परिवारक आन सदस्य कागज क्रमसँ पढ़ैत छथि; हर अधूर पाँतिक झटपट अर्थ निकालबाक बदला सम्बन्धित लोकक निजताक सम्मान करैत छथि। दीपक धरि पहुँचनाइ सम्भव भेलापर पत्र लिखि सम्पर्कक प्रस्ताव राखल जाइत अछि, उत्तर देबाक स्वतन्त्रता हुनकेँ छोड़ल जाइत अछि। अन्ततः विस्मृत सम्बन्धक नब बातचीत शुरू होइत अछि, मुदा पुरान दूरी एकाएक समाप्त नहि होइत। चिट्ठीसभ सुरक्षित रखि बीचमे खाली पन्ना जोड़ल जाइत अछि, ताकि नव पीढ़ी अपन कथा स्वयं लिखि सकय।

कथा १७ · दत्तक

शम्भुनाथ आ रमानाथ दुइ भाइक परिवारमे अभिनवक पालन-पोषण आ जन्मसम्बन्ध सम्पत्तिक विवादक कारण बनैत अछि। अपन सन्तान नहि बचलापर शम्भुनाथ-गौरी अभिनवकेँ पुत्रवत् पोसने छलाह; जन्मदाता रमानाथक पुत्र अरविन्दक मृत्युपछि पुरान निर्णय पर नव आक्रोश उठैत अछि। अदालतमे विद्यालय, विवाह, अस्पताल आ पाँजिक अभिलेख परिवारक दीर्घ स्वीकृतिक साक्षी बनैत अछि, मुदा वंशक सामाजिक मान्यता आ जमीनक कानूनी स्वामित्व अलग प्रश्न सिद्ध होइत अछि। मध्यस्थता आ बातचीतक बाद विवाद घटैत अछि। अभिनव अपन दू पिता आ दू मायक बीच ककरो अस्वीकार नहि करैत

अछि। अन्तमे ओकर नामक संग दुनू सम्बन्ध दर्ज होइत अछि, आ साझा स्मृति सम्पत्तिक बँटवारासँ पैघ ठहरैत अछि।

कथा १८ · जाति-पार

चन्दन झा आ नीलिमा पासवान अपन बेटी ईराक नाँवसँ जातिसूचक उपनाम हटबैत छथि। एहि निर्णयसँ दादा भवेश्वरक वंश-बोध आ नीलिमाक मायक परिवारक अदृश्य इतिहासक प्रश्न उठैत अछि। नीलिमा बेटी लेल दुनू परिवारक लोक, श्रम, गीत, फोटो आ ज्ञात-अज्ञात तिथि सँ 'हमर लोक' बही तैयार करैत अछि। पुरान पाँजिमे बेटी आ मातृवंशक सीमित स्थान देखलासँ सम्बन्धक भीतरक असमानता खुलैत अछि। ईरा अपन नानी-दादी आ दादासभसँ प्रश्न करैत, मिलल साक्ष्यक सीमा बुझैत आ नव परिवारक कल्पना करैत पैघ होइत अछि। विद्यालयक काजमे ओ अपन परिचय 'ईरा नीलिमा-चन्दन' लिखैत अछि, संगहि भविष्यक सम्बन्ध लेल खाली ठाम छोड़ैत अछि। वंश अपनत्वक खुलल क्रम बनैत अछि, जन्मसँ बनल एकटा बन्द घेरा नहि।

कथा १९ · डायरी

पंजीकार देवकीनन्दनक मृत्युक बाद पोती मृणालिनीकेँ हुनकर 'घरक हिसाब' नामक बही भेटैत अछि, जे असलमे निजी डायरी अछि। निष्पक्ष पंजीकारक प्रतिष्ठाक पाछाँ भगवती देवीक बासडीह-अधिकार विवाद, धानक लेन-देन आ दादाक अपन संशयक जटिल इतिहास खुलैत अछि। मृणालिनी निजी लिखावटकेँ अन्तिम सत्य मानबाक बदला अदालतक दस्तावेज, आन हिसाब आ मौखिक साक्ष्यक संग मिलबैत छथि। किछु बात प्रमाणित होइत अछि, किछु सम्भावित रहि जाइत अछि। सार्वजनिक पुस्तकालयमे डायरीक प्रति सन्दर्भ सहित राखल जाइत अछि, संगहि भगवतीक संघर्षक स्वतंत्र परिचय देल जाइत अछि। कथा देखबैत अछि जे अभिलेख बनबयवला हाथो अपन समय, पक्षधरता आ सीमासँ मुक्त नहि होइत।

कथा २० · नकली वंश

बेटा नवलक बियाहक लेल रामबिलास मण्डलसँ सात पीढ़ीक वंशावली माँगल जाइत अछि। पुरखा लोकक पूरा नाँव नहि जनलाक संकोचमे ओ कम्प्यूटरसँ बनल चमकदार वंश-वृक्ष बनबबैत छथि, जाहिमे अप्रमाणित जानकीनाथकेँ पुरखा मानि लेल जाइत अछि। एहि कागजसँ विवाहक प्रतिष्ठाक अतिरिक्त जमीनपर गोतियाक दावा सेहो उठि जाइत अछि। नवल झूठक आधारपर बियाह करबाक विरोध करैत अछि, आ परिवार धीरे-धीरे त्रुटिक सार्वजनिक सुधार करैत अछि। जाँचसँ स्पष्ट होइत अछि जे जानकीनाथक नाम एक भू-चिह्न छल, प्रमाणित पूर्वज नहि। अन्तमे नवलक विवाह ज्ञात माता-पिता आ पुरखा लोकक साधारण परिचयसँ होइत अछि। रामबिलास अज्ञात नाँवक खाली ठामकेँ लाज नहि, सत्यक मर्यादा बुझय लगैत छथि।

कथा २१ · परदेशी जड़ि

टोरन्टोमे पिता शैलेशक मृत्युक बाद कनाडामे जन्मल अर्णव हुनकर गाम कुसुमपुरक खोजमे मिथिला अबैत अछि। संगमे पुरान चाभी, फोटो, अधूर पता आ पिताक मैथिली स्वरक छोट ध्वनि-स्मृति अछि। गामक कुन्ती देवीसँ ओकरा पिताक बालपनक एहन बात सुनबाक अवसर भेटैत अछि जे कोनो वंश-पाँजिमे दर्ज नहि। अर्णव बुझैत अछि जे पिताक जड़ि खोजनाइ आ अपन जीवनमे एहि जड़िक ठाम तय करनाइ अलग बात अछि। ओकर माय मीरा अपन वैवाहिक जीवनक भाषाई आदान-प्रदानसँ एहि भेदकेँ स्पष्ट करैत छथि। अर्णव अपन बेटी लीनाकेँ कुसुमपुरकेँ परिवारक एक ठाम रूपमे चिन्हयबाक स्वतन्त्रता दैत अछि। अपूर्ण प्रमाणक बीचो सम्बन्धक अनुभूति बचल रहैत अछि।

कथा २२ · पुरोहिताई

गामक मधुकान्तेश्वर स्थानक पुरोहिताई लेल रुद्रनाथ झाक मृत्यु-पछाति दुनू पुत्र शिवनाथ आ विद्यानाथक नाँव आबैत अछि। पैघ भाइ शिवनाथ बरखोसँ नित्य पूजा सम्हारैत छथि, जखन कि छोट भाइक शास्त्रीय विद्या बेसी अछि, मुदा गाममे नियमित रहबाक सामर्थ्य सीमित। समिति उत्तराधिकारी चुनबाक प्रक्रिया शुरू करैत अछि आ परिवारक पुरान त्याग

आ शिकायत बाहर अबैत अछि। पिताक टिप्पणीमे पुरोहिताईकेँ वंशगत पद नहि, सेवा आ पहरुआई कहल गेल भेटैत अछि। एक नामक जीतक बदला पूजा, व्यवस्था, प्रशिक्षण आ देखभालक काज साझा करबाक बाट निकलैत अछि। भाइसभक सभ मतभेद नहि मेटैत, मुदा मन्दिरक निरन्तर दीप ओकरा सभकेँ सामूहिक जिम्मेदारीक महत्त्व बुझबैत अछि।

कथा २३ · रागिनी-वंश

वृद्ध गायक माधवेश्वर झाक स्वर-संसारक उत्तराधिकार पर शिष्या किरण आ शिष्य आदित्यक अलग दृष्टि अछि। किरण मौखिक परम्परा आ गायनक जीवित लय सम्हारैत छथि, आदित्य ध्वनि-प्रति, स्वर-लिपि आ स्रोतक इतिहास सुरक्षित करैत अछि। गुरु एक अज्ञात गायिकाक पुरान रील सुनबैत कहलनि जे जकर नाँव निश्चित नहि, ओकरा अनुमानसँ भरब उचित नहि। हुनकर मृत्यु-पछाति दुनू शिष्य संगीतक संरक्षण आ प्रस्तुति बीच सहयोगक नब ढंग खोजैत छथि। नव किशोरी साक्षीक गायनमे नानी चन्द्रकलाक स्वर भेटैत अछि, जकर नाम दर्ज करबाक आवश्यकता ओ सभ बुझैत छथि। कथा रागिनी-वंशकेँ केवल गुरु-शिष्यक सीधा पाँति नहि, अनेक लोकक स्वर, श्रम, स्मृति आ परिवर्तनसँ बनल खुलल जाल रूपमे देखबैत अछि।

कथा २४ · मातृवंश

चारि पीढ़ीसँ मायसँ बेटी लग चलैत पुरखा-घरक चाभी नानी उर्मिला देवी अपन नातिन ईशानीकेँ देबय चाहैत छथि। ईशानी स्त्रीसभक नाम बचेलिहार एहि परम्पराक महत्त्व बुझैत छथि, मुदा जेठ बेटीपर घर सम्हारबाक अनिवार्य भार थोपबाक विरोध करैत छथि। पुरान बहीमे मातृवंशक उपलब्धिक संग पढ़ाइ, प्रशिक्षण आ स्वतन्त्र जीवनक छूटि गेल अवसर सेहो दर्ज अछि। रिद्धि घरकेँ शिल्पक सामूहिक उपयोग लेल खोलबाक विचार अनैत अछि; परिवारक पुरुषसभ अपन हिस्साक जिम्मेदारीक प्रश्नक सामना करैत छथि। अन्ततः चाभीक एकाधिकारक स्थानपर साझा पहुँच आ सहमतिक व्यवस्था बनैत अछि। ईशानी घर छोड़ैत नकल चाभी स्वीकार करैत छथि, मुदा ओ आब आदेश नहि, घुरि सकबाक स्वतन्त्र सम्भावना होइत अछि।

तत्त्व-कथा

कथा २५ • प्रमाण

सरस्वती देवीक चानीक हँसुली हराएलापर गामक लोक गरीब रामजीतकेँ तुरन्त चोर मानि लैत अछि। मुखिया उमा देवी आरोपक आधार जाँचय लगैत छथि आ प्रत्यक्ष देखल, सुनल बात, अनुमान आ पहिनेसँ बनल धारणा अलग करबैत छथि। हँसुलीक वास्तविक हानि स्पष्ट अछि, मुदा ताला, चाभी आ उपस्थित लोकक बयानसँ रामजीतक दोष सिद्ध नहि होइत। बादमे हँसुली देवीस्थानक दीपघरमे भेटैत अछि, किन्तु ओकरा ओतय के रखलक, ई अज्ञात रहि जाइत अछि। सरस्वती देवी रामजीतक मायक घर जाइत छथि; दू परिवारक बीच संवादक छोट अवसर बनैत अछि। उमा देवी अभिलेखमे घटना आ बचल अनिश्चितता दुनू दर्ज करैत छथि। कथा प्रमाणक मर्यादा आ सामूहिक पूर्वग्रहक अन्याय उद्घाटित करैत अछि।

कथा २६ • माया

हरिनारायण झाकेँ एगारह बरख पुरान एक निवेश-धोखाधड़ीक आंशिक क्षतिपूर्ति भेटैत अछि। नातिन अन्वीकेँ ओ अपन पुरान अनुभव सुनबैत छथि—चमकदार कार्यालय, बैंकमे शुरुआती लाभ, परिचित लोकक भरोसा आ नव निवेशक जोड़बाक लोभ मिलि हुनका भ्रममे फँसा देने छल। पत्नी सुशीलाक ‘रुपैया कोन स्रोतसँ आबैत अछि’ प्रश्न ओ पहिने अनसुना केने छलाह। कम्पनी बन्द भेलापर परिवारक आर्थिक आ सामाजिक क्षति भेल, मुदा शिकायत लिखैत हरिनारायण आरोपीसभक भूमिकाक विषयमे अज्ञात बात गढ़बाक अस्वीकार करैत छथि। अन्वीकेँ ओ बुझबैत छथि जे देखाइत वस्तु अपन जगह वास्तविक होइतो ओकर गलत अर्थ माया बनि सकैत अछि। दीपक असली लौ आ काँचक प्रतिबिम्ब एहि भेदक मूर्त उदाहरण बनैत अछि।

कथा २७ • रस

निर्देशक उदयकान्त आ अभिनेत्री माधवी बाढ़िमे लापता बेटीकेँ खोजैत मायक नाटकक अभ्यास करैत छथि। उदयकान्त शास्त्रीय करुण रसक अवयवसँ दृश्य बुझबैत छथि, मुदा माधवी मानैत छथि जे पात्रक अनुभूति मात्र पूर्वनिर्धारित नियममे नहि समाइत। अभ्यासक

समय निजी स्मृति, अभिनयक शिल्प आ दर्शकक अलग अनुभवक प्रश्न उठैत अछि। एक वृद्ध दर्शिका दृश्य देखिकऽ केवल करुणा नहि, खोज रोकि देनिहार व्यवस्थापर क्रोध अनुभव करैत छथि। एहि प्रतिक्रियासँ दुनू कलाकार बुझैत छथि जे एके प्रस्तुतिक रस सभक भीतर समान नहि होइत। अन्तमे श्यामपटपर ‘करुण’क संग ‘ककर भीतर?’ आ ‘ककर संग?’ लिखल जाइत अछि। कला आ अनुभवक बहस खुलल रहैत अछि, मुदा दुनू अपन दृष्टिक सीमा स्वीकार करैत छथि।

कथा २८ · नियति

शशिभूषण झा जुएमे हारल रुपैयाक दोष बेराबेरी नियतिपर दैत छथि। पत्नी ललिता घरेलू आर्थिक हानिक बही बनबैत छथि आ हुनकर चयनक वास्तविक असर दर्ज करैत छथि। कर्ज, झूठ, क्षणिक सुधार आ फेर दाँव लगेनाइ सँ परिवारक विश्वास घायल होइत अछि। मायक दुर्घटना आ वर्षाक क्षति जकाँ घटना शशिभूषणकेँ सोचबय बाध्य करैत अछि जे सभ दुःख अपन चयनसँ नहि होइत, मुदा सभक दोष भाग्यपर देबो उचित नहि। धीरे-धीरे ओ कर्ज चुकबैत आ अपन दाँवक जिम्मेदारी स्वीकारैत छथि। तैओ बेटी रागिनीक आहत विश्वास आ बेटा नन्दनक खर्च करबाक भय तुरन्त नहि मेटैत। अन्तमे ओ नियति आ अपन निर्णयक बीच अन्तर लिखैत छथि, पूर्ण मुक्ति घोषित नहि करैत।

कथा २९ · शब्द-ब्रह्म

वृद्ध कवि विनयकान्त मिश्र अपन छोट भाइक मृत्यु-पछाति शब्दक अपूर्णतासँ व्याकुल भऽ लिखब छोड़ि दैत छथि। ‘सरल मनुष्य’, ‘पानि’ वा ‘नीक’ जकाँ शब्द हुनका मनुष्य आ अनुभवक पूरा सत्य कहबाक लेल अपर्याप्त लगैत अछि। पत्नी जानकीक दैनन्दिन बातचीत—दालि जरब, कप चिन्हब, बेटीकेँ स्वास्थ्यक खबरि देब—ओकरा देखबैत अछि जे भाषा एक बेरमे सभ नहि कहैत; लोक प्रश्न करैत आ अर्थ आगाँ बढ़बैत अछि। पुरान काव्य-पाठ सुनि ओ अपन पूर्व विश्वासक पुनः परीक्षा करैत छथि। अन्ततः नव लिखावटमे खाली ठाम स्वीकार करैत छथि आ बुझैत छथि जे सीमित होयब व्यर्थ होयब नहि। फेर लिखबाक सम्भावना खुलैत अछि, यद्यपि कवि अपन संशयक अन्तिम समाधान नहि पबैत छथि।

कथा ३० · अनित्य

सुधा देवीक पुरान घर असुरक्षित भेलाक कारण तोड़ि नव बनाओल जा रहल अछि। हथौड़ाक प्रत्येक चोट हुनका विवाह, सन्तान, मृत्यु आ दैनन्दिन श्रमक स्मृति दिस घुरबैत अछि। बेटा मधुकान्त आ नातिन मृणाल पुरान घरक चिन्हसभ बचबैत छथि, मुदा सुधा देवी सभ ईंट वा तुलसीक पुरान चबुतरा बचेनाइ आवश्यक नहि मानैत छथि। जे वस्तु उपयोगी अछि ओकरा पुनः लगाओल जाइत अछि; जे टूटि गेल, ओकरा मलबामे छोड़ल जाइत अछि। नव घरमे रहैत सुधा देवी बुझैत छथि जे परिवर्तनक दुःख वास्तविक अछि, मुदा दुःखक कारण वर्तमान जीवन रोकल नहि जा सकैत। नातिनकेँ ओ स्मृति बनबयसँ पहिने जीबाक बात कहैत छथि। नव आँगनमे सरकैत उजास अनित्यताक शान्त अनुभव बनैत अछि।

कथा ३१ · आत्म-अनात्म

अभिनेता अनिरुद्ध ‘दामोदर’ नामक वृद्ध पात्रक अभिनय करैत-करैत ओकर चाल, साँस आ चुप्पी अपन घर धरि लऽ अबैत छथि। पत्नी आर्या देखैत छथि जे भूमिकाक अभ्यास हुनकर अपन व्यवहार बदलि रहल अछि। निर्देशक शेखर आ वरिष्ठ अभिनेत्री हुनका अभिनयक संसारमे प्रवेशक संग ओहिसँ बाहर निकलबाक उपाय सेहो सिखबैत छथि। अनिरुद्ध बुझैत छथि जे निजी स्मृति कलाकारक काजमे प्रवेश करैत अछि, मुदा पात्र आ व्यक्ति एक नहि होइत। नाटक समाप्त भेलाक बादो पात्रक किछु बानि स्मृतिमे बचल रहैत अछि; ओ एकरा भयक कारण नहि मानैत छथि। बेटी ताराक प्रश्नपर ओ समयक संग बदलैत ‘हम’क अर्थ सोचैत छथि। दीपक हिलैत छाया आत्मक स्थिर पहिचानक दावापर प्रश्न बनि रहैत अछि।

कथा ३२ · कार्य-कारण

बरखा आ नालाक कटावक बीच पिप्राक पुरान पुलिया धँसि जाइत अछि। मालवाहक गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त होइत अछि, लोक घायल होइत छथि आ रामसखी देवीक मृत्यु भऽ जाइत अछि। आरम्भमे लोक चालकक चूक, बरखा, कर्मफल वा प्रशासनकेँ अलग-अलग जिम्मेवार मानैत छथि। तकनीकी जाँच कमजोर आधार, माटिक क्षरण, पुरान दरार आ समयपर

निरीक्षण नहि होयबाक सम्मिलित कारण देखबैत अछि; किछु आरोपक पुष्टि नहि होइत। पंचायत घटना, हानि आ निष्कर्षकेँ अलग-अलग दर्ज करैत अछि आ नब पुलिया बनबैत निरीक्षणक व्यवस्था करैत अछि। रामसखी देवीकेँ केवल दुर्घटनाक आँकड़ा बनयबाक विरोध सेहो उठैत अछि। कथा बतबैत अछि जे दुःखक पूरा अर्थ नहि भेटलासँ कारणक खोज व्यर्थ नहि होइत।

कथा ३३ · मौन

हरिनाथ झा अधिक सुनबाक उद्देश्यसँ तीस दिनक मौन-व्रत आरम्भ करैत छथि। शिष्य सदानन्द हुनकर चुप्पीकेँ आध्यात्मिक संकेत मानि लोकसभक सामने अपन अर्थ बताबय लगैत छथि। परिवारक आर्तनाद, पार्वतीक व्यावहारिक प्रश्न आ आश्रमक बढ़ैत प्रचारसँ स्पष्ट होइत अछि जे मौन कखनो-कखनो उत्तर नहि देबाक अन्याय बनि सकैत अछि। एक्कैसम दिन सदानन्द रामवती देवीक जमीनक विषयमे मौनक सहमतिक दावा करैत छथि। हरिनाथ स्पष्ट ‘नहि’ कहि व्रत तोड़ैत छथि। पछाति ओ आश्रमक प्रचार सुधारैत छथि आ अपन बहीमे लिखैत छथि जे चुप रहब आ ध्यानसँ सुनब एक बात नहि। उत्तर देबाक आवश्यक क्षणमे वाणी त्यागब आध्यात्मिकता नहि, जिम्मेदारीसँ पाछाँ हटब बनि सकैत अछि।

कथा ३४ · स्वप्न

ईशानकेँ बाल्यकालसँ एक रहस्यमय पुलक स्वप्न बेराबेरी देखाइत अछि। पैघ भेलापर स्वप्नमे पुस्तकालय, अगिला दिनक तिथि आ परिचित लोकक विचित्र उपस्थितिसँ ओकरा स्वप्न आ जागरणक अन्तरपर संशय होइत अछि। ओ अपन अनुभवक बही बनबैत, स्मृतिक प्रमाण खोजैत आ नचिकेताक संग छोट परीक्षण करैत अछि। किछु स्वप्न वास्तविक घटनासँ मेल नहि खाइत, किछु स्मृति जागल अवस्थाक अनुभवसँ गुँथल रहैत अछि। ईशान न एहि सभकेँ अलौकिक सत्य घोषित करैत अछि, न समस्त अनुभवकेँ झूठ कहैत अछि। अन्तमे ओ प्रत्येक अनुभवपर पहिने सँ अन्तिम नाम रखबाक आदत छोड़ैत अछि। भोरक एक साधारण वाक्य लिखब ओकर लेल अनावश्यक निश्चिततासँ मुक्ति बनैत अछि।

कथा ३५ · संशय

शैलेश मास्टर विद्यालयमे बच्चासभकेँ ग्रहणक वैज्ञानिक कारण समझबैत ‘प्रश्न करब असम्मान नहि’ सिखबैत छथि। मुदा अपन पिताक श्राद्धक समय मायक विश्वास, परम्परागत विधि आ अपन तर्कवादी दृष्टिक बीच कठिन स्थिति उत्पन्न होइत अछि। पुरोहित कृष्णमोहनसँ संवादमे ओ अप्रमाणित दावाक उच्चारण अस्वीकार करैत छथि, मुदा स्मरण लेल सामूहिक रूपेँ समय देबाक मानवीय अर्थकेँ नकारैत नहि। हुनका भय अछि जे परम्पराक नामपर खर्च, जाति आ दबावकेँ वैधता भेटि सकैत अछि; पुरोहित सेहो मानैत छथि जे विधिक अयोग्य भागक आलोचना आवश्यक अछि। शैलेश अन्तमे मृतकपर कर्मक प्रभाव विषयमे अज्ञान स्वीकारैत छथि, संगहि जीवित लोकक अनुभवक महत्त्व दर्ज करैत छथि। संशय अहंकार नहि, सावधानी बनि उभरैत अछि।

कथा ३६ · मोक्ष

वृद्ध दयाकान्तक जीवनक अन्तिम दिनसभमे बेटी शुभदा, बेटा नचिकेता आ शशांक, पोती ईरा आ आन परिजन हुनकर देखभाल करैत छथि। खिड़कीसँ देखाइत पोखरिक जल, पत्नी कमलाक स्मृति, अधूर चिट्ठी आ परिवारक पुरान मतभेद हुनकर जीवनक अनेक तह खोलैत अछि। अन्तिम संस्कारक स्थान आ रीति पर घरक लोक प्रश्न करैत छथि, मुदा दयाकान्त अपन मृत्युकेँ ककरो निश्चित अर्थमे बाँधि देबाक आग्रह नहि करैत छथि। हुनकर मृत्यु-पछाति घरक सभ मनमुटाव चमत्कारिक रूपेँ नहि मिटैत, तथापि संवाद फेर शुरू होइत अछि। शुभदा स्मृति आ वर्तमान जीवनक बीच अपन बाट खोजैत छथि। कथा मोक्षकेँ एक निश्चित दार्शनिक उत्तरमे नहि समेटैत; छोड़ब, स्वीकारब आ अधूर प्रश्नक संग जीबाक सम्भावना देखबैत अछि।

पिप्रा

कथा ३७ · छठ

पिप्राक छठ-घाट समितिमे चारि बाँस आ रस्सीसँ बाट अलग करबाक प्रस्तावपर विवाद उठैत अछि। समिति व्यवस्था आ सुरक्षा कहैत अछि, मुदा सुखदेव सहनी आ चम्पा लोकक

पुरान जातिगत विभाजन आ घाटपर बराबर प्रवेशक प्रश्न उठबैत छथि। स्त्रीसभक आवाज आ श्रमक वास्तविक महत्त्व प्रारम्भिक बैठकमे कम सुनल जाइत अछि। अर्घ्यक भीड़मे एक वृद्धाकेँ सहारा देबाक लेल रस्सी खोलल जाइत अछि; बाँस सीमा बनेबाक बदला सहायता देबाक साधन बनैत अछि। माइक बन्द भेलापर नदी आ सामूहिक गीतक स्वर उभरैत अछि। पछाति समिति दान वा पदक आधारपर आरक्षित बाट नहि रखबाक, स्त्री-दलक भागीदारी आ श्रमिकक सुरक्षाक व्यवस्था करबाक निर्णय करैत अछि। घाटकेँ सभक बनयबाक काज घोषणासँ आगाँ बढ़ैत अछि।

कथा ३८ · राग

छठ बीतलापर पिप्राक घाटपर हरिहर महतो अपन पुरान गीतक स्वर उठबैत छथि। ध्वनि-संग्रह लेल आयल नैना हुनकर गायन अभिलिखित करय चाहैत छथि, मुदा हरिहर प्रश्न उठबैत छथि जे एक मिनटक ध्वनिमे बीस बरखक साधना कोना समायत। पुरान कैसेटमे हुनकर दिदिया कुसुमाक स्वर भेटैत अछि, जकर नाँव पहिल सूचीमे छूटल छल। नैना स्रोतक नाम, अनुमति आ अलग गायन-रूप सुरक्षित करबाक महत्त्व बुझैत छथि। अभ्यासमे ओ हरिहरक लय सीखैत अपन स्वरक नव मोड़ खोजैत छथि। पछाति मुन्नीक गायनमे सेहो ओ परिवर्तन प्रवेश करैत अछि। कथा स्पष्ट करैत अछि जे परम्परा बचेनाइ केवल ध्वनि हूबहू राखब नहि; जीवित अभ्यासमे अन्तर के चूक आ के नव बाट, से सुनि कऽ बुझबाक काज अछि।

कथा ३९ · अदालत

पिप्राक घाटलग एक विवादित जमीनक पट्टी पर अधिकारक प्रश्न अदालत पहुँचैत अछि। कथाक रूप अलग-अलग गवाहीसँ बनल अछि। घाट-समितिक प्रतिनिधि सामूहिक उपयोगक इतिहास कहैत छथि, जमीनक दावेदार अपन सीमा आ अधिकारक कागज प्रस्तुत करैत छथि, आ चम्पा पासवान स्मरण करबैत छथि जे पुरान 'सार्वजनिक' घाटपर सभक प्रवेश बराबर नहि छल। शिक्षकक बनाओल नकाशा सामाजिक माध्यमपर भ्रामक प्रमाण बनल, जकर सीमा स्वयं शिक्षक स्पष्ट करैत छथि। स्थल-परीक्षणमे वर्तमान नदीक धारा, पुरान नकाशा, मौखिक स्मृति आ उपयोगक चिन्ह एकरेखीय निष्कर्ष नहि दैत। कथा

स्वामित्वक अन्तिम निर्णय थोपैत नहि; अनेक साक्ष्यक परस्पर विरोधक बीच न्यायिक सत्य बनबाक कठिन प्रक्रिया उद्घाटित करैत अछि।

कथा ४० · डाकिया

तीस बरखक सेवाक बाद पिप्राक डाकिया दीनबंधु पासवान सेवानिवृत्त होइत अछि। पत्र, मनीऑर्डर, परीक्षा-सम्बन्धी कागज आ न्यायिक सूचना पहुँचबैत ओ गामक बदलैत लोक, घर आ बाटक इतिहास स्मरण रखने अछि। अपूर्ण पतावला चिट्ठीसभ देखबैत छथि जे व्यक्तिक जीवन बदलि जाइत अछि, जखन कागजपर पुरान चिन्ह रहि जाइत अछि। विदाइ समारोहमे लोक हुनकर सावधानी आ मानवीय व्यवहारक छोट स्मृति सुनबैत छथि। दीनबंधु नव डाकिया विवेक लेल वितरण-मार्गक सूची तैयार करैत अछि, मुदा ओकरा केवल पता गनबाक बदला लोकसँ पुष्टि करबाक सीख दैत अछि। अगिला दिन विवेक एक पुरान दीवारक नामपर आयल पोस्टकार्ड लऽ वास्तविक प्राप्तकर्ताक खोज शुरू करैत अछि। डाक पहुँचेनाइ सम्बन्धक जिम्मेदारी बनि उठैत अछि।

कथा ४१ · परदेस

परदेशमे रातिक पाली करैत एक श्रमिक अपन गाम पिप्राक कमला घाटकेँ चिट्ठी लिखैत अछि। घाटक कोनो डाक-पता नहि, तैओ ओहि निर्जीव ठामकेँ सम्बोधित करब घरक लोकसँ नहि कहि सकल अनेक बात खोलबाक उपाय बनैत अछि। मोबाइलक छोट पर्दापर देखल छठ, बदलल नदी, लाल कुर्सी आ सीढ़ीक स्मृति ओकरा अपन अनुपस्थितिक भार बुझबैत अछि। घरक छत, पढ़ाइ, उपचार आ ऋणक आवश्यकता ओकर कमाइपर निर्भर अछि; एहि कारण घुरबाक तिथि बेराबेरी आगाँ बढ़ैत अछि। ओ घरक प्रति प्रेम आ आर्थिक जिम्मेदारीक बीच कोनो सरल समाधान नहि पबैत। अन्तमे चिट्ठी अपन संग राखबाक निश्चय करैत अछि, ताकि घुरि सकला पर वास्तविक घाट आ स्मृतिक घाटक अन्तर स्वयं देखि सकय।

कथा ४२ · डूम

कमलाक बाढ़िक समय सुमित्रा अपन घर आ नौ बरखक बेटा नीलूक सुरक्षाक तैयारी करैत अछि। पानि बढ़ैत अछि आ नीलू लापता भऽ जाइत अछि; ओकर देह नहि भेटैत।

कागजमे ‘लापता’, लोकक बोलमे ‘बाढ़िमे गेल’ आ मायक जीवनमे ओकर अनुपस्थिति अलग-अलग अर्थ ग्रहण करैत अछि। सुमित्रा भीजल कपड़ा धोइत, घरक कादो हटबैत आ बेटाक वस्तु सम्हारैत शोकक संग दैनन्दिन श्रम जारी रखैत अछि। अगिला बरख बरखा आबिते भय फेर जागैत अछि, मुदा ओ जलसँ बचबाक व्यावहारिक तैयारी नहि छोड़ैत। बेटा घुरि नहि अबैत, तैओ मायक जीवन केवल एक निष्कर्षपर रुकैत नहि। अन्तमे लालटेनक उजासमे ओ नाली साफ कऽ अगिला भोरक भोजन लेल चाउर नापैत अछि।

कथा ४३ · भूत

रातिक रिक्शा चलबैत जगदीश एक धूसर आँचरवाली स्त्रीकेँ बेराबेरी पुरान मन्दिर धरि पहुँचबैत अछि। स्त्री सीढ़ीक ओटमे अदृश्य भऽ जाइत छथि, आ गाममे तुरन्त भूतक कथा फैलि जाइत अछि। लोक अपन-अपन कल्पनासँ चेहरा, साड़ी आ पुरान मृत्यु जोड़ैत छथि, मुदा जगदीश केवल देखल बात कहबाक आग्रह करैत अछि। ओ मन्दिरक बाट आ सम्भावित निकास खोजैत अछि, किछु साधारण संकेत भेटैत अछि, तथापि स्त्रीक पहिचान निश्चित नहि भऽ पबैत। स्त्रीक आबनाइ बन्द भेलापर सेहो अफवाह चलैत रहैत अछि। जगदीश ‘भूत’क नाम पर अनदेखल घटनाक निर्णय करब अस्वीकार करैत अछि। ओकर रिक्शाक छोट बत्ती जतेक बाट देखबैत अछि, ओतेक सत्यक मर्यादापर ओ भरोसा करैत अछि।

कथा ४४ · मास्टर साहेब

पिप्रा उच्च विद्यालयक शिक्षक जगन्नाथ मिश्र चालीस बरखक सेवाक बाद विदा लैत छथि। अन्तिम दिन विद्यार्थीक स्मृति हुनका कठोर अनुशासन, न्याय, गलती आ स्नेहक अनेक रूप सामने अनैत अछि। एक पूर्व विद्यार्थी अपन अपमानक अनुभव साझा करैत अछि, दोसर अपन जीवनमे भेटल शिक्षाक सहारा स्मरण करैत अछि। जगन्नाथ बाबू बुझैत छथि जे शिक्षकक प्रभाव केवल पाठ्यक्रम वा परीक्षाफलमे नहि नपैत। विद्यालयसँ भेटल घड़ी घरमे टँगलापर समयक नब अर्थ खुलैत अछि; विद्यालयक घंटी आ उपस्थिति-पञ्जीक क्रम समाप्त भऽ चुकल अछि। अगिला भोर पुरान आदतसँ झोरा उठा लैत छथि, मुदा ओहिमे

एक पूर्व विद्यार्थीक आवश्यक कागज अछि। छुट्टी भेलो हुनकर सीखब आ लोकक काजमे लगबाक यात्रा समाप्त नहि होइत।

कथा ४५ · चित्रकार

पिप्राक उर्मिला देवी अपन मिथिला चित्रमे पारम्परिक माछ-कमलक संग मोबाइल टावर, साइकिल आ छठ-घाटक लाल कुर्सी सेहो बनबैत छथि। दिल्लीक प्रदर्शनीमे चित्र पहुँचैत हुनका अपन रचनाक प्रस्तुति, नामक शुद्ध श्रेय आ चित्रक किनार ढँकला सँ अर्थ बदलबाक अनुभव होइत अछि। व्यापारक अपेक्षा आ नकलक आग्रहक बीच ओ स्पष्ट करैत छथि जे एक विषय फेर बना सकैत छथि, मुदा पहिल अनुभवक हूबहू प्रति नहि। बेटी रूपा आ आयोजक ईराक संग हुनकर संवादसँ कला पर कलाकारक अधिकार आ दर्शकक भिन्न दृष्टि दूनू उभरैत अछि। अन्तमे ओ रातिक घाटक एक नब चित्र बनबैत छथि, जाहिमे खाली कुर्सी आ दूरक लाल बत्ती अछि। नब चित्र एखन बाजारक आदेशसँ अलग, हुनकर अपन दृष्टिक अधूर यात्रा अछि।

कथा ४६ · घुरनाइ

बीस बरख बाद रेणुका पिता देवकान्तक मृत्यु पर पिप्रा घुरैत अछि। बियाहक बाद घर छोड़बाक ओकर पुरान निर्णयपर गाममे अनेक परस्पर विरोधी कथा चलैत रहल अछि। भाइ अरुण, भाउज मीना आ भतीजा अंशु ओकर आगमनकेँ अपन-अपन भय, जिज्ञासा आ स्मृतिसँ देखैत छथि। जमीनक हिस्सा, घरक देखभाल आ पुरान कागजक बात उठैत अछि, मुदा रेणुका अपन जीवनकेँ ककरो तैयार व्याख्यामे नहि समेटय चाहैत अछि। ओ वापस शहर जाइत समय अंशुकेँ एक कोठरीक चाभी दैत अछि—चाभी ओकर हाथमे, उपयोगक जिम्मेदारी सभक। अंशु बुझैत अछि जे बुआक सम्बन्ध कानूनी हिस्सा, ठाम आ अपन जीवनक चुनावक संग जुड़ल अछि। मनुष्यकेँ एक शब्दमे पूरा नहि बाँधल जा सकैत।

कथा ४७ · नाह

गोपी आ झुनकी नदीक ओ पार जेबाक उत्सुकतामे केराक थमसँ बेड़ा बनबैत अछि। पैघ लोकक मनाहीक कारण बुझबाक बदला दुनू अपनहि धारमे उतरि जाइत अछि। किनारक

पानि सहज लगैत अछि, मुदा बीच धारमे बाँस तल धरि नहि पहुँचैत आ बेड़ा बहबय लगैत अछि। भय आ संघर्षक बाद जब्बार आ नाविक बिसुन हुनका सभकेँ सुरक्षित घुरबैत छथि। मित्रसभ रोमाञ्चक कथा सुनय चाहैत अछि, मुदा झुनकी नदीक वास्तविक जोखिमकेँ कोनो काल्पनिक मगरसँ सजाबय नहि चाहैत। बिसुन हुनका सभकेँ असली नाह, भार, चप्पू आ धारक ज्ञान सिखबैत अछि। दुनू अपन बेड़ाक नाँव 'फेर-आब' रखैत अछि—ओ पार पहुँचबाक सफलतासँ बेसी जीवित घुरबाक बोधक रूपमे।

कथा ४८ · छठ फेर सँ

पिप्राक अगिला छठमे पिछला बरखक घाट-विवादसँ सीखल बदलाव लागू देखाइत अछि। बाँसक पुरान विभाजन हटि चुकल अछि, सहायता-पथ बनल अछि आ स्त्री-दलक प्रतिनिधि निर्णयमे सम्मिलित छथि। मुदा बद्री काकाक मृत्युपछि हुनकर लाल कुर्सी स्मृति आ सार्वजनिक उपयोगक नब प्रश्न उठबैत अछि। कुर्सी खाली राखब कि थाकल लोककेँ बैसायब—एहि छोट बहसमे शोक आ व्यवहारिक आवश्यकताक अन्तर खुलैत अछि। माइकक आवाज, सफाई आ सहायता जकाँ नव समस्या सेहो उत्पन्न होइत अछि, मुदा एहि बेर लोक जल्दी समाधान खोजैत छथि। अन्तमे कुर्सी अपन घर घुरैत अछि आ घाट फेर साधारण दिनक उपयोगमे चलि जाइत अछि। परिवर्तन न सम्पूर्ण अछि, न घोषित विजय; ओ व्यवहारमे धीरे-धीरे जगह बनबैत अछि।

समापनिका

कथा ४९ · विदेह

जगदम्बा देवीक घरक पुरान सन्दूकमे नाँव, चिट्ठी, स्मृति आ अधूर लेखनक सामग्री भेटैत अछि। नैना आ अनुपमा एहि निजी संग्रहकेँ लोकक आवाजसँ जोड़बाक सोचैत छथि, मुदा पीड़ाक प्रदर्शन, बिना अनुमति कथन प्रकाशित करब आ अभिलेखकेँ अन्तिम सत्य मानबाक खतरा बुझैत छथि। देवनाथक पुरान खाली लिफाफापर लिखल 'विदेह' शब्द नब प्रकाशनक नाँव बनैत अछि; हुनकर अधूर सपनाकेँ अनिवार्य उत्तराधिकार नहि बनाओल जाइत। अनेक लोक अपन अनुभव दैत छथि, सुधार करैत छथि, किछु बात छपेबाक अनुमति नहि दैत छथि।

'विदेह'क अंकसभ स्थानीय जीवनक विविधता आ असहमति संग प्रकाशित होइत अछि। अगिला अंकक खाली पन्ना नैना जानि-बुझि नहि भरैत अछि—आगाँ बजयवला व्यक्तिक सहमति आ अपन स्वर लेल ठाम बचा कऽ।

खण्ड ९

स्मृतिक दोसर दिस

९८ कथाक सारांश

कथा १ · दू जनकपुर

कमला देवीक निधनक बाद पुत्र अमरेश झा जनकपुरमे माएक नैहर खोजय पहुँचैत छथि। माए देल संकेत आ पित्तीरिक चाभी सँ घरक ठेकान नहि भेटैत छनि, मुदा नगरक एक नकाशा पर वर्तमान जनकपुरक संग स्मृतिमे बाँचल दोसर जनकपुर देखाइत अछि। सावित्री देवी आ पुरान सर्वेक्षणक सहायतासँ ओ माएक बचपनक बाट आ तीन अलग-अलग 'घर'क अर्थ बुझैत छथि। देहरीक निश्चित प्रमाण नहि भेटलाक बादो अमरेश अनुभव करैत छथि जे घर लोकक स्मरण, सम्बन्ध आ आवाजमे जीवित रहैत अछि।

कथा २ · भूलल शास्त्रार्थ

पाण्डुलिपि-संरक्षिका नीलिमा झा केँ जलधारक अधिकार पर लिखल पुरान शास्त्रार्थ भेटैत छनि। कनकपुरमे जमीन आ पानिक बाट लऽ विवाद चलैत अछि, तेँ पोथीक अधूर सूचना प्राचीन निर्णयक प्रमाण मानि पसरि जाइत अछि। जाँचमे नीलिमा पबैत छथि जे शास्त्रार्थ सम्भवतः विद्यार्थीक अभ्यास लेल रचल कल्पित संवाद अछि। पंचायतमे ओ ई भेद स्पष्ट करैत छथि, मुदा फुलकुमारी देवी ध्यान दिअबैत छथि जे संवादक प्रश्न वास्तविक समस्या पर लागू होइत अछि। लोक जमीनक नापी, जलप्रवाह, हानि आ सामूहिक रखरखाव पर विचार करबाक बाट पकड़ैत अछि।

कथा ३ · समयक पोखरि

माएक मृत्यु सँ दुखी मृदुला ननिहालक पोखरि पर सम्भावित भविष्यक दृश्य देखैत छथि, जाहिमे नचिकेतक संग नव जीवन देखाइत अछि, मुदा पुत्र आदित्यक उपस्थिति अस्पष्ट अछि। ई अनुभव हुनका दोसर विवाहक निर्णयसँ भयभीत करैत अछि। जानकी मामीक बात

आ आदित्य तथा नचिकेतक परिवारक संग संवाद हुनका बुझबैत अछि जे भविष्यक आभास अन्तिम सत्य नहि। ओ दुनू बच्चाक इच्छा आ आशंका कैँ मान दैत धीरे-धीरे साझा जीवन बनयबाक प्रस्ताव रखैत छथि। फेर पोखरि पर घुरि ओ पानि हिला दैत छथि, कारण आब भविष्य देखबाक बदला ओकर निर्माण करबाक निर्णय कऽ चुकल छथि।

कथा ४ · अक्षरक नगर

नगर-नियोजक निरुपमा कर्ण कैँ सिद्धपुरक पुस्तक-मेला लेल स्पष्ट नकाशा बनयबाक जिम्मेवारी भेटैत छनि। आधुनिक सड़क-संख्या आ दिशासूचक चिन्ह पुरान नगरक जटिल बाट बुझयमे अपर्याप्त सिद्ध होइत अछि। बाबूजी हेमकान्तक पथ-संकेत आ भाषा-सम्बन्धी स्मृति सँ निरुपमा जानैत छथि जे मैथिली, हिन्दी आ नेपालीमे एक्के नगरक बाट अलग ढङ्गसँ खुलैत अछि। ओ बहुभाषिक संकेतक व्यवस्था बनबैत छथि; परीक्षणमे सभ समूह गन्तव्य पहुँचैत अछि। मुदा एक बालक अनदेखल साँघुर बाट देखबैत अछि। निरुपमा बुझैत छथि जे कोनो नकाशा नगरक सभ सम्भावित अनुभव समेटि नहि सकैत।

कथा ५ · अन्तिम टीका

पोथी-संरक्षण केन्द्रक रघुनन्दन साह ‘प्रमाण-विवेक’ नामक प्राचीन ग्रन्थक जीर्ण पृष्ठ सम्हारैत एक पातर पट्टी पबैत छथि जकरा सभ बादक टीका मानैत छल। कागज, स्याही आ पाठक जाँचसँ संकेत भेटैत अछि जे पट्टीक प्रश्न मुख्य ग्रन्थसँ पहिने लिखल गेल हो सकैत अछि। एहन स्थितिमे मूल ग्रन्थ आ टीकाक स्थापित सम्बन्ध उलटि जाइत अछि। विद्वान निश्चित निष्कर्ष थोपबाक बदला उपलब्ध प्रमाणक सीमा स्वीकार करैत छथि। प्रदर्शनीमे पट्टी कैँ स्वतन्त्र महत्त्व देल जाइत अछि आ ओकर प्रश्न पाठक कैँ विचारक आरम्भ पर फेर सोचबाक प्रेरणा दैत अछि।

कथा ६ · नकाशा जे बढ़ैत रहल

इतिहासकार रमापति झा कैँ कमला नदीक किनारक बस्तीक ऐतिहासिक नकाशा बनयबाक काज भेटैत छनि। सरकारी अभिलेख सँ बनल नकाशा स्थानीय लोकक स्मृति, बदलल नदी, विस्थापित गाम आ स्त्रीसभक पुरान बाटक सामने अपूर्ण सिद्ध होइत अछि।

साक्ष्य आ समयक परत जोड़ैत गेलासँ नकाशा निरन्तर पैघ होइत जाइत अछि। रमापति एक प्रवेश-नकाशा आ विस्तृत काल-पट तैयार करैत छथि, जाहिमे लिखित प्रमाण आ लोकक अनुभवक भेद सुरक्षित रहैत अछि। संग्रहालयमे बालक अगिला भाग पूछैत अछि, तखन ओ भविष्यक प्रमाण लेल खाली पट्टी छोड़ि दैत छथि।

कथा ७ · एक लेखक, दू जन्म

लेखिका अनघा कर्णक पुरस्कृत कथा 'रेखा' पर आरोप उठैत अछि जे ओकर शब्द दू सय बरख पुरान तिरहुता पाठसँ मिलैत अछि। जाँचमे नानीक कापी, मौखिक परम्परा आ गोविन्ददासक पुरान कथा बीच जटिल सम्बन्ध सामने अबैत अछि। शब्द समान रहितो पुरान पाठमे धनेश्वरीक काज सामाजिक सीमा तोड़बाक चेतावनी रूपेँ देखल गेल छल, जखन कि अनघाक दृष्टिमे ओ बाट आ सम्बन्ध बचबैत अछि। सार्वजनिक पठनमे पाठकसभक अलग-अलग अर्थ उभरैत अछि। कथा रचनाक स्वामित्वक प्रश्न केँ सरल उत्तर नहि दैत; समान शब्द समय आ दृष्टिक परिवर्तनसँ नव अर्थ पबैत अछि।

कथा ८ · स्मृतिक शब्दकोश

वृद्ध शब्दकोशकार मालती मिश्र विसराइत मैथिली शब्द सहेजबामे जीवन लगौने छथि। 'ओसरा' शब्दक अर्थ लिखैत हुनका अपन बाबूजी-माएक स्मरण धुँधला बुझाइत अछि। कापीमे दर्ज पुरान उदाहरण आ आबक याद एक-दोसरासँ भिन्न होएबाक कारण ओ स्मृतिक विश्वसनीयता पर प्रश्न करैत छथि। नातिन ईरा हुनका पुरान पंक्ति मेटबाक बदला बदलल स्मरण सेहो लिखबाक सलाह दैत अछि। अन्तमे मालती बुझैत छथि जे शब्दक जीवन केवल कोशक परिभाषामे नहि, लोकक सहज प्रयोगमे अछि। ईरा ओसरा पर बैसि हवा नीक हेबाक बात कहैत अछि, तखन मालती शब्द केँ जीबाक सुख पबैत छथि।

कथा ९ · शून्य अध्याय

जिला पुस्तकालयक सुधा झा केँ 'बारह कोठरी' उपन्यासक भीतर छिपल 'अध्याय शून्य' भेटैत छनि। एहि अध्यायक संकेत पाठक केँ घटना आरम्भ हेबाक स्थान पर प्रश्न करय लेल विवश करैत अछि। सुधा आ नचिकेता अलग-अलग क्रममे उपन्यास पढ़ि पात्र

सरिताक काजक भिन्न अर्थ निकालैत छथि। एहि बीच सुधाक बहिन सीमासँ माएक मृत्यु आ पारिवारिक कागज लऽ मतभेद अछि। घटनाक क्रम बदलि देखला पर सुधा बुझैत छथि जे ककरो निर्दोष ठहरौनाइ उद्देश्य नहि, बल्कि पहिल कारणक अपन धारणा जाँचनाइ जरूरी अछि। ओ नव पाठिका कैँ कथा अपन प्रश्नक ठामसँ आरम्भ करबाक स्वतंत्रता दैत छथि।

कथा १० · प्रतिलिपिकार

लोक-पोथी संरक्षण कक्षमे प्रतिलिपिकार सुधीन्द्र दास कैँ रामदुलारी देवीक ‘सात आँगनक गीत’ उतारबाक जिम्मेवारी भेटैत छनि। पुरान पोथीमे अनेक हस्तक्षेप, अस्पष्ट अक्षर आ बादक संशोधन देखिकऽ ओ बुझैत छथि जे ‘मूल’ सेहो अनेक हाथक इतिहास अछि। साफ प्रतिलिपि बनयबाक हुनकर प्रवृत्ति कखनो अनिश्चित शब्द कैँ निश्चित बना दैत अछि। अन्तिम पृष्ठक अधमेटायल पाँति पर ओ अनुमानसँ रिक्त स्थान भरि सकैत छलाह, मुदा एहन नहि करैत छथि। प्रदर्शनीमे ओ अधूरा पाठ जस्ताक तस्ते रखैत छथि। जिम्मेवार प्रतिलिपि लेल किछु ठाम नहि लिखब सेहो सत्यक रक्षा अछि।

कथा ११ · तीसर इतिहास

बेलवाघाटक १९२७ क अकालकालीन ‘अन्नक राति’ पर शताब्दी-स्मारकक अभिलेख लिखबाक जिम्मा मणिकान्त मिश्र कैँ भेटैत छनि। कोठारसँ धान बाहर निकलबाक घटनाक दू प्रचलित इतिहास अलग-अलग नायक आ उद्देश्य बतबैत अछि। पुरान नाटक, लोकस्मृति आ लेखा-बही जाँचला पर ओ पबैत छथि जे बादक कथासभ एक-दोसराकैँ प्रभावित कएने अछि। ककर भूमिका निश्चित नहि, ई स्वीकार करैत ओ स्मारक पर प्रमाणित घटना लिखब चुनैत छथि—लोक जुटल छल आ अन्न बाहर आयल छल। कथा इतिहासक ईमानदारी अनिश्चितता कैँ सुरक्षित रखबामे देखबैत अछि।

कथा १२ · अनुवादक

फारसी पत्रक एक वाक्यक मैथिली अनुवाद करैत नसीम आरा कैँ घर, परदेस, देहरी आ बदलैत बोलीक सम्बन्ध पकड़ब कठिन लगैत अछि। १९८३ सँ दशकसभ धरि ओ नव-नव शब्द चुनैत छथि; जीवनक अनुभव, परिवारक बातचीत आ अलग पीढ़ीक उच्चारण पुरान

अनुवाद केँ चुनौती दैत अछि। प्रकाशनक समय ओ एक्के वाक्यक अनेक कालक रूप आ अपन निर्णयक कारण सामने रखैत छथि। युवा पाठक पुनः नव अर्थ पबैत छथि, आ नसीम 'घुरि आयल आवाज' केँ अपन मानबाक भाव पर पहुँचैत छथि। ओ एहि रूप केँ अन्तिम नहि कहैत छथि, कारण भाषा आ घर दुनू निरन्तर बदलैत रहैत अछि।

कथा १३ · नामहीन देवता

लोककथा-संग्रह करय कचनारिया पहुँचल विभा झा केँ एक एहन देवताक कथा सुनय भेटैत छनि जकर नाम कथाकार जानि-बुझि नहि उच्चरित करैत छथि। विभा प्रथम दृष्टिमे एहि मौन केँ अपूर्ण सूचना मानैत छथि। देवनाथ सँ निजी रूपेँ नाम सुनलाक बाद ओ बुझैत छथि जे कथाक सामूहिक परम्परामे नामक स्थान पर ठहरल मौन स्वयं अर्थपूर्ण अछि। विद्यालयक बालक नील कथा आगाँ बढ़बैत नामक ठाम चुप रहबाक विधान अपनबैत अछि। विभा ध्वनि-संग्रहमे विराम केँ सुरक्षित रखैत छथि, मुदा नामक रिक्त स्थान नहि भरैत छथि। कथा लोकस्मृतिक संरक्षण आ ओकर गोपनीय मर्यादाक सम्बन्ध उजागर करैत अछि।

कथा १४ · समयक पगडंडी

पैतृक जमीन बाँटबाक लेल सिरसिया घुरल नीलिमा आ हुनकर भाइ शेखरक बीच पुरान पगडंडीक अधिकार लऽ मतभेद अछि। बाट पर चलैत नीलिमा अलग-अलग कालक दृश्य अनुभव करैत छथि, जाहिमे बाढ़ि, मायक संघर्ष आ बचपनक सम्बन्ध फेर सामने अबैत अछि। समयक एहि यात्रासँ ओ बुझैत छथि जे बाट केवल जमीनक रेखा नहि, पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलल साझा जीवन अछि। घर घुरला पर ओ शेखर सँ पुरान स्मृतिक भिन्नता स्वीकार करैत छथि। दुनू अपन-अपन भागक सीमा-पत्थर थोड़े हटबैत छथि, जाहिसँ पगडंडी पर दू गोटे संग चलि सकथि।

कथा १५ · दर्पणक वंश

सौराठक पञ्जीकार माधवी झा लग कौशिकीक विवाहक सम्बन्धमे दू वंशक मेल जाँचबाक प्रस्ताव अबैत अछि। पुरान पाँजिमे भेटल 'दर्पण'क संकेत सँ रक्तसम्बन्ध, आश्रय आ घरमे शामिल लोकक इतिहास उलझि जाइत अछि। विवाद विवाहक संग पुरान बारीक

अधिकार धरि पहुँचैत अछि। माधवी अभिलेखक अस्पष्ट चिन्ह कैँ वंश वा सम्पत्तिक निश्चित प्रमाण बनयब सँ इनकार करैत छथि। बूढ़ परिवारजनक स्मृति सुनि ओ अलग विवरण दर्ज करैत छथि, जाहिमे छवि आ रक्तवंशक भेद स्पष्ट अछि। अन्तमे तीन पल्लाक दर्पण मनुष्यक सम्बन्धक दायित्व, संग आ आश्रयक रूपक बनैत अछि।

कथा १६ · अदृश्य पुस्तक

रेणुका कर्ण कैँ ‘साझा दीप’ नामक कथित प्राचीन पुस्तकक मूल प्रति खोजबाक जिम्मेवारी भेटैत छनि। पुस्तकक अनेक उद्धरण प्रचलित अछि, मुदा मूल पोथी ककरो लग नहि; लेखक, रचनाकाल आ पाठक स्वरूप पर मतभेद अछि। रेणुका अलग-अलग कापी, विद्यालयी पुस्तिका, घरेलू बही आ शोध-पत्रक उद्धरण जाँचि पबैत छथि जे एकटा सुसंगत मूल ग्रन्थ पुनर्निर्मित करबाक प्रमाण पर्याप्त नहि अछि। ओ अनुमानित पाठ कैँ मूलक नाम पर प्रकाशित करबाक विरोध करैत छथि आ उद्धरणसभक स्रोत आ अनिश्चितता अलग-अलग देखबैत छथि। प्रदर्शनीक खाली काँच-पेटी प्रमाणक सीमा स्वीकार करबाक प्रतीक बनैत अछि।

कथा १७ · सातम दिशा

अनुजा झा कैँ लोक-स्मृति केन्द्रमे ‘सातम दिशा’ नामक नकाशा भेटैत छनि। एहि नकाशाक लाल रेखासभ भौतिक दूरी नहि, एक स्मृतिसँ दोसर स्मृति धरि पहुँचबाक क्रम देखबैत अछि। लोकक गन्ध, आवाज, परिवार आ विसराइल ठाम एहन क्रम कैँ अलग-अलग रूप दैत अछि। अनुजा नकाशाक प्रदर्शनी तैयार करैत ‘सातम दिशा’क लेल अतिरिक्त तीर बनयबाक प्रस्ताव अस्वीकार करैत छथि। अपन बहिन मीराक बाल्यकाल सँ वर्तमान आवाज धरि पहुँचैत ओ अनुभव करैत छथि जे स्मृति केवल अतीत दिस नहि लऽ जाइत; ओ जीवित सम्बन्ध धरि सेहो घुरा सकैत अछि।

कथा १८ · अन्तिम पाठक

सोनबरसाक पुरान जनवाचनालय आगिमे जड़ि जाइत अछि आ जीवनभरि ओतय पढ़निहार रघुपति मिश्र पुस्तकसभ कैँ स्मरणसँ फेर लिखबाक प्रयास करैत छथि। मुदा

जखन बाँचल प्रतिसभ भेटैत अछि, तखन अनेक कथाक स्मृति मूल रचनासँ भिन्न निकलैत अछि। रघुपति, मधवी आ नव पीढ़ीक पाठकसभ मूल पाठ, स्मरण आ नव सृजनक भेद पर विचार करैत छथि। वाचनालय फेर खुलैत अछि आ रघुपति अपन स्मृतिसँ जन्मल लेखन कैँ हराएल पुस्तकक नकल कहबाक बदला नव पुस्तक मानैत छथि। युवती नेहाक रचना संग पढ़ैत ओ बुझैत छथि जे पढ़बाक परम्पराक कोनो अन्तिम पाठक नहि होइत अछि।

कथा १९ · पोखरिक घटना

बरैला पोखरिक नवनिर्मित घाट पर किशोरी गुंजा खसि पड़ैत छलीह आ मुन्ना पासवान हुनका पानिसँ निकालैत छथि। दुर्घटनाक बाद गाममे गुंजाक असावधानी, अधूर निर्माण, लाल डोरी, ठेकेदार आ स्थानीय विरोध लऽ भिन्न कथा चलि पड़ैत अछि। पंचायतक जाँचमे प्रत्यक्ष देखल बात आ अनुमानित बातक भेद स्पष्ट होइत जाइत अछि। घाट हिलैत छल, प्रभावी रोक नहि छल आ अनेक छोट निर्णय मिलि जोखिम बढ़ेने छल। गुंजा ककरो एकटा दोषी ठहरयबाक अपेक्षा दुर्घटनाक पूरा परिस्थिति बुझब आवश्यक मानैत छथि।

कथा २० · दरबारक राति

रतनपुरक पुरान दरबारमे लागल आगि कैँ राजकीय इतिहास ‘बाहरी उपद्रवीसभक षड्यन्त्र’ कहैत अछि। नव अभिलेख-अधिकारी अर्चना झा एहि निष्कर्षक आधार खोजैत सैनिक, स्त्री-महल, पुरोहित, व्यापारी आ राज्य-वृत्तक अलग-अलग साक्ष्य जाँचैत छथि। प्रत्येक व्यक्तिक देखबाक स्थान, स्वार्थ आ असमर्थता अलग छल; कोनो एक कथनसँ आगिक कारण निश्चित नहि होइत। अर्चना आरोपात्मक पुरान पट्ट बदलि विवादित कारणक बात लिखबैत छथि आ प्रदर्शनीमे अनेक आवाज लेल स्थान बनबैत छथि। सब स्रोत जोड़ि देलासँ एकटा निर्विवाद पूर्ण सत्य स्वतः नहि बनैत।

कथा २१ · चोरीक मूर्ति

अमराहीक भुवनेश्वरी स्थानसँ मूर्ति गायब भेलापर गाममे आस्था, सुरक्षा, प्रतिष्ठा आ चोरीक आरोप एक संग उठैत अछि। पहरेदार बलदेव पासवान अपन अनुपस्थितिक बारह मिनट पहिने नुकेबैत छथि, मुदा बादमे सत्य कहबाक साहस करैत छथि। जाँचमे मूर्तिक

पुरान मरम्मति, कारीगरक स्मृति आ अलग-अलग लोकक हित सामने अबैत अछि। मूर्ति घुरि अयलाक बादो सन्देह आ चोट तुरन्त समाप्त नहि होइत। मन्दिरक सुरक्षा-व्यवस्थामे पहरेदारक बुनियादी आवश्यकतासमेत मानल जाइत अछि। कथा विश्वासक संग श्रम, गरीबी, चूक आ सामूहिक जिम्मेवारीक अनेक परत देखबैत अछि।

कथा २२ · सीमाक गोली

रेखापुरक सीमा लग सरकल पत्थरक आधार पर जवान अरुण तामाङ किसान सदानन्द कें खतरा मानि गोली चलबैत छथि। नाला, खेत, पाइप आ चेतावनीक आवाज सम्बन्धी सैनिक, किसान, अधिकारी आ बालिका रानीक कथन एक-दोसरासँ पूरा मेल नहि खाइत अछि। जाँच सँ स्पष्ट होइत अछि जे पत्थर अपन मूल ठाम पर नहि छल आ भयक अनुभूति वास्तविक खतरा सिद्ध नहि करैत। क्षतिपूर्ति, सीमाचिन्हक सुधार आ प्रशिक्षणक बदलाव होइत अछि, मुदा स्मृतिक मतभेद रहि जाइत अछि। कथा प्रक्रियाक स्मरण आ घटित घटनाक सत्य, सुनल आ कहल, तथा सीमा आ खेतीक भेद पर विचार करबैत अछि।

कथा २३ · विवाहक विवाद

माधवी आ सौरभक विवाहक मण्डप सजल रहितो पैसाक लेन-देन, नौकरी, विवाह बादक निवास आ परिवारक अपेक्षा पर विवाद उठैत अछि। वर-कन्या, हुनकर माएसभ, सहेली आ बिचौलिन कौशल्या प्रत्येक घटनाक अलग कारण बतबैत छथि। माधवीक चिन्ता केवल रकम नहि, अपन जीवनक निर्णयमे बराबर सहभागिता अछि; सौरभ माएक दायित्व आ नव घरक प्रश्न स्पष्ट नहि कऽ पबैत छथि। विवाह स्थगित भेलाक बाद पत्राचारमे दुनू अपन अनिश्चितता स्वीकार करैत छथि। कथा एकटा जटिल सम्बन्धक रुकबाक कारण एक अफवाहमे समेटल नहि जा सकैत अछि, से देखबैत अछि।

कथा २४ · बाढ़िक नाव

बेलही गामक बाढ़िमे राहत लऽ जा रहल ‘मुक्ति’ नाव पलटि जाइत अछि। दुर्घटनाक कारण पूछला पर नाविक, शिक्षिका, ठेकेदार, यात्री आ जाँच-अधिकारी अलग-अलग चूक पर जोर दैत छथि। क्षमता सँ बेसी यात्री, अनाजक बोरा, मरम्मतिक कमी, तेज धार,

आकस्मिक मोड़ आ दोसर नावक अनुपस्थिति एक संग असर करैत अछि। एक व्यक्तिक निर्णय कैँ दोष दऽ समस्त जोखिम बुझल नहि जा सकैत। अगिला बाढ़िमे नावक क्षमता, सुरक्षा-कवच, अतिरिक्त नाव आ यात्रीक अनुशासन पर ध्यान देल जाइत अछि। भयभीत तारा बदलल व्यवस्थाक बीच सुरक्षित यात्रा करैत सामूहिक सुरक्षाक अर्थ बुझैत अछि।

कथा २५ · चित्रकारक मृत्यु

चित्रकार नचिकेत मिश्रक मृत्यु बारह बरख बादो रहस्य बनल अछि। हुनकर बेटी ईरा घर बिकबाक पहिने अधूर चित्र, पुरान मचान आ परिवारजनक दैनिकी जाँचैत छथि। दुर्घटना, आत्महत्या, खराब मचान, झगड़ा आ थकान—प्रत्येक सम्भावनाक पक्षमे किछु संकेत भेटैत अछि, मुदा निर्णायक प्रमाण नहि। कला-जगत कलाकारक महानता आ मृत्यु कैँ सनसनीखेज कथा बनाबय चाहैत अछि। ईरा स्रोतसभक सीमा स्वीकार करैत छथि आ बुझैत छथि जे चारि दैनिकी चारि मृत्यु नहि, चारि व्यक्तिक दृष्टि देखबैत अछि। कथा मृत व्यक्तिक जीवन पर जल्दबाजीमे निर्णय देबाक नैतिक संकट सामने अनैत अछि।

कथा २६ · पुरान मुकदमा

इतिहासकार अनामिका मिश्र अपन परिवार आ मण्डल परिवारक बीच बरियार पट्टीक पुरान भूमि-मुकदमा जाँचैत छथि। न्यायालयक निर्णय, पुरान नापी, खेतीक चलन, पयरबाट आ मौखिक स्मृति अलग-अलग प्रकारक अधिकार देखबैत अछि। परिवारक हित अनामिकाक अपन दृष्टिकैँ प्रभावित करैत अछि, से बात ओ सेहो स्वीकार करैत छथि। ओ स्रोतक कथन, ओकर प्रमाण आ ओकर सीमा अलग-अलग दर्ज करैत छथि। पुरान मुकदमाक कानूनी निष्कर्ष रहितो जमीनक सामाजिक उपयोगक स्मृति समाप्त नहि होइत। सीमा-खूँटी, पयरबाट आ गाछक ठूँठ कैँ अलग नामसँ दर्ज करैत अनामिका देखबैत छथि जे एक रेखा सम्पूर्ण भू-इतिहास नहि होइत।

कथा २७ · मेला राति

बसहा मेलामे चौबीस बरखक मंजरी कर्ण अचानक लापता भऽ जाइत छथि। घर आ गाममे अपहरण, प्रेम, भागि जाएब आ विवाहसँ भय धरि अनेक अफवाह चलि पड़ैत अछि।

पुलिस आ परिवारक खोजमे बस, ठहरबाक घर, परिचय-पत्र आ प्रत्यक्षदर्शीक साक्ष्य सँ धीरे-धीरे हुनकर यात्रा स्पष्ट होइत अछि। मंजरी अपन काज आ जीवनक निर्णय लेल घरसँ निकलने छलीह, मुदा हुनकर आंशिक पत्र सेहो पूरा मनोदशा नहि बतबैत। घुरलाक बाद ओ पत्र सुरक्षित रखैत छथि, मुदा ओकरा ‘पूर्ण कथा’ नहि मानैत छथि। कथा स्त्रीक स्वायत्तता आ दोसर लोक द्वारा ओकर जीवनक अर्थ निर्धारित करबाक प्रवृत्तिक टकराव देखबैत अछि।

कथा २८ · वीरक कथा

कजराघाटक पुरान संघर्ष पर संयुक्त सांस्कृतिक प्रस्तुति बनबैत रंगनिर्देशिका अदिति कुमारी केँ दू गामक परस्पर विरोधी वीर-गीत भेटैत छनि। एक परम्परामे वीरनाथ नायक छथि, दोसरमे हरिकेशक भूमिका केन्द्रीय अछि; एक्के क्रिया ककरो लेल वीरता आ ककरो लेल अपराध बनल अछि। अदिति गीतक शब्द बदलि कृत्रिम मेल नहि बनबैत छथि। ओ दुनू रूपक प्रस्तुति आ प्रसंग स्पष्ट करैत छथि। ऐतिहासिक साक्ष्य सीमित अछि, तेँ कार्यक्रम व्यक्तिक एकल महिमामण्डनक बदला दू वीर-परम्परा केँ स्थान दैत अछि। कथा लोकगीतक बदलैत पाठ आ स्मृतिमे वीरता निर्माणक प्रक्रिया देखबैत अछि।

कथा २९ · अन्तिम भोजन

देवकी देवी अपन सम्पत्तिक एक हिस्सा बालिका विद्यालय केँ देबाक विचार प्रकट करैत छथि। परिवारमे मतभेदक बाद एक भोजनक राति हुनकर मृत्यु भऽ जाइत अछि, आ चटनीमे विषक अंश भेटलासँ सन्देह गहिराइत अछि। खाद्य-सामग्रीक दूषण, औषधि, स्वास्थ्य, उत्तराधिकार आ पारिवारिक झगड़ाक प्रश्न जाँचमे उठैत अछि; मुदा अपराधक निर्णायक साक्ष्य नहि भेटैत। परिवार बादमे बाग, घर, गोदाम आ अन्य अधिकारक समझौता करैत अछि। वर्षों बाद पुनः भोजन पर बैसला परो देवकीक खाली कुर्सी रहैत अछि। अनुत्तरित मृत्यु पर जीवित लोक अपन-अपन कारण थोपैत छथि, मुदा सभ कारण पूर्ण सत्य नहि बनैत।

कथा ३० · कवि आ राजा

शोधार्थी ईरा झा कैँ सोनवर्षा दरबारसँ कवि हरिनाथक निर्वासनक कारण खोजैत विरोधी वृत्तान्त भेटैत छनि। कविता, पत्र, प्रतिद्वन्द्वीक शिकायत आ राजकीय आदेश अलग-अलग अर्थ दैत अछि। एक पुरान मसौदासँ ज्ञात होइत अछि जे दरबारमे अनेक आरोप विचाराधीन छल, मुदा राजा ककरा सत्य मानलनि, ई निश्चित नहि। ईरा घटना आ ओकर बादक व्याख्याक भेद स्पष्ट करैत छथि। ओ देखबैत छथि जे सत्ता ककर कथा सबसँ बेसी सुनाइ देत, से प्रभावित करैत अछि; मुदा तथ्यक प्रतिरोधक कारण इतिहास मनमाना नहि। कविक निर्वासन अर्थक स्वामित्व पर संघर्षक रूप लऽ लैत अछि।

कथा ३१ · दुर्घटनाक मोड़

नवलखा मोड़ पर गाड़ी आ साइकिलक टक्करमे अनिल मिश्र घायल होइत छथि। निगरानीक यन्त्रमे दुर्घटनाक निर्णायक एगारह सेकण्ड अनुपस्थित अछि, तेँ चालक सुरेश, साक्षी कमली आ आन लोकक कथन पर विवाद बढ़ैत अछि। समाचार आ अफवाह अधूर दृश्य कैँ अपन सुविधा अनुसार भरैत अछि। जाँचमे सड़कक बनावट, ठाढ़ वाहन, संकेत, गति आ देखबाक सीमाक संयुक्त भूमिका उभरैत अछि। बादमे मोड़ पर सुरक्षा-सुधार होइत अछि, मुदा छुटल एगारह सेकण्ड नहि भेटैत। कथा प्रमाणक रिक्त स्थानक प्रति सावधानी आ व्यक्ति-विशेष पर समस्त दोष थोपबाक सीमाक उद्घाटन करैत अछि।

कथा ३२ · झूठक पुरस्कार

कथाकार अरुणेश मिश्रक पुरस्कृत ‘माटिक आवाज’ कथा लेल मौलिकताक विवाद उठैत अछि। बाढ़ि-पछात लोकगीत, स्रोत-पाठ आ सम्पादकीय सामग्रीक श्रेयक प्रश्न सँ लेखक, सम्पादक आ शोध-सहायक सभक भूमिका जाँचक विषय बनैत अछि। पुरान लेखनमे अरुणेश स्वयं सेहो उद्धरणक एक चूक स्वीकार करैत छथि। सार्वजनिक विमर्शमे ‘निर्दोष महान लेखक’ आ ‘चोर लेखक’क एकतरफा कथासभक बदला प्रभाव, अनुवाद, स्मृति आ साझा श्रमक सम्बन्ध सामने अबैत अछि। पुरस्कारक संग स्रोत-सूची आ भूलक

स्वीकारोक्ति राखि अरुणेश बुझैत छथि जे दोसरक योगदान पहचानब रचनाक निजत्व कम करब नहि अछि।

कथा ३३ · गामक आगि

सिमरियाक दक्षिण टोलामे सुगिया देवीक घर जरि जाइत अछि। तारक चिनगारी, चूल्हाक राखि, जरल पात आ जमीन-विवादसँ जुड़ल आगजनी—गाममे अनेक अनुमान पसरैत अछि। जाँच पहिल चिनगारीक निश्चित स्रोत नहि खोजि पबैत, मुदा आगि जल्दी पसरबाक कारणमे खराब तार, सँकरा बाट, पानिक अभाव आ राहतक देरीक भूमिका स्पष्ट होइत अछि। सुगियाक पोती रूपा एहि अनुभव पर निबन्ध लिखैत अछि, जाहिमे दोषी खोजबाक संग व्यवस्था सुधारबाक आग्रह अछि। सुगिया याद दिअबैत छथि जे लोकक आवाजो असमान रूपेँ सुनाइत अछि। कथा आपदा आ सामाजिक शक्तिक संयुक्त सन्दर्भ देखबैत अछि।

कथा ३४ · नदीक पार

कमला नदीक पानि घटला पर पत्थरक पुरान सीढ़ी-जेकाँ अवशेष बाहर अबैत अछि। एक समूह ओकरा मन्दिर, दोसर बौद्धकालीन घाट, तेसर जैन परम्पराक स्थल मानैत अछि। शोधकर्ता आ स्थानीय नाविकसभक साक्ष्य जाँचला पर पता चलैत अछि जे स्थल अनेक कालमे पारावार, व्यापार, पूजा आ यात्रासँ जुड़ल रहल हो सकैत अछि, मुदा एकल धार्मिक परिचय प्रमाणित नहि। नव पुल बनैत अछि, तइयो नावक यात्रा चलैत रहैत अछि। नदी पार करैत अनामिका अनुभव करैत छथि जे ‘एहि पार’ आ ‘ओहि पार’ देखनिहार पर निर्भर अछि; नदीक साझा इतिहास एक दावामे बन्द नहि होइत।

कथा ३५ · राजमिस्त्रीक गिरावट

समृद्धि सदनक निर्माण-स्थल पर राजमिस्त्री बुधन सदा मचानक टूटल बाँस आ भीजल जोड़क खतरा पहिने बतबैत छथि। प्रभावी रोक नहि लगला पर ओ जोखिमपूर्ण मचान पर चढ़ैत छथि आ दुर्घटना होइत अछि। प्रबन्धक, अभियन्ता, मुंशी आ मजदूरक निर्णयक अलग-अलग भूमिका जाँचमे खुलैत अछि। मजदूरक ‘स्वेच्छा’ केँ रोजी-रोटी आ शक्ति-

सम्बन्धसँ अलग कऽ नहि बुझल जा सकैत। दुर्घटनाक बाद निरीक्षण, लिखित रोक आ सुरक्षा-पर्यवेक्षणमे बदलाव अबैत अछि। बुधनक परिवारक पीड़ा नहि मिटैत, मुदा सामूहिक जिम्मेवारी कहबाक अर्थ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व मिटेनाइ नहि होइत।

कथा ३६ · पुरान तस्वीर

घर खाली करैत नीलम झा केँ एक पुरान छायाचित्र भेटैत छनि, जाहिमे बीचक युवक केँ अलग-अलग परिवार अपन-अपन पुरखा वा सम्बन्धी मानैत अछि। छायाचित्रक अनेक प्रति, पाछाँ लिखल नाम, पुरान यात्रा आ पारिवारिक स्मृति जाँचला पर पहचानक उलझन बढ़ैत अछि। नीलम बुझैत छथि जे एक छायाचित्र अनेक घरमे पहुँचि सकैत अछि आ बादक पीढ़ी ओकरा अलग नाम देबैत अछि। छायाचित्र व्यक्ति उपस्थित हेबाक संकेत दैत अछि, मुदा नाम, नाता आ परिस्थिति स्वयं नहि बतबैत। अन्तमे ओ पाछाँक प्रश्नचिह्न मेटैत नहि छथि; अनिश्चितता केँ प्रमाणक ईमानदार हिस्सा मानैत छथि।

कथा ३७ · रातिक आवाज

पुरान हवेली बिकबाक आगाँक राति झा परिवारक लोक अन्हारमे रहस्यमय आवाज सुनैत छथि। ककरो ओ पुकार जेकाँ लगैत अछि, ककरो बितल सम्बन्धीक नाम; परिवारक पुरान मौन आ अपराधबोध जागि उठैत अछि। नचिकेत आवाजक मार्ग जाँचैत छथि आ घरक भीति, गली आ दालानक बनावट सँ ध्वनि बदलबाक सम्भावना पबैत छथि। मुदा एक्के आवाजमे सभ गोटे अलग शब्द किएक सुनलनि, तकर उत्तर केवल ईंटमे नहि भेटैत। हवेली टूटला पर ध्वनि बदलि जाइत अछि, स्मृति नहि। कथा सुनल अनुभवमे घरक बनावट आ मनक इतिहास दुनू योगदान देखबैत अछि।

कथा ३८ · ककर दोष

विद्यालयक पन्द्रह बरखक छात्र आदित्यक मृत्यु भेलापर समाचार आ सन्देश-समूहसभमे शिक्षक, पिता आ मित्रक नाम दोषी रूपमे घुमय लगैत अछि। दैनिकी, शैक्षणिक दबाव, अपूर्ण परामर्श-व्यवस्था आ सहपाठीक व्यवहार जाँचक विषय बनैत अछि। जाँच ककरो एक व्यक्तिकेँ मृत्यु कारण नहि ठहरबैत, मुदा शिक्षकक सार्वजनिक टिप्पणी, सहायता-व्यवस्था

आ संवादक कमीक सुधार आवश्यक बतबैत अछि। शोकग्रस्त परिवार बुझैत अछि जे दोष आ जिम्मेवारीक प्रश्न अलग होइत अछि। कथा आगाँक विद्यार्थीक मौन सँ सावधानीपूर्वक संवाद करब आ समय पर सहायता देबाक सामूहिक दायित्व पर केन्द्रित होइत अछि।

कथा ३९ · मखानक गन्ध

नव घरमे मखान भुजैत माधवी केँ अपन मायकेक रसोई आ माएक आवाज याद अबैत अछि। सासुरक भोजनमे माएक बताओल ढङ्ग अपनबैत ओ पहिने संकोच अनुभव करैत छथि, मुदा सासुजी ओ स्वाद केँ सम्मान दैत छथि। मायकेसँ आयल मखानक डिब्बा परिवार आ पड़ोसक बीच बाँटल जाइत अछि। धीरे-धीरे एक घरक सीख दोसर घरक दिनचर्यामे समा जाइत अछि। माधवी अनुभव करैत छथि जे मायकेक स्मृति बचाबय लेल सासुरसँ दूरी आवश्यक नहि, आ सासुरमे अपन ठाम बनयबाक लेल पुरान गन्ध मेटेबाक आवश्यकता नहि। मखानक गन्ध स्मृति आ नव अपनत्वक सम्बन्ध बनैत अछि।

कथा ४० · पीयर फूल

अनामिका घरेलू श्रमिक सुशीलाक बेटी छथि आ रेवती चौधरीक घरक बगैचामे काज करैत छथि। बगैचाक छोट पीयर फूल सँ हुनकर विशेष लगाव अछि, मुदा घरक सौन्दर्यक प्रशंसामे हुनकर श्रम आ नाम प्रायः ओझर रहैत अछि। छायाचित्र-प्रदर्शनी आ बगैचाक देखभालक अनुभव हुनका अपन परिचय, वेतन आ निर्णयक अधिकार पर सोचबाक प्रेरणा दैत अछि। ओ जिम्मेवारी लिखित करबैत छथि आ अपन श्रम केँ अदृश्य नहि रहय दैत छथि। अन्तमे छायाचित्रमे फूलक बदला हुनकर चेहरा आ माटि लगल हाथ स्पष्ट देखाइत अछि। पीयर फूल श्रमक गरिमा आ आत्मस्वीकृतिक प्रतीक बनैत अछि।

कथा ४१ · दुपहरियाक मेज

प्रभा झाक घरमे चारि पुरान सहेली दुपहरियाक भोजन पर जुटैत छथि। पुरान आत्मीयता आ सहज बातचीतक बीच आय, पेशा, घरक काज आ सामाजिक हैसियतक असमानता धीरे-धीरे उभरैत अछि। घरेलू श्रमिक रमा आ हुनकर बेटी काजलक उपस्थिति भोजन-कक्षक अदृश्य व्यवस्था केँ दृश्य बना दैत अछि। सहेलीसँ भेटल सलाह, छात्रवृत्तिक प्रक्रिया आ

छोट सहायताक प्रस्तावक अर्थ प्रत्येकक स्थितिसँ बदलैत अछि। प्रभा अपन घरक काजक समय आ अधिकार पर फेर विचार करैत छथि। कथा आत्मीय मेज पर राखल हँसीक नीचाँ सेहो श्रम, वर्ग आ अवसरक असमान निशान देखबैत अछि।

कथा ४२ · काजर

इतिहास शिक्षिका बनि विद्यालय जाएबाक पहिल दिन ईरा अपन आँखिमे काजर लगबैत छथि। दादी शारदा देवी हुनका काजरक रेखा खींचि दैत अपन युवावस्थाक शिक्षक-प्रशिक्षणक अधूर प्रयास याद करैत छथि। एहि बातचीतमे दू पीढ़ीक आशा, छूटल अवसर आ अपन बाट चुनबाक साहस उजागर होइत अछि। ईरा गेलाक बाद शारदा वर्षों बाद अपन आँखिमे काजर लगबैत छथि। रेखा एक दिस कने टेढ़ रहितो ओ ओकरा मेटैत नहि। कथा देखबैत अछि जे नव पीढ़ीक आरम्भ पुरान पीढ़ीक भीतर सेहो अपन वर्तमान अस्तित्वक चेतना जगाबि सकैत अछि।

कथा ४३ · नव परदा

आरती झा बैठकमे झीना नव परदा लगबैत छथि आ पुरान परदा घरेलू श्रमिक सविता केँ दऽ दैत छथि। सविता अपन छोट घरक नाप अनुसार भारी परदा काटि लगबैत छथि; हुनका लेल ओकर महत्त्व सजावटक संग हवा आ निजीपन सेहो अछि। आरतीक घरमे नव परदाक चित्र बनैत समय सविताक हाथ अनचाहल रूपमे छविमे आबैत अछि। बादमे आरती हुनकर उपस्थिति केँ हटयबाक बदला स्वीकार करैत छथि। सविता अनुभव करैत छथि जे परदा केवल ढाकबाक वस्तु नहि; एकर अर्थ ईहो अछि जे कोन जीवनक दृश्य देखबैत छी आ ककर श्रम अदृश्य बनबैत छी।

कथा ४४ · सुगन्ध

दिल्लीमे रहनिहार नीलिमा केँ सहकर्मी देल एक सुगन्धित शीशी अचानक पिपरा गामक पुरान आँगन याद दिअबैत अछि। ओ बेराबेरी ओ गन्ध लगबैत छथि, मुदा प्रत्येक बेर अलग दृश्य उभरैत अछि—कखनो विद्यालय, कखनो विवाह, कखनो अस्पताल, आ कखनो किछुओ नहि। माएक बीमारीक समय गाम घुरलापर ओ वर्तमान आँगनक अपन गन्ध

अनुभव करैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे स्मृति ककरो शीशीमे बन्द स्थिर घर नहि, बल्कि वर्तमान मन आ देहक संग बदलैत अनुभव अछि। अन्तमे ओ अतीत खोजबाक बदला वर्तमानक गन्धो स्वीकार करैत छथि।

कथा ४५ · चाँदीक कटोरी

मंजरी देवीक घरमे चाँदीक कटोरीसभ विशेष अतिथि लेल सुरक्षित राखल जाइत अछि। कटोरीक देखभालक जिम्मेवारीक नाम पर ओ घरक श्रमिक पार्वती पर भरोसा नहि करैत छथि। बहू सुमेधा आ रोजक व्यवहारक बीच मंजरी अपन माएक समयसँ आयल अविश्वासक परम्परा पर विचार करैत छथि। वस्तुक मूल्य आ व्यक्ति पर भरोसाक प्रश्न अलग अछि, ई बुझैत ओ पार्वती केँ कटोरी सम्हारबाक अधिकार दैत छथि। एहि छोट बदलावमे घरक कामक मर्यादा आ श्रमिकक प्रति दृष्टि बदलबाक संकेत अछि। चाँदीक चमक सँ बेसी महत्त्व ओहि अविश्वासक कम होएबक अछि जे वर्षों सँ कटोरीक संग सँचारित होइत रहल।

कथा ४६ · बाल सुकबैत

बरखा थमलापर किरण आ पैघ बहिन मृणालिनी छत पर बाल सुकबैत विवाह आ स्वतंत्रताक बात करैत छथि। किरणक विवाहक प्रस्ताव आयल अछि, मुदा ओ अपन सहमति देबासँ पहिने नौकरी, निवास आ निर्णयक अधिकार स्पष्ट करय चाहैत छथि। मृणालिनी अपन विवाहमे परिवारक ‘हँ’ केँ अपन ‘हँ’ मानि लेबाक अनुभव बाँटैत छथि। बहिनक सहयोगसँ किरण अभिषेकसँ अलग बातचीत करबाक अवसर पबैत छथि, मुदा भेटक बादो तुरन्त निर्णय नहि लैत छथि। आधा भीजल बाल जेकाँ ई अनिर्णीत अवस्था अपूर्णता नहि, अपन समयमे निर्णय बनबाक स्वाभाविक प्रक्रिया ठहरैत अछि।

कथा ४७ · सफेद फूल

मौसी सुषमा देवीक अन्त्येष्टि सँ घुरैत रागिनी केँ बाटक सफेद फूल सुन्दर लगैत अछि, आ शोकक बीच सौन्दर्य देखबाक कारण अपराधबोध होइत अछि। माए अपन पुरान शोकक अनुभव सुनबैत बुझबैत छथि जे शरीरक अनुभूति आ मोनक दुःख सदा एक्के लयमे नहि

चलैत। रागिनी मौसीक पसिन्न नारंगी फूल आनैत छथि आ ओहि समय रोअय लगैत छथि। बादमे जीवित फूल, मौसीक हँसी आ आँखिक नोर एक संग स्मृतिमे अबैत अछि। कथा शोकक लेल एकटा निश्चित व्यवहारक नियम मानबाक बदला भावक सहअस्तित्व स्वीकार करैत अछि।

कथा ४८ · छोट पार्टी

धनी घरक 'छोट पार्टी'मे पन्द्रह बरखक सोनाली अपन माए सुशीला संग सहायता करय अबैत अछि। जन्मदिनक सजावट आ उपहारक बीच सोनाली बच्चासभक आनन्द देखैत छथि, मुदा अपन आ माएक श्रमक कारण ओहि दुनियासँ दूरी सेहो अनुभव करैत छथि। चित्र बनयबाक रुचि राखनिहार सोनाली पार्टीक दृश्य बनबैत छथि, जाहिमे रसोई, झाड़ू, पानि आ श्रमिकक हाथक स्थान केक आ गुब्बारासँ कम नहि। घरक मालिकिन हुनकर काजक अलग पारिश्रमिक दैत छथि। सोनाली बुझैत छथि जे उत्सवक आकार ओहि लोकक श्रमसँ सेहो निर्धारित होइत अछि जे प्रायः दृश्यसँ बाहर राखल जाइत छथि।

कथा ४९ · रेशमी दुपट्टा

इतिहास शिक्षिका सुधा अपन लेल बैंगनी रेशमी दुपट्टा किनैत छथि, मुदा विद्यालयमे भेटल एक पुरुष सहकर्मीक टिप्पणीक बाद ओकरा पहिरबासँ संकोच करय लगैत छथि। बेटी ईशानी संग बातचीत हुनका दोसरक दृष्टिक बदला अपन पसिन्न पर भरोसा करबाक साहस दैत अछि। फेर दुपट्टा पहिरलापर प्रशंसा आ साधारण दिनचर्या दुनू ओकर संग जुड़ैत अछि। कक्षामे चॉकक दाग पड़ला पर सेहो सुधा ओकरा अनिष्ट नहि मानैत छथि। दुपट्टा आब केवल बजारक सुन्दर वस्तु नहि, अपन देह, काज, बेटी आ अनुभवक संग जीयल वस्तु बनि जाइत अछि।

कथा ५० · खिड़कीक वर्षा

वर्षाक एक दुपहरिया रमा पति अरविन्द सँ अपन लेल चाह बनयबाक आग्रह करैत छथि। सामान्य जेकाँ लगैत एहि आग्रहसँ घरमे बरखों सँ बनल काज-विभाजन आ रमा छोड़ि देल शिक्षण-पेशक बात खुलैत अछि। अरविन्द स्पष्ट रोक कखनो नहि लगौने छलाह, मुदा घर,

बच्चा आ जिम्मेवारीक चिन्ता रमा कैँ लगातार पाछाँ धकेलने छल। संवादक बाद रमा पुरान प्रमाणपत्र निकालि पड़ोसक बच्चासभ पढ़ेनाइ आरम्भ करैत छथि। अरविन्द सेहो सहयोग करय सीखैत छथि। दोसर वर्षाक दिन रमा चाह अस्वीकार करबो सहज अनुभव करैत छथि। कथा विवाहमे सुनबाक आ उत्तर लेल स्थान छोड़बाक महत्त्व बतबैत अछि।

कथा ५१ · नींबूक स्वाद

बीमार देवकी देवी कैँ बेटी संध्या नींबूक रस दैत छथि आ अचानक बचपनमे माएसँ सुनल वैह आदेश अपन मुँहसँ निकलि जाइत अछि। देखभालक भूमिका उलटला सँ दुनू पीढ़ीक बीच स्नेहक संग असहजता सेहो अबैत अछि। माए अपन काज स्वयं करय चाहैत छथि, जखन कि बेटी हुनका बचेनाइ चाहैत छथि। धीरे-धीरे संध्या बुझैत छथि जे देखभालक अर्थ सब निर्णय अपना हाथमे लेनाइ नहि; दोसरक सामर्थ्य स्वीकार करब सेहो अछि। घुरबाक समय माए बेटी कैँ नींबू दैत छथि। ओकर बदलैत खट्टापन स्मृति आ सम्बन्धमे समयक बदलल अनुपातक अनुभव करबैत अछि।

कथा ५२ · गुलाबी कप

कार्यालयमे एक गुलाबी कप माधवीक रोजक चाह आ पाँच मिनटक निजी विश्रामसँ जुड़ि गेल अछि। कप कखनहुँ दोसरक हाथमे देखला पर हुनका अपन छोट पसिन्नक अवहेलना बुझाइत अछि। नव सहकर्मी आ प्रशिक्षु संग बातचीत सँ ओ निजी चाहत, साझा वस्तु आ स्पष्ट अधिकारक भेद बुझैत छथि। समीरा अपन कप पर नाम लिखैत अछि; माधवी गुलाबी कप पर नाम नहि लिखैत छथि, कारण आब ओ अपन पसिन्न स्पष्ट कहि सकैत छथि। एक दिन उज्जर कपमे चाह पीबितो पाँच मिनट हुनके रहैत अछि। कथा आत्मसम्मान कैँ वस्तुक एकाधिकारक बदला अपन आवश्यकता कहबाक क्षमतासँ जोड़ैत अछि।

कथा ५३ · धूपक गन्ध

कमला देवी पुरान बक्सासँ मृत पैघ बहिन मंजरिक बैंगनी साड़ी निकालि धूपमे पसारैत छथि। साड़ीक गन्ध हुनका बहिनक हँसी, छोट झगड़ा आ अधूर स्मृति याद दिअबैत अछि। बहूक कहला पर कमला पहिल बेर साड़ी स्वयं पहिरैत छथि। दिनभरि उपयोगक बाद

कपड़ामे पुरान गन्धक संग वर्तमान देहक गन्ध मिलि जाइत अछि। ओ बुझैत छथि जे स्मृति एकदम अपरिवर्तित चीज नहि, आ किछु सम्बन्धक अधूर वाक्यक समाधान आवश्यक नहि। साड़ी बक्साक अन्हारमे फेर बन्द करबाक बदला ओ आलमारीमे टाँगि दैत छथि।

कथा ५४ · कानक बाली

घरेलू श्रमिक गौरी अपन बचतसँ छोट सुनहला बाली खरीदैत छथि। मालिकिन सुधा देवी पहिने आश्चर्य करैत छथि जे गौरी अपन लेल एहन वस्तु कोना किनलनि, मुदा बातचीत सँ अपन पूर्वधारणा पहचानैत छथि। गौरीक सहज उत्तर अछि जे बाली हुनका पसिन्न छल। सुधा केँ अपन पहिल तनखाहक चाँदीक बाली आ ओहि समयक पारिवारिक टिप्पणी याद अबैत अछि। दुनू स्त्री अपन पसिन्नक अधिकार साझा करैत छथि, मुदा हुनकर आर्थिक स्थिति आ घरक शक्ति-सम्बन्ध समान नहि भऽ जाइत। कथा श्रमिक केँ केवल अभावक प्रतीक बना देबाक बदला ओकर स्वतंत्र रुचि आ व्यक्तित्व देखबाक आग्रह करैत अछि।

कथा ५५ · लाल नेलपॉलिश

रुचिका सहेली सँ भेटल लाल नेलपॉलिश अपन नखमे लगबैत छथि, जाहि सँ घरमे पैघ होएब, मर्यादा आ व्यक्तिगत पसिन्न पर विवाद उठैत अछि। माए-पिताक संकोच आ दादीक सहज समर्थनक बीच रुचिका अपन निर्णयक अधिकार समझय लगैत छथि। दादी स्वयं नख रंगबैत छथि, आ धीरे-धीरे माए सेहो रंग चुनैत छथि। परिवारक व्यवहारमे छोट परिवर्तन अबैत अछि। बादमे रुचिका एक दिन नख बिना रंग रखने प्रसन्न रहैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे स्वतंत्रताक अर्थ केवल अपन मनसँ रंग लगेनाइ नहि, मन नहि भेलापर नहि लगेनाइ सेहो अछि।

कथा ५६ · झीना परदा

शल्यक्रिया बाद अस्पतालक कक्षमे अनामिका आ दोसर रोगिणी सरिताक बीच झीना परदा लटकल अछि। परदा आवाज आ छाया नहि रोकैत, मुदा दुनू स्त्रीक बीच एक आवश्यक मर्यादा बनबैत अछि। ओ एक-दोसरक चिन्ता अनुभव करैत छथि, तइयो निजी बीमारीक विवरण जबरदस्ती नहि पूछैत। विदाइक समय छोट शुभकामना पर्याप्त होइत

अछि। घर घुरलापर अनामिका बेटी कैँ सरिताक निजी बात नहि सुनबैत छथि। कथा देखबैत अछि जे सहानुभूति सदिखन गहिर प्रश्नसँ बनैत नहि; कखनो सुनि सकबाक बादो हस्तक्षेप नहि करब निजताक असल सम्मान अछि।

कथा ५७ · इलायची

हरिनारायण झा चालीस बरख सँ पत्नी सुधाक इलायचीवाली चाह पर शिकायत करैत छथि। सुधा बाहर गेलाक बाद ओ अनुभव करैत छथि जे चाहक परिचित स्वादमे किछु कमी अछि। पुरान स्मृति, खर्चक पर्ची आ पति-पत्नीक बातचीत सँ पता चलैत अछि जे रुचि आ शिकायत दुनू समयक संग आदत बनि गेल छल। सुधा घुरला पर दुनू अलग-अलग इलायचीक मात्रा चाहबाक बात खुलि कऽ कहैत छथि, आ अन्ततः अपन कप बदलि लैत छथि। एहि छोट अदला-बदलीमे दाम्पत्यक गहिर बात उभरैत अछि—भूमिका, स्वाद आ पसिन्न स्थिर नहि रहैत; संग रहबामे फेर-फेर सुनब आवश्यक अछि।

कथा ५८ · फूलदान

शैलजा देवीक घरमे पुरान काँचक फूलदान टूटला पर परिवारक लोक एक-दोसर पर दोष लगाबय लगैत छथि। आठ बरखक ईरा वस्तुक टूटन, मेजक डगमगाहट आ मुरझाएल फूलक अलग-अलग पक्ष देखैत अछि, जखन कि दादीक लेल फूलदान पचास बरखक इतिहास अछि। परिवार टूटल टुकड़ा जोड़ैत अछि आ मेजक पाँव सेहो सुधारैत अछि। जोड़ल फूलदानक उपयोग पहिने जेकाँ नहि रहैत, मुदा ओकर महत्त्व समाप्त नहि होइत। बच्ची बुझैत अछि जे प्रत्येक व्यक्ति दृश्यक एक हिस्सा देखैत अछि; दादी, माए आ बच्चाक अनुभव जोड़ला परो सब किछु एक्के नजरिमे नहि समाइत।

कथा ५९ · सूखल कमला

अठहत्तर बरखक कथावाचक अपन दिवंगत भाइ गोपी कैँ मनमे सम्बोधित करैत सूखल कमला नदीक पुरान धार लग घुरैत छथि। बदलल खेत, बाँध, घर आ लोकक बीच हुनका भाइ संग बिताओल जीवन टुकड़ा-टुकड़ामे याद अबैत अछि। स्थानीय युवकसभक वर्तमान जानकारी हुनकर पुरान स्मृतिकैँ पूरा करैत सेहो अछि आ प्रश्नो उठबैत अछि। ओ बुझैत

छथि जे पुरान धार सूखल होइतो पूरी नदीक अस्तित्व समाप्त नहि, मुदा जे सचमुच नष्ट भेल, ओकरा बाँचल कहि देब उचित नहि। भाइकेँ मनमे विदा दैत कथावाचक स्वीकार करैत छथि जे अन्ततः पयर जीवित केँ उठेबाक होइत अछि।

कथा ६० · बालुकाक घर

सुभद्रा देवी परिवार संग कोसीक बालुकामे अपन बिला गेल पुरान गामक ठाम खोजय अबैत छथि। बेटा प्रभाकर, बेटी कावेरी आ नातिन मीता सामने अलग-अलग आकारक आँगन, दुआर आ गाछ याद करैत छथि। बालुकापर बनल घरक रेखासभ बारम्बार बदलिएत अछि; कियो अपन स्मृतिकेँ सर्वमान्य नकाशा नहि बना पबैत। सुभद्रा नातिन केँ कथा स्मरण रखबाक आदेश नहि दैत छथि, केवल जतेक स्वयं मोन रहय ओतेक बचयबाक कहैत छथि। घुरैत समय परिवार बालुका या ईंट नहि लऽ जाइत, मुदा घरक अनेक रूप हुनकर भीतर रहि जाइत अछि।

कथा ६१ · बाँसक आवाज

पुरान घर बेचबाक पहिने एक राति बितबैत शिवनाथ केँ बाँसक रगड़ाहटमे दिवंगत बाबूक लाठीक आवाज सुनाइ पड़ैत अछि। एहि ध्वनिसँ हुनकर मृत्यु-रातिक पछतावा जागैत अछि—ओ बाबूक दूरभाष जानि-बुझि नहि उठौने छलाह। पत्नी नीलम सँ ई बात कहला पर शिवनाथ पहिल बेर वर्षोंक भार बाँटैत छथि। बहिन आ परिवारक संग घर, बाँस आ लाठीक भविष्य पर बातचीत होइत अछि। ओ बुझैत छथि जे बाँसक आवाजक अपन भौतिक कारण अछि आ अपराधबोधक अपन इतिहास। दुनू केँ एक बनाबय बिना सेहो बाबूक स्मृति सँ जुड़ल रहल जा सकैत अछि।

कथा ६२ · धूलिक पगडंडी

पैंतीस बरख बाद गाम लौटल दिवाकर केँ अपन पुरान पगडंडी पहिचानमे नहि अबैत, मुदा लोक हुनकर बाबू शशिभूषण मिश्रक नाम चिन्हैत अछि। बाटमे भेटल वृद्ध, महिला आ किशोरसभ अलग-अलग सम्बन्ध, श्रम आ छोट स्मृति सुनबैत छथि। दिवाकर बाबूक एहन रूप जानैत छथि जे पारिवारिक स्मृतिमे अनुपस्थित छल—ककरो नाम लिखब सिखेनिहार,

ककरो बाट बतौनिहार। ओ अनेक लोकक नाम कापीमे लिखैत छथि, मुदा सूची कैं पूर्ण इतिहासक शीर्षक नहि दैत। पगडंडी चलैत रहैत अछि आ ओकर स्मृति निरन्तर बदलैत; नाम गामक साझा व्यवहारमे सेहो जीवित रहैत अछि।

कथा ६३ · खाली पोखरि

नरेश गाम घुरि पबैत छथि जे बचपनक पोखरि पूरा सुखा गेल अछि। घाट पर बैसल वृद्धसभ ओकर भीतरक पुरान डूबन, खेल आ लोकक नाम एखनहुँ वर्तमान कालमे सुनबैत छथि। नरेश अलग-अलग कथाक मेल खोजैत छथि, मुदा ककरो स्मरण अधूर होएत तऽ ओकरा पक्का तथ्य नहि बनबैत छथि। बालक अनमोल सूखल तल्लामे चलैत ओही पुरान घटना पर प्रश्न करैत अछि। पोखरि आब पानिक बदला पयरबाट बनल अछि, मुदा गामक बोलीमे ओकर पुरान पानि बाँचल अछि। कथा स्थानक भौतिक परिवर्तन आ भाषामे बचल जीवनक सहअस्तित्व देखबैत अछि।

कथा ६४ · कटान

कमला नदीक कटान रामलोचनक परिवारक पुरान समाधिसभक नजदीक पहुँचि जाइत अछि। पोता अविनाश नाप-पट्टी सँ घटैत जमीन देखैत अछि, जखन कि रामलोचन पुरखा-स्मृति आ स्थानक मर्यादा बचयबाक चिन्तामे छथि। बचावक उपाय सीमित होइत अछि; परिवार नाम, पुरान ईंट आ जतेक सम्भव ततेक सामग्री सुरक्षित ठाम लऽ जाइत अछि। नदीक पुरान मोड़ फेर बदलला पर समाधिक ठीक ठाम निश्चित नहि रहैत। परिवार अनुमान कैं श्रद्धाक नाम पर तथ्य नहि बनबैत। कथा देखबैत अछि जे कटान माटिक संग निश्चितता सेहो हरैत अछि, मुदा स्मृतिक प्रति ईमानदारी सम्भव रहैत अछि।

कथा ६५ · माटिक गन्ध

शहरक पहिल बरखामे उठल भीजल माटिक गन्ध सुधांशु कैं दिवंगत माएक अनेक स्मृति याद दैत अछि। एहि स्मृतिमे स्नेहक संग पुरान झगड़ा, पछतावा आ अन्तिम समयक अधूर प्रश्न सेहो अछि। बहिन शोभा संग बातचीत सँ ओ बुझैत छथि जे एक्के माएक जीवन दुनू कैं अलग-अलग रूपमे मोन अछि। सुधांशु माटिक गन्ध कैं हूबहू माए मानबाक बदला स्मृतिक

एक सम्भावित दुआर मानैत छथि। जे घटना निश्चित नहि, ओकरा कल्पनासँ भरबाक बदला ओ खाली छोड़ैत छथि। अन्तमे बरखा बिना सेहो माए याद अबैत छथि—स्मृति अपन आरम्भिक गन्धसँ स्वतंत्र भऽ जाइत अछि।

कथा ६६ · बिना छत घर

अठारह बरख बाद गाम घुरल घरेश्वर झा अपन पैतृक घरक छत उड़ल देखैत छथि। घरक मरम्मत, जमीनक कागज आ बेचबाक सम्भावनाक संग पुरान मित्र, शिक्षक आ पड़ोसिक समाचार हुनका भेटैत जाइत अछि। अनेक परिचित लोकक मृत्यु आ बदलल जीवनसँ ओ जानैत छथि जे व्यापारमे व्यस्त रहैत गामक बात पूछनाइ छोड़ि देने छलाह। घरेश्वर पूरा घर तात्कालिक रूपेँ नव नहि बनबैत छथि; पहिने एक कमरा बचबैत, फाटक सुधारैत आ देखभालक व्यवस्था करैत छथि। दूर रहितो ओ घरक वर्तमान हाल पूछनाइ सीखैत छथि। बिना छतक घर अनुपस्थित अतीतक संग जीवित सम्बन्धक अधूर, मुदा सम्भव रूप बनैत अछि।

कथा ६७ · नदी बोलल

बागमतीक वृद्ध नाविक जतन सहनी कहैत छथि जे नदी लोकक नाम पुकारैत अछि। घाटक लोक एहि बात कैँ रहस्य, कल्पना आ बूढ़ कानक भूल—अनेक रूपमे सुनैत अछि। जतन स्वयं नदीक आवाजमे कखनो मृत लोकक नाम, कखनो अपन नामक आशंका अनुभव करैत छथि। पत्नी देवकी संग बातचीत आ रोजक नाविक-जीवन हुनका ध्वनि, भय आ कथाक भेद बुझबैत अछि। नदी नाम लेलक कि नहि, एकर निर्णायक प्रमाण नहि। अन्तमे जतन अस्पष्ट ध्वनिकैँ निश्चित पुकार घोषित नहि करैत, आ डर रहितो जीवनक सामान्य काज चलबैत छथि।

कथा ६८ · धसान

रातिक धसानमे कौशल्या देवीक पुरान घरक आँगन धँसि जाइत अछि। परिवार सुरक्षित स्थान पर जाएबाक संग घरक बनावट, तुलसी चौरा, खाट आ पुरान वस्तुक ठाम याद करैत अछि। दिनेश, राघव, सरोज आ मीरा सभक स्मरण अलग-अलग अछि; कौशल्या सेहो समय

अनुसार बदलाव स्वीकार करैत छथि। घरक किछु हिस्सा बचाओल जाइत अछि आ नब घर बनैत अछि। मीरा पुरान आ नव स्मृति अलग-अलग लिखैत छथि, कोनो पुरान कथन मेटैत नहि। कथा देखबैत अछि जे घरक भौतिक धसानक बाद स्मृतिमे घर फेर बनैत अछि, मुदा स्मृति धँसल जमीन भरबाक माटि नहि बनि सकैत।

कथा ६९ · कासक मैदान

तारामणि कासक मैदानमे एक बच्चीक पुकार सुनि अपन बहुत पहिने गुम भेल फुलिया कैँ मोन करैत छथि। गाममे आवाजक स्रोत आ फुलियाक अन्तिम दिन पर अलग-अलग अनुमान उठैत अछि, मुदा निर्णायक उत्तर नहि भेटैत। भतीजी नीलिमा संग बातचीतमे तारामणि स्वीकार करैत छथि जे हर बच्चीक आवाज कैँ फुलिया बनाबि देनाइ उचित नहि। कासक मैदानक बदलल रूपमे सेहो गुम व्यक्तिक निश्चित निशान नहि बाँचल अछि। तारामणि फुलिया कैँ कखनो बच्ची, कखनो सम्भावित वृद्धा, कखनो केवल नामक रूपमे स्मरण करैत छथि। कथा गुमशुदगीक अनुत्तरित दुःख कैँ झूठा अन्त देबाक बदला ओकर अधूरापन स्वीकार करैत अछि।

कथा ७० · तिरहुतक धूलि

चौरासी बरखक गाड़ीवान जगेसर तिरहुतक बाट दूरीक पत्थर सँ नहि, अपन बैलगाड़ी पर कखनो यात्रा कएने दिवंगत लोकक नामसँ नापैत छथि। नातिन मुनिया हुनका संग चलैत पुरान यात्रीसभक छोटी-छोटी स्मृति सुनैत अछि, जकर किछु नाम बचल अछि, किछु आवाज मात्र। सड़क पक्का होइत अछि आ समयक संग गाड़ी बदलैत अछि। परिचित जाहिदक निधन भेलापर जगेसर ओकर नाम सेहो बाटमे जोड़ैत छथि। मुनिया अपन नाम गिनबाक प्रश्न करैत अछि, तखन दादा कहैत छथि जे जीवितक नाम गिनल नहि, पुकारल जाइत अछि। कथा मृत स्मृति आ वर्तमान सम्बोधनक भेद स्थापित करैत अछि।

कथा ७१ · तीन कब्र

नदीक कटान सँ नसीमक परिवारक परदादा, दादा आ पिता—तीन पीढ़ीक कब्र एक-एक कऽ गुम भऽ जाइत अछि। नसीम, रुबीना, जैनब बीबी आ आलिया पुरान कब्रक ठाम

खोजैत, अलग-अलग पीढ़ीक स्मरण दर्ज करैत छथि। परिवार गुम कब्रक बदला मनगढ़न्त स्थान वा प्रतीकात्मक निश्चितता स्थापित नहि करैत। कापीमे तीन नाम आ जतेक सही जानकारी अछि ओतेक राखल जाइत अछि। पिताक गरम चाहक छोट स्मृति सेहो अनमोल ठहरैत अछि। स्थान नष्ट भेला बाद किछु स्मृति बचि सकैत अछि, मुदा सभ किछु बचब सुनिश्चित नहि; बचल ‘किछु’ कैं सेहो पर्याप्त मानल जा सकैत अछि।

कथा ७२ · बाढ़िक निशान

अदितिक घरक भीत पर बाढ़िक पुरान भूरा निशान वर्षों सँ सुरक्षित अछि। घरक मरम्मत आरम्भ होइत ओकरा बचाबय कि रंगि देब, एहि प्रश्न पर परिवारक अलग-अलग स्मृति खुलैत अछि। शान्ति देवी, पिता-माए आ पड़ोसिक कथनमे बाढ़िक पानि, बचाव आ सहायता सम्बन्धी विवरण पूरा समान नहि। अदिति प्रत्यक्ष स्मृति, सुनी कथा आ अनिश्चित विवरण अलग रखैत छथि। अन्तमे भीत नव रंगसँ उज्जर भऽ जाइत अछि, मुदा परिवारक व्यवहार आ संवादमे बाढ़िक अनुभव बाँचल रहैत अछि। अगिला पीढ़ी कैं अदिति केवल पक्का बात कहैत छथि आ बाकी प्रश्न आगाँ पूछबाक लेल छोड़ैत छथि।

कथा ७३ · छोड़ल इनार

विश्वविद्यालयमे पढ़ैत नित्या गामक पन्द्रह बरख सँ बन्द पुरान इनारक इतिहास जानय चाहैत छथि। नानी कमला देवी रातिमे इनार लग सुनाइ देबयवला आवाजसँ बिसरल लोकक नाम आ पुरान घटना मोन करैत छथि। नित्या इनारक बनावट, बन्द हेबाक कारण आ सुरक्षाक उपाय जाँचैत छथि। सकीना, विमला आ आन स्त्रीसभक बातचीतसँ खुलैत अछि जे इनार केवल पानिक स्रोत नहि, गामक समाचार आ सामूहिक सम्बन्धक ठाम छल। अन्तमे इनारक मुँह सुरक्षित जालीसँ ढाँपल जाइत अछि। नित्या बुझैत छथि जे प्रत्येक आवाजक पछाँ कोनो कथा होयब आवश्यक नहि, मुदा स्मृतिमे लोकक नाम इनारसँ बाहर सेहो जीवित रहि सकैत अछि।

कथा ७४ · मकईक सूखल पात

खेतमे मकईक सूखल पातक खड़खड़ाहट हरिनारायण महतो केँ पुरान अकालक बरखमे घुरा दैत अछि। पोती चन्दा संग बातचीतमे पीयर बैल हीरा, सगुनी काकी, बहिन फूलो आ संकटमे बाँटल अन्नक स्मृति खुलैत अछि। चन्दा घटनासभ लिखैत काल दादासँ पूछैत छथि जे अकालक समय भेल मृत्यु आ अकालक कारण भेल मृत्युमे अन्तर कोना राखल जाए। हरिनारायण अपन अनुमानक सीमा स्वीकार करैत छथि आ अकालक बीचो बचल सहयोगक बात कहैत छथि। नव फसलक हरियर पातमे ओहि दुखद आवाजक पुनरावृत्ति नहि होइत अछि। स्मृति केवल दुखक पुनरागमन नहि, भोजनक सम्मान, पशुक देखभाल आ उपकार स्मरण करबाक व्यवहार सेहो अछि।

कथा ७५ · अन्तिम नाव

नदी पर पुल बनिते वृद्ध नाविक रामधनीक नावक नियमित यात्री समाप्त भऽ जाइत छथि। पुलसँ उपचार, विद्यालय आ बाजार धरि पहुँचनाइ सहज भेल अछि, तैँ रामधनी ओकर उपयोगिता सँ इनकार नहि करैत; मुदा रोजगारक संग हुनकर देहक अभ्यास आ नाविकक पहचान सेहो संकटमे पड़ैत अछि। कुसुमक सहयोगसँ सीमित सुरक्षात्मक नाव-शिक्षण आरम्भ होइत अछि आ दिनकर हुनकासँ धार, हवा आ नाव सम्हारबाक ज्ञान सीखैत छथि। धीरे-धीरे रामधनी स्वयं नाव चलायब छोड़ि निर्देश देब सीखैत छथि। अन्तमे खाली नाव लग बैसलो हुनका अपन अस्तित्व सिद्ध करबाक चिन्ता नहि रहैत अछि। कथा परिवर्तनकेँ जीत-हारक निर्णय नहि, जीवन-व्यवहारक रूपान्तरण मानैत अछि।

कथा ७६ · गाछक ठूँठ

नव बस-परिचालक नवल केँ यात्रीसभ ‘पीपल लग’ उतारबाक आग्रह करैत छथि, जखन कि सरकारी सूचीमे ओहि ठामक नाम ‘पूर्वी चौक’ अछि। खोजबीनमे हुनका बुझाइत अछि जे पुरान पीपरक गाछ कटि गेल, मुदा ओकर ठूँठ आ ठामक नाम लोकक चलनमे बाँचल अछि। बसक ठहराव बदललासँ पैदल बाट, चाह बेचैत फुलो देवीक रोजगार आ छोटूक नव दोकान पर अलग-अलग प्रभाव पड़ैत अछि। नव सूचना-फलकमे आधिकारिक आ प्रचलित

दुनू नामक स्थान बनैत अछि। नवल बुझैत छथि जे गाछक अनुपस्थितिसँ ठामक सामाजिक अर्थ स्वतः समाप्त नहि होइत; लोकक पयर, स्मृति आ रोजीक हिसाबेँ ओकर नाम आगाँ बढ़ैत अछि।

कथा ७७ · धुँआ

चाहक दोकान पर बैसल वृद्ध कथावाचक खेतसँ उठैत धुँआ देखि ओहि भोर केँ स्मरण करैत छथि, जखन सात युवक रोजीक खोजमे गाम छोड़ि बस पर चढ़ल छलाह। तिनकर यात्रा, कमाइ, असफलता, घर घुरनाइ आ परिवारक प्रतीक्षा अलग-अलग रूपमे हुनकर स्मृतिमे खुलैत अछि। धुँआ ककरो भाग्यक भविष्यवाणी नहि छल; ओ केवल बीतल अनुभवक दुआर खोलैत अछि। साँझमे दू नव युवक बसक समय पूछय अबैत छथि, जिनका कथावाचकक पोता अपन ढंगसँ सहायता करैत अछि। वृद्ध बुझैत छथि जे पलायनक कथा धुँआसँ पैघ अछि, आ प्रत्येक पीढ़ी यात्रा करबाक नब ढंग चुनैत अछि। ओ अगिला भोर नव यात्रासभ दिस देखबाक निश्चय करैत छथि।

कथा ७८ · मौन गाम

चौबीस बरख बाद देवनाथ अपन पुरान गाममे एक राति रहय अबैत छथि। घरक फाटल भीत आ खसैत छतसँ बचल काठ निकालबाक काजक बीच हुनका बन्द घर, जंग लागल ताला आ सुनसान गल्ली देखाइत अछि। पहिने ओ एहि नीरवता केँ मृत गामक चुप्पी मानैत छथि, मुदा क्रमशः बुझैत छथि जे बहुत घरक लोक जीवित छथि; ओ सभ बाहर काज करैत, पर्वमे घुरैत आ दूरसँ घरक समाचार लैत छथि। पुरान चौखट अलग राखि घर बन्द करैत काल देवनाथ अनुपस्थित लोकक बदला स्वयं उत्तर बनायब छोड़ैत छथि। कथा गामक खाली पड़ल घर आ ओकर बाहर पसरल जीवनक बीचक भेद खोलैत अछि।

कथा ७९ · तीन बरखाक बीच

अड़सठ बरखक अनिमा देवी अपन ‘अनिमा लेखन सेवा’ दोकानमे पुरान टंकणयन्त्र आ नातिन नेहाक संगणकक बीच बैसि जीवनक तीन उमेर स्मरण करैत छथि। अठारह बरखमे इतिहास पढ़बाक इच्छा छल; सैंतीस बरखमे लिखबाक श्रमक पाँच रुपैया मूल्य स्वीकार

करब सीखलनि; आब दोकान बेचब अथवा बन्द करब प्रश्न बनल अछि। नेहाक संग बातचीतक बाद ओ सप्ताहमे दू दिन दोकान खोलबाक सम्भावना चुनैत छथि, मुदा एकर अन्तिम निर्णय निश्चित नहि करैत छथि। अपन बदलल उँगुरी, अभ्यास आ चुप्पीमे ओ बीतल बरखक छाया अनुभव करैत छथि। कथा देखबैत अछि जे जीवनक किछु स्मरणीय दिन ओकर बीचक पूरा समयक अर्थ नहि समेटि सकैत अछि।

कथा ८० · घुरबाक कारण

उनसठि बरखक माधवी झा विदेशसँ दरभंगाक पुरान घर बेचबाक काज लेल घुरैत छथि। भाइ विनोद आ बेटी आर्या संग बातचीतमे हुनकर सतरह बरखक प्रवेश-परीक्षा, घर छोड़बाक निर्णय आ परिवारमे प्रचलित ओकर अधूरा विवरण सामने अबैत अछि। माधवी बुझैत छथि जे ओ पहिले अपन लेल बाट खोजैत छलीह, बादमे ओहि निर्णयक अर्थ; एखन बेटी कैँ गलत कथा विरासतमे नहि देब हुनकर मुख्य उद्देश्य अछि। ओ पुरान प्रसंग स्पष्ट करैत छथि, मुदा ककरो सम्पूर्ण दोषी अथवा निर्दोष सिद्ध नहि करैत छथि। घरसँ विदा लैत काल अपन किशोर उमेरक हस्ताक्षरवाली खाली कापी संग लैत छथि। कथा देखबैत अछि जे घुरबाक कारण कखनो घर नहि, अपूर्ण पारिवारिक कथा होइत अछि।

कथा ८१ · बहिनसभ

दशकसभक दूरीक बाद बहिन मृदुला आ नीरा एक विद्यालयक लोक-शिल्प शिविरमे फेर मिलैत छथि। कढ़ाइक एक पुरान बेलक रूप आ ओकर मौलिक रचनाकारक नाम लऽ हुनका दुनूक बीच भेल मतभेद एखनहुँ पूरी तरह समाप्त नहि भेल अछि। किशोरीसभ कैँ सुई-सूत सिखबैत काल नानीक पुरान कढ़ाइ, समूहक श्रम आ नव पीढ़ीक अपन रूप-विकास सामने अबैत अछि। आरुषिक नब त्रिकोण दुनूकैँ बुझबैत अछि जे कोनो आकृति एक्के हाथक सम्पत्ति नहि रहैत। बहिनसभ अपन-अपन पक्ष पूर्णतः नहि छोड़ैत छथि, मुदा एक-दोसरक उपस्थिति स्वीकार करैत छथि। मृदुला अन्तमे नव रेखा बनबैत बीचमे किछु ठाम खाली छोड़ि दैत छथि।

कथा ८२ · पुरान डॉक्टर

अड़सठ बरखक वसुधा नतिनी ईरा संग पुरान बजारक ओहि गल्लीमे अबैत छथि जतय युवावस्थामे चिकित्सक चन्द्रनाथ झासँ हुनकर भेंट भेल छल। ओ चिकित्सकक कहने एक वाक्य पछिला जीवनमे बेटीक पढ़ाइ आ स्वतन्त्र निर्णयक पक्षमे बोलबाक साहस देने रहनि। मुदा फेर स्मरण करैत वसुधा बुझैत छथि जे चिकित्सकक सलाह संग ओहि समयक लाज, बाबूजीक चिन्ता आ माएक नियमित परिश्रम सेहो छल। पुरान चिकित्सक ठीक बात कहने होइतो सम्पूर्ण निर्दोष मनुष्य नहि छलाह; माएक चुपचाप देखभाल सेहो कम महत्त्वपूर्ण नहि छल। कथा एक स्मरणीय वाक्यक चारूकात लुकल अनेक जनक श्रम आ जटिलता केँ फेर सामने आनैत अछि।

कथा ८३ · घर नम्बर पाँच

‘घर नम्बर पाँच’क उत्तर देवालमे बनल एक खिड़की विभिन्न बरखमे विभिन्न स्त्रीक जीवनसँ जुड़ैत अछि। देवकीक समयक दुआर बादमे चन्द्रकलाक लेल बन्द करबाक सीमा, सरिताक लेल मसालाक पुड़िया बेचबाक पटिया, नीलिमाक माएक लेल सड़कसँ संवादक ठाम आ अनामिकाक पिताक लेल हवा-बातक सहारा बनैत अछि। प्रत्येक परिवर्तन ओहि समयक अलग आवश्यकता सँ उपजैत अछि; एक निर्णयक रचनाकार दोसरक परिचय सेहो नहि जनैत। खिड़की लग रहनिहार लोक अपन उपयोगक आधार पर ओकर अर्थ बनबैत छथि। कथा देखबैत अछि जे एक्के घरक इतिहास स्मारक वा एकल स्वामित्वसँ नहि, अनजान लोकक अलग-अलग श्रम आ दिनचर्यासँ बनैत अछि।

कथा ८४ · फोटो एल्बम

अस्सी बरखक कमला देवीक जन्मदिन पर बेटी चन्द्रिमा आ नतिनी अन्विता पुरान छायाचित्रक पोथी सँ चित्र चुनबाक काज आरम्भ करैत छथि। चित्रसभ समयक सीधा क्रममे नहि, वस्तु आ अनुभवक अप्रत्याशित जोड़मे राखल अछि। तिथि आ घटनाक पड़तालसँ खुलैत अछि जे घर बनबामे स्त्रीसभक धन, नीरजक साइकिलमे बहिनक छात्रवृत्ति आ निर्मलाक अधूर कहल पढ़ाइ-नौकरीक इतिहास सेहो सम्मिलित अछि। परिवारक स्थापित

कथन नव स्मृतिसँ जटिल होइत अछि। अन्तमे प्रदर्शनीमे चित्रसभक संग संक्षिप्त, सावधान वाक्य राखल जाइत अछि; मूल पोथीक क्रम नहि बदलल जाइत। कथा स्मृति सँ अर्थ निकालब आ ओहि अर्थ केँ घटना मानि लेबक बीच अन्तर स्थापित करैत अछि।

कथा ८५ · एक निर्णय

बीस बरख बाद बजारमे आमक अचारक शीशी देखि सीमा केँ अपन युवावस्थाक एक निर्णय याद अबैत अछि। पढ़ाइक प्रवेश-शुल्क जुटेबाक लेल ओ माए सावित्री देवी केँ हुनकर बनाओल अचार भंडारक नामसँ बेचबाक सलाह देने छलीह। पैसा सँ पढ़ाइ सम्भव भेल, मुदा माएक श्रमक नाम व्यापारिक चिह्नसँ हटि गेल। बेटी आर्या संग माएक घर पहुँचि सीमा अचारक बदलल स्वाद आ पुरान निर्णयक अनेक पक्ष बुझैत छथि। ओ फैसला केँ पूरा सही अथवा गलत नहि ठहरबैत छथि। आर्या नानीसँ अचार बनायब सीखि अपन कापी पर सावित्री देवीक नाम लिखैत छथि। कथा आवश्यक कमाइ, श्रमक स्वीकृति आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित ज्ञानक सम्बन्ध देखबैत अछि।

कथा ८६ · मित्रक बेटी

नगर पुस्तकालयमे सरोजिनी झाक भेंट पुरान मित्र विनीता मिश्रक बेटी दीपासँ होइत अछि। दीपाक बातचीत हुनका चालीस बरख पहिने टूटल विवाह-प्रस्तावक घटना याद दिअबैत अछि, जकर दोष ओ सदिखन विनीताक एक वाक्य पर रखैत रहलीह। दीपा अपन माएसँ सीखल बात सुनबैत छथि—सत्य जानब आ ओ सत्य कहबाक अधिकार आ ढंग बुझब अलग विषय अछि। एहि भेटक बाद सरोजिनी स्वीकार करैत छथि जे मित्रक वाक्य, परिवारक प्रतिक्रिया आ अपन जीवनक इच्छासभ मिलि पुरान निर्णय बनौने छल। विनीता संग छोट सन्देश फेर शुरू होइत अछि। कथा एकल दोषारोपणक बदला सम्बन्धक जटिलता आ सत्यक जिम्मेदार प्रयोगक प्रश्न उठबैत अछि।

कथा ८७ · बस-ठाम

किरण मिश्रक स्मृतिमे एक बस-ठहराव नरेन ठाकुर संग तीन अलग समयक भेटक साक्षी अछि। अठारह बरखक उमेरमे किरण जानि-बुझि बस छोड़ि हुनकासँ बात करैत छथि; बहुत

बरख बाद दुनूक फेर भेट होइत अछि, मुदा सम्पर्कक बाट खुलल रहितो कियो आगाँ नहि बढ़ैत। तेसर संयोगमे दुनू अपन-अपन जीवन, परिवार आ नहि पुछल गेल प्रश्नक पछतावा स्वीकार करैत छथि। किरण बुझैत छथि जे नरेनसँ विवाह नहि भेनाइ हुनकर पश्चात्तापक विषय नहि; अधूर प्रश्नक स्मृति मात्र अछि। वर्तमान जीवन सँ मुँह फेरबाक बदला ओ अपन पति सुभाष कैँ एहि भेटक बात कहबाक निश्चय करैत छथि। कथा संयोग आ चुनावक अलग-अलग अर्थ खोलैत अछि।

कथा ८८ · विवाहक बाद

विवाहक तीस बरख बाद सुधा आ देवेश कैँ पुरान घरक छत मरम्मत करायब कि बेटी अर्चना लग जा बसब, एहि पर निर्णय लेब अछि। बातचीतमे पछिला दशकसभक एहन घटना उभरैत अछि जखन एक जण दोसरसँ बिना पूछने फैसला कएने छल आ बादमे दोसर सेहो ओही भूल दोहरौने छल। शोधवृत्ति, बच्चाक देखभाल आ घरक जिम्मेदारीक स्मृति दुनूक अपन भार स्पष्ट करैत अछि। ओ अलग-अलग कागज पर अपन इच्छा लिखि एक-दोसरक बात पढ़ैत छथि। अन्तिम स्थान-परिवर्तनक निर्णय नहि होइतो छतक मरम्मत पर विचार साझा बनैत अछि। कथा विवाहक परिपक्वता कैँ एक्के उत्तर पर पहुँचनाइ नहि, प्रश्नमे दुनूक बराबर उपस्थिति मानैत अछि।

कथा ८९ · माएक मित्र

माए सरोजक निधनक दू मास बाद अपर्णा हुनकर पुरान मित्र लीला देवी सँ भेंट करय जाइत छथि। लीला बतबैत छथि जे दुनू एक समय एक्के कोठरीमे रहि स्त्रीसभक पढ़ाइ आ काजमे लागल रहथि, मानदेय लऽ मतभेदो भेल छल। सरोजक साहस, भूल, डर आ छोट घरेलू आदतसभक कथा सुनि अपर्णा बुझैत छथि जे बेटी होयबाक कारण ओ माएक पूरा जीवन नहि जानैत छलीह। लीला कोनो गुप्त निर्णायक सत्यक स्वामिनी नहि, एक समयक सहयात्री छलीह। अपर्णा कैँ माए पहिल बेर केवल परिचित मातृरूप नहि, अपन संघर्ष आ कमजोरीवाली मनुष्य बुझाइत छथि। कथा अपन जन्मसँ पहिनेक माएक जीवनकैँ स्वतन्त्र अस्तित्व दैत अछि।

कथा ९० • पत्र जे भेजल नहि गेल

सेवानिवृत्तिसँ पहिने शिक्षिका सुधा अपन दराजमे तीस बरख पुरान एकटा एहन पत्र पबैत छथि जे कहियो पठाओल नहि गेल। तेइस बरखक उमेरमे ओ दूरक विद्यालयमे नियुक्तिक विरोधमे पत्र लिखने छलीह। बादमे शिक्षिका नीलमक स्थानान्तरण-आवेदन देखैत ओहि अनुभवक अर्थ बदलि गेल; व्यक्तिगत कठिनाई बुझब आवश्यक छल, मुदा विद्यालयक व्यवस्था सेहो सम्हारब छल। सेवानिवृत्तिक अवसर पर पुरान विद्यालयक परिस्थिति देखला सँ सुधा बुझैत छथि जे एक्के पत्र अलग समयमे अलग प्रश्न उठबैत अछि। ओ पत्र एखनहुँ नहि पठबैत छथि, मुदा पछतावा सेहो नहि करैत छथि। कथा कागजक स्थिर शब्द आ मनुष्यक बदलैत नैतिक दृष्टिक अन्तर खोलैत अछि।

कथा ९१ • दू शहर

दिल्लीमे अट्ठाइस बरख सँ रहैत अर्चना कैं एक सरकारी प्रपत्रमे ‘स्थायी पता’ लिखैत काल असमञ्जस होइत अछि। जन्मगाम दरभंगाक पुरान घर बदलि चुकल अछि, मुदा दिल्लीक घर, पड़ोस आ दिनचर्या हुनकर देहक अभ्यास बनि गेल अछि। पिता-माएक स्मरण, दू शहरक यात्रासभ आ बेटी नूपुरक प्रश्न हुनका देखबैत अछि जे अपन ठामक परिचय एकमात्र पतेसँ निर्धारित नहि होइत अछि। ओ कागज पर आवश्यक जानकारी भरैत छथि, मुदा जीवनमे दुनू शहरक सम्बन्ध जीवित रखैत छथि। कथा घरकैं केवल स्थायी अथवा वर्तमान ठेकानक बीच चुनबाक वस्तु नहि, अनेक अनुभवसँ बनल सम्बन्ध मानैत अछि।

कथा ९२ • बीस बरख बाद

विद्यालय छोड़लाक बीस बरख बाद मृदुला, श्वेता, नीलिमा, अरुण आ मीनाक्षी पुनर्मिलनमे भेटैत छथि। पुरान परीक्षा-कक्ष देखिते मीनाक्षी पर नकलक आरोप लगबाक घटना सभक स्मृतिमे फेर उठैत अछि। घटना समय कियो की देखलक, कियो चुप रहल, कियो बादमे सहायता कएलक—एहि सभ पर विवरण एक-दोसरसँ फरक अछि। स्वयं मीनाक्षीक स्मृतिमे आरोपसँ बेसी माएक कीचड़ लागल चप्पल बचल अछि। कियो पूर्ण निर्दोष अथवा

दोषी घोषित नहि होइत; पुरान मौन आ बादक व्यवहार दुनू महत्त्व पबैत अछि। अन्तमे सामूहिक चित्र खिंचैत कथा देखबैत अछि जे सत्य रहितो ककरो एक्के स्मृतिमे पूरा नहि समाइत अछि।

कथा ९३ · मौसीक घर

बत्तीस बरख बाद सुधा मालती मौसीक घर घुरैत छथि आ देखैत छथि जे पुरान पछिला दुआर आब मुख्य फाटक बनि गेल अछि। बाल्यकालमे हुनका प्रिय बखार पढ़बाक कोठरी बनल छल; युवावस्थामे एही घरसँ ओ अपन प्रशिक्षण लेल जाएबाक निर्णयक घोषणा कएने छलीह। ओ मौसी केँ अपन विद्रोहक स्पष्ट समर्थक मानैत रहलीह, मुदा मंजरी संग बातचीतसँ घटना अधिक जटिल देखाइत अछि। घरक कोठरी आ दुआर जेना उपयोग अनुसार बदलल, तहिना सुधाक अपन निर्णयक अर्थ सेहो बदलल अछि। अन्तमे ओ नब मुख्य फाटकसँ बाहर निकलैत स्वीकार करैत छथि जे परिवर्तनसँ पुरान अनुभव झूठ नहि होइत, ओकर सीमा मात्र स्पष्ट होइत अछि।

कथा ९४ · लाल पेटी

मालती पुरान कोठरी खाली करैत छथि तँ भारी लाल पेटी फेर सामने अबैत अछि। जानकी देवी एहि पेटीमे अपन सिलाइ-काजक नाप, सूत आ कमाइक हिसाब राखैत रहथि; बादमे मालतीक पुस्तक, प्रमाणपत्र आ परिवारक आन वस्तु ओहिमे समाएल। आब तेसर पीढ़ीक रश्मि विद्युत-उपकरण मरम्मतक अपन नव काज लेल ओ पेटी उपयोगमे आनय चाहैत छथि। पेटीक जंग आ ताला सुधारल जाइत अछि, मुदा ओकर पुरान रंग अनावश्यक रूपसँ नहि मेटाओल जाइत। रश्मि पेटी केँ केवल पारिवारिक धरोहर कहबाक बदला तीन पीढ़ीक अलग-अलग काजक साथी मानैत छथि। कथा वस्तुक महत्त्व ओकर निरन्तर उपयोग आ स्त्रीसभक श्रमसँ बनैत देखबैत अछि।

कथा ९५ · संगीत शिक्षक

महिला कौशल केन्द्रमे विद्युत-मरम्मतक व्यावहारिक परीक्षाक समय छोट कदक शबनम खातून ऊँच पट्टी धरि सहज नहि पहुँचि पबैत छथि। केन्द्र प्रमुख नलिनी झा केँ तीस बरख

पहिनेक संगीत-शिक्षिका शारदा दी याद अबैत छथि, जे स्वरक शुद्धता बनाए रखने हारमोनियमक पट्टी नलिनीक गला अनुसार बदलने छलीह। नलिनी शबनम लेल काठक पाटी रखबा दैत छथि आ निरीक्षक कें स्पष्ट करैत छथि जे कार्यक कसौटी समान रहत, साधन आवश्यकतानुसार बदलि सकैत अछि। बादमे ओ समस्त प्रशिक्षण-कक्षमे पहुँच आ सुरक्षा जाँचबाक व्यवस्था प्रस्तावित करैत छथि। कथा समान अवसर आ एकसमान भौतिक व्यवस्थाक बीचक आवश्यक भेद उजागर करैत अछि।

कथा ९६ · अलग बाट

विद्यालयक समय मालती आ सुषमाक अंक लगभग बराबर छल, मुदा आगाँ पढ़ाइ आ पेशाक बाट अलग भऽ गेल। वर्षसभ बाद हुनका जीवनमे काज, विवाह, परिवार, यात्रा आ देखभालक जिम्मेदारी तरह-तरहक रूपमे जुड़ैत अछि। पुरान भेटक समय एक-दोसरक चुनावक बारेमे कहल कठोर बात सेहो सामने अबैत अछि। नव पीढ़ीक काजल आ आन युवतीसभक प्रश्न पर दुनू स्वीकार करैत छथि जे कोनो एक सही जीवन-पथक सूची नहि देल जा सकैत अछि। कतेको निर्णय समयसँ बदलैत, कखनो राहत तँ कखनो कठिनाई बनैत अछि। अन्तमे दुनू अलग दिशा चलैत छथि, मुदा अलग बाट मित्रताक विरुद्ध नहि ठहरैत अछि।

कथा ९७ · खोआइल वर्ष

अनिमा झा अपन नातिन अदिति संग पारिवारिक समय-रेखा बनबैत काल १९९८ सँ २००३ धरि पाँच बरखक घटना ठीक-ठीक लिखि नहि पबैत छथि। ओहि समयमे नौकरी, किरायाक घर, बाल-बच्चाक देखभाल आ दिनचर्याक अथाह श्रम रहल, मुदा कोनो एक चमकदार घटना नहि बचल। बेटी नीलिमा, बेटा सौरभ आ पति देवेन्द्रक अलग-अलग स्मृतिसँ ओ बरखसभक किछु रूप सामने अबैत अछि। अनिमा खाली ठाम गढ़ल घटनासँ नहि भरैत छथि; समय-रेखामे बसक आ दूधक हिसाबक दू स्मृति रखि शेष भाग अधूर छोड़ैत छथि। कथा देखबैत अछि जे कम याद होयब समय निष्फल बितबाक प्रमाण नहि; किछु बरख दोसरक जीवन आ अपन व्यवहारमे बचैत अछि।

कथा ९८ · अन्तिम यात्रा

चौहत्तरि बरखक शशिप्रभा दरभंगासँ दिल्ली बेटा लग जाड़ बिताबय रेलयात्रा करैत छथि। पड़ोसिक 'फेर घुरब ने' प्रश्न हुनका विवाहक विदाइ, बेटी रचनाकेँ छात्रावास छोड़बाक दिन आ माए कौशल्या देवीक आँखिक उपचार लेल आरम्भ भेल साधारण यात्राक स्मृति दैत अछि। माएक ओ यात्रा दू मासक लेल छल, मुदा उपचार आ बदलल परिस्थितिक कारण ओ पुरान घरमे फेर पहिनेक रूपमे नहि घुरि सकलीह। शशिप्रभा बुझैत छथि जे जकरा सभ 'अन्तिम विदाइ' कहैत अछि, से प्रायः घटना समय पहिचानमे नहि अबैत। अपन वर्तमान यात्राकेँ ओ अन्तिम घोषित नहि करैत छथि। कथा विदाइक अर्थ समय बीतलाक बाद खुलबाक सूक्ष्म अनुभव प्रस्तुत करैत अछि।

खण्ड १०

नव पाँखि

२० कथाक सारांश

कथा १ · काल-स्थान विस्थापन

धौम्य अपन पाँच विद्यार्थी—अपाला, श्वेतकेतु, रैक्व, सत्यकाम आ घोषा—केँ एकायामी आ द्विआयामी संसारक उदाहरणसँ स्थानक भिन्न-भिन्न आयाम बुझबैत छथि। समयकेँ चारिम आयाम मानि ओ सभ एहन बाट खोजए लगैत छथि, जाहिसँ काल-स्थानक वक्रता उपयोग कऽ दूरस्थ बिन्दुकेँ जोड़ल जा सकए। श्वेतकेतु आ रैक्व स्थान-कालक खोह, अपाला ब्रह्माण्डीय डोरी आ सत्यकाम अतिरिक्त आयामक सम्भावनापर काज करैत छथि। घोषा प्रयोगक नैतिक मर्यादा निश्चित करैत छथि: भूतकालमे पहुँचियो कोनो घटना बदलबाक चेष्टा नहि कएल जाए।

दीर्घ परिश्रमक बाद ‘पुष्पक’ नामक विमान बनैत अछि। पहिल यात्राक जोखिम धौम्य स्वयं लैत छथि। अन्तरिक्षमे स्थान-कालक असाधारण मोड़ आ एक विशाल कारी गह्वर लग पहुँचि हुनका दूरक स्थान निकट बुझाए लगैत अछि; मुदा विमानक भीतरक समय आ बाहरी समयक गतिमे भयङ्कर अन्तर देखलापर ओ पृथ्वी घुरबाक निर्णय करैत छथि।

पृथ्वीपर घुरलाक बाद धौम्यकेँ अपन प्रयोगशाला वा विद्यार्थी नहि भेटैत छथि। सामने सन् ३१०० क संसार अछि, जतए काल-स्थान यात्रा सामान्य व्यवस्था बनि चुकल अछि। हुनका लेल किछु घड़ी बीतल, मुदा पृथ्वीपर प्रायः हजार बरख। अपन खोजक यश पूछबाक बदला ओ पहिने पुस्तकालय देखए चाहैत छथि—बीतल समयमे मनुष्य की सीखलक, से जानबाक लेल। कथा ज्ञानक जिज्ञासा, समयक सापेक्षता आ वैज्ञानिक उत्तरदायित्वकेँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि।

कथा २ · बैसाखीपर जिनगी

अभियान्त्रिकी प्रवेश-परीक्षाक केन्द्रपर पुरान सहपाठी रतीश आ फूल अठारह बरख बाद भेटैत छथि। दुनू अपन-अपन बेटाकेँ परीक्षा दिअए अनने छथि। प्रतीक्षाक समय विद्यालयक स्मृति सँ आरम्भ भेल गप फूलक परिवारक कठिन जीवनानुभव धरि पहुँचैत अछि। फूल अपन छोट भाए आ हुनकर जीवनसंगिनीक शारीरिक भिन्नता, समाजक दयाभाव आ अपमानजनक दृष्टिक चर्चा करैत छथि। दुनू विवाहमे समानता आ परस्पर सम्मान चाहैत छलाह, रक्षक आ आश्रितक सम्बन्ध नहि।

फूलक छोट भाए आ भाभी सन्तानक जन्म आ असमय मृत्यु सहित अनेक आघात सहैत जीवन आगाँ बढ़बैत छथि। एहि अनुभवसभक बीच फूल कहैत छथि जे देहक कोनो सीमा मनुष्यक सम्पूर्ण परिचय नहि बनि सकैत। रतीश परिवारक कथा सुनैत रहैत छथि, मुदा फूल अपन बेटाक शारीरिक कठिनाइक चर्चा नहि करैत छथि।

परीक्षा समाप्त भेलापर फूलक बेटा बैसाखीक सहारे तेजीसँ बाहर अबैत अछि। दुर्घटनामे पएरक स्नायु क्षतिग्रस्त भेलो ओ विज्ञान, गणित आ अभियन्ता बनबाक आकांक्षासँ भरल अछि। रतीशक प्रश्नपर फूल स्पष्ट करैत छथि जे बेटाक रुचि, प्रश्न पूछबाक स्वभाव आ भविष्यक सपना ओकर परिचयक मुख्य अंश अछि; बैसाखी मात्र एक अंश। कथा विकलाङ्गताक प्रति दयाक बदला सम्मान, अवसर आ व्यक्तिक स्वाधीन अस्तित्वपर बल दैत अछि।

कथा ३ · हम नै जाएब विदेश

पर्यावरण अभियान्त्रिकी पढ़बाक लेल सौरभकेँ विदेशक छात्रवृत्ति भेटैत अछि। विज्ञानप्रेमी सौरभ एहि अवसरसँ उत्साहित अछि, मुदा प्रस्थान निकट अएलापर अपन गाम, भाषा, परिवार आ बाढ़िसँ जूझैत लोकक स्मृति ओकरा भीतर प्रश्न उठबैत अछि। लाल काकाक संग ओ इतिहासविद् द्विजेन्द्र काकासँ भेटैत अछि। द्विजेन्द्र अपन विद्वत्ता आ यात्राक संग मातृभूमि तथा माएक प्रतीक्षा सँ दूर रहबाक पश्चात्ताप सुनबैत छथि, मुदा विदेश जाएबकेँ अनुचित नहि कहैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे अध्ययनक विस्तार सम्बन्धक धागा नहि तोड़ए।

विदेश जाएसँ ठीक पहिने तेज वर्षा होइत अछि। विद्यालयक जलमापक यन्त्रसँ सौरभ बुझैत अछि जे धारक पानि असामान्य रूपसँ बढ़ि रहल अछि। शिक्षकक सहायता सँ पंचायतकेँ समयपर सूचना भेटैत अछि आ नीचला टोलक लोक अपन परिवार आ मवेशी सुरक्षित ठाम पहुँचा दैत अछि। सौरभकेँ प्रत्यक्ष अनुभव होइत अछि जे ओकर ज्ञान एखनहिसँ अपन गामक काज आबि सकैत अछि।

ओ अपन निर्णयसँ एहि बरख विदेश नहि जाएबाक ठानैत अछि। स्थानीय विश्वविद्यालयमे पढ़ि तीन गाम धरि पसरि रहल जलमापन आ चेतावनीक योजनाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। भविष्य मे आवश्यक भेलापर विदेशमे अध्ययन करबाक बाट ओ बन्द नहि करैत। कथाक मूल बात विदेश-विरोध नहि; भीड़क अपेक्षाक बदला अपन जिज्ञासा, कर्तव्य आ परिस्थितिक अनुरूप जीवनक दिशा स्वयं चुनबाक साहस अछि।

कथा ४ · प्रवास

बाबूजीक पदस्थापनक कारण नवम वर्गक नचिकेत मधुबनीसँ हल्दिया आबैत अछि। नोनगर हवा, औद्योगिक नगर, बंगला भाषा आ अपरिचित विद्यालय ओकरा असगर बना दैत अछि। अपन सहपाठीक हँसीयो ओ कखनो अपन विरुद्ध बुझैत अछि। विज्ञान-प्रयोगशालामे तापससँ ओकर मित्रता होइत अछि। तापस यन्त्र बनबामे निपुण अछि, मुदा मंचपर बजबामे झिझकबाक कारण दलमे ओकर योगदानकेँ उचित मान्यता नहि भेटैत अछि।

दुनू समुद्री पवनसँ ऊर्जा जमा करए आ जलस्तर बढ़लापर चेतावनी देबएवला नमूना बनबैत अछि। वरिष्ठ छात्र देवदत्त पहिने अपन अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा समुद्री झंझावातक समय एहि विचारकेँ वास्तविक उपयोगक अवसर भेटैत अछि। शिक्षकक सलाह अनुसार विद्यार्थीसभ स्वयं बाहर नहि निकलि, स्थानीय स्वयंसेवकक लेल बाँस, बोतल, घंटी आ बैटरीसँ बनबाक सरल चेतावनी-व्यवस्था भेजैत अछि। देवदत्तो सहयोग करैत अछि। एक बस्तीमे जलस्तर बढ़लाक सूचना लोककेँ सुरक्षित ठाम जाएबामे सहायक होइत अछि।

विज्ञान-मेलामे संयुक्त दलकेँ प्रथम पुरस्कार नहि, मुदा स्थानीय उपयोगिताक विशेष प्रशंसा भेटैत अछि। तापस अपन काज स्वयं प्रस्तुत करैत अछि आ नचिकेत धीरे-धीरे बंगला, मित्रता आ नव परिवेशमे अपन स्थान बना लैत अछि। ओकरा बुझाइत अछि जे

प्रवास केवल घर छोड़ब नहि; समानता, सहयोग आ भाषा-संवादसँ नव ठामकेँ सेहो घर बनायब अछि।

कथा ५ · हराहरी

जिला पुस्तकालयमे छात्रवृत्तिक कागजक सहायता लेबए आएल अनयक भेट चन्दन चौबेसँ होइत अछि। अनय ओकरा तीन बरख पहिने दरभंगामे भेल प्रतिभा-परीक्षासँ चिन्हि लैत अछि। तखन अनय चुप, संकोची आ असगर छल; चन्दन हँसमुख, गप्पी आ सहज मित्र बनएवला। चन्दन ओहि दिन अनयकेँ समोसा खुआओने छल। आब दुनूक स्वभाव जेना उलटि गेल अछि: अनय वाद-विवादमे सक्रिय अछि आ चन्दन कम बजैत अछि।

चन्दन बतबैत अछि जे बाबूजीक काज छुटलाक बाद घर बदलल, विद्यालय बदलल आ दोकानमे सहायता करैत पढ़ाइ जारी राखए पड़ल। बारम्बार नव परिचय बनायब आ घरक भार सम्हारब ओकर गपक सहजता घटा देलक। अनय अपना विषयमे कहैत अछि जे शिक्षकक प्रोत्साहनसँ मंचक भय घटल आ ओकर आवाज खुलल। दुनू बुझैत अछि जे ‘शान्त’, ‘गप्पी’ अथवा ‘लजकोर’ सन शब्द मनुष्यक स्थायी परिचय नहि होइत।

ओ सभ पुस्तकालयमे किशोरसभ लेल ‘खुलल मेज’ आरम्भ करैत अछि, जतए बजबाक आ सुनबाक समान अवसर अछि। चन्दन फेर अपन विचार व्यक्त करबाक साहस करैत अछि। अगिला प्रतिभा-परीक्षाक दिन दुनू सहायता-मेज लगबैत अछि आ दू नव विद्यार्थीक मित्रता आरम्भ होइत देखैत अछि। ‘हराहरी’ एक-दोसराक स्वभावक साधारण अदला-बदली नहि, परिस्थितिसँ बदलैत मनुष्यकेँ पुरान मित्रताक सहारे फेर चिन्हबाक कथा बनैत अछि।

कथा ६ · पोखरिक तरे भोरुक तारा

कातिकक एक भोर कुसुम, मिहिर, अंशु आ ऋचा तारापोखरिक पानि आ जलजीवक अवलोकन करए पहुँचैत छथि। कुसुमकेँ पानिक भीतर एकटा चमकैत उज्जर बिन्दु देखाइत अछि। ओकर आजी कहैत छलीह जे भोरुक तारा एहि पोखरिमे पानि पीबए अबैत अछि।

चारू मित्र पहिने विस्मित होइत अछि, मुदा कंकड़सँ उठल तरङ्गमे चमक टुटब आ बाँस उतारलापर कोनो वस्तु नहि भेटब हुनका सभकेँ नव प्रश्न दिस लऽ जाइत अछि।

विज्ञान-शिक्षिका मालती दी अनुमान आ देखल तथ्यक अन्तर बुझा कऽ कएक भोर धरि समय, दिशा आ दर्शकक स्थान लिखबाक सलाह दैत छथि। अलग-अलग ठामसँ चमक अलग स्थानपर बुझाइत अछि। प्रयोगशालामे पानिमे दीपक प्रतिबिम्ब देखि ओ सभ प्रकाशक व्यवहार बुझैत अछि। अन्तमे गाछक फाँकसँ ऊपर चमकैत शुक्र ग्रह देखाइत अछि। ओकर प्रतिबिम्ब पानिक गहिराइमे तारा सन बुझाइत छल; वृक्षक डारिसँ मूल ग्रह सीधा नहि देखाइत छल।

कुसुम आजीक लोककथा त्यागैत नहि, ओकर स्मृतिक मूल्य बुझैत अछि। खेतिहर आ मल्लाहक भोरक समयबोधसँ पोखरिक नाम जुड़ल होएबाक सम्भावना सामने अबैत अछि। मित्रसभ शुक्रक दिशा, पानिक अवस्था आ लोकस्मृति सहित भोर-दैनिकी बनबैत अछि। कथा देखब, मानब आ जाँचबक अन्तर सिखबैत लोकपरम्परा आ विज्ञानक संवाद रचैत अछि।

कथा ७ · गामक पुरान पुस्तकालय

गामक बीच बन्द पड़ल पुरान भवनकेँ मयंक, नेहा आ इन्द्रनील पुस्तकालयक रूपमे फेर चिन्हैत अछि। नेहाक आजी बतबैत छथि जे पहिने ओतए विद्यार्थी, शिक्षक आ गामक लोक एक संग पढ़ैत छल। पुस्तकालयक रखवाला रघुनाथ काकाक निधन, भवनक जीर्ण दशा आ पंचायतमे कुंजी बिसरि जाएबाक कारण भवन बन्द भऽ गेल छल। तीनू मित्र प्रधानाध्यापक सुधाकर झा आ पंचायत सचिवक अनुमति लऽ पुरान अभिलेखमे कुंजी तकैत अछि।

इन्द्रनीलक लोहार बाबाक बताओल बनावटसँ मिलैत कुंजी भेटैत अछि आ ताला खुलैत अछि। भीतर पुरान पंजी, विज्ञानक पोथी, मानचित्र, हस्तलिखित सामग्री आ स्मृतिचित्र भेटैत अछि। पंजीमे किशोर सुधाकर झाक नाम देखायलापर बुझाइत अछि जे पुस्तकालय हुनकर ज्ञान-रुचिक विकासमे सेहो महत्त्वपूर्ण छल। नेहाक आजी पुरान सदस्यक चित्रमे अपन रूप चिन्हैत छथि। तीनू मित्र आब मात्र सफाइ नहि, गामक पाठकीय स्मृतिक संरक्षण करैत अछि।

पंचायत छत सुधरबैत अछि, विद्यालयक छात्र आ गामक लोक पोथी दान दैत छथि, आ घुमाउर स्वयंसेवक-व्यवस्था बनैत अछि। पुनः आरम्भक दिन नेहाक आजी सभसँ छोट पाठककेँ पहिल पोथी दैत छथि। पुरान ताला स्मृति बनि रहैत अछि, मुदा पुस्तकालय फेर खुलि जाइत अछि। कथा बतबैत अछि जे विस्मरणक ताला स्मृति, सामूहिक परिश्रम आ निरन्तर उपयोगसँ खुलैत अछि।

कथा ८ · खस्सी घंटीक रहस्य

रमापति काकाक उज्जर खस्सी ‘चाँद’क पित्तरिक घंटी आधा रातिक बाद पुरान आमक बाग दिससँ सुनाइत अछि, जखन कि भोरमे खस्सी अपन गोहालमे बान्हल भेटैत अछि। गाममे भूत आ अनचिन्हार शक्तिक अटकल उठैत अछि। प्राची, नील, विहान आ मधुप अनुमानक बदला गोहालक फाटक, खुरक निशान, सींगक घिसल भाग आ घंटीक भिन्न स्वर जाँचैत अछि। नीलक बाबा आ रमापति काकाक देखरेखमे सुरक्षित निगरानीक योजना बनैत अछि।

निशानसँ सिद्ध होइत अछि जे चाँद सींगसँ फाटकक कुंडी उठाए बाहर निकलैत अछि आ घुरि सेहो अबैत अछि। ओकर पाछाँ गेलापर सभकेँ दुलारी काकीक पुरान कोठरी भेटैत अछि। काकी बतबैत छथि जे चाँद छोट रहैत अनाथ भऽ गेल छल आ ओ अपने हाथसँ ओकरा दूध पिआ कऽ पोसने छलीह। अस्वस्थ भेलापर ओकर पालन रमापति काका लग चलि गेल, मुदा चाँद पुरान स्नेह आ बाट नहि बिसरल।

रातिक जोखिम रोकबाक लेल फाटकक कुंडी सुधारल जाइत अछि आ चाँदकेँ दिनमे दुलारी काकीक लग लऽ जाएबाक व्यवस्था बनैत अछि। विद्यालयमे प्राची अनुमान, निशान आ प्रत्यक्ष अवलोकनक क्रम लिखैत अछि। कथाक रहस्य अन्धविश्वाससँ नहि, प्रमाणसँ खुलैत अछि; ओकर अन्तिम अर्थ पशुक स्मृति आ मनुष्यक स्नेहक सम्बन्धमे भेटैत अछि।

कथा ९ · बाढ़िमे बचल पोथी

सावनक लगातार वर्षासँ नदी उफनैत अछि आ गामक पुरान पोथीघरमे पानि घुसबाक भय होइत अछि। ईशान, अर्पिता, नीरज आ सोनालीकेँ पोथीबाबा विद्याभूषण झासँ बुझाइत अछि

जे नीचला कोठलीमे गामक पुरान पंजी, हस्तलिखित पोथी आ बाढ़िक विवरण राखल अछि। किशोरसभ अकेले जोखिम नहि लैत; पंचायतक नाव, ईशानक पिता आ पोथीबाबाक संग अनुमति आ सुरक्षा-व्यवस्थाक भीतर उद्धारमे भाग लैत अछि।

भारी पेटारकेँ पटरा आ रस्सीक सहायतासँ नावधरि सरकाओल जाइत अछि। लाल कपड़ामे बान्हल भीजल पोथी सेहो बचाओल जाइत अछि। ई पोथी पोथीबाबाक परदादाक बाढ़ि-विवरण अछि, जाहिमे पुरान जलस्तर आ सुरक्षित ठामक संकेत भेटैत अछि। विद्यालयमे पोथी सुखबैत समय एक पुरान पीपर लग पहुँचबाक जलचिह्नक जानकारी पंचायतकेँ देल जाइत अछि। एहि तुलनाक आधारपर नीचला ठामक परिवार समयसँ हटाओल जाइत अछि।

बाढ़ि उतरला पर पोथीघरमे ऊँच ताक बनैत अछि, महत्त्वपूर्ण पन्नाक प्रतिलिपि राखल जाइत अछि आ किशोरसभ ‘हमर गामक जल-स्मृति’ प्रदर्शनी तैयार करैत अछि। भीजल पोथीक दाग स्मृतिक चिह्न बनि रहैत अछि। कथा दिखबैत अछि जे सुरक्षित राखल पुरान लेखा केवल अतीतक चिन्ह नहि, आगूक सङ्कटक समय उपयोगी ज्ञानो भऽ सकैत अछि।

कथा १० · नेनाक विज्ञान-मेला

विद्यालयक वार्षिक विज्ञान-मेलामे प्रत्येक दलकेँ गामक वास्तविक समस्या चुनबाक निर्देश भेटैत अछि। माधव, मीनाक्षी, अरिन्दम आ सलोनी साधारण सामग्रीसँ दू प्रयोग बनबैत अछि—कंकड़, बालू, कोइला आ कपड़ासँ मटमैला पानि छानबाक व्यवस्था तथा पुरान साइकिलक चक्का आ डायनमोसँ छोट दीप जरएब। विज्ञान-शिक्षक सत्यनारायण गुरुजी विद्युत्-सुरक्षा आ नाप-जोखपर विशेष ध्यान दैत छथि।

पहिल प्रयासमे ढीला तारक कारण दीप नहि जरैत, फेर पट्टा खसैत अछि। पानि सेहो अपेक्षित रूपसँ स्वच्छ नहि होइत। चारू मित्र प्रत्येक त्रुटि लिखि तार कसैत, पहियाक स्थिति सुधारैत आ छाननक परत बदलि परीक्षण दोहरबैत अछि। ओ सभ विशेष रूपसँ स्पष्ट करैत अछि जे देखबामे फरिछ पानि रोगाणुरहित अथवा पीबाक योग्य मानल नहि जा

सकैत। मेलामे छोट नेनासँ लऽ कऽ निर्णायक सभ धरि प्रयोगक सीमा आ उपयोगिता समझाओल जाइत अछि।

दलकेँ प्रथम स्थान नहि, 'सर्वश्रेष्ठ जन-बुझान प्रयोग'क विशेष सम्मान भेटैत अछि। पुरस्कारसँ बेसी आनन्द हुनका सभकेँ तखन होइत अछि, जखन छोट विद्यार्थी स्वयं सुरक्षित ढंगसँ प्रयोग करबाक इच्छा देखबैत अछि। एक दिनक प्रदर्शन आगाँ 'हाथसँ विज्ञान' नामक साप्ताहिक बैसार बनैत अछि। कथा असफलता नहि नुकाबि सत्यनिष्ठ अवलोकन आ सामान्य लोकधरि विज्ञान पहुँचएबाक महत्त्व प्रतिपादित करैत अछि।

कथा ११ · आमक गाछक निर्णय

गामक पुरान पोखरिक कात ठाढ़ विशाल 'बड़ आम' गाछसँ लोकक अनेक पीढ़ीक स्मृति, हाटक छाहरि आ पाँखिक बसेरा जुड़ल अछि। मुख्य पथ चौड़ा करबाक प्रस्तावमे गाछ कटबाक सम्भावना उठैत अछि। सुगन्धा, अनूप, शशांक आ ईशानी केवल भावनात्मक विरोध नहि करैत; प्रधानाध्यापकक सलाह अनुसार गाछक घेरा, छाहरिक तापमान, वर्षाक पानिक बहाव, पक्षीजीवन आ गामक लोकक उपयोगक लेखा जुटबैत अछि।

चारू किशोर पुरान मानचित्रमे पोखरिक पाछाँसँ निकलबाक वैकल्पिक पथ देखैत अछि। पथ कनेक नमगर होएत आ जलनिकास सुधारए पड़त, मुदा गाछ बचि सकैत अछि। गामसभामे ओ सभ स्पष्ट करैत अछि जे पथक आवश्यकता सेहो वास्तविक अछि। एकर लागत आ गाछक स्वास्थ्यक जे प्रश्न हुनका सभक सामर्थ्यसँ बाहर अछि, तकरा विशेषज्ञसँ जाँच करएबाक आग्रह करैत अछि। अभियन्ता आ वृक्ष-सम्बन्धी कर्मचारी जाँचि मोड़वला सुरक्षित मार्ग स्वीकार करैत छथि।

नव पथ बनैत अछि, गाछ बचि जाइत अछि आ ओकर सूखल डारि सावधानीसँ हटाओल जाइत अछि। हाट फेर छाहरिमे सजैत अछि; आमक बीजसँ चारि नव बिरबा रोपल जाइत अछि। एहि निर्णयसँ कथा सिखबैत अछि जे विकास आ पर्यावरणकेँ अनिवार्य शत्रु नहि मानि तथ्य, विकल्प आ दीर्घकालीन उत्तरदायित्वसँ एक संग विचारल जा सकैत अछि।

कथा १२ · मोबाइल बिनु एक दिन

अनिरुद्ध गुरुजी नवम वर्गकेँ अपन आदत जाँचबाक लेल स्वेच्छासँ एक दिन मोबाइल बिनु रहबाक प्रस्ताव दैत छथि। ई मोबाइल-विरोध नहि, ध्यान आ समयपर अपन अधिकार बुझबाक प्रयोग अछि। ईशान, ललिता, मयंक, सुजाता आ नील परिवारकेँ पहिनहि खबरि दऽ आवश्यक स्थितिक लेल वैकल्पिक सम्पर्कक व्यवस्था राखैत छथि। रविदिन मोबाइल दूर राखिते ईशानकेँ बेर-बेर जेब आ तकियाक बगलमे हाथ जाएबाक अपन आदत देखाइत अछि।

ईशान पंछीक स्वर सुनैत, पढ़ाइमे ध्यान दैत आ साइकिलक उतरि गेल जंजीर स्वयं चढ़बैत अछि। ललिता माएक मुँहसँ नानिसँ आएल पुरान विवाहगीत सुनि ओकर शब्द लिखैत अछि। मयंक आ नील मैदानमे मित्रक प्रतीक्षा करैत स्वयं खेलक सामग्री बना लैत अछि। सभ साँझक मेघक रंग चित्र नहि खेंचि किछु काल अपन आँखिसँ देखैत अछि। मुदा मित्रसभकेँ समन्वय आ आवश्यक सूचनाक लेल मोबाइलक वास्तविक उपयोगो बुझाइत अछि।

अगिला दिन विद्यार्थीसभ अनुभव तुलना कऽ भोजन, पढ़ाइ, निद्रा आ पारिवारिक गपक समय मोबाइलक उपयोगक स्वैच्छिक नियम बनबैत अछि। ईशान मोबाइल फेर खोलैत अछि, मुदा सभ सूचना तुरन्त देखबाक हड़बड़ी नहि रहैत। कथाक आग्रह यन्त्र त्यागब नहि, अपितु ओकर उपयोगक उद्देश्य, सीमा आ समय स्वयं निश्चित करब अछि।

कथा १३ · चिरैयाँ गिननिहार बालक

माधव भोरमे पोखरि आ गाछ-बगीचामे चिरैयाँक नाम, संख्या, ध्वनि आ आवागमन लिखैत अछि। ई रुचि ओकरा आजीसँ भेटल अछि, जे वृद्धावस्थामे स्वयं कम चलि सकैत छथि। विद्यालयक प्रकृति-अवलोकनक काजमे गुरुजी एकहि समय आ एकहि ठाम लगातार गिनती करबाक सलाह दैत छथि। माधव अपन मित्र नील, तान्या आ ललितकेँ संग लैत अछि। पहिने मजाक करएवला नील सेहो भोरक चिरैयाँ चिन्हबाक जिज्ञासासँ भरि जाइत अछि।

पोखरिक कात आ घनगर बगीचाक अलग-अलग अवलोकनसँ बुझाइत अछि जे प्रजाति आ संख्या ठाम, मौसम, खेतक काज आ झाड़ीक अनुसार बदलैत अछि। ललित मानचित्र बनबैत अछि, तान्या ध्वनि चिन्हैत अछि आ सभ जे अनिश्चित अछि से अनुमानक रूपमे अलग लिखैत अछि। बगीचाक खोखर गाछ आ झाड़ी लग अधिक चिरैयाँ देखलापर मित्रसभ विवाह-मण्डप बनौनिहारसँ विनम्रतासँ गप करैत अछि। मण्डपक ठाम कनेक बदलल जाइत अछि आ घोंसला-बला भाग बचि जाइत अछि।

विवाहक बाद चिरैयाँक संख्या घटैत अछि, फेर किछु दिनमे बढ़ैत अछि; माधव एक दिनक आँकड़ासँ निष्कर्ष नहि निकालैत। विद्यालयमे दल अपन सीमासहित निष्कर्ष रखैत अछि। अन्तमे माधव अनचिन्हार चिरैयाँक नाम तुरन्त गढ़बाक बदला ओकर रंग, दिशा आ स्वर लिखैत अछि। कथा धैर्य, बारम्बार अवलोकन आ प्रकृतिक प्रति संवेदनशील व्यवहारक महत्त्व प्रत्यक्ष करैत अछि।

कथा १४ · माटिक रोबोट

खेतक मेड़पर दादाकेँ हाथसँ सरिसबक बीज बोइत देख नचिकेताकेँ एहन यन्त्र बनएबाक विचार अबैत अछि, जे नरम माटिमे चलि निश्चित दूरीपर बीज छोड़ि सकए। आर्या, कनक, उदयन आ शैलजाक संग ओ विद्यालयक विज्ञान-शिक्षिका अपर्णा दीदीसँ सहयोग लैत अछि। पुरान मोटर, पहिया आ दूरी-संवेदकक संग स्थानीय कुम्हार काकाक सलाहसँ बाँसक ढाँचा आ पकाओल माटिक हटाओल जा सकएवला खोल तैयार होइत अछि।

पहिल नमूना एक कात झुकि पड़ैत अछि; पहिया, भार आ माटिक मोटाइ सुधारल जाइत अछि। दोसर प्रयासमे बीज एके ठाम खसैत अछि, तखन बदलएवला छेद-पट्टी बनैत अछि। खेतक गह्वामे पानि देखबाक सीमा बुझलापर बाँस आ पुरान तारसँ स्पर्श-दण्ड जोड़ल जाइत अछि। समूह अपन सभ विफलता, सुधार आ सीमा स्पष्ट रूपसँ लिखैत अछि। रोबोट एखन सूखल मेड़ आ किछु बीज लेल परीक्षणधीन अछि; मनुष्यक निरीक्षण आवश्यक रहैत अछि।

विज्ञान-प्रदर्शनीमे विशेष सम्मान भेटलाक बादो दल दादाक खेतमे प्रयोग जारी राखैत अछि। कुम्हार माटिक फाटल टुकड़ा फेर बनबैत छथि आ दादा खेतक अनुभवसँ सुधार

सुझबैत छथि। कथा नव तकनीककेँ पुरान स्थानीय कौशलक विरोधी नहि, ओकर संग सहयोग करैत विकसित होइत साधनक रूपमे देखबैत अछि।

कथा १५ · जंगलक बाट, घरक गप

विद्यालय जाएबाक जंगलक पुरान पएदल बाटपर नीरज, सुमि, आफरीन आ ललित गाछसभपर लाल चिह्न देखैत अछि। गामसँ हाट आ अस्पताल धरि पक्की सड़क बनेबाक प्रस्ताव अछि, मुदा चिन्हित दिशा जंगलक अनेक गाछ काटि सकैत अछि। विज्ञान-शिक्षिका कल्पना दीदी हुनका सभकेँ केवल विरोध नहि, पथक आवश्यकता सेहो बुझबाक सलाह दैत छथि। किशोरसभ गाछ, झाड़ी, जलधारा, ढलान आ लोकक उपयोगक अवलोकन आरम्भ करैत अछि।

चरवाहा रघुनाथ काकासँ हुनका सभकेँ एकटा पुरान बैलगाड़ी-पथक जानकारी भेटैत अछि। ओ बाट कनेक नमगर अछि, मुदा पैघ गाछ कम कटत। बरखामे दलदल बनेबाक कारण बन्द नाली अछि; जलनिकास आ छोट पुलियाक सम्भावना जाँचल जाइत अछि। बीस परिवारसँ गप करैत ओ सभ जानैत अछि जे लोककेँ वर्षभरि भरोसेमन्द सड़क चाही, जंगलक बीचेसँ मात्र सड़क नहि। गामसभामे आँकड़ा आ मानचित्र रखलाक बाद अभियन्ता आ वनकर्मीसँ जाँच कराओल जाइत अछि।

अन्ततः मुख्य सड़क पुरान बैलगाड़ी-पथ दिस मोड़ल जाइत अछि आ जंगलक पएदल बाट बचि जाइत अछि। किशोरसभ नव पौधाक देखरेख आ कूड़ा नहि फेकबाक काज अपनबैत अछि। कथा कहैत अछि जे जंगल गामसँ अलग नहि; ओकर जल, माटि, पंछी आ छाहरि गामक जीवनसँ जुड़ल अछि।

कथा १६ · गाछ पर बनल पाठशाला

नयन, मेघा, ईशान आ रेवा पोखरिक लग पुरान पीपलक गाछक छाहरिमे बैसि पोथी पढ़ैत-पढ़ैत गाछक बीच मचानपर अध्ययन-ठाम बनएबाक विचार करैत अछि। गाछकेँ कील ठोकि चोट नहि देबाक लेल विज्ञान-शिक्षक आ बढ़ई बिसेसर काकासँ सलाह लैत अछि। गाछक तना वा डारिपर भार नहि दऽ चारि बाँसक खम्भा धरतीमे गाड़ि मचान बनैत अछि।

सीमित चढ़ाइ, मजबूत निसेनी, वयस्कक संग छोट नेना आ आँधी-बरखामे बन्द रखबाक नियम बनैत अछि।

मचानपर पोथी, पाँखि, पात आ पोखरिक पानिक अध्ययन आरम्भ होइत अछि। ऊपरक डारिमे अण्डावला घोंसला देखाइते किछु दिन पाठशाला बन्द करैत, फेर पाँखिक सक्रिय समयमे चढ़ाइ रोकि बैसबाक ठाम बदलल जाइत अछि। वृद्ध लोक आ कारीगर अपन अनुभव सुनबैत छथि, जकर अप्रमाणित अंश लोक-स्मृतिक रूपमे अलग राखल जाइत अछि। छोट नेनासभक लेल गाछ तर अलग अध्ययन-वृत्त बनैत अछि।

आँधीक बाद मचान ठाढ़ रहलो बिना जाँच चढ़बाक अनुमति नहि भेटैत; ढीला रोक-डाँड़ सुधरलाक बादे फेर पाठशाला खुलैत अछि। विद्यालयक प्रदर्शनीमे विद्यार्थी मानैत अछि जे मचान बनबासँ पैघ उपलब्धि सुरक्षा, प्रकृति आ सभक अवसरक सम्बन्धमे निरन्तर प्रश्न उठायब अछि। एहि पाठशालामे गाछक छाहरिक संग धरती, पाँखि, लोकज्ञान आ सामूहिक उत्तरदायित्व सभ शिक्षक बनि जाइत अछि।

कथा १७ · सूरुजघड़ी बनौने बालिका

नेहा भोरक छाह सरकैत देख आ आजीक पुरान समयबोध सुनि सूरुजघड़ी बनेबाक निश्चय करैत अछि। मीनाक्षी, कौशल आ रितेशक संग ओ विद्यालयक खुलल मैदानमे डाँड़ गाड़ि बारह बराबर खण्ड बनबैत अछि। मुदा छाह ओकर अनुमानित रेखाक अनुसार नहि चलैत। विज्ञान-शिक्षिका अर्चना दीदी पृथ्वीक घूर्णन, स्थानक अक्षांश, उत्तर-दक्षिण दिशा आ छाह देबएवला डाँड़क झुकावक सम्बन्ध बुझबैत छथि।

दल दिशा जाँचैत, डाँड़ सुधारैत आ अनेक धूपगर दिनमे निश्चित समयपर छाहक स्थान अंकित करैत अछि। बादरक दिन छाह नहि भेटनाइ आ नागरिक घड़ीसँ स्थानीय सूरुज-समयक अन्तर सेहो ओ सभ लिखैत अछि। कुम्हार हरिनारायण काका टिकाउ पकाओल माटिक पाटी बनबैत छथि। ओहि पाटीपर चिन्ह लगाकऽ नेहा छोट नेनासभकेँ छाह, पृथ्वीक गति आ मौसमक परिवर्तन बुझबैत अछि।

विज्ञान-मेलामे नेहा स्पष्ट करैत अछि जे सूरुजघड़ी रातिमे वा घनगर मेघमे काज नहि करत आ प्रत्येक मिनटक नागरिक समयो नहि देखाओत। विद्यालय ओकरा विज्ञान-बागमे स्थायी ठाम दैत अछि। आजीक अनुभूति आ नव नाप-जोख मिलि नेहाकेँ सिखबैत अछि जे घड़ी समयक अंक दैत अछि, मुदा सूरुजघड़ी समयक चालक कारण बुझबाक जिज्ञासा जगबैत अछि।

कथा १८ · नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली

कोशीक पुरान धारक तटपर प्लास्टिक आ मलिन वस्तु बढ़ैत देख मीना अपन मित्र आरव, सोनम, तमय आ काव्याक संग नदीक अवस्था बुझबाक निश्चय करैत अछि। विज्ञान-शिक्षिका मालती दीदी हुनका सभकेँ नदीक पाँच अलग ठामपर तिथि, पानिक रंग-गन्ध, तैरैत कचरा, जलचर आ तटवनस्पतिक लेखा बनेबाक विधि सिखबैत छथि। साधारण विद्यालयी जाँचक सीमासँ ओ सभ परिचित रहैत अछि; सम्पूर्ण नदी सुरक्षित वा असुरक्षित घोषित नहि करैत।

नाविक, धोबिन, खेतिहर आ तटवासी लोकक अनुभव सुनि बुझाइत अछि जे हाट, घरक नाला आ बरखाक बहाव सभ नदीमे गन्दगी आनैत अछि। पंचायत आ बड़ लोकक सहयोगसँ सुरक्षित तट-सफाइ होइत अछि। हाटमे कपड़ाक झोरा आ मजबूत कूड़ा-संग्रह पात्रक व्यवस्था बनैत अछि। नालाक समस्या पर किशोरसभ अपने अवरोध बनएबाक बदला लिखित प्रमाण पंचायतकेँ दैत अछि, जाहिसँ सम्बन्धित अधिकारी निरीक्षण आरम्भ करैत छथि।

बरखाक बाद कटावग्रस्त सुरक्षित तटपर स्थानीय वनस्पतिक रोपनी आ नियमित अवलोकन जारी रहैत अछि। किछु सुधार देखाइतो दल नदीकेँ पूर्ण स्वच्छ घोषित नहि करैत। मीना आ ओकर मित्र बुझैत अछि जे नदी बचायब एक दिनक सफाइ नहि, लोकक आदत, स्थानीय व्यवस्था, वैज्ञानिक धैर्य आ भविष्यक प्रति निरन्तर दायित्व अछि।

कथा १९ · चाँदनी रातिक मानचित्र

रातिक आकाशसँ दिशा बुझबाक जिज्ञासामे अन्वी अपन मित्र नील, माधव, चम्पा आ राघवक संग विज्ञान-शिक्षक सुधांशु सरक देखरेखमे ताराक अवलोकन आरम्भ करैत अछि। पोखरिक बाँधपर अभिभावकक संग सुरक्षित ठाम चुनल जाइत अछि। शिक्षक सप्तर्षिक सहायतासँ ध्रुवतारा चिन्हबाक ढंग सिखबैत छथि। ध्रुवतारा लगभग उत्तर दिशा देखबैत अछि, किन्तु एकदम सटीक उत्तर नहि—ई सावधानी पहिल पाठ बनैत अछि।

अन्वी कागजपर ताराक मानचित्र बनबैत अछि, मुदा आजीक प्रश्नसँ बुझैत अछि जे रातिभर पृथ्वीक घूर्णनक कारण आकाशक दृश्य बदलैत बुझाइत अछि। दल चारि सप्ताह धरि निश्चित ठाम आ समयपर चन्द्रमाक उजास, बादर, कुहेस आ ताराक स्थितिक लेखा राखैत अछि। लोकक पुरान आकाशज्ञानकेँ आदरसँ लिखैत अछि, मुदा ओकरा वैज्ञानिक नापसँ अलग चिन्हित करैत अछि। प्रदर्शनीमे अन्वी कहैत अछि जे एहि अभ्यास-मानचित्रक भरोसे अनचिन्हार ठाम यात्रा करब सुरक्षित नहि।

पुरान नाविक देवकान्त काका सम्झबैत छथि जे नदीमे दिशा बुझबाक लेल तारा मात्र नहि, धारा, पवन आ परिचित तटचिह्न सेहो आवश्यक छल। अन्वीकेँ बुझाइत अछि जे मानचित्र समयक एक क्षणक स्मृति अछि; परिस्थिति बदलला पर ओकर उपयोगक सीमा सेहो बदलैत अछि। कथा आकाशक ज्ञानकेँ प्रमाण, सावधानी आ धरतीसँ जुड़ल विवेकक संग जोड़ैत अछि।

कथा २० · हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी

विद्यालयक हँसमुख पहरुआ बिसेसर काकाक कुंजीक गुच्छासँ अभिलेख-कोठलीक पिअर डोरीवाली पित्तरिक कुंजी हराइ जाइत अछि। वार्षिक पोथी-दर्शनक तैयारी अटकि जाइत अछि। मीना, ईशान, रञ्जना आ तुषार काकाक पछिला साँझक काज एक-एक कऽ पूछैत अछि, मुदा ककरो चोरीक आशङ्का नहि करैत। गुच्छाक फैलल लोहक घेरा आ ओहिमे अटकल पिअर सूतक रेशा सँ बुझाइत अछि जे कुंजी खसि सकैत छल।

तुषार चुम्बकसँ खोजबाक विचार दैत अछि, मुदा शिक्षिका बुझबैत छथि जे पित्तरि सामान्य चुम्बकसँ नहि खिंचैत। काल्हि काका एकटा पुरान काठक आसन नीम तर रखने छलाह। ओतुक्का बाहर निकलल काँटीमे पिअर सूत भेटैत अछि। छोट नेनासभ भोरमे आसनक ठाम बदलने छल; ओहि घटनाक क्रम जोड़ि किशोरसभ आसनक पाटी आ आधारक बीच नुकायल कुंजी निकालैत अछि।

कुंजी भेटलाक बाद सभ केवल हँसि नहि रहि जाइत। मजबूत घेरा, सुरक्षित खूँटी, रंगीन डोरी आ कुंजी लेब-घुरेबाक लेखापोथी बनैत अछि। प्रधानाध्यापकक सोझाँ किशोरसभ अपन सीख कहैत अछि—वस्तुक गुण बुझू, ककरो पर आरोप लगएबाक पहिने प्रमाण जाँचू, आ छोट त्रुटि दोहराए नहि ताहि लेल व्यवस्था सुधारू। कथा हास्यक संग तर्कपूर्ण खोजक अभ्यास दैत अछि।

STORY-WORLD

PART II · ENGLISH TRANSLATION

Katha-Shatatrayi · Volume I

Stories 1–100

Story 1 · The Flowerpot at the Window

After thirty-five years in the district education office, Shashibhushan Babu is approaching retirement. The pot of periwinkles on the office windowsill has survived through his daily care. On his last day, pressing work reduces the farewell ceremony to a brief formality. At the suggestion of Neeraj, the new clerk, he takes the plant home. There he confronts Malati's empty chair, the routines of a life now past, and the uncertainty of the days ahead. The next morning, resisting the urge to telephone the office, he places the flowerpot on his late wife's chair. In that small rearrangement lies the first intimation of a life beginning beyond the identity his employment had given him.

Story 2 · The Application for Leave

Prabha Mishra, a teacher who has always discharged her duties without interruption, learns that her mother is unwell. Yet her anxiety about the school's work makes her reduce a request for three days' leave to a single day. At her mother's house, she attends to her needs. On a rainy evening, an ordinary question from her mother releases the loneliness Prabha has kept buried since the death of her husband, Arun. Her mother helps her understand that knowing of someone's grief and allowing that person to speak of it are two different things. On returning to school, Prabha asks for another two days' leave, although her mother is now well. The decision marks her first movement towards making time for her own heart and her relationships.

Story 3 · The Letter That Arrived Late

In an old trunk, Sharada Devi discovers a sealed letter, twenty years old, addressed to her husband, Harinarayan Babu. At the time it was written, their son Manoj had quarrelled with his father over the question of marrying the woman of his choice and left for Delhi. Husband and wife suspect that the letter may be from Manoj. Unsure whether to open it, they begin speaking of the old silence, bitterness, and anxieties they had never

shared with each other. Their present relationship with Manoj has long since returned to normal, but the questions of those earlier years remain unanswered. In the end, they sit together over tea without reading the letter. Their being there for one another becomes more important than the mystery inside the envelope.

Story 4 · After the Rain Stopped

When the floodwaters recede, the earthen boundary between the fields of Ramlochan Yadav and Bindeshwar Mishra has been washed away. The two men once fought bitterly over that very line. Now, struggling with the damage to their fields and homes, the neighbours help each other. As they begin rebuilding the ridge, the old measurements once again come into conflict with their present needs. Gradually, concern for one another takes the place of their former rigidity. They return to their homes without an explicit apology or any declaration of reconciliation. Only afterwards does Ramlochan remember that the handle of Bindeshwar's hoe has come loose and ought to be repaired. That passing thought suggests that a damaged relationship, too, might yet be mended.

Story 5 · The Evening Bus

Niranjan Jha is returning to his village after four years, carrying news of his promotion. On the bus he meets his former teacher, Rameshwar Sir, who still remembers his pupils, the village, and the smallest needs of its people. Niranjan measures his own successful professional life against the teacher's unadorned world of human connections. Their conversation brings back the school, old classmates, and people he has left behind. Between stepping off the bus and reaching home, he decides to visit his old school. His promotion remains an achievement, but the meaning of success widens for him: it comes to include remembering those who fell behind on life's journey, and those who still remember his name.

Story 6 · The Empty Bed

After her daughter Anupama's wedding, Kaushalya Devi looks into the empty room and at the bedsheet patterned with blue flowers. Her daughter is trying to settle into a new life far from home, yet to her mother the absence inhabits every object in the house. In conversations with her husband, Maheshwar Babu, their neighbours, and Anupama herself, Kaushalya comes to understand that it would be wrong to lay the weight of her loneliness upon her daughter. Anupama's belongings, old lists, and the question of what to do with the room continually draw her thoughts back to the young woman. At last, instead of rushing into household tasks, she

sits beside the empty bed for a while. Her silence becomes an exercise in letting her daughter go freely and acknowledging her own sorrow.

Story 7 · Pension Day

Retired Bhuvaneshwar Babu goes to the bank to have the latest pension entry recorded. He trusts the printed figures in his passbook more than any notification on a mobile phone. The wait at the bank, encounters with acquaintances, and a conversation with another pensioner, Shambhunath, bring home the changes in his daily life. Back home, he helps a neighbourhood boy, Sonu, with an application and speaks to a former office colleague on the telephone. The pension has already reached his account, yet he still remembers the seventh of the following month. The simple act of placing a blue pen beside his red one expresses a wish to remain useful and to discover a new routine beyond accounts and calculations.

Story 8 · Two Letters

For six years, an old grey umbrella belonging to his friend Ramakant Chaudhary has hung in Sudhanshu Babu's house. Two letters carved into its handle hold the memory of that friendship. When his own umbrella breaks on a rainy day, Sudhanshu takes the old one out. Small incidents at school and along the road recall his relationship with Ramakant and their last meeting. Regret returns: during his friend's illness, he had been too occupied with his own affairs to offer him enough companionship. He cannot change what has passed, but he can still reach out to the family of his dead friend. At last, he sends a message asking after Ramakant's relatives.

Story 9 · The Day of Handing Over the Keys

For years, Ramcharit Kaka's life has been bound up with the school gate, its rooms, and its bell. On the last day of his service, he must place his old ring of eleven keys in someone else's hands. The familiar sounds of the school, its pupils, and the affection of its teachers have become inseparable from his existence. After the formal farewell he must face the stillness of home and the knowledge that he will not go to school tomorrow. In his diary he writes that the school will go on, while he will remain at home. Between those two sentences he searches for a new sense of himself. At the close, he looks for a screwdriver to repair a loose door at home: his instinct to work and care for things has not ended with his employment.

Story 10 · Two Cups of Tea

One evening, three cups of tea are set out again in Devaki Devi's house, but the old ease has gone out of the family. During Tarakant Babu's visit and conversation, the silence that has settled between Devaki and Harinath becomes unmistakable. News from Hyderabad, an old suitcase, and the different ways in which tea is served remind them all of things left unsaid. As the days pass, the two continue to speak about necessary household matters, but their emotional distance does not suddenly disappear. In the last scene they drink tea while the old suitcase lies coated in dust. It is a delicate portrait of domestic intimacy, estrangement, and a conversation still unfinished.

Story 11 · Across the Road

Shivkant Babu has lived alone for three years. His veranda opens towards the main road, and the house across it, with its evening lights, has become a familiar part of his days, although he scarcely knows its occupants. A change in the activity of that house unsettles him. Caught between his own loneliness and his reluctance to intrude upon another person's life, he sometimes walks as far as the gate, and sometimes holds back the question on his lips. Slowly, the people on both sides of the road begin to recognise the importance of one another's presence. In the end, Shivkant Babu leaves the light burning on his veranda. It is a small but meaningful answer.

Story 12 · Notice of the Removal of a Name

Eight months after Raghunath Mishra's death, Shailendra must complete the formalities for removing his father's name from the government records of their home. On paper it is an ordinary correction; in the house, his father's chair, walking stick, and other objects filled with memory remain where they were. While obtaining certificates, answering questions at the office, and drawing up a new list of family members, Shailendra realises that striking a name from a register and erasing a person's presence from life are not the same thing. Kamala Devi and the other members of the household remain on the revised list. The story ends with a light burning on the veranda and the shadow of the walking stick upon the wall.

Story 13 · The Last Page of the Notebook

Sudha Mishra, a teacher, finds a few lines on the last page of her pupil Pallavi's notebook describing the hardships at home and her determination to study. Caring for a younger brother, doing household work, and meeting the demands of school, Pallavi struggles to keep her education alive. The

lines awaken memories of Sudha's own childhood. She speaks to the girl, tries to understand her circumstances, and gives her the courage to bring in her work even when it is unfinished. The routine act of checking a notebook becomes an opportunity to recognise a child's silent struggle. The story shows the value, within education, of listening, allowing time, and inspiring trust—things that matter beyond marks.

Story 14 · The Dry Branch of the Mango Tree

On the eve of the sale of her ancestral home, Malati arrives to find that an old branch of the mango tree in the courtyard has been cut down. She is distressed, but her brother Prabhakar explains that it had become hollow within and dangerous. As they gather up the household belongings, memories of their parents' lives and their own childhood return to them both. Malati is unwilling to take on the practical burden of keeping the house, yet accepting its sale is no easier. Once the deed is registered, she carries away her mother's small iron box. Her decision not to look back does not mean she has freed herself from memory; it signals her acceptance of the hard truth of a life changed beyond recall.

Story 15 · An Unemployed Afternoon

Aniruddha spends his unemployed days at Lakhan's tea stall at the crossroads. Competitive examinations, the wait for results, and his family's expectations steadily test his confidence. Conversations at the stall and an incident connected with a young girl named Nidhi and her studies compel him to think again about his own usefulness. He knows that the fear of failure is real, but that abandoning everyday effort cannot be the answer. By the afternoon's end, neither his employment prospects nor any examination result has changed. Nevertheless, he rises from the tea stall, crosses the road, and takes the path towards the library. In that ordinary decision survives the desire to move forward within a life that has seemed to stand still.

Story 16 · The Call That Did Not Come

Living alone in Madhubani, Gopal Babu waits each Sunday for a call from his son Neeraj, who has settled in Bengaluru. One Sunday the telephone does not ring at the appointed hour, and the entire day passes in waiting and apprehension. Since the death of his wife, Shailaja, these weekly conversations have been the anchor of his routine. Gradually he begins to occupy himself with the soil and plants behind the house. The following Sunday the telephone rings, but he first finishes building the earthen rim around a guava sapling and only then answers it. The story ends with this quiet change: he has begun to find meaning in his days beyond the act of waiting.

Story 17 · A Small Award

Shashikant Mishra receives word that a local literary council has chosen to honour him. Recognition of his earlier writing gives him pleasure, yet amid the ceremony, speeches, and photographs he is conscious of how completely he has almost given up writing. Later, a child's simple question —why does he no longer write?—reaches him more deeply than any tribute spoken at the event. Back home he records the question in his diary and, after a long interval, writes a new line. He is not entirely satisfied with it, but he does not cross it out. The award becomes not a final seal upon his literary life but an impulse to begin again.

Story 18 · New Neighbours

A family—Abhinav, Nilima, and their children—moves into the house next to Saraswati Devi's, which has stood locked for five years. After some initial reserve, their acquaintance grows into affection through small daily kindnesses: fetching medicine in illness, sharing coriander from the garden, and talking about household matters. Saraswati Devi's own children live far away, and the new friendship brings fresh movement into her solitary days. A few months later, the family leaves and the house is empty once more. The gate closes again, but the green plants they have tended together remain in Saraswati Devi's garden. The story carries the quiet tenderness and sorrow of a neighbourly attachment that was never meant to last.

Story 19 · The Creak of the Chair

Ramlochan Yadav visits the panchayat building on the pretext of looking at papers for an old drainage scheme. In truth, the building and one particular old chair hold countless memories of his public life. Through conversations with Bhola, Raghunandan, and others he has known for years, he feels his place changing amid new arrangements and new people in authority. The chair's creak reminds him of his former power and of the distance that now separates him from it. Little by little, instead of insisting on having his own say, he begins listening closely to others. In the final scene, he asks Bhola to repeat what he has said—a modest sign of the change taking place within him.

Story 20 · Seven in the Morning

Retired teacher Raghunath Jha still wakes early, as he always did. For years, seven in the morning meant setting out for school. Now the veranda, a cup of tea, his bicycle, household tasks, and time spent with his wife Kamala Devi are beginning to form a new rhythm. Memories of the school bell and former pupils repeatedly pull him back towards his old role. He is

learning instead to pay attention to the small objects and moments of his home. At the end, when a bell rings at seven, his feet move instinctively towards the door. But he does not rise to check the time; he stays seated, holding his cup of tea.

Story 21 · Two Tickets

Ramvilas Chaudhary almost always buys two bus tickets together, although he travels alone. Neither Mahesh, the conductor, nor the other passengers understand the habit. One day a woman travelling to the medical hospital in Patna needs a seat for herself and her sick child, and Ramvilas gives her his second ticket. During the journey he recalls the help once given by a woman he did not know, an act that opened a way into the future for a young girl. In memory of that kindness he has made a habit of paying for another seat. The following month he again asks for two tickets. There is still no one beside him, but the possibility of someone being there remains open.

Story 22 · The Box of Bangles

Before her death, Malati Devi gave her daughter Sumitra a blue velvet box, telling her to open it seven days before Nandini's wedding. In trying to unravel its mystery, Sumitra goes to see Harilal. There she learns that her mother and father, Rameshwar Jha, had paid instalments for years to have the bangles made. Even after Malati's death, her husband continued to fulfil their shared promise. On the wedding day, the bangles are given to Nandini. The receipts left in the box bear the separate signatures of her mother and father, tangible witnesses to their joint affection and long years of sacrifice.

Story 23 · One Rupee Short

Girish Sah, owner of an old grocery shop in Barhi Bazaar, is known for balancing his accounts down to the last paisa. An entry showing one rupee outstanding in the name of Phulkali Devi troubles him. He searches the ledger, counts the small change, and revisits conversations with customers in an effort to understand the discrepancy. The dispute over so little money forces him to reflect upon the connection between the strictness of business and the memory of human relationships. Eventually the accounts balance, but the incident teaches him that trust built with people, and the memory of it, matter more than the figures in his ledger. Looking at the empty bowl for loose coins, he comes to see his old habits differently.

Story 24 · The Photo Studio

Pankaj Jha, owner of Jyoti Photo Studio at Benta Chowk, watches the demand for studio photographs change in the age of mobile phones. While preparing portraits for two old customers, Aniruddha and Shail Devi, he begins to feel that a photograph is not merely a face to be improved: it is also evidence of a person's lived existence. Removing a mark, spectacles, or wrinkles may make an image more attractive, but it can diminish the subject's identity. This understanding reaches into Pankaj's own family. At last he photographs his father with his actual spectacles, white hair, and the lines upon his forehead left intact.

Story 25 · The Red Sweater

At a women's weaving cooperative, Usha Devi checks the measurements and quality of finished sweaters. When a red sweater proves to be six inches shorter than the measurement written on its slip, she rejects it. But Gita, who knitted it, stands by her work. When the customer, Sulekha Devi, arrives with her son Chandan, the real need behind the measurement comes to light. The gap between a rule, a craftswoman's experience, and the body of the person who must wear the garment becomes clear. Usha Devi acknowledges that, in this instance, Gita understood the requirement better than the slip did. A new line is entered in the record. The story affirms the usefulness of rules while insisting upon the human necessity of listening.

Story 26 · The Key

After fourteen years in the same house, Kamala Devi is packing to move elsewhere. Alongside ordinary family life, the house has hosted evening lessons for children. As Kamala speaks with her landlord, Harimohan Babu, they recall acts of kindness from years gone by. Kamala is leaving her home, but she does not want the teaching to end. She passes the key and the notebooks into new hands. Finally, in the small room, Rinki begins teaching the children and writes a new date. The main gate is closed, yet the little door opening onto the lane remains open: the shared undertaking goes on.

Story 27 · Ten Minutes

Lalita Devi hurries through Darbhanga station to catch the train to Patna. It is essential that documents reach her niece Renu in time for verification. Amid the platform, the stairs, her bag, and the rush of minutes, she encounters a young man, Shashank, who is carrying his own papers towards the same train. Small gestures of help and their conversation gradually make the purpose of each journey clear. At the last moment the

important envelope reaches the right hands, and the train leaves on time. In ten frantic minutes a bond of trust and cooperation is formed between strangers. At the close, the two walk slowly away, with the contrasting sensations of a lighter bag and emptied hands.

Story 28 · The Last Customer

On the final day before closing his old barber's shop, Ramsevak Thakur packs away his belongings. The aged combs, scissors, mirror, and signboard bear witness to a long working life. His apprentice Nandu worries about what will become of these things. As the master cuts the hair of Montu, his last customer, memories of their apprenticeship and the skill of service rise to the surface. Even on his final day, Ramsevak does not alter his established fee. The shutter comes down, but the bundle of white cloth left in Nandu's hands suggests that although a business may close, its craft and affection can live on in someone else's keeping.

Story 29 · The Broken Clock

Madhavi finds an old clock in the house whose hands and numerals seem to run backwards. At first she thinks it is broken or badly made. Conversations with Badri Sah, a clockmaker, and members of her family reveal that it was designed that way for a particular purpose. The memory of her ailing grandmother's bed, the old arrangement of the room, and the reflection in a mirror explain the reason for this reversed time. Madhavi comes to understand that the meaning of an object can change according to the direction from which it is seen. At the end the clock on the wall still runs backwards, while in the mirror time appears to move steadily forward.

Story 30 · The Box of Sweets

Seema Devi wants an elegant cream-coloured box of sweets for guests visiting her home. Her daughter Mrinal says that taste matters most, but Seema, anxious about social standing and appearances, chooses an expensive box. Later, a number marked beneath it and the arrangement for its deposit reveal what the display really amounts to. In conversation, their neighbour Devkinandan Babu helps Seema see that a handsome box may circulate from hand to hand, while the worth of a relationship is something else entirely. In the end, the box goes back to the shop, and three members of the family share the two pedas left at home. For Seema Devi, the golden edging has lost its charm.

Story 31 · A Small Advertisement

For six months, Nilesh Jha has been searching for employment, submitting applications wherever he can. At first, the thought of placing a small 'Work Wanted' advertisement in the newspaper embarrasses him. Once it appears, however, people begin contacting him to fill out forms, draft applications, and put their papers in order. Each assignment takes time, and through it he comes to understand the value of his labour differently. An opportunity to work with Javed, who runs a photocopy shop, begins to take shape. Nilesh has still not secured a regular job, but the little newspaper cutting is no longer proof of failure. It is the first sign of a path he is making through his own abilities.

Story 32 · The Blue Pen

Mamta brings her mother Phulkumari Devi's signature on a scholarship-renewal form, but the school's old records bear her mother's thumbprint. The clerk, Vinod Jha, questions the difference between the two marks. His question brings to light the fact that Phulkumari learned her letters gradually in adulthood and practised writing her name with a blue pen. The school verifies her identity and accepts it. By signing her own name, Phulkumari moves beyond the limits of the thumbprint once used in her place. The account presents literacy not merely as formal schooling but as a matter of self-respect and the right to inscribe one's own identity.

Story 33 · The Wooden Horse

Sushila from an anganwadi centre brings a battered wooden rocking horse to the craftsman Dharmnath for repair. Its faded paint, broken ear, and loosened plank make it seem almost beyond use. Dharmnath studies the old construction and undertakes the necessary repairs. Soon the children are climbing onto the horse again, one after another. The craftsman realises that an old object need not be kept merely as a museum piece; it may return to the life for which it was made. Instead of writing a lengthy account of its past in his ledger, he enters just two words: 'Moving again.' In that brief phrase, labour, memory, and renewed life meet.

Story 34 · The Sewing Machine

The traders' association decides to honour the elderly tailor Shivnath Thakur. Everyone knows his name and the reputation of his shop, but it is his wife, Savitri, who has kept the sewing machine running. As preparations for the ceremony proceed, her overlooked labour comes into view. Shivnath acknowledges that speaking to customers, taking measurements, and cutting cloth were his responsibilities, while Savitri performed most of the

sewing. The organisers decide that she must have her rightful place in the public honour. At last, both names appear on the shop's signboard, and Neera begins learning to operate the machine. The account recognises women's unseen labour and the passing of traditional skill to another generation.

Story 35 · A Pair of Shoes

While compiling an inventory of old belongings, Madhu Jha, the new superintendent of a women's hostel, comes upon a pair of black shoes. Vimala Didi, an attendant, explains that for years the shoes have passed from one student in need to another. Nisha borrows them for an examination or a job-related occasion and then returns them. During an inspection, the shoes are recorded not as anyone's private property but as something held in common. The fact that the original owner's name is unknown ceases to matter. In the final scene, the shoes wait for the next person who needs them. Through this modest object, the account explores dignity, mutual help, and the meaning of shared use.

Story 36 · The Lost Wallet

Raghuvir Mandal, a bicycle mechanic at the bus stand, finds a wallet. Alongside money and an identity card, it contains a number of small slips bearing people's names and amounts. In searching for its owner, the bus conductor Devendra, Raghuvir discovers that these notes record more than ordinary debts: they preserve memories of trust between people. As he checks the figures, he is reminded of money he himself has yet to repay. The wallet finds its way back to its rightful owner. Later Raghuvir makes a fresh slip for a small sum, observing that money may be a small matter, but what one has a duty to remember is never small.

Story 37 · The Rented Room

A little rented room in Sharada Devi's house in Darbhanga has sheltered many young women students for a time. Her daughter Kiran examines the blue register, with its entries for rent and dates of departure. An earlier tenant, Rita, had left the rent for her remaining two days to be used by the next examination candidate. In this way Sonam, who has come to sit the teachers' examination, finds shelter for a night. Another name and date are entered in the register, but the room is not charged for a second time. The account shows how a rented room may become more than a site of payment and exchange: it can also be a place where strangers share trust and opportunity.

Story 38 · The Unnamed Parcel

After Kaushalya Devi's death, a parcel without a sender's name arrives at the yellow-gated house of her son Arun Jha. Arun and Nilima examine its wrapping, names, and old papers, gradually uncovering a story that connects several neighbouring households. They learn that Kaushalya Devi used to carry belongings, books, and small necessities from one home to another on the strength of mutual trust. The parcel is no mysterious gift, but one link in those unfinished journeys. Arun and Nilima take responsibility for delivering the remaining things to their intended recipients. In the end, their mother's empty cloth bag seems to them not an image of absence, but a space kept open for others.

Story 39 · Behind the Photograph

An old family photograph hanging in Vijaykant Jha's home has always been taken as a memory of the family gathered together. When the frame is repaired, notes on the back and an old register belonging to Naresh Photo Service reveal that it was assembled from photographs taken in different places. At first, the family members are unsettled by the discovery. But when they see the original images, they begin to understand Gauri Devi's wish: that those living far apart might appear together in a single picture. The photograph is not a record of one historical gathering. It is a deliberate creation of family togetherness across the distances that separated them.

Story 40 · Two Lamps

In the lane by the peepal tree, darkness falls differently on the paved road and the unpaved settlement. At Diwali, following Mangala Kaki's advice, one lamp is placed on the doorstep and a second at the bend in the lane. Nayan at first thinks the arrangement unnecessary, but soon understands the difficulty faced by people walking in darkness and the need for light at the turning. Oil, wicks, and the modest expense of keeping the lamp alight become matters of shared concern. In time, the lamp at the bend is no longer a festive ornament alone. As the night grows deeper, someone adds oil to it again. The account centres on a community's responsibility for a public way.

Story 41 · The Last Row

Madhav, an electrician, receives an invitation to the wedding of Suresh Babu's daughter Anjali and is also engaged to arrange the decorative lighting. At the celebration, he is treated now as a guest, now as a labourer. When he repairs a fault in the lights, questions of where he should eat and how he should be treated come to the fore. The invitation card and the

receipt for his wages seem to assign him different places in society. In the end, Madhav collects the payment for his work and departs. In his bag lie both the wedding invitation and the wage receipt. The account questions the distinction between guest and worker, and the labour concealed behind a wedding's brilliance.

Story 42 · Four Hands of Cloth

For Neha's school uniform at the beginning of the new session, the list calls for four hands of cloth, a traditional measure of length. In the market, Rama Devi compares prices and measurements, only to discover that four hands taken from bolts of different widths do not yield the same quantity of fabric. The difference is discussed with Vimala the seamstress, Badri Sah the shopkeeper, and at a school parents' meeting. It emerges that the old uniform instruction assumed a width of cloth no longer standard everywhere. The list and the receipts must therefore be understood afresh. Rama keeps the two receipts bearing different measurements with the list, so that the confusion may be avoided next time.

Story 43 · Shared Shade

Ramsagar and Nasima Khatoon run neighbouring carts on the pavement. A net stretched between them gives both relief from the sun, but it crosses the boundary allotted by the municipal authority and must be taken down. They apply for public shade in the interest of everyone who uses the space, and an official inquiry follows. The rule sheet declares the net unlawful, while verification of its shared use remains incomplete. The government-issued net ends up safely stored beneath a cart, and the path between the stalls remains exposed to the same fierce sunlight. The account lays bare the contradiction between boundaries drawn on paper and a community's actual need.

Story 44 · A Day's Leave

Sudha Jha deducts money from the monthly wages of Malati Devi, her domestic worker, because Malati missed a day's work. Yet the record of her working days, additional duties, and work performed in exchange is far from clear. Sudha and Malati talk through the circumstances and reconcile the details of that day. The question arises of what terms should be used to record a household worker's time and leave. Eventually, they begin a written register to make the handling of wages and absences explicit. Malati chooses the following Wednesday as leave, not as a day to be made up later. In both records the same words are entered with the same meaning: 'Approved leave.'

Story 45 · The Tin Box Held as Security

An old green tin box belonging to Govind has stood in bicycle mechanic Nasim Ansari's shop for four months, left there as security. A name and an amount are written on it, but neither its contents nor the owner's true circumstances are clear to everyone. At last Govind returns with his wife and little daughter. As he takes back the box, the old transaction gives way to a recognition of human trust. Nasim helps the family carry their possessions away. The green tin box is loaded onto the roof of a bus; in the shop, a clean rectangular mark remains where it had rested. It is a quiet picture of trust amid poverty, and of what a pledge can mean.

Story 46 · Half a Sack

Ramlochan Yadav, a sharecropper, and Shashibhushan Jha, the landowner, have agreed to divide the paddy harvest equally. The sacks are weighed in the threshing yard, but differences between wet and dry grain make equality difficult to establish. Consulting Tulsi Sah's calculations and examining the moisture in the paddy, both parties count again. Their effort to measure correctly brings questions of labour, trust, and natural conditions into the reckoning. At last the grain is divided. A little that remains in the threshing yard is given to the chickens; after the scales have been removed, for the first time no pointer there is left trembling.

Story 47 · The Other Entrance

At Asha Health Centre, patients attending a free medical camp are directed to ‘the other entrance’, while regular patients enter by the main door. Neelam and the health workers see how the division creates unnecessary confusion and a sense of difference among those seeking care. For a time, once the distinction is set aside, patients move about with greater ease. Dr Neha, too, questions the need for two entrances. Yet the old instruction reappears on the preparations list for the next camp. Neelam puts a question mark beside that line. The account closes not with a ready-made solution, but with the beginning of a thought that may change the system.

Story 48 · Five Chairs

Five red chairs are set out for a school meeting, each bearing a slip with an official's name. Heavy rain prevents the expected guests from arriving. As the meeting proceeds, the real needs of the people present—the staff and villagers among them—begin to matter more than the hierarchy of seats. A mark left by a rain-soaked sari remains on one of the chairs before the furniture is put away. The meeting is completed without its chairperson. Preparing the report, Nandkishore writes ‘Meeting held’, but leaves the

space for 'Seating arrangements' blank. The account exposes the distance between the ceremonial importance of a chair and the actual presence of people.

Story 49 · The Washerman's Mark

Prabha Devi opens a bundle of laundered clothes and begins counting her saris. Doubt about the whereabouts of one garment soon arises. At the washerman's home, amid Chhotan's notebook and a conversation with Shashikala, a question of mistaken counting gradually becomes a crisis of trust. The garments are searched for and counted again, but the suspicion voiced between people leaves a mark of its own. In the end, the correct number of garments is entered as five. Bhola the washerman puts a small blue mark inside the cloth to prevent future mistakes of identification. Yet the account makes clear that the mark of distrust left in the lane runs deeper than the mark on the fabric.

Story 50 · The Hours of Labour

At the gate of a building under construction, Kailash the watchman records when the labourers enter and leave. But the contractor's wage slips show different working hours, reducing the monthly pay of Budhan and the other workers. A dispute arises over where to count the minutes spent reaching the gate, standing in line for tools, and waiting for the actual work to begin. Two separate registers and a conversation with the proprietor, Vinod Sah, bring the old practice under scrutiny. Under a new calculation, the workers' time is acknowledged more clearly. As the building takes shape, the invisible hours of those who build it also begin to receive their due.

Story 51 · The Red Seal

Shakuntala Devi, a widow, arrives at the block office with the documents for her pension application in a blue folder. Although the certificates and forms are all present, the demand for a red seal sends her from one desk to another. Her daughter Payal keeps account of the journeys' cost and her mother's medicines. After questions from the officials, the application moves forward and the requirement for the seal is clarified. But completed paperwork is not the same thing as receiving a pension. Back at home, Shakuntala says that the rest of the calculation can be made only when the first payment arrives. Beneath her list of expenses, Payal leaves a blank space.

Story 52 · A Common Field Boundary

After the rains, a dispute arises over cutting the grass that grows on the earthen ridge between the fields of Gopal Yadav and Raghunandan. The ridge is a boundary, yet its turf, soil, and water serve both fields. What begins as a question of rights over grass becomes a discussion of boundaries, labour, and responsibility. Amid small measurements and memories of earlier disagreements, both men try to recognise their own mistakes. At last the issue of the grass fades, and the shared usefulness of the earth beneath it becomes clear. The ridge that separates their fields also holds water for them both, and so belongs to their common responsibility.

Story 53 · A Plate of Rice

Jagdish Sah, proprietor of Janak Bhojanalaya, keeps a strict account of meal prices and outstanding debts. The question of feeding Murli, a customer in need, compels him to reconsider his old rules. Discovering that Murli, too, maintains his own accounts in a notebook, Jagdish realises that help can be given without injuring another person's dignity. He makes provision to serve meals on credit within a fixed limit, while insisting that every amount be recorded. At the end, every plate served is properly entered in the restaurant's ledger. The account finds a place for organised assistance and a working person's self-respect between charity and debt.

Story 54 · The Rented Handcart

Each day Sarita Devi rents handcart number five from Bhola Sah. The daily charge of seventy rupees shapes her hours of trading and her reckoning of earnings. One day, when the cart is given to someone else, Sarita and Bhola dispute who has a right to the unused hours after a full day's rent has been paid. Discussion and careful calculation open the possibility of sharing the cart's hours of use. A new method of keeping accounts begins in the ledger. The same four wheels and the same white numeral five remain on the cart, but for Sarita the economic value of time has become unmistakably clear.

Story 55 · Three Glasses of Water

At a private hospital, water is free for patients and those accompanying them, but a deposit of twenty rupees is required for each steel tumbler. To use three tumblers and reclaim her deposit, Seema Devi must go from one desk to another. Queues, slips, and minutes counted make the actual burden of this supposedly free facility plain. She questions the complications of the arrangement. Later the system is altered so that the deposit can be returned more easily when the tumblers are handed back. In the final scene, Seema

recognises that the water was free all along; what has changed is the needless labour and time consumed in recovering the deposit.

Story 56 · The Line for a Name

The attendance register at a flood-relief camp records the number of family members under the name of the household head. During the distribution of relief, Manjari Devi realises that her own name has no proper place in the total. Questions of family lists, individual identity, and the correction of permanent records take her through one official procedure after another. Although her name appears in the temporary relief register, it takes far longer to establish its place in the permanent household register. Long after the floodwaters have withdrawn, the correction of the record continues. Being counted among those present for relief and being registered under one's own name, the account shows, are different rights.

Story 57 · A Sample of the Harvest

At a paddy procurement centre, farmers' sacks must first be registered, then inspected for quality and weighed. Kiran, a farmer, questions the procedure for taking samples, particularly the removal of grain before the sacks are weighed. In discussions with Shashibhushan, a centre employee, and others, the question becomes whose share should bear the weight of the sample. The rule is changed so that samples are taken after weighing. Purchases continue under the new procedure until evening. The paddy, the bowl, the testing implement, and the scales remain the same; but moving the moment at which a handful of grain is taken makes a fairer reckoning of the farmer's share possible.

Story 58 · The Little Awning

Mamta Devi, a tenant, has a small tin awning fitted above her doorway to keep out the rain. Her landlord, Shivkant, raises questions about permission and ownership of the wall. An examination of the screws, the fall of the water, the plaster, and the direction of the drain makes it clear that the tenant's comfort and the building's safety cannot be separated. With a mason's help, a workable repair is found. The awning remains Mamta's possession and the wall Shivkant's property, but the rainwater binds them in a shared responsibility. The account reveals the practical truth of common maintenance across the boundaries of ownership.

Story 59 · A Bar of Soap

At a women's hostel, each student is entitled to one bar of bathing soap a month. When the distribution figures are reconciled, one bar seems to be

missing, and the first question is who has taken it. The superintendent, Kaushalya Devi, the attendants, and the students go through the lists. Their inquiry shows that nothing has been stolen or lost: one student's name was omitted from the distribution register. Once the new student's presence is acknowledged, the total is corrected. The account links fairness in applying a rule to the proper place of a person in the record. Writing down forty-nine names matters every bit as much as counting forty-nine bars of soap.

Story 60 · Beyond the Accounts

On the night the autumn fair ends, Ramlochan Sah, a spice merchant, adds up his income and expenses. Sushma, Maya Devi, and other family members have worked in the shop, arranged goods, and carried out domestic tasks, but the cash ledger assigns no value to their efforts. The family debates whether labour for which no separate wage has been paid should be excluded from the calculation of profit. At last, alongside the line recording cash savings, they make a list of the work contributed by the family. There is no less money in the cashbox. Yet the figure called profit can no longer be separated from the invisible labour behind it.

Story 61 · The Wall's Second Life

Before the rains, the old wall of Ramdulari Devi's house begins to show signs that it needs repair. Anupama is distressed at the thought that removing the traditional paintings from its surface will also destroy the memories they hold. She first makes a record of their principal forms, colours and lines. Only then does the mason Chandeshwar remove the old, damp plaster and rebuild the wall. Ramdulari Devi encourages Anupama not merely to copy what was there before, but to paint something new with her own hands. When the new painting is complete, Anupama begins drawing in the space that remains, without looking at a photograph. The preservation of tradition becomes an act of fresh creation.

Story 62 · Threads of Two Colours

After weaving eighteen hands of blue cloth, the weaver Neera notices that the depth of the colour changes after the ninth hand. The batches of yarn ordered under the same description are not, in fact, identical in colour. Questions arise about the customer's order for twenty hands of cloth, the payment for the work and the quality of the finished fabric. On Savitri Devi's advice, Neera marks the different portions of the cloth and raises the need for a change in the working rules. She does not receive the full payment for the immediate order, but a system is established for inspecting each batch of yarn before weaving begins. The tale shows that marking a

defect after discovering it is not enough: one must recognise differences at their source before the work starts.

Story 63 · The Path Through the Orchard

In the orchard Shashidhar Jha inherits after his father's death, an old, winding path runs between the trees. He wants to straighten it so that fruit can be carried out more easily. Measuring and levelling a new path brings convenience for a few days, but rain, roots and the flow of water soon expose its weaknesses. His mother, Sharada Devi, explains that the old path took shape slowly through the seasons, among the trees, and through the movements of those who used it. Drawing on these observations, Anvita prepares a new plan. In the end, the orchard's winding course is understood not as an error but as knowledge accumulated through long experience of the land and its uses.

Story 64 · A Painting Without a Name

Manjari and Renu paint together on the white wall of the old school veranda. Inspired by shifting squares of sunlight, trees and shade, they create a painting in which the lines and colours of each are interwoven. The school's records, however, provide space for only one artist's name and cannot fairly represent their shared labour. A new way is sought to record each person's part, the revisions and the collaboration. In the end, the light painted on the wall remains still while the real sunlight moves on. The empty line in the register, like the distance between those two kinds of light, recalls the part of creation that cannot be contained within a single name.

Story 65 · Seven Minutes of Voices

Saurabh draws seven small circles in his notebook to mark the subjects he wants to cover in each conversation. His telephone time with his mother, Rama Devi, who lives far away, is limited, so he carefully arranges questions about mathematics, his grandmother's health, his shoes and the little matters of each day. As they talk, he begins to discover aspects of his mother's work, railway journeys and crowded days that had found no place on his list. Silence, too, becomes a part of their conversation. Sometimes Saurabh writes a note about the silence in the seventh circle; sometimes he leaves it empty. The tale explores listening, waiting and affection beyond words in a bond between mother and son constrained by time.

Story 66 · The Earthen Bowl

Deepak the potter receives an order for a hundred earthen bowls of exactly the same size for a restaurant in the city. Bowls shaped by hand naturally vary, while the customer wants them to stack conveniently and serve food uniformly. Deepak and his grandfather Ramcharan experiment with measurements, small bowls and different shapes. Gradually they realise that what matters more than an exact likeness is a common standard of usefulness and capacity. Even after the order is completed, the old bowl at home has not become worthless simply because its shape is different. The tale seeks a balance between handcraft, standardisation and the purpose an object actually serves.

Story 67 · The Star Above the Roof

For a science exercise, Aditi resolves to watch the stars at the same hour each evening for twenty days and record what she observes. Yet on the family's shared roof, papads are laid out, clothes are dried, pickles are kept in the sun, and people come and go, repeatedly obstructing her view. At first these interruptions irritate her. Then she begins to record the family's daily use of the roof, the direction of sunlight and the changing hours as well. In conversations with Manjula Devi, scientific observation and household labour find room on the same rooftop. In the end Aditi decides that she will look at the papads first and the stars afterwards; if clouds fill the sky, she will write about the clouds. The tale opens curiosity to a wider field of vision.

Story 68 · The Thin Curtain

After her marriage, Lalita comes to live in Amresh's joint family. The thin curtain hung for privacy alters the passage through the veranda, the route taken by Grandmother Saraswati Devi and the light entering the room. Questions about its height, edge, ventilation and light become questions of domestic propriety as well as convenience. Lalita and the other members of the household take turns measuring and testing arrangements that will give the newly married couple a space of their own without obstructing the movements of the elders. At last little Pihu comes in along the newly opened passage, and the line of light is unbroken. The tale portrays household boundaries being remade through mutual agreement.

Story 69 · Measuring the Shade

The old neem tree at the school becomes the subject of dispute because of cracks in the building's wall and pressure from its roots. The pupils want to preserve its shade, while the engineer and the headmistress raise questions about safety and repairs. Different measurements are made of the tree, its

shade, its roots and the school's use of the space. Eventually a decision addressing safety also makes provision for new shade and for planting trees and saplings. Madhura no longer looks only for the place once occupied by the old neem; she watches the direction of the sun and the shade beginning to take shape anew. On the measuring tape is written a reminder that the shade will be measured again. The tale examines the difficult balance between protecting nature and ensuring collective safety.

Story 70 · Lamps in Both Homes

In art class, Anvi is asked to paint a picture on the theme 'The Lamp in My Home'. Her life is divided between two separate homes, her mother's and her father's, and choosing just one does not seem right to her. During the festival in Kartik she experiences the customs, cleaning, aripan designs and lamps of both households. Rather than set one home against the other, she accepts the place each has in her life. Her finished painting shows an aripan at the doorway of the house on the left, a lamp on the steps of the house on the right, and an open path between them. That path becomes a sign of Anvi's freedom to move between both homes and to belong in each.

Story 71 · Lessons on the Veranda

Twice a week, the veranda of a former headmaster's house becomes a shared place for reading. As the women read an account of floods, relief work and the building of a school in a book of local history, they ask why it contains no names of those who cooked the meals, looked after supplies and laboured day and night. Surma Devi, Phulkali Kaki, Jamuna Devi and Ritu gather accounts from different witnesses and prepare a supplementary record of this work alongside the original text. The old book is neither torn apart nor rejected; the new record is placed beside it. The tale is an exercise in adding the voices of those omitted from history to what has already been written.

Story 72 · A Name Beneath the Toy

At 'Madhav Toy House', wooden horses, bullock carts and other toys are made through the labour of many hands. When questions arise about the identity and maker of an old toy, Ira sees that cutting the wood, shaping it, painting it and attaching the wheels are the work of different craftspeople. Giving the whole toy one person's name does not tell the full history of its making. The workshop introduces a system of marking a serial number on the underside and recording the contributions of the known artisans. Where information is unavailable, the entry is left blank rather than filled with a guess. In the end, the toy carries beneath it a traceable history of the journey by which it was made.

Story 73 · The Broken Note

Mrinalini wishes to preserve the old songs of her grandmother, Janaki Devi. A note in the middle register of the harmonium is faulty, so the melody sometimes takes an unexpected turn and sometimes sounds incomplete. As the instrument is repaired, a question arises: would it be right to call the earlier, altered melody wrong and erase it? Grandmother and granddaughter record different performances of the song. Nachiketa, too, pays attention to the variation in the notes. Finally, all three sound recordings are preserved under the title 'The Song Between — Three Paths'. The instrument is mended, but the memory of the first performance is not effaced.

Story 74 · The River's Other Name

On a new map at school, Nandini sees the river near her village represented by a single blue line and one official name. At home and by the ghats, however, she hears different local names for the same flowing water. With her teacher's help she records what boatmen, elders and people living beside the river say. She discovers that some names refer to seasonal forms of the water, some to branches of the current, and others to the identities used by boatmen. It would be wrong to treat all these local names as interchangeable. In the end, the line on the map no longer seems wrong to her; she understands only that a map and a flowing river serve different purposes.

Story 75 · Two Kinds of Seed

Abhay wants to try a new variety of seed on the farm, while his grandmother has kept a bundle of the old seed. The differing soils of the raised homestead land and the low-lying fields, uncertain rainfall and standing water put both kinds to the test. Abhay records the measurements of cultivation, the timing, yield, taste and behaviour of the grain in his notebook. His grandmother's experience becomes an essential complement to his calculations. After the harvest, he sets aside both kinds of seed for the following year. The question is no longer simply 'Which seed is better?' but 'For which field, in what season, and for whose use?'

Story 76 · The Leaf Inside the Book

While cleaning old volumes in the town library, the staff discover a dried leaf pressed inside a book, along with a reader's note. Librarian Ramlochan Jha and his colleagues ask how the leaf can be removed to protect the book from damp without losing the reader's memory. They record the accession number, page number and time of discovery, then place the leaf in a

separate envelope. A system is also devised for comments by new readers, so that the original pages will not be damaged. In the end, the old leaf and the new note are kept safely apart, while the book is opened once more for reading. The tale brings preservation and the memory of readers into harmony.

Story 77 · Shared Hours on the Roof

On the shared roof of a four-storey residential building, people dry clothes, walk, play and maintain solar panels. Disputes arise over the space and time these different activities require. Rashmi and the other residents use measurements, chalk marks and conversation to work out a schedule. Permanent lines do not solve everything, because sunlight, people's needs and the weather keep changing. In the end, they adopt a flexible arrangement without permanently partitioning the roof. Rashmi comes to understand that a common space is governed less by written rules alone than by attentiveness and mutual accommodation.

Story 78 · The Unfinished Play

Pupils rehearse a play for the school's annual theatre evening. The action falters at a scene where the response of a character named Meera has not been clearly written. Their teacher, Malati Jha, along with Ritu, Renu and the other students, tries different possibilities in performance. The meaning of the scene changes with the dialogue, the silence, the movement of a hand and the position of a performer on the stage. Rather than fill the unfinished passage with an arbitrary line, the pupils write down the different interpretations they have explored. The empty line in the script remains, but around it a path opens towards a new, fourth possibility. The tale affirms creative collaboration and the openness of meaning.

Story 79 · A Share of the Moon

Through the narrow opening of sky between two houses in a lane, Naina and Ritu watch the moon. A plan to install a new water tank and pipes on one house threatens to block their view. The families discuss the need for a practical water supply alongside the girls' pleasure in watching the sky. By changing the position of the tank and the length of the pipes, they find a way to meet both needs. Later the moon moves along its course and out of the gap above the lane, but the passage to the sky remains open. The final thought is that even a small piece of the sky is no one's private property.

Story 80 · The New Courtyard

On paper, the paved open area at the centre of a resettlement building is designated simply 'Central Open Space'. In practice, residents from different floors walk through it, children play there and women carry on their household tasks. Isha, Nitu and the other children make a communal design in the courtyard, deliberately leaving an empty space in the middle. Discussion follows about the difference between administrative rules and the ways people actually use the place. Gradually the residents understand that a shared courtyard means not a claim by one family, but room left for everyone to pass through. At the end, Isha comes down the stairs and joins the others. No one has reserved a special spot for her, yet there is room for her all the same.

Story 81 · The Thirty-First Bed

At the entrance to a women's night shelter, a sign gives the number of beds as thirty. Champa Devi knows each bed and the people who use it intimately. Yet although she works at the shelter, her own place to rest at night is not included among those thirty beds. When the need for an additional place is raised, the officials examine the records, bringing this omission in the count to light. Finally, a folding bed is set aside for use whenever needed. Champa does not have to sleep in it that night, but the presence of Bed Thirty-One comes not from someone's charity; it comes from correcting the institution's count.

Story 82 · The Back Staircase

The main entrance to 'Amaltas Building' has a lift, but domestic worker Savita Devi and other service staff are assigned a rear 'service route'. Darkness, stored objects and poor cleaning make its staircase hazardous every day. Savita places these difficulties before the owners and those responsible for managing the building. The obstruction on the second floor is removed, the light is replaced and the window cleaned. Even after the improvements, Savita knows that the upkeep of a route used daily cannot be ensured by a single inspection. In the end, she no longer has to feel along the wall in darkness at the turn of the stairs.

Story 83 · The Night Slip

At the district hospital, the main visitors' register is closed at night, but patients' relatives and those bringing medicines and essential supplies continue to come and go. Devanath keeps track of their numbers and identities by means of a night slip. Difficulties arise over the figures written on the slips, the time of arrival and the many visitors who come for the

same patient. Through discussion, the staff agree on a method that will safeguard necessary information without increasing reliance on unnecessary paperwork. The nighttime movements of relatives, including Nirmala Devi, are recorded. In the end, Devanath no longer needs to rely on his memory of faces to keep his own private reckoning.

Story 84 · Two Buttons

Workers serving at a wedding hall are issued white kurtas and warned that their wages will be docked if any defect is found when the garments are returned. When two buttons of different colours are noticed on Suresh's kurta, he is accused of damaging it. Kamala Devi, who does the sewing, points out signs of an earlier repair, but the contractor's register contains no record of the garment's condition when it was issued. After discussion, each kurta is numbered and a new procedure begins for recording its condition at the time of collection. An old button will no longer become grounds for deducting a new worker's pay. The tale shows how workers' rights suffer when the history of an object goes unrecorded.

Story 85 · Rent for a Shut Window

Sunayana does sewing work in her rented room. The daylight entering through its window is essential to her work with needle and thread. A new storeroom built by the landlord obstructs the window and blocks the light. Sunayana raises questions not only about the amount of rent but also about the actual conditions in which she lives and works. They discuss the window grille, security and an awning. A temporary reduction in rent is recorded to account for the loss of light, and the previous rent is restored after repairs. Sunayana realises that the value of a home lies not merely in the number of its bricks and walls, but also in the conditions that make it possible to live and work inside them.

Story 86 · The Mark on the Brick

At the brick kiln, Kaushalya recognises two slanting lines made at the corner of a wet brick. The mark once identified the work of Raghuni's team, but as the years passed, wages and outstanding dues began to be calculated solely on the basis of that same mark. Kaushalya insists that the older batches, dates and differences among the workers be examined. When supporting records are found, some debts are acknowledged and entries without evidence are removed. The need becomes clear to record the date, batch and workers' names separately, alongside any new mark. The tale resists imprisoning a worker's identity for ever within a single sign on a brick.

Story 87 · The Account of a Pocket

At Kusum Laundry, Jhuniya Devi checks pockets before washing clothes. An old rule requires that coins, papers and personal objects found in them be entered in a register. But the records make no distinction between describing an object and speculating about what it might mean, raising questions about customers' privacy. After a folded paper is found in Ravi's clothing, the laundry introduces a system for recording only the kind of object, the pocket and the number of the envelope in which it is kept. Beneath the old instruction, 'Write down whatever is found', Jhuniya adds a sentence defining its limits. In the end, the account concerns the objects, not the private thoughts of the people who own them.

Story 88 · The Evening Chair

Outside a pharmacy stands a green chair labelled 'For Customers'. Questions arise about who has the right to sit on it. Govind observes that the needs of tired customers, older people waiting for medicines and those who work in the shop change at different hours. The chair's fixed position also obstructs the passage and causes disputes. A folding seat is fitted to the wall, creating a new arrangement for its use. Sometimes a customer sits there, sometimes Govind, and sometimes someone else. In the end, the question of whose chair it is matters less than who is tired now, and who needs somewhere to sit.

Story 89 · The Fifth Bucket

When water grows scarce at 'Sharada Sadan', a building with four flats, buckets are allotted according to the four households. The needs of caretaker Vasudev, his wife Sita and their daughter Rupa, who live in a room by the gate, are left out of the count. Vasudev asks not for pity but for a place within the rule. The residents discuss the distinction between drinking water, household entitlement and work performed for everyone. At last, a fifth bucket and the family's presence are entered in the records. The empty red bucket may lie overturned beside the stairs in the evening, but because it has been counted, three people are no longer invisible on paper.

Story 90 · The Discarded Identity Card

At a packaging factory, Chanda Devi and eleven other contract workers lose their jobs on the same evening. They are instructed to surrender their identity cards as waste. Yet the final calculation of wages and outstanding payments remains unfinished, and without permission to enter through the factory gate they find it difficult to examine the records and claim what is owed. The workers point out this contradiction. With new slips and

individual permissions, they gain access to the accounts office and complete the process for final payment. Their old identity cards may be surrendered, but the debt owed for the labour they performed does not disappear. The tale centres on the relationship between a worker's identity and the right to wages.

Story 91 · Half a Signature

Jagarnath Paswan, Rehana and several other labourers are repairing the roof of the municipal council's old warehouse under contract. When a tool breaks and deductions are threatened, the register gives no clear answer as to whose responsibility the loss should be. Jagarnath stops midway through signing his name: he refuses to acknowledge an incorrect account without evidence. Anamika Jha, the engineer, proposes that the necessary particulars be recorded separately. New records are drawn up for the labour performed, the tools used and the reasons for any deductions. Payments now take a little longer to process, but a way has opened to prevent arbitrary cuts in wages. Jagarnath remembers the half-written signature as a sign of his right to stop and ask a question.

Story 92 · The Locked Trunk

At the bus stand's lost-property room, preparations are under way to auction objects that have lain unclaimed for years. Malati and the other committee members open an old trunk and find clothing, tools, private photographs and letters. Can articles fit for public sale and papers holding someone's personal memories be disposed of under one and the same rule? Their inquiries lead them to the owner of a bag of tools, whose loss has cost him dearly in his livelihood. The rules for returning property and safeguarding private belongings are revised. The trunk is locked again, but a new path through the records has been opened between the objects shut inside and the people to whom they belong.

Story 93 · Light for Hire

At the night market, every handcart vendor is charged the same fee in the name of electricity and supervision. Saroja and the other sellers object: their lamps, appliances and hours of use are by no means identical. Once private wiring, lighting along the common pathway and the electricity tariff have been examined, separate arrangements are made. Charges for private connections are linked to actual use, while the lamps in the central public passage remain lit for all. Some difficult questions persist even after the new system is tried, but the vendors now have a distinct right to switch their own lights on and off. The story seeks a measurable and just sharing of costs in place of equality that exists only on paper.

Story 94 · The Small Padlock

In the shared premises of Madhavi Awas, several families keep personal papers and possessions in small locked boxes. After a suspicion is raised, there is a demand to open one of them; yet the contents include a notice of increased rent, jewellery and other private belongings. Rashmi, Reena, Sakina and their neighbours ask whether possession of a common key can ever confer the right to open someone's box in its owner's absence. They frame written rules governing keys and locks, the reason and time for opening a box, and the witnesses who must be present. The padlock remains just as small as before, but every act of unlocking it now calls for an entry in the register. The question is how to hold security and privacy in balance.

Story 95 · Two Minutes Late

Naval, who delivers meals, faces a deduction of twenty rupees for supposedly reaching a customer two minutes late. The time he arrived at the building's gate, the time spent reaching the lift, the ringing of the bell and the customer's acceptance of the meal are recorded in different registers. Saroj, Mrinalini and others compare the entries and discover that the figures do not agree. The method of recording time is changed, and the deducted twenty rupees are returned to Naval. In the end, two entries are retained for the same delivery so that responsibility is determined by the actual handover, not by guesswork. Two minutes may be a very little time, yet their meaning can be immense when justice depends upon them.

Story 96 · Weighing Wet Paddy

After the rain, the paddy is still damp when a dispute arises between Ramlochan and the labourer Phulmati over the weight of the sacks used in calculating wages. Wet grain loses weight as it dries; if the two parties weigh it in different conditions, an apparently equal account will be deceptive. Phulmati insists that it be weighed under the same conditions. Taking account of the needs of the field, the threshing ground and the storehouse, they begin recording wet and dry weights separately. At the end, the word ‘wet’ is written on the sack beside the date. Eighteen kilograms remains eighteen kilograms; what must now be stated alongside the figure is the essential truth of when, and in what condition, it was measured.

Story 97 · The Empty Plate

Behind the wedding pavilion, the people preparing food for the guests labour day and night in the kitchen. Every arrangement is made for counting and feeding those invited, but the cooks, servers and cleaners are often left out when it comes to their own meals. Malati and her fellow

workers challenge the omission. A new arrangement is made to record the cost and timing of meals and to enter the workers' names in the register. At last, plates of food are counted separately for Ganesh and the other workers. One plate is empty in the final scene because the person for whom it was meant has already gone, not because that person's right to a meal was forgotten. The plate is empty; the count is not.

Story 98 · The Three-Rupee Receipt

The fee for using the public toilet at the bus stand is three rupees. Saroja, the attendant, notices that the money collected does not match the number of receipts issued. An inquiry reveals that payments from several users have been taken without receipts, or that the receipts have been entered under a different count. Ramesh Babu and the other workers devise separate records for the money received, small change, receipts and sums returned. They improve the system so that every payment leaves a trace, with no unnecessary deduction or suspicion. The last receipt, marked 'Reconciled', is carefully preserved. Transparency over so small a fee becomes a matter of trust for those whose work is tied to it.

Story 99 · The Last Light

Kamli's work as a cleaner at the bus stand does not end when the last bus has departed. Clearing rubbish from the buses, securing the gate and switching off the lights are tasks whose finishing times differ. The clock specified in the contract does not fully account for her additional labour. Seema Jha, Raghunath and other workers examine the time register and record the difference between the last bus and the last task. They also revise the arrangements for keeping the necessary lights burning. In the closing scene, the lamps no longer needed are switched off, but the passage that must remain open is still illuminated. The time of Kamli's final task is preserved in the register beside her own name.

Story 100 · Beyond the Count

In a survey of damage after the flood, the number of houses is being treated as the number of families. Yet one house may shelter several tenants, families with separate kitchens and people living there temporarily. Mrinalini and the survey team go from door to door to see how people actually live. They propose separate entries for damage to the walls, the owner's rights and the needs of the affected families. Once those omitted from the count are included, the figures for buildings and households no longer coincide. In the end, two different totals for the same place—the structures and the families living within them—are both accepted as

correct. Beside the line drawn by the flood, another line appears on the page: a record of the people who are there.

Katha-Shatatrayi · Volume II

Stories 1–100

Story 101 · Beyond the Embankment

Fourteen years after the old village of Bahuara was displaced by an embankment, the people of New Bahuara begin debating where a shrine should be built. Raghunandan Jha and others argue over its location and who may claim authority over it. A register of turns for tending the shrine lamps, preserved by Devkali Devi, helps her grandson Chandan understand that the old shrine belonged exclusively to no caste or family: its care was the shared responsibility of every household. An open platform is built, with the names of old and new families entered together. Madhubala and her daughter Rani light the first lamp. In that flame, the memory of the former place is joined to the continuing communal life of the new village.

Story 102 · The Vacant Post

The doctor's post at the Belahi health centre has remained vacant for five years. Jamuna Devi, who opens the centre each day, ties a knot in a length of rope in remembrance of every patient turned away for want of a doctor. On the day of an inspection a doctor is brought from another centre, but the chair stands empty again the following morning. Sita, Phulo and other villagers take the knotted rope to a public hearing; its two hundred and fourteen knots make the human suffering behind administrative neglect impossible to overlook. A doctor begins visiting twice a week. Jamuna does not undo the old knots: the pain people have already endured cannot simply be erased.

Story 103 · The Voice of the Land

Dhaneshwar Sah produces a map of his property in order to fence off the ‘middle path’ linking the Sada hamlet of Hariharpur to the main road. The daily life of the settlement, travel during the rains and the need to carry sick people to safety all depend on that route. Jasoda Sada and the elderly Kusumi Sada bring forward memories of an old well and evidence of the path's bends and turns. As measurements, local testimony and collective appeals are weighed, the conflict between private ownership and customary public use becomes plain. Eventually a way is found to preserve the long-used path. The land speaks not only through the lines on a map, but through the feet of the people who have walked upon it.

Story 104 · Half a Samosa

Jibachh and Basok are waiting for day labour at the bus stand. Between them they have money for only one samosa. The moment they cut it in half, the question of fairness entangles them both. The size of the pieces, the potato filling, the crisp pastry, their weight and ever more ingenious ways of dividing them only deepen the argument. The shopkeeper, a vegetable seller and other bystanders offer advice, but none can settle the matter. Once work is found, the two friends eat the samosa with laughter. The next day they buy two samosas, yet the question of which is bigger arises all over again. Amid hunger, the story catches both the warmth of friendship and the comic stubbornness of their demand for equality.

Story 105 · The University of the Veranda

On the veranda beside the old post office, four unemployed young men —Naval, Ramakant, Sadan and Paramanand—hold debates on every conceivable subject and call their gathering a university. Ramakant receives an interview letter, but the lack of bus fare checks his excitement. The four take up paid manual work together. Their earnings meet the cost of the journey and reduce what they owe for tea to Malati Kaki. Their labour teaches them what long speeches had failed to teach. They even repair the veranda's leaking roof with their own hands. When Ramakant returns, the friends gather once more over tea; but debate and work now stand in a different relationship to one another.

Story 106 · Love on Credit

In the credit ledger of Ramdev Sah's grocery shop, customers' accounts are kept alongside the 'things they have said'. His daughter Kusum enters the debt of Madhav, a bicycle-repair worker, together with his proud and humorous remarks. Madhav wants to pay for the goods needed by his ailing mother; what he does not want is pity. Gradually, between Kusum and Madhav, an intimacy grows that cannot be measured in the columns of a debt ledger. When Madhav receives his wages, the financial balance returns to zero, but the words preserved in the old book remain. The blank pages of a fresh ledger, and the love still unspoken, hold open the possibility of what their relationship may become.

Story 107 · A Free Cup of Tea

Every day at Belwa Chowk, Budhan Sah sets aside a free cup of tea for a stranger, on one condition: the visitor must give an honest opinion of it. The comments of unknown drinkers lead him to improve the benches, cleanliness and arrangements for the smoke in his shop. One day the road is

closed and no newcomer arrives; the prepared tea stands there growing cold. At last a young woman travelling to Sonbarsa asks why the tea has been poured in advance. Taking her advice, Budhan begins keeping an empty cup ready and brewing fresh tea only when a stranger comes. The story finds wisdom in the willingness to hear criticism, and a natural grace in hospitality.

Story 108 · The Old Man and the Radio

Every evening in Bardaha, Maheshwar Jha listens to the voice of radio announcer Shivnath Mishra. He is convinced that the announcer knows him personally. His grandson Nilu questions this certainty. When the radio batteries run out, the old man goes to another house in the hope of hearing the broadcast. Later a letter comes from the announcer, sending respectful greetings and mentioning Maheshwar's low wooden seat. For Nilu, it seems the first tangible proof of a connection. To Maheshwar, however, the sense of being known has been present in the voice all along. Unseen companionship, the sensitivity of listening and the differing outlooks of two generations meet in the tale.

Story 109 · Sharing an Umbrella

Returning from the Sakri market, Lakhan, who mends shoes, finds that his umbrella has broken. In the rain, a young porter named Salim helps him hold it over them both. As they try playfully to divide its shelter equally, they get wet, laugh and learn something of one another's lives. Salim binds the damaged frame with his cord. When they part at Pipal Turn, their generosity gives rise to another dispute: which of them should take the umbrella home? Even after the umbrella has been repaired for the next market day, they continue to walk together. By then it is no longer the umbrella but their friendship that gives them a reason to share the road.

Story 110 · The Five-Rupee King

Nine-year-old Gopi helps his mother tie bundles of greens and receives a five-rupee coin as his wages. At once he imagines himself a king; a crescent-shaped scratch on the coin becomes his royal emblem. His mother borrows it to make change, and the coin passes through the hands of Sito Kaki, the milkman, a mechanic and the postman before returning to Gopi. Following its travels, the boy begins to understand how money circulates, what it means to borrow, and what his claim to the coin can really be. Next morning, when Sito Kaki asks for change again, Gopi hands it over with a smile—but wants to know where it has been by evening.

Story 111 · The Scent of Rice

Madhav is studying in Darbhanga and living in a rented room. Between his lessons and his poverty, he seldom lights his own cooking fire. The scent of rice rising from the pot of Kamala Kaki next door brings back the memory of his mother's home. Careful to preserve his self-respect, Kamala starts cooking Madhav's rice over the embers remaining in her hearth. He brings twigs for fuel, contributing his share. Gradually, the two pots on a single hearth become the centre of something like family affection. When rice from the newly harvested paddy arrives from the village, the fragrance of both homes seems to mingle. Madhav goes home for the holidays, but a place for his little cooking pot is kept ready.

Story 112 · The Grammar of a Love Letter

Deepak comes to his teacher, Ramanand Jha, asking him to correct the grammar of a letter to his beloved Sugni. The teacher tells him that rather than filling the page with extravagant promises about the moon and stars, life and death, and everlasting love, he should speak truthfully of what he has seen and heard. Deepak writes of Sugni's patience, their meeting in the library and his own feelings, plainly acknowledged. He also recognises her freedom to choose whether to reply. What began as an exercise in language becomes a conversation founded on respect. After Sugni answers, the prospect of a five-minute meeting on Sunday finds its way even onto the teacher's market shopping list.

Story 113 · The Betel-Seller Philosopher

Badri Sah, who sells betel at Pipal Chowk, listens to people's troubles without immediately offering advice. As he prepares a paan, he asks simply, 'What can be done at this moment?' The question helps customers separate what can be acted upon from the rest of their worries. Then Badri's landlord gives him notice to vacate the shop he has occupied for seventeen years, and he finds himself at a loss. Friends and customers help him find another place. He comes to understand that five minutes may not yield an answer; they may instead give someone the courage to take the next step. At his new shop, he sends a boy anxious about his examinations home to study.

Story 114 · The Rented Dog

Mahendra the tailor worries about the customers' garments and sewing machine kept in his house, but cannot afford a watchdog. Abdul Chacha offers to let his dog Kalu sleep on Mahendra's veranda at night, in return for a bath once a week. Carrying his old sack, Kalu begins moving regularly between the two households. Sometimes he fails to stop a goat; at other

times he barks a warning before a gate falls. Later Mahendra can afford to buy a dog of his own, but he does not end the affectionate arrangement with Kalu. The animal has found two homes, and both families have found a way of helping one another.

Story 115 · A Feast with Empty Pockets

Four friends decide to celebrate Lallan's success in a training examination with a feast, though none of them has any money. Lallan, Phekan, Jamil and Bhola are determined to earn their food by their own effort rather than ask for it. They receive guavas for gathering fruit that has fallen from a vendor's cart, and roasted gram for freeing a wheel of a handcart. They also help carry a municipal cleaner's basket. Beside the pond, they spread out their feast of guavas, gram, salt and water drawn from the public tap. Its cost is nothing, but the company is rich in friendship, work, self-respect and laughter.

Story 116 · The Broken Umbrella Association

Caught in the rain, Shivnath the tailor, Karim the bicycle mechanic and Jagdish the sack-weigher possess three umbrellas, each broken in a different way. By taking the cloth from one, the ribs from another and the shaft from the third, they assemble a green-and-blue umbrella. But how can three men share its shelter fairly? Laughing as they get wet, they agree to change the person holding it every twenty steps. The following day they discuss the repair and ownership of their 'Broken Umbrella Association'. In the end, the umbrella belongs to no one alone: it becomes a common resource, available to whichever of them needs it.

Story 117 · The Forgetful Lover

Nandu has enormous faith in his memory, but hears the date of Madhuri's birthday as the seventeenth instead of the twenty-seventh. Ten days early, he arrives with jalebis and a thick-bound notebook to offer his congratulations. Madhuri and her mother laughingly explain the error. Madhuri writes both his mistaken date and her real birthday in the notebook. On the twenty-seventh Nandu comes again, this time without a present, but on the right day. Kheer, laughter and the neat entries in the notebook suggest that in love, attentiveness, humility and the willingness to check a fact matter more than a boastful memory.

Story 118 · The Barber Who Charged Nothing

Mangal the barber insists on cutting his old friend Dhiru's hair for nothing. Dhiru wants to pay, and teases him for his painstaking slowness

and his endless ‘philosophy’. Taking special care, Mangal works around the whorl on the right side and combs the hair so that an old scar is concealed. In return Dhiru tightens the loose arm of the shop chair, but neither treats the exchange as a matter of wages or a customer's account. Dhiru praises his friend's skill, and the following day other customers begin to admire it too. Unpriced kindness between friends, pride in good work and affectionate banter fill the little shop.

Story 119 · Grandmother's Mobile Phone

Dhanwanti Dadi cannot make sense of the symbols and buttons on her mobile phone, though her granddaughter Anima patiently teaches her again and again. The grandmother cares less about counting the numbers on a screen than about hearing people's voices, understanding their worries and asking after one another. One day the phone stops working. Family members and acquaintances begin seeking one another out in other ways, and new opportunities for conversation arise. When a new cable is fitted, Dhanwanti agrees that a mobile phone can bring people together—but sometimes it needs to fall silent as well. Gentle humour reveals the distance between an instrument of communication and a living human bond.

Story 120 · One Plate of Pakoras

After market day, five friends gather at Ramcharit's shop and order one plate of pakoras. Who is to eat the eleventh one? As they debate the question, they begin recalling favours done for one another: someone minded the shop, someone taught a child, someone helped during an illness. While these debts of gratitude are counted, the pakoras grow cold. Ramcharit's daughter Gudiya settles the argument with practical good sense. A second plate is deliberately prepared with eleven pakoras, and the extra one is put aside for Gudiya. The joke lies in their discovery that the worth of friendship cannot be calculated as if it were a bill.

Story 121 · A Pair of Sandals

Nandkishore and Ramvilas, who have come to worship at the Shiva temple with their families, do not know each other. Yet both families have left almost identical black sandals outside. In the rain and the press of the crowd, their footwear gets mixed up. A strand of blue thread and a round mark on a sole help them restore each pair to its owner. As they wait beneath the eaves for the rain to stop, the two families become acquainted. A month later they meet again at the market; this time, threads of different colours distinguish the sandals. With the confusion over the footwear resolved, strangers have become familiar faces.

Story 122 · The Richest Man in the House

Jagdish Jha earns little from binding old books, yet travellers, students and acquaintances come and go freely through his home. His daughter Muniya, asked to write an essay on 'The Richest Man in the House', wants to know what wealth means. Though there is little food in the household, visitors contribute their own provisions and labour, and a meal is prepared together. Muniya sees that a home with just four plates gives shelter to many people. In her essay, her father's generosity becomes a new measure of riches. That night another traveller arrives seeking a place to stay, and the mat is spread once more on the veranda.

Story 123 · Savings of Laughter

Sarita has been given a school essay on savings in the home. In an old account book belonging to her grandfather, Ramlochan Mishra, she finds a history of money painstakingly put aside and repeatedly exhausted by medicine, a daughter's wedding and repairs to the thatched roof. Her grandparents, Ramlochan and Surji, resolve to begin saving again, however modestly. As they discuss a cooperative account, rupees gradually accumulate in a small brass box. Sarita writes that money may rise and fall, but the laughter shared by the family has endured all along. In her grandparents' new savings live both financial caution and the stubborn courage to carry on.

Story 124 · The Key

After seven years in a rented house, Madhav Jha is moving with his family to a new home. A locked wooden chest in the old room, and the unfamiliar key that accompanies it, have always seemed mysterious. The landlord, Shashidhar Babu, explains that the chest is a remembrance of his late wife; its contents were distributed long ago. As Madhav takes his leave, Shashidhar gives him both the chest and the key. In their new home, Madhav's daughter Meera places her drawing notebook inside it as its first possession. The once-empty chest becomes a bridge from the memories of the old house to those of a new family.

Story 125 · Ten Minutes

Avinash is waiting to catch the train for his training course, but his teacher is still bringing the corrected certificate of his date of birth. Only ten minutes remain at the station. Nearby, Kaushalya Devi is watching for her son. The two pass the waiting time by keeping an eye on each other's belongings and anxieties. As the teacher's arrival draws near, anticipation, the train's whistle and the rush to board all gather force together. With the

necessary certificate and his luggage in hand, Avinash manages to begin his journey at the last moment. The story finds, within ten fleeting minutes, the lasting memory of help exchanged between strangers.

Story 126 · The Last Customer

Jairam the barber is closing his shop when a young man named Shashikant arrives as his last customer. The young man has lost his wallet, but Jairam shaves him without payment and asks only that, when the chance comes, he do some small kindness for another person free of charge. The next day Jairam has business at an office concerning an important file of his own. There he meets Shashikant, who helps unfold the complicated paperwork and move the matter forward by the proper procedure. Afterwards the young man offers to pay for the shave, but Jairam refuses to turn kindness into a reciprocal account. In the final scene, he welcomes another customer who has brought too little money.

Story 127 · The Broken Watch

Amresh takes Madhavi's old wristwatch, which has stopped, to Dinanath's repair shop. Its hands are fixed at sixteen minutes past five. Gradually it emerges that at precisely that moment Madhavi's father, Raghunath, had for the first time allowed Amresh to hang his umbrella on a peg inside the house, treating him no longer as an outsider. Madhavi had understood that small gesture of acceptance as an opening towards their marriage for love, and had deliberately stopped the watch. When it is repaired, Amresh leaves its scratch untouched. Later, as talk of their marriage begins in Raghunath's house, the memory of five sixteen acquires a new meaning.

Story 128 · The Sweetmeat Box

To convey her wishes on a special occasion, Shailaja buys Nirmala an expensive, elaborately decorated box of saffron-and-makhana sweets. Without anyone opening it, the box passes from one household to another as a gift until, at last, it returns to Shailaja's own home. Nirmala and Shailaja recognise the absurdity: amid the glittering packaging and the prestige of giving presents, nobody has actually eaten the sweets. Finally they open the box and share its contents. Shailaja's daughter Ira takes the empty box to keep thread in. The travelling gift becomes a gentle comedy about the difference between display, affection and the real use of a thing.

Story 129 · The Small Advertisement

Niranjan is looking for work and places a small, inexpensive advertisement in the newspaper. Forced to cut down the number of words, he ends up trimming even the description of the work he can do. Reading the advertisement, an old friend, Harinath, comes to see him. Eight years earlier Niranjan had used his savings to pay Harinath's training fees. Now Harinath returns the amount of that old debt, and their friendship is renewed. Niranjan goes back to place another advertisement for work, but he has understood that the first small notice found more than employment: it also recovered a forgotten friendship and the memory of a debt.

Story 130 · The Blue Pen

On the day of the examination, Mithilesh is anxious. His friend Raghav lends him a 'lucky' blue pen, the one with which Raghav had previously succeeded. Behind the pen's reputation lie Mithilesh's help and the many hours they have practised together. When the pen malfunctions during the examination and has to be set right, it becomes clear that effort and confidence matter more than an object. Mithilesh is selected when the results are announced. Raghav offers him the pen again, but Mithilesh says that it wrote one mark; he himself wrote all the remaining answers. Beneath the appearance of good luck stand a friend's support and his own labour.

Story 131 · The Wooden Horse

Bholanath the carpenter makes his son Santosh a horse from jackfruit wood, fitting it with a neem-wood wheel whose sound is unlike that of the others. When Bholanath falls ill, Santosh sells the horse to Habib Miyan at the market to buy medicine. His father understands the sacrifice, yet also teaches him that work ought to fetch its proper price. Later Habib Miyan returns the horse in exchange for four spinning tops. Santosh keeps it carefully on the household tool chest and lets the other children play with it as well. In this little toy are joined the value of labour, the needs of a family and the pull of memory.

Story 132 · The Sewing Machine

Leela earns money for the household with her sewing machine. An intended birthday gift for her husband, Harinarayan, the cost of a motor for the machine and an immediate shortage of money together create a difficulty. Leela pawns the working machine to raise the sum she needs, and a transaction involving parts from an old, useless machine also takes place. Harinarayan is startled at first, but money earned from sewing enables them

to redeem the machine. Badri the mechanic fits the motor, reducing Leela's dependence on the foot treadle. A red-bordered gamchha, the pawn receipt and the machine's sound bear witness to the labour husband and wife share.

Story 133 · A Pair of Shoes

Naval sells his old black shoes to raise the money needed for his sister Mrinal's college admission. A crescent-shaped stain of blue ink distinguishes the pair. After enrolling, Mrinal discovers what he has sacrificed. With part of her scholarship money, she buys back the very shoes from Rahim's shop. All the while her brother has been managing with sandals. The shoes' return is more than the recovery of a possession: it expresses the mutual respect between a sister's education and a brother's love. The blue mark remains a memory shared by them both.

Story 134 · The Lost Purse

Raghuvir, a rickshaw driver, has had his driving permit withheld because repairs were lacking; he is also worried about the fees for his daughter Anushka's education. When he returns a passenger's lost purse, he discovers that it belongs to Ashok Jha, an official in the very office where Raghuvir's papers are held up. Raghuvir seeks neither special advantage nor a large reward in exchange. He completes the repairs and pays the penalty required by the rules. The official, for his part, restores the permit without favouritism and pays the five rupees still due for the rickshaw fare. The story honours the self-respect that refuses to bargain honesty away for personal gain.

Story 135 · The Rented Room

Suman Mandal, a student in teacher training, has rented a room from Harimohan Thakur for three years. Doubts about an extra amount in the rent account, together with financial pressure, lead him to move elsewhere. When the time comes to pay his examination fee, he discovers that Harimohan had kept money aside for him and already paid the fee. Generous though the act was, doing it without asking Suman has wounded the young man's right to make his own decisions. Each comes to recognise his mistake. Suman passes the examination and begins to save separately for future fees.

Story 136 · The Nameless Parcel

Useful parcels begin arriving at Shivkant Mishra's house without the sender's name. The family is surprised, but suspicion also grows, for the packages contain precisely the things needed within the household. At last

Shivkant recognises that the sender is his son Nandu, who works the night shift in the goods depot at Darbhanga. From his earnings Nandu has been sending his mother a shawl, materials for house repairs and other necessities. He left off his name to avoid unwanted questions about his poverty and uncertain employment. His father now understands that his son's habit of sleeping late is not laziness but the consequence of working through the night.

Story 137 · Behind the Photograph

While sorting through the possessions of an old house, Udayan and Swarnalata find a line written on the back of a photograph. Their elderly aunt Vimala tells them how, on the night of a flood, a woman named Kaushalya came by boat and helped at a birth, saving both their mother and the newborn Harinarayan. The family has almost forgotten the woman's place in its history. They make contact with Kaushalya's family, and the photograph is not sold. On the veranda, her name and her contribution are displayed beside it. Before the house itself is repaired, an injustice in its memory is set right.

Story 138 · Two Lamps

For Diwali, Nitin buys two earthen lamps with the wages he has saved. One is for the doorway at home; the other is for the solitary watchman at the cremation ghat, whose lantern has broken. When Nitin reaches the ghat, he discovers that the watchman is in fact his father, Raghunath. The family has never spoken openly about the harsh work Raghunath does at night. Knowing who the watchman is, Nitin begins to understand his father's labour and reticence in a new light. His mother Malati has known the truth all along. The two lamps, one at the door and one at the ghat, become signs of light at home and respect for unseen labour.

Story 139 · The Saree Bought on Credit

Wanting to look her best at her niece's wedding, Shailbala buys a red-bordered saree for four thousand two hundred rupees, payable in instalments. Long after the wedding, the interest and unpaid balance weigh upon the household's expenses for medicine, food and education. Over three years, she wears the saree only a few times; even in the wedding photographs, hardly anyone particularly remembers it. At last, on a day marked by neither invitation nor celebration, Shailbala puts it on and goes to the market. With that quiet decision she reclaims her right to an object bought for other people's eyes.

Story 140 · Five Dhurs of Land

The brothers Raghunath and Jaynath are quarrelling over the division of five dhurs of ancestral land. Because the little plot lies beside the main road, its value has risen, bringing talk of measurements, bricks and the courts. Then a notice of road widening makes it clear that almost the whole piece will be taken for the road. The brothers begin dealing together with the documents and the compensation process. For Deepak, who had dreamed of opening a shop on the land, Jaynath proposes a different site of his own. As the dispute over ownership of five dhurs subsides, the bonds of brotherhood slowly return.

Story 141 · The Host

Raghunath Chaudhary, a respected man in the village, resolves to give a lavish feast to mark the opening of his new veranda. In his desire to uphold the renown of a feast once given by his father, the guest list and the expense keep growing. After the meal, he first pays the cooks and labourers their wages, but instead of a surplus, debt remains against the household. Raghunath makes a blue ledger of the expenses and begins repaying them by instalments. Later, when another host asks his advice, he says that invitations should match one's means. The tale lays bare the distance between prestige enjoyed for a day and the burden borne for months.

Story 142 · The New Mobile Phone

Aniruddh, a student, is embarrassed when his friends laugh at his old mobile phone. He spends money sent from home for essential needs on a new one. The instalments on the phone, combined with a delay in income, prevent him from paying his examination fee. The window closes on the appointed day, and he cannot sit the examination. At first he wants to conceal what happened from his father, but finally tells him everything. His father advises him to look towards the next opportunity. Aniruddh sells the new device, keeps aside the fee for his next examination and returns to using his old phone.

Story 143 · The Dowry Fan

Beneath the standing fan brought from Madhu's parental home at her wedding is pasted a label reading 'Madhu Wedding'. Because of that label, an ordinary useful object becomes a reminder of dowry and prestige. Disagreements over repairs, the debt incurred by her parents and pride in her husband's household widen the distance between the two families. Later Madhu carries the same fan into the stifling kitchen for her mother-in-law, Shanti Devi, who is sweating as she works. The label remains, but the breeze

belongs to everyone's need. In the end, the fan's use proves greater than the quarrels surrounding it.

Story 144 · The Grand Gate

Nandkishore Yadav has a tall, imposing gate built at the front of his house, although the old roof leaks. The strip of cement beneath the new gate obstructs the flow of rainwater, causing water to gather in the courtyard and the house to leak still more badly. Listening at last to the concerns of his wife Vimala and daughter Gauri, Nandkishore has the roof and the drain repaired, one after the other. The gate's ornamentation remains unfinished, but the roof is sound and the water has a way out. The safety and usefulness of the home take precedence over outward display.

Story 145 · The Certificate of Honour

The writer Mahendranath Jha receives an invitation to a literary award ceremony, but he must himself bear the costs of the programme, souvenir volume, travel and food. He is presented with a certificate of honour, yet is given no opportunity to read his new story, and the title of his book is misspelt in the published introduction. Returning home, he sees that the wall on which he might hang the certificate is damp and the roof still needs mending. He pays the craftsman what he is owed and returns to revising his new story. The enduring work of literature matters more here than the outward glitter of honour.

Story 146 · One Plate Less

At Suchitra's wedding feast, a leaf plate is deliberately removed from the row. Her niece Maithili notices the absence, bringing unequal treatment and social distance into view. When a temporary kitchen wall begins to give way in the night's rain, the people and children placed in danger are saved through help that alters the meaning of old divisions. Later four leaf plates are laid in one row and food is served. At dawn Maithili asks whether they had not set out one plate less the day before. Ramlochan agrees that they must count again.

Story 147 · An Address in the City

Amresh, who lives in the city, is ashamed to write his full address in the village of Sonbarsa. On an employment application he gives 'Vidyapati Nagar' as both his present and permanent address. During verification the inconsistency in the documents emerges, and because it is not corrected in time he loses an opportunity. When he returns to the village, a letter bearing his complete address reaches him without difficulty. He realises that

hiding one's identity creates obstacles rather than advantages. In his next application he writes down both addresses clearly: the village as his permanent home and the city as his present residence.

Story 148 · The Smile in the Photograph

After the death of their father, Vinod Babu, his four children have a group photograph taken during the shraddha rites, smiling together. On social media the picture becomes an emblem of 'ideal family unity'. Yet they disagree about the house keys, the property and the responsibility of care. Their youngest sister Sudha had remained at home to look after their father through the last year of his illness, but no account of money includes the time she gave him. Later the family begins keeping a separate record of the care actually provided. The smiles in the photograph lasted five moments; the need for a just conversation among them remained long afterwards.

Story 149 · The Feast Paid for by Debt

After Jagesar Mandal dies, his son Harinarayan takes a loan under social pressure to provide the customary feast on the thirteenth day. The money set aside for his sister Nilima's education is spent as well. People praise the feast for a few days, but without money for travel and study materials, Nilima loses an academic term. Harinarayan repays the loan through an advance on the paddy crop and instalments. Nilima begins saving again, and only then can her studies move forward. The passing acclaim won by social display is measured against the lasting educational loss suffered by a young woman.

Story 150 · The Hired Car

For Ravi's wedding, Nandkishore hires a gleaming, expensive motorcar to display the family's prestige, and covers up the sign identifying it as a hired vehicle. On the way with the wedding procession, the car breaks down. To save time, they bring an ordinary jeep on which the name of the rental service is plainly displayed. The wedding goes ahead without difficulty, and before long no one is talking about the car at all. Instead, an additional cleaning charge is imposed because the sign had been covered. In the end, Nandkishore accepts the ordinary jeep without embarrassment.

Story 151 · Like Gold

When Raghunath Jha and his family discover glittering ornaments in an old trunk, they take them for his mother's genuine gold. Anxiety over keeping the jewellery safe soon gives rise to keys, locks and suspicions about how it might be divided; even his wife Pushpa becomes the object of an unfounded accusation. An examination reveals that the ornaments are not

gold at all but old imitation jewellery. The family realises how deeply the lure of a little glitter has damaged their trust. In the end, one necklace is given to the school for a play, the children amuse themselves with the bangles, and the box is left open once more.

Story 152 · Ten Kilograms of Rice

At the panchayat's distribution of ten-kilogram rice rations, Malati Devi and other families are photographed holding the same sack, one after another. As soon as each photograph is taken, the sack is withdrawn; in its place the recipient receives only a slip marked 'Received'. A little boy, Chhotu, recognises a cut in the blue thread on the sack and has saved five grains that fell from it. With the help of the teacher Ramanand, the discrepancy between the photographs and the warehouse register comes to light. An inquiry reveals that assistance was recorded as fully distributed on paper although no actual distribution had taken place. The child's close observation exposes the falsehood concealed behind an official display.

Story 153 · Expensive Shoes

For an interview for promotion, Ram Babu buys a shining new pair of shoes costing two thousand eight hundred rupees, having been told that the first impression begins at one's feet. At the interview, however, the seal on an old training certificate is indistinct, and a verified copy is demanded. He hurries to the distant training centre and returns with the necessary document, but the delay in entering his papers keeps his name off the promotion list. The expensive shoes chafe his heels and are left lying in a trunk. Set against regulations, documents and the worth of actual work, their outward polish proves useless.

Story 154 · The Empty Envelope

While counting the gift envelopes from his daughter Gauri's wedding, Harinath finds an empty one bearing Ramvilas's name. Suspicion stirs in the family. Later, however, it emerges that on the wedding night Harinath himself had taken three thousand rupees from it to save the electrical arrangements and had forgotten to record the expenditure. Several other envelopes, too, had been opened to meet immediate needs. He tells the family not to put down imagined amounts merely to fill the accounts. Without telling Ramvilas of the incident, Harinath enters the actual expense in the register. The empty envelope becomes a sign of the costs behind a celebration's glitter, and of the uncertainty of memory.

Story 155 · The Invitation

Every neighbour receives an invitation to Saumya's wedding except Shashibhushan and Malati, whose closeness to the family goes back many years. They feel that their bond has been slighted. An outside organiser has taken charge of the wedding, and the printed-card list distinguishes guests from organisers in a way that leaves out several people bound to the family by affection. Madanmohan later comes in person to apologise. Malati understands that a printed card cannot be the complete measure of a relationship, although the hurt of being overlooked is real. She places the new invitation in the old box of memories, under the name 'Mistake'.

Story 156 · The Man with the Umbrella

Ramnarayan has furnished a new drawing room for receiving guests. When Raghunath, an old servant, arrives in the rain with wet feet and a patched umbrella, he is made to feel hesitant about sitting inside. Then rainwater begins to drip through the roof. Turning his old umbrella upside down and hanging it beneath the leak, Raghunath channels the water into a bucket. Most of the drawing room's furnishings are saved. The household welcomes him inside with respect. The next day his umbrella hangs not against the outer wall but from a new peg inside the drawing room.

Story 157 · The Number Plate

Ramakanth spends extra money unofficially to secure the special number '7777' for his new car. The four digits become a badge of prestige. When the car is involved in an accident during the rain, he drives away in fear of the crowd instead of stopping to help the injured elderly man. A student, Neeraj, has remembered the car's distinctive number and gives evidence to the police. The number leads to the identification of both vehicle and driver. The very digits chosen for display become evidence of responsibility.

Story 158 · The Village Stage

A stage bearing the words 'One Village, One Honour' is erected on the school ground. Phekan, who does the bamboo work, and his son Kedar, who manages the sound system, labour over the event. Yet when the feast begins, the workers and people from the settlement across the river are seated in a separate row behind a wall. Eating with his own family, Kedar sees the contradiction between the stage's proclamation of unity and the discrimination practised below it. That evening, while dismantling the stage, he winds the rope that had divided the dining rows around the banner reading 'One Village, One Honour'.

Story 159 · The Girl by the Window

Fifteen-year-old Madhavi's education has been stopped after Class Eight because the new school is three kos away. From her window she watches the girls who were once her classmates ride to school on their bicycles. With the help of Raghunath, who delivers letters, she writes to her former headmistress to ask how she might enrol. A reply arrives, and little by little her father agrees to let her continue her studies. As Madhavi sets out with him to obtain the necessary certificate, Raghunath asks why the window is empty today. 'Today,' she answers, 'I am on the road.'

Story 160 · The Migrant's Daughter

Harinarayan works in a warehouse across the border in Biratnagar and seldom returns home, but he continues to send letters to his daughter Kusum. Kusum wants to hear not merely news of money but stories of her father's labour, the people at the warehouse and the life he leads. She questions the stories he writes, and his replies acquire the names of characters, their feelings and fresh details of the workers' dignity. When he comes home, father and daughter become companions in storytelling. He begins a tale of two shoes touching the different soils on either side of a border, leaving space for Kusum to write what happens next.

Story 161 · An Unfinished Song

An old village song sung during rice transplantation lives on in Grandmother Kaushalya's memory, but Jhunki, who used to sing its answering voice, is no longer there. Her granddaughter Mrinal wishes to arrange the song anew. Grandmother objects to filling the gap with invented words, for it was once a song made by the voices of two women together. Mrinal first preserves the original melody and the silence that falls within it; only then does she add the voice of her own generation as a separate part. The incompleteness is not erased. Instead, it becomes a space in which the time that has passed and the present can speak to one another.

Story 162 · A Letter by the River

After the flood, the river changes its course and separates the friends Madhavi and Sudha. They keep in touch by leaving messages scratched on pieces of clay near an old earthen pot on the riverbank. Once, when a message breaks, only the words 'I no longer' survive, causing alarm; the complete sentence had been 'I am no longer afraid.' When the river shifts its banks again, the two find another, safer place to leave their messages without putting themselves in danger. The letters remain a way of staying

connected, but they also teach the care needed to understand the whole of another person's words.

Story 163 · The Little Servant

In one household, the increasing height of a young boy, Ishan, is recorded with marks on a wooden doorframe. Kanhaiya, a boy of the same age who works in the house, makes marks for his own height on the opposite side. At first the family notices only Ishan's marks. Kanhaiya's growing body, his labour and his childhood remain out of sight. When the doorframe is to be replaced, the marks on both sides come into view. A piece of the old wood is preserved, and the stories of the two boys growing up can be seen together.

Story 164 · Mother's Trunk

After Lalita Devi's death, her three daughters, Manjari, Renu and Tara, open their mother's old trunk. Inside are separate unfinished letters in which she had tried to speak to each daughter of things left unsaid, of her mistakes and her love. At first the sisters understand the incomplete words in different ways. Then they begin to talk about their mother's life and the distance that has grown between themselves. None adds words of her own to complete the missing lines of the letters. What they find unfinished in the trunk gives them a chance to say what still remains unsaid in their living relationships.

Story 165 · The School Courtyard

A proposal is made to close the village school because so few children attend it. The teacher Ratneshwar wants to save it, but enrolment has declined. Subhadra Devi, a woman of the village, learns to write her name in an evening class and urges families to send their children to the school. New enrolments rise, and the proposal for closure is halted. The school courtyard is no longer a place for children's lessons alone: it also makes room for adults learning their letters and for the village's shared responsibility.

Story 166 · The Vermilion Box

Revati finds an old vermilion box belonging to her grandmother Kamala Devi and becomes curious about it. Grandmother recalls the day she removed the vermilion after her husband's death, when her little daughter Malati stopped short at the sight of her mother's altered appearance, barely recognising her. The pain between society's rules of widowhood and the intimate recognition of a mother by her daughter has been held in this

small box. Grandmother does not conceal the memory; she shares it with Revati. In doing so, she turns the box from an object of silence into a bridge of understanding between generations.

Story 167 · The Swing in the Tree

When Kusum brings her daughter Mansi to her parental home, memories return of swinging from the old mango tree. But the tree's weakened branch and roots have become a danger to people's safety. Grandmother Sharda recalls the old swing and the memories bound to the tree, yet she does not believe they should take risks to preserve it. The tree is removed, and the family plants a sapling in its place. They keep the swing's rope, waiting for green shade in the future and for another generation's games.

Story 168 · The Clay Flute

Neelu, a potter's son, makes a flute of clay, but one of its notes sounds different from the customary pitch. At first the music teacher Devvrat considers it a flaw. By changing the way he blows and places his fingers, Neelu shows that he can draw the intended melody from the very same flute. The teacher learns that the design of an instrument is not all that matters: the musician's ear and willingness to experiment matter too. By exchanging bamboo and clay flutes, traditional knowledge and the child's new experiments enrich one another.

Story 169 · A Name

Anshu, an adopted child, learns that he used to be called ‘Kush’ in the home where he first lived. He wants to know whether keeping the memory of that earlier name would somehow diminish his love for his new family. At first his mother Shailaja is uneasy, fearing that two names might open a distance within their sense of belonging. Her son's simple curiosity helps her understand that a present bond can grow strong without erasing the memory of an earlier life. At last she calls him ‘Kush’; Anshu is accepted with both his names.

Story 170 · The Evening Lesson

Nayan tries to write down ‘The Bird in Search of Shade’, a story he has heard his grandmother Sarayu tell. She wants him to preserve not only the events but also the meaning carried by her speech, pauses and tone. During these evening lessons their roles change: Nayan teaches his grandmother to write her name, while she teaches him the subtleties of an oral tale. On the slate appear the names of both generations alongside the words of the story.

Reading, writing and listening become a shared education in mutual respect.

Story 171 · The Fair at the Border

At a fair in Janakpur, a little girl named Rani loses her mother in the crowd. Manju, Devesh and their daughter Gauri find her; later Savita, Ramesh and their son Abhay, who have come from the Indian side, join the search. The clues to the child's home are two cows, a red wall and a mark in the shape of a white flower that remain in her memory. Together the two families take her home. Sitting beside Gauri from Nepal and Abhay from India, Rani identifies herself simply: 'I belong here.' Through the help of strangers from both sides of the border, the child returns safely home.

Story 172 · The Neem Tree's Shade

When Jamuna Kaki, who works in a household, stays away for several days with a fever, the family begins to understand the true extent of her daily labour. Sitting in the shade of the neem tree, she had listened to the children's worries, looked over papers bearing poor marks and taken care of countless little matters. During her absence the family learns to divide the work among themselves. On her return she is paid her full month's wages, for no account of her stated duties could measure all she had contributed. Jamuna Kaki urges them to keep sharing their responsibilities. The neem's shade becomes a place of partnership and respect.

Story 173 · The Paper Boat

After their mother's death, the brother Naresh and sister Sudha divide their share of the old family home. A quarrel arises over a rope stretched across the courtyard and the division of a drain. A paper boat floating in the rainwater reminds them of a little bridge they built together as children. Memory does not settle the question of land, but it makes the value of a common passage visible once more. They agree to have the land measured again by a surveyor and to leave a public way six hands wide, with an outlet for the water, between their plots. Between the separate homes, a shared course for the water survives.

Story 174 · Silence

Although Sarojini Devi and her daughter-in-law Rita live in the same house, they convey their words to one another through Manoj. Daily criticism and embarrassment have built a wall of silence between them. When Rita's daughter Aditi falls ill, the two women have to care for her together through a night at the hospital. Amid fear, exhaustion and worry,

they speak directly to each other for the first time. Aditi's condition stabilises and they return home. The old distance does not disappear at once, but Manoj's mediation is no longer needed for every small question.

Story 175 · The Postcard

Schoolchildren write postcards to people living in an old-age home. Nayan's card reaches Gomati Devi, whose name awakens in Nayan's grandmother Bhavani Devi the memory of an old relationship. The two women have been separated for years. Through Nayan, Bhavani Devi writes a letter in her own trembling hand, and at last they meet. Together they send Nayan a postcard bearing the words 'We have found the way back.' A few handwritten words break a long silence and reopen the path between them.

Story 176 · The Flower at the Lattice Window

On his way to school each day, Divakar sees a flower placed in the lattice window of an old house and begins to attach a meaning to his day according to its colour. Kamala Devi, the elderly woman who lives inside, starts to notice the unfamiliar boy's curiosity. On a day when no flower appears, Divakar grows worried, and little by little they come to know each other. The conversations that begin through the window ease the old woman's solitude. One day the flower is no longer at the window but on a low seat by the door, because Kamala Devi can now walk that far. Understanding the joy of this small change, Divakar continues on his way.

Story 177 · First Earnings

After twelve days' work in a bookshop, Manjari receives her first wages: one thousand six hundred and eighty rupees. She wants to buy new sandals for her mother, Sulochana Devi, but her mother has only the damaged strap of the old pair repaired. She insists that the money be set aside first for her daughter's college admission and books. Within Manjari, the desire to give a present and the need to continue her studies live side by side. Her mother's modest repair and the books in her daughter's bag together give the first earnings their meaning.

Story 178 · The Returning Song

Returning from far away after seven years, Raghav sees the altered roads, houses and pond of his village and feels like a stranger in the world he once knew. An old rice-transplanting song, sung by Phulkumari Kaki as she winnows paddy, brings back an incomplete line from his childhood. Kaki and Raghav's mother put the different lines of the song right, laughing

together as they do so. Raghav makes no decision to settle in the village, but he understands that even after the physical paths have changed, the voices of people and the ways they answer one another endure in memory.

Story 179 · Papers at the Border

Crossing the border on her way from her daughter's home to her son's, the elderly Devaki Devi is stopped at a checkpoint because she cannot find her identity papers. Her daughter Muniya comes from one side, her son Shambhu from the other, but obtaining the old documents proves difficult. After local identification and a check of the records, Devaki Devi is allowed to cross. In the end of her sari she carries the keys to both homes. Yet when the question arises of where to keep the papers, her son falls silent. The border reveals how the homes and relationships on its two sides exceed the single-line identity written on a document.

Story 180 · The Flood Relief Camp

Displaced by the floods, Ratna lives in a relief camp with her daughter Chunmun. Speeches about women's safety are made from the stage, but a volunteer named Harinandan uses the pretext of a distribution slip to stop her in an isolated passage and subjects her to indecent behaviour and sexual harassment. Ratna protests and leaves the passage. With the support of Neelam, Sugni and other women, she brings a complaint before the authorities. Harinandan is removed from duty, and the withheld slip is returned. Changes are made to the complaint box's location, the lighting, the supervision of distribution and the openness of the passageways. Safety is built not by declarations but by accountable conduct.

Story 181 · The Red Blanket

On the night of the riot, the body of an unidentified child lies in the hospital beneath a red blanket. People from two neighbourhoods claim him as one of their missing children, seeking proof in the blanket's stitching. Mangala Devi and Sita Musaharin explain that it is one of many blankets made in the same batch for the municipality. The child's identity cannot be established, and his body is handed over to neither side. At the hospital door, two mothers still searching for their sons share bread with one another. Amid rival communal claims, the unknown child's humanity remains intact.

Story 182 · Do Not Ask Their Names

After a train accident, nurse Pragya Devi insists that the injured be examined for breathing and wounds before anyone asks their names.

Outside the temporary treatment centre, rumours circulate about religion, identity and unverified death tolls. Inside, Deepak matches patients with blood donors by blood group. Ramzan Ansari gives blood for Harishankar Paswan, though neither knows the other's identity. Names are checked separately as relatives search for the missing. By keeping treatment and identification in their proper order, the workers make real assistance possible, placing human need ahead of the divisions fostered by rumour.

Story 183 · The Register

When Devaki Mahto goes missing, her mother Bhavani Devi and brother Jogendra go to the police station. The register wrongly describes Devaki as 'Jogendra's wife'. It records a one-sided account from the owner of her workplace while ignoring the injury on her cheek and a dispute over wages. Found safe at a women's shelter, Devaki demands the chance to give her own account. At her insistence, the police note the one-sided character of the earlier remarks and enter her correct identity alongside the new information. Winning space in the register becomes, for Devaki, a way of reclaiming her voice.

Story 184 · The Open Door

Rekha returns to her family after being freed from fourteen months of exploitation in a city to which she had been taken on the promise of work. Her relatives wish to protect her, yet neighbours' questions, the silence at home and doubts about her independence make the meaning of her return uncertain. She says that coming home is nothing to hide, but neither must she answer every question. Rekha resumes weaving small baskets from sikki grass and, with Malati Kaki's help, goes to the market. An open door now means the right to step outside on her own feet and return of her own free will.

Story 185 · Three Minutes

A minor collision between a handcart and a bicycle draws a crowd at the market. An unverified cry that someone has been struck threatens to turn the incident violent. A brick comes into Guddu's hand, while others begin recording the scene on their phones. Nathuni Kaka quietly bends to lift the bicycle. His simple intervention breaks the crowd's circle; the brick is lowered, and the people involved can finally be heard. Later he points out that the three-minute video contains neither the first shove nor the full explanation. Amid rumour and fragmentary images, one unassuming act prevents a moment from altering two young lives irreparably.

Story 186 · Clothing

Bundles of clothes reach the women's section of a flood-relief camp, but there is nowhere private for them to change. Rupkala Devi draws attention to this omission. Although the officials' accounts provide no separate allocation for screens, she joins together saris of unsuitable sizes and makes a curtain across a damaged room. Sulekha and the other women can at last change with dignity. The distribution register records how many garments have arrived. It cannot, however, capture what the improvised screen provides: not simply cloth, but privacy and the recognition of women's personal dignity.

Story 187 · The Room at the Station

Seven-year-old Ravi is separated from his family in the crowd at Darbhanga station. Banshi the porter and Ramvilas, a railway employee, take him to a safe room. Outside, people invent names and identities for the child on the strength of guesses, but Ravi holds firmly to his own name. After an all-night search, his parents and little sister Radhika are found. Ravi gives Radhika a piece of mathri he has saved for her. In their reunion, the child's own account of who he is matters more than any stranger's suppositions.

Story 188 · Silent Testimony

Kusum comes to court to testify about a traumatic event. Other people try to interpret her few words as either courage or fear. During the hearing she answers questions at her own pace and has the words 'very frightened' removed from the written statement: she herself has never said them. Outside, she tells a reporter that she has already said in court what she wished to say. Her mother, too, learns that the right to tell the story belongs to her daughter. Silence is not the absence of Kusum's voice, but part of her freedom to choose how she will use it.

Story 189 · Two Bodies

After the flood, two unidentified bodies are found near the village. People speculate about their religion and neighbourhood from a red thread, a black cord and the places where they were discovered. Jamir the boatman explains that floodwaters reverse their course, making it impossible to infer where the dead came from. Health worker Rekha Kumari and others insist that both bodies be kept safe until their identities can be reliably established. They are sent to the mortuary, with the religious category left blank. Rather than assign the unknown dead a hasty and possibly false identity, the village chooses caution and respect.

Story 190 · Milk under Curfew

Three days into the curfew, children in two neighbourhoods are running short of milk. Badri the milkman wants to make his customary deliveries, but people on both sides suspect him for crossing between them. Carrying milk for Maheshwar Sah's granddaughter, he is accused of passing messages. Badri replies that he sells milk; it is the people who have divided a single road into two. During a brief relaxation of the curfew, the milk is distributed. The measures used for the northern and southern neighbourhoods remain separate, but the vessel from which the milk is poured is one and the same.

Story 191 · The Broken Slipper

After a stampede at the crossroads, journalist Arun Jha sees a broken blue slipper and a red stain on the road and reports a woman's presumed death. Shakuntala Devi, very much alive, reads the report and challenges him. The stain, she explains, was crushed tomato, not blood; the strap of her old slipper broke as she ran. Arun checks the facts, publishes a correction and returns the slipper. Shakuntala has it repaired and sets up her cart again. The journalist learns that a photograph of an abandoned object cannot establish the whole life—or death—of its owner.

Story 192 · The Locked Room

Promised sewing work and wages, Neelam, Malati and Rukhsana are taken to a city and shut in a room where they are forced to labour. Neelam keeps an account of the days by tying knots in thread. After their rescue, crowds and photographers outside again threaten to invade their privacy. In a shelter, Neelam chooses when to leave her door half-open and when to close it from within. The difference between the door of her former prison and that of the safe room is the right to hold the key. She keeps her knotted thread: the experience of those days cannot simply be erased.

Story 193 · The Scar

Medical details of the scar on Bimla Devi's arm and her testimony about the violence she suffered are already on record. Nevertheless, the assistance office asks to see the mark again. Some people would display it publicly in the name of proof and sympathy. Bimla insists that the necessary evidence has been given; the curiosity of an audience is not justice. At a public meeting, too, she keeps the right to speak about herself. Later, when she gives the tailor Nasima the measure of her arm, the scar is mentioned only to ensure a comfortable fit. In that ordinary consideration she finds dignity.

Story 194 · The Night Truck

Twenty-two migrant workers who have lost their jobs depend on a truck arranged by Lalit Sah to take them home at night. Its fare, the rules at the border and the safety of the journey bring driver Badri, official Jaykant, worker Sito and the middleman into conflict. A costly fare is charged for a journey presented as 'assistance' to people with no choice. The workers must cross the border on foot and climb back into the truck afterwards. An opening is left in the tarpaulin for breathing. Between regulations, business and claims of kindness, the exhausted bodies of the workers reveal the journey's true price.

Story 195 · The Identity Slip

After unrest, a slip tied to an unidentified body in the hospital bears the words 'possibly from the western neighbourhood'. Salman and Zahira recognise their sister Nasim and demand that the guessed description be corrected. Her name and identity are verified, a new slip is attached, and the earlier assumption is formally withdrawn. Yet the correction of a fact cannot immediately dispel the village's fear. To her family, Nasim was never merely a figure in communal reckoning: she was a woman with sewing work unfinished and a life shared with her mother.

Story 196 · A Child's Question

After an arson attack in the market, people seeking relief are separated into two groups by a bamboo mat in the panchayat courtyard. Nine-year-old Nayan keeps hearing the words 'those people' and asks how his schoolmate Sahil has suddenly become a stranger. The adults give different accounts of who threw the first stone, of religion and of blame, though none has a certain answer. Nayan tells his little sister Rinni about Sahil by name. If people on both sides call themselves 'us', he asks his mother, who then are 'they'? She teaches him not to rush into conclusions.

Story 197 · The Price of Testimony

Lakhan Sada comes to court to testify about an accident at the brick kiln. Clerk Bhuvaneshwar has warned him that telling the truth will cost all three members of his family their jobs. Lakhan states that the workers were ordered to carry on instead of replacing the damaged bamboo support. In the witness box he must face humiliation and the fear of losing his livelihood. The following day his name and that of his brother Harinath disappear from the kiln's work list; his wife Budhni's remains. His testimony has been recorded, but the economic and human price of giving it has not yet been fully paid.

Story 198 · Across the River

When a flood breaches the Bagmati embankment, Bansi Sahni's boat ferries people to a raised road. Ramnarayan Jha, Jhagru Paswan, Sakina Bibi, Faizan and elderly Mahavir Mandal help one another out of the boat. At the relief point they drink from the same bowl without asking questions of caste or faith. Once they reach safe ground, however, people begin returning to their separate social circles. When Bansi needs a small vessel to bail water from the boat before the next crossing, Ramnarayan gives him one. The journey holds both the solidarity formed in danger and the divisions that ordinary life restores.

Story 199 · Horse Gram Dal

Ramlochan and Saraswati have only a little horse gram left at home, yet they must find the money to take the ailing Jagmaya to hospital. In dividing the grain between food, seed and what can be sold, the couple faces a painful choice. Selling enough to pay for treatment reduces the seed for the next sowing, just as the market price rises. They plant the horse gram that remains more thinly and sow finger millet in the empty strip. Jagmaya recovers. Behind a single meal, a single planting and the care of one sick person lies the intricate arithmetic of a farming household's life.

Story 200 · The Dream of One Bigha

For five years Shivnath has cultivated one bigha of land as a sharecropper, dreaming of buying it. Its owner, Devanath Chaudhary, offers to sell, but the advance payment comes due at the same time as the fees for his daughter Rama's education and hostel. Rama offers to postpone her studies. Shivnath pays her fees instead, and another buyer purchases the land. The new owner proposes that Shivnath continue farming the same field on shares. He agrees on the condition that the costs of seed and fertiliser be shared. The bigha does not become his, but his daughter continues her education and he goes on farming on new terms.

Katha-Shatatrayi · Volume III

Stories 1–100

Story 201 · The Empty Bag

Gopinath Sah, who has earned his living selling seed, goes to the market with his old bag, scales, weights and account book. His daughter Manju has learnt to serve customers, weigh their purchases and keep track of credit. Little by little, Gopinath places everything in her hands. When they return home the bag is empty; yet its emptiness marks not the end of a livelihood but the passing of a responsibility from one generation to the next. On the following market day he gives Manju the rope for fastening the tarpaulin and stays at home.

Story 202 · A Patch of Sunlight

In winter Jagdish Mahto struggles with a chest ailment, while Basanti Devi suffers pain in her knees. Their doctor has advised them both to sit in the sun, but the narrow courtyard admits only a patch of warmth too small for two stools. Each tries to give the other more sunlight, shifting the stools again and again. At last they spread a mat and sit together, sharing the dwindling light. When the sun has gone, they take each other's hand and go indoors. That small, wordless act is the fullest expression of their affection.

Story 203 · The Boat Remained Tied

Across the river there is a fair and a school celebration. Raghunath Sahni, the boatman, has been ferrying people there since morning; his wife Phulo and daughter Sunita are going too. Sunita is due to sing at three, but Raghunath returns his boat to the home landing and ties it up. The sounds of the fair and the applause carry across the water; the words of his daughter's song do not. His responsibility to keep the landing and boat ready for those returning after dark keeps him on this bank, away from the festivities on the other.

Story 204 · The Sound of the Fridge

When the electricity fails and the old refrigerator falls silent, suppressed financial anxieties surface in the home of Naresh and Meena. Sales at Naresh's little ironware shop have declined, and debts make him consider selling the fridge. Meena explains its place in their daily accounts of milk, curd and household expenses. The power returns and the fridge hums again, but their disagreement over keeping or selling it remains unresolved.

Together they decide how much milk to buy in the morning and open their expense registers before one another.

Story 205 · A Month's Rent

Amar has lost two days' wages at the warehouse, and medicine for his daughter Ruchi has cost the family more. When the monthly rent falls due, he and his wife Jyoti hesitate to tell their landlord, Shashikant Babu, how difficult things have become. An old receipt lies beneath the leg of a wobbly table. The new receipt leaves five hundred rupees outstanding. After a conversation, the unpaid sum is entered clearly. Amar retrieves and saves the old receipt as well. Poverty has not vanished, but the couple begin to replace concealment with an honest account of what they owe.

Story 206 · The Blue Mug

Pradeep's elbow strikes Sarita's blue mug in the kitchen and breaks it. The loss of an ordinary object revives an old disagreement over the cost of replacing things, household decisions and each person's right to be heard. They drink tea from steel tumblers and discuss the seventy rupees involved. Sarita buys a new mug in the earth colour she has chosen. As mug and tumbler change hands, the bitterness between them eases a little. Nothing is wholly settled, but the money spent on a mug is no longer treated as an objectionable indulgence; it is acknowledged as a need.

Story 207 · The Charger

When the household's only charger disappears from its usual nail, Manoj suspects his daughter Neera and his wife Kusum of taking it. Despite Neera's denial, he opens her bag and searches her private belongings. The charger is eventually found behind the wooden platform. Its recovery makes plain that the real matter is not the missing object but trust and personal boundaries. Manoj promises never again to open Neera's bag without permission. Later, even when rain threatens to soak it, he asks his daughter before touching it.

Story 208 · The Clothesline

After the rains, an old clothesline becomes the cause of a quarrel between Sharda Devi and her neighbour Kamli Devi. Stretched beside the boundary of their two courtyards, it brings back memories of an earlier flood, a white bedsheet and an insult never fully understood. The younger members of the families listen to each woman's account. They stretch a new line but do not take down the old one. Both lines sway independently, yet the old thorn lodged in the shared boundary wall remains.

Story 209 · The Dry Tap

One morning the household tap yields no water, and the entire burden of finding a supply falls upon Kalyani Devi. Her husband Dinesh, daughter Madhavi and son Chandan all worry about their own schedules, while Kalyani's sewing customer is waiting too. The water comes late. In the interval the family begins to understand that household labour does not happen of its own accord. When the tap flows again, Dinesh takes responsibility for filling the vessels and turning it off. Kalyani can return to her sewing machine without being summoned for every small need.

Story 210 · Half a Kilo of Rice

There is only a handful of rice left in Malati Devi's pot for the evening meal. Shashikant is ashamed to buy another half-kilo on credit and see his name entered in the shopkeeper's ledger. His wife manages the household with her sewing earnings and shares the figures with him openly. Slowly he accepts that Basudev Sah's ledger need not be a record of disgrace: it can simply account for an unpaid sum. In the end he goes back for the rice. The debt is written down, and this time he does not hide the bag on his way home.

Story 211 · The Balcony Flowerpot

Too much sun has left the hibiscus wilting in its pot on the balcony. As Rajni and Vinay talk about moving the plant, they begin discussing their home and the possibility of living elsewhere. Vinay has already looked into the rent and amenities of two other houses, but has not shared all the details with Rajni. They agree on a time to view them, add up the costs and move the plant out of the strip of harsh sunlight. It does not immediately turn green again; nor do they decide at once to move. But the papers concerning the choice now lie open before them both.

Story 212 · The Wrong Number

After the death of his wife, Harinarayan Jha's days have lost their rhythm. A call made to the wrong number, intended as a health reminder for Saroj Devi, begins to bring back fixed hours for milk, meals and waiting. Sometimes the phone rings and sometimes it does not, yet the stranger's name and the unexpected regularity lend his days a curious support. Eventually his daughter Sandhya learns of it. When another mistaken call comes for Saroj Devi, Harinarayan accepts it without watching the clock. He goes on with his morning tea and newspaper, following a routine of his own.

Story 213 · The Old Curtain

As the family prepares to leave their rented house, Ruchi wants to throw away a faded green curtain. Mala and Sudhir remember its worn loops and the many uses it has served. The windows, privacy and practical needs of the new home will be different. Instead of discarding the curtain, they keep it for the time being and consider other purposes it might serve. Ruchi examines the loops herself. By the end, the curtain is neither a relic to be revered merely because it is old nor a worthless scrap. It remains an object in the household, awaiting a considered decision.

Story 214 · The Empty Gas Cylinder

In the middle of preparing supper, the gas cylinder runs empty. As Anima, Shashank and their daughter Shuchi look for another way to cook, unspoken tensions emerge around the family's belongings, arrangements and Shuchi's future. Anima and Shashank confront the question of decisions made without consulting each other; Shuchi asks to be told the truth about matters that concern her. A new cylinder and a small electric cooker solve the immediate problem of the meal, but the family's future arrangements remain unsettled. Shuchi insists on first inspecting the window, lock and water supply wherever she may live: she has a say in the choice.

Story 215 · Two Plates

Kiran and Sadanand lay two plates on the table as they wait for a visitor who does not arrive on time. Sadanand has brought out a file concerning a possible job for the first time in three months. Their conversation also turns to the family's meagre income and Kiran's earnings from sewing. The expected guest never comes, but the meal is not wasted. Through a new contact, Sadanand secures an appointment about work for eleven the following morning. Kiran helps prepare the necessary photographs and papers. Uncertain waiting gives way to preparation for a definite meeting.

Story 216 · The Neighbour's Television

Malati Devi's wall clock has stopped. For some time she has measured the hours of her day by listening to programmes on the neighbour's television. When its sound ceases, her familiar pattern of sorting makhana, eating and resting falls apart. She comes to know more of the neighbouring family's life and its own routine. Malati has her clock repaired and begins to arrange her time for herself. The television is now in a more distant room, but softer everyday sounds still pass between the two households. Self-reliance does not erase the fine threads of informal neighbourliness.

Story 217 · The Broken Lift

Reena Devi lives on the fifth floor and Vinod Thakur on the seventh, but for years they have exchanged no more than formal greetings. One day the lift stalls between floors, giving them time to speak about work, daily journeys, livelihoods and the demands made upon their hours. During the repairs, encounters on the stairs deepen their understanding of each other's difficulties. When the lift is working again, Reena offers to allow Vinod time to join her before she goes up. Their conversation remains brief, but the old distance between two near-strangers has narrowed.

Story 218 · The Grocery List

When rice runs low at home, Sudha and Vinay draw up a grocery list. With little money to spend, their different priorities emerge as they decide how much rice, lentils, oil, sugar and other essentials to buy. At Mahesh Sah's shop they must also weigh the lower cost of buying in bulk against the need to save cash immediately. They cross out quantities, add and subtract, and reconsider their choices. Finally they agree to look over the next list together before going shopping. Their handwriting remains distinct, but the unfilled spaces on the slip become room for a shared decision.

Story 219 · The Old Mattress

For years Renu and Madhav have kept turning over a worn cotton mattress rather than replacing it. Back pain, fear of expense and the habit of saying 'It will do for now' lead to an argument. As they consider a new mattress, they also have the old bedstead repaired. The cotton from the discarded mattress is made into small cushions for sitting. On the new mattress they lie on their respective sides, and the level space between them is no longer a hollow. Acknowledging discomfort and seeking a remedy together becomes part of their conversation as husband and wife.

Story 220 · The Doorbell

Their landlord, Govind Babu, announces that he may show the house to prospective tenants that night. Shyamanand, Kamala and their children suspend ordinary household life while waiting for the bell. During the long evening they speak of rising rent, the search for another home, the children's schooling and their different fears. A bell rings, but it has been pressed in error; the expected visitors never arrive. Even so, the waiting has allowed the family to discuss its real predicament. At the end Shyamanand opens again a list of three possible homes, including one near the school.

Story 221 · The Leftover Vegetables

Nirmala Devi puts the vegetables left in her cooking pan into an old steel container. The scratched letters 'M' and 'R' on its side recall the divided relationships within the household. This little act of saving food opens a discussion of separate hearths, separate accounts and the shared responsibility of caring for an elderly mother. Bina and Nirmala reconsider their schedules and arrangements for meals. In the end both women's leftovers fit into the same container. When her son Sonu asks whose vegetables they are, Nirmala says they belong to the house. The old letters remain, but they no longer define a fresh boundary.

Story 222 · The Closed Window

Behind their rented room, a spice-grinding mill works late into the night. Its noise disrupts Rashmi's studies, and Naresh and Meenakshi improvise a way of closing the damaged window. Between rent, low wages, examination fees and the cost of repairing a fan, they cannot agree which expense should come first. Rashmi tells her parents that they worry about her but conceal their financial concerns from each other. At last they place the wage slips and household expenses openly on the table. The window stays shut, but their conversation opens.

Story 223 · Sunday Clothes

Because their mother Kamala Devi's hands are painful, her daughters Malati and Sudha come on Sunday to wash and fold her clothes. Ordinary chores revive old disputes about selling a sewing machine, unanswered telephone calls and the sisters' different expectations of one another. Folding the garments brings each up against her own memories and grievances. Instead of trying to settle everything at once, they divide the work for the following Sunday. They leave after putting their mother's clothes away. The quarrel is not over, but the path of family cooperation has not closed.

Story 224 · After the Mustard Harvest

When the mustard has been cut, Bhola Mandal and Ramvilas review the income from the crop and the labour each has contributed. Their twenty-year partnership, once divided neatly in halves, has grown more complicated with changes in oxen, machinery, wages and farming itself. From landowner Janki Devi's household comes the suggestion that only one of them should cultivate the field, but she recognises the value of their long association. Before the next crop they begin setting down new terms for the

partnership. In the empty field, the work ahead is not merely sowing seed, but finding a fairer way to sustain a relationship.

Story 225 · The Herdsman's Footpath

A new paved road cuts across the old path by which Budhan Paswan has taken his goats and calves to the grazing land. The journey has become difficult and unsafe. His granddaughter Runki measures the route and draws it in her notebook, while villagers consider the road verge, the drain and the needs of passing animals. A plank crossing and a safer passage are arranged. Runki understands that reducing a distance is not the same as making the journey shorter for everyone. Through the grass, the path towards the old destination begins to appear again.

Story 226 · The Pond Keeper

For years Banshi Mahto, keeper of the Kajraha pond, has marked the rise and fall of its water on a bamboo pole. When a scheme is proposed to clean and deepen the pond, the contractor's measurements fail to agree with his experience. Banshi explains that dredging without understanding the silt along its edge, the channels through which rain enters and the natural movement of water could do harm. Engineer Arun agrees to record the old marks alongside new measurements. The plan moves forward, with the possibility that responsibility for caring for the pond may pass beyond one man to the next generation.

Story 227 · Evening at the Cattle Shed

Naresh begins keeping systematic figures for milk, fodder and expenses at the cattle shed. His father Jagarnath reminds him that the care of animals cannot be reduced to quantities of milk. The temperaments of Jhumki, Supti and the others, slight signs of illness and the need for evening rest matter too. As father and son argue, the older man's experience and the younger man's register begin to complement each other. At last Naresh writes 'Evening: all well' beside the numbers. The animals' quiet breathing and chewing of the cud give life to what the accounts alone could not contain.

Story 228 · The Mango Orchard

Amarnath comes from the city with his wife Kavita and daughter Richa to sell the family's ancestral mango orchard. The land price is settled, but an earlier agreement over the fruit and the labour of Badri, who guards the orchard, require separate accounting. Their discussions make clear that ownership of the land, rights to the mangoes and responsibility for tending

the trees are not one and the same. The old receipt is preserved with the registration papers. The owner changes, but the relation between the mangoes ripening in Jeth and those who care for the trees cannot be changed overnight.

Story 229 · The Kamala's Course

As the Kamala River changes its course, the old boundary of a plot of land no longer corresponds to the portion that can now be cultivated. Sudama Yadav and his nephew Neeraj, visiting from the city, begin measuring. The acreage recorded on paper, the old boundary peg and the new channel offer three different kinds of evidence. With a sale under consideration, Neeraj realises that it would be wrong to assign a firm price to land whose extent is uncertain. He records the differing conditions separately and leaves the leaning bamboo peg in place. The river keeps flowing; those who live beside it must keep revising their lines.

Story 230 · The Scent of Paddy

Returning to the village at harvest time after seven years, Anil seeks his childhood and his home in the scent of paddy. But the moment he takes up a sickle, he sees that remembering farm work is not the same as performing it. He talks with Rajesh, his father and the people working in the fields about their contributions, the money involved and the division of responsibility. Anil must return to the city, while Rajesh will tend the farm. In his new ledger, Anil adds columns not only for income but also for days of labour and care. The scent of paddy becomes a witness to present work rather than a refuge in nostalgia.

Story 231 · The Tree's Shade

The school is to be expanded with a new room, a tap and a sloping surface for drainage. The engineer's plan takes too little account of the peepal tree and the path rainwater has traditionally followed. From Chhedi Kaka's memories, headteacher Saroja Jha and the builders learn that an unsuitable slope could flood the school. They revise the design after new measurements and attention to the outlet for water. When rain comes, the drain carries it away and the room remains safe. The peepal's shade falls across the new slope, and local knowledge has become part of the construction.

Story 232 · The Dom's Flute

The programme for the village festival has room for a visiting group of singers, but no time has been allotted for Chandeshwar Dom's flute.

Concern for the stage's prestige and distance rooted in caste prevent him from performing. Members of the audience, especially teacher Rekha, begin to challenge the exclusion. The melody of the flute gradually compels the gathering to listen, and Chandeshwar's name and allotted time are entered in the programme register. People propose that next year's list be made with everyone's participation. Respect requires more than a name on a stage bill: it requires room to be heard.

Story 233 · The Plan of a Hut

A red survey line for a government drain passes straight through Phulbasiya Devi's hut. In the project papers, the house appears to be empty land. Phulbasiya and her family show the natural fall of the ground and the path the water actually takes. Engineer Shailendra measures again and alters the bend of the drain. In the first heavy rain, water passes safely through the new channel. The working plan now marks the hut as an 'existing dwelling', though legal ownership of the land is still unresolved. Phulbasiya calls it half a victory: at least the house is no longer a blank space on paper.

Story 234 · The Ox's Bell

Mohan considers selling his oxen, Hirna and Kajru, and relying on a ploughing machine. His ledger sets down the cost of fodder, medicine and the animals themselves, but not fully the wages of Bechan, who has worked with them, his share of the harvest or the ties built over many years. The oxen are sold and the cattle shed stands empty. Bechan's next means of living becomes a question. Mohan starts a fresh reckoning, while Neelu rings the old brass bell. A machine may bring benefits, but it also changes the lives of those who worked beside the animals. It is those uncounted costs the story brings into view.

Story 235 · The Earthen Road

The start of a regular bus service makes travel easier for students, traders and elderly villagers. But rainwater collects beneath the unmetalled road, threatening to trap the wheels. People first fill the damaged places with brick and earth, then discover that without drainage the repairs cannot last. Disagreements arise over private fields, the road's width and the need to keep the bus running. Once a culvert is built, the water passes beneath and the bus travels over it. The road is still unpaved, but responsibility for maintaining it begins to be understood as a shared one.

Story 236 · Guardian of the Grazing Ground

For twenty years Dukhan Mahto has held in memory the paths, boundary ridges and movements of animals across the common grazing land. When a proposal arises to fence part of it for private fodder cultivation, a detailed record of its actual use is needed. Dukhan begins writing down when the herds come, and how grazing changes with seasons and water. At the village meeting no one permits the enclosure immediately, but neither is the proposal rejected for good. They agree on two months of observation and a separate calculation of costs. The ground stays open, and knowledge once held in one man's memory becomes evidence for a public decision.

Story 237 · The Paddy-Planting Song

As Sonmati and the other women transplant paddy, their song keeps the rows and their movements in rhythm. Pawan brings in a transplanting machine, easing the strain on their backs and speeding the work. But it will also affect the women's wages, the jobs awaiting them and the shared rhythm of their labour. The machine's straight lines and the curved corners planted by hand reflect different experiences. The machine is neither wholly condemned nor praised without question. In the evening the unfinished song lingers in the air; amid changing forms of work, its future remains undecided.

Story 238 · The Register Beneath the Banyan

For years Munilal has sat beneath the banyan tree, recording in an old register which fields were actually reached by canal water. Government records show the dates water was released, but not the seventeen lower fields that stayed dry. With the help of teacher Sudha, officials find a blockage of silt at the canal's third bend. The inquiry records both the water's actual reach and what remains uncertain about the decisions taken. Munilal gives copies of the canal-related pages rather than surrender his entire personal register. The two records remain separate, yet each now challenges the other to account for the truth.

Story 239 · The Flood Marks

While scraping limewash from the western wall, the family discovers three old lines left by floodwater. Nikhil wants to use the highest to determine the level of the floor in a new room, but his grandmother Sharda Devi reminds him that the house itself had stood at different heights and in different forms during those floods. The family brings together memories of loss, labour and earlier events before building a safer room for medicines

and essential papers. The wall is whitewashed again. Though the marks disappear from sight, what they taught survives in the design of the home.

Story 240 · The First Tractor

Naresh borrows money to bring the village its first tractor. For years Jagesar has ploughed his family's fields with oxen and knows the behaviour of the soil intimately. Again and again, the machine's speed and the timetable for hiring it out conflict with the condition of rain-soaked earth. Gradually Naresh learns to heed Jagesar's caution, while Jagesar comes to understand the machine's uses. The older identity of the 'ploughman' changes as their work becomes an exchange of knowledge. The tractor moves forward, but the field itself compels both men to learn from one another.

Story 241 · The Boundary Post

Nayan Jha wants to build a wall along the edge of his courtyard, but his neighbour Rameshwar Mandal disputes a single inch of land. The old sal-wood post marks more than a boundary: it holds the memory of the heights of children from both families, measured against it over the years. Neither the mason’s measurements nor the old papers yield a simple, final answer. At Nirmala’s suggestion, the families agree to a shared wall, divide the expense and leave an open lattice above it. The post is planted again beside their common gateway, where the heights of a new generation can continue to be marked. A dispute over land becomes a shared recognition of inherited memory.

Story 242 · The Empty Cattle Shed

There are fewer cattle in the village now, and the old cattle shed belonging to Shivnath Jha stands empty. Even so, he sweeps it every morning. His family considers the cleaning pointless, yet the shed serves, by turns, as a place for children to play, a temporary shelter for animals and a site for vaccination. When the house is enlarged, Shivnath allows part of the shed to be converted but keeps the rest open. One day, when he is ill, his grandson Nachiketa takes up the broom himself. He comes to understand that keeping an empty place clean is not merely an attachment to what has passed; it is also a way of leaving that space available for what the future may require.

Story 243 · The Last Harvest

Before the sale of their ancestral paddy field is formally registered, Harinarayan Jha’s family decides to reap its final crop by hand. His daughter

Rama and other relatives set aside their city lives for a few days and enter the field. One person's hands are scraped raw, another's row goes crooked, but the labour allows them to feel anew their family's old connection with the land. Once the crop has been cut, nothing in the rows reveals which share of the work belonged to whom. They lay down their sickles for a photograph. The documents record a transaction in land; they cannot record the collective experience of that last harvest.

Story 244 · The Village of Certificates

Certificates of honour and achievement hang on the walls of almost every house in Sonbarsa. The school, too, has won praise for achieving full enrolment, but the shortage of teachers and the reality of classroom learning have found no place within the frames. A child named Chandan exposes the difference by asking a simple question. Instead of displaying more testimonials, the village begins trying to record what its school actually needs. Saroja Jha rewrites the numbers relating to teachers and pupils on the wall. On an unframed sheet of paper, Chandan learns to read words. The value of an honour shifts away from announcing success and towards the courage to recognise unfinished work.

Story 245 · Cleanliness Day

The village is full of guests, banners and photographs for Cleanliness Day, yet the rubbish heaped at the bend in the road has not been collected for weeks. Malati, the sanitation worker, sweeps there every day, but the waste remains where it is. A boy named Sonu begins writing down the dates when rubbish is actually removed. Eventually a collection vehicle takes the heap away, and the school register acquires separate columns for 'swept' and 'waste collected'. The truth of the record, and the regular service it requires, prove more important than the bright image of the celebration.

Story 246 · The Assembly of the Literate

At a celebration declaring the village 'literate', officials and teachers deliver speeches, though they themselves struggle to understand the difficult questions in an ordinary application form. Deepak is pressed to enter an estimated figure so that the claim to an award can go forward. Phulkumari Devi asks why being able to read, understanding what one reads and filling out one's own application should be treated as the same thing. In place of the ceremony, the villagers hold a session of practical learning. They practise filling out bank, school and grant applications. Verification produces a lower figure, but literacy has acquired a more substantial meaning: understanding and handling one's own affairs.

Story 247 · The Model Square

The village square has repeatedly been renamed—from 'Youth' and 'Harmony' to 'New Awakening' and, finally, 'Model Square'—but the deep pothole in its centre has remained. Sumedha, granddaughter of the mason Jagdish, examines the old signboards and official registers and discovers that villagers, too, have played a part in postponing the repair. They agree to interrupt shopkeeping and traffic for a short time and fill the hole together. When the rains come and water no longer gathers there, the use of the work is plain. Instead of adding a sixth name, Sumedha records the date on which the pothole was filled.

Story 248 · The Ribbon of Development

A red ribbon is cut again and again to inaugurate the same drain, although its final seven handspans have never been completed. Jagmohan the tailor and his granddaughter Abha join the ceremonial ribbons together and measure them, making the unfinished work visible. Rainwater still cannot flow away, rendering the splendour of the inaugurations meaningless. At last the masons clear the old outlet and build the remaining stretch. Once the water runs freely, the work is handed over without another ceremony. Measurement, repair and the outcome of work —not a red ribbon—become the true marks of development.

Story 249 · A Distinguished Family

A gleaming sign proclaiming 'Distinguished Family' is fixed to the gate of the Jha household. Inside, a room is crowded with awards, certificates and honours accumulated over generations, yet the elderly Subhadra Devi has no permanent room of her own. Her granddaughter Gauri begins asking why. The family sorts through its possessions, moves the old distinctions to suitable places and sets aside one room for Subhadra Devi's lasting use. Rain continues to soak the sign at the gate. Indoors, however, a person's privacy and comfort are, for the first time, considered more important than prestige.

Story 250 · The Day of the Rumour

An anonymous message spreads through the village messaging group, claiming that every household must place a blue bucket outside its door for a tap-water inspection. Without checking the source, people forward the message and spend the night guarding their buckets. The office confirms that no such inspection has been scheduled. Arun Sir, a teacher at the school, teaches four questions: where, when, from what source and under whose responsibility? When a new rumour warns of a power cut, the

villagers do not repeat it unquestioningly; they ask for evidence. Thoughtful questions begin to take the place of fear.

Story 251 · The Topper's Photograph

A photograph of Rashmi, who has scored ninety-four per cent in science, hangs proudly on the school veranda. Directly opposite it, the laboratory is locked, its interior filled with boxes of old examination papers. At the felicitation ceremony Rashmi speaks not only about her marks but also about the absence of practical experiments. With the help of a student named Naina and the teachers, the laboratory is cleared, the apparatus is brought back into use and regular practical periods are fixed. The photograph is not removed. Instead, the open door facing it makes visible the distance between examination marks and education.

Story 252 · The Cleanest House

Hoping to win the 'Cleanest House' competition, Sarita Devi polishes her courtyard until it shines, but the unwanted rubbish is thrown into the field of her neighbour Jaykali. The inspection team asks where the waste actually goes. Sarita and her family begin separating refuse, making compost from biodegradable matter and arranging to pass on materials that can be used again. Her house does not win the prize, yet the neighbouring field is cleaned and their relationship improves. Neetu's question makes clear that the responsibility for a clean home extends beyond its own walls.

Story 253 · The Felicitation Ceremony

Harinarayan Jha is chosen for an honour recognising forty years of postal service, but both banner and certificate print his name as 'Harinandan'. The organisers worry about photographs and the ceremony's prestige, while the question of the recipient's real name is treated as secondary. The mistake has to be corrected, and a conspicuous strip bearing the right name is placed over the certificate. People comment on how the photograph looks; Harinarayan says that having his name right is enough. Later, an ordinary official envelope addressed correctly gives him a more immediate sense of being recognised than the formal honour did.

Story 254 · A Speech Against Cheating

Nirmal Jha is asked to deliver the main address during the school's anti-cheating week. While preparing his speech, he must confront the question of acknowledging ideas taken from other sources. Anupama, a student, and the ensuing discussion at school help him recognise the contradiction in concealing sources while preaching against copying in examinations. After

the speech, a register is introduced for recording sources. While supervising an examination, Nirmal Babu maintains discipline without humiliating the pupils. He does not erase his own search history: acknowledging his mistake has itself become part of his education.

Story 255 · The Library Inauguration

The library opens with great pomp, but eighteen locks have been fitted to protect just sixteen books. Naina wants to read, yet keys, registers and permissions obstruct her at every turn. A village discussion reveals how keeping readers away in the name of protecting books defeats the very purpose of a library. The unnecessary locks are removed, simple rules for borrowing are adopted, and children begin taking books home. A year later, the turned-down corners of the books are evidence that they have been read, not merely signs of damage.

Story 256 · The Chairs of Caste

The community hall has twenty-eight identical blue chairs, yet at meetings people arrange themselves according to an old hierarchy of caste and family. A girl named Neelu draws a map showing the chair numbers and where everyone actually sits. Even when the numbers are changed, the old order of places reappears. In conversation, the villagers realise that, though there is no written rule, inherited positions have settled into the habits of their bodies. At the next meeting, chairs are moved according to people's needs and the work before them. Neelu writes that no seat is permanent. Equal chairs can finally become an opportunity to sit together as equals.

Story 257 · The Digital Village

A shining sign at the entrance to Bankatta announces a 'Fully Digital Village', but mobile-phone signals do not reach several hamlets. The public service centre has a computer, yet submitting applications remains difficult. Arati measures the actual signal strength in different places and prepares a new map. Neither an official inspection nor the board's solar-powered light proves that a service is available. The southern hamlet is still without network coverage. Arati leaves the map incomplete and refuses to write the word 'fully', for the true measure of technological achievement lies in whether people can actually use it.

Story 258 · Proof of Poverty

Kamli Devi makes leaf plates and works as an agricultural labourer to keep her daughter Meera in school. To obtain student assistance, she needs a

poverty certificate, officially issued free of charge. Yet securing it costs journeys, photographs, copies of papers, lost wages and four days of her mother's labour. Meera records the real expenses on a separate sheet. The application is eventually accepted. When a neighbour comes to obtain the same certificate, Kamli shows her both the line stating 'zero fee' and the account of what it truly costs. The story exposes the gap between the government's 'free of charge' and the experience of the poor.

Story 259 · The Silent Committee

At a women's sewing cooperative, workers complain that their wages are being entered too low, but they are advised to remain silent in the name of the complaint box's 'confidentiality'. Sunita and the other workers compare the number of bundles they have completed. An inquiry uncovers a difference between the register and the recorded receipts. The committee arranges to protect the complainants' names while openly checking the facts. Beside the complaint box, a board is put up showing each issue and its progress. In the end, the committee's silence no longer means suppressing people's voices; it means being quiet enough to hear them.

Story 260 · The Ideal Marriage

Shashibhushan Jha campaigns against dowry, but as preparations begin for his son Aniruddha's wedding, expectations emerge little by little under the names of household goods, a bed, a scooter and gifts. Through five questions, Komal identifies the gap between the proclaimed ideal and what happens at home. Mrinalini asks for a say in decisions about her new life and its expenses. Instead of slogans at the ceremony, the family's actual demands become subjects for discussion. After the wedding, the couple buy a bed with their own money. The household's claim to be 'dowry-free' ceases to be an easy certificate and becomes a principle that must continually be tested against its conduct.

Story 261 · Everyone's Opinion

At a meeting of the village council, everyone declares in unison, 'We all think independently.' Yet the decision has already been shaped by familiar routines and the voices of the influential. Kanak asks that dissenting opinions be recorded. Ballot papers, vote totals and the reasons for each decision begin to be kept separately. Not everyone is entirely satisfied, but disagreement can now be acknowledged openly. The signboard loses its collective boast about 'independent thinking'; only 'Open Forum for Discussion' remains. At the next meeting, many voices are heard instead of one.

Story 262 · The Recipient of the Award

Naval Kumar helps villagers fill out their applications. While completing the contact field on an award nomination for the elderly Sarayu Kaka's community service, Naval writes his own name. The award goes to him, although Sarayu Kaka has done the actual work. The trust's rules do not allow the name to be changed. Naval understands that the convenience of paperwork can become an injustice in the distribution of credit. On the next nomination, he clearly enters the name of the person who served, Sushma Devi, and identifies himself only as the one who filled out the application. The brass plaque he received becomes a paperweight on his desk.

Story 263 · A New Rule

At the cooperative seed store, one new rule after another has been written in an effort to manage the crowd of farmers, yet the queue remains jammed at the entrance. Examining the old orders and the actual route through the store, Neelima notices that a cupboard is obstructing the doorway. Moving it proves more useful than changing Rules Eighteen, Nineteen and Twenty. As soon as the entrance is clear, distribution proceeds smoothly. The old orders are not thrown away. A note is placed above them recording what has been learned: before making another rule, look at the obstruction that actually exists.

Story 264 · The Cupboard Inside

To repair a damp wall, the family must move the iron cupboard standing against it. When the doors are opened, neglected matters come into view: the division of papers into originals and copies, the elderly Kamala's documents and letters concerning Sushma's own health. The family sorts the files, marks their dates and shares responsibility for the keys. One shelf is left empty. Finding an old recommendation for a blood test, Sushma decides to visit the health centre herself. Though the documents are put away again, the care of the entire household is no longer left to her alone.

Story 265 · Two Hours on the Roof

Everyone else has gone to a wedding procession, leaving Shailaja Devi at home because of pain in her knees, with her daughter-in-law Kanak. On a hot night in the month of Jeth, two quiet hours on the roof give them their first uninterrupted chance to hear about each other's interests, weariness and unspoken expectations. The mother-in-law learns that Kanak's attention to her phone is not a form of neglect; Kanak realises that Shailaja needs time of her own for reading. Later, room is made for visits to the

library, and conversation finds a new place amid the household chores. Both women come to see that not every task has to be completed at once.

Story 266 · The Daughter-in-Law's Room

When the new house is built, Sudha Devi, the mother-in-law, wants to keep her promise to give Madhavi a separate room. Gradually, however, it fills with trunks, quilts and stored household goods. Madhavi wants a place where she can sit and write. After an argument, the family clears some space on a shelf and puts a low bed in the room. It does not immediately become entirely private. But one day Sudha Devi asks Madhavi before putting a new blanket inside. That small question marks the beginning of a real right to the room.

Story 267 · The Key to Her Parents' Home

Even after her marriage, Anima keeps the old key to her parents' house on her key ring. Her husband Ajit and other family members see it in the light of the household's changing relationships. When a new bell is fitted at the entrance to her parents' house, the old habit of letting herself in without asking begins to change as well. Anima reflects on what she means by the word 'home'. In the end, she uses the key to lock the empty house. The bell remains a signal for visitors at the door, while the key stays in her own bag. Her sense of belonging has not ended, but it has changed its form.

Story 268 · The Cost of Sewing

Sudha's sewing machine helps pay the household expenses, yet her earnings are regarded as small and uncertain. Pramod's salary, household insurance, the children's needs and the expenses of Sudha's sewing customers have all become mixed together in a single domestic account. Sudha prepares a separate register of measurements and payments, showing where the money from her work has gone. Gradually, the family learns to recognise sewing as a genuine economic contribution. Her daughter Ragini sees that words change slowly, but accounts can be corrected first. Replenishing a small reel of thread gives tangible form to labour that has long remained invisible.

Story 269 · The Examination Form

The last date for submitting Ragini's Bachelor of Science examination form is 12 September; the next instalment of her brother Raushan's coaching fees is due on 13 September. The family has limited money and at first treats Raushan's expense as the more urgent one. Ragini speaks plainly in defence of her right, and the family reconsiders its priorities in

education. Her form is submitted on time, while Raushan arranges to defer the date of his instalment. The two dates are marked separately on the wall calendar. The futures of the two children no longer block one another's way.

Story 270 · The Kitchen Door

In the house at Rambagh, the kitchen door hears everyone's instructions from early morning. Kiran must prepare Ritu's school lunchbox, Shailesh's rotis, Harimohan's porridge and the household's other needs at the same time; the hours of Phulo, the woman who works in the house, are also overlooked. Whenever something is late, Kiran takes the blame. A timetable written in chalk helps everyone see that each task has its own limits. Phulo writes down the time she needs for her tea as well. The open kitchen door becomes a place not merely for giving orders, but for understanding one another's time.

Story 271 · The Red Box

Bhagirathi Devi's red iron box has remained locked for years. The family's curiosity, the daughter-in-law's sense of entitlement after long years of service, and granddaughter Aditi's belief in personal privacy turn the box into a source of contention. Bhagirathi reserves the right to decide what she will give, to whom, and when. Gradually the family understands that caring for someone does not confer ownership of all that person's private possessions. In the end the grandmother does not open the box. Instead, she lets Aditi choose something from a little pouch of buttons. The locked box is no longer a symbol of anyone's defeat.

Story 272 · The Sister's Telephone

Every member of the household has a customary time for receiving telephone calls, yet questions are raised about daughter Mrinalini's late-night calls. A schoolteacher, Mrinalini is helping her pupil Kajal through a crisis; to her family, however, the contact at such an hour looks suspicious. Once Kajal's difficulties and need for safety become clear, the calls acquire another meaning. A place is arranged for charging the telephone in Mrinalini's room. At the end, a simple message arrives from Kajal, and the family does not ask who has sent it. The telephone becomes an instrument both of Mrinalini's privacy and of her responsibility.

Story 273 · The Young Woman Who Rented a Room

Anamika, a hospital nurse, often returns late to her rented accommodation after a night shift. Her landlady, Rampyari Devi, is bound

by old rules about the gate's latch, the neighbours' watchful eyes, and the hours at which a woman may come and go. A conversation about Anamika's work and her need to enter safely raises the question of who has the right to a key. Thereafter, other women's journeys at night, too, begin to seem an ordinary part of neighbourhood life. When Anamika eventually moves away, Rampyari Devi still finds herself listening for the latch; in time, however, the neighbours no longer wake at the sound of the gate.

Story 274 · The Gift of a Sari

With affection, Renu Didi gives Madhulika a blue sari. Yet the giver's expectations persist: when and how it should be worn, and what should be done with the cloth left over from its stitching. Madhulika is caught between gratitude and her own preferences. In conversation, Renu comes to understand that giving a present does not mean retaining permanent authority over its use. Madhulika considers making a little pouch for bangles from the spare fabric. This time, when she picks up the scissors, she does not feel that she must first seek anyone's permission.

Story 275 · The Dining Table

When a dining table with four chairs arrives, everyone assumes that the old arrangement of sitting on low wooden seats has changed. But the order in which meals are served, the places allotted to men and women, and the customary division of domestic labour survive alongside the new furniture. A child's drawing and the family's daily conduct bring that difference into view. Little by little, the right to sit at the table changes. At last, seeing Madhavi seated in the chair he usually occupies, Ayush unfolds an extra chair for himself. A four-chair table accommodating five people becomes an image of a changing social order.

Story 276 · The Aunt Who Kept Silent

Everyone in the household has come to regard Aunt Sharda's silence as part of her easygoing nature. Her granddaughter Anvi begins to recognise the wishes concealed beneath it. The family makes decisions about the neem tree and the arrangement of the courtyard without asking Sharda's opinion. Speaking with Anvi, Sharda explains how difficult it becomes to express a wish when others have already decided what one must want. Gradually the household learns to wait for her answer. At last, when asked where the pot of holy basil should stand, Sharda herself says, 'Here.' Her decision is accepted.

Story 277 · The Mirror at the Beauty Parlour

Before her wedding, Surabhi sits before the large mirror in a beauty parlour. Malati asks her to choose how she would like to be made up, but numerous notes from relatives and acquaintances have already attempted to dictate her complexion, hairstyle and appearance. Surabhi states her own preferences clearly, accepting some suggestions and rejecting others. After the wedding, she sees in a smaller mirror her tiredness, laughter, a smudge of kohl and the adornment she chose for herself, all together. Without the frame imposed by other people's expectations, her face seems more fully her own.

Story 278 · The First Month at Work

Sanjana's first job begins like a celebration in the household. Once her salary arrives, various members of the family try to decide, each according to their own calculations, how her earnings should be spent. Sanjana is willing to contribute to household expenses, but does not accept that others should command her entire income. She writes down separately the cost of her bus pass, her personal expenses and her share of the family's needs. During that first month, a new boundary takes shape in the household's conversations about money. Setting down her second payslip, Sanjana understands that her salary is an important part of the household, but is not the whole household.

Story 279 · The Old Petticoat

As the family sorts through old clothes before the rains, Sudha Devi's worn petticoat comes to light. Its seams, stitches in mismatched colours and repeatedly patched fabric bear witness to years of want and unacknowledged household labour. At first the younger generation calls it rubbish; then they begin to hear the history of each repair. There is no easy decision about whether to preserve the garment or put it to use again. At the end, Anwita looks at a new, crooked yellow stitch and understands that a family's history lives not only in celebrations but also in the unseen mending of clothes worn thin.

Story 280 · The Guest Room

Devaki Devi's large house has four bedrooms, yet none is permanently her own. Her bedding is moved repeatedly to suit the convenience of other family members and their guests. Her granddaughter Isha questions this arrangement. Slowly, Devaki begins placing her belongings in the guest room and making it a settled place for herself. The sign on the door still reads 'Guest', but her clock now hangs inside. For the first time she can go

to sleep without wondering where she will be expected to lie down that night. The beginning of a right to private space requires no new construction, only a different use of a room already there.

Story 281 · Hidden Savings

Malati Devi does not keep her emergency savings in a single box at home. Small sums paid in advance and entered in the account books of the grocer, milk seller, pharmacy and vegetable vendor provide an invisible reserve. When a crisis strikes the household, the usefulness of this money becomes apparent. So does the question raised by her husband, Jagdish Babu: who has the right to decide how those savings will be used? Malati makes it clear that she retains authority over money she has saved while managing household expenditure. The family establishes a shared emergency envelope, but Malati continues her own practice of putting small amounts aside.

Story 282 · The Woman Missing from the Photograph

While preparing a photographic display for an eighty-fifth birthday in the family, Ishani is astonished to discover that Manjari Devi's face is absent from the old albums. Yet Manjari knows the dates, objects and arrangements associated with every family occasion. She has organised each celebration while remaining behind the camera herself. Ishani raises the question of this absence. In a new family photograph, Manjari is placed where her face can be clearly seen. Her name is written beneath it without identifying her by any service performed or account kept. For the first time, she enters the family's visible history simply as herself.

Story 283 · The Nameplate

The loose nameplate at the gate bears only the name of Shridhar Jha, a retired headmaster. While repairing it, the family finds behind the old plate a date written by Shailaja Devi, along with the dimensions of screws and traces of her care. Although a woman's labour has sustained the house, its outward identity has belonged solely to a man. The discussion of a new plate becomes a discussion of whose names deserve to appear. At last, Shridhar, Shailaja, Naveen and Archana are all named on the same plate. In the rain, Shailaja wipes it from one end to the other. Now every name can be seen equally.

Story 284 · The Third Step

The veranda of Kedar Mishra's house has always had two steps. One night his wife Girija Devi, feeling her way with a walking stick, encounters a third; by daylight, it has disappeared. Other members of the family, too,

sometimes see or touch the impossible extra step. Counting and measuring produce no certain explanation. Seeing Girija's difficulty with her knees, the family asks a mason to build a sloping ramp. The steps once again appear ordinary, but the tapping of Girija's stick leaves three small rings in the earth. Amid an inexplicable occurrence, a practical improvement has become permanent.

Story 285 · The Calendar in Reverse

The date has been fixed for selling the old house and moving to a new one. While sorting their belongings, Neelmani Jha begins to see impossible dates on the calendar: '31 September', followed by '32 September'. Within this strange extension of time, unfinished decisions about leaving the house, an old chair, the basil shrine and other possessions charged with memory present themselves one by one. The family eventually moves, but the mystery of the extra calendar leaves remains unresolved. Dates proceed normally in the new house, while the impossible pages lie pressed away behind them. The inward time required to leave a home does not obey the calendar's straightforward arithmetic.

Story 286 · Air from the Closed Room

An extraordinary current of air slips through a narrow crack in a room shut for three months during repairs. Though the season outside is Kartik, the air within sometimes carries the scent of spring blossoms, sometimes the heat of high summer, the damp of the monsoon or the chill of winter. Shivkant, Malati, Meera and the mason look for an explanation; whenever the door is opened, that particular season vanishes. The experience persists even after the repairs. One winter night Malati feels warm air passing through the crack in the closed wooden door, but does not open it. The mystery endures precisely because its uncertainty is left undisturbed.

Story 287 · A Shadow Without an Owner

At noon in Madhubani market, a human-shaped shadow appears regularly in motion, although there is no body to cast it. Sulochana and the other shopkeepers observe its direction and pace, and the way it behaves among light and shade. The shadow does not climb over objects; at times it breaks apart in a patch of brightness before joining itself together again. At first people search fearfully for its owner. Later they learn its route and adjust their daily movements. Understanding it no longer seems necessary. Among all the familiar shadows cast by familiar bodies in the market moves one shadow that follows a path of its own.

Story 288 · The Station Absent from the Map

On his regular railway journey, Prabhakar Mishra, a records clerk, sees an unfamiliar station called Kadambbari between two stations he knows well. Railway maps, enquiries and other passengers' accounts offer no proof that it exists. More strangely, it can be seen only through a particular gap beside the fourth window of one carriage, and a camera cannot capture it. Later, even when that carriage stands motionless in the railway yard, Kadambbari remains visible through the same window. Prabhakar crosses out the station's dot on his sketch map and draws a small rectangle representing the window instead. The place exists less upon a map than within the strange limits of seeing.

Story 289 · The Clock That Chimed Halfway

The wall clock in Devanand Mishra's house sometimes stops in the middle of striking the hour. During that half-chimed moment, ordinary actions—a door being closed, a thread being pulled, a betel leaf being folded, a drop of water falling—remain unfinished. Movement resumes when the chime is completed. The family tries counting and recording these extraordinary intervals of time. Even the thought of repairing the clock cannot dispel the mystery of what they have experienced. In her notebook Vaidehi writes 'half-chimed' in place of an ordinary date. The story opens a strange interval between the measurement of time and its lived experience.

Story 290 · The Second Door

One day a second door appears of its own accord in the western wall of Mahendra Jha's rented flat. When it is opened, it reveals whichever room in the home happens at that moment to be empty; as soon as someone enters that room, the view changes. At first the family makes curious use of the door, but the prospect of unwanted glimpses into private rooms soon becomes troubling. When they prepare to move, the emptied rooms continue to appear through it as the furniture is taken away. The family leaves for a new home, while the question of what that second door can see remains unanswered in the abandoned flat.

Story 291 · The Lane That Changed Its Name

Each morning the blue street sign in a lane of Madhubani displays a different name: sometimes Neem Lane, sometimes Kamala Road, sometimes Shital Lane or Chandni Lane. Covering the sign and sealing it make no difference. Ira Jha keeps a record of the changing names, but yesterday's name gradually becomes uncertain even in people's memories.

The house numbers and the objects along the lane remain in place; its name and the sound of that name do not. Ira draws a small plan of the neighbourhood, knowing that a place cannot be held in memory by its name alone. Throughout the mystery, ordinary life in the lane continues.

Story 292 · One Window Too Many

Vaidehi and Nilabh decide to sell their old house, which has three windows. Suddenly a fourth appears in the estate agent's photographs and the printed sales brochure, although the actual wall still has only three. The disagreement between image and house confuses prospective buyers. Some newer photographs show three windows, while the old printed copies retain four. Eventually another family takes possession of the house and Vaidehi moves to a smaller home. Her daughter Aparna preserves the two images side by side, with a blank sheet between them. The contradiction between what is seen and what exists is never resolved.

Story 293 · The Room of Voices

After a tenant leaves, a room in Raghunath Jha's house falls vacant. Voices begin to be heard from it, speaking words that the next tenants will actually utter several days later. The wonder is that, once a sentence has been overheard in advance, the person who heard it cannot hear it again when it is spoken in the present. Raghunath must choose between the temptation to hear the future in full and the fear of losing the experience of the present. When the new family arrives, he refuses to listen beforehand to the rest of an unfinished sentence. At last the room fills with real voices, and he can hear an entire conversation as it happens.

Story 294 · Bus Number Zero

With her temporary employment over, Ishani Mishra stands at an old bus stop at night. Three roads remain open to her: return to her mother's home, stay with a colleague, or accept a new job in Purnia. An extraordinary bus arrives bearing the number 'Zero'; its stops seem to change in response to the passengers' decisions, whether vague or firmly made. Listening to the experiences of the others, Ishani realises that the bus cannot bear the burden of choosing for her. She gets off at a stop and resolves to take the next step herself. A reply about the new appointment is still awaited, but she no longer runs from the question of where she wishes to go.

Story 295 · A Rain of Paper

With the season's first raincloud, paper begins to fall upon Laheriasarai instead of water. Sentences that people have crossed out, corrected or

rejected descend from the sky as sheets of writing. In fear, people stop striking out their mistakes, and both writing and decisions grow corrupted. Later, a real shower soaks the heaps of paper. Nandu, a printer, crosses out an incorrect date and writes the correct one, encouraged by Vibha to make the correction. Sheets continue to fall, but the act of correcting is not abandoned. The visible spectacle of past mistakes is not allowed to become a greater fear than the duty to put things right.

Story 296 · The Pond on the Map

An old municipal land map shows Matiyahi Pond, but no trace of it survives in the open ground of the present day. While planning a drainage channel, Mridula Karn notices an uncanny connection between the blue pond on the map and water in the actual landscape. As a corner of the map fades, water begins to appear in the corresponding part of the field. Officials and local residents alter their habits in response to the movement of the water. At last the southern portion of the original map turns white, and a small pond emerges in the earth behind a tea stall. Paper and land continue to change one another's forms.

Story 297 · The Reversed Reflection

One morning Meera notices that her reflection in the mirror performs an action different from, or contrary to, that of her body. Gradually it becomes apparent that the reflection is not always copying her in the present: sometimes it completes an old, unfinished gesture only much later. The family covers the mirror, tests it and waits, observing its peculiar behaviour. A farewell wave made months before is completed in the reflection long afterwards. Meera smiles and walks back inside, but in the mirror her smile has yet to appear. The time inhabited by her image has parted company with the time of her life.

Story 298 · The Wednesday That Vanished

On Tuesday night all five members of Sudhanshu's family sit down to dinner; the next morning arrives as Thursday. Wednesday has disappeared from the family's experience, although everyone outside the house has lived through it. Investigating the anomaly, they discover that Wednesday returns in its proper place if one chair at the table is left vacant on Tuesday night. They begin taking turns on the low wooden seats and leaving one space unoccupied. The sequence of days resumes. Richa understands that the trouble was not Wednesday's empty chair, but their insistence on filling every place on Tuesday night.

Story 299 · The Fifth Corner

From outside, the room in Saroj Mishra's ancestral house where the family keeps its papers is square. Inside, however, an impossible fifth corner slowly begins to grow. As the family discusses dividing the house and reckons the ownership of old possessions, they take measurements: the outer wall remains straight while the inner angle shifts. Their experiments show that the corner stops growing whenever someone sits within it. At last Saroj puts aside the chalk used for measuring, draws a low wooden seat into the corner and opens a book. Rather than continue trying to count an indefinable space, she chooses to inhabit it.

Story 300 · An Unfamiliar Home of His Own

Returning after three days away, Vinay Jha finds that familiar objects have changed places throughout his home. The key, the lock and the house itself are the same, but the arrangement of bedding, spice tins, chairs and cupboards feels strange. Night after night he measures and records the changes, until he begins to see that some of these arrangements accord with the old wishes and memories of other members of the family. The house is not merely a reflection of his private habits. In the end he sits in a chair placed in its new position and draws an empty chair a little closer. He begins to accept his own home with its uncertainties.

Katha-Tridhara · Volume I

Stories 1–100

Story 301 · The Bell That Never Rang

As Madhavi and her daughter Ira prepare to sell their ancestral house in Laheriasarai, they discover the mystery of a strange bell at the front door. It makes no sound, yet each press of its button causes a lived event in the house to vanish from both their memories. The tile fixed the wrong way round, the rail installed to support the grandfather, and an incident that revealed the mother's affection gradually become unfamiliar to them. Written accounts can preserve the facts of these occurrences but not the feelings once attached to them. When they remove the bell, it disappears, only to reappear in its old place. In the end, instead of pressing it, Madhavi knocks three times on the door. The sound awakens a living childhood memory of her mother coming to open it.

Story 302 · The Road That Turned Back

Archana Jha, a road surveyor, sets out near Benipur to examine an alternative route for use during floods. Yet whichever way she tries to go, the road circles back and deposits her at the gate of her ancestral home. Her distance meter, survey notebook and chalk markings are all correct, but none can explain what is happening. Jitan Miyan, an experienced driver, encounters the same impossible turning with her. Archana manages to get out by way of the railway line and the ridges between the fields, but every attempt to leave the house by road fails again. At last she understands that the bewilderment belongs to her journey, not to everyone else's. The road becomes her way of returning home, while the path along the rear field boundary becomes her separate way out into the world.

Story 303 · The Other Night Sky

For a few minutes around midnight, Kailash Mandal, the night watchman at a school, sees unfamiliar constellations overhead. In place of the familiar Pole Star and Great Bear, he sees a tilted sickle and a ring of seven stars. A schoolgirl, Ragini, believes him and begins keeping regular observations and records. The teachers, too, witness the phenomenon, yet the sky remains ordinary through a telescope or on a mobile phone. Even its reflection in the pond does not change. After Ragini goes to Darbhanga for her studies, she checks by telephone from two different places: the sky before Kailash's eyes is different, but the instruments used by both show the same sky. The story leaves unresolved the distance between witnessed truth, measured evidence and the trust shared by two generations.

Story 304 · The Woman Cutting Onions

Before her kitchen is rebuilt, Saroja Devi cuts onions on an old wooden board and recalls the decisions in her life that family conversations have largely forgotten. Moving the kitchen window, staying alone with the children during her daughter's examinations, opening a bank account in her own name and starting a women's savings group were all initiatives of her own. Her granddaughter Anu wants to write down five important events from her grandmother's life. In answering her, Saroja acknowledges for the first time the importance of the things she herself had considered small. The old chopping board is taken away, and the first mark of a knife appears on the new one. The beginning of the new kitchen becomes inseparable from this newly claimed sense of herself.

Story 305 · The Bus Window

Returning home on an evening bus, Madhav Jha is disturbed by his reflection in the window. The face is his own, yet he cannot reconcile it with the person he feels himself to be. The carefully composed photograph taken for his office identity card seems far removed from the untidy image in the bus glass. At home, too, he catches himself involuntarily straightening his hair and chin before the mirror. Gradually he understands that he has been fashioning even his face to fit the gaze of others. On another bus journey he looks at his reflection without trying to improve it, and asks his wife to photograph him without advance warning. His unposed laughter seems more truly his than the carefully manufactured image.

Story 306 · The Hour for Filling Water

Manjari has been selected for a three-month course in the preservation of government records. Yet she is about to write declining admission because filling water at home, helping her brother Anshu prepare for the day and looking after her ailing mother all fall upon her. Seeing her yellow bucket in the queue at the tap, she realizes that the responsibilities of the household need not be hers alone. She works out a division of tasks: her father can fetch water, her brother can look after his own lunchbox, medicine times can be rearranged, and help can be sought from a neighbour. Initial reluctance within the family slowly gives way to cooperation. In the end her father takes the bucket and joins the queue himself, while Manjari goes to find out the bus timetable. A way opens for her to take the training without abandoning the work of the home.

Story 307 · The Empty Notebook

Retired teacher Govindkant Jha receives an invitation to write about his first day as a teacher for the school's centenary souvenir. The blank notebook unsettles him because the recorded date of his appointment is not the same as the moment when he truly became a teacher. Old registers, recollections and an incident involving a student from Bhutarang make him question the habit of judgment he had acquired through years of teaching. At first he crosses out and examines his lines with a red pen. Then he admits that understanding why a notebook is blank is harder than awarding a zero. Finally he decides to send the notebook with all its cancellations and additions, rather than a polished, self-congratulatory account. In its incompleteness he discovers something of his real experience as a teacher.

Story 308 · The Broken Comb

While sorting old possessions before the house is repainted, Shailaja finds in her mother's tin a black comb with three broken teeth. It brings back what she believes is a childhood scene of her mother combing her hair. When she speaks to her mother, however, she learns that the black comb was kept not for hair but for untangling threads along the edge of a bedsheet; a red comb was the one used on her hair. Shailaja realizes that memory can mingle separate events. With the broken comb she begins straightening the fringe of an old sheet. At last it ceases to be an inert keepsake and becomes an instrument of work again; even the gaps left by its missing teeth prove useful.

Story 309 · Hands Choosing Vegetables

For twenty-seven years Ramlochan Jha has chosen every brinjal, tomato and pointed gourd from the vegetable stall with extraordinary care. Reflecting on this market habit, he remembers decisions concerning his son Amresh's education and other family matters in which, even while saying 'It is your choice', he had narrowed other people's options through his own reasoning. This time he ventures to buy a blemished tomato and a crooked bottle gourd. In talking with his wife Malati, he begins to see that a choice must sometimes be made for oneself even when it may turn out badly. Slowly he learns to accept responsibility for his wishes instead of seeking flawless objects. The words 'What I want', written on the back of the shopping list, become the small sign of this change.

Story 310 · Winter Sunlight

Janaki Devi tells the time of day by watching a strip of winter sunlight move across her window. For a school experiment, her granddaughter Kavya marks the sunlit spots on the floor and records the hours on a clock. Her grandmother helps, but one observation is missed and clouds obscure the light at another appointed time. Their anxiety to capture every moment precisely reminds Janaki of the old wall clock she had kept five minutes fast. Through the child's experiment she comes to understand that time continues even when sunlight cannot be seen; not every passing instant has to be recorded. By evening the marks on the floor have been wiped away. Janaki Devi begins to experience the night as possessing a life of its own, not merely as a wait for the next morning.

Story 311 · The Milk Boiled Over

Pramila Devi knows her household so thoroughly that she can tell when the milk will rise, where everyone's belongings lie and when each person will need something. One day the milk boils over, astonishing the family. The small mishap exposes to her the burden of being the woman who is never supposed to make a mistake. She understands that her habit of taking care of everything for her husband and children has also deprived the others of chances to learn. The duties of making tea and watching the milk are gradually shared. The next day Meera prevents it from boiling over, but Pramila feels, alongside relief, a faint hurt at becoming less indispensable. She accepts the feeling and begins to learn to sit quietly for a few moments with her hands free.

Story 312 · Before Opening the Envelope

Sudha Jha receives a letter from the college records office and is afraid to open it. For years she has placed the responsibility for abandoning her musical studies in her youth upon a single sentence spoken by her father. Searching through an old notebook of ragas and the college records, she discovers that the episode may not have been as clear as her long-held memory has made it. Even when the letter is opened, the truth remains inconclusive: how much was her father's prohibition, and how much her own fear? Speaking with her daughter Ira, Sudha admits for the first time that she does not remember exactly. She puts the music notebook and the archival letter away separately. She will no longer turn the unfinished history of that decision into one definitive accusation.

Story 313 · White Hair in the Mirror

Madhavi Jha is startled to notice the first white hair on her head. In her husband's family she is usually called 'the younger one', 'mother' or by some other name denoting a relationship. When a shopkeeper who does not know her addresses her as 'Madhavi ji', hearing her personal name becomes an extraordinary experience. The white hair deepens her awareness that neither her body nor her identity is wholly defined by her family roles. She has no wish to pluck the hair out or dye it. Hearing her husband Arun address her by her own name brings her a different kind of pleasure. Everyday life at home goes on as before, but the name 'Madhavi' once again becomes for her the sign of an existence that is independently hers.

Story 314 · The Empty Bowl

Nine-year-old Anshu is fond of his own bowl with the blue rim. When he eats rice and lentils from it, he initially thinks only of taste and a full stomach. But when his father's wages fail to arrive from the contractor, the family begins to fear a shortage of rice. Anshu starts to understand that rice being available in the shop and having the money to buy it are two different things. The measure of the grains left at home, the next day's meal and the subtraction problems he learns in school acquire a new meaning in his mind. The empty bowl no longer marks merely the end of a meal: it becomes a measure of uncertainty about the days ahead. Anshu begins to learn the difference between hunger and want.

Story 315 · The Bird at the Window

Prabha Jha's household runs by fixed times and an exact order. A small loose corner of the kitchen window's mesh has been awaiting repair for so long that the job is continually postponed. A bird comes to the window and plays with that corner, turning Prabha's attention towards the severity of the rules governing her day. Even in a sheet of paper made by her daughter Naina, she is identified chiefly as the 'mother' who does the work. Prabha thinks that order is necessary, but it need not make every moment compulsory. She stitches only as much of the mesh as is needed, serves the meal five minutes late and leaves a clean bowl to dry overnight. In these small pauses she finds a new space within her own time.

Story 316 · One Word Wrong

After eye surgery, the elder sister Saroj comes to stay with Vasudha. Following their parents' deaths in childhood, Saroj had brought Vasudha up and seen to her schooling. During a conversation Saroj inadvertently says udhaar, 'debt', in place of aadhaar, 'support'. The slip makes Vasudha begin

to see their relationship in terms of loans, sacrifice and accounts. Old school fees, Saroj's bangles, worries over money and the reversal of dependence in the present all return to the surface. Gradually Vasudha sees that affection may contain fear, expense, habit and help; one word cannot hold the whole of its meaning. Instead of treating her sister with a new sense of guilt, she learns to understand the human difficulties Saroj has borne. The old accounts remain, but no new account is opened in the name of 'Didi'.

Story 317 · New Sandals

Urmila Jha takes her worn sandals to be stitched once more, but the cobbler points out that the left sole has worn down more on one side. When she tries on new sandals, she begins to notice her gait, the narrow passage through the house and her habit of twisting her body to avoid a basket of utensils. She realizes that the body does not merely choose its routes; it also reshapes itself around the obstacles along them. Walking in the new sandals slowly teaches her to attend to the way she moves. The old pair is kept for work in the back of the house. In the end, instead of bending her body sideways in the passage, she moves the basket out of the way. A small adjustment opens up the possibility of changing the space around her, and not merely her own way of walking.

Story 318 · The Silence of the Afternoon

After Sunday lunch everyone in the house falls asleep, but Saumya cannot. When an attempt to read fails, she wanders through the rooms and at last lies down on the empty floor of the sitting room. Amid the sound of the fan, the coolness of the floor and a blue button lying under the divan, she experiences a silence in which she is required neither to do something for anyone nor to offer an immediate answer. The silence does not make her rebellious; it simply allows her a moment in which to discover her own wishes. By evening the familiar household tasks have resumed, but the next day she can say plainly that she wants to rest before beginning her studies. 'Doing nothing', too, has become a meaningful portion of her own time.

Story 319 · The Splitting Fingernail

A crack develops in the nail of the index finger on Vibha's right hand. The discomfort it causes in writing and domestic work leads the school clerk to begin using her left hand. A conversation with her mother reveals that as a child Vibha wrote with her left hand, until practice compelled her to learn to write with the right. Between the old competence of her neat handwriting and the natural ease she had forgotten, she begins thinking about her own identity. She does not blame her family; instead she considers how habit and inclination work upon each other. At school a new child

writes his name with his left hand, and his father does not stop him. Watching the different work her two hands can do, Vibha returns to writing the register with a changed understanding.

Story 320 · The Scent of Cut Fruit

In the workers' quarters in Doha, Aniruddh Jha learns from his companions how to cut a pineapple. At home his mother or his wife Neelima would usually have cut the fruit for him; abroad, amid a shared kitchen, exhaustion after work and friendship, the small task becomes his own practice. When he returns to his village, the smell of pineapple recalls not his ancestral courtyard but the friends, fan and shared plate in Doha. He understands that a home is not only one's birthplace: it can also be made of the people one lives with, labour, responsibility and little tasks repeated day after day. Cutting fruit among his mother, Neelima and Ishan, he makes not three portions but four. The last is for a neighbour's child, and the shared food joins together memories of his several homes.

Story 321 · Beneath the Fan

Laid up with a fever, Jaynarayan Mishra spends the day counting the rotations of a blue mark on one blade of the ceiling fan. Every revolution seems identical to the last, and the distinctions between the days begin to disappear. His wife Sharada reminds him, however, that the daily medicines, meals, need for support and small improvements in his health are all different. Waiting for their son Nachiketa's arrival also gives fresh meaning to the fan's apparently unchanging circles. When he grows stronger he walks as far as the veranda and feels the air outdoors. He returns to bed and looks at the fan again, but no longer feels compelled to count each turn: he has begun to perceive change within repetition.

Story 322 · A Half-Written Name

Renuka Mishra takes shelter from the rain in the municipal reading room and, while filling out a membership form, begins almost unconsciously to write her daughter Aditi's name. Years of completing school, competition and application forms for her daughters have trained the movement of her hand. Crossing out the unfinished 'Adi' and writing her own full name, she turns her attention towards her personal interests. Though she has taught her daughter to manage her own papers, Renuka's hand has not let go of its old habit. She reflects on the different meanings of earlier applications and signatures. Finally she joins the reading room in her own name and chooses a book by an unfamiliar writer. The sheet bearing the crossed-out name remains for her less a mistake than the trace of an old relationship in her life.

Story 323 · Before the Lamp Goes Out

A line drawn across the documents dividing the ancestral house is transferred to the courtyard as a line of white chalk. Naresh's and Mahesh's families agree to the arrangement for financial clarity, but Kusum slowly realizes that the line divides more than land: it also divides their common sitting space, the children's study and the glow of the evening lamp. Once the wall is built, movement between the two halves becomes difficult. Kusum and the others look for ways of leaving some passages open to each other's needs. Water can flow through a gap left by three bricks at the bottom, and Tanvi's book can rest on top of the wall. As the lamp goes out, darkness falls on both halves of the divided house, yet some bonds of their shared life remain unclosed.

Story 324 · Red Dust

Nayan is flying a blue kite from the roof when, below, a dispute over a field boundary intensifies between his father Nandkishore and Ramanand. The surveyor's measuring cord and the quarrelling crowd raise red dust into which the kite string becomes entangled. Nayan goes down into the field to look for his kite; he cannot fully grasp the competing claims of land ownership. Following its string across several parts of the field, he reaches the torn blue paper. The kite is broken, but one bamboo spar and the string have survived. Back at home Nayan ties a knot in the line so that he can make another kite. The colour of the dust remains an uncertain sign of that day's dispute.

Story 325 · The Three-Minute Procession

A procession enters a narrow lane in Shivmath for barely three minutes, but in the crush of the crowd milk is spilled, Sakina Chachi's guavas are trampled and the connection to the public tap is broken. Ramsevak the carpenter, Nasim, Sakina and Jhilmil separately take stock of the harm done in the lane. A child's abandoned sandal and scraps of paper left behind prolong the presence of the event. Jhilmil points out the difference in time: the procession has gone in three minutes, but the work it leaves behind continues for much longer. The tap is repaired by evening, yet the missing milk, crushed guavas, orphaned sandal and lingering stains show how long a brief political demonstration can remain in ordinary people's lives.

Story 326 · The Torn Drum

At Sonbarsa's spring festival, the old drum is in the care of Ganeshi Paswan. His son Mohan urges him to replace its weakened skin, but Ganeshi wants to preserve the sound of the old instrument. During the celebration,

amid the pull of ropes and many hands, the skin tears. At once different groups begin blaming one another. Ganeshi takes the drum home; later the torn skin is stitched and hung in the school without naming anyone as the culprit. The children ask different questions about what happened. A drum fitted with new skin sounds again, but the stitched old skin reminds them that a rupture may come suddenly although tensions have been gathering behind it for a long time.

Story 327 · The Truck at Night

On a truck carrying relief supplies through the flood at night, every passenger has a different worry. Saroj, the driver, fears erosion along the road; Dhanauti Kaki is anxious about the goat left behind at home; Ranjana tries to save her papers and ink; others are preoccupied with their families, earnings and the accounting of relief. When the wheels threaten to sink, several sacks are unloaded and Budhan probes the road ahead with a bamboo pole. Working together, they get the truck across the damaged stretch. Relief is distributed at Barhampur, while some sacks remain for the next journey. The passage reveals how a single calamity contains many private fears, though a safe way through it must be made together.

Story 328 · Flowers upon the Ashes

Fire has reduced the house of Rambabu Sah in Dharampur to ruin. His seven-year-old grandson Neeraj keeps looking in the burnt courtyard for his broken flowerpot and the earth it held. With Tejnath Kaka's help, the children clear away ashes, turn the soil, mix in manure and sow seeds. Tejnath explains that ash alone will not make flowers grow: work, suitable soil and time are all necessary. As the new house takes shape, marigolds and an unknown red flower bloom in the bed. Neeraj cannot say for certain what plant has sprung up where his grandmother's old seeds once lay, yet he does not pull it out. Beside the destructive memory of the fire, life begins carefully to flourish again.

Story 329 · The Blacksmith's Hammer

Madhavi, the daughter of Jagdish the blacksmith, has learned since childhood to work the forge, bellows and hammer. When her marriage is arranged, expectations from the groom's family and talk of a possible demand for a motorcycle bring tension into the household. The groom, Raghav, comes to the smithy himself and makes it clear that he wants no such demand. Jagdish hands him tongs for holding hot iron and tests him in his own way. At the farewell he gives his daughter a small hammer made to suit her grip. Remembering her father's old injunction, 'Keep your grip straight', Madhavi leaves for her new home. There, seeing a loose nail at the

window, she takes up the hammer herself rather than waiting for a carpenter. She has brought her hard-won skill with her.

Story 330 · The Glass of the Lantern

In Basahiya market, grocer Suresh Sahu and tailor Rahim Ansari are neighbours of many years, despite their frequent small disagreements. On a night when the electricity fails, a rumour of communal violence spreads through the market and frightens everyone. In fact, the panic caused by the rumour overturns a handcart, makes an elderly man fall and causes some damage. Suresh burns his hand saving Rahim's lantern, and the line of an existing crack in its glass lengthens. By morning it is clear that there has been no great fire or riot, yet to say that 'nothing happened' would be false as well. Rahim does not replace the glass at once. That evening light from the cracked lantern falls upon both shops, carrying the shared memory of rumour, fear and neighbourly fellowship.

Story 331 · Beneath the Bridge

On the day of the new bridge's inauguration, flags flutter, speeches are delivered and a platform stands ready above. Below its seventh pillar, however, Vimala, Bisesar and their children live beneath a tarpaulin. Bisesar himself worked as a labourer on the bridge, yet his family, displaced by its construction, has never received the resettlement they were promised. Their daughter Kajal, preparing for her examinations, asks why the names and rights of the workers who built the bridge have not been properly recorded. A strip cut from the ceremonial red ribbon ends up tied to little Chhotu's toy car. Bisesar wishes, above all, to have his own name entered correctly. As vehicles begin crossing the bridge that night, the family sets an old doorframe beneath it to give their shelter something of the appearance of a home. The bridge has joined two banks, but the question of those who live beneath it remains unanswered.

Story 332 · Paper and the Stick

At Sonbarsa, a dispute flares over the possession of land between Harinarayan's field and a parcel granted to Sarita, the widowed wife of Ramvilas Paswan. A government order, an old land document, the boundary ridge, the threat of a stick and the soil under cultivation all seem to support different claims. An old map preserved in the village school, together with traces of a silted-up watercourse, makes a fresh survey possible. It becomes clear that Sarita's legally allotted land lies not in the standing paddy but on the fallow strip to the south, where part of a cattle shed must be removed. Mahesh takes down that part of the shed. Rather than stand by and watch his humiliation, Sarita chooses to stay away. The boundaries are

eventually marked correctly. The incident shows that turning a right written on paper into justice upon the ground demands mutual understanding.

Story 333 · The Scent of Jackfruit

A rumour about a small quarrel at the bus stand spreads through Sonbarsa market until it becomes a fear shared by the whole community. Grocer Mahendra Sahu and his neighbour Nasim Miyan, too, grow wary. When a noise arises from Nasim's courtyard that night, people immediately suspect trouble; Mahendra, however, recognizes the smell of jackfruit and realizes that a ripe fruit or a fallen branch may have caused the disturbance. Together the neighbours remove the fallen branch. By morning it emerges that the tales attaching religion and caste to the original quarrel were groundless. Nasim's family sends the remaining jackfruit to Mahendra's house, while a young man named Binod helps the two households. The smell is unchanged, but its meaning has altered as fear recedes. What had seemed a warning of danger becomes an ordinary sign of neighbourhood life.

Story 334 · The Rumour of Five Shots

Two or three sharp reports are heard in the lane by the old post office. Chhotu runs off crying, 'Five shots!' One person makes the number six, another seven, until the rumour brings fear, shuttered shops and a stampede to the market. Those who claim to be eyewitnesses have, in truth, heard the noises but seen no gunfire. The police find no direct evidence of bullets; a blown transformer fuse and firecrackers from a wedding house offer explanations for the sounds. Even so, the tale continues to travel with a different number attached to it each time. Its consequences are real enough for Pawan, worried about his broken bottle of milk, and for people unable to buy their medicine. By morning the figures scrawled on the wall are erased, but different numbers of imaginary 'shots' survive in people's memories.

Story 335 · The Torn Flag

On the day of a political procession, flags from rival groups arrive for repair at Shanti Devi's little tailoring shop in the old market. With the torn cloth come the strain that ripped it, rusted wire and the political meanings attached to its colour. Shanti Devi does not mend the flag of one side before the other; she begins with whichever piece of fabric is most badly torn. Her daughter Rekha observes that, to a needle, the important thing is the place where the cloth has split. The young men worry about whether the patches will show, while Shanti Devi is concerned with stitching that will hold. By

evening, when the uproar around the flags has subsided, school shirts, aprons and sacks for grain become urgent again. Threads of several colours, still useful for ordinary work, lie side by side in the same box.

Story 336 · The Imprint of a Boot

Police searching for stolen copper wire arrive at the house of Harinath Sahu, who repairs bicycles. They turn his belongings upside down, leave muddy boot prints behind and break the marigold planted beside the sacred basil. A boot also stamps the mathematics notebook of his twelve-year-old daughter, Revati. Later the real thief is caught and Harinath's innocence is established. Yet the neighbours' suspicion and the humiliation suffered by the family do not vanish with the official correction. Revati draws a pencil line around the muddy mark in her notebook and preserves it. 'What if someone comes back and says nothing happened?' she asks. Rain washes the footprints away from the courtyard, but the one on the page remains carefully bounded and measurable: a child's record of an injury that an acquittal alone cannot erase.

Story 337 · The Boat in the Night

During a night of flooding, the exhausted boatman Jagarnath Mallah takes his boat out once more: Sunita, a pregnant woman trapped in her house, must be carried immediately to safety. While people are boarding, a cry for help comes from Harinarayan's family. In the fierce current, deciding whom to rescue first becomes an agonizing matter. Jagarnath gets Sunita to a raised platform, signals his intention and turns the boat towards Harinarayan's home, bringing out the family and their feverish child. At daybreak he helps other stranded people as well. Afterwards the villagers debate whether he chose rightly. Jagarnath knows that decisions made in darkness and floodwater cannot be judged apart from the space in the boat, its load, the current and the little time available. Each new crossing changes the possibilities of the next.

Story 338 · A Shard of Glass

An accident at night shatters the front pane of Harinath's spectacles shop. Responsibility for the collision, the cost of replacement and the danger posed by broken glass must all be dealt with. His eight-year-old daughter Meera, however, discovers that a worn, safely rounded piece of the old thick glass reveals a slender band of colour when sunlight strikes it. The new pane is fitted and the damage accounted for separately, but the harmless fragment is kept for study. Day after day Meera waits for the sun to reach the right angle. Her father explains that some broken things must be thrown away, some can be repaired, and some come to serve another

purpose. The old glass is not made into a celebration of the accident. It becomes instead a means of learning about light and the care with which damaged objects must be handled.

Story 339 · The Field Turned to Ash

A fire in the night reduces Ramlochan Yadav's wheat crop to ash. At dawn, before anything else, he tries to find the field's former boundaries, for the uniform layer of cinders has obliterated the ridges and irrigation channels. With neighbouring farmers he restores the markers and requests an official inspection. Whenever a measurement proves mistaken, he has it corrected at once. When the first compensation record omits eight kathas of land, he again asks for a revision. The payment cannot make good the whole loss, but it helps him obtain new seed and fertilizer. The ashes are turned back into the earth, and sowing begins anew. The preservation of the true boundaries becomes the foundation of rebuilding, a necessary act of accuracy amid devastation.

Story 340 · A Watch Without a Gun

Jagat Sahu, the ageing watchman of the cooperative seed store, carries no gun. He has a brass whistle, a set of keys and a habit of reading the records carefully. One night several men produce an old paper and try to take sacks of seed from the store. Jagat notices that the serial numbers do not agree. He blows an unusual pattern on his whistle, bringing the watchman from a neighbouring post to his aid. An inquiry the next day uncovers the irregularity. Members of the committee propose giving Jagat a gun; he asks instead for a working light bulb, a proper drain and a rule requiring two authorized signatures. His vigilance does not rest on pretending there is no danger. It rests on communal alertness, verifiable records and responsibility. The whistle's answering call in the dark is the real reassurance of his system of security.

Story 341 · A Song Through the Smoke

Fire breaks out in the village's old paddy storehouse, and people rush about with buckets in confusion. Sabita Devi begins to hum a familiar rice-planting tune, bringing the passing hands into a common rhythm. When Chhotan is found trapped inside, she keeps singing so that he can hear that help is close. Dinesh and Javed cut through the bamboo of a window and bring him out. By dawn the villagers are assessing the loss, saving what seed remains and investigating the cause of the fire. Sabita makes one point clear: the song did not put out the flames; water and human labour did. The tune merely gave their cooperation a steady pace. Some days later the same

melody is heard in the fields again, restored to the ordinary words and work from which it came.

Story 342 · One Minute of Electricity

A torrential downpour cuts the power at the district's old hospital, leaving patients and staff distressed in the dark. Nurse Malati manages the ward by the light of a hand-held lamp and the discipline of familiar routines. A generator runs for just one minute, long enough for patients to see their beds and the faces of those they love. When the lights go out again, someone notices that one bed is empty. A search reveals that Ramcharit Mandal has fallen while going to fetch water. Once he is brought back safely, Malati introduces a regular roll call, checking every patient by name. That single minute of illumination has brought more than temporary comfort: it has exposed a weakness in the ward's arrangements for keeping people safe when the lights fail.

Story 343 · Not Blood, but Vermilion

At the market beside the temple road, a bicycle strikes a bamboo rack. A packet of vermilion belonging to Malati Devi bursts, spreading red powder across the pavement; her son Ratan also suffers a small scratch on his elbow. Seeing the red stain, the crowd takes it for blood and begins circulating rumours of a beating. People who witnessed the collision and those who have only heard about it tell quite different stories. Eventually the facts are sorted out: there were only two drops of blood; almost all the red was vermilion. The cyclist apologizes, and arrangements are discussed for repairing the rack. When the rumour resurfaces the following day, Ratan corrects it with what he actually saw. The incident reveals how a slight accident can swell into an alarming public event when words are allowed to change the evidence.

Story 344 · My Magnificent Business

At the Wednesday market in Pachrukhi, the narrator launches what he calls his 'magnificent business': for one rupee he will number and safely keep each customer's bundle. His wife Saroja has already seen the weaknesses in his accounts, but he regards the scheme as an innovation. Then rain wets the labels, the numbers become illegible, bundles are mixed up and a water pitcher goes missing. Compensation, together with the price of a tarpaulin, makes the boast of profit absurd. The enterprise closes, though market-goers learn to mark their own bundles with distinctive signs. The narrator announces that the financial loss proves the triumph of his idea. The comedy lies in the gulf between his speeches about greatness and Saroja's unromantic reckoning of what the venture has actually cost.

Story 345 · A Wedding Party, Three Times Over

Setting out for a cousin's wedding in Amhi, the narrator follows what he thinks are reliable landmarks: a red canopy, a pond and the sound of drums. Again and again they lead him into the wrong wedding procession. At ceremonies in Belahi and Sonbarsa, strangers receive him as a relative; he adjusts his account of who he is to fit the situation and finds himself entangled in food, music and introductions. At last he learns to ask directly for the village and the bride's name. When he reaches the right wedding, he finds there some of the people he met at the first two, and everyone laughs at his adventures. His conclusion is that identical festive decorations and familiar-sounding names are poor guides. To find the way to one's own people, one must first know clearly whom one is looking for.

Story 346 · The Philosopher of Credit

Gopal Sahu hangs a sign outside his shop declaring 'No Credit' and formulates a hundred principles against selling on account. Yet whenever an impoverished customer needs provisions, he calls the loan a 'social circumstance' and enters it in his ledger. His daughter Kusum points out the contradiction between his eloquence and the mounting sums owed to him. When payment to a wholesaler comes due, Gopal has to put the customers' accounts in order and recover what he can. His final principle is that credit should be recorded plainly rather than concealed beneath grand expressions. The sign changes to 'Keep Your Credit Accounts Clear.' Even so, Gopal declares that the fee for his wisdom may be paid later. His philosophy survives, complete with the joke it has always made of itself.

Story 347 · The Panchayat's Expert

At Bardaha, the panchayat meets to plan a drain that will stop water collecting in front of the school. Batesar Kaka offers expert advice on every subject without taking a single measurement. Mason Raghunandan checks the actual gradient, although a memory of an old culvert supplied by Batesar proves unexpectedly useful. Later Malati Devi, who cooks at the school, recalls where ashes once used to be dumped, enabling the builders to find a safer turn for the drain. The work is completed successfully, but Batesar records all these contributions in his notebook as evidence of his own 'expertise.' At the next panchayat meeting he is already present to advise, with equal confidence, on vaccinating goats. The story draws its comedy from the difference between knowledge that proves useful in practice and the boast of knowing everything.

Story 348 · My Rich Uncle

The family considers Uncle Nandkishore immensely wealthy: he talks on a grand scale, seems generous and keeps a thick book of accounts. When Grandmother's leaking roof has to be repaired, the difference between his capital and his debts becomes apparent. The narrator learns that a bulky ledger can record unfinished obligations just as readily as prosperity. Yet the uncle proves resourceful in the repairs, economizing, reusing sound materials and showing a practical understanding of the work. When the roof is finished, he reads out his personal debts before the family and begins paying them off in small instalments. Everyone continues to call him the 'rich uncle,' though the phrase now holds a different knowledge of money, trust, indebtedness and family ties. His supposed wealth can no longer be separated from the irony of those obligations.

Story 349 · The Statement of a Missing Goat

When Dhauri, Budhni Kaki's easily recognized goat, disappears from her tether, villagers offer confident theories of theft, jackals and a trader's conspiracy. A girl named Malati notices grains of bran scattered on the ground and follows the trail they make. It leads to an old oil mill, where the goat has become trapped while dragging its loosened tethering stake behind it. Even after Dhauri is recovered unharmed, the village 'experts' struggle to prove their guesses were somehow correct. The statement finally entered in the panchayat record confines itself to the visible physical traces and the place where the animal was found. Malati's question—'Where has the bran fallen?'—becomes a new standard in the village for testing claims made with certainty but without evidence.

Story 350 · The Mobile-Phone Guru

Raghunath Babu, a retired postman, teaches the elderly people of his village to use mobile phones safely. His rule is simple: read first, press afterwards; beware of unfamiliar messages and never share a secret code. One day the teacher himself forgets the passcode to his device. Rather than laugh at him, his pupils remind him of the precautions he has taught them. In Raghunath's old postman's bag they find the account-recovery details he has kept safely, and with authorized assistance the phone is opened again. At the next lesson he teaches the importance of admitting when one has forgotten something. Rasida Khala, in turn, reminds him of the rule against showing anyone one's secret code. Learning now passes in both directions between the teacher and his pupils.

Story 351 · The Wedding Budget

To prevent needless expense at his daughter Kumud's wedding, Navalkishore Jha sets a ceiling of seventy thousand rupees. Almost every small decision—the number of guests to feed, the wedding pavilion, decoration and sweets—requires another family meeting. Uncle Govind keeps the accounts, Phulo Kaki argues for tradition, and the cook Nathuni Maharaj advises preparing food for the number of people actually expected. At last the wedding takes place within the prescribed limit, with less food wasted than usual. But when Govind totals the final accounts, he reveals the cost of the tea, samosas, jalebis and samples of sweet cakes consumed during all those budget meetings. Kumud, now married, writes a rule into the ledger: at the next wedding, hold the planning meetings after everyone has eaten. The discussions meant to reduce feasting had become a feast of their own.

Story 352 · The Great Poet Next Door

The narrator is tormented by the endless recitations of his neighbour Batuknath Jha, who believes himself a great poet. He promises to read only two lines and goes on for hours. Seeking refuge in the cattle shed, the narrator discovers that the poet will follow him even there. Eventually the listeners learn to shell peas, pick stones from pigeon peas and attend to household tasks while the verses continue. At a literary evening in the library, the narrator asks Batuknath plainly to restrict himself to two pages. To everyone's surprise, the poet reads a short and pleasing poem and receives genuine applause. The narrator realizes that, in spite of all his evasions, several lines from the interminable earlier readings have lodged in his memory. Beneath the satire of literary vanity lies an unexpected relationship between hearing and literature.

Story 353 · The Scholar for Rent

Gopikant Jha, a retired clerk, considers himself an authority on every subject. Nilambar Jha, who rents a room in his house while researching local wedding songs and domestic labour, must endure frequent advice and hints that his landlord's name ought to appear in the research. Many of Gopikant's claims are ridiculous. One day, however, a memory of his mother concerning the 'seventh post' gives Nilambar a valuable lead. He checks the account independently with other elderly women and presents it, with supporting evidence, at his oral examination. The degree is awarded in the researcher's name alone, but the acknowledgements record Gopikant's assistance. The landlord frames a copy of the line and announces that he will advise future tenants on research without charge. The rent on the room, however, remains unchanged.

Story 354 · The Village Meteorologist

Harinarayan Kaka of Sonbarsa predicts the weather by studying ants, egrets, leaves and the wind. His forecasts are often wrong, yet the villagers continue asking for them each day. Aniruddh and Malati begin keeping separate records of the predictions, the weather that actually follows and the work people undertake in response. They discover that, even when they mistrust Kaka's forecast, his words prompt them to protect sacks of grain, clear drains and repair their roofs. On one occasion he declares that there will be no rain. The village, already cautious, prepares in time; that night the rain arrives. Kaka's 'meteorology' is no dependable science of prediction, but it has become a spur to readiness. As Malati puts it, Kaka does not give them the answer; he raises the question.

Story 355 · Free Advice

Maheshwar Jha is famous at Belahi crossroads for the advice he gives without charge. In every dispute he asks three questions: What are the facts? What is conjecture? What small, useful action can be taken at once? Yet when the wall of his own kitchen begins to lean, he forgets his principles and blames his neighbour Kalavati for the water collecting there. The villagers shower him with advice, until Pappu the mason investigates. He discovers that a blocked drain, neem roots and an incorrect slope have caused water to gather at the foot of the wall. Once proper drainage is provided, the wall is saved and Kalavati is shown to be blameless. Maheshwar adds a new line to his notice: hiding the facts of your own difficulty does not change them. Advice acquires its true worth only when tested in one's own life.

Story 356 · Election Tea

During the election campaign Kailash Sahu serves tea to workers from every political party. Each group interprets his hospitality as proof of his support, but Kailash refuses to tell anyone how he will vote. He maintains a careful account of the cups served and the money owed under each party's name. After polling is over and the result declared, both the victors and the defeated return to his shop, each claiming him as an ally. Rather than reveal the secret of his ballot, Kailash reads out the outstanding sums. The workers abandon their political quarrel long enough to settle the bills. The story satirizes election-time opportunism through a clear distinction: a citizen's vote is private, whereas the accounts of a tea shop, and the debts recorded in them, are matters to be paid in public.

Story 357 · Uncle with the Microphone

At the school's fiftieth-anniversary celebration, Bhuvaneshwar Kaka cannot resist turning every announcement into a long speech. Necessary information disappears beneath his words. Headmistress Nirmala Devi institutes a rule that announcements must be no longer than twelve words. Kaka finds the limit uncomfortable at first, but discovers the force of brevity when he has to give directions from the stage, call for a grandmother bringing medicine and summon his grandson Sonu. In the middle of the programme the microphone loses power, and the pupils perform their play without it. Kaka comes to understand that making a voice louder is not always what matters; knowing what must be said, and to whom, matters more. By the end of the celebration, his announcements have acquired clarity instead of display.

Story 358 · A Kilogram of Reputation

In the market, Madhav Sahu's gleaming yellow one-kilogram weight is the emblem of his shop's reputation. He trusts its accuracy because of its shine and the renown it has enjoyed for years. Questions from his granddaughter Gauri, followed by a rival trader Nathuni's remark, lead to an official inspection. The weight proves to be twelve grams heavier than a kilogram. Madhav first dismisses the difference as trivial, but eventually accepts that every customer deserves a correct measure. He replaces the old weight with a certified black one that is exactly a kilogram. The yellow weight remains in the shop as a keepsake. The story finds the true measure of honesty not in polish, age or prestige, but in the accuracy of the weight used in every transaction.

Story 359 · Not a Leader Who Forgets Names, but a Teacher

Shivnarayan Jha, an eighty-five-year-old retired schoolteacher, often forgets the names of his former pupils. Yet their temperaments, classroom incidents and the scenes of their schooldays remain remarkably vivid to him. A young teacher, Neelam, seeks his help while reconstructing an old school register damaged by water. His memories provide valuable clues, but they also reveal the danger of recording guesses as established facts. Neelam therefore decides that no name will enter the final register until it has been corroborated by at least two independent records. Eighteen of twenty-two cases are confirmed; four are left uncertain. The teacher's recollections are preserved separately, explicitly marked as clues rather than proof. The story holds affectionate personal memory apart from the evidence required to establish an historical fact.

Story 360 · The Fundraising Expert

Gangaram Sahu is called a miser because he never gives money out of his own pocket, yet he possesses an extraordinary gift for persuading others to contribute. When the village library's roof begins to leak, he is put in charge of raising what is needed for repairs. From one person he obtains cash, from another bricks, bamboo or labour; someone else provides a vehicle. He bargains over the price of materials and keeps the accounts open for everyone to inspect. The repairs are completed and the books made safe. In the final account Gangaram's personal cash contribution is shown as zero. Everyone nevertheless understands that without his time, effort and organizing ability the work would not have been possible. The villagers promptly entrust him with raising contributions for another community project.

Story 361 · The Free Photograph

At a family gathering organised by the Belahi panchayat, the announcement of free family portraits sends the narrator, his wife Nirmala and their children Gauri and Naval to the venue dressed in their finest clothes. Having received the first number for a photograph, he is asked by the organisers to help put the name slips in order. Rain, muddled numbers and misplaced envelopes soon keep the entire family occupied all day, helping others have their pictures taken and distributing the prints. In the end they realise that they have forgotten to have their own formal family portrait taken. Yet the photographer's camera contains an unposed picture of all four of them working together. Nirmala has that photograph framed and displayed at home. They had gone to show off their clothes; what the picture finally preserves is their shared labour and participation.

Story 362 · Not by the Clock, but by Agreement

In the village of Belahi, the shop, the school, the panchayat and the watches in people's pockets all tell different times. Everyone believes that his own clock is right, and work undertaken together is repeatedly delayed. The time for transplanting paddy seedlings in the field of Phulo Devi, a widow, is running out, but people arrive and prepare to leave according to their separate reckonings. Jyoti suggests that instead of assigning hours, they divide the rows of the field and agree upon definite responsibilities. Rows are allotted according to the strength and availability of the young, the elderly and the other workers. By helping one another, they finish the transplanting. A few days later the growing green paddy has erased every distinction between one person's rows and another's. The village clocks still disagree; the people have learned that common work depends upon clear agreement and responsibility.

Story 363 · Where Am I to Blame?

Bhola Jha is entrusted with distributing saplings in the village. Jyoti Devi, an agricultural extension worker, advises him to record each recipient's full name, house number and the kind of soil suitable for the plant. Bhola, trusting his memory, makes brief signs and abbreviations instead. In the rain his marks become illegible, and mango, guava, neem and other saplings reach the wrong households or are planted in unsuitable places. The villagers identify the plants, inspect their condition and replant them wherever necessary. Bhola avoids admitting responsibility, attempting to present the mistaken distribution as a fortunate outcome. The following year the committee introduces clear labels, house numbers and coloured threads. Bhola calls these improvements, which arose from his own mistake, the fruit of 'experience'. Once again, however, he escapes the question of who was to blame.

Story 364 · The Devout Thief

Devkinandan Jha, widely regarded as devout, takes his neighbours' bamboo poles, water vessels, hammer and other belongings for work at the temple without first asking permission. He calls this not theft but 'temporary redistribution'. One day a missing hammer threatens to bring essential repairs at Phoolmati Kaki's house to a halt. An inquiry by the temple committee finds twenty-seven objects whose owners or permission to borrow them cannot be clearly established. An incident involving Devkinandan's own beloved umbrella makes him understand what it means to claim a right over another person's property. The committee requires prior consent from the owner, an agreed return date and a written account of any compensation for damage. Devkinandan returns the old borrowed objects and begins asking permission before taking anything for new work. At last he acknowledges that even when a religious purpose is involved, a loan remains a loan; taking something without consent is another matter altogether.

Story 365 · The Committee for Good Conduct

The Committee for Good Conduct in Barhi Tola sets up blue complaint slips and a numbered register to settle public disputes. At first the arrangement seems admirable. Yet complaints concerning committee members or their close relatives never enter the main register; they are kept separately in grey envelopes. At the annual open meeting, Niranjan's reckoning shows that decisions have been announced on only fifty-two of eighty-four complaints. When Phoolmati Kaki produces proof of her own missing slip, the thirty-two suppressed complaints are found. The members admit that maintaining a separate rule for one's own people is not good

conduct. Every slip is entered in the main register and given an impartial hearing. The next time, a complaint that the secretary's goat has eaten flowers on public land is recorded as well. The secretary himself writes down the decision requiring compensation and corrective action.

Story 366 · Sacred Parking

At the festival of Pipra Shiva Temple, the committee secretary, Raghunandan Jha, marks out parking spaces with lime and calls them 'Sacred Parking'. He lectures worshippers on restraint and respect for other people's rights. Mahendra Sah, a donor, other distinguished visitors and even those who devised the rules nevertheless cross the painted lines for their own convenience, blocking the footpath used by elderly people and handcart vendors. When the vehicles must leave after the sermon, the disorder becomes impossible to ignore. Questions from Niranjan and Binda Kaki compel the committee to apply the same rules to everyone. The prestige of making a donation confers no special right to use the road. Raghunandan removes the word 'sacred' and puts up a plain notice: 'Parking Area. Keep the Pedestrian Path Clear.' The next day he leaves his own motorcycle at the very back, within its allotted space.

Story 367 · A Photograph of Charity

Mahendra Sah installs a hand pump in Belahi's southern hamlet in memory of his father. On the day of its inauguration, his principal concerns are the name plaque, his spotless kurta and an attractive photograph, although mud has gathered around the pump and no drain has been provided for the water. While the photographs are being taken, little Chhotu slips and Buchchi Devi catches him; mud splashes Mahendra's kurta. The incident finally draws his attention to the real difficulty. A mason is engaged to construct a drain and put the water outlet right. Later the chosen photograph is one in which people draw water without anxiety, while the donor appears at the edge of the frame. Mahendra understands that the central meaning of a gift is not the display of one's name but making a public facility genuinely useful.

Story 368 · The Great Renouncer

Jagdish Chaudhary, keeper of the key to the communal seed store, records every small service he renders in a ledger as an act of great sacrifice. When the village runs short of paddy seed, the common store proves insufficient. For five years, however, Jagdish has kept Kanakjeer seed in his private storeroom, and the thought of sharing it makes him uneasy. His wife Vimala, Manjari Devi and the other villagers do not press him; they discuss only what is needed and what alternatives remain. At last Jagdish

freely distributes eighteen kilograms and three hundred and fifty grams of seed among nine families. After the harvest, the families return seed to the communal store according to their means. For the first time Jagdish writes no speech praising his 'sacrifice'. He merely records the quantity of seed. The worth of service lies in its actual result, not in extravagant declarations about oneself.

Story 369 · The Truthful Merchant

Banshidhar Sah, a cloth merchant in Madhubani, displays a notice promising to describe every article exactly as it is. He does not tell his customers outright lies. Yet he explains the difference between a hand-painted design, hand-applied colour on printed outlines and an entirely machine-printed pattern only when a customer happens to ask the precise question. Maithreyi, the daughter of a customer named Pramod Jha, challenges this half-truth: how can buyers ask about something they do not even know exists? Banshidhar accepts the fault in his practice, separates his goods into three clearly labelled classes and records the full particulars. To his notice he adds a promise that information necessary for a purchase will be given without waiting to be asked. He explains the difference between all three kinds of cloth to his next customer and leaves the choice freely to her. Truth, the story shows, means more than avoiding lies: it requires avoiding a silence that misleads.

Story 370 · The Receipt for Merit

Ramanand Chaudhary, a retired man, keeps an account of the religious merit earned by his good deeds. From helping an elderly person cross the road to making donations, he records points, expenses and witnesses for each action. But a raised platform he has built, together with his plan for a new shop, blocks an old public drain and causes water to collect. A mason and an elderly resident, Harinarayan Paswan, show him clear evidence; still Ramanand initially postpones the decision to dismantle his construction. At last he accepts responsibility for returning the advance paid by his tenant Gopal, removes the new structure and opens the drain again. The water begins to flow freely. He awards himself no points for this correction, writing only 'My Liability' in his account. The blank space on an unfinished receipt reminds him that correcting one's own wrong is not a charitable act to be displayed, but an ordinary, direct responsibility.

Story 371 · A Respectable Family

Vinaykant Jha, a retired headmaster, has displayed seven rules of civilised behaviour in a frame for his household. The family is gathering to celebrate his fortieth wedding anniversary. Yet although Chandrakala Mandal has

performed domestic work for them for years, everyone calls her 'Kaki' and not one of them knows her full name. A question from Vinaykant's granddaughter Ira makes the family recognise its neglect. Chandrakala knows the name of every member of the family, and asks for leave to attend a school function for her grandson Nishant. On the day of the gathering, the family serves the guests and manages the arrangements itself, setting aside a chair in Chandrakala's name. Later she receives a card bearing her own name. For the first time, Vinaykant writes that name in full in the old wage register. Rules of civility acquire meaning only when respect enters everyday conduct.

Story 372 · The Preaching Passenger

Throughout a bus journey, Shashibhushan Pathak delivers ceaseless lectures to his fellow passengers about discipline, queues, low voices and the proper care of tickets. An elderly woman, Ramlochan and the younger travellers all have to listen to his rules. Suddenly Shashibhushan discovers that his own ticket is missing, just as an inspector boards to check fares. The preacher grows increasingly anxious, while the very people he has been correcting help him look for the ticket. At last the slip is found caught in the string around Ramlochan's bundle. It probably fell from Shashibhushan's pocket when he was helping with the elderly woman's luggage. He begins to see the absurdity of his uncompromising manner. On subsequent journeys he offers easy, practical assistance instead of lectures whenever someone is in difficulty. The value of rules emerges not from stern preaching but from humble, helpful conduct.

Story 373 · Pure Food

Shashidhar Jha takes pride in the household rule 'Pure Food, Peaceful Mind'. He notes the sources of his lentils, oil, milk and vegetables in meticulous detail. Gradually, however, his rules about the purity of provisions turn into suspicion and harshness towards people. At a meal in his home, he praises his own arrangements rather than the labour of his wife Malati and their helper Neelima. By withholding money due to the shopkeeper Kishore Sah, he also makes it difficult for Kishore to obtain medicine for his ailing mother. Neelima, meanwhile, ensures that the payment is made on time. Shashidhar admits his obstinacy and apologises to Kishore. For the first time, instead of recording the quality of the food in his ledger, he notes a failure in his own behaviour. He comes to understand that purity of food is not enough: dealing rightly with other human beings is equally necessary.

Story 374 · The Ceremony of Forgiveness

At the Sakri milk cooperative, two sample numbers are transposed. Saroja Devi is wrongly suspected of diluting her milk with water, and the cooperative stops accepting her supply. A later investigation establishes that the mistake was the committee's. Its secretary, Gaurishankar Mishra, then arranges a public ceremony in the name of asking forgiveness. The entire incident is rehearsed before the crowd, and the innocent Saroja is told to pose for photographs wearing a garland and holding a certificate. To her, the display feels like a repetition of the original humiliation. She raises instead, at the office, the actual financial loss, the payment withheld and the need to repair the procedure. She leaves the certificate of honour behind rather than taking it home. At the collection centre the following morning, no festive banner bears her name; the ordinary rate for milk hangs in its usual place. Forgiveness is made real by putting matters right, not by staging a ceremony.

Story 375 · The Kind Employer

Vachaspati Jha proudly declares that Sumitra, who has worked in his house for fifteen years, is practically a member of the family. He offers examples of help during illness and gifts on special occasions. Yet when the plans for his new house are drawn, no dignified space is set aside for Sumitra to rest or stay. After river erosion displaces her, Sumitra rents a separate room with her daughter and begins returning to it when her agreed working hours end. The household is uncomfortable with this independence. On the night of the housewarming, Vachaspati urges her to remain, saying that she should consider it her 'own home'. But there is nowhere for her to sleep. She shows him the key to her rented room and leaves. On the plan of the new house, a trace of the erased word 'room' exposes the distance between the employer's profession of kindness and his actual treatment of her.

Story 376 · The Poster of Truth

At the Kamalpur block office, Shashinath Chaudhary, coordinator of an anti-corruption week, has a poster put up proclaiming, 'Public Money, Public Accounts'. Yet Manjula Karn, an accounts assistant, finds that an attempt has been made to pay for the campaign's printing from another budget head without authorisation, and that the cost of a single order has been split between two invoices. Shashinath argues that the purpose was in the public interest and that no one gained personally. Kiran, the investigating officer, makes it clear that a worthy objective cannot legitimise an irregular procedure. Shashinath finally signs a proposal to correct the earlier entry and undertakes to settle the craftsman.s

outstanding payment through the prescribed process. A statement of the actual expenditure is displayed beside the public poster. The true test of preaching honesty lies in making the accounts of one's own actions public.

Story 377 · The Good Man's Testimony

After a flood, retired headmaster Bhaveshwar Mishra serves as a trusted witness when villagers' losses are assessed. He did not actually see Ramsevak's wall fall, but, wanting the man to receive assistance, he signs a declaration as though he had witnessed it. Questioned by a district official, he recognises the falsehood of his statement and admits that he never saw the wall collapse. Ramsevak is then allowed a fresh on-site inspection, and his name remains on the assistance list on the strength of the damage actually verified. Another person in need, Naseem, also has his claim properly examined. Bhaveshwar comes to realise that false testimony, however compassionately intended, weakens justice. From then on he signs only for matters of which he has direct knowledge.

Story 378 · The Coin in the Donation Box

A common donation box is placed in Pipra village to raise money for repairing the old well. The rule is that it will be opened before everyone with two keys, and that the contributions will be recorded as one collective sum. Grain merchant Ratinath Chaudhary seeks prestige for having given the very first donation, a one-rupee coin, and puts a slip bearing his name into the box. When the money is counted in public, however, the slips are not found in any reliable order. No one can establish which gift came first. Kiran, the treasurer, keeps a transparent account of the money but does not draw up a public ranking of donors. The well's platform and pulley are repaired, with the remainder reserved for future maintenance. Ratinath's named slip survives in the records, while beside the well the gifts of everyone form a single common account.

Story 379 · The Courteous Driver

Nagendra Jha, who drives a passenger vehicle, considers himself a polite man because he adds the respectful word 'ji' to the end of his harsh remarks. On the road he hurls insulting comparisons at cyclists, older people and handcart vendors, yet insists that his language is respectful. His assistant Bijay and Sarojini, who conducts a meeting about road behaviour, examine the words he uses and ask which of them actually gives another road user useful guidance. Nagendra begins to see that adding a term of respect cannot cancel an insult, and that shouting gives no clear information for safer travel. On his next journeys he begins using brief, precise directions: 'Keep left; a vehicle is coming from behind.' Passengers move aside in time

and complaints diminish. The words 'Courteous Service' painted on his vehicle finally begin to correspond to his conduct.

Story 380 · The Character Certificate

To apply for a temporary post at a grain store, Madhav Mandal needs character certificates from two respected people. Bhuvaneshwar Master, a retired headmaster, is initially ready to sign without knowing enough about him. Another prominent man, Ramakant Sah, asks Madhav to put an earlier date into the committee's receipt register. Madhav refuses to alter the date improperly, so Ramakant strikes out his signature. Despite the difficulty, Madhav obtains a clear, limited statement from someone who actually knows him and submits valid documents with his application. The form bearing the cancelled signature is of no use for the appointment, but Madhav keeps it separately. That rejected paper reveals his real character more plainly than any endorsement: even under pressure, he has the courage not to falsify a record.

Story 381 · The Fasting Feast

At a communal observance of Nirjala Ekadashi, Ramkripal Mishra devotes immense attention to arranging nine kinds of food permitted during a fast, the seating of donors and the order in which refreshments will be served. But the elderly Sita Devi must take medicine at a fixed time, and some of the women helping with the arrangements remain without food far too long. While everyone is preoccupied with the ceremonial photograph, the conch and the seating plan, Sita Devi leaves rather than wait any longer; Champa Kaki, too, eats only very late. The next day Ramkripal visits Sita Devi and recognises his failure. In the arrangements for future observances, he decides to record people's medication times, the distances they must travel home and when volunteers need to eat, before assigning seat colours or counting dishes. The significance of a fast lies not in prolonging hunger but in understanding the needs of the people who undertake it.

Story 382 · The Prize for Humility

No sooner has the town library announced a 'Prize for Humility' than distinguished citizens begin arranging to have others nominate them. All declare that they have no desire for an award, while submitting elaborate evidence of their secret service, their refusal to accept credit and photographs showing them seated modestly at the back. As the committee tries to assign marks, it sees that competition over humility is itself changing people's behaviour. Mridula, the secretary, asks how one can gather public proof of a quality that consists in not seeking public

recognition. The committee decides to give no prize that year and to spend the money instead on repairing the leaking roof over the library veranda. When the work is completed, no plaque bears any individual's name. In the rain the children's books stay dry, while the thick file of evidence offered in support of humility lies quietly in a cupboard.

Story 383 · The Last Row

At the anniversary of the town reading room, Ramanand Jha, a long-standing donor, is displeased to find no 'distinguished guest' designation on his invitation. He wants a seat near the stage and a place in the group photograph. Ramjatan, arranging the chairs, asks why he is so insistent on moving forward when he can see the stage and hear every word from where he sits. In the conversation that follows, Ramanand begins to appreciate the last row and chooses to sit there. There is too little time during the programme for a separate photograph of the supporting members. Later, when Ramanand does not find his face in the commemorative booklet, he feels a moment of resentment, but remembers his father in connection with the place where he sat. He realises that the value of taking part in a gathering cannot be measured solely by one's proximity to the stage or visibility in a photograph.

Story 384 · The River on Paper

Thirty-seven families live in Garhiya Tola, a settlement formed after the Kamala River changed its course, but on the government's revenue map the land is marked 'zero habitation'. Champa Sahni's daughter Poonam cannot obtain proof of address for a scholarship, while the construction department prepares to store materials on what it believes to be vacant land. Champa and Poonam compile the families' names, old government slips, and details of the well, hand pump, school courtyard and route by which boats approach during floods. They make no unverified claim of ownership; they ask only that the actual settlement be acknowledged. A joint inspection records all thirty-seven houses, the place selected for construction materials is changed, and a survey note is added to the map. The story's achievement is that human lives are finally entered into a space that was blank on paper.

Story 385 · The Number on the Brick

At a brick kiln, Ramdev Mandal is assigned a tin number, '31', in place of his name. His wages, advances and the count of bricks he makes are all handled under that number. An old entry in the register threatens to deduct an unjustified eighteen hundred bricks from his account. A partly preserved receipt reveals that the entry belonged to another worker who had held number 31 before Ramdev. The owner corrects the account, but no one can

properly remember even the former worker's name. An inquiry finally establishes that he was Surjan Yadav and that wages are still owed to him. New rules require every number to be accompanied by the worker's name, village and date of starting work. Numbers may suffice for rows of bricks; an account of human labour must also preserve the labourer's name.

Story 386 · The Path Through the Forest

A narrow track through the sal forest at Belsar is used by people from three hamlets going to the milk collection centre, school and market. Forest guard Bateshwar Jha closes it for new planting, because the route does not appear as a public path on the official map. Saroja Devi has the regular movements of travellers counted, revealing that hundreds of people depend on it in a single day. After an inspection, a field assistant from the forest department decides that saplings will be planted on both sides and that the old route for walkers and cyclists will remain open. Posts are placed at either entrance to keep motor vehicles out of the forest. The map is updated to show the path as it actually exists. Protecting woodland and meeting local people's needs are not necessarily opposing aims; with proper arrangements they can be pursued together.

Story 387 · The Signature for Wages

Dhanvanti Paswan, working to remove silt from Belahi pond, cannot read, but remembers every one of the twelve days she has worked. Beside her name in the payment register only ten and a half measured workdays have been entered. The labour of carrying sacks and clearing the outlet in the rain has never been included under the heading 'Other Work'. Dhanvanti notices the discrepancy and has the accounts of the other women labourers checked too. The omitted days are added after an inquiry. She learns to write her name from her daughter Sunita, but comes to understand that reading every column of the account before signing is more important still. Later she encourages Rampari and the other workers to check their days, measurements, rates and sums due. Here a signature means more than writing one's name: it represents a vigilant claim to the rightful value of one's labour.

Story 388 · The Quarry Zone

Near Kushaha Tola the safety boundary of a stone quarry repeatedly advances towards the field of Sugiya Devi. Red bamboo poles, yellow marks, blue flags and lines of lime interrupt her cultivation, while officials begin recording the affected area as 'fallow'. Sugiya preserves the number of the old culvert, number four, along with the order restricting access and her own measurement notice. An official land survey establishes that the licensed

boundary lies elsewhere and that temporary safety markings cannot change the permanent boundary of a holding. The office records the actual reasons her cultivation was obstructed, removes the temporary markings and re-establishes the fixed boundary posts. Sugiya sows peas again. The story insists on an evidenced distinction between the legitimate need for safety and the farmer's rights.

Story 389 · Ration Day

On the seventh day of the month, seventy-two-year-old Sonmati Devi of Sonbarsa arrives to collect her ration, only to find that her name has disappeared from the new government list with the entry 'transferred'. She has lived in the same house for years and has kept old ration slips proving that she regularly received grain. The office sends her from place to place in search of papers and verification. Sonmati brings together proof of residence, the village worker's on-site inspection and the previous month's distribution register, and asks the authorities how a woman recorded as collecting grain until last month can suddenly be treated as absent. At last a correction order enables her to receive the current month's ration, and the next list records her status as 'present'. She keeps every piece of evidence: a person whose existence is reduced to a name on paper may have to prove that existence again and again.

Story 390 · The Distance to School

After Class Eight, Kanchan of Kamalpur wants to attend Belahi High School, more than ten kilometres from her home. To qualify for a government bicycle grant, she must first attend school for twenty days; without a bicycle, however, reaching school for those first twenty days is itself difficult. Headmistress Madhavi Jha has an old blue bicycle repaired and arranges to lend it temporarily as an 'admission bicycle'. Kanchan travels safely with Rekha and Sarita and fulfils the attendance requirement. When her new bicycle arrives under the grant, she returns the old one with a proper entry in the records. It then passes to another new pupil, Poonam. The number of kilometres has not decreased, but a shared resource has removed the obstacle posed by the first twenty days.

Story 391 · The Song of the Stone-Breakers

Beside the Sonbarsa road, twelve women, among them Jamuna Devi, break stones. As they work, they sing a song whose lines change from day to day with the events of their labour. Anupama, a teacher collecting songs for a cultural booklet, removes the references to water, passing vehicles, a broken hammer and the counting of baskets, giving the song a more polished literary form. Later, when the wage register records eighteen days

instead of twenty-two, Jamuna recalls the missing days through the verses the women had sung. Details preserved in Anupama's original notebook—the Tuesday market, a red gamchha, a yellow vehicle—can be checked against other records, and the days are verified. Anupama henceforth preserves the changing verses of work rather than only the version she has tidied for publication. The song is not merely entertainment: it is also a living memory of days of labour.

Story 392 · The Right to the Forest

A new, straight boundary drawn by the Forest Department cuts through the bamboo grove of Dhanmaya Devi at Simarbanni. Her granddaughter Kusum compares an old file, fixed boundary posts and the actual course of the Kachhua stream. The certified earlier description directs that the boundary should follow the seasonal watercourse, but a bend in that stream has disappeared from the new map. A joint departmental inspection confirms the error, and the boundary is redrawn along the stream. Most of Dhanmaya's bamboo grove now lies outside the forest boundary; seven bamboo plants on the far bank, however, remain on forest land. The family accepts this finding as well. Their struggle for their rights has been guided by evidence; verification means not only establishing what is yours, but also acknowledging the limits of your claim.

Story 393 · Compensation for the Bridge

The news that a bridge will be built over the Kamala fills the people of Basahi with delight. Yet the approach road will take in eleven houses, including Jhumri Devi's. With official permission, she removes the timber and other materials from her house that can be used again. During the later assessment of compensation, an attempt is made to reduce the amount on the ground that the house was 'already partly demolished'. Jhumri lays out the dates of the first inspection, the permission to remove materials and the subsequent valuation in their proper sequence. She makes it clear that she does not oppose the bridge: she demands only the fair value of her home. A joint review corrects the assessment. The compensation enables her to build another house, to whose door she fixes the old door-latch. The bridge makes journeys easier when it opens, while the memory of her former home and the documents securing just compensation remain with her.

Story 394 · The Labourer in the Photograph

While working on a drainage channel at Shivpur, Budhan Mandal is transferred one day from the third section to the second. Because the transfer is not entered in the attendance and payment records, his wages are called into question. In a photograph included in the progress report,

Budhan can be seen using a hand tamper in the second section. The photograph bears a clear date, and the issue register for tool number twelve confirms his work there that day. Taken together, these records establish his claim and his wages are corrected. A rule is then introduced requiring photographs to be accompanied by the section, date, relevant numbers and a reference to the attendance register, without unnecessarily making a worker's personal details public. More important than printing a labourer's name under a picture is keeping an evidentiary trail by which the work can be traced to that worker.

Story 395 · The Red Card

Phulmati Devi lives with her husband Harikishun and their three children in a separate household behind the ancestral courtyard at Barail. They have their own hearth, grain and income. Yet because their dwelling shares the house number '47' with the rest of the premises, the authorities refuse to issue them a separate red card for food assistance. Not one member of Phulmati's family is listed on the card belonging to her uncle Bhuvaneshwar's household, but the office continues to treat both households as one. The distribution register and a site inspection establish that two independent families live in the same compound. The administration makes provision for the sub-number '47-A' under the common house number. All five members of Phulmati's household are entered separately and receive their due grain. 'The house number was one,' she says, 'but there had always been two households.'

Story 396 · The Sand Landing

Permission is granted to extract sand for three months from the Sonbarsa landing on the Kamala. Once heavy vehicles and excavating machines begin work, the water level in nearby wells starts to fall and fine sand appears in some of them. Haripriya, who sells tea, records the daily change in her well by the knots tied in its rope. Her daughter Manju adds an eighth knot. The villagers' records prompt a government inspection. Although the excavation pit is within the licensed strip, the access road for the vehicles has been cut into a prohibited stretch of the river's former channel. The road and its boundary are corrected, and the water level stabilises. When the permit expires, Haripriya leaves the eighth knot in place. It reminds her to remain attentive to the river's changing condition.

Story 397 · The Temporary Settlement

After a flood on the Kamala, eighteen displaced families were housed in a 'temporary relief settlement' at Dharharwa. Over thirty years it grew into a hamlet of forty-six households. Yet the original temporary designation

remains in the administrative record, preventing the installation of a safe, permanent water pipeline. Malati Devi and other residents gather evidence: the original relief order, which provided for a review after three years, the present number of houses, the distance from the river and the condition of the water supply. Following a joint survey and inspection, the officials accept that an old notation which was never reviewed cannot justify withholding basic water facilities. Without prejudging the separate question of land ownership, they install a safe pipeline with three public taps. The word 'temporary' thus becomes a matter for scrutiny, not an excuse for permanent neglect.

Story 398 · The School in the Forest

Naresh Babu, a teacher at the primary school in Beljhariya amid the sal forest, fails to attend regularly. Sugni Kaki, who keeps the key, opens the classroom, and Phulkumari, a pupil in Class Five, begins teaching the younger children from the books available. Raghu and Chanda help her, but difficult questions go unanswered; the children put these questions on slips of paper collected in a red bag. During an inspection, education coordinator Sudhanshu Jha observes that an open classroom and actual teaching are two different things. Arrangements are made for a teacher from another school to visit on fixed days and for a substitute to be designated in advance when the regular teacher is absent. The children's register of questions is preserved. Under the new arrangement, Phulkumari leaves the teacher's chair and returns to her own place among the pupils.

Story 399 · The Power of a Signature

The twelve members of the Anjor Women's Savings Group in Sonbarsa have learned to write their names. Chandrakala Devi urges them to read the statement printed above a signature, too. After a communal platform for drying paddy is built, the contractor's representatives seek their signatures on a certificate declaring it free of defects. Yet the platform is cracked, drainage is inadequate, and the period allowed for repairs has not expired. The women read the file and insist that the actual condition be recorded. Only after inspection and repairs do they certify what they have themselves observed, and each line is read aloud before it is signed. The group resolves that no member will sign a blank sheet or a page detached from its context. Literacy becomes a right only when one also understands the obligations carried by the written words.

Story 400 · Half a Day's Wages

At the Belwara cooperative paddy store, Bachchan Mandal and five other labourers undertake a full day's assignment to unload 480 sacks. Fearing

rain, they work together and complete the assigned task before noon. Because the office closes, a second attendance slip is never issued. At payment time, their wages are cut in half on the ground that there are not two slips. Bachchan asks who, if they have done only half a day's work, unloaded the remaining sacks. A comparison of the work order, the goods-received register and the attendance record establishes that the entire assignment was completed. The official has a correction added without erasing the original entry, and all six workers receive their full wages. A written rule is adopted for the future: completion of the assigned work will count as a full day's work.

Katha-Tridhara · Volume II

Stories 1–100

Story 401 · Four Handfuls of Seed

Gopal and Sunaina set aside four handfuls of seed from every sack of paddy grown on the field they cultivate as sharecroppers. When the landowner's son, Naresh, considers farming it himself, a dispute arises over ownership of the seed and over Sunaina's labour in sorting and drying it. Together they frame a written rule preserving the seed for whoever cultivates the field next and governing its use. The sacks tied with red and green thread become signs of continuity in the cultivation of the land and recognition of the work that has gone into it.

Story 402 · The Plough's Journey

Jagesar and Nandu hire out a shared team of oxen and a plough at a single rate for half a day. Mohan, whose field is far away, receives less actual ploughing than a farmer nearby because of the journey and the animals' need for rest. The brothers measure several turns of the journey, the ploughing and the resting time. After consulting the farmers, they begin accounting separately for the time spent ploughing and the journey, and make provision for the animals' care. An old rule is made fairer in the light of changed circumstances.

Story 403 · Half a Bamboo Pole

Binti Devi needs a piece of bamboo of a particular length for her thatched roof, not an entire pole. Ramcharit, who sells bamboo, comes to see that half the length does not necessarily mean half the price, since the thicker and thinner portions are useful for different purposes. Taking another customer's requirements into account, he calculates the cutting cost, the remaining pieces and their strength. He finally adopts a new practice: measure the customers' needs first and cut the bamboo only when the pieces can be matched sensibly.

Story 404 · The First Milk in the Cowshed

Sudama's cow is kept and cared for in Gauri Devi's cowshed. When a calf is born, their verbal agreement to divide the milk equally becomes confused by questions about the first milk, the calf's share and the cost of care. Gauri insists that the calf's needs come first and asks for a proper account of fodder, treatment, labour and the milk remaining. The two households

draw up a written arrangement clearly assigning a place to the calf's nourishment and to responsibility for its care.

Story 405 · A Night on the Watch Platform

Farmers with four adjoining fields build a common raised platform from which to guard their crops. Budhan cannot take his turn because he has gone to his sick mother, and when animals damage the harvest, the question of blame arises. The farmers distinguish an unattended watch from a weak fence and from a genuine emergency. They establish new rules for replacement shifts in emergencies, fence repairs and the division of labour. Budhan fulfils his responsibility by helping to repair the fence.

Story 406 · A Share of the Chaff

When a machine arrives for threshing wheat, a dispute arises over customary wages and the workers' share of the chaff. The work done by Parvati's group by hand is in danger of becoming invisible within the machine's fee. Following discussion, the payment for the machine, the labourers' work and the division of the chaff are recorded as separate items. In the next season every condition is written down before work begins, preserving recognition of established labour amid new technology.

Story 407 · The Pond's Two Ghats

As the pond's water level falls in the summer, the needs of women washing clothes, livestock drinking water and young fish surviving begin to conflict. When Bhola Sahni reserves one section for the fish, Malati asks about the right to daily use. The villagers designate a washing platform, a sloping place for animals and a refuge for fish according to the water level. Under this arrangement, both the use of common water and the labour and responsibility of those who depend on it are shared.

Story 408 · The Credit Ledger

Devaki buys household necessities and medicines on credit at Mahendra Sahu's shop, but every purchase is entered under the single name of her father-in-law's family. This leaves it unclear whose needs were met and who has paid. Devaki asks that common expenses be distinguished from those of individual household members. The shopkeeper begins to keep separate entries for the date, purpose and person concerned. Accurate accounts do not break a family apart; they help make responsibilities within it intelligible.

Story 409 · The Mango Tree at the Field's Edge

A mango tree at the edge of Raghunath's field has been let out under a fruit-picking contract. The labourers engaged to harvest its fruit want to cross a neighbouring field of mung beans belonging to Ramsakhi Devi, threatening to damage her crop. Ramsakhi refuses them entry without her permission. The tree owner, the trader and the labourers agree on another route and a safe way of carrying the fruit away. The next contract records the need for the neighbour's permission and the responsibility for providing access before any fruit is picked.

Story 410 · Two Days of Paddy Transplanting

Phulmati's team of women transplanters agrees to two days' work in Ramcharit's field. Heavy rain interrupts the transplanting on the second day, and the landowner wishes to pay only for the area planted. Phulmati makes it clear that waiting under the owner's instructions is also a use of the labourers' time. Their discussion produces rules on cancellation before work begins, a rate for waiting after arrival at the field and responsibility for delayed decisions.

Story 411 · Caring for the Calf

Phulkali Devi grazes and cares for calves belonging to several households in the village, but the register records only the owners' names and identifying marks on the animals. When a calf called Lali falls ill, questions arise over who is actually responsible for treatment, vaccination and passing on information. Afterwards the register includes each animal's health, expenses, the sequence of notifications and Phulkali's labour. Ownership remains where it was, but the work of the person tending the living creature is acknowledged.

Story 412 · Oil-Cake from the Press

At Jugal's oil press, the quantity of oil obtained from mustard seed is clearly measured, but the division of the oil-cake left behind is uncertain. Malati Devi wants the residue as feed for her animals, while the press owners interpret the old custom differently. Before pressing begins, they establish two clear options: pay the full fee and take all the oil-cake, or pay a reduced fee and leave an agreed share with the press. Disputes after the work are thereby reduced.

Story 413 · The Herdsman's Whistle

The brass whistle used for communal herding passes from house to house, each household being given an equal turn. Yet the number of

animals, and therefore the burden of looking after them, is not the same in every home. Budhni Devi asks why one animal and five should require an identical share of labour. The village draws up a new roster based on the actual numbers of animals, absences and replacement turns. The whistle remains the same; the responsibilities signified by it change.

Story 414 · The Potter's Fire

Four potter families fire water-pots, lamps and cooking vessels in a shared kiln. When many vessels are spoiled in one firing, blame passes from one family to another. Phulkali and the other potters record the amount of wood used, the direction of the fire, the openings through which air enters and the places where vessels are arranged. In the next firing they change the positions to test the kiln and discover that too little heat reaches one side. Inquiry takes the place of accusation, opening a way to collective improvement.

Story 415 · The Hired Pump

Bisun and Nandlal hire Raghunath Sahu's diesel pump to irrigate their fields. The hire charge starts from the moment the engine is switched on, although a broken channel, preparation of the machine or other delays may keep water from reaching the field. In Shyama Devi's presence, they agree to record separately the preparation time, faults in the pump, defects in the channel, actual irrigation and shutdown. Payment and responsibility no longer depend on one ambiguous reading of the clock.

Story 416 · Two Paseris of Finger Millet

Phulmati's family agrees to receive two paseris of finger millet as wages for work in Dhaneshwar Jha's field. At payment time, a dispute arises over the market price and deductions for an old loan. It becomes clear that an agreed quantity of grain, its cash value and the date of a debt are not the same thing. Both sides arrange to record the basis and timing of any conversion in advance, so that a worker's entitlement cannot change while the measure of grain remains the same.

Story 417 · The Grass on the Embankment

Only families who have long owned land are permitted to cut grass growing on the embankment. Jamuna Devi, who owns no land but keeps two goats, is excluded from the list, although she contributes labour to maintaining the embankment. She raises the question of a share based on the animals' needs and on common upkeep. After discussion, the distribution of grass takes account of the actual livestock, materials

provided and turns spent on maintenance. Jamuna's labour and her need both receive recognition.

Story 418 · The Rim of the Dry Well

The old well at Belwa has dried up, and the masonry around its mouth is crumbling. Most villagers think repairs would be pointless, but Rukmini Devi draws attention to the danger of an accident and the long-term importance of a water source. The well's rim is made safe, and a regular register is started to record measurements of the water level from one fixed point. These measurements are treated as indications, not as complete proof of groundwater conditions in the surrounding area. Even the dry well once again becomes a matter of common concern.

Story 419 · The Last Day of Harvest

By custom, a team of paddy harvesters receives a sack of grain for clearing the threshing ground on the final day. When Nandu is absent that day for an unavoidable reason, his share is disputed. The team recognises that the sack is not merely a reward for being present on the last day; it is payment for the collective labour of cutting paddy, handling ropes and tools, and clearing the threshing ground. Nandu is assigned a replacement turn of work, and his share is preserved. The rule is made explicit from the outset of the next season.

Story 420 · The Name of the Boundary Ridge

When the land of Jivach Mahato is divided among his three sons, the boundaries of the fields become separate, but irrigation water continues to flow over the old, shared earthen ridge. Raghunath, Devkant and Naval quarrel over who may stop or release it and when. The brothers measure the ridge's slope, the height of the board used to hold back the water and the actual course of its flow. They finally agree on a common outlet and rules for maintaining it, without changing the individual boundaries of their land.

Story 421 · The Writing of the Dry Canal

The old water gauge of a canal closed for six years begins drawing lines again at night. Harinath Jha and his colleagues discover that water is being released after dark through a forgotten service outlet. Their inquiry brings to light an erroneous water report from twenty years earlier and the injustice done to Bansilal's family. Harinath acknowledges both the facts he had concealed and his mistake in signing the report, and writes a

correction. Thereafter a regular system for releasing the water is established, and the gauge begins recording the actual flow.

Story 422 · Three Scratches on the Padlock

When the superintendent of a girls' hostel notices scratches on the padlock of a locked storeroom, she suspects theft. Vasudha, a former student, has been trying to enter by improper means to retrieve old personal letters kept there. The search uncovers twenty-seven letters. The reason for her actions and the breach of the rules are recorded, but the privacy of the correspondence is protected, and the letters are delivered to their rightful recipients. Vasudha receives the letter written by her father.

Story 423 · The Post Office's Thirteenth Mailbag

As a sub-post office is about to close, a thirteenth mailbag is found in addition to its usual twelve. The discovery reminds the former postmaster, Shivnath Chaudhary, of a mailbag that vanished twenty-eight years earlier, casting suspicion on the carrier Narayan Mahato. Investigation shows that the missing bag had become lodged in a hollow space inside a sealed ventilator. Shivnath admits that he had certified the count without actually checking it and had suppressed the truth. A review of the old findings begins.

Story 424 · The Watermill Wheel Turning Backwards

Seeing the blades of an old watermill turn in reverse, Brijnandan Sah is drawn back to the memory of an earlier accident. An inquiry reveals that farmers have made a new temporary watercourse to protect their fields. In the course of the investigation, facts emerge concerning Lakhan's accident, a defective sluice gate and an altered official report. Brijnandan admits that he made an incorrect entry and records his testimony. The present course of the water is documented, although its legal status remains a separate matter for examination.

Story 425 · Black Dots on the White Screen

Black dots appear on the white screen of a closed photographic studio. The ageing photographer Bhuvaneshwar Jha remembers an old accident during the distribution of relief supplies and his decision at the time to destroy an image of the event. Anwita safeguards the surviving photographic negatives. As they are examined, different views of the incident emerge, revealing the complexity of an earlier accusation. The visual evidence is preserved with the understanding that a whole event cannot be judged from a single photograph.

Story 426 · The Missing Shoeprint at the Courthouse

Beside a locked rack in the district courthouse's evidence storeroom, a shoeprint appears, although there are no footprints leading inside. Madhav Mishra investigates and discovers how a shoe could be pressed into the dust with a bamboo pole passed through a gap in the roof. Ragini has devised the method in her search for the original documents relating to her father's land. Beneath the rack are found the original deed of sale and an inventory of seized property. Madhav acknowledges his earlier mistake of signing without inspection, and evidence needed for justice comes to light again.

Story 427 · The Clock That Chimed at Half Past

The old library clock strikes at half past twelve even though its bell has been removed. Shivnarayan Mishra discovers that, when an old cupboard is moved, a wire strikes against the clock and produces the sound. Behind the cupboard, Sudha has been searching for papers concerning a complaint made long ago by her father, Naresh Paswan. The records point to an unjust decision and to Shivnarayan's earlier silence. He preserves the papers and begins a review of the decision. The mechanical chime ceases.

Story 428 · The Rope Stretched across the Deserted Ghat

At a river landing officially closed after the construction of a bridge, a rope appears stretched across the water once more at night. Keeping watch, Harinarayan Jha discovers that Sudha and Phekan Sahni are taking patients and medicines by small boat to the settlement on the opposite bank. The actual need for medical care has been overlooked amid the official prohibition. An altered report of an old boating accident is also investigated. Harinarayan corrects his earlier false testimony, and arrangements begin for a safer alternative boat service.

Story 429 · The Blue Glass Vial

A blue glass vial from a closed dispensary is found in different places. Investigating, Madhavi Jha discovers Mrinalini's attempt to trace evidence connected with an old incident involving contaminated medicine. The direction in which the vial moves points towards papers hidden behind a cupboard. A supply slip and a circular raise questions about the old accusation, although responsibility for a delay at the local level remains. Madhavi preserves both the vial and the records without pronouncing a final judgment on incomplete evidence.

Story 430 · The Key Found in the Fold of a Sari

During the division of a family home, a key to an old cupboard is discovered in the fold of Kamala's sari, immediately arousing suspicion. A search into documents left unheard and Devika's efforts brings to light old papers preserved by Janaki Devi. They raise questions concerning Kamala's rights and the shared path leading to the pond. The cupboard is opened, and the legal meaning of the documents is examined. In the final partition, Kamala's share and the common pathway are clearly defined; conversation takes the place of suspicion.

Story 431 · The Smell of Boiled Paddy

At night the smell of boiled paddy comes from a rice mill that has been closed for years. Nagendra Jha remembers an injustice committed at the mill and an incident involving Bisesar Sada. New tests lead to an examination of old accounts, altered entries and facts that had been suppressed. Rather than erase the wrongly written documents, Nagendra agrees to record corrections and keep the present accounts separately. The mill begins operating again with new machinery, while the old furnace is preserved as both a memorial and a piece of evidence.

Story 432 · Three Blows on the School Roof

Three successive knocks are heard at night on the roof of a closed school. Investigating, the former headmaster Shivnarayan Jha is confronted by questions surrounding the school's old register and accounts suppressed in a matter involving Ramvriksha. Through the efforts of Chanda and her colleagues, preserved papers are recovered, giving grounds to reconsider an earlier accusation. Shivnarayan acknowledges in writing the mistake made during his previous inquiry. Before the school building is put to a new use, its historical records are secured.

Story 433 · The Warmth of the Wooden Chest

In a locked room of the museum, a wooden chest grows unusually warm at night. Badri Narayan Chaudhary's investigation reveals a false bottom, Tilottama's secret attempt to protect papers from damp, and an old register of the removal of objects from the collection. The breach of rules is recorded separately, and new arrangements are made for conservation. Badri Narayan admits that he had previously suppressed a truth he had seen. The chest grows cool again, but the whole mystery of the missing statue remains unsolved.

Story 434 · Knocking Within the Earthen Wall

A knocking sound inside an old earthen wall leads Niranjan Mishra to re-examine a dispute over the division of family land. The search turns up an old survey paper and clues to Anima's efforts. Questions arise over rights to the western plot and the shared path leading to the pond. Niranjan refrains from an immediate judgment, instead having the records, the current land register and the boundary ridge checked by a surveyor. Until a final decision is made, ploughing on the disputed path is stopped, and the documents are kept safe and accessible to both sides.

Story 435 · The Wandering Seal

The round seal of the panchayat office is found to have shifted from its place overnight. Investigating, Harinath Jha discovers the ordinary cause: the table is tilted. Yet the search also brings to light old forms in different colours, forged certificates and discrepancies in the issue register. The additional clerical work performed by Rachana and the question of a damp seal are entered into the record. What the investigation establishes is accepted; what remains uncertain is left open.

Story 436 · A Straight Strip Without Dew

A straight strip without dew repeatedly appears across Harinandan Yadav's mustard field. Investigating at night, he learns that members of Jagessar's family have stretched a cord to measure an old common pathway. Although the land has been sold, the question of people's right of passage remains unresolved. At Malati's urging, Harinandan examines the earlier documents and has the ground jointly measured in daylight. The marker stakes remain until a final decision, but the secretly stretched night-time cord is taken away.

Story 437 · Behind the Broken Mirror

The mystery of papers slipping behind a broken mirror in Sharada's sewing room leads to evidence of an old financial transaction. When an envelope containing Janaki's fifteen thousand rupees went missing, Kamala was suspected. With Nishtha's help, a recovered receipt proves that Navalkishore had used the money temporarily. Sharada enters the correct facts in the register and removes the unfounded accusation against Kamala. Even after the financial account has been settled, the question of the human harm caused by the injustice remains.

Story 438 · Red Thread on the Veranda

The repeated appearance of red thread on the veranda of an old wedding house reminds Sharada Devi of Mrinal's broken marriage. It is eventually discovered that the thread is part of a cord used to measure a room. The family plans to sell the room to pay a debt, but Mrinal has not been consulted about her share. Sharada examines the old partition papers and insists that Mrinal's opinion be sought before speaking to a buyer. The line of thread becomes a sign both of the measurement of property and of conversations suppressed within the family.

Story 439 · Falling Letters

Metal type begins falling by itself from a box in a disused printing press. Raghunath Jha and his new colleagues investigate, discovering that vibrations from a neighbouring oil press and the box's uneven position are responsible. The strange occurrence brings back the story of four people's names omitted from an earlier publication. Raghunath, Neeraj and Kaushal decide to print those names again using the old type. The physical defect of the box is corrected, and the suppressed words return to public print.

Story 440 · Soot on the Last Lantern

Fresh soot on an old lantern at the embankment watchpost reminds Navalkishore Mishra of a flood night eighteen years earlier. With Manoj's help, he discovers the actual time at which a warning was sent and the official entry that had been altered. Navalkishore writes in the margin of the old register an admission that, under pressure, he had accepted a changed time for the first warning. The damage already done cannot be undone, but a false record must be made to stand beside the truth. The soot remains the real mark of a vigil once kept.

Story 441 · Seven Millimetres on a Nameplate

At a social welfare office, the nameplate of Gopal Jha, an accounts assistant, is mistakenly made seven millimetres taller than it should be. Visitors begin treating him as though he were the officer in charge of the section. The wooden plate, however, cannot alter his actual rank or authority. Following an inspection, it is replaced with one of the correct dimensions. Gopal continues helping visitors with their papers within the limits of his post. The unnecessarily large nameplate remains in the storeroom, marked 'Unusable'.

Story 442 · The Blank Space Between Two Signatures

A payment form at the cooperative office contains an unnamed empty square between the two required signatures. Employees imagine it calls for the approval of a third official and hold up applications. Madhav, a newly appointed clerk, examines the regulations and the form's printing history, establishing that no such official is prescribed. The obstacle to Harinarayan's payment is removed, and the square disappears from the revised form. Yet the vague line marked 'For Office Use' leaves open the possibility of a fresh confusion.

Story 443 · Chair Number Zero in the Waiting Room

A newly built hospital waiting room contains forty-eight numbered chairs and an old blue chair marked with a red zero. Patients take it to indicate a special place in the order of treatment, though the stores register has no proper number for it. After investigation, the staff record it as the forty-ninth item and put it to use near the entrance for preliminary examinations. In everyday speech it remains 'Chair Number Zero'. The chair's uncertain status gives rise to a new arrangement for patient care.

Story 444 · Leave for an Application for Leave

In the leave department of a college, a temporary category created for applications awaiting incomplete verification becomes a way of postponing decisions. Rather than bear the responsibility of granting or refusing leave, employees leave applications pending indefinitely. Suchitra's experience exposes the defect. After a review, new rules require reasons to be given for a pending application, decisions to be taken within a fixed period and the unauthorised category to be abolished. Suchitra receives the leave she needs in time.

Story 445 · The Inventory of an Empty Drawer

An empty drawer becomes the subject of questions during an audit of the municipal office. As Nilambar and Shambhunath trace its earlier use, they find records relating to a missing map and the drainage route from a pond. A fresh examination of Janaki Devi's case becomes possible. The recovered contents are moved to a secure place, and the drawer is declared 'Verified Empty'. The irony is that, despite the shortage of room for papers, nobody now wishes to put anything into it.

Story 446 · The File with the Yellow Ribbon

In the treasury, a yellow ribbon has informally become a sign that a file requires urgent attention. Much depends on the judgment of the

experienced Bateshwar, yet there is no written reason for the special priority. After Madhav raises the question, a prescribed slip must state the grounds of urgency, the date and the responsible officer's signature. The colour of the ribbon remains only a means of identification. Ironically, copies of the order introducing the change are themselves tied with yellow ribbon before being sent to the departments.

Story 447 · Half a Letter in the Job Title

On Umakant Mishra's nameplate at the agricultural marketing office, the first letter of 'Avar'—meaning junior—is incomplete, making him appear to hold a higher post. The misunderstanding widens the gap between his authority and farmers' expectations. A complaint concerning payment for Kaushalya's sesame crop makes the local office's responsibility clear. Rules are established for acknowledging complaints, examining them initially and forwarding them to the district office. The missing part of the letter is restored. Umakant is not promoted, but the service becomes clearer.

Story 448 · The Birthday of a Certificate

While transferring old certificates into digital records, Naresh notices that many documents give only the year in which they were issued. Because the computer demands a complete date, the first of July has been entered for convenience. The invented day causes an obstacle in Lakshman Mandal's claim to land. The office introduces a method for recording only as much of a date as the original document actually provides. Hundreds of imaginary 'birthdays' are removed from the records.

Story 449 · The Authority of the Bell

At the sub-registrar's office, a bell has become an unwritten signal that a matter deserves priority. Navin realises that its ringing creates the illusion that a file has acquired some special authority. After an inquiry, the bell is restricted to calling the attendant, while urgent files must be accompanied by a written slip stating the reason. A register of the bell's use is also opened. Navin helps an elderly farmer without any signal from the bell.

Story 450 · The Fifth Space for Four Seals

On an assistance form, a fifth empty square has been printed after the four required seals. Employees and applicants begin searching for a nonexistent office that might fill it. Bholanath checks the regulations and finds that only four approvals are required. On existing forms, the extra space is crossed out and marked 'Not Applicable'; it is removed from the next printing. The time people have lost in the search for an imaginary fifth seal becomes the real consequence of an error on paper.

Story 451 · Service Window Number Nine

The railway parcel office has eight service windows, yet the receipt issued for a complaint directs the applicant to a ninth. Dhanmanti, who has come to collect a part for her loom, wanders about searching for a window that does not exist. The error holds up both the verification of her papers and the release of the parcel. Harinarayan and his colleagues set up a separate assistance desk and begin a register of unresolved cases. But no one can establish how many people have already turned away without lodging their complaints. Dhanmanti's experience lays bare a failure in the very arrangements intended to provide a service.

Story 452 · The Table Beside the Gate

At a land-survey camp, a table beside the entrance is repeatedly moved from one side of the gate to the other. Papers handed to Jagessar, the watchman, are not recognised as having been formally received. Phulpatiya must consequently make journey after journey to the camp, each visit costing her a day's wages. The staff finally lay down clear rules for where applications are to be accepted, how receipts are to be issued, and which date counts as the date of submission. Phulpatiya's request is entered in the register, and she receives notice of the survey; the wages she has lost, however, are never restored. Before the boundary of her land can be measured, the boundary of entry into an office has itself become a dispute.

Story 453 · The Promotion of the Red Pencil

By mistake, Dinesh in the audit branch is supplied with a red pencil from the stores. A red circle is commonly taken to be a special mark made by a senior officer; when Dinesh draws one without any explanatory note, it begins to carry the force of an instruction. Confusion follows over the accounts of a payment due to Saraswati. Dinesh accepts responsibility for the circle he has drawn and writes the question in full in the margin of the paper. Thereafter he abandons reliance on the colour alone, recording every objection with its reason, date and his own name.

Story 454 · The Pink Margin Lost in the Photocopy

The final date of Raghav Chaudhary's temporary charge at the handicrafts office is written in the pink margin of an order. In a black-and-white photocopy, that crucial information disappears. No one can tell with certainty when Raghav's authority came to an end, and a payment owed to Sunita Devi is held back. Meera investigates; Raghav, unwilling to act under an uncertain authority, refrains from granting the final approval. A new procedure requires the dates of an officer's charge to be written in the main body of an order, so that its meaning survives even when its colour does not.

Story 455 · The Empty Box for a Date

The flood does not destroy Janaki Devi's home on a single day. Over three successive days, one part after another gives way. The relief form, however, allows only one 'exact date' for the loss. Examining Renu's daily record, Kumud Jha finds separate dates for the destruction of the enclosure, the hearth and the room. For the purposes of the procedure, 12 August is adopted. In time, even Janaki Devi begins to recount what happened to her as though everything had occurred on that one day. The story reveals the pain of a private memory gradually reshaped for the convenience of an official date.

Story 456 · Proof of Being Five Minutes Late

An accusation arises that a sealed pouch of archive keys was handed over five minutes late. When Nandakishore Jha and Harinarayan Paswan investigate, they discover that the clocks used to record the event were not keeping the same time. The discrepancy affects the processing of compensation due to Kanaklata Devi. A new method is introduced for synchronising time, recording the actual handover and obtaining signatures. The absurdity remains that a difference of four seconds is entered as 'zero minutes'; nevertheless, the transfer of keys now has a verifiable record.

Story 457 · The Colour of the File Cloth

In the social assistance office, the colour of a file's cloth cover has come to serve as the principal means of identifying its department. When the supply of purple cloth runs out, a widow's assistance file is tied in green and sent to the wrong branch. Maithili Chaudhary traces the series of mistakes that follows. Under the revised system, the branch's name must appear on a durable label, and the subject written on the first page must actually be read. The colour of a piece of cloth is no longer permitted to stand in place of what a file contains.

Story 458 · One Office, Two Names

Although the minor irrigation and water-conservation branches have been merged, the office continues using two seals, two letterheads and an old banking identity. Prabhakar Jha discovers that this duplication has stalled work on the irrigation sluice at Kunwarpur. The bank, too, questions the office's legal identity. Eventually a single new name, bank account and seal are formally recognised. The old seal is preserved in the storeroom as part of the office's history, but it is no longer impressed upon a citizen's correspondence.

Story 459 · The Second Step of the Staircase

When a staircase in the district records building breaks, visitors find it difficult to reach the offices upstairs. Shambhunath, a senior clerk, places a temporary public-assistance table beside the second step. People begin receiving help there with questions about land registers and certified copies. Even after the staircase is repaired, the table remains because it has proved useful to the public. Its proper location is entered in the building inventory, though people continue to know it simply as 'the second step'.

Story 460 · The Officer in the Last Row

In the district development office's staffing register, a salary allocation stands against an empty line at the very end. Raghav Chaudhary investigates and establishes that it is an error carried over from an old table, not an authorised post. Meanwhile the uncertain position of Rukmini, who has been doing real work on a temporary basis, comes under consideration. Approval is obtained for a defined term of employment, specified duties, a designation and her wages. The imaginary vacancy is removed, while the actual worker's name is clearly entered in a separate register.

Story 461 · Present in Three Places

Sushama, the daughter of Jagdish Paswan, is denied her scholarship because a consolidated register appears to show her father present in three places at the same time. The entries concern his mother in the village, his family in the city and his night duty at a warehouse: three different kinds of information placed together without their contexts. Premalata traces the error in the matching of the records. The permanent family address, present residence and attendance at work are separated. Sushama's assistance is resumed, and corrections begin in other cases affected by the same confusion.

Story 462 · An Open Branch in a Closed Room

A branch of the district certification centre operates regularly in Room Twenty-seven, although the fire-safety plan marks that room as permanently closed. An inspection exposes the contradiction between the building as represented on paper and the office as it actually functions. Naresh, Revati and Chandan must address the public's ongoing work, the provision of a safe exit and the condition of the records together. A revised safety plan and new arrangements are put in place. The old plan is preserved as an example of an incomplete record.

Story 463 · The Other Name in a Pronunciation

A voice-operated attendance machine fails to recognise the name 'Kshemanarayan Jha' and records it as 'Sem Narayan Jha'. Someone proposes changing the man's real name to suit the machine. Instead, separate fields are created for the authorised name and a guide to its pronunciation. Kshemanarayan speaks sounds the machine can understand when marking his attendance, but retains his original name in his service record. He explains to Richa Karn that a machine's ear is not the master of a human being's identity.

Story 464 · The Form That Demands Its Answer in Advance

Prabha Devi applies for assistance for her women's sewing group, only to discover that the form demands the final application number before the application can be submitted. Navalkishore, the clerk, searches for a way of assigning an advance number. The application moves forward and the first instalment is received, but the same case acquires three different numbers. Prabha has to keep a list of them all. A later version of the form makes the earlier number compulsory as well, creating yet another circle from which an applicant cannot readily escape.

Story 465 · The Half-day Employee

Shanti Devi cleans from six until ten in the morning, but the official system defines a 'half-day' worker as someone employed on the afternoon shift. This discrepancy obstructs her accident report and her entitlement to medical rest. A decision is made to record both the actual four hours worked and their precise times, protecting her wages. Yet her new identity card is printed once again with the wrong afternoon hours. Along its edge, the watchman writes 'morning', keeping the reality of her work in sight.

Story 466 · Work in the Sealed Room

A room containing teachers' service records is sealed during an audit. Two years of Chandrakala Devi's service have been omitted from her pension calculation, but the original register is locked inside. Abhay and Nirmala reconstruct the record from evidence available outside the room. When the seal is removed, the original and reconstructed documents are checked against one another. Chandrakala's pension is corrected, and the copy of the records she has kept herself is preserved as a source of evidence too.

Story 467 · The Translated Village

A digital address system gives the two distinct villages named 'Piprahi' and 'Piparhi' the same spelling in Roman letters. Relief notices and inspection letters consequently reach the wrong place. Malati and Sudhir resolve individual cases by using the local names, the administrative blocks and geographical location codes. The error in the central naming system persists for a long time. At the market, separate letterboxes for the two villages and signs pointing east and west continue to protect the routes that people actually need to follow.

Story 468 · An Attendance Order on a Holiday

A public holiday is declared for a day already fixed for compulsory identity verification. Archana Jha receives incompatible instructions: she is to be on leave and also present at the office. A second opportunity is approved for the twenty-seven employees who missed the verification, while the eighty-three who attended the camp are granted compensatory rest. A rule is introduced requiring mandatory camps to be rescheduled when a holiday is declared. The holiday becomes real only on the day the office does not open.

Story 469 · The Complaint Born of an Enquiry

Chandrakala Devi's application for flood rehabilitation assistance has remained pending for four months. She asks only how far it has progressed, but the computer classifies her question as a formal complaint and marks the original application as disputed. Vidyapati Mishra and his colleagues establish the distinction between an enquiry and an objection. Once the mistaken complaint is closed, her assistance begins to move forward. The system is later given a separate option for asking about the status of an application.

Story 470 · The Black Shadow of the Scanner

Sumitra Devi's family pension is stopped when a dark line appears across the digital image of an old service certificate. Madhav Jha examines the original paper alongside other images from the same scanning batch and discovers that the line is not a mark of cancellation but the shadow of a clip in the scanner. A clear new image is made, while the earlier one is retained as part of the history of the evidence. Payment of Sumitra's arrears is released, and a rule is introduced against making decisions on the strength of a shadow alone.

Story 471 · The Internal Letter Sent Outside

During the rains, the northern room of the district archives is in danger of getting wet. An internal order to move the records is mistakenly sent through the external post, leaving the office waiting for a letter it has itself issued. Before the order completes its formal journey on paper, the staff move the damp bundles to the safety of the southern room. Separate procedures are subsequently established for internal and external correspondence. The story sets the actual preservation of records against the circuitous journey of the order meant to preserve them.

Story 472 · The First Day of Appointment

Vinaykant arrives at the land-records office with his appointment letter and begins work on his very first day. Yet a mismatch between his employee number and the register of assumption of charge makes the official date of his appointment a matter of dispute. The time of his arrival, the attendance sheet and evidence of the work he performed are examined separately. A new register is opened to establish the dates on which employees actually take charge. Although Vinaykant's own case remains undecided, the evidence of the next employee's first day is properly secured.

Story 473 · Two Salaries under One Name

Two employees in the agricultural office are both named Ramnaresh Sah. Even their fathers' names and dates of birth are identical. The digital system treats them as one person, entangling their leave, salaries and promotion records. Neelima distinguishes the two by their year of appointment, village, employee number and actual attendance. The gradual correction of the old records begins. The system is given an explicit warning not to assume that two people with the same name must be one person.

Story 474 · Absent to Prove Attendance

Poonam, an agricultural field assistant, must leave her assigned area and travel to headquarters to certify that she has been present in the field. While she is there for verification, an inspection team marks her absent from her work area. The contradiction in demanding her presence in two places at once is exposed. Separate dates for monthly verification and a defined half-day time allowance are introduced. Even so, the pressure to leave the field for verification remains, reducing the hours available for the agricultural service itself.

Story 475 · The Original Page in the Register of Corrections

In the land records, an original page is never struck out: all alterations are entered in a separate register of corrections. Several amendments concerning the land of Sita Devi and Ramvriksha have no clearly stated effective dates, creating confusion over present ownership and an old debt. Neha and Suresh put the original record, the changes and the dates on which those changes took effect into their proper sequence. Sita Devi's present rights become clear. A new rule requires anyone preparing proof of ownership to examine not merely the last name recorded, but also the chronology of its amendments.

Story 476 · The Envelope Without a Sender

A sealed envelope with no sender's name is found on the receipt desk of the social assistance office. The digital register refuses to accept correspondence from an unidentified person. Rama Jha and her colleagues assign it a provisional receipt number before opening it. Inside is information about errors in the records of seven beneficiaries, information that proves useful when checked. A separate field is subsequently created for an unknown sender, so that a verifiable fact need not be lost merely because the person who reports it has not disclosed a name.

Story 477 · The Shadow Signature

An old image of an officer's signature is included as an example on a training draft for the approval of assistance. When that image is printed on real letters, it is mistaken for authorisation, and Kamala Devi and several other beneficiaries receive payments before any formal decision has been made. Meera Karn, the officer concerned, explains that the shape of the signature is hers, but the decisions on those letters are not. After investigation, cases that qualify are given valid approvals, and the specimen signature is removed from the form.

Story 478 · Serial Number 000

Malati Devi submits the first application of the new year, but the numbering system assigns it '000', a number reserved for testing. Although her papers have been handed in, no valid receipt is generated. Archana Jha collects evidence of when the documents were received and how they were checked. By a special decision, '000' is recognised as a genuine application, and Malati's assistance is approved. A new rule requires the testing of the numbering system to be completed before public service begins.

Story 479 · A Witness to the Living

Devnarayan Mandal's fingerprints cannot be captured clearly, so two witnesses are required to certify that he is alive for the purposes of old-age assistance. Harihar, the first witness, gives his testimony, but dies before the second witness can be verified. The computer then invalidates the first statement. Rupa explains that the validity of testimony must be judged at the moment it was given. Once the rule is corrected, Devnarayan's assistance resumes, and the truthful evidence supplied by a witness now dead remains part of the record.

Story 480 · The Last Task of a Closed Department

The rehabilitation cell has been formally abolished, but a final decision is still pending on the compensation for Kamala Devi's land, delayed for twelve years. Shashikant, a clerk, must navigate papers bearing the old office name and seal, uncertain powers of approval and an employee number that has been deactivated. Under a special order, Kamala receives the compensation still due to her. Yet Shashikant's own honorarium and the formal termination of his service remain unsettled. Closing a department, the story shows, does not automatically extinguish the human obligations it leaves behind.

Story 481 · Two Tickets

Ganesh is offered three months of construction work in Delhi, while his wife, Lalita, has a chance to train as a health assistant in Patna. The family's savings cannot cover both journeys. Without telling her, Ganesh returns his ticket and uses the money to pay Lalita's training fees. Lalita, equally unaware of his decision, returns her own ticket to pay for Ganesh's registration. At the station they discover what each has sacrificed for the other. The train departs without them, but the hope of another opportunity remains. They have learnt how much might have been saved by speaking openly to one another.

Story 482 · The Box of Bangles

For years Sarita has kept the bangles given to her by her mother, intending them for her daughter Manjari's wedding. When a goldsmith examines them, they prove to be brass with a golden coating, not gold. Beneath the lining of the box, however, a letter and a receipt from Sarita's mother explain the truth: the real gold had long ago been sold to redeem the family's mortgaged courtyard and rooms. At her wedding, Manjari accepts both the imitation bangles and the letter as part of the family's remembrance. Its true wealth lies not in the metal but in the home preserved and in a mother's sacrifice.

Story 483 · The Red Sweater

Meera cannot bring herself to throw away the old brown blanket that belonged to her late father. Memories of the flood and of her childhood remain woven into it. Saraswati Devi, meanwhile, wants a new warm garment for her daughter. Unbeknownst to each other, both approach the same centre where old wool is unravelled and knitted anew. From the wool of that one blanket come a red sweater for the daughter and a light blanket for the mother. Dark strands left among the new stitches continue to bind the two garments to the memories of the old one.

Story 484 · Across the Pond

Returning from the city, Madhav brings the survey papers for the land on the far side of the pond and discusses them with his father, Harimohan Jha. A red thread marks the boundary, yet women and children of the village cross there every day by a short path. Rising land prices stand against a long-established common passage. His father reminds Madhav of his mother's old custom. When he sees children negotiating a loosened boundary peg, Madhav lifts the thread to let them through and considers driving the peg deeper into the hard earth. Rather than a grand declaration, the change takes place in the quiet movement of his hands.

Story 485 · Three Empty Chairs

At the feast for Archana's wedding, Janardan sets apart three chairs. They are meant for Ramcharit, the cook; Phulo Kaki, who looks after the leaf plates; and Nandu, who serves water. All three spend the day attending to guests and never find a place to sit until the final sitting. Though invited to take those chairs at night, they go to eat in the kitchen, as they have always done. The chairs remain empty. In that emptiness appears the distance between a wish to seat everyone as equals and the habits that years of labour have taught the workers themselves.

Story 486 · Evening on the Embankment

The river's erosion is swallowing the fields of the brothers Jagdish and Ramakant. Carrying the measuring cord inherited from their father, they climb the embankment to mark the boundary of what remains. Yet in the face of crumbling earth, the old meaning of a boundary peg begins to diminish. Instead of setting the red-marked bamboo stakes along the edges of their fields, the brothers use them to support the collapsing soil beside a drainage channel in the embankment. They ask the surveyor to postpone the measurement until the floodwater has receded.

Story 487 · The Last Local Train

After thirty-one years of service, Upendra Jha is travelling home on the last local train of the night. On the platform he meets Madhav, who has left his former trade and is setting out to begin a new job on the night shift. Upendra's regular railway journey has come to an end, but the altered rhythm awaiting him at home feels unfamiliar. Madhav's uncertain journey has only begun. Sharing memories of work and family, the two ride in the same compartment. At one station the older man gets off; the other travels onward into the darkness.

Story 488 · Half a Glass of Water

In a hospital waiting room, Jaynarayan and his wife Kamala wait for test results and the doctor's decision. Between them lie a file of papers and half a glass of water. Neither speaks directly of the fear within. Instead, they talk of buses, salt, oil and other ordinary matters at home. Kamala goes inside for further examination and returns, but the result is still uncertain. In their small attempts to offer each other the water left in the glass, the depth of their concern and affection makes itself felt without either finding the words to name it.

Story 489 · The Verandah Bulb

The bulb in the shared verandah of Ramprasad Jha's house goes out. His sons, Surendra and Naresh, now living in separate portions of the house, each bring a bulb of their own. But the fault is not in the bulb: it is a loose connection in the old common wiring. Together they move a wooden bench, open the plaster and repair the wire. The light comes on, although the old line of division across the floor is still faintly visible. At last their father switches off the bulb, leaving the shared bench in the middle of the verandah.

Story 490 · Two Kathas of Sand

River erosion has left part of Shivnath Mandal's field buried beneath sand. He measures the damage with his son Bipin, but refuses to regard everything as lost. They cut a channel to hold water in the surviving eastern portion of the field. Their neighbour Ramsevak shares labour and spare paddy seedlings with them. Rice is transplanted on the land that remains cultivable; the sandy portion lies empty. Bipin wants to cut a knot from the measuring cord because it now seems useless, but his father stops him. The loss is acknowledged, and the work of living with it goes on.

Story 491 · The Silent Radio

Sonu, the grandson, brings out an old radio that has been silent for three years. Raghunath Babu takes it to Naseem Mian for repair, so that they can once again hear the weather reports, river-level bulletins and information for farmers. The damaged cord is replaced, but an old, crooked screw is left where it is, since there is no need to remove it. News and songs return to the house. Raghunath explains that something which still works need not be changed merely to give it a new shine.

Story 492 · Shoes Left on the Roof

Abhay must leave home to take up a job at a textile factory in Surat. Before the journey he puts his old, wet shoes on the roof to dry. His mother, father and Neha talk about the luggage, tickets, food and the worn soles of the shoes, never quite speaking of the sorrow of parting. At dawn Abhay puts on those same shoes and departs. After he has gone, his father climbs to the roof, notices the dry marks left by the shoes and moves away the bricks lying there. An ordinary object has become the trace of the family's unspoken farewell.

Story 493 · One Cup of Tea Less

Harinath used to make three cups of tea each morning at his shop. Now that his wife Sumitra has taken a job keeping the register at the milk-collection centre, only two cups are made. In dealing with customers and the shop's unpaid accounts, Harinath discovers how much unacknowledged work she once did and how closely she understood the smallest details of the business. Slowly he begins to keep a new register in his own way and learns to deal with the customers himself. The third cup, standing upside down, remains a silent sign of the changed routine.

Story 494 · The Bamboo Bridge

The village's bamboo bridge weakens in the rains. Hariprasad and Ramjatan, who have not spoken for twelve years because of a dispute over a path through their land, arrive at opposite ends. To clear a branch caught in the water and shore up the bridge, they have to work together. They help children and an elderly woman cross. The next morning they return with bamboo to repair it properly. The old quarrel has not been settled, but a moment of danger has opened a passage through shared labour.

Story 495 · The Half-Cut Mango

After the division of their house, a wall stands between Janardan and Madhav, although the old mango tree remains common to both. As they begin cutting a branch that overhangs the roof, rain interrupts the work, leaving it half severed. That night Madhav props up its weight with bamboo. In the morning the two men lower the branch safely together and gather the green mangoes. The two halves of one partly cut mango find their way into the separate homes. As they dress the cut on the tree, there remains the possibility of tending what is left of their relationship as well.

Story 496 · The Fishing Net

The Kamala River is eating its way towards Dharanidhar's house. His son Mohan identifies a safer place in the raised homestead plot and begins moving seeds and other stores there, but his father cannot bring himself to speak of leaving the house. While fishing, Dharanidhar sees the hollowed bank and the river's altered course for himself. When cracks begin to widen in the verandah, he agrees to prepare a new roof at the higher site. At dawn, the first thing father and son spread out in the raised yard is the fishing net.

Story 497 · Smoke at Daybreak

Malati must leave her home and live with her sister in order to work at a distant centre. On the morning of her departure, she prepares food as usual for her parents-in-law and the rest of the family. Everyone speaks of provisions and the journey, but remains silent about the change about to enter their domestic life. Her mother-in-law promises to take charge of the work that will remain. Malati leaves the key to the grain room behind and boards the vehicle. Smoke rising from beneath the ashes of the hearth recalls the old intimacy of the home.

Story 498 · A Bicycle Without a Bell

Madhav Jha takes his old bicycle to Kesho, the repairer. He has the brakes, wheels and inner tube put right, but does not want the bell, crooked

carrier or torn saddle replaced merely for the sake of appearance. Later a woman carrying a walking stick arrives and slowly attempts to ride a bicycle again. Without a bell, she calls out to people herself, asking them to make way, and moves down the road. Her return to movement is possible without erasing the familiar shape of an old machine.

Story 499 · Five Minutes Late

Water from a tube well is shared among five households according to a fixed timetable. Mahendra arrives five minutes late because he has been untying his calf. His childhood friend Dayakant, following the written rule, has already diverted the flow. Several of Mahendra's garden beds remain dry, and a chill enters their friendship. Sonma's turn must also begin on time. At the next irrigation, the two friends sit together well before their allotted hour. The delicate tension between a rule and a relationship remains unresolved.

Story 500 · The Broken Field Boundary

Heavy rain breaches the earthen boundary between Devnath's and Raghunath's fields in three places. An old dispute over water had ended contact between the two families. To save the crops that remain, they fill the gaps together and replace the old blocked drainage outlet with a new bamboo channel. Naval and Chanda can once again walk along the boundary on their way to school. The embankment stands firm, yet a way has also been kept open for water and for people to pass.

Katha-Tridhara · Volume III

Stories 1–100

Story 501 · School Shoes

Moti Paswan has the opportunity to cultivate six kathas of land on a sharecropping basis, but cannot afford both the maize seed and a new pair of school shoes for his daughter Sarita, whose old shoes are torn. Seeing the chafed skin on her heels, he decides to buy the shoes, and the land passes to another cultivator. Later, working for wages in that very field, he receives some ears of maize. He saves five of them as seed for the next sowing. The hard choice between his daughter's education and the future of his farming shapes the life before him.

Story 502 · The Sacks of Paddy

Rambriksha Yadav takes thirteen sacks of paddy to the government procurement centre, hoping to raise money for his wife Dulari's medicines. The entire consignment is rejected as too damp. With no other choice, he sells one sack at a low price to buy the medicine, then dries the rest of the grain with his family. On his second visit, the remaining twelve sacks are accepted. Yet he has suffered losses through reduced weight, transport costs and the earlier distress sale. Rambriksha understands the calculation of that loss, while also recognising the necessity of getting the medicine to Dulari in time.

Story 503 · The Panchayat Tap

A public water tap approved for the western hamlet is installed inside the private gate of Navalkishore Singh. At first everyone can fetch water easily, but gradually restrictions on the hours of access and arbitrary household rules begin to disrupt the women's daily lives. Malati, Shanti and the other women agree that if one of them is refused water, all will speak up together. Navalkishore, meanwhile, needs their labour to save his mung-bean crop. After discussion, a bamboo screen separates the privacy of his house from the tap, and free access to the public water supply is secured.

Story 504 · The Price of an Ox

For twelve years, Dukhna Yadav's ageing ox Basant has been the mainstay of the family's farming. Now its legs are failing, while the costs of fodder and ploughing for the winter crop are mounting. Dukhna's son Kishun wants to sell it. Dukhna considers not only the price but also the cattle shed of the prospective buyer, Ramsevak, and the arrangements for the animal's

rest and care. The proceeds meet the farm's pressing expenses. Some days later, Dukhna sees Basant healthy and pulling a light cart. He is reassured, though he still feels the absence of his long-time companion.

Story 505 · Wages

At the brick kiln, the wages of Ramphal Sada and his family are calculated for each thousand bricks they make. Small numbers of bricks left over at the end of a count are not entered in the register, and the family repeatedly loses wages it has earned. Chanda, who attends evening classes, works through the arithmetic and discovers the discrepancy. She marks the remaining bricks separately. With the support of other workers' families, a system is established in which both complete thousands and the leftover bricks are counted openly before the workers. Not all the old arrears are recovered, but even fifty bricks can no longer vanish from the new accounts.

Story 506 · The Aadhaar Thumbprint

The worn ridges of elderly Phulmanti Devi's fingers cannot be read by the fingerprint machine at the ration shop, and she is refused her grain. Her neighbour Ramcharit will not accept the informal expedient of using his own thumbprint to collect her share. Instead he lends her two seers of rice and accompanies her to seek the authorised alternative means of verification. With the required evidence, Phulmanti receives her ration in her own name and repays the rice in full. When the fingerprint scan fails the following month, the alternative procedure is available. The difference between assistance, dignity and an enforceable right is made plain.

Story 507 · The Maize Field

To keep wild boar out of his maize field, Maheshwar Mahato spends night after night on a raised watch platform. His son Ratan is caught between a mathematics examination at school and guarding the crop. Maheshwar sells a few green ears to reduce his losses and, despite the difficulties of fatigue and lost sleep, releases Ratan from the night watch so that he can prepare for the examination. The harvest yields one sack less than expected. When his studies are over, Ratan returns to help with the farm work. Their conversations bring together the labour of cultivation and a shared responsibility for education.

Story 508 · The Debt Left by the Flood

Flooding in the Kamala River damages the grain, seed and fields of Lakshman Mahato. To pay the interest on a loan taken for the next sowing, he plants quick-selling peas on three kathas instead of wheat. The peas bring

in enough to meet the interest, but the principal remains unpaid and his wheat harvest is smaller. After harvest he sells three sacks of wheat to make the first instalment. To protect their seed from the next flood, Lakshman and Sarju Devi build a raised storage platform against the wall of their house in advance.

Story 509 · The Little Teacher

Upendra, an unemployed graduate, teaches village children in the verandah of an old oil press. People mockingly call him the 'little teacher'. His own future remains uncertain because he has not succeeded in examinations for employment. Yet he teaches Gauri and the other children not to memorise answers blindly, but to ask questions, look for reasons and explain what they learn in their own language. Gauri's father is doubtful at first, then allows her to continue. Even amid the commotion of a wedding, the children come looking for Upendra with questions. It is there that his real identity as a teacher emerges.

Story 510 · Smoke from the Hearth

A gas cylinder provided under a public assistance scheme brings smoke-free cooking to the home of Jamuna and Harinandan, and the elderly Mahesari's cough begins to ease. But when the cylinder runs empty, the family cannot immediately afford the expensive refill. They return to the wood-burning hearth and build a sloping tin cover over a vent to let the smoke escape during the rains. Little by little they save enough to refill the cylinder, though both cooking arrangements continue to be used according to circumstances. Domestic health, the cost of fuel and unequal access to conveniences remain in a difficult practical balance.

Story 511 · A One-Katha Pond

Jhallo Sahni and Phulo meet the essential expenses of their household by catching small fish in a pond barely one katha in area. When Doman Chaudhary begins raising rohu and catla there, he ropes off the pond's landing place with bamboo and cord, threatening Jhallo's livelihood. As the water deteriorates, Jhallo draws on his experience to suggest ways of draining it and bringing in fresh water. Doman comes to recognise that looking after a pond requires the knowledge of those who have long lived by it. In the end, part of the landing place is reopened. The right to catch small fish and the new fish-farming enterprise continue side by side, each under the limits of a negotiated agreement.

Story 512 · The Packet of Seeds

Hoping for an early crop and a favourable price, Shyamnandan Mahato buys hybrid okra seeds from the market. His wife, Dulari, also keeps the indigenous seeds saved at home. Heavy rain destroys several rows of the hybrid plants. Dulari germinates the older seeds and sows them in the empty spaces, allowing cultivation to continue, though the harvest comes later. The hybrid crop brings a profit at the first market, while the home-saved seed proves a safeguard when adversity strikes. For the following season, Shyamnandan chooses not to depend on either alone: he arranges to buy fewer packets of hybrid seed and to sow some of the indigenous seed kept by the family.

Story 513 · Two Goats

The two goats of the widow Kamla Devi, Dhauri and Kajri, are her movable wealth, the means by which she meets the cost of her daughter Sunita's college education. Kajri dies and Dhauri falls ill, shaking the family's hopes of future income. To pay Sunita's examination fee, Kamla takes an advance against four days of labour, then works those days to settle the account. Sunita helps to nurse Dhauri while continuing her studies. Through stringent savings and additional work, she is able to sit her examination. Yet Kajri's empty tethering peg and the rope the family has kept remain visible witnesses to a loss that no account of wages can erase.

Story 514 · The Labour Card

At a construction site in Surat, the labour contractor Jagesar keeps the labour cards of Nandlal Paswan and other migrant workers locked in his own box. The workers are thus denied full control over the documents that establish their identities. At a workers' assistance camp, Nandlal learns that a duplicate can be obtained from the register and that the original card ought to remain with its owner. After securing a new copy, he demands and recovers his original from Jagesar. One by one, other labourers reclaim their cards as well. The balance of power at the worksite does not change altogether, but the contractor's ability to control them through their identity papers is diminished.

Story 515 · The House of Earth

The first instalment of housing assistance gives Jitan Paswan hope of building a new brick house. But the second instalment does not arrive, and the roof remains unfinished as the rains approach. From the ruined room of their old earthen house, the family salvages bamboo poles, doorframes and roof tiles, using them to put a temporary covering inside the new walls.

During wind and rain, this makeshift shelter saves the sacks of paddy and the books. Jitan and Phulkumari use the remaining cement to protect the tops of the walls. Their dream of a permanent masonry house remains incomplete, yet the materials of the old dwelling provide immediate refuge within the new one.

Story 516 · The Loan Document

Sugna Mahato borrows eighteen thousand rupees for cultivation, although he cannot read the terms of the loan agreement or calculate the interest. With his daughter's help, he learns to recognise the figures and work out what he owes. He sells part of his maize to pay an instalment on time, holding back the remaining grain in the hope of a higher price. When offered a new loan that would absorb an earlier debt of twelve thousand rupees, he has the conditions read aloud and declines. Earnings from pigeon peas and wheat enable him to clear the remaining instalments. At last, on the receipt, he can identify for himself the words 'Balance—Zero'.

Story 517 · Paddy in the Common Granary

The paddy stored in the communal granary of Sonbarsa hamlet is a reserve for families in distress. As grain prices rise in the month of Sawan, some members propose selling the stock to create a cash fund. The headwoman, Vimla Devi, and others insist that the needs of hungry households must come first. A collective reckoning shows that the village would gain less by selling the paddy than its families would later have to spend buying grain from outside. The paddy is therefore distributed on loan. At harvest time, Budhni returns the first sack together with the additional quantity agreed upon. The granary remains a common resource rather than a sum of money on paper.

Story 518 · The First Harvest

After eight years of work in Surat, Nayan Mandal returns home and plans his first crop, entering every expected expense in a register. He assumes that twelve labourers will be available on a particular day, but at transplanting time the arrival of water and the availability of workers fail to coincide. The portion planted late produces a smaller yield. From the experienced Budhan Paswan, Nayan learns that agricultural labour is not simply a matter of wages paid in cash; it also depends on neighbours helping one another at the right moment. In his calculations for the following season, he makes explicit provision for beraberi, the reciprocal exchange of labour, and for the timing of the work itself.

Story 519 · The Locked Room in Madhubani

In an old mural inside his locked room, the painter Kaushal Paswan thinks he sees the eye of a fish, a branch of kadamba and three dots changing their appearance. His pupil Chandrakala examines the painting as it stands and notices traces of fresh colour on Kaushal's hand. At last, Kaushal admits that Renuka did more work on the mural than he did, but that he concealed her contribution and painted out the three dots. The room is thereafter kept open. Whether dampness, old pigments or memory account for the seeming alterations in the picture remains unresolved; what has finally emerged into the open is the truth the artist had suppressed.

Story 520 · The Sound of a Bell

Night after night, a bell-like ringing inside the wall of an old mansion troubles Shailkant Jha. It awakens the memory of an old wrong. The servant Bhola had gone to see his sick daughter, Paro, but Shailkant, afraid of the master, denied having given him permission, causing Bhola to lose both his job and his wages. With his niece's help, Shailkant writes a correction to the old register and hands the document to Bhola. During repairs, a loose, rusted wire is found to be the physical source of the ringing. Yet the discovery of its cause, and even the handing over of the correction, do not bring Shailkant immediate forgiveness.

Story 521 · The Pond's Eye

The narrator spends the night on a raised watch platform guarding the fish in Kajrahi pond. Among the water weeds, a black, circular patch appears to him like the pond's 'eye', and fear takes hold of him. Unfamiliar footprints, splashes in the water and the shifting dark ring deepen his unease. One night the earth of the embankment gives way, and he becomes trapped in the mud before struggling free. Bauku Sahni explains how an old spring and the currents beneath the surface could account for what has happened; the embankment is repaired. Yet even after the water weeds have been cleared, the circles rising in the pond do not wholly dispel the narrator's fear or uncertainty.

Story 522 · Inside the Wall

While repairing the damp wall of an old house, Shashibhushan Chaudhary discovers a clay bird that makes a whistling sound. He believes it belongs to a memory of his childhood and of Manjari. But conversations with his sister and an elderly potter reveal disagreements about where the object lay, its colour and the events associated with it. One recollection becomes entangled with another; no one can determine how far the

discovery itself has altered the pictures of the past. The wall is rebuilt, and the little clay bird is placed on a shelf. Its presence is beyond dispute, but its verifiable history remains uncertain.

Story 523 · Soot

Marks of soot repeatedly appear on the wall of an old kitchen. For Malati, they recall the day Gauri was prevented from pursuing her studies and sitting an examination. Years before, frightened of the household's disapproval, Malati had refused to open the rear gate, and Gauri had lost her chance to take the examination. When the two meet again, that long-buried guilt comes to the surface. A mason suggests that an old oil stain might make a shape reappear in smoke, but the mark emerges once more even through a fresh coat of plaster. The uncertain boundary between remorse, recollection and physical coincidence is left open.

Story 524 · The Lantern

Ramautar, the watchman of an old seed storehouse, keeps a lantern burning every night even though there is no electricity. His assistant, Birendra, discovers the reason for his fear when a storm blows the lantern out and Ramautar speaks of the night relief grain was stolen. At an officer's bidding, he had handed over the gate key, extinguished the lantern and given false testimony against an innocent labourer, Lakshman. The loose fastening of the gate and the damaged roof are subsequently repaired, but the old incident remains alive within Ramautar. Birendra now understands the duty of tending the lantern in an altogether different light.

Story 525 · Seven Steps

Seven steps descend to the basement of the printing press, yet Nawal, its owner, hears a mysterious knock after the seventh. The sound recalls an incident from his adolescence. Jealous of his maternal cousin Gopal, he had spoken of an imaginary eighth step in the dark, and Gopal had fallen and injured his wrist. In the present, workmen discover that a loose iron pin and a wooden support have been producing a delayed knock. The sound ceases after the repair, but the recollection of what Nawal did remains with him. He stops counting the stairs.

Story 526 · The Closed Clock Tower

A clock repairer in Benipatti sees that the hands of the closed clock tower across from him have stopped at twelve minutes past four. One night he hears eight strokes of its bell, recalling an incident twenty-eight years earlier when his misconduct caused blame to fall upon Majeed Miyan, an

employee of the tower. An inspection reveals a loose metal strip that could have made the sound; another witness had heard only a single stroke. The clockmaker confesses his old lie to Majeed's son, Samad. The tower remains silent, but he has begun to confront the time arrested within his own conscience.

Story 527 · A White Feather

The repeated appearance of white feathers in the locked storeroom of a seed merchant leaves him increasingly disturbed. He counts the feathers, marks them and keeps watch through the night, yet his recollection of their number and location refuses to agree with what he finds. During repairs, Mahendra discovers the remains of a dead pigeon and its feathers trapped in an old roof pipe. Once the opening is sealed, no new feathers appear. Even so, a feather bearing a spot of kajal is subsequently found inside an old register. The merchant burns it, but doubts about the reliability of his sleep and memory persist.

Story 528 · The Last Portrait

Vinod Jha, a photographer in Laheriasarai, makes final portraits of the dead. He is deeply unsettled when an unknown young man's face seems to appear in the clouded glass of his father's old wooden camera. A glass specialist explains how stains, light and angle can together produce an apparent likeness. When the glass is replaced, his work proceeds normally, yet the face seems to return on the old pane. Vinod comes to understand how the eye and mind give the form of an identity to an indistinct mark. Thereafter, the experience changes the way he looks at the subjects of his last portraits.

Story 529 · Water in the Basement

After the floodwaters recede, Amresh Sah, a craftsman working in brass and bell-metal, hears a persistent dripping in his basement, although no fresh water is visible on the ceiling or walls. His assistant Jugal hears it too. Blocking a pipe, installing an electric light and tracing the direction of the sound fail to account for every drop he seems to hear. Kaushalya helps him recognise the anxiety produced by his ceaseless measuring and checking. Amresh begins to take five breaths before examining the place again. Even after a mysterious mark appears on a dry bowl, he continues with his craft rather than surrendering all his days to the unexplained sound.

Story 530 · A Line in the Night

Neelkanth Jha, temporarily employed as the night record-keeper at a cremation ground, sees his own name in the register of the dead, as though it were a grey impression on the page. He cancels the entry, but an inspector explains that writing pressed onto a sheet laid above it can leave just such a trace. A possible source is found, although the positions of the letters cannot be made to agree completely. At the end of his fifteen-day assignment, Neelkanth returns to his regular office. When he later looks again at the cremation-ground register, the mysterious impression has faded, but his caution before an empty line has not.

Story 531 · The Door Chain

In Sakri, the heavy door of the silversmith Deepnarayan Sah's house is found open at night despite the chain having been fastened. Fearing theft, he scatters ash, stretches a thread across the entrance and arranges a watch, but none of these measures settles the matter. He notices the left side of the door moving when a train passes. The carpenter Ramudgar finds wood eaten by insects and a loose pivot, and repairs the damage. The door stays shut thereafter. Still, whenever Deepnarayan hears a faint metallic click at night, he considers that metal may contract with the temperature, and makes a habit of checking the left hinge as well as the chain.

Story 532 · A Heartbeat

Dr Prabhakar Mishra hears a sound like a heartbeat in the locked rear room of his clinic. Its rhythm returns him to the unresolved memory of Saryu, a former patient, and the hour of Saryu's death. A plumber finds a fragment of leather and a rusted ring inside a pipe; their repeated collision has caused the sound. When the pipe is removed, the room falls silent. Yet at home, as Prabhakar listens to his own pulse, he finds himself searching for the same rhythm once again. The explanation of an external noise has not answered the question that memory continues to ask.

Story 533 · The Black Mirror

Malati Devi, who runs a shop selling lacquer bangles and vermilion in Madhubani, sometimes thinks that her reflection moves a moment late in an old mirror stained with black patches. Her daughter Chanda repeatedly points out that Malati had already moved her hand. A glazier explains the effects of the damaged backing and overlapping reflections, and repairs the mirror. Even with its new backing, Malati senses a moment's delay. She begins to admit that the discrepancy may lie not in the glass but in the act

of seeing itself. In the end, she gives up testing the mirror and turns her attention to the people before her and to their work.

Story 534 · Footsteps on the Roof

Ramballabh Das, who fits skins to mridang drums, hears what seem to be heavy footsteps on his roof at night, although there is no permanent staircase leading to it. Ash is spread to look for footprints, but no clear marks appear. An old bamboo rainwater spout is found striking the wall and making a sound. Tying it in place brings quiet, though an occasional thud is still heard. Even after the spout is removed altogether, a noise and a faint scraping return one night. Rather than spend his life pursuing the mystery, Ramballabh goes back to his work on the drums.

Story 535 · The Smell of a Letter

Shashinath Jha, a retired postal worker, detects in an old letter from his ancestral trunk a damp smell mingled with kerosene and ink. It recalls an incident at the post office when a temporary watchman, Ramphal, was blamed for opening a postal article, and Shashinath, out of fear, had failed to speak the truth. Airing the letter lessens its odour, but the smell of rain or of other objects reawakens the guilt of that earlier silence. Shashinath does not throw the letter away. He accepts the uneasy presence of memory and continues with the ordinary work of his days.

Story 536 · The Neelkanth

In Manigachhi, Phulo Devi believes that the call of the neelkanth bird is a sign of impending misfortune, and stops the family from cracking makhana and taking the produce to market. The delay reduces the amount of goods they can sell, yet an injury and an old family memory seem to confirm her belief. Her daughter-in-law Saroja observes how even those who disagree can learn to obey a rule born of fear. One night a sound rising from a crack in a cooking pan resembles the bird's call. The next morning the bird truly calls, but the family goes on working; this time, Phulo Devi does not extinguish the cooking fire.

Story 537 · The Other Room

While staying at a hotel in Jaynagar, the narrator sees another door behind room number eighteen at night, although no such room appears on the building plan. When damp plaster is removed, a mason points out the rectangular pattern of bricks where an old doorway was once sealed. Fresh plaster makes the outline disappear, but rain and moisture bring it back. A sound like the turning of pages seems to come from within; its ordinary

source could equally well be the neighbouring room. The narrator leaves the hotel carrying two things together: knowledge of the solid wall and the mystery he has felt in its presence.

Story 538 · Beneath the Earth

Workers digging in the sunken courtyard of an ancestral house in Khajauli come upon a small, rusted metal box. The owner has an uncanny sense of already remembering its latch, its location and a blue object inside. He cannot distinguish what belongs to childhood recollection from what may be conjecture. One night his body seems to count its own steps and carry him to another spot in the courtyard, but digging there yields nothing. The ground is levelled again. The box remains on a shelf, while the question of what the body itself may remember stays alive within its owner.

Story 539 · The Official Stamp

The round brass face of an official stamp disappears at the local revenue office, bringing the issue of certified copies to a halt. Clerks, officers and constables become entangled in searches and the writing of reports. Eventually the missing face is discovered inside a securely stored sample file: a loose screw had caused it to come away. In the name of preventing another loss, the stamp is now fastened to the desk with a short chain. It can no longer be carried as far as the service window, and the queue of citizens grows longer still.

Story 540 · The Autobiography of a File

A government file born from a request to repair a broken footbridge across an irrigation channel tells its own story. The brief petition of twenty-seven villagers travels through departments, notings, inspections and orders from senior officers, swelling from seven pages to fifty-nine. Meanwhile the villagers build a temporary crossing themselves. The administration's final decision goes no further than a fresh inspection, and the file is consigned to the archives. A few months later, another petition arrives, this time asking for repairs to that same makeshift crossing. The file's expanding pages expose the distance between the growth of paperwork and the actual needs of the people.

Story 541 · Chair Number Seventeen

Bankeshwar Jha, a clerk in the Irrigation Office, longs to occupy chair number seventeen beside the window. So determined is he to secure that particular seat that he even forgoes an opportunity for promotion. At last the coveted chair becomes his. By then, however, a wall for the new records repository has risen immediately outside the window. The sunshine, the breeze and the view of the road have all disappeared. Invoking the strict requirements of the rules, he refuses another proposal to rearrange the seating. Instead, he carefully darkens the red number painted on his chair with fresh ink. His attachment to the emblem of a position has become a deception he practises upon himself.

Story 542 · The Spelling of a Name

In the Horticulture Office's annual report, the officer Nagendra Jha finds his name printed as 'Nāgendra', with an extra vowel sign in place of 'Nagendra'. To correct this small error, committee follows committee, the costs are calculated, and the applications of farmers whose crops have been damaged by hail remain pending. Work proceeds only when the officer writes out the correction himself and certifies it. By the time the printed correction slip arrives, he has been transferred. The new officer's handwritten name, too, shows a variation in spelling. This time the clerk Baleshwar resolves to dispose of the farmers' applications first.

Story 543 · The Great Inspection

News of an impending inspection throws the Weights and Measures Office into a frenzy. Dust is swept away, defective instruments are hidden, and a carefully ordered display is prepared. By chance, the district inspector mistakes the neighbouring cooperative paddy store for the government office and goes there instead. Seeing grain actually being weighed, farmers lodging complaints and business conducted in the open, he records a favourable assessment. Afterwards, the government office begins providing a regular service near the storehouse, in an effort to make the inspector's praise true. When the next report is prepared, the officer bases it on experience of work actually done rather than on an arrangement devised for display.

Story 544 · A Proposal for a Fan

A proposal to replace the broken fan in the Circle Office passes through seven stages of administrative approval. During the heat, the staff carry their tables out to the veranda and continue working there, while visitors fan themselves by hand. Approval takes its time. When the purchase order finally arrives, no fan can be bought at the old quoted price, so fresh permission is required for the higher cost. The new fan is installed by the month of Ashwin, after the heat has subsided. Yet the employees do not carry their tables back indoors: keeping them on the veranda has made the office more convenient for the people it serves.

Story 545 · The God of the Office

An old cupboard in the Records Office is known as the 'god of the office', for complicated files placed inside it seem to vanish as though by divine intervention. Sudeep Mishra, a new clerk, grows suspicious while searching for Chandreshwar Mahato's long-pending file. When the cupboard is moved for repairs, one hundred and twenty-seven old files emerge from a gap in the wall. The office must acknowledge the true weight of these invisible arrears and set the applications in motion again. The cupboard is now kept away from the wall. Seeing a newly arrived file, even a senior clerk sits down to read it instead of looking for somewhere to hide it.

Story 546 · The Signature

Ramlochan Pandit, a potter, needs a single signature from the district crafts officer to receive the assistance already sanctioned for an electric potter's wheel. He wanders through room after room, unaware that the officer himself is sitting nearby, drinking tea in ordinary clothes. As soon as the man's identity becomes known, the signature is given. A task that has consumed almost the entire day is completed in moments. On his way home, Ramlochan notices that the tea seller's own payment papers are about to be sent from desk to desk in the name of further verification. The story exposes the unequal privilege of access and the absurd circuits through which ordinary people are made to pass.

Story 547 · The Special Cap

The khadi cap worn by Shambhunath Karna, the new seed-certification officer, bears two stitches of blue thread. His subordinates begin to seek the secret of his promotion and efficiency in that cap, and have identical caps made for themselves. Yet the next promotion goes to the diligent Devkant Paswan, who never wears a cap at all. It is eventually learned that Shambhunath wore his to shield an old wound from the sun, and that his daughter had made the blue stitches to mend a torn edge. Even then, the employees cannot bring themselves to abandon their faith in the cap as a symbol of advancement.

Story 548 · The Tea Committee

For years the officer in the Drainage Office has disliked the tea supplied by Chandrakala Devi's shop. A committee is appointed to examine its flavour, aroma, temperature and price. Over five meetings the committee spends a considerable sum on drinking tea. In the end it issues recommendations so vague that they settle almost nothing, while payment of Chandrakala's old dues remains withheld. Her tea continues much as before, with minor adjustments in quantity and sugar. The bills for the committee's expenditure, however, are cleared first. Through this small transaction, the story reveals the real economic burden concealed inside a pointless administrative procedure.

Story 549 · The Missing Bell

The old bell that has hung at Pathrahi Middle School since 1956 disappears. Headmaster Manbodh Jha and the attendant Mahavir begin searching for it, but the school's foundation-day celebration soon gives rise to a contest over donors, credit and whose name should be recorded. It emerges that the bell had been taken down on the pretext of measuring it and stored in a warehouse. While rival groups continue debating blame and recognition, Mahavir quietly hangs it in its place again. Its sound restores the rhythm of the school day. Out on the veranda, however, the quarrel over names goes on unabated.

Story 550 · A Certified Copy

Bhuvaneshwar Mandal, a bamboo craftsman, needs a certified copy of his old artisan identity card to apply for a place at the district fair. Although he presents the original certificate, the clerk demands a copy and certification of that copy. Each new copy brings another request for identification papers and another journey to the office. Eventually the application is submitted, but no one in the office thinks it necessary to examine the craft he actually practises. Bhuvaneshwar keeps his original certificate and receipts carefully. He knows that the cuts on his palms and the marks left by weaving tell the truth of his identity—though no certified copy can reproduce them.

Story 551 · The Height of the Desk

The new officer in the Agricultural Implements Office has his desk raised by two inches because his knees keep striking its underside. This simple piece of carpentry becomes, among the staff, a question of rank and prestige. Blocks, pieces of cardboard and screws are added to desk after desk, while employees compare the height of their furniture with one another's. In the end, Budhan the carpenter makes the necessary adjustments according to the needs of each person's seat and work. The office gradually returns to normal. A few employees, however, still contrive to preserve an extra inch or two of purely symbolic elevation.

Story 552 · Red Tape

An official order inaugurating a 'Fortnight for the Elimination of Red Tape' directs offices to mark their pending files with strips of red ribbon. The staff set about organising tenders and procedures for purchasing the ribbon. Suman, a clerk, meanwhile begins disposing of several of the delayed files directly, and many applications move forward. Thousands of metres of red tape arrive only after the work has been done. Practical action finally takes precedence, and the unused ribbon is placed in storage. The label on the bundle of 'surplus materials' is itself tied on with the same red tape—a visible emblem of the contradiction the campaign was meant to overcome.

Story 553 · The Forgotten Order

At the materials depot in Jaynagar, heavy pipes are not brought through the broad front gate. Instead, labourers haul them around by a long rear route beside the pond. Raghav Mishra, the new storekeeper, discovers that a temporary prohibition imposed four years earlier is still being observed, although the slope that caused the difficulty has long since been repaired. The labourers continue to perform needless extra work. Since no clear record of the old order's cancellation can be found, a fresh order is issued and the main gate is reopened. The obsolete direction board is duly entered in the depot's inventory as an item preserved for its historical value.

Story 554 · The Government Umbrella

Umbrella number thirty-eight, belonging to the Road Maintenance Department, has been repaired over and over for years. The storekeeper, Gopal Thakur, is astonished by the total cost of its repairs, but his superiors regard the umbrella's preservation as the primary concern. To prevent further expense, a new hook and a protective cover are made for it. When heavy rain falls, Sahdev, a messenger who must go to the post office, will not risk using the government umbrella; he goes out carrying his own torn one instead. In the official register, umbrella number thirty-eight remains 'serviceable and secure', although it serves no one.

Story 555 · Attendance

The Cooperative Office issues strict instructions to regularise the attendance of employees who habitually arrive late. Its ingenious remedy is to send the attendance register from house to house, so that everyone can sign on time. The signatures appear punctually, but the employees themselves still reach the office late. During an inspection, the full register and the empty chairs expose the deception. The practice of circulating the register is stopped. Gradually the employees begin making an effort to arrive on time, and Naresh, the attendant, keeps the register on its proper desk. The story draws a sharp distinction between attendance recorded on paper and service actually rendered.

Story 556 · Photographic Identification

Photographic identity cards become compulsory at the office, and the experienced gatekeeper Ramkishun is ordered to trust documents more than his own recognition of faces. Mahendra, an electrical-goods dealer, gains entry with a false identity card, while long-serving employees are stopped whenever they forget theirs. After the incident comes to light, new instructions require the photograph to be compared with the person's actual face. The solution brings its own absurdity: Bhola Jha, a genuine employee, is held outside the gate because the photograph on his old card no longer resembles him.

Story 557 · The Welcome Gate

To improve access to the public-service centre at Phulparas, the authorities install a brightly coloured welcome gate, signs, benches and lamps. The departmental funds cannot provide an additional employee, so Ramudgar, the centre's sole assistant, is moved from the service window to a welcome desk. The number of visitors grows, but the acceptance of applications all but stops. Ramkali Devi returns again and again, trying to have an error in her widow's pension corrected. The district inspection team praises the splendid welcome, while the closed window inside remains the real obstacle.

Story 558 · The Annual Report

At the Rural Construction Division, everyone is racing to dispatch the annual report on time. Officers arrange photographs of unfinished works, records of meetings and figures of progress; some totals shrink when checked against the facts. The report is delivered before the deadline of 31 March, and the office counts this as an administrative achievement. Lakhan Paswan, a labourer, is still awaiting payment because one signature has not been obtained, and several projects, including a shelter at the market, remain unfinished. The handsome cover of the published report stands in stark contrast to the worker who continues to wait for his wages.

Story 559 · Permission to Live

A notice requiring verification of residential permission is pasted to the three-generation-old home of Raghunandan Chaudhary. To obtain official sanction to live in his own house, he must visit office after office. Local officials and neighbours attest to his decades of residence, but the process starts again when he is not at home during an unannounced inspection. At last, permission for permanent residence arrives by post, addressed to the very same house. Raghunandan discovers that, according to the government papers, he has lived there only since the day the permission was granted—even though he has spent his entire life within those walls.

Story 560 · The Waiting Room

The sub-divisional hospital introduces coloured arrows and a succession of new waiting rooms in an effort to reduce the crowd of patients. Ramsevak Mahato, a farmer seeking treatment for pain in his shoulder, grows exhausted walking from one room to another. The doctor and the patient, each following different instructions, wait for each other in different places. When Ramsevak finally refuses to move to yet another room, the doctor comes to him and completes the examination in five minutes. But to collect his medicine, the farmer must take his place in a sixth waiting room.

Story 561 · The Number

At the Public Grievances Office, complainants are assigned numbers instead of names, supposedly to reduce favouritism. Ramlochan Yadav, who has come to seek compensation for damage caused by work on a field drainage channel, receives several different numbers in a single day and loses track of which identity is his. When his payment is approved, his real name is suddenly required, but no department has been established to reconnect the numbers with the people. At last, the name concealed beneath a covering on the paper is revealed, and the payment order is completed. Ramlochan understands that a number serves the office's convenience; it does not constitute a person's identity.

Story 562 · The Case That Remains Open

Teacher Udaykant Paswan receives a letter announcing a departmental inquiry against him, but no account of the allegation is enclosed. He asks to be told what he is accused of; the office first demands his acknowledgement that he has received the charge. After repeated visits, an opened envelope yields only a notice saying that the original charge is held at the district office. The district office demands proof that the case has been registered, and obtaining that proof requires the charge once more. The inquiry remains officially 'open' under a new number, its accusation unknown. Amid this uncertainty, Udaykant continues teaching his classes and conducting examinations at school.

Story 563 · The Boundary

An invisible new boundary divides the village of Sirkhariya into administrative areas 'A' and 'B'. Devnarayan Mahato, who goes out to sell milk, and other villagers must now obtain permits for their everyday journeys, although the village paths and families extend across both areas. A surveyor tries to mark the boundary along the course of an old stream, but cannot locate a definite line. Ordinary daily movements are eventually exempted from the permit requirement, though disputes remain over special occasions. Rainwater, indifferent to the distinction, continues to flow freely across the two administrative areas.

Story 564 · Verification

Tilak Paswan, eighty-two years old, has his old-age pension stopped because official proof that he is still alive has not been recorded. Following the office's instructions, he repeatedly leaves home to present himself for verification; meanwhile, the visiting employee, finding him absent from the house, marks his status as uncertain. Eventually a certificate is prepared declaring Tilak dead in the official list. Still very much alive, he carries his own death certificate to the office and applies to have it cancelled. For the next verification he is ordered to remain at home. The visible evidence of a living human being and the government's written entries move in opposite directions.

Story 565 · The Closed Lift

The numbers on the buttons of a six-storey Cooperative Building's lift are removed and replaced with the names of departments. As those departments are repeatedly shifted, the names cease to correspond to the floors. A safety inspection requires permanent floor numbers, but an administrative order prohibiting them remains in force. Amid partial alterations, fresh notices and a suspension of transfers, the lift stays closed. Dinbandhu, the records carrier, and the visitors resume counting floors as they climb the stairs. Inside the useless lift, the old numbers are still there, waiting to be read.

Story 566 · The Blank Seal

At the District Cottage Industries Office, no paper is permitted to move forward unless it bears the impression of a rubber stamp with no lettering on it. Mukund, a new employee, asks what exactly such an empty seal is supposed to certify. In the meantime, the file concerning a grant to the craftswoman Champa Devi remains trapped by this singular rule. Even after an inquiry, the officers decide to preserve the old practice. On the inspection papers they make Mukund himself apply the blank stamp. Once again, a mark that conveys no meaning becomes indispensable proof in the machinery of the office.

Story 567 · The Order at Midnight

An administrative order arriving at midnight is written in signs so obscure that no one in the village can understand it. Nevertheless, everyone is required to report how they have complied. Without clear instructions, people dare not even carry out their ordinary work. When they request clarification, they are told not to do anything contrary to the order's possible intention. The following night another order arrives, this time in Maithili, directing people to report separately whether they understood the first order and whether they obeyed it. Yet the meaning of that first order has still not been translated.

Story 568 · The Invisible Tax

Shambhunath Sah, a bicycle repairer, receives a demand for an 'Integrated Civic Amenities Tax', though no one can explain its basis or calculation. When he questions the demand, his family's civic-services identification number is deactivated. Access to the library, a travel concession for the elderly, rubbish collection and even the registration of a complaint about the public tap are all obstructed. Eventually he receives a certificate declaring the tax payable to be zero. But no provision exists for restoring the deactivated number. On paper the tax demand has disappeared; in daily life the hardships it caused remain.

Story 569 · The Wrong Date of Birth

Ramudit Mandal, a skilled bamboo craftsman, applies for an allowance honouring elderly artisans. A registration date entered thirty-eight years earlier has mistakenly been copied into the space for his date of birth. The office therefore treats him as only thirty-eight years old. The clerical error is acknowledged, but without another document proving his birth date it cannot be corrected. Despite a lifetime of experience, he is denied the assistance intended for senior craftsmen. Instead, the office sends him an invitation to attend a beginner's course in bamboo weaving.

Story 570 · One Door Too Few

Nandkishore Sah's old house has two doors, but only one appears on the plan approved by the municipality. On that basis the rear door is declared illegal. One department orders it to be closed, while another insists that the passage to the drainage channel must remain open. In the end, the lower portion of the doorway is bricked up and the upper passage left open. On the government's plan the wall is now straight and fully compliant with the rules. The people living in the house, however, must continue finding their awkward way through that half-open passage.

Story 571 · The Return

After twenty-four years of work in a factory in Surat, Devnarayan Mandal returns to Belouncha village to settle there permanently. Under the panchayat's new regulations, however, registration as a 'returning resident' requires an official certificate of departure from the village—a document that was never issued twenty-four years ago. Neither the testimony of the former postman nor that of his family can make good the missing entry. At last, an employee records his 'departure' and 'return' on the same day, one minute apart. For his mother, the separation has lasted twenty-four years; in the government's reckoning, his time away amounts to a single minute.

Story 572 · Translation

An order setting a weight limit on the old bridge over the Kamala is displayed in four languages, but the translations differ in their statements of the hours and the prohibitions. The bridge guard imposes fines according to his own understanding; Budhan Sadai, who sells earthen pitchers, is among the many people penalised. The office acknowledges the discrepancies in meaning, yet suspends decisions on appeals while continuing to collect outstanding fines. Even the revised order contains a translation error, and the earlier penalties remain in force. On the road across the bridge, the meaning of the rule continues to change, but the amount of each fine remains beyond dispute.

Story 573 · The Order from the Empty Chair

When the officer in the Agricultural Seeds Office is transferred, his chair stands vacant. Acting on instructions that routine work must not stop, the employees begin submitting proposals and, if no objection arrives, issuing orders in the name of the empty chair. The new officer, Avinash Kumar, arrives and asks to review the earlier orders. But he first signs an instruction allowing them to remain in force and then leaves for training. The employees once more deposit their proposals on the desk beside the vacant chair. A system of orders conducted in a person's absence resumes, this time under the protection of a valid signature.

Story 574 · The Admission Slip

When the injured labourer Ramji Paswan is brought to Jhanjharpur Hospital for emergency treatment, the guard first demands an admission slip. The regulation requiring the time of admission to be entered, together with the fact that the patient has not actually been allowed inside, entangles the process of treatment. Dr Aniruddh provides the necessary assistance while the staff continue reconciling the times in the register. After an inquiry, a note classifies the treatment as 'assistance before admission', and the registration desk is moved. Ramji goes home on crutches, but the distance between a human emergency and admission on paper remains.

Story 575 · The Frozen Account

Ramlochan Mahato, a bamboo craftsman, wants to withdraw money from a cooperative bank to pay for his daughter Sarita's training. Although his account contains savings, withdrawals have been blocked in the name of a security check. The banking system will not let him take out his money, but it continues to deduct charges for messages and maintenance and to credit interest. His application for reactivation remains pending, while the

security inspection regards the account holder's failure to make a single withdrawal as proof of successful control. Ramlochan finally understands that the account is closed to him but remains open to the bank.

Story 576 · Final Approval

The application submitted by Jagdish Mandal for the loss of his paddy crop in the Kamala floods receives final approval seven months after his death. His widow, Sumitra Devi, goes to the office with his death certificate to collect fourteen thousand eight hundred rupees. The system, however, demands the approved beneficiary's personal presence, while payment to an heir is trapped in a separate procedure. Unable to find an option for recording Jagdish's death, the office repeatedly marks him 'absent' and dispatches another notice. Sumitra returns with the approval letter and the notice addressed to her dead husband; the sanctioned relief still awaits payment.

Story 577 · The Forbidden Question

At the Minor Irrigation Office, the wages recorded in seven files for canal repairs are withheld because the files lack green covers. Employee Madhukant Mishra asks where this rule about colour originally came from. During the ensuing inquiry, his question itself becomes a disciplinary matter, and the office issues a new rule requiring prior permission before anyone may ask about the source of an administrative tradition. Once a consignment of green covers arrives, the outstanding wages of the women labourers, including Kamala Devi, are paid. But Madhukant receives no answer. Only the procedure for asking his question has acquired a fresh restriction.

Story 578 · The Guarded Door

To renew the registration of his handloom cooperative, Rameshwar Das is directed to 'Entrance Four' of the old Cooperative Building, where the door is locked and guarded. The office counts the number of people waiting as evidence of the service it provides, yet makes no arrangement for them to enter. When people stop coming, thirty days of inactivity are formally certified and the application is redirected to the main gate. Rameshwar's cooperative is eventually renewed, but the delay has reduced the earnings of families dependent on the looms. Although declared inactive, the closed door continues to stand with a new lock and a guard.

Story 579 · Evening in Laheriasarai

Returning late from his office in Laheriasarai, Arunesh Jha is irritated by the expenses of the household and by his habit of questioning his wife Kumud about the accounts. Watching two people work together at a market stall reminds him of the labour he has failed to notice in his own marriage. He begins to see that Kumud earns money by teaching, manages the household, saves for further training and keeps working despite physical pain. When he reaches home, he asks about the ache in her wrist for the first time, and the two sit down together to reckon their income and expenses. Amid the figures, the shared life behind them becomes visible.

Story 580 · Lights on the Bridge

For three years, the college student Neelabh has fashioned a love story in his imagination from memories of an exercise book and a song associated with his classmate Rashmi. When he unexpectedly meets Rashmi and her sister Neha on the Kamala bridge, he encounters the reality of her life: laboratory work, her mother's medicines and responsibility for her sister. In the course of an ordinary conversation, the meanings he had imagined in old signs begin to loosen. Neelabh realises that love is not the act of filling another person's mind with one's own desires. He wants to meet Rashmi again, but no longer to prove his fantasy true: he wants to know her as a human being.

Story 581 · The Closed Library

When an old library in Darbhanga closes for its annual stocktaking, Madhavi, a research scholar, finds her daily routine abruptly suspended. For five years she has been researching women's private writing in old Maithili periodicals, while postponing relationships, meals, the care of her room and even visits to her sister Meena until 'after the research is finished'. A meeting with a bookbinder and his daughter helps her realise that doing important work does not require putting life itself on hold. Madhavi does not abandon her research; after leaving the library, she decides to visit her sister. For the first time, her scholarship and her personal life find room within the same present.

Story 582 · After the Fair

On the morning after the Janakpur fair has been dismantled, fifteen-year-old Mihir arrives with a bag, hoping to join a travelling merry-go-round troupe and move from town to town. After fifteen days working at a tea stall, he has been captivated by the fair's lights and the promise of travel. The troupe's members, however, explain the realities of wages, weather,

demanding schedules and the need for his family's permission. Watching the emptying ground and the labour of taking down the rides, Mihir begins to understand his desire differently. He returns home with his uncle Raghunath, but does not erase the names of distant towns from his exercise book. The longing to travel remains; what changes is the way he looks at it.

Story 583 · Leaving the Cinema

After watching a film in Madhubani, Navneet Jha is so taken by the hero's daring escape that he imagines resigning from his job in a clothing shop and leaving for Delhi. On his journey home that night, the work of a rickshaw driver named Mahendra Sadai—repairing a broken chain and struggling with one small expense after another—shows him what travel and earning a living actually entail. Navneet does not dismiss the possibility of going to Delhi. But instead of being dazzled by the thought of buying dark glasses, he begins calculating the fare, somewhere to stay, his first month's wages and the capital he will need. In place of the film hero stands the real responsibility for his own decision.

Story 584 · The Veranda Light

At night, Anima Jha of Darbhanga sews and alters clothes on the veranda of her home, yet seldom charges neighbours and acquaintances for their small jobs. One evening, when the bulb goes out, she becomes acutely aware of how persistently her time, thread and labour have gone unseen. After a new bulb is fitted, she charges Usha fifty rupees for work on a blouse, records her sewing income and expenses separately for the first time, and establishes working hours from three until six each day. Her daughter Ragini writes a sign for the veranda. Anima gives her labour the standing of defined work rather than treating it as an ordinary favour performed at home.

Story 585 · The Glass at the Tea Stall

Waiting for a bus at a glass-fronted tea stall in Laheriasarai, Shruti Jha, an economics student, takes pride in the blue bag she has bought with her own earnings for eight hundred and fifty rupees. Beyond the glass, the work of Malti, who cleans drains, and her fellow labourers—their half-paid wages and uncertainty about the next day—changes what she sees. She recognises the difference between her income from tutoring, the support she receives at home and the women's difficult circumstances, without inventing a wage figure on the basis of incomplete information. When Shruti boards the bus, the bag is worth exactly what it was before; its meaning, however, is no longer confined to a story of personal achievement.

Story 586 · The Railway Announcement

At Darbhanga Junction, seventy-two-year-old bicycle repairer Vinodnath Mahato waits for a train and watches a young man afraid of missing the train to Jamalpur. The sight recalls an opportunity in his youth, when a train taking him towards training stood before him and he could not summon the courage to board. All his life he has told his family that he missed the train, allowing later explanations to conceal the truth. Now he silently corrects the story: the train did not leave without him; he chose not to get on. As he boards his present train, an old sentence in his memory is finally set right.

Story 587 · A Band of Sunlight

Recovering from a fever, the weaver Shivanandan Das begins measuring his days by a band of sunlight crossing his room. Under pressure to complete a trader's order for thirty gamchhas, his son Naval grows exhausted from working the loom day and night. Watching the sunlight move against marks drawn on the floor, Shivanandan senses another pace at which time may pass. When he notices the tangled warp on Naval's loom and the worn skin of his heels, he arranges a reasonable deadline with the trader instead of delivering the unfinished cloths at once. In the end, he turns away from anxious counting and continues to watch the sunlight's slow advance.

Story 588 · A Fragment of Music

Three brief notes played by a wedding band carry sixty-four-year-old Shashikant Chaudhary back thirty years to his sister's marriage. On that occasion, an envelope of money he had put away himself went missing, and suspicion fell on Naseem, one of the musicians. Shashikant remembered where he had placed the envelope before the search was over, but chose not to speak immediately rather than face an embarrassment to his standing. Naseem's bag was searched again, and he suffered humiliation. The music heard in the present makes Shashikant recognise that the burden of those ten minutes of silence remains with him even after thirty years.

Story 589 · The Shuttered Shop

Aniruddh Karna, a wholesale distributor of toys, looks for Lalbabu's old toy shop in the Madhubani market, a place he loved as a child. The shop has closed. Wooden spinning tops, glass marbles and toys that could be repaired have given way to a new trade in cheap plastic. Aniruddh is himself part of that business. Seeing a broken piece of a spinning toy in his warehouse, he remembers the feel of older objects and the culture of mending them. He does not give up his work, but orders the next consignment more cautiously

and in a smaller quantity. The closed shutter of the old shop remains in his memory as the colours of two different times.

Story 590 · The Eaves

Sheltering from the rain beneath an overhanging eave, Aniruddh, who prepares building plans, meets Shivcharan, a cement worker. Seeing water turn back from the edge towards the wall, Shivcharan explains that the outer slope and a drip groove have been omitted. Aniruddh recalls the assumption made in his office that a mason ought to know such small details without being told. On his next building plan, he specifies both the slope and the groove. When his senior questions the addition, Aniruddh replies that an essential detail is better put on paper. The rain reveals to him the distance between the labour of construction and the drawing that directs it.

Story 591 · The Bicycle

After twenty-five years of travelling from village to village repairing sewing machines, Basudev Sah decides to sell his old bicycle to meet the cost of opening a permanent shop. His daughter Deepa enters an estimated value of nine hundred rupees in the accounts. At the market the bicycle sells for eight hundred and forty. In conversation with her father, Deepa learns that during the family's difficult years, repairs to the bicycle were repeatedly postponed so that more urgent expenses could be met. Basudev keeps the old jute cord with which he used to fasten his toolbox. Deepa corrects the price in her ledger and adds a sturdy chair for her father to the purchases needed for the new shop.

Story 592 · A Glass of Water

At the Mithila Small Enterprise Conference, the speaker Aniruddh Chaudhary lectures on the importance of understanding the burdens borne by workers. Because he does not wish to hear the sound of a wheeled water trolley during his speech, the elderly attendant Raghunath Paswan must climb the stairs again and again, carrying glasses by hand. When Aniruddh sees the tremor in the man's hands, the real cost of his own instruction becomes plain. At the next session he allows the trolley's ordinary sound and adds a question to his lecture notes: who is responsible for making arrangements that share the burden of labour? A glass of water exposes the distance between principle and practice.

Story 593 · The Procession

Near the tower in Laheriasarai, Sarita, who sells flower garlands, and her thirteen-year-old son Abhay are delighted by the extra sales brought by an election procession. Abhay is captivated by the drums, flags and glittering vehicles. After the procession passes, rain washes discarded leaflets and plastic into the drains, blocking them and flooding the ground beside the stall. Abhay clears a grating with a piece of bamboo. The following day, in his drawing class, he depicts not only the procession's crowds but also the blocked drain, the litter and the sanitation worker. His picture makes room for consequences of public celebration that otherwise go unseen.

Story 594 · The Small Mirror

Seventy-two-year-old Harinarayan Mishra goes with his son Nachiketa to an old barber's shop for a haircut. In the little mirror he sees his ageing face beside his son's bowed head, absorbed in accounts. He recognises that he knows of his son's worries about business, whereas the son knows little of his father's lonely daily routine. He remembers, too, that he himself has earlier declined invitations to sit with his son at the shop. After the haircut, he tells Nachiketa to go on to the warehouse and decides to spend some time sitting at the shop himself. As father and son cross a muddy lane, a small act of support brings them into a new closeness.

Story 595 · Pigeons on the Roof

Preparing for a scholarship examination, Kanak has written 'no help from anyone' into her daily plan and resolved to do everything alone. The flight of a flock of pigeons above the roof, help from her classmate Ruchi with practice exercises, and information from her father about the bus route lead her to reconsider what independence means. She remains determined to sit the examination on her own, but no longer mistakes useful information or the company of loved ones for weakness. On the evening before the examination, she makes time to eat with her family between periods of study. The pigeons flying together in different directions show her how independence and connection can coexist.

Story 596 · The Hand of the Clock

Waiting for an interview at a private finance company, Apurva Jha notices a difference of one minute between the wall clock and a wristwatch repaired by his father. He remembers a saying of his father Devnarayan, a watchmaker: 'Look at the time, but do not let the clock tell you how to live.' In preparing for employment, Apurva has suppressed both his own interests and his skill in repairing watches. At the interview he gives up

rehearsed answers and speaks instead about his genuine uncertainties and his wish to put his powers of attention to use. Whether he is selected remains unknown. On returning home, he opens a watch in his father's shop, seeking to understand the path he must choose for himself.

Story 597 · The Last Page

While reading the final page of a novel, Rajni Chaudhary, who runs a women's sewing unit, thinks again about her mother Shail Devi's unfinished teacher training. Her mother could not pursue it because of responsibilities at home, but made sure that her daughter could study. Now Rajni has been assuming that teacher training must also be the right path for her daughter Ira, although Ira is considering work in textile conservation. Rajni prepares separate budgets for the two possibilities and resolves not to impose her own unfulfilled dream upon her daughter. Her mother's sacrifice and the autonomy of the next generation take on a different meaning for her.

Story 598 · The First Bus of the Morning

Krishnamohan Paswan takes the first bus at dawn from Jhanjharpur to the pump-repair centre in Saharsa, hoping to earn higher wages for three months. His wife Mala does not want to prevent the journey, but she raises the question of his decision to leave without discussing it and of the costs his absence will impose on the household. Watching students and their routines at the bus stand, Krishnamohan realises that fetching water, caring for the children and the work of the home will have to be managed by others while he is away. He does not change his decision to travel to Saharsa. He does, however, recognise the need to include his family's unseen labour and the cost of their time when calculating what the higher earnings are worth.

Story 599 · The Endless Genealogical Register

While copying a rain-damaged ancestral register at Saurath, the genealogist Vachaspati Jha finds astonishing entries containing the names of people who will live in the future. Even the name of a child soon to be born into his own family seems already fixed in its pages. His son Nachiketa and Mrinal, however, want to choose their newborn child's name themselves. Vachaspati carefully copies the line concerning the future, adding an explicit note that its date cannot be verified and that it provides no evidence on which to base a decision in the present. When asked what the child is to be called, he says that he wishes to see the child first. Between a name written down and the freedom of a life actually lived, the story leaves its tension standing.

Story 600 · The Library of Mithila

Ishan Mishra, who is writing a book about ponds and the memory of villages, reaches a strange place in Darbhanga called ‘The Library of Mithila’. There, among possible books of written, unwritten, destroyed and uncertain sources, he is confronted with the exaggerations in his own manuscript. He has wrongly turned an uncertain recollection by the elderly Sharda Devi into a definite account of thirty days of forced labour. The next day he compares the actual records with the original interview, deletes the unsupported number, removes passages without sufficient grounding and sets out the limits of conflicting sources separately. His book may take longer to write and become thinner, but what it says will be more trustworthy.

Parvat Upar Bhamra Je Sutal

The Bumblebee That Slept Above the Mountain

Stories 1–30

SHORT STORIES

Story 601 · Siddha Mahavir

Widowed Anmana Didi builds a temple to Hanuman beside her small house in her parental village. For years she deprives herself of necessities to maintain the shrine, eventually deciding to sell half her land so that a concrete roof can be laid over it. Taking advantage of their kinship and her religious devotion, her nephew persuades her to sign over the land bordering the road. With the approach to her remaining plot now blocked, the temple is left unfinished. Cheated and defeated, Anmana Didi transfers the rest of her land to him as well and relinquishes her belief in divine miracles. Some years later, when the nephew dies of a heart attack, some villagers see his death as divine punishment; Anmana Didi, however, attributes it to illness and a delay in treatment. Even after her death, the temple festival continues to echo with both voices: the voice of faith and that of scientific reason.

Story 602 · Navi Mumbai

Working in Navi Mumbai, the narrator is recognised by people from his own village as soon as they hear him speaking Maithili. This chance encounter opens onto the struggles, family ties and memories of home shared by migrant Maithils, among them Phudo Bhai and Hari Bhai. Unable to find support for a business in his village, Hari Bhai opens a sweet shop in Mumbai and prospers, yet his family remains beset by sickness and financial hardship. During the coronavirus pandemic, the hopes and precariousness of migrant life grow more acute. Hospital beds, oxygen, medicines, profiteering and untimely deaths haunt the account. Phudo Bhai recovers; Hari Bhai dies. At the end, the narrator remains confined to a life resembling imprisonment in Navi Mumbai, tormented by news from Delhi that his son's fever has not abated even on the seventh day. The story closes upon this unresolved vigil.

Story 603 · New Delhi

On New Year's night, the narrator, working at New Delhi's magnificent airport, receives news from his village: Amar, the only son of Mohit Babu,

has died in a road accident. Moving from the brightness of the airport to the darkness and deprivation across the Yamuna, the narrative reveals two opposing faces of the capital. Police procedure requires Mohit Babu to travel from his village to Delhi to claim the body. Amar's death, leaving behind a wife and a child only six weeks old, casts a shadow over the family's future. Beside the Yamuna, the rites of cremation, the father's inconsolable cries and the young widow's silent anguish merge. Behind the splendour of the modern metropolis, the insecurity of a migrant working family and the old social fate imposed upon women remain unchanged.

Story 604 · The Abductor

Keshav, son of the poet Madhurapati, grows up playing with Malati of Jamsam village among orchards, ponds and fields. Childhood intimacy ripens into love, and their families, too, envisage a marriage. But Maharaja Bireshwar Singh of Darbhanga sends a proposal to Malati's father, Khagnath Jha. Under the pressure of royal power, Malati begins to lose control over her own life. Keshav finds the courage to take her away before the proposed marriage and marries her himself. The humiliated king orders the genealogist to append the epithet 'Taskar'—'abductor'—to Keshav's name in the genealogical register. Many years later, Keshav searches the transformed village for some trace of their love; a pond, a temple and a shaligram stone established by the king remain as witnesses to the past. The tale exposes the collision between the freedom to love, the authority of caste genealogy and royal repression.

Story 605 · Struggle

Sohago was widowed as a child. Through hardship she educates her only son, Afel, but not long after he enters government service he dies in mysterious circumstances. Sohago believes he was murdered. Yet the shortage of witnesses and evidence in court, together with attacks upon character, allows the accused, Jatashankar, to escape conviction. Even in old age, Sohago refuses to surrender. Her struggle now concerns a wrongly recorded date of birth in the service records, an error that threatens to deprive her of five years of service entitlement. A young officer searches dusty files, gathers evidence and submits the application before his transfer. Years later he learns that Sohago's petition has been accepted. Her unyielding persistence helps the officer himself emerge from his sense of defeat.

Story 606 · The Letter in the Letterbox

At the sight of Mutalif, a Tamil youth arrested for drug trafficking, the investigating officer suspects that someone else is the true organiser. The

account unfolds of how Habibullah lured the young man into smuggling with promises of employment. The officer's inquiries lead through an intricate web of narcotics, militant organisations, secret intelligence and power. Pursuing the clues in a mysterious letter, he falls into the hands of a violent organisation; even after his release, he cannot clearly distinguish enemy from ally. Memories of an earlier accident, his son and family, and threats of armed violence emerge throughout the narrative. The death of his son shatters the officer's life. At last he stands unarmed at the organisation's hideout, waiting for Mutalif to decide his fate. The meanings of victory, defeat and liberation remain unresolved.

Story 607 · Doma, Budhan and...

Budhan pulls a rickshaw in Chandigarh so that his younger brother, Doma, may receive an education. Even the government's free-textbook scheme fails to reach its intended beneficiaries because of the caste relations governing their village. In time Doma becomes a village teacher, while Budhan's son studies and secures a responsible position in a large business organisation. In the son's conversation with the narrator, questions arise concerning untouchability in earlier times, schooling, reservations, inter-caste marriage, the interpretation of religious scriptures and self-respect. He acknowledges what has changed, while also distinguishing caste's continued social existence from the political caste system. The aspiration for a genuine enlargement of human dignity through education and economic means carries the story beyond its ending.

Story 608 · Suicide

After his marriage, the narrator meets the adolescent Arya at his wife's parental home. Arya's father's drinking causes conflict within the household; the family also endures social contempt and threats of eviction. Some time later the father's death is regarded as suicide, further entangling an already difficult network of family relations. News of Arya's relationship with a young man, its breakdown and then Arya's own suicide deeply disturbs the narrator. A conversation with a young man who knew her probes both the immediate circumstances of her death and the psychological and familial causes behind it. The story asks how much remains unexplained when a personal tragedy is reduced to the fault of a single person or a single event.

Story 609 · Gandharva Letterbomb

Letra, a boy of short stature in his village, is subjected to ridicule, although he possesses an extraordinary gift for music. Under pressure of family circumstances, his father entrusts him to a theatrical company.

Living there among other performers of short stature, Letra makes his way from the stage to the disciplined study of classical music. His teacher, Bhattji, recognises his talent and gives him the opportunity for rigorous training. Later, as Letterbomb, he becomes a respected teacher and artist. His experience brings into view both public discrimination and the actual needs of people of short stature. At a ceremony honouring him in old age, he demands recognition not for himself alone but for the whole community of 'Banvirs'.

LONG STORIES

Story 610 · The Madhubani Module

Ahmed, a young man from Madhubani, comes under the influence of a militant organisation through contacts on the internet and joins a sleeper cell. As an officer questions him, memories return of the craftsmen who had repaired the officer's old home in Delhi: Nabi Baks, Okil, Sarfuddin, Khalil and their families. In particular, the struggles of Nabi Baks's widowed mother, the relationships among the brothers and the devastation wrought by floods give the account its human depth. The officer begins to realise that the present suspect's life is connected to these earlier relationships. Ahmed's statements reveal threads of online radicalisation, a clandestine organisation and planned violence. An operation is mounted on the intelligence received, and the 'Madhubani Module' is declared dismantled. Yet the closing exchange uncovers a tangled financial network behind another activity, in which even names and identities refuse to remain fixed.

Story 611 · Shabdashastram

Mitu, a scholar of Nyaya, and Ananda, from a family of leatherworkers, fall in love. Mitu's father, Shrikar Mimamsak, is concerned with preserving ancient palm-leaf manuscripts. When he sees Ananda's intelligence and skill in conservation, he consents to their marriage despite objections based on caste. After the wedding Ananda sustains the home and family while protecting folk songs and traditions of learning; their daughters Medha and Vallabha and their son Megh grow up. When Ananda dies in old age, Mitu is engulfed by questions of memory, word, sound and illusion. Shrikar's philosophy, Mandana Mishra, Bhamati and the strains of folk song become entwined with his grief. An old incident recalled by Bachalu, together with Mitu's state of mind, moves the story between past and present. In the end Ananda's memory and voice remain alive together, and Mitu's death brings their love to a deeply moving close.

Story 612 · The Village of the Mahisbar Brahmins

This is not the story of one person but the collective story of Garh Narikel village. From its ponds, the Kamala-Balan and Kosi rivers, embankments, wetlands, grazing grounds and landlord estates, the account moves into the life of the village community. Alongside the cattle-rearing of the Mahisbar Brahmins emerge the labour and mutual dependence of Doms, washerpeople, Dusadhs, leatherworkers, Muslims and other communities. The narrative takes a critical view of caste arrogance, untouchability, historical memory, epidemics and control over land. Folk songs, dances, sayings, rice, greens, vegetables, floods and fish bring the village's cultural geography vividly to life. Ultimately the village itself becomes a collective character, shaped by its people's speech, power, labour and means of livelihood.

BIHANI STORIES

Story 613 · A Rickshaw Ride and the Fear of Robbery

At midnight in Patna, two travellers look for a rickshaw to take them to Punaichak. A rickshaw-puller refuses, fearing that on his return a robber may snatch the fare he has earned. One of the passengers jokingly declares that they themselves are the robbers. Remarkably, this contrary reply reassures the rickshaw-puller, who now agrees to take them.

Story 614 · The Counterfeit Note

At Patna airport, a traveller has his thousand-rupee note changed so that he can pay the taxi fare. He himself is not certain whether the note is genuine. Yet the driver speaks on his behalf to the parking attendant with such confidence that the note is eventually exchanged. The traveller's misgivings and the driver's performance turn the incident into comedy.

Story 615 · The Waterlogged Road

An officer unfamiliar with floods is posted to the Kusheshwarsthan region. Planning a journey to Ugratara Sthan, he assumes that a season without rain is the best time to travel. A local relative explains that the damaged road will now take hours, whereas when the floods arrive the same journey can be made by boat in twenty or thirty minutes. The story reveals an understanding of travel shaped by life in a waterlogged landscape.

Story 616 · Yes, Sir

An employee has become accustomed to answering every question with 'Yes, sir.' The habit acquired in the office has taken such deep hold that even

when his son asks him for something at home, 'Yes, sir' escapes his lips without thought. This little episode exposes the psychological reach of hierarchy.

Story 617 · Two Prisoners

In prison, one inmate complains that the jailer has beaten him. Another rebukes him, taking him to be a mere thief or snatcher, but then points to a man whose welfare the jailer is respectfully enquiring after: that man stands accused of murder. The reversal exposes the strange relationship between crime and status within the prison walls.

Story 618 · Each to His Own Luck

Members of two administrative officers' families recount the hardships of their respective postings. One officer was sent to a drought-stricken hill district, but after an earthquake the influx of relief money increased his earnings. The other was posted to a flood-prone region, only for drought to strike there. The story satirises a mentality that sees natural disaster as an opportunity for illicit profit.

Story 619 · The Sermon

At a discourse in Delhi, a renowned swami relates a fabricated episode about Rajendra Nagar in Patna. The narrator notices that the account does not agree with the swami's supposed travels. When questioned, the swami admits that he has to tell such stories in order to obtain money from his listeners. The pretence and self-interest concealed beneath religious preaching stand exposed.

Story 620 · The Promised Word

A matchmaker complains to Gonar Bhai that the articles promised to him have not been given. Gonar Bhai replies that in the excitement of arranging the wedding he said 'yes' to everything people suggested; he can no longer remember which objects he actually promised. The episode finds comedy in the vague assurances made during marriage negotiations and the disputes that follow.

Story 621 · Brown Hair

A conversation among four friends turns to short caste-based names and old prejudices. One of them repeats barbs traditionally directed at different communities. Another observes that the absence of such sayings about his own caste reflects its historical backwardness, and speculates that fresh

sayings may appear as its social standing improves. Their exchange reveals the politics concealed within caste humour.

Story 622 · Self-Respect

After violating a traffic rule, a senior officer of the vigilance department attempts to bribe a constable. The havildar returns the banknote, saying that he has a reputation to uphold in his village. He lets the officer go with a warning for moving forward on an amber light, but says he would not have done so had the light been red. An ordinary public servant's self-respect teaches a memorable lesson to a man of high office.

Story 623 · The Portrait

A friend repeatedly asks the narrator why he has had his photograph taken and why he is getting it framed. Without offering an explanation, the narrator mentions buying a garland for the photograph. His listener immediately assumes the portrait must be of the narrator's deceased father. In that single assumption, the social conventions surrounding portraits of the living and remembrance of the dead come to light.

Story 624 · The Water Cooler

Sardar Gurmeet buys a water purifier from the old market and installs it outside his house to quench the thirst of passers-by. A few days later his mother complains that people who have been drinking alcohol come to take water and leave their disposable plastic cups behind. Along with this selfless public service comes an added burden of cleaning the household surroundings. The tale laughs gently at the unforeseen consequences of kindness.

Story 625 · You're Not Such a Big Man Yet, Boy

Watching a cricket match, a spectator repeatedly calls out to Suresh Raina, standing on the boundary, claiming him as a friend from childhood. The player does not turn around. Later the spectator calls to a new player, Vidyut, as well. When he receives no answer from him either, he declares that Vidyut has not yet become so great a player that he can afford to ignore him. The spectator's claim of intimacy and wounded sense of importance amuse everyone.

Story 626 · The Electrician at the Ambience Mall Campus

An electrician reputed to be highly skilled loses his employment because of his peculiar way of working. He sees nothing unusual in the danger of joining electrical wires while standing in water, but his manager fears an

accident. At an interview, his answer confuses the speed of electricity with the travel time of a bus, producing a further absurdity. The story brings out the distance between claims of practical expertise and scientific understanding.

Story 627 · A Sniffer-Dog Tale

Suspecting that a bag contains narcotics, the officers summon a trained sniffer dog. The animal tears open the bag and devours the meat inside. A havildar explains this as the consequence of corruption involving the money meant for the dog's training. In an instant, a solemn security operation becomes a satire on hunger and neglect.

Story 628 · Traffic Rules — Part 0

In Patna, a teacher praises Delhi's well-organised traffic system, in which, he says, a vehicle driven at a specified speed can pass through a succession of green lights. When the narrator arrives in Delhi, however, he finds that the signal arrangements have changed and new restrictions are in place at the intersections. The widening distance between planning and everyday practice lies at the heart of the episode.

Story 629 · Traffic Rules — Part 1

In Delhi, even the passenger riding pillion on a motorcycle is required to wear a helmet. The moment they cross the state border into Uttar Pradesh, the rider removes both helmets, as though the safety rule ceased to matter at the boundary. The incident reveals the geographical inconsistency of regulation and a discipline governed by personal convenience.

Story 630 · Traffic Rules — Part 2

Travelling from Delhi to Noida, the narrator switches on his indicator before turning his car, yet narrowly avoids a collision with a bicycle. A local inspector explains that here one must not assume a driver will give way merely on seeing the indicator: the window should be opened, a hand signal made and the horn sounded as well. Local conduct on the road does not necessarily follow the formal rules of traffic.

Stories 31–60

Story 631 · Traffic Rules — Part 3

The narrator leaves his car in a prohibited place at the roadside for no more than a minute. When he returns, it has vanished. A constable tells him that if a thief has taken it, no one can say where it might be; if the traffic police have towed it away, however, it will be at the police station. Finding the car there, the narrator feels positively blessed. At least it was not a thief who had taken it.

Story 632 · The Caste-Prejudiced Marathi

In Pune, a Marathi man wonders aloud what sort of people the inhabitants of Mithila and Bihar can be: some become officers, while others pull rickshaws or work as cooks. Singh Sahib sees no contradiction between his own government post and his brother's modest job at a printing press. Beneath the question, the narrator recognises the caste and class prejudices directed against migrant labour.

Story 633 · The Hard-Hearted Human

A bird's mate no longer stays in the place they shared. For two days the bird sits there desolate; at last it, too, flies away. The narrator's grandmother contrasts this creature's grief with the conduct of human beings. Even after the death of a loved one or the breaking of a relationship, people mourn for a few days and then resume their ordinary lives. In the sharp comparison between the bird's feeling and human 'hard-heartedness' lies the story's bitter irony.

Story 634 · Polygamy and the Eunuch

A man's third wife dies. Village conversations turn to his decision to marry a third time after the first two marriages had produced no children. The man lays the blame upon his third wife, but the villagers make cutting remarks about his own virility. The satire falls upon the cruelty of polygamy and upon a society that holds women alone responsible for childlessness.

Story 635 · Women and Daughters

Little Buchiya wants to eat beside her father, but her mother makes her sit apart. By the time her father and brothers have eaten the better vegetables and drunk the milk, only the leftovers remain for Buchiya and her mother. From this memory the conversation widens to the old

discrimination against women and daughters—in food, education and the respect accorded to them.

Story 636 · Marriage and the Touching of Feet

At his daughter's wedding, a father gives her wealth and property and then bends to touch his visiting son-in-law's feet in greeting. The son-in-law insists that he will accept no customary gift for this gesture of respect. The father-in-law nevertheless places a one-rupee coin beside a hundred-rupee note and recalls the beliefs of his own generation. In this small exchange, the affection carried by an old custom meets the changing relationship between generations.

Story 637 · Talent

During training for the administrative service, a newly selected officer takes his success as proof of extraordinary intelligence. A fellow trainee reminds him of his poor performance at school and the relentless drilling of model questions that preceded his selection. Success is no small achievement; yet the story questions the easy assumption that skill in preparing for a competitive examination is the same thing as inborn talent.

Story 638 · Caste and Rank

At a drinking party during police training, an officer asserts his Rajput identity with swagger. Another trainee reminds him that they hold the same rank; yet he cannot beat his chest and proclaim his own Dom caste in the same fashion. Their contrast lays bare the unequal social licence granted to different kinds of caste pride.

Story 639 · A Job on Compassionate Grounds

The gifted elder son of a freedom fighter dies of an incurable disease. His father, worn down by caring for him, is shattered by the loss. The younger son, eager to secure employment, receives his dead brother's educational certificates from their father. Using the brother's identity, he obtains a job at a company in Calcutta. What is ordinarily understood by employment on compassionate grounds acquires a strange and unsettling reversal.

Story 640 · Recommendations, Messages and the Officer

A relative of an honest superintendent of police asks him to use his influence to secure admission to teacher training for two daughters-in-law. The officer refuses to put improper pressure on another department. When the relative persists, he replies with deliberate irony: let a bomb go off at the

college gate; then the principal will come to the police, and there will be an opportunity to talk. The entreaties cease at once.

Story 641 · The New Media

After a robbery in the city, news outlets declare the police incompetent because no arrest has been made immediately. Under pressure, the police seize a man and beat him until he confesses. But he cannot name the three supposed accomplices: he had taken no part in the robbery. Sensational reporting and the police's need to make a show of action have displaced the search for truth.

Story 642 · Industry in Mithila

Chaudharyji, an influential man in his village, sets up a passenger-bus service. The authority he commands at home counts for nothing against a rival proprietor at the town bus stand. The driver and conductor are beaten, the service closes, and the bus is left standing beside a temple. Before long, a creeper of white gourds has climbed over it. That abandoned vehicle becomes an image of the muscle power, monopolies and absence of industry that frustrate enterprise in the region.

Story 643 · Flood, Hunger and Migration — Hunger (1)

Pappu Bhai has eaten his fill of meat and rice at a wedding feast. Yet he announces that he will attend no more weddings: there is never anything to eat at them, he complains. Looking at the heap of bones before him, the narrator can barely restrain his laughter. The contradiction between an enormous appetite and a grievance about hunger supplies the joke.

Story 644 · Flood, Hunger and Migration — Hunger (2)

Pappu Bhai visits his sister, hoping for milk from her recently calved buffalo. In the warmth of their conversation she forgets to serve him any. So Pappu Bhai invents a story about an extraordinarily long snake he has seen, stretching as far as the cooking hearth. His sister's attention turns at once to the milk boiling there. His artful hint has worked.

Story 645 · Flood, Hunger and Migration — The Flood

A flood on the Kosi leaves sand upon the fields. With other food in short supply, Pappu Bhai must eat sweet potatoes again and again. Just then a letter comes from his nephew in Haridwar, describing the rice pudding and puris served after Vedic recitation. Drawn by the prospect of a more delicious meal, Pappu Bhai resolves to migrate.

Story 646 · Flood, Hunger and Migration — A Blow in Exile

Arriving in Haridwar, Pappu Bhai joins in the Vedic recitation and looks forward to the evening's rice pudding and puris. But the priests, already weary of eating that meal, have changed the arrangement: henceforth they will be served sweet potatoes and milk. Before Pappu Bhai, who had fled the privations of his village, stands the very sweet potato he had hoped to escape. Migration delivers its own tragic joke.

Story 647 · The New Feudal Lord

A quarrelsome young man from the village continues to threaten to shoot everyone even after moving to Delhi. When he demands that someone travel twenty or forty kilometres to him in ten minutes, the impossibility of his demand is pointed out. Having failed to complete even a basic education, he has abandoned a job because he considers it beneath his 'status'. The story exposes the emptiness of his swagger and his contempt for work.

Story 648 · Fourth Place

A wrestler from a city akhara enters a half-marathon. Along the route two young men spur him on by telling him he is running fourth. The lure of a medal drives him far beyond his strength, and he crosses the finish line almost unconscious. When he hears the official result—eighth place—he realises he has been tricked. The tale turns on the irony of enticing someone with fourth place in order to wring the last measure of effort from him.

Story 649 · The Vote

Seven candidates from a large village contest the election for head of the Garh Narikel panchayat, while the neighbouring small village fields only one. Fearing defeat, the people of the larger village devise a plan to choose a single candidate by an internal vote. One contestant, however, frightens a retired teacher with warnings about the election code of conduct, and the arrangement collapses. All seven remain in the contest, increasing the small village's chances of victory.

Story 650 · Masuai

In the village, the customary eating of hare and other kinds of meat becomes contentious in a school setting. A small boy says he wants to take the school's pet rabbit home, cook it as masuai and eat it. His teacher sees cruelty in the wish and worries about the child's upbringing. His father explains the cultural differences in people's food habits, but her anxiety is not dispelled.

Story 651 · The Siberian Camp

A Sikh shopkeeper, displaced from Afghanistan and later naturalised as a German citizen, runs a business in Siberia. Seeing that several of his fingers are missing, someone assumes a connection with the history of Siberian camps. The trader points out that people conduct business there too. In the extreme cold, a drunken person who takes off his gloves can suffer such severe frostbite that his fingers must be amputated. The story sets second-hand assumptions against lived experience.

Story 652 · Meet Bhai Series — 1. Chansagar

When visitors come to consider a marriage alliance for Meet Bhai, the matchmaker praises his abundance of land and grain. The whole embankment, he declares, belongs to Meet Bhai. The visitors notice ridges dividing the fields and begin to ask questions; the matchmaker deftly invokes floodwater and the slope of the land to explain them away. His nimble words reveal the art of embellishment in the marriage market.

Story 653 · Meet Bhai Series — 2. Complexion

People have much to say about Meet Bhai's very dark complexion. After his marriage, someone asks what his wife looks like. Meet Bhai compares her beauty to that of a celebrated actress, but adds that her complexion is darker still than his own. The brief comic exchange turns on the difference between a person's appearance and society's received ideas of beauty.

Story 654 · Meet Bhai Series — 3. Selection

A man cannot understand how a country as large as India can lose at sport to much smaller countries. Meet Bhai gives a simple reply: in cricket or football, the entire population does not take the field; only the selected number of players does. In one answer he distinguishes the size of a nation from the skill of the players chosen to represent it.

Story 655 · Meet Bhai Series — 4. The Thieves' Market

The lure of valuable shoes at bargain prices takes Meet Bhai to Delhi's thieves' market. A seller convinces him he is buying something precious and relieves him of almost all his money. Within four days the soles have come away. Recounting how he was cheated, Meet Bhai declares with delicious irony that the market's swindlers are extraordinarily clever people, worthy of the highest respect.

Story 656 · Meet Bhai Series — 5. Teaching

Meet Bhai says that he steadily saves money from his schoolteacher's salary and the income from his fields. Yet when he approaches families to arrange a marriage for a daughter, they refuse to believe he has the means. His indignation arises from a social prejudice that discounts a teacher's earnings even when he possesses accumulated savings.

Story 657 · Meet Bhai Series — 6. The Pasiij Thorn

Meet Bhai uses the juice of the pasiij thorn to kill fish in a pond, but unwittingly recommends the same juice as a drink for a sick child. A warning arrives in time, and the child is saved. Filled with remorse, Meet Bhai takes a religious neck-bead; he does not, however, stop eating fish. His peculiar distinction between killing fish and eating them gives the episode its humour.

Story 658 · Meet Bhai Series — 7. The Telephone Directory

Gonar Jha is looking through a notebook in which he has written the telephone numbers of many people. Meet Bhai suggests that if the police saw so many numbers, they might take him for a terrorist. Frightened, Gonar Jha immediately tears up the useful notebook and throws it away. An imaginary danger has caused a very real loss.

Story 659 · Meet Bhai Series — 8. Clearing Dung

On his way towards the pond, Meet Bhai sees Jagannath clearing away dung. He says nothing in the presence of Jagannath's wife, but later, when they are alone, raises the subjects of marriage and money. He says he paid nothing to marry his own wife, and she is not so demanding; therefore he is under no compulsion to clear dung. His remark turns the distribution of domestic labour into a social joke.

Story 660 · Meet Bhai Series — 9. The Greater Reward

Bachcha Babu, exceptionally careful with his money, extols the virtues of tea made with jaggery or lemon in an effort to reduce expenses. Meet Bhai declares that at a pilgrimage site he made a vow to give up sugarcane, and insists upon tea made with milk. Bachcha Babu has to pay for it. The comedy lies in the clever defeat of miserliness.

Stories 61–70

Story 661 · Meet Bhai Series — 10. Meet Bhai's Son

Meet Bhai's son leaves home, and Meet Bhai sets out for Delhi, hoping both to find the boy and to look for employment. On the train he becomes embroiled in a quarrel with a fellow passenger. The police then mistake a bidi made with khesari for cannabis and take away most of his money. When at last he reaches Delhi, he learns that his son has already returned home. With the search over and his hopes of a job abandoned, Meet Bhai decides to go back to the village. His journey has cost him dearly, and achieved almost nothing.

Story 662 · Meet Bhai Series — 11. The Indian Administrative Service

Meet Bhai boasts of his intimate acquaintance with the district collector, repeatedly referring to him as "Bha. Pra. Se. Prashant." Someone explains that Bha. Pra. Se. is not part of the man's name: it is the abbreviation for the Indian Administrative Service. Meet Bhai's display of familiarity dissolves at once into a misunderstanding. The comedy turns on the distance between the outward glamour of an official designation and any real knowledge of what it means.

Story 663 · Meet Bhai Series — 12. The Rumour of Mahadev Drinking Milk

Meet Bhai tells a story about three dogs who go to a sweet-seller's shop. Although they are beaten there, each conceals the humiliation and boasts that he was received with great hospitality. Meet Bhai compares their behaviour to the rumour that a Shiva linga has drunk milk. Even after seeing evidence to the contrary for himself, he cannot muster the courage to deny the miracle when others ask about it. The tale reveals how a falsehood travels: shame first disguises an experience, and the pressure of the crowd then makes honest testimony seem impossible.

Story 664 · Bihari

During a discussion about having the office premises cleaned, an employee proposes calling in "four Bihari" labourers. The narrator replies that three will do: he himself is the fourth Bihari. The exchange turns a casual expression back upon the speaker. In a single retort, it exposes the habit of using "Bihari" as if the word meant nothing more than a manual labourer.

Story 665 · Fielding

A man explains why he has given up cricket. He was always made to field, he says, and whenever he finally got the chance to bat, he was out almost at once. The narrator reminds him that fielding and bowling are no less important than batting. The man's disappointment is real enough, but his complaint betrays a narrower view of the game: for him, to play cricket is scarcely to play at all unless he can stand at the crease with a bat.

Story 666 · Skill

An employee is praised for completing a technical procedure with remarkable speed. Yet he is dissatisfied. Everyone else, he complains, is regarded as hardworking, while he is thought to be forever occupied with his mobile phone. The very proficiency that allows him to finish a task in less time makes his labour disappear from view. The irony lies in judging effort by the hours it seems to consume rather than by the knowledge and skill with which the work is done.

Story 667 · Discipline

One colleague is astonished that another never shows anger, however harshly the boss abuses him. Does he truly feel nothing? Of course he feels angry, the man replies; he curses the boss roundly—only in his mind. The outward calm that passes for discipline conceals an unbroken inward rebellion. Between the obedient face and the furious thoughts lies the joke.

Story 668 · Science — 1. Science Education

On the last day of school, students write messages of remembrance on one another's shirts. The shirt belonging to the narrator's son, a science student, remains blank. The boy explains this as the seriousness expected of the science stream. His father sees something else in the empty fabric: a want of youthful excitement and the weight of mental pressure. The incident suggests an imbalance between an education devoted to achievement and the spontaneous fellowship of adolescence.

Story 669 · Science — 2. Chemistry

A graduate in chemistry is caught stealing. The villagers decide to put the milky sap of the aak plant into his eyes. Trusting his scientific knowledge, the thief says that karu oil would damage the eyes. His words have precisely the opposite of the intended effect: the villagers apply that oil as well. One eye is destroyed, though the other survives. The episode turns violent superstition and half-understood knowledge into a grim, unsettling irony.

Story 670 · Science — 3. Physics

A graduate in physics is caught travelling without a ticket. While fleeing, he loses a slipper in a field but carries the other away in his hand. Later, he returns and retrieves the first one as well. The villagers reason that had he abandoned both slippers in the field, someone might have taken the second too. This explanation, hailed as an example of scientific thinking, awakens a fresh enthusiasm for the study of science in the village. Its humour depends upon the peculiar logic through which an ordinary incident is elevated into a lesson in physics.

Ijot — Janam-Janamak Katha

Light — Stories Across Lifetimes

Stories 1–20

THE ORIGINAL THREE MOVEMENTS

Story 671 · The Thief of the Genealogical Register

While preserving an old genealogical register, Niranjan discovers an entry deliberately scraped away in the Udayanpur branch. Shivkant's uneasy silence, a letter from Harinarayan and Subhadra's spoken recollections point towards Mahesar, a man who has been made to vanish from family memory. Subhadra also brings a torn sheet of paper, but there is not enough evidence to treat it as an authenticated part of the original register. Niranjan records the fact of the erased entry without inventing a name as certainty; he refuses to mistake possibility for proof. What emerges is the violence by which a human being can be expunged from the history of a lineage. In the end, the thief proves to be more than any one person. Collective silence, too, steals from memory.

Story 672 · The House Seen Again

After the death of Barki Kaki, Madhavi returns to her village home for the first time in thirty years. The altered courtyard, a shuttered room and a smoke stain left by her mother's lamp draw her towards her childhood. During her struggle to leave home for an education, she had believed her mother to be merely passive. Now, fragments of family conversation and the uneasy movement of memory suggest that her mother's silence may have concealed a measure of support. Her brother Ashok raises the question of the house's future, including the possibility of selling it. At daybreak Madhavi looks at the building from outside and discovers a new meaning in something her mother once said: one cannot understand everyone's place while remaining within the house. She leaves without a final decision, but she no longer sees either the home or her mother as she did before.

Story 673 · In a Free State

The lives of migrant workers unfold through scenes from different cities. In a Delhi hospital, Binod works as a night watchman. Distance has freed him from the old questions of caste and lineage, yet exhaustion and the insecurity of migrant life still hold him fast. The cramped rooms of other workers, their wages, the money sent home and their endlessly deferred

plans to return reveal the actual cost of being away. In Kolkata, Kiran considers how to arrange further schooling for her daughter Sonam. At a factory, Naresh is caught between the ticket that would take him home, an advance he owes and the demands of his work. A message that little Komal will be waiting at the station in her red frock sharpens his conflict. The story's "free state" becomes an irony: freedom from some inherited restraints coexists with economic dependence and a liberty that remains unfinished.

Story 674 · Water Burial

Malati's husband, Subodh, has disappeared. His bicycle was found by the river, but no body has been recovered. The family wishes to regard him as drowned; Malati must live with what is not known. In an old family register she finds the words "taken by the water" beside Chandrakala's name. Her enquiries suggest that Chandrakala did not drown at all, but may have been sent away from the household. Through her mother-in-law's experience, Malati comes to understand how a family can name a woman's absence a "water burial" and so preserve its public reputation. Amid the sounds of the river and her own fear, Malati walks down to the ghat. Instead of entering the water, however, she boards a bus for her mother's home. She refuses to leave the meaning of her life in the hands of a verdict written by others.

Story 675 · Outside the Caste

The woman who narrates this story belongs to a family whose name is missing from the prestigious genealogical register. One day the search for a scraped-out entry reaches her courtyard. Nilabh's investigation finds traces of an ancestress named Dharani, whose life had been reduced in the official account to a disputed relationship with a high-caste household. The narrator gathers other memories: Dharani's labour, her skill in weaving winnowing trays, the children she rescued during a flood and the songs she sang. She will not promote a conjecture into evidence, and she records the limits of her own family's oral tradition as carefully as its riches. Finally, in a notebook entitled "People", she writes down the names of those whom the narrow boundaries of lineage excluded. Dharani ceases to be merely an erased entry; the memory of an entire life begins to take shape.

Story 676 · The Reckoning of the Bed

On her first night of marriage, Sonmati discovers that even on the bed there is not quite enough room for her. Her husband Mohan's request to "move over a little" becomes, over time, a measure of the labour expected of women, the claims of relatives and the shrinking space allowed to a private self. Sonmati begins recording the small concessions and large surrenders of

the bed in her notebook. Later she makes room for the new daughter-in-law, Rina, determined not to repeat what was done to her. When she willingly gives her bed to her ailing father-in-law, she understands the difference between space that is seized and space that is offered in love. After Mohan's death she has the whole bed, but its emptiness brings no simple contentment. At last she moves over for her granddaughter Ananya of her own accord. This time the account records not merely sacrifice but her freedom to choose it.

Story 677 · A Second Marriage

The family and the village discuss a second marriage for the widowed Padma, but her own voice is heard last of all. Her daughter Trisha's education, the property of her first husband's family, the care of her mother-in-law Bhavani Devi and the expectations of Chandrakant's household exert different pressures upon her. Meanwhile Padma expands her sewing work and gives employment to two young women. At a formal meeting everyone explains her future according to their own needs. Padma lays out her sewing accounts, the receipts for Trisha's schooling and the record of her mother-in-law's medicines: the documents of the life whose responsibilities she actually bears. For the first time Chandrakant asks her directly what she wants. Padma agrees to marry, but refuses the condition that she must leave her home.

Story 678 · The Metre of a Ghazal

Nasima Bi's life stretches from her apprenticeship under Ustad Karim Bakhsh through musical gatherings, recordings, commercial pressures and the demands of another generation. As she learns the metre and refrain of the ghazal, she also learns that the same verse may acquire a different meaning at different moments of a life. She resists attempts to shorten her professional name, cut a couplet or present only a convenient fragment of an artist's history. Her daughter Saba's social hesitation and the aspirations of younger disciples bring fresh struggles. At a small gathering in Nasima's old age, Rukhsana takes up a ghazal, and Nasima teaches the next generation to distinguish a rule of art from a fetter. The inheritance of a voice, the story suggests, is not fixed repetition; it is a living succession of changing experience.

Story 679 · The Guest Room

Returning from abroad after her father's death, Anamika spends the night with her mother in the guest room of their old house. For years she has read that room as a sign that she had been set apart from her own home. Their conversation reveals that her mother's secret support had been

decisive in Anamika's struggle to study away from the village, and that the guest room had been chosen so she could rest. Mother and daughter had given different meanings to the same gesture. Anamika begins to think of her own habit of placing her daughter Ira in a separate room without first asking her wishes. The distance between generations begins to lessen when she recognises the importance of asking rather than announcing a decision. The room itself does not change; the eyes with which she sees it do.

Story 680 · Mist

After many years away, Binod leaves his job in Delhi and returns to the village. The mist-covered road, the changed pond and newly built houses expose the distance between his remembered home and the present one. At the village records centre he meets Niranjan, and they speak of erased names, incomplete evidence and the stories people tell. Binod comes to see that even a fully completed identity card cannot contain a human life. At home, Renu asks whether his years of migration have truly ended. He fills a flowerpot with village earth and places an old nameplate from the hospital by the window, yet makes no grand promise that he will remain. The mist does not entirely lift. The house is visible nevertheless, and he chooses to face life one day at a time rather than merely count the days.

Story 681 · The Limits of Justice

The life of Ratneshwar Jha, a scholar of Navya-Nyaya, changes with the death of his grandson Anay in a road accident. Investigating what happened, Ratneshwar insists on separating what was directly observed from what can only be inferred. But in the presence of his daughter Mrinal's grief, the limits of his philosophical language are laid bare. His precision is valuable in examining documents, evidence and legal procedures; no argument, however, can undo the child's absence. Mrinal asks not for a doctrine but for her father to sit beside her. When Ratneshwar returns to the university, he continues to teach the boundaries of knowledge, though now he acknowledges the questions that cannot be brought to completion. A blank annotation in his manuscript no longer appears a defect. It has become a mark of the limits of human experience.

Story 682 · The Letter

Saraswati Devi writes to her granddaughter Ira in the old Maithilakshar script, which Ira cannot read. The letter holds her grandmother's intimate thoughts on the mother tongue, writing, the distance between generations, the courage to speak and the meaning of remembrance. She does not command Ira to preserve a language; she asks only for the time it would take to learn one letter. After Saraswati Devi's death, Ira finds the letter

tucked inside a notebook. As her aunt reads it aloud, Ira listens closely instead of trying to capture the voice in a device. In the blank line at the end she writes, in Devanagari, that tomorrow she will learn the first letter. The old script and the new handwriting share one page, opening the possibility of a conversation between generations.

GOTGOT

Story 683 · The Register's Final Entry

Ishan, grandson of the genealogist Harinarayan, is asked to establish the truth of an entry in an old family register during a land dispute. It calls Vimal the son of Durganand and Kamala. Family petitions, documents from the village elders and other testimony reveal a more complicated history: Vimal was born to Kamala's sister, but Durganand and Kamala had raised him as their own. The affection of a family, rights of inheritance and an entry added at a later date cannot simply be treated as the same kind of fact. Ishan does not erase the line written by his grandfather. Instead, he adds a new note setting out when it was written, what it was meant to express and where its authority ends. The decision over ownership of the land is left to a separate proceeding. The register now preserves both the grandfather's error and the grandson's responsibility in recording it.

Story 684 · Twins

While his mother undergoes surgery, Amitesh notices an unusual discrepancy between his own blood group and those of his parents. The doctor warns him against drawing a hasty conclusion. In his search through old hospital records, Amitesh meets Raghav Mandal, who was born on the same date. Evidence gathered by the two families strengthens the possibility that the babies were exchanged at birth. Yet the implications reach far beyond biology: thirty years of upbringing, language, work and affection are also at stake. Neither family suddenly overturns its life or repudiates the parents who brought up the children. Amitesh and Raghav come to understand that an accidental exchange at birth does not render the lives they have lived false. Family bonds emerge as something larger than what a blood test alone can establish.

Story 685 · Kinsfolk

To Ayan, raised in Doha, the village in Mithila entered in his school form under "permanent address" seems an unfamiliar kind of belonging. After the death of his grandfather Umakant, his father Pranav needs the testimony of relatives and an official family tree to have the ancestral house transferred into the family's name. A land dispute, the reluctance of

kinsmen, different recollections on the father's and mother's sides, and a reversed digit in an official entry all resist the making of a single straight family history. When the formalities are complete, Ayan realises that a name on a certificate and a bond of affection are not identical things. Subhadra Kaki, quarrelsome Jagdish Kaka and his mother all have a place in the story of who he is. On the journey back to Doha, he reconsiders the meaning of a permanent address: home is also wherever people remember him without the aid of a form.

Story 686 · The Hidden Branch

Newly married Kirti finds old letters and photographs in a locked box beneath the staircase of her husband's family home. The papers mention Manjari, Sudha and Deepak, suggesting a branch of the family long kept out of conversation. Kirti and other relatives read the documents in sequence, resisting the urge to force a quick meaning upon every unfinished line and respecting the privacy of those involved. When it becomes possible to reach Deepak, they write to propose contact, leaving him free to decide whether to reply. A conversation with the forgotten branch eventually begins, though the distance of years is not dissolved at once. The letters are preserved with blank pages between them, so that the next generation may write its own account.

Story 687 · Adoption

The upbringing and parentage of Abhinav, in the families of the brothers Shambhunath and Ramanath, become the subject of a property dispute. After losing their own child, Shambhunath and Gauri had raised Abhinav as a son. Following the death of Arvind, Ramanath's son, old decisions are reopened in anger. In court, records from school, marriage ceremonies, hospitals and the family register attest to years of acceptance, but the social recognition of kinship and legal ownership of land prove to be distinct questions. Mediation and conversation gradually ease the dispute. Abhinav refuses to reject either of his two fathers or either of his two mothers. At the end both relationships are recorded beside his name, and their shared history is acknowledged as larger than a division of property.

Story 688 · Beyond Caste

Chandan Jha and Nilima Paswan remove the caste-marking surname from their daughter Ira's name. The decision raises questions about grandfather Bhaveshwar's understanding of lineage and the obscured history of Nilima's maternal family. Nilima prepares a notebook entitled "Our People" for the child, gathering the people, work, songs, photographs and known or unknown dates of both families. The scant place allotted to

daughters and maternal descent in the old genealogical register lays bare the inequalities within kinship itself. Growing up, Ira questions her grandparents, learns the limits of the evidence available and imagines a family that need not be enclosed by inherited categories. For a school assignment she writes her name as "Ira Nilima-Chandan", leaving room for relationships yet to come. Lineage becomes an open succession of belonging, not a circle sealed at birth.

Story 689 · The Diary

After the death of the genealogist Devkinandan, his granddaughter Mrinalini discovers a notebook called "Household Accounts". It is, in fact, a private diary. Behind the reputation of an impartial keeper of registers she finds a tangled history: Bhagwati Devi's struggle over rights to her homestead, transactions in paddy and her grandfather's own doubts. Mrinalini refuses to accept private handwriting as the final truth. She compares it with court records, other accounts and spoken testimony. Some details can be established; others remain possibilities. A copy of the diary is placed in the public library with its context made clear, alongside a separate account of Bhagwati's struggle. The story shows that the hand which makes a record is never entirely free from the loyalties and limitations of its time.

Story 690 · A False Lineage

When a marriage is proposed for his son Nawal, Rambilas Mandal is asked to produce a family tree extending back seven generations. Embarrassed that he does not know all his ancestors' names, he commissions a handsome computer-generated genealogy. It presents the unverified Janakinath as an ancestor. But the document brings more than prestige to the proposed wedding: it also provokes a claim over land from other relatives. Nawal refuses to marry on the strength of a falsehood, and the family slowly makes a public correction. Enquiries reveal that "Janakinath" was the name of a landmark, not an authenticated forefather. In the end Nawal marries with a plain account of the parents and ancestors actually known to him. Rambilas begins to see that leaving the unknown names blank is not a disgrace but a duty to the truth.

Stories 21–49

Story 691 · Roots in a Foreign Land

After his father Shailesh dies in Toronto, Arnav, born in Canada, comes to Mithila in search of his father's village, Kusumpur. He brings an old key, photographs, an incomplete address and a short recording of his father speaking Maithili. From Kunti Devi in the village he hears things about

Shailesh's childhood that no genealogical register has recorded. Arnav comes to understand that searching for his father's roots and deciding what place those roots will have in his own life are two different matters. His mother, Meera, illuminates the distinction through the languages she and her husband exchanged during their married life. Arnav leaves his daughter Leena free to regard Kusumpur as one of the places to which her family belongs. Even amid incomplete evidence, the feeling of kinship endures.

Story 692 · The Priesthood

After the death of Rudranath Jha, both his sons, Shivnath and Vidyanath, are proposed for the priesthood of the village shrine of Madhukanteshwar. The elder brother, Shivnath, has conducted its daily worship for years. The younger is more learned in the scriptures, but has only a limited ability to remain in the village regularly. As the committee begins selecting a successor, old sacrifices and grievances within the family come to light. A note left by their father describes the priesthood not as a hereditary office but as service and guardianship. Instead of declaring a single victor, the family finds a way to share worship, administration, training and upkeep. Not every disagreement between the brothers disappears, yet the shrine's continuously burning lamp reminds them of the value of a responsibility borne together.

Story 693 · A Lineage of Melodies

Kiran and Aditya, pupils of the elderly singer Madhaveshwar Jha, hold different views of who should inherit his world of music. Kiran sustains the oral tradition and the living rhythms of performance; Aditya preserves recordings, musical notation and the histories of their sources. Playing an old reel of an unidentified woman singer, their teacher tells them that a name which cannot be established must not be supplied by conjecture. After his death the two pupils discover new ways to work together, joining preservation with performance. In the singing of the young Sakshi they hear the voice of her grandmother Chandrakala, and recognise the need to record her name. The story portrays a lineage of ragini not as a straight line of masters and disciples, but as an open network formed by many people's voices, labour, memories and transformations.

Story 694 · The Maternal Line

For four generations the key to the ancestral house has passed from mother to daughter. Now Grandmother Urmila Devi wishes to give it to her granddaughter Ishani. Ishani appreciates a tradition that has kept women's names alive, but objects to placing the compulsory burden of maintaining the house on the eldest daughter. An old ledger records the achievements of

the maternal line, along with opportunities for education, training and independent lives that its women were denied. Riddhi proposes opening the house for collective use by craftworkers, while the men of the family confront questions about their own share of responsibility. Ultimately, exclusive possession of the key gives way to an arrangement based on shared access and consent. As Ishani leaves home she accepts a duplicate key; it now signifies not a command, but the freedom to return if she chooses.

TATTVA-KATHA

Story 695 · Evidence

When Saraswati Devi's silver hansuli necklace disappears, the villagers immediately brand the poor man Ramjit a thief. Uma Devi, the village head, begins examining the grounds of the accusation, separating what has actually been seen, what has been heard, inference and prejudice already formed. The necklace is certainly missing, but the lock, the key and the statements of those present do not establish Ramjit's guilt. Later it is found in the lamp room of the goddess's shrine, though who left it there remains unknown. Saraswati Devi visits Ramjit's mother, opening a small possibility of dialogue between the families. Uma Devi records both the event and the uncertainty that survives it. The story exposes the limits of evidence and the injustice inflicted by collective prejudice.

Story 696 · Maya

Harinarayan Jha receives partial compensation for an investment fraud committed eleven years earlier. He recounts the experience to his granddaughter Anvi: a glittering office, early gains deposited in the bank, the trust of acquaintances and the temptation to recruit new investors combined to draw him into deception. At the time he had ignored his wife Sushila's question, "Where is the money coming from?" When the company closed, the family suffered financially and socially. Yet, in preparing his complaint, Harinarayan refuses to invent facts he does not know about the roles of the accused. He tells Anvi that something seen may be real in its own place, while a mistaken interpretation of it may become maya, an illusion. The actual flame of a lamp and its reflection in glass give visible form to that difference.

Story 697 · Rasa

The director Udaykant and the actress Madhavi rehearse a play about a mother searching for her daughter, who has gone missing in a flood. Udaykant explains the scene through the classical elements of karuna rasa, the aesthetic experience of sorrow. Madhavi, however, believes that a

character's experience cannot be contained entirely within predetermined rules. During rehearsal, questions arise about private memory, the craft of acting and the different responses of spectators. An elderly woman watching the scene feels not merely compassion but anger towards the authorities who have stopped searching. The response teaches both artists that the same performance does not evoke an identical rasa in everyone. At last the blackboard bears, beside the word "karuna", two questions: "Within whom?" and "With whom?" The debate between art and experience remains open, while both acknowledge the limits of their perspectives.

Story 698 · Destiny

Shashibhushan Jha repeatedly blames destiny for the money he has lost gambling. His wife Lalita keeps a ledger of the household's financial losses, recording the actual consequences of his choices. Debt, lies, brief spells of reform and renewed wagers wound the family's trust. Events such as his mother's accident and damage caused by heavy rain compel Shashibhushan to consider that not every suffering arises from personal choice, but that blaming everything on fate is equally unjustified. Gradually he repays his debts and accepts responsibility for his bets. Even so, the hurt sustained by his daughter Ragini's trust, and his son Nandan's fear of spending money, do not vanish at once. In the end he writes down the difference between destiny and his own decisions, without claiming to have attained complete deliverance.

Story 699 · The Word as Brahman

After the death of his younger brother, the elderly poet Vinaykant Mishra is so troubled by the inadequacy of words that he stops writing. Words such as "simple man", "water" and "good" seem incapable of expressing the whole truth of a person or an experience. His wife Janaki's everyday conversations—about lentils burning, recognising a cup, or telling their daughter about someone's health—show him that language does not say everything at once: people ask questions and carry meaning further. Listening to readings of older poetry, he re-examines his former convictions. Eventually he accepts empty spaces in his new writing, understanding that being limited is not the same as being worthless. The possibility of writing again opens before him, although he finds no final resolution to his doubts.

Story 700 · Impermanence

Sudha Devi's old house has become unsafe and is being demolished to make way for a new one. Every blow of the hammer returns her to memories of marriage, children, death and the daily labour of a lifetime.

Her son Madhukant and granddaughter Mrinal preserve traces of the old house, but Sudha Devi does not insist that every brick or the old tulsi platform be saved. What can still be used is put to use again; what has broken is left among the rubble. Living in the new house, she knows that the pain of change is real, yet that pain cannot be allowed to suspend the life before her. She tells her granddaughter to live before turning life into a memory. The light moving across the new courtyard becomes a quiet experience of impermanence.

Story 701 · Self and Non-Self

The actor Aniruddha becomes so immersed in playing an elderly character named Damodar that he carries the man's gait, breathing and silences into his own home. His wife Arya notices how rehearsing the role has begun to alter his ordinary behaviour. The director Shekhar and a senior actress teach him not only how to enter a character's world but also how to step out of it. Aniruddha understands that an artist's private memories enter the work of acting, yet the character and the person are not one and the same. Even after the play ends, some of the character's habits linger in his memory; he no longer regards this as a cause for fear. A question from his daughter Tara makes him reflect on the meaning of the "I" that changes with time. The wavering shadow of a lamp remains a question posed to any claim of a fixed identity of the self.

Story 702 · Cause and Effect

Amid rain and erosion along a drainage channel, an old culvert in Pipra collapses. A goods vehicle crashes, people are injured, and Ramsakhi Devi dies. At first the villagers variously blame the driver's error, the rain, the workings of karma or the administration. A technical inquiry identifies combined causes: weak foundations, erosion of the soil, old cracks and the failure to carry out inspections in time. Some accusations cannot be substantiated. The panchayat records the incident, the losses and the findings separately, and makes provision for inspecting the new culvert as it is built. Voices also rise against reducing Ramsakhi Devi to a statistic of the accident. The story shows that the failure to discover the whole meaning of suffering does not make the search for its causes futile.

Story 703 · Silence

Harinath Jha undertakes a thirty-day vow of silence in the hope of listening more attentively. His disciple Sadanand treats that silence as a spiritual sign and begins interpreting it for the public. The family's distress, Parvati's practical questions and the growing publicity around the ashram reveal that silence can sometimes become an injustice committed by

withholding an answer. On the twenty-first day Sadanand claims that Harinath's silence signifies agreement concerning Ramvati Devi's land. Harinath breaks his vow with a clear "No." Afterwards he corrects the ashram's announcements and writes in his notebook that remaining silent and listening attentively are not the same thing. To renounce speech when an answer is necessary may be not spirituality but an evasion of responsibility.

Story 704 · Dream

Since childhood, Ishan has repeatedly dreamed of a mysterious bridge. As he grows older, the appearance in his dreams of a library, the following day's date and familiar people in unfamiliar circumstances makes him doubt the distinction between dreaming and waking. He keeps an account of his experiences, seeks evidence for his memories and conducts small tests with Nachiketa. Some dreams do not match actual events; some memories mingle with what he has experienced while awake. Ishan neither declares the experiences supernatural truths nor dismisses them all as false. At last he abandons the habit of giving every experience a definitive name in advance. Writing down an ordinary sentence at dawn becomes, for him, a release from the demand for unnecessary certainty.

Story 705 · Doubt

At school, Master Shailesh explains the scientific causes of eclipses and teaches the children that asking questions is not disrespectful. Yet, when the time comes for his father's shraddha rites, he finds himself caught between his mother's beliefs, traditional observances and his own rationalist outlook. In conversation with the priest Krishnamohan, he refuses to pronounce claims that cannot be established, while acknowledging the human value of setting aside time to remember someone together. He fears that expenditure, caste and coercion may be legitimised in the name of tradition. The priest, too, accepts that objectionable elements of a rite must be open to criticism. In the end Shailesh acknowledges that he does not know what effect rituals have upon the dead, while recording their importance in the experience of the living. Doubt emerges not as arrogance but as care.

Story 706 · Liberation

During the last days of the elderly Dayakant's life, his daughter Shubhada, his sons Nachiketa and Shashank, his granddaughter Ira and other relatives care for him. The pond visible through the window, memories of his wife Kamala, an unfinished letter and old family disagreements reveal the many layers of his life. Questions arise over where

and how his funeral rites should be performed, but Dayakant does not insist that his death be confined within anyone's definitive interpretation. After he dies, the household's estrangements are not miraculously erased, though conversation begins again. Shubhada seeks her own path between remembrance and the life still being lived. The story does not compress moksha into a single philosophical answer; it holds open the possibilities of letting go, accepting, and living alongside questions that remain unresolved.

PIPRA

Story 707 · Chhath

In Pipra, a proposal to divide the paths at the Chhath ghat with four bamboo poles and rope leads to an argument in the committee. Its members speak of organisation and safety, but Sukhdev Sahni and Champa raise the village's history of caste divisions and the question of equal access to the ghat. At the first meeting, too little attention is paid to women's voices and the true importance of their labour. During the crowding at the offering of arghya, a rope is untied so an elderly woman can be helped; the bamboo, instead of marking a boundary, becomes a means of assistance. When the loudspeaker falls silent, the river and the communal songs can be heard. Afterwards the committee resolves to reserve no pathway on the basis of donations or office, to include women's representatives and to protect the workers. Making the ghat belong to everyone begins to move beyond declarations.

Story 708 · Raga

After Chhath, Harihar Mahto sings an old song on the ghat at Pipra. Naina, who has come to collect sound recordings, wishes to record his performance, but Harihar asks how twenty years of practice could fit into a single minute of sound. An old cassette contains the voice of his elder sister Kusuma, whose name was omitted from the first catalogue. Naina learns the importance of recording the source, obtaining permission and preserving distinct forms of performance. As she practises, she learns Harihar's rhythm while finding a new turn in her own voice. Later that change enters Munni's singing as well. The story makes clear that saving a tradition does not mean preserving a sound in exact imitation; it means listening carefully enough, within living practice, to distinguish an error from a new path.

Story 709 · The Court

A dispute over ownership of a strip of land beside Pipra's ghat reaches the court. The story takes shape through differing testimonies. A representative

of the ghat committee recounts the history of communal use; the claimant produces documents concerning boundaries and title; Champa Paswan recalls that access to the old "public" ghat was not equal for everyone. A map made by a teacher has circulated on social media as misleading proof, and the teacher himself explains its limitations. At an inspection of the site, the river's present course, old maps, spoken memories and marks of past use yield no single, uncomplicated conclusion. The story does not impose a final decision about ownership; it reveals the difficult judicial process of establishing truth among mutually conflicting forms of evidence.

Story 710 · The Postman

After thirty years of service, Dinbandhu Paswan, the postman of Pipra, retires. Delivering letters, money orders, examination papers and judicial notices, he has carried in his memory the village's changing people, houses and roads. Letters with incomplete addresses show him how a person's life may change while the old identifying marks survive on paper. At his farewell, villagers recount small memories of his care and humanity. Dinbandhu prepares a list of delivery routes for the new postman, Vivek, but teaches him to confirm an address with people rather than merely count the houses. The next day Vivek begins searching for the true recipient of a postcard addressed to a name on an old wall. Delivering the mail becomes a responsibility towards human relationships.

Story 711 · In a Foreign Land

A labourer working the night shift abroad writes a letter to the Kamala ghat in his home village of Pipra. The ghat has no postal address, but addressing that inanimate place allows him to say things he has been unable to tell his family. Seeing Chhath on a small mobile-phone screen, and recalling the changed river, a red chair and the steps, he feels the weight of his absence. His earnings pay for the roof at home, education, medical treatment and debts, and so the date of his return is repeatedly postponed. He can find no easy resolution between his love of home and his financial responsibilities. Finally, he decides to keep the letter with him, so that when he is able to return he may see for himself the difference between the actual ghat and the one preserved in his memory.

Story 712 · Doom

During a flood on the Kamala, Sumitra prepares to protect her home and her nine-year-old son Neelu. The water rises, and Neelu disappears; his body is never found. On official papers he is "missing"; in the speech of the villagers he has "gone in the flood"; in his mother's life his absence bears another meaning altogether. Sumitra goes on with the daily labour of

mourning: washing soaked clothes, clearing mud from the house and looking after her son's belongings. When the rains come the following year, fear returns, but she does not abandon practical preparations against the water. Her son does not come back, yet her life does not stop at a single conclusion. In the lantern light she clears the drain and measures out rice for the next morning's meal.

Story 713 · The Ghost

Driving his rickshaw at night, Jagdish repeatedly takes a woman wearing a grey veil to an old temple. She vanishes behind the steps, and the village quickly begins telling a ghost story. People add a face, a sari and an old death from their own imaginations, while Jagdish insists on recounting only what he has seen. He examines the path to the temple and its possible exits, finding a few ordinary clues, but cannot establish the woman's identity. Even after her visits cease, the rumour continues. Jagdish refuses to use the word "ghost" to pass judgment upon events he has not witnessed. He trusts the limited reach of truth as he trusts the small lamp on his rickshaw: it can illuminate only so much of the road.

Story 714 · Master Sahib

Jagannath Mishra, a teacher at Pipra High School, retires after forty years of service. On his last day, former pupils bring before him differing memories of strict discipline, fairness, mistakes and affection. One recounts a humiliation; another remembers how his teaching supported a life. Jagannath Babu understands that a teacher's influence cannot be measured only by a syllabus or examination results. When the clock presented by the school is hung at home, time takes on a new meaning: the sequence of bells and attendance registers has ended. The following morning he picks up his bag out of habit, but it now holds some essential papers belonging to a former pupil. His retirement does not bring to an end his journey of learning and working for others.

Story 715 · The Painter

Urmila Devi of Pipra paints mobile towers, bicycles and the red chair at the Chhath ghat alongside the traditional fish and lotus motifs of her Mithila paintings. When her work reaches an exhibition in Delhi, she discovers how its presentation, the proper crediting of her name and the covering of its margins can change its meaning. Amid commercial expectations and demands for repetition, she explains that she can paint the same subject again, but cannot reproduce her first experience exactly. Through her conversations with her daughter Rupa and the organiser Ira emerge both the artist's rights over her work and the differing perspectives

of those who view it. In the end she begins a new painting of the ghat at night, with an empty chair and a distant red light. Still free from the demands of the market, it remains an unfinished journey of her own vision.

Story 716 · The Return

Twenty years after leaving, Renuka returns to Pipra upon the death of her father Devkant. Conflicting stories have long circulated in the village about her decision to leave the family home after her marriage. Her brother Arun, her sister-in-law Meena and her nephew Anshu receive her return through their separate fears, questions and memories. Matters of a share in the land, care of the house and old documents arise, but Renuka refuses to have her life confined to an explanation prepared by someone else. Before going back to the city she gives Anshu the key to a room: the key is in his hand, but responsibility for its use belongs to everyone. Anshu comes to understand that his aunt's relationships involve legal shares, a sense of place and her choices in her own life. No single word can encompass an entire human being.

Story 717 · The Boat

Eager to cross to the other side of the river, Gopi and Jhunki build a raft from banana stems. Rather than understand why the adults have forbidden the crossing, they set off into the current on their own. The water near the bank seems easy to negotiate, but in midstream their bamboo pole no longer reaches the bottom and the raft begins drifting away. After fear and struggle, Jabbar and the boatman Bisun bring them safely back. Their friends want a thrilling account, but Jhunki will not decorate the river's real dangers with an imaginary crocodile. Bisun teaches them about a proper boat, load, oars and currents. They name their raft "Come Back Again"—not to celebrate reaching the other bank, but to recognise the greater meaning of returning alive.

Story 718 · Chhath Once More

At the following Chhath in Pipra, changes learned from the previous year's dispute at the ghat have been put into practice. The old bamboo barriers have gone, a passage for assistance has been made, and women's representatives take part in decisions. But after the death of Badri Kaka, his red chair raises new questions about remembrance and public use. Should it remain empty, or should a tired person be allowed to sit on it? This small disagreement reveals the distance between grief and practical need. Fresh difficulties arise over the loudspeaker, cleanliness and assistance, but this time people find solutions more quickly. In the end the chair returns home

and the ghat resumes its ordinary uses. Change is neither complete nor a proclaimed victory; little by little it finds its place in daily conduct.

SAMAPANIKA

Story 719 · Videha

In an old chest in Jagadamba Devi's house lie names, letters, memories and fragments of unfinished writing. Naina and Anupama consider connecting this private collection with the voices of other people, but recognise the dangers of displaying suffering, publishing testimony without permission and treating an archive as final truth. The word "Videha", written on an old empty envelope belonging to Devnath, becomes the name of a new publication. His unfinished dream is not turned into a compulsory inheritance. Many people contribute their experiences, make corrections, and withhold permission for certain things to appear in print. Issues of Videha are published with the variety and disagreements of local life intact. Naina deliberately leaves a page of the next issue blank, preserving room for the consent and individual voice of whoever may speak next.

Smritik Dosar Dis

The Other Side of Memory

Stories 1–98

Story 720 · Two Janakpurs

After Kamala Devi’s death, her son Amresh Jha comes to Janakpur searching for his mother’s parental home. The clues she left him and a brass key fail to reveal the house’s address. Yet a map of the city shows, alongside the Janakpur of the present, another Janakpur that survives in memory. With help from Savitri Devi and an old survey, he begins to understand the paths of his mother’s childhood and the three different meanings of “home”. Even without finding conclusive proof of the threshold he seeks, Amresh comes to feel that a home lives on in people’s memories, relationships and voices.

Story 721 · The Forgotten Debate

Nilima Jha, a custodian of manuscripts, discovers an old scholarly debate concerning rights over a watercourse. In Kanakpur, where a dispute over land and access to water is underway, an incomplete reference in the manuscript spreads as supposed proof of an ancient ruling. On examination, Nilima finds that the debate may be an imaginary dialogue composed as an exercise for students. She explains this distinction to the village council. Phulkumari Devi, however, points out that the questions raised in the dialogue still apply to the actual dispute. The villagers turn instead to considering measurements of the land, the flow of water, the losses suffered and the responsibility for maintaining the channel together.

Story 722 · The Pond of Time

Grieving her mother's death, Mridula sees at her maternal family's pond a vision of a possible future. It shows a new life with Nachiket, but her son Aditya's place within it remains indistinct. The experience leaves her afraid to decide upon a second marriage. Janki Mami's words, and conversations with Aditya and Nachiket's family, help her understand that a glimpse of the future is not a final truth. Respecting the wishes and apprehensions of both children, she proposes that they build a shared life gradually. When she returns to the pond, she stirs the water. She has decided not to watch the future unfold, but to take part in making it.

Story 723 · The City of Letters

City planner Nirupama Karn is charged with preparing a clear map for the book fair in Siddhapur. Modern street numbers and directional signs prove inadequate to the old city's intricate network of lanes. From her father Hemkant's recollections of routes and languages, Nirupama learns that the same city opens through different ways of speaking in Maithili, Hindi and Nepali. She devises multilingual signs, and every group taking part in a trial reaches its destination. Yet a child shows her a narrow passage that her map has overlooked. Nirupama comes to understand that no map can encompass every possible experience of a city.

Story 724 · The Final Commentary

While tending the damaged pages of an ancient work called Pramana-Viveka at a manuscript conservation centre, Raghunandan Sah finds a thin strip that everyone has regarded as a later commentary. Examination of its paper, ink and wording suggests that the question written on the strip may predate the main treatise. If so, the accepted relationship between the original work and its commentary is reversed. Rather than impose a definite conclusion, the scholars acknowledge the limits of the evidence available to them. At an exhibition, the strip is granted significance in its own right, and its question invites readers to reconsider where a line of thought begins.

Story 725 · The Map That Kept Growing

Historian Ramapati Jha is commissioned to draw a historical map of settlements along the Kamala River. A map made from government records proves incomplete beside local memories, the river's changing course, displaced villages and the old paths taken by women. As he adds layers of evidence and time, the map grows continually larger. Ramapati prepares an introductory map and a detailed chronological panel, preserving the distinction between written records and people's experience. At the museum a child asks what comes next. Ramapati leaves a blank strip for evidence the future may yet bring.

Story 726 · One Writer, Two Births

Anagha Karn's award-winning story, Rekha, is accused of borrowing its words from a Tirhuta text two hundred years old. An investigation reveals intricate connections among her grandmother's notebook, oral tradition and an old tale by Govinddas. Although the words are alike, the older text presents Dhaneshwari's action as a warning against transgressing social boundaries, while Anagha sees it as preserving a path and a relationship. A public reading brings forth differing interpretations from the audience. The

story offers no easy answer to the question of literary ownership: the same words acquire new meanings when time and perspective change.

Story 727 · A Dictionary of Memory

The elderly lexicographer Malati Mishra has devoted her life to preserving Maithili words that are falling out of use. While writing the meaning of osara, the veranda, she finds her memories of her parents growing dim. Old examples entered in her notebook do not always agree with what she remembers now, making her question the reliability of memory. Her granddaughter Ira advises her to record the changing recollection instead of erasing the earlier line. At last Malati understands that a word lives not merely in a dictionary's definition but in people's unselfconscious speech. When Ira sits on the veranda and remarks how pleasant the breeze is, Malati experiences the pleasure of a word being lived.

Story 728 · Chapter Zero

Sudha Jha, of the district library, discovers a concealed 'Chapter Zero' in a novel called Twelve Rooms. Its clues compel the reader to ask where an event truly begins. Reading the novel in different sequences, Sudha and Nachiketa arrive at different understandings of the actions of its character Sarita. Meanwhile, Sudha and her sister Seema are at odds over their mother's death and family papers. Considering the events in a changed order, Sudha realises that the point is not to pronounce someone innocent, but to examine one's own assumption about the first cause. She allows a new reader to begin the story wherever her own question begins.

Story 729 · The Copyist

Sudhindra Das, a copyist in a centre for preserving vernacular manuscripts, is assigned to transcribe Ramdulari Devi's The Song of Seven Courtyards. Seeing many interventions, uncertain letters and later corrections in the old manuscript, he realises that even the 'original' has a history written by many hands. His inclination to make a clean copy can sometimes turn a doubtful word into a certainty. He could fill in an almost-erased line on the last page by conjecture, but chooses not to. At the exhibition he leaves the incomplete passage exactly as it is. In responsible transcription, refraining from writing can itself be a way of protecting the truth.

Story 730 · A Third History

Manikant Mishra is entrusted with writing the inscription for a centenary memorial to Belwaghat's 'Night of Grain' during the famine of

1927. Two familiar accounts of the incident, when grain was brought out of a storehouse, assign different heroes and different motives. Examining an old play, local recollections and account books, he finds that later narratives have influenced one another. Acknowledging that he cannot establish everyone's part with certainty, he chooses to inscribe only what the evidence confirms: people gathered, and grain was brought out. The story locates historical integrity in the preservation of uncertainty.

Story 731 · The Translator

Translating a sentence from a Persian letter into Maithili, Nasim Ara struggles to convey the relationship between home, distant lands, a threshold and changing speech. From 1983 through the decades that follow, she chooses new words repeatedly; experience, family conversations and the pronunciation of successive generations challenge her earlier versions. When the translation is published, she presents several versions of the same sentence, made at different times, together with the reasons for her decisions. Young readers find further meanings, and Nasim arrives at a sense of claiming the 'voice that has returned' as her own. She refuses to call this version final, for both language and home remain in motion.

Story 732 · The Nameless Deity

Collecting folktales in Kachnariya, Vibha Jha hears a story of a deity whose name the storytellers deliberately do not utter. At first she regards the silence as missing information. After Devnath tells her the name in private, she understands that the collective tradition gives meaningful space to the pause where the name would be. A schoolboy, Neel, continues the tale and follows the custom of falling silent at that point. Vibha preserves the pause in her sound recording but does not fill in the absent name. The story reveals the relation between safeguarding communal memory and respecting its confidential boundaries.

Story 733 · The Pathway Through Time

Nilima returns to Sirsiya to divide ancestral land with her brother Shekhar, only to disagree with him over rights to an old footpath. Walking along it, she experiences scenes from different times: a flood, her mother's struggles and relationships from childhood. Through this passage across time she understands that a path is not merely a line drawn across land, but a common life sustained from generation to generation. Back at home, she admits to Shekhar that their memories of the past differ. They move the boundary stones of their respective shares slightly, leaving enough room for two people to walk side by side.

Story 734 · The Lineage of the Mirror

Madhavi Jha, a keeper of genealogical registers in Saurath, is asked to examine the compatibility of two lineages for Kaushiki's marriage. A reference to a 'mirror' in an old register entangles the history of blood ties, shelter and people who have been taken into a household. The dispute reaches beyond the marriage to rights over an old orchard. Madhavi refuses to treat an ambiguous mark in the records as conclusive proof of either descent or property. Listening to the memories of elderly relatives, she records the differing accounts and distinguishes an image of kinship from blood lineage. In the end, a three-panelled mirror becomes an image of human bonds formed through responsibility, companionship and refuge.

Story 735 · The Invisible Book

Renuka Karn is asked to find the original copy of a supposedly ancient book called The Shared Lamp. It is often quoted, but no one possesses the original manuscript; its author, date and textual form are disputed. Comparing quotations in notebooks, school booklets, household registers and research papers, Renuka concludes that there is insufficient evidence to reconstruct a single, coherent original work. She opposes publishing a conjectured text under the name of the original, and sets out the source and uncertainty of each quotation separately. An empty glass display case at the exhibition becomes a symbol of the necessity of acknowledging the limits of evidence.

Story 736 · The Seventh Direction

At a centre for local memory, Anuja Jha discovers a map called The Seventh Direction. Its red lines do not mark physical distances; they indicate ways of passing from one memory to another. Smells, voices, families and forgotten places lead different people along different sequences. While preparing an exhibition of the map, Anuja rejects a suggestion that an extra arrow be drawn to show the 'seventh direction'. Following the memory of her sister Meera from childhood to the sound of her present-day voice, she experiences how memory does not carry us only into the past. It can also bring us back to a relationship that remains alive.

Story 737 · The Last Reader

An old public reading room in Sonbarsa burns down, and Raghupati Mishra, who has read there all his life, tries to rewrite its books from memory. When surviving copies are found, however, many of his remembered stories prove different from the works themselves. Raghupati, Madhavi and a younger generation of readers consider the difference

between an original text, recollection and fresh creation. The reading room reopens, and Raghupati chooses to regard what his memory has produced as a new book rather than a copy of a lost one. Reading alongside the young woman Neha, he understands that a tradition of reading has no final reader.

Story 738 · The Incident at the Pond

At the newly built ghat of the Baraila pond, the adolescent Gunja slips and falls into the water. Munna Paswan pulls her out. Afterwards, differing stories circulate in the village about Gunja's carelessness, unfinished construction, a red cord, the contractor and local opposition. As the village council investigates, it becomes clearer which details were witnessed and which were merely inferred. The landing was unstable, there was no effective barrier, and several small decisions had combined to increase the danger. Rather than identify a single culprit, Gunja considers it necessary to understand the full circumstances of the accident.

Story 739 · The Night at the Royal Court

A fire in the old court at Ratanpur is described by the official history as a 'conspiracy of outside troublemakers'. Archana Jha, a newly appointed archivist, searches for the basis of that conclusion, examining accounts from soldiers, the women's quarters, priests, merchants and the royal chronicle. Each witness had a different vantage point, interest and limitation; none can establish the cause of the fire alone. Archana replaces the old accusatory plaque with one that acknowledges the disputed cause, and makes room for several voices in the exhibition. Simply gathering every source does not, by itself, produce a complete and undisputed truth.

Story 740 · The Stolen Idol

When an idol disappears from the Bhuvaneshwari shrine at Amarahi, questions of faith, security and standing arise alongside accusations of theft. The watchman Baldev Paswan at first conceals the twelve minutes he was absent from his post, but later finds the courage to tell the truth. The investigation uncovers an earlier repair to the idol, a craftsperson's recollections and the differing interests of those involved. Even after the idol is returned, suspicion and hurt do not vanish at once. Arrangements for protecting the shrine are changed to recognise the watchman's basic needs as well. The story exposes layers of labour, poverty, error and collective responsibility beneath the question of faith.

Story 741 · The Shot at the Border

Near the border at Rekhapur, a boundary stone has shifted. Taking the farmer Sadanand for a threat, the soldier Arun Tamang fires a shot. Accounts given by soldiers, the farmer, officials and a girl named Rani do not fully agree about a drain, the field, a pipe and a shouted warning. The inquiry establishes that the stone was not in its original position, and that feeling afraid is not proof of an actual threat. Compensation is granted, the boundary markers are corrected and training is changed, yet disagreements about what happened remain. The story examines the distance between remembering a procedure and the event itself, between hearing and reporting, and between a border and the land being farmed.

Story 742 · The Wedding Dispute

Although the wedding canopy for Madhavi and Saurabh has been prepared, disputes arise over money changing hands, employment, where the couple will live after marriage and the expectations of their families. The bride and groom, their mothers, a friend and Kaushalya, the intermediary, give different reasons for what has happened. Madhavi's concern is not merely the sum involved but equal participation in decisions about her life. Saurabh cannot resolve his obligations towards his mother and the question of a new home. After the wedding is postponed, they acknowledge their uncertainties in letters. The interruption of a complicated relationship cannot be explained away by a single rumour.

Story 743 · The Flood Boat

During the flood in Belahi, a relief boat called Mukti capsizes. Asked to account for the accident, the boatman, a teacher, a contractor, a passenger and an investigating officer emphasise different failures. Too many passengers, sacks of grain, inadequate repairs, a strong current, a sudden turn and the absence of another boat all have an effect. Blaming one person's decision cannot explain the whole danger. In the next flood, attention is paid to the boat's capacity, life jackets, a second boat and discipline among passengers. Travelling safely under the new arrangements, the frightened Tara begins to understand what collective safety means.

Story 744 · The Painter's Death

Twelve years later, the death of the painter Nachiket Mishra remains a mystery. Before the family house is sold, his daughter Ira examines unfinished paintings, an old platform and the diaries kept by family members. Accident, suicide, an unsafe platform, a quarrel and exhaustion each have indications in their favour, but none is supported by decisive

evidence. The art world wants to turn the artist's greatness and death into a sensational story. Ira acknowledges the limits of the sources, recognising that four diaries do not reveal four deaths but four people's perspectives. The story confronts the ethical danger of passing hasty judgment on the life of someone who has died.

Story 745 · The Old Lawsuit

Historian Anamika Mishra investigates an old land dispute over Bariyar Patti between her own family and the Mandal family. A court judgment, an old survey, patterns of cultivation, a footpath and oral recollections each suggest a different kind of right. She acknowledges that her family's interests influence her own perspective. In her notes, she separates what each source says from its evidence and limitations. The legal conclusion of the old case has not erased memories of how the land was used socially. Recording the boundary post, pathway and tree stump under separate headings, Anamika shows that a single line cannot contain the whole history of a landscape.

Story 746 · The Night of the Fair

Twenty-four-year-old Manjari Karn suddenly goes missing at the Basaha fair. At home and in the village, rumours multiply: kidnapping, love, elopement and fear of marriage are all proposed as explanations. As the police and her family search, evidence from a bus, a lodging house, identity papers and eyewitnesses gradually clarifies her journey. Manjari left home to make decisions about her work and her life, but even the fragmentary letter she wrote does not disclose her whole state of mind. After her return, she keeps the letter, without treating it as the 'complete story'. The narrative reveals the clash between a woman's autonomy and other people's desire to decide what her life means.

Story 747 · A Tale of Heroes

Preparing a joint cultural performance about an old conflict at Kajraghat, director Aditi Kumari finds two villages singing mutually opposed heroic ballads. In one tradition Veernath is the hero; in the other, Harikesh plays the central part. The same action is bravery to one side and wrongdoing to the other. Aditi does not alter the songs to manufacture agreement. Instead, she presents both versions and makes their contexts clear. Since the historical evidence is limited, the performance honours two traditions of heroism rather than glorifying a single figure. The story shows how changing versions of folk songs participate in the making of heroic memory.

Story 748 · The Last Meal

Devaki Devi announces that she is considering giving part of her property to a girls' school. After disputes arise within the family, she dies on the night of a meal, and traces of poison found in the chutney deepen suspicion. The inquiry raises questions about contaminated ingredients, medication, health, inheritance and family quarrels, but finds no conclusive evidence of a crime. Later the family reaches an agreement over the orchard, house, storehouse and other rights. Years afterwards, when they gather again for a meal, Devaki's chair remains empty. The living impose their separate explanations upon an unanswered death, but none of those explanations is the whole truth.

Story 749 · The Poet and the King

Researcher Ira Jha encounters conflicting accounts as she investigates why the poet Harinath was exiled from the Sonvarsha court. Poems, letters, a rival's complaint and a royal order all lend the event different meanings. An old draft shows that several accusations were under consideration at court, but it remains uncertain which of them the king accepted as true. Ira distinguishes the event from the explanations made afterwards. She sees that power influences whose account is heard most loudly, yet facts resist sufficiently to prevent history from becoming arbitrary. The poet's exile becomes a struggle over the ownership of meaning.

Story 750 · The Accident at the Bend

Anil Mishra is injured when a car and a bicycle collide at the Navlakha bend. The crucial eleven seconds are missing from a surveillance recording, and arguments grow over the accounts of the driver Suresh, the witness Kamli and others. News reports and rumours fill the incomplete view to suit their own purposes. An investigation brings out the combined roles of the road's design, a stationary vehicle, signs, speed and restricted sightlines. Safety improvements are subsequently made at the bend, but the missing eleven seconds are never recovered. The story exposes the need for caution before gaps in evidence and the limits of placing all blame upon a single person.

Story 751 · The Prize for a Lie

A dispute over originality arises around the prize-winning story The Voice of the Soil by Arunesh Mishra. Questions concerning credit for post-flood folk songs, source texts and editorial material bring the roles of the writer, editor and research assistants under scrutiny. Examining his earlier writing, Arunesh himself acknowledges an error in quotation. Public debate moves beyond the opposing portraits of a blameless great author and a

literary thief, revealing instead the interwoven claims of influence, translation, memory and shared labour. Arunesh places a list of sources and an admission of error alongside his award. He comes to see that acknowledging another person's contribution does not diminish what is his own in a work.

Story 752 · The Fire in the Village

Sugiya Devi's house burns down in the southern hamlet of Simariya. Speculation spreads through the village: a spark from an electric wire, ashes from the hearth, burning leaves, or deliberate arson connected with a land dispute. The inquiry cannot establish where the first spark arose, but it does identify the causes of the fire's rapid spread: defective wiring, narrow approaches, a shortage of water and delayed relief. Sugiya's granddaughter Rupa writes an essay calling not only for the culprit to be found but also for the system to be improved. Sugiya reminds her that not everyone's voice is heard equally. Disaster and social power are inseparable in the account that emerges.

Story 753 · Across the River

As the waters of the Kamala recede, remains resembling ancient stone steps emerge. One group calls the site a temple, another a Buddhist-era landing place, and a third claims it belongs to the Jain tradition. Researchers and local boatmen examine the evidence and find that the crossing may, over different periods, have served travel, trade, worship and journeys of other kinds. No single religious identity, however, can be established. A new bridge is built, yet the boats continue to ply the river. Crossing it, Anamika reflects that "this bank" and "the other bank" depend on where one stands. The river's shared history cannot be confined within one claim.

Story 754 · The Mason's Fall

At the construction site of Samriddhi Sadan, the mason Budhan Sada warns of a cracked bamboo pole and a waterlogged joint in the scaffolding. No effective precaution follows; he climbs the dangerous structure, and an accident occurs. The inquiry uncovers the distinct decisions made by the manager, engineer, clerk and labourers. A worker's supposed "free choice" cannot be understood apart from the demands of earning a living and the unequal relations of power. After the accident, inspection procedures, written stoppage orders and safety supervision are changed. Budhan's family cannot be relieved of its suffering. Yet to speak of collective responsibility is not to erase the particular responsibility borne by individuals.

Story 755 · The Old Photograph

While emptying a house, Nilam Jha finds an old photograph. Different families identify the young man at its centre as their own ancestor or relative. Examining several copies, the names written on the back, old journeys and family recollections only deepens the uncertainty. Nilam realises that a photograph can travel into many households and be given different names by succeeding generations. It bears witness to someone's presence but cannot, by itself, disclose that person's name, kinship or circumstances. In the end she leaves the question mark on the reverse untouched, accepting uncertainty as an honest part of the evidence.

Story 756 · The Voice in the Night

On the night before their old mansion is to be sold, members of the Jha family hear an uncanny sound in the darkness. To one it seems a summons; another hears the name of a dead relative. Old silences and feelings of guilt stir within the family. Nachiket traces the course of the noise and discovers how walls, passages and the courtyard might alter its sound. Bricks alone, however, cannot explain why everyone heard different words in the same voice. When the mansion is demolished, the sound changes, but memory does not. The account holds together the architecture of a house and the history of the mind in the making of what people hear.

Story 757 · Whose Fault?

After the death of fifteen-year-old Aditya, a school pupil, news reports and messaging groups begin circulating the names of his teacher, father and friends as people to blame. His diary, academic pressure, an inadequate counselling system and his classmates' conduct all become subjects of inquiry. The investigation does not identify any one person as the cause of his death. It does, however, call for changes in teachers' public remarks, support arrangements and failures of communication. The grieving family begins to understand the difference between assigning blame and accepting responsibility. The story turns towards a shared duty to speak carefully with other students in distress, to notice their silences and to offer help in time.

Story 758 · The Scent of Makhana

Roasting makhana in her new home, Madhavi remembers her mother's voice and the kitchen of her childhood home. At first she hesitates to prepare food in her marital household in the manner her mother taught her, but her mother-in-law honours the taste. A box of makhana sent from her parents' home is shared with the family and neighbours. Little by little, what was learned in one household enters the daily life of another. Madhavi discovers that she need not distance herself from her husband's home to

preserve the memory of her parents' home, nor erase an old fragrance to find a place in the new one. The scent becomes a bond between remembrance and a growing sense of belonging.

Story 759 · The Yellow Flower

Anamika, daughter of the domestic worker Sushila, tends the garden at Revati Chaudhary's house. She is especially fond of its small yellow flowers, yet praise for the garden's beauty seldom includes either her name or her labour. A photographic exhibition and her experience of tending the plants lead her to think about her identity, wages and right to make decisions. She has her responsibilities put in writing and refuses to let her work remain invisible. In the final photograph it is her face and earth-stained hands, rather than the flowers alone, that can be seen clearly. The yellow blossom comes to signify the dignity of labour and her recognition of herself.

Story 760 · The Luncheon Table

Four old friends gather for lunch at Prabha Jha's house. Beneath the easy conversation and familiar affection, differences in income, profession, domestic work and social standing gradually become apparent. The presence of the domestic worker Rama and her daughter Kajal makes visible the labour that usually goes unseen in the dining room. The meaning of advice, scholarship procedures and offers of small assistance changes according to each woman's circumstances. Prabha begins to reconsider the time and rights involved in the work done in her home. Even at a table set with friendship and laughter, the marks left by inequality of labour, class and opportunity remain.

Story 761 · Kajal

On her first day at school as a history teacher, Ira lines her eyes with kajal. Her grandmother, Sharda Devi, draws the line for her and remembers her own unfinished attempt at teacher training in her youth. Their conversation brings to light the hopes of two generations, lost opportunities and the courage required to choose one's path. After Ira leaves, Sharda puts kajal on her own eyes for the first time in years. One line is slightly crooked, but she does not wipe it away. A beginning made by the younger generation can awaken in the older one a renewed consciousness of its own life in the present.

Story 762 · The New Curtain

Arati Jha hangs a new, light curtain in the sitting room and gives the old one to Savita, who works in her household. Savita cuts the heavy fabric to fit her smaller home, where a curtain matters not only as decoration but also

for air and privacy. When a photograph is taken of Arati's new curtain, Savita's hand appears unintentionally in the frame. Arati later chooses to acknowledge her presence rather than remove it. Savita comes to see that a curtain is not merely something that conceals. It also raises the question of which parts of life are shown, and whose labour is kept out of sight.

Story 763 · Fragrance

A small bottle of perfume given to Nilima by a colleague in Delhi suddenly calls up the old courtyard of her village, Pipra. She wears the scent repeatedly, but each time a different image rises before her: a school, a wedding, a hospital, or sometimes nothing at all. Returning to the village during her mother's illness, she encounters the courtyard's present fragrance. She understands that memory is not a fixed house sealed inside a bottle, but an experience transformed by the mind and body as they live in the present. In the end, instead of trying only to recover the past, she accepts the scent of the present as well.

Story 764 · The Silver Bowl

At Manjari Devi's house, silver bowls are reserved for distinguished guests. In the name of taking proper care of them, she refuses to entrust them to Parvati, who works in the household. Conversations with her daughter-in-law Sumedha, together with the habits of daily life, lead Manjari to question a tradition of mistrust inherited from her mother's time. Realising that the value of an object and trust in a person are different matters, she gives Parvati responsibility for the bowls. This small change suggests a different regard for domestic labour and the worker who performs it. What matters more than the sheen of silver is the fading of a suspicion passed down with the bowls for years.

Story 765 · Drying Their Hair

After the rain stops, Kiran and her elder sister Mrinalini dry their hair on the terrace and speak about marriage and independence. A proposal has been made for Kiran, but before consenting she wants clarity about work, where she will live and her right to make decisions. Mrinalini recalls how, in her own marriage, she mistook her family's "yes" for her own. With her sister's support, Kiran is able to speak separately with Abhishek, yet even after the meeting she does not decide at once. Like hair still partly wet, this unsettled interval is not a failure to be complete, but a natural process through which a decision takes shape in its own time.

Story 766 · White Flowers

Returning from the funeral rites of her aunt Sushma Devi, Ragini notices the beauty of white flowers along the road and feels guilty for seeing beauty in the midst of mourning. Her mother, recalling an earlier bereavement, explains that the body's sensations and the mind's sorrow do not always move in the same rhythm. Ragini brings orange flowers, her aunt's favourites, and only then begins to weep. Later, living flowers, her aunt's laughter and tears return together in memory. Rather than prescribing a single correct way to behave in grief, the story allows different feelings to exist side by side.

Story 767 · A Small Party

Fifteen-year-old Sonali accompanies her mother Sushila to help at a wealthy family's "small party". Amid the birthday decorations and presents, she sees the children's delight, yet also feels her distance from their world because of the work she and her mother do. Sonali loves drawing, and her picture of the party gives the kitchen, broom, water and working hands no less space than the cake and balloons. The mistress of the house pays her separately for the drawing. Sonali understands that a celebration takes its shape also from the labour of those usually left outside its picture.

Story 768 · The Silk Dupatta

Sudha, a history teacher, buys herself a violet silk dupatta, but a male colleague's comment at school makes her hesitate to wear it. Talking to her daughter Ishani gives her the courage to trust her own liking rather than another person's gaze. When she wears the dupatta again, compliments and ordinary routines alike become part of its life. Even when it is stained with chalk in the classroom, she no longer sees the mark as a calamity. The dupatta has ceased to be merely an attractive object bought in a shop; it has become something lived in, alongside her body, work, daughter and experience.

Story 769 · Rain at the Window

One rainy afternoon, Rama asks her husband Arvind to make tea for her. This seemingly ordinary request opens a conversation about the division of work established over many years, and about the teaching profession Rama abandoned. Arvind had never explicitly forbidden her to work, but concern for the house, children and responsibilities had steadily pushed her aspirations aside. After their conversation, Rama takes out her old certificates and begins teaching neighbourhood children. Arvind also learns to support her. On another rainy day, Rama finds it equally easy to

decline a cup of tea. The story discovers in marriage the importance of listening and leaving room for another person's answer.

Story 770 · The Taste of Lemon

Sandhya gives lemon juice to her ailing mother, Devaki Devi, and suddenly hears herself repeating the very instructions her mother used to give her as a child. The reversal of caregiving roles brings tenderness but also discomfort between the generations. The mother wishes to do some things herself, while the daughter wants to protect her. Gradually Sandhya understands that care does not mean taking every decision into one's own hands; it also means acknowledging another person's abilities. As Sandhya prepares to leave, her mother gives her lemons. Their changing sharpness becomes a way of sensing how time alters the proportions of memory and relationship.

Story 771 · The Pink Cup

At the office, a pink cup has come to belong in Madhavi's mind to her daily tea and five minutes of private rest. When she sees it in someone else's hands, she feels that even this small preference of hers has been disregarded. Conversations with a new colleague and a trainee teach her to distinguish personal wishes, shared belongings and clearly stated rights. Sameera writes her name on her own cup; Madhavi leaves the pink cup unmarked, because she can now speak openly about what she likes. One day she drinks tea from a white cup, and the five minutes are still hers. Self-respect lies less in exclusive possession than in the ability to voice one's needs.

Story 772 · The Scent of Sunlight

Kamala Devi takes a violet sari belonging to her dead elder sister Manjari from an old trunk and spreads it in the sunshine. Its smell recalls her sister's laughter, their small quarrels and memories left unfinished. At her daughter-in-law's suggestion, Kamala wears the sari herself for the first time. By evening, the older scent has mingled with that of her own living body. She realises that memory does not remain entirely unchanged, and that not every unfinished sentence between two people requires a resolution. Instead of shutting the sari once more into the dark trunk, she hangs it in her wardrobe.

Story 773 · The Earrings

Gauri, a domestic worker, buys herself a small pair of gold earrings from her savings. Her employer, Sudha Devi, is at first surprised that Gauri should have bought such a thing for herself, but their conversation makes Sudha aware of her own assumptions. Gauri's simple explanation is that she liked

the earrings. Sudha remembers the silver pair she bought with her first salary and the comments made about them at home. The two women share the right to their own tastes, although their economic positions and the balance of power between their households do not thereby become equal. Gauri must be seen as a person of independent desires and character, not merely as an emblem of deprivation.

Story 774 · Red Nail Polish

Ruchika paints her nails with red polish given to her by a friend, provoking a family dispute about growing up, propriety and personal preference. Between her parents' hesitation and her grandmother's ready support, she begins to understand her right to decide for herself. Her grandmother paints her own nails, and gradually Ruchika's mother chooses a colour too. A small change enters the family's habits. Later, Ruchika is happy on a day when she leaves her nails unpainted. She realises that freedom means not only being able to wear a colour when she wishes, but also being free not to wear one.

Story 775 · The Sheer Curtain

After surgery, a sheer curtain hangs between Anamika and another patient, Sarita, in a hospital ward. It cannot stop sound or shadow, yet it creates a necessary boundary between the two women. Each senses the other's anxiety without insisting on details of her illness. A brief good wish is enough when they part. Back at home, Anamika does not pass on Sarita's private troubles to her daughter. Compassion is not always made of searching questions; sometimes the deepest respect for privacy is to refrain from intruding, even when one has heard enough to ask.

Story 776 · Cardamom

For forty years Harinarayan Jha has complained about the cardamom in the tea made by his wife Sudha. While Sudha is away, he discovers that something is missing from the familiar taste. Old memories, household expense slips and conversations between husband and wife reveal how both liking and complaint have hardened into habits over time. When Sudha returns, each speaks plainly about wanting a different amount of cardamom, and finally they exchange their cups. The small exchange illuminates a deeper truth of married life: roles, tastes and preferences are not fixed, and living together requires listening anew, again and again.

Story 777 · The Flower Vase

When an old glass flower vase breaks in Shailaja Devi's house, family members begin blaming one another. Eight-year-old Ira notices different

parts of the incident—the breakage itself, the unsteady table and the flowers that had already wilted—while for her grandmother the vase holds fifty years of history. The family pieces the fragments together and repairs the table leg as well. The mended vase can no longer be used quite as before, but it has not lost its meaning. The child learns that each person sees only a part of what has happened; even the combined experiences of grandmother, mother and child cannot be contained in a single way of looking.

Story 778 · The Dried Kamala

A seventy-eight-year-old narrator returns to the abandoned course of the Kamala River, inwardly addressing a dead brother named Gopi. Amid altered fields, embankments, houses and people, fragments of the life they shared rise into memory. Information offered by local young people both supplements those old recollections and puts some of them in doubt. The narrator understands that the drying of one channel does not mean the river itself has ceased to exist, yet what has truly been destroyed cannot honestly be declared still alive. Taking leave of the brother in thought, the narrator accepts that, in the end, it is the living who must lift their feet and carry on.

Story 779 · A House of Sand

Subhadra Devi returns with her family to the sands of the Kosi, searching for the place where their lost village once stood. Her son Prabhakar, daughter Kaveri and granddaughter Mita remember courtyards, doorways and trees in differing shapes. The outlines of a house drawn in the sand keep changing; no one can turn a private recollection into a map accepted by all. Subhadra does not order her granddaughter to remember the story. She asks only that Mita preserve whatever stays with her naturally. The family takes away neither sand nor brick, yet many versions of the house remain within them.

Story 780 · The Sound of Bamboo

Spending one last night in his old house before its sale, Shivnath hears the bamboo rubbing together and imagines the sound of his dead father's walking stick. It awakens remorse about the night his father died: Shivnath had deliberately left his telephone call unanswered. Speaking of it to his wife Nilam, he shares for the first time a burden borne for years. He discusses with his sister and the rest of the family what is to become of the house, the bamboo and the stick. He comes to understand that the sound has its physical cause, while guilt has its own history. He can remain connected to his father's memory without confusing the two.

Story 781 · The Dusty Footpath

Returning to his village after thirty-five years, Divakar can no longer recognise the footpath he once knew, though the villagers still remember his father, Shashibhushan Mishra, by name. Elderly people, women and adolescents he encounters along the way recall different relationships, acts of work and small incidents. Divakar discovers sides of his father missing from the family's memories: a man who taught one person to write a name and showed another the way. He records many names in a notebook without calling the list a complete history. The footpath remains in use, its remembered shape continually changing; his father's name lives on, too, in the shared conduct of the village.

Story 782 · The Empty Pond

On returning to his village, Naresh finds that the pond of his childhood has dried up completely. The old people sitting on its bank still speak in the present tense of drownings, games and names associated with its waters. Naresh tries to reconcile their different accounts, but refuses to turn an incomplete recollection into established fact. As the boy Anmol walks across the dry bed, he asks questions about one of those old incidents. The pond has become a footpath where water once stood, yet the old water survives in the speech of the village. The story brings the physical transformation of a place into the same frame as the life preserved in language.

Story 783 · Erosion

The Kamala River's erosion advances towards the old burial memorials of Ramlochan's family. His grandson Avinash measures the shrinking land with a measuring tape, while Ramlochan worries about preserving ancestral memory and the dignity of the place. The family can do little to halt the river. They carry away names, old bricks and whatever else can be saved to a safer site. When the river changes its bend again, the exact location of the memorials can no longer be determined. The family will not present conjecture as fact in the name of reverence. Erosion takes away certainty along with earth, the story shows, but it need not take away honesty towards memory.

Story 784 · The Scent of Earth

The smell of wet earth in the first rain of the city recalls to Sudhanshu many memories of his dead mother. Alongside affection come old quarrels, regret and questions left unresolved at the end of her life. A conversation with his sister Shobha makes him realise that the same mother lives

differently in their respective memories. Rather than treating the scent of earth as his mother herself, Sudhanshu sees it as one possible doorway into remembrance. Where an event remains uncertain, he leaves the space empty instead of filling it with invention. In the end he remembers her even without rain: memory has become independent of the scent that first awakened it.

Story 785 · The Roofless House

Returning to his village after eighteen years, Ghareshwar Jha discovers that the roof of his ancestral house has been blown away. As he considers repairs, land papers and the possibility of selling, news reaches him of old friends, teachers and neighbours. The deaths of familiar people and the altered lives of others make him aware that, absorbed in business, he had stopped asking about the village. He does not rebuild the entire house immediately. First he saves one room, repairs the gate and arranges for its care. Even from far away, he learns to inquire about the house as it is now. Roofless, it becomes an incomplete yet possible living bond with an absent past.

Story 786 · The River Spoke

Jatan Sahni, an elderly boatman on the Bagmati, says the river calls people by name. At the landing, some hear his claim as a mystery, some as fancy, and others as a mistake of ageing ears. In the river's sounds, Jatan himself sometimes fears hearing the names of the dead, sometimes his own. Conversations with his wife Devaki and the routines of his work on the boat help him distinguish sound from fear and story. There is no conclusive evidence that the river has spoken a name at all. In the end, Jatan refuses to declare an indistinct noise a definite summons. Fear remains, but he carries on with the ordinary work of living.

Story 787 · The Ground Gives Way

During a night-time subsidence, the courtyard of Kaushalya Devi's old home sinks into the earth. As the family moves to safety, they recall the house's arrangement, the tulsi shrine, the cot and the places where old possessions stood. Dinesh, Raghav, Saroj and Mira remember things differently; Kaushalya herself acknowledges changes made over the years. Part of the old house is salvaged, and a new one is built. Mira writes down the old and new memories separately, without erasing anyone's earlier account. A house may be rebuilt in memory after its ground has collapsed, the story suggests, but memory is not the soil with which the sunken earth can be filled.

Story 788 · The Field of Kans Grass

Hearing a little girl call out across a field of kans grass, Taramani remembers Phuliya, who disappeared long ago. Villagers offer different guesses about the voice and about Phuliya's last days, but no decisive answer emerges. Talking with her niece Nilima, Taramani accepts that it would be wrong to turn every child's voice into Phuliya's. The transformed field preserves no certain trace of the missing girl. Taramani remembers her now as a child, now as a woman who might have grown old, and sometimes simply as a name. Rather than invent a reassuring ending for the unanswered grief of disappearance, the story allows that grief to remain unfinished.

Story 789 · The Dust of Tirhut

At eighty-four, the cart-driver Jagesar measures the roads of Tirhut not by milestones but by the names of dead passengers who once rode in his bullock cart. Walking with him, his granddaughter Muniya hears brief memories of those travellers: some names survive, others have been reduced to the sound of a voice. The roads are paved, and the vehicles change with time. When an acquaintance, Zahid, dies, Jagesar adds his name to the road as well. Muniya asks when her own name will be counted. Her grandfather replies that the names of the living are not counted; they are called. The story draws a distinction between remembrance of the dead and addressing those who remain alive.

Story 790 · Three Graves

Erosion by the river claims, one after another, the graves of three generations of Nasim's family: his great-grandfather, grandfather and father. Nasim, Rubina, Zainab Bibi and Aliya search for their former locations and record what each generation can remember. The family will not invent replacement sites or pretend to possess a certainty that no longer exists. They preserve the three names in a notebook, along with only the information they can establish. Even a small recollection of the father's hot tea becomes precious. Some memories may survive the destruction of a place, though there is no guarantee that everything will. The family learns to regard even the little that remains as worth keeping.

Story 791 · The Flood Mark

For years a brown mark left by an old flood has remained on the wall of Aditi's house. When repairs begin, the question of preserving it or painting over it releases differing family memories. Shanti Devi, Aditi's parents and the neighbours do not recount the rising water, rescue and relief in quite

the same way. Aditi keeps direct recollections apart from stories heard from others and details that remain uncertain. At last the wall is painted white, but the experience of the flood survives in the family's conduct and conversations. To the next generation Aditi tells only what she can establish, leaving the remaining questions open for those who come after her.

Story 792 · The Abandoned Well

Nitya, a university student, wants to learn the history of the village well that has been closed for fifteen years. Her grandmother, Kamala Devi, remembers forgotten names and incidents when she speaks of voices heard near the well at night. Nitya examines its construction, the reasons for its closure and the precautions needed to make it safe. Conversations with Sakina, Vimala and other women reveal that the well was not merely a source of water: it was also where village news circulated and relationships were sustained. Eventually its opening is covered with a secure grille. Nitya understands that not every sound must conceal a story, yet the remembered names of people can live on beyond the well.

Story 793 · The Dry Maize Leaves

The rustling of dry maize leaves in a field carries Harinarayan Mahto back to a year of famine. As he speaks with his granddaughter Chanda, memories emerge of his yellow bull Hira, Saguni Kaki, his sister Phulo and the grain shared in a time of distress. Writing down the incidents, Chanda asks how she should distinguish a death that occurred during the famine from a death caused by it. Harinarayan acknowledges the limits of what he knows and remembers the help people still gave one another. The green leaves of the new crop do not repeat the sorrowful sound. Memory, the story shows, is not only the return of suffering: it also lives in respect for food, care for animals and gratitude for kindness.

Story 794 · The Last Boat

When a bridge is built across the river, the regular passengers of the elderly boatman Ramdhani disappear. He does not deny the bridge's value: it makes reaching the hospital, school and market easier. Yet the loss of his livelihood also threatens the physical skills and identity of a boatman. With Kusum's help, he begins teaching a limited course in boating safety, while Dinkar learns from him about currents, winds and handling a boat. Gradually Ramdhani learns to offer instruction rather than row the boat himself. In the end, even sitting beside an empty boat, he no longer feels compelled to prove his existence. Change is neither simply a victory nor a defeat, but a transformation in the practice of living.

Story 795 · The Tree Stump

Passengers ask Naval, a new bus conductor, to let them off "by the peepal tree", though the official list names the stop "Eastern Square". He learns that the old peepal was felled, but its stump remains, and so does the name in everyday speech. Moving the bus stop has differing consequences for the walking route, the livelihood of tea-seller Phulo Devi and Chhotu's new shop. A fresh signboard makes room for both the official name and the one people actually use. Naval discovers that the social meaning of a place does not vanish automatically with its tree; its name continues through the journeys, memories and livelihoods of those who use it.

Story 796 · Smoke

Sitting at a tea stall, an elderly storyteller sees smoke rising from a field and remembers a morning when seven young men boarded a bus to leave the village in search of work. Their journeys, earnings, failures, returns and the waiting of their families unfold in his memory in different ways. The smoke was no prophecy of anyone's future; it merely opened a door to experiences already lived. That evening two other young men come asking about the bus timetable, and the storyteller's grandson helps them in his own way. The old man realises that the story of migration is larger than a column of smoke, and that each generation chooses new ways of travelling. He resolves to watch for fresh departures the next morning.

Story 797 · The Silent Village

After twenty-four years, Devnath returns to spend a night in his old village. While salvaging timber from the cracked walls and collapsing roof of his house, he sees locked homes, rusted padlocks and deserted lanes. At first he takes this stillness to be the silence of a dead village. Gradually he understands that many of the households' members are alive: they work elsewhere, return for festivals and keep in touch with their homes from afar. Setting aside an old doorframe before locking the house, Devnath stops supplying answers on behalf of those who are absent. The story reveals the difference between a village's empty houses and the lives that have spread beyond them.

Story 798 · Between Three Years

At sixty-eight, Anima Devi sits in her shop, Anima Writing Service, between an old typewriter and her granddaughter Neha's computer, remembering three ages of her life. At eighteen she wanted to study history; at thirty-seven she learned to accept five rupees as the price of her labour in writing for others; now she must consider selling or closing the shop. After

talking with Neha, she considers opening it two days a week, without making that her final decision. In her changing fingers, practised movements and silences she senses the shadows of the intervening years. A few memorable days, the story suggests, cannot encompass the meaning of all the time lived between them.

Story 799 · The Reason for Returning

Madhavi Jha, aged fifty-nine, returns from abroad to Darbhanga to arrange the sale of her old family home. Conversations with her brother Vinod and daughter Arya bring back the entrance examination she took at seventeen, her decision to leave home and the incomplete version of that event repeated in the family. Madhavi realises that she first sought a path for herself and only later sought a meaning for her decision. Now her chief concern is that her daughter should not inherit a false account. She explains the old episode without declaring anyone entirely guilty or entirely innocent. As she leaves, she takes a blank notebook bearing the signature of her adolescent self. Sometimes the reason for returning is not the house but an unfinished family story.

Story 800 · The Sisters

After decades apart, the sisters Mridula and Nira meet again at a school workshop on traditional crafts. They have never fully resolved their disagreement over an old embroidered vine motif and the name of its original maker. As they teach the girls to use needle and thread, the grandmother's old embroidery, the labour of many hands and a new generation's independent designs all come into view. Arushi's new triangular pattern helps both sisters see that no design remains the property of one pair of hands alone. Neither entirely abandons her own position, yet each accepts the other's presence. At the end, Mridula draws a new line, deliberately leaving parts of it open.

Story 801 · The Old Doctor

At sixty-eight, Vasudha returns with her granddaughter Ira to a lane in the old market where, as a young woman, she once met Dr Chandranath Jha. One sentence he spoke had given her courage in later life to defend her daughter's education and right to decide for herself. Looking back, however, Vasudha sees that the doctor's advice belonged to a wider life of embarrassment, her father's worries and her mother's unremitting work. Even if the doctor spoke wisely, he was not a faultless man; nor was her mother's quiet care of lesser importance. The story brings back into view the many people, kinds of labour and complexities concealed around a single remembered sentence.

Story 802 · House Number Five

A window in the northern wall of House Number Five becomes part of different women's lives over the years. An opening in Devaki's time later becomes a boundary to be closed for Chandrakala, a shelf from which Sarita sells little packets of spices, a place where Nilima's mother can talk to people in the street, and a source of air and conversation for Anamika's father. Each alteration answers a different need; the person responsible for one change may know nothing of those who made another. People living by the window give it meaning through their own uses. The history of one house, the story shows, is fashioned not by a monument or a single owner, but by the separate labour and routines of people unknown to one another.

Story 803 · The Photo Album

For Kamala Devi's eightieth birthday, her daughter Chandrima and granddaughter Anvita begin choosing pictures from an old album. The photographs are arranged not in chronological order but through unexpected connections between objects and experiences. Checking dates and events reveals the women's financial contributions to building the family home, the sister's scholarship that helped buy Niraj's bicycle, and the unfinished history of Nirmala's education and employment. Long-accepted family accounts become more complicated in the light of these memories. The final exhibition displays the pictures with brief, carefully worded captions, without altering the original order of the album. The story distinguishes drawing meaning from memory from mistaking that meaning for an established event.

Story 804 · One Decision

Twenty years later, a jar of mango pickle in the market reminds Sima of a decision made in her youth. To raise an admission fee for her studies, she had suggested that her mother, Savitri Devi, sell her homemade pickle under a store's name. The earnings made education possible, but the mother's name vanished from the commercial label attached to her work. Visiting her mother with her daughter Arya, Sima discovers changes in the pickle's taste and recognises the different sides of that old choice. She calls it neither wholly right nor wholly wrong. Arya learns to make pickle from her grandmother and writes Savitri Devi's name in her notebook. The story connects necessary earnings, recognition of labour and knowledge passed between generations.

Story 805 · A Friend's Daughter

At the town library Sarojini Jha meets Deepa, daughter of her old friend Vinita Mishra. Their conversation recalls a broken marriage proposal from forty years earlier, for which Sarojini has always blamed a single remark made by Vinita. Deepa repeats something her mother taught her: knowing the truth and knowing when, how and by whose right it may be told are different matters. After the meeting, Sarojini admits that Vinita's words, her family's reaction and her own wishes together shaped the decision of the past. Brief messages begin to pass between the two old friends again. The story replaces the assignment of blame to one person with the complexities of relationship and the responsibility of using truth carefully.

Story 806 · The Bus Stop

In Kiran Mishra's memory, a bus stop witnessed three meetings with Naren Thakur at different times of life. At eighteen Kiran deliberately missed a bus to talk to him. Many years later they met again, but although a means of keeping in touch existed, neither took the next step. At a third chance meeting, they acknowledged their separate lives and families, and their regret over questions never asked. Kiran realises that not marrying Naren is not what she regrets; what remains is only the memory of an unanswered question. Rather than turning away from her present life, she resolves to tell her husband Subhash about the encounter. The story separates the meanings of chance and choice.

Story 807 · After Marriage

Thirty years into their marriage, Sudha and Devesh must decide whether to repair the roof of their old house or move to live near their daughter Archana. Their conversation revisits moments across the decades when one decided without consulting the other, only for the other to repeat the same mistake later. Memories of a research fellowship, caring for children and managing the household reveal the weight each has carried. They write their wishes on separate sheets and read what the other has said. No final decision about moving is reached, but the question of repairing the roof becomes a shared discussion. Maturity in marriage, the story suggests, means not arriving at one identical answer but giving both people an equal place in the question.

Story 808 · Mother's Friend

Two months after her mother Saroj's death, Aparna goes to see her old friend Lila Devi. Lila recalls that the two women once shared a room while working for women's education and employment, and that they even

quarrelled over an honorarium. Hearing of Saroj's courage, mistakes, fears and small domestic habits, Aparna understands that being a daughter did not mean she knew the whole of her mother's life. Lila does not claim possession of some secret, final truth: she was a fellow traveller during one period of that life. For the first time, Aparna sees her mother not only in the familiar maternal role, but as a person with her own struggles and weaknesses. The story grants the mother's life before her child's birth an existence of its own.

Story 809 · The Letter Never Sent

Shortly before retirement, the teacher Sudha finds in her drawer a thirty-year-old letter that was never posted. At twenty-three she had written it to protest an appointment at a distant school. Later, seeing a transfer application from another teacher, Neelam, altered her understanding of that experience: personal hardship deserved recognition, but the school's needs also had to be met. Returning to the circumstances of the old school at her retirement, Sudha sees how the same letter may raise different questions at different times. She still does not send it, but she does not regret leaving it unsent either. The story explores the distance between words fixed on paper and the ethical understanding that changes within a human life.

Story 810 · Two Cities

After twenty-eight years in Delhi, Archana hesitates when a government form asks for her "permanent address". The old family house in her native Darbhanga has changed, while her Delhi home, neighbourhood and daily routine have become habits of the body. Memories of her parents, journeys between the two cities and questions from her daughter Nupur show her that belonging cannot be defined by one address alone. Archana enters the required information on the form, but continues to keep her ties with both cities alive. The story treats home not as a choice between a permanent and a present address, but as a relationship fashioned out of many experiences.

Story 811 · Twenty Years Later

Twenty years after leaving school, Mridula, Shweta, Nilima, Arun and Meenakshi meet at a reunion. The sight of their old examination room revives the incident in which Meenakshi was accused of cheating. Their accounts differ: what each person saw at the time, who remained silent, and who offered help afterwards. In Meenakshi's own memory, what has survived more vividly than the accusation is the sight of her mother's mud-stained slippers. No one is declared wholly innocent or guilty; the silence of those days matters as much as their subsequent conduct. The story closes as

they pose for a group photograph, suggesting that even a truth that exists cannot be contained in its entirety within any one person's memory.

Story 812 · At Aunt Malati's House

After thirty-two years, Sudha returns to Aunt Malati's house and discovers that the old back entrance has become the main gate. The storeroom she loved as a child is now a reading room; in her youth, it was in this very house that she announced her decision to leave for training. She has always regarded her aunt as an unequivocal supporter of that act of defiance, but a conversation with Manjari reveals a more complicated history. Just as the rooms and doorways have changed their purposes, the meaning Sudha attaches to her own decision has changed with time. Leaving through the new main gate, she accepts that change does not make her earlier experience false: it only brings its limits into clearer view.

Story 813 · The Red Trunk

While clearing an old room, Malati comes upon the heavy red trunk once again. Janaki Devi used to keep in it her tailoring measurements, thread and accounts of her earnings; later it held Malati's books, certificates and other family belongings. Now Rashmi, of the third generation, wishes to use the trunk in her new electrical-appliance repair business. Its rust and lock are repaired, but its old paint is not needlessly stripped away. Rather than calling it merely a family heirloom, Rashmi regards it as the companion of three generations of different kinds of work. The story locates the trunk's significance in its continuing use and in the labour of the women who have used it.

Story 814 · The Music Teacher

During a practical examination in electrical repairs at a women's skills centre, Shabnam Khatoon, who is short in stature, cannot easily reach the high workbench. The centre's head, Nalini Jha, remembers her music teacher Sharda Di from thirty years earlier, who had adjusted the harmonium's position to suit Nalini's height while maintaining the same standard of musical accuracy. Nalini arranges a wooden platform for Shabnam and explains to the examiner that the standard of work will remain identical, though the means of carrying it out may be adapted to individual needs. She subsequently proposes a review of accessibility and safety throughout the training rooms. The story illuminates the essential distinction between equal opportunity and identical physical arrangements.

Story 815 · Different Paths

At school Malati and Sushama had earned almost the same marks, yet their further studies and careers took them in different directions. In the ensuing years, work, marriage, family, travel and responsibilities of care entered their lives in very different forms. When they meet again, harsh things they once said about each other's choices also resurface. Questioned by Kajal and other young women of the next generation, both acknowledge that no single list of correct decisions can prescribe the course of a life. Circumstances alter the meaning of many choices; what brings relief at one time may create difficulties at another. In the end they walk in separate directions, but the different paths they have taken are not allowed to become an argument against their friendship.

Story 816 · The Missing Years

Making a family timeline with her granddaughter Aditi, Anima Jha finds herself unable to record precisely what happened during the five years from 1998 to 2003. Those years held a job, rented accommodation, childcare and the immense labour of everyday routine, yet no single dazzling event has remained in memory. The different recollections of her daughter Nilima, son Saurabh and husband Devendra bring parts of those years into view. Anima does not fill the empty spaces with invented incidents. She records two memories, of bus journeys and the household milk account, and leaves the remainder incomplete. The story shows that remembering little is no proof that time was wasted: some years survive in the lives of others and in the habits of the person who lived through them.

Story 817 · The Last Journey

At seventy-four, Shashiprabha travels by train from Darbhanga to Delhi to spend the winter with her son. A neighbour's question—'You will come back, won't you?'—calls to mind the departure after her marriage, the day she left her daughter Rachana at a hostel, and an apparently ordinary journey begun to obtain treatment for her mother Kaushalya Devi's eyes. That last journey was supposed to last two months, but treatment and changing circumstances meant that her mother could never return to the old house in quite the same way. Shashiprabha understands that what people call a 'final farewell' is seldom recognisable as such when it happens. She refuses to pronounce her present journey the last. The story conveys the delicate experience of a farewell whose meaning becomes clear only in retrospect.

Nav Pankhi

New Wings

Stories 1–20

Story 818 · Displacement in Space-Time

Dhaumya uses examples of one-dimensional and two-dimensional worlds to explain the different dimensions of space to his five students—Apala, Shvetaketu, Raikva, Satyakama and Ghosha. Treating time as the fourth dimension, they search for a way of using the curvature of space-time to connect distant points. Shvetaketu and Raikva study tunnels through space-time, Apala examines cosmic strings, and Satyakama investigates the possibility of additional dimensions. Ghosha establishes an ethical limit for the experiment: even if they reach the past, they must make no attempt to change anything that happened there.

After long and difficult work, they build an aircraft called Pushpaka. Dhaumya himself accepts the danger of its first voyage. In space, extraordinary bends in space-time and an approach to an immense black hole make distant places seem suddenly close. Yet when he observes a terrifying disparity between the passage of time inside the craft and outside it, he decides to return to Earth.

On his return, Dhaumya can find neither his laboratory nor his students. He faces the world of the year 3100, where journeys through space-time have become commonplace. Only a few hours have passed for him, but nearly a thousand years have gone by on Earth. Rather than ask whether his discovery has brought him fame, his first wish is to visit a library: he wants to know what humankind has learned in the intervening centuries. The story binds together the desire for knowledge, the relativity of time and the responsibilities of scientific inquiry.

Story 819 · A Life with Crutches

At a centre for an engineering entrance examination, former classmates Ratish and Phool meet after eighteen years. Both have brought their sons to sit the examination. Their talk while they wait begins with memories of school and moves towards the hardships Phool's family has endured. Phool speaks of the physical differences of his younger brother and his brother's wife, and of the pity and humiliating scrutiny they have faced in society. Both had wanted equality and mutual respect in marriage, not a relationship in which one was a protector and the other a dependent.

Phool's younger brother and sister-in-law have carried on with life through repeated shocks, including the births and untimely deaths of children. As he recalls their experiences, Phool says that a limitation of the body can never amount to a person's entire identity. Ratish listens to the family's story, but Phool says nothing about his own son's physical difficulties.

When the examination ends, Phool's son comes swiftly out on crutches. Although an accident has damaged the nerves in his leg, he is full of enthusiasm for science, mathematics and the prospect of becoming an engineer. In answer to Ratish's question, Phool explains that his son's interests, his habit of asking questions and his hopes for the future are central to who he is; his crutches are only one part. Rather than seeking pity for disability, the story insists upon respect, opportunity and the independent personhood of the individual.

Story 820 · I Will Not Go Abroad

Saurabh wins a scholarship to study environmental engineering overseas. His love of science makes the opportunity exciting, but as departure approaches, memories of his village, language and family, and of people struggling against floods, trouble his mind. With Lal Kaka he visits the historian Dwijendra Kaka. Dwijendra describes his scholarship and travels, but also his regret at having lived far from his native place and from a mother who waited for him. He does not condemn foreign study; he only urges that a widening education need not break the threads of human connection.

Just before Saurabh is due to leave, heavy rain falls. From the water-level gauge at school he realises that the stream is rising abnormally fast. With his teacher's help the panchayat receives a timely warning, and residents of the lower hamlet move their families and livestock to safety. Saurabh experiences directly how his knowledge can already be of service to his village.

He decides of his own accord not to leave the country that year. Enrolling at a local university, he develops a scheme for monitoring water levels and issuing warnings across three villages. He does not close off the possibility of studying abroad in the future if the need arises. The story's essential concern is not opposition to foreign travel, but the courage to choose the direction of one's life according to one's curiosity, obligations and circumstances rather than the expectations of the crowd.

Story 821 · Migration

Because of his father's transfer, Nachiketa, a ninth-standard student, moves from Madhubani to Haldia. The salty air, industrial town, Bengali language and unfamiliar school leave him feeling alone. At times he even imagines that his classmates' laughter is directed against him. In the science laboratory he befriends Tapas, who is gifted at building devices but so reluctant to speak on stage that his work receives little recognition from the group.

Together they make a model that stores energy from sea winds and gives a warning when the water level rises. At first a senior pupil, Devadatta, challenges their right to the project; then a coastal storm gives the idea a chance to prove its usefulness. Following their teacher's advice, the students do not venture outside themselves. Instead, they send local volunteers instructions for a simple warning device made from bamboo, bottles, a bell and a battery. Devadatta joins in the effort. In one settlement, an early warning of rising water helps people reach safer ground.

The joint team does not win first prize at the science fair, but receives special praise for the project's local usefulness. Tapas presents his own work, and Nachiketa gradually finds a place for himself in the Bengali language, among friends and in his new surroundings. He begins to understand that migration is not merely leaving one home: through equality, cooperation and conversation across languages, a new place too may become a home.

Story 822 · An Exchange of Fortunes

Anay, who has come to the district library for help with scholarship papers, meets Chandan Chaube. He recognises Chandan from a talent examination in Darbhanga three years earlier. Back then Anay was quiet, shy and solitary, while Chandan was cheerful, talkative and quick to make friends. That day Chandan had treated him to a samosa. Now their temperaments seem reversed: Anay takes an active part in debates, while Chandan speaks very little.

Chandan explains that after his father lost his job, he had to move house, change schools and continue his studies while helping in a shop. Repeatedly introducing himself to strangers and bearing responsibilities at home had diminished his former ease in conversation. Anay, for his part, recalls how encouragement from a teacher lessened his fear of the stage and allowed his voice to emerge. They realise that labels such as 'quiet', 'talkative' and 'shy' are not permanent definitions of a human being.

They establish an 'open table' for adolescents in the library, where everyone has an equal opportunity to speak and listen. Chandan slowly

regains the courage to voice his thoughts. On the day of the next talent examination, the two set up a help desk and watch a friendship begin between two new students. Harahari is thus not a simple exchange of two personalities, but a story of recognising people anew as circumstances change, aided by the memory of an earlier friendship.

Story 823 · The Morning Star Beneath the Pond

One dawn in the month of Kartik, Kusum, Mihir, Anshu and Richa go to observe the water and aquatic life of Tara Pond. Kusum sees a bright white point shining far down in the water. Her grandmother used to say that the morning star came to drink from this pond. At first all four friends are astonished. But when ripples from a thrown pebble break up the gleam, and lowering a bamboo pole brings up no object, their wonder gives way to questions.

Their science teacher, Malati Di, explains the difference between conjecture and what has actually been observed, and advises them to record the hour, direction and observer's position over several mornings. From different vantage points the gleam seems to occupy different places. Observing the reflection of a lamp in water in the laboratory helps them understand the behaviour of light. Finally they see Venus shining above through a gap in the trees. Its reflection had looked like a star in the depths, while the branches had hidden the planet itself from direct view.

Kusum does not reject her grandmother's folk tale; she understands its value as a memory. It may be that the pond acquired its name from the way farmers and boatmen once reckoned the hour before sunrise. The friends prepare a dawn diary recording the direction of Venus, the condition of the water and the local tradition. By teaching the difference between seeing, believing and testing, the story brings inherited lore into conversation with science.

Story 824 · The Village's Old Library

Mayank, Neha and Indranil recognise in a long-closed building at the heart of their village the remains of an old library. Neha's grandmother tells them that pupils, teachers and other villagers once gathered there to read. After its caretaker, Raghunath Kaka, died, the building deteriorated and the key was forgotten amid the panchayat's affairs, until the library closed. With permission from headmaster Sudhakar Jha and the panchayat secretary, the three friends begin looking for the key among the old records.

They find a key matching the pattern described by Indranil's father, a blacksmith, and open the lock. Inside are old registers, science books, maps, manuscripts and photographs. When the name of a young Sudhakar Jha appears in the membership register, they realise how important the library had been in forming their headmaster's interest in learning. Neha's grandmother recognises her own younger self in a photograph of former members. The three friends are now doing more than cleaning a building: they are preserving the village's memory of reading.

The panchayat repairs the roof, pupils and villagers donate books, and a rota of volunteers is organised. At the reopening, Neha's grandmother hands the first book to the youngest reader. The old lock is retained as a reminder, but the library is open once more. The story suggests that the lock of oblivion yields to memory, collective effort and continued use.

Story 825 · The Mystery of the Goat's Bell

After midnight the brass bell of Ramapati Kaka's white billy goat, Chand, is heard from the direction of the old mango grove, although each morning the animal is found tethered in its shed. The village begins talking of ghosts and unknown powers. Instead of speculating, Prachi, Neel, Vihan and Madhup examine the shed gate, hoofprints, marks left by the horns and differences in the bell's sound. With Neel's grandfather and Ramapati Kaka supervising, they devise a safe way to observe the shed at night.

The traces show that Chand has been lifting the gate latch with his horns, going out and returning on his own. Following his route, they reach the old room of Dulari Kaki. She tells them that Chand was orphaned when very young, and that she had raised him by feeding him milk with her own hands. When she fell ill, Ramapati Kaka took over his care, but Chand had not forgotten either the way back or the affection he once knew.

The gate latch is repaired to prevent danger at night, and arrangements are made for Chand to visit Dulari Kaki during the day. At school Prachi writes down the stages of their inquiry: supposition, physical traces and direct observation. The mystery is resolved not by superstition but by evidence, while its deepest meaning lies in the relation between an animal's memory and human tenderness.

Story 826 · The Book Saved from the Flood

Unbroken rain in the month of Sawan swells the river and threatens to inundate the village's old manuscript house. Ishan, Arpita, Neeraj and Sonali learn from the custodian, Vidyabhushan Jha, whom they call Pothi Baba, that old village registers, handwritten books and accounts of earlier floods

are kept in a lower room. The young people take no risks on their own; they join the rescue only with permission and proper precautions, accompanied by the panchayat's boat, Ishan's father and Pothi Baba.

With planks and ropes they slide a heavy chest towards the boat. They also save a soaked manuscript wrapped in red cloth. It contains an account of a flood written by Pothi Baba's great-grandfather, including indications of earlier water levels and safer locations. While the book is being dried at school, an old mark showing how far the water reached near a peepal tree is reported to the panchayat. Comparing this with current conditions helps them move families from low-lying places in time.

Once the flood recedes, higher shelves are installed in the manuscript house, copies are made of important pages, and the students prepare an exhibition called 'Our Village's Memory of Water'. The stains on the rescued book remain as marks of remembrance. The story shows that a carefully preserved record is not merely a relic of the past: it may become useful knowledge when danger returns.

Story 827 · The Children's Science Fair

For the school's annual science fair, each team is asked to choose a real problem faced by the village. Madhav, Meenakshi, Arindam and Saloni make two experiments from ordinary materials: a filter of pebbles, sand, charcoal and cloth for muddy water, and a small lamp powered by an old bicycle wheel and dynamo. Their science teacher, Satyanarayan Guruji, pays particular attention to electrical safety and accurate measurement.

At the first attempt a loose wire prevents the lamp from lighting; then the belt slips. The filtered water, too, is not as clear as expected. The four friends record each failure, tighten the wire, correct the wheel's position, change the layers of the filter and repeat their tests. They take care to explain that water which looks clear cannot, for that reason alone, be considered free of germs or safe to drink. At the fair they explain both the uses and the limitations of their models to everyone, from younger children to the judges.

The team does not win first place, but receives a special commendation for the 'Best Experiment for Public Understanding'. Their greater pleasure comes when younger pupils express a wish to try experiments safely for themselves. The one-day display grows into a weekly gathering called 'Science with Our Hands'. The story affirms the value of honest observation, of refusing to conceal failures, and of bringing science within the reach of ordinary people.

Story 828 · The Mango Tree Decision

The great old mango tree known as Bar Aam, standing beside the village pond, holds memories of generations, gives shade to the market and provides a home for birds. A proposal to widen the main road threatens to have it cut down. Sugandha, Anup, Shashank and Ishani do not rely on sentimental protest alone. Following their headmaster's advice, they collect evidence about the tree's girth, the temperature beneath its shade, the flow of rainwater, the birds it shelters and the ways villagers use the space.

An old map reveals an alternative route behind the pond. The road would be a little longer and drainage would need improvement, but the tree could survive. At the village meeting, the four young people acknowledge that a better road is a genuine need too. They ask experts to assess questions beyond their own competence, including the cost and the tree's health. An engineer and a tree specialist examine the proposals and approve a safe route with a bend.

The new road is built, the tree remains standing and its dead branches are removed with care. The market gathers once more in its shade; four new saplings grow from mango seeds. The decision demonstrates that development and the environment need not be treated as inevitable enemies. Evidence, alternatives and long-term responsibility can be considered together.

Story 829 · A Day Without a Mobile Phone

Aniruddha Guruji proposes that his ninth-standard pupils voluntarily spend a day without mobile phones in order to examine their habits. It is not a campaign against phones, but an experiment in attention and control over one's own time. Ishan, Lalita, Mayank, Sujata and Neel inform their families beforehand and arrange other means of contact in case of need. When Sunday comes and the phones are put away, Ishan notices how often his hand instinctively moves towards his pocket or the side of his pillow.

He hears birdsong, concentrates on his lessons and manages to put the fallen chain back on his bicycle. Lalita listens as her mother sings an old wedding song learned from her own mother, and writes down its words. Mayank and Neel, waiting for their friends at the playing field, make some equipment for a game themselves. Everyone watches the colours of the evening clouds for a while with their own eyes instead of photographing them. Yet they also recognise the phone's genuine usefulness for coordinating with friends and obtaining essential information.

The next day the students compare their experiences and agree on voluntary rules for phone use during meals, study, sleep and family

conversations. Ishan switches his phone on again, but no longer feels compelled to check every notification immediately. The story does not urge the abandonment of technology; it asks people to decide for themselves the purpose, limits and timing of its use.

Story 830 · The Boy Who Counted Birds

Every morning Madhav records the names, numbers, calls and movements of the birds around the pond and among the trees. His interest came from his grandmother, who in old age can no longer walk very far. For a school nature-observation project, the teacher advises him to make repeated counts at the same time and place. Madhav brings his friends Neel, Tanya and Lalit. Even Neel, who at first makes fun of the project, becomes eager to recognise the birds of dawn.

Observations beside the pond and in the thick orchard show that both species and numbers vary with location, weather, farming activities and the presence of bushes. Lalit prepares a map, Tanya identifies calls, and they record every uncertain identification separately as a possibility rather than a fact. Having noticed more birds near a hollow tree and shrubs in the orchard, they politely speak with the people erecting a wedding canopy. Its position is changed slightly so that the nesting area is spared.

Bird numbers fall after the wedding, then rise again some days later; Madhav refuses to draw a conclusion from a single day's figures. At school the team presents its findings along with their limitations. In the end, instead of inventing a name for an unfamiliar bird, Madhav writes down its colour, direction of flight and call. The story demonstrates the importance of patience, repeated observation and consideration for the natural world.

Story 831 · The Clay Robot

Watching his grandfather sow mustard seeds by hand along a field ridge, Nachiketa thinks of making a machine that can move through soft soil and release seeds at measured intervals. With Arya, Kanak, Udayan and Shailaja he seeks the help of their science teacher, Aparna Didi. They combine an old motor, wheels and a distance sensor with a bamboo frame and a removable casing of fired clay made on the advice of the local potter.

Their first prototype tips sideways; they adjust its wheels, weight and the thickness of the clay. In the next trial all the seeds drop in one spot, so they make a perforated strip that can be changed. When they discover that the machine cannot detect water in hollows in the field, they add a contact probe from bamboo and old wire. The group records every failure,

improvement and limitation. For now the robot is still being tested on dry ridges with only certain seeds, and it must remain under human supervision.

Even after receiving a special commendation at the science exhibition, the team continues experimenting in the grandfather's field. The potter remakes pieces of clay that have cracked, and the grandfather suggests improvements drawn from farming experience. The story presents new technology not as the enemy of older local skills, but as a tool that can develop through cooperation with them.

Story 832 · The Forest Path and the Talk at Home

On the old footpath through the forest to school, Neeraj, Sumi, Afreen and Lalit discover red marks on the trees. A paved road from the village to the market and hospital has been proposed, but the marked route would fell many trees. Their science teacher, Kalpana Didi, urges them to understand the need for a road rather than merely oppose it. The young people begin recording trees, undergrowth, streams, gradients and the ways villagers use the forest.

Raghunath Kaka, a cattle herder, tells them of an old bullock-cart track. It is a little longer, but would require fewer large trees to be cut. The blocked drain that turns parts of it to mud in the rains suggests the need to investigate improved drainage and a small culvert. Speaking with twenty households, they learn that people want a dependable road throughout the year, not necessarily a road straight through the forest. After the children present data and maps at a village meeting, engineers and forest officials are asked to examine the alternative.

Ultimately the main road is diverted towards the old bullock-cart track, leaving the forest footpath intact. The young people take on the care of new saplings and the work of discouraging litter. The forest, the story suggests, is not separate from the village: its water, soil, birds and shade are woven into village life.

Story 833 · The School Among the Branches

While reading beneath an old peepal tree beside the pond, Nayan, Megha, Ishan and Reva think of making a place to study on a raised platform among its branches. They consult their science teacher and the carpenter Bisesar Kaka to avoid harming the tree by driving nails into it. Rather than load the trunk or branches, they set four bamboo posts in the ground to carry the platform. They establish rules for limited access, a secure ladder, adult accompaniment for younger children, and closure in storms or heavy rain.

From the platform they begin studying books, birds, leaves and the water in the pond. When a nest containing eggs is discovered in the upper branches, they close the school for some days. Later they stop climbing during the birds' most active hours and move their seating area. Elderly villagers and craftspeople share their knowledge; unverified elements are recorded separately as folk memory. A different study circle beneath the tree makes room for younger children.

After a storm the platform remains standing, but nobody may climb it before an inspection. Only when a loose guardrail has been repaired does the school reopen. At the school exhibition, the students say that the greatest achievement was not building the platform, but continuing to ask questions about safety, nature and access for everyone. Beneath the tree's shade, the earth, birds, local knowledge and shared responsibility all become teachers.

Story 834 · The Girl Who Made a Sundial

Watching a shadow shift at dawn and listening to her grandmother's traditional ways of telling time, Neha decides to make a sundial. With Meenakshi, Kaushal and Ritesh she sets up a rod in the school's open field and divides the dial into twelve equal sections. But the shadow does not follow the lines they expected. Their science teacher, Archana Didi, explains the relationships among the Earth's rotation, the latitude of a place, the north-south direction and the angle of the rod that casts the shadow.

The team checks direction, adjusts the rod and marks the position of its shadow at specified times on several sunny days. They also record the absence of shadows on cloudy days and the difference between local solar time and civil clock time. A potter, Harinarayan Kaka, makes a durable slab of fired clay. Using its marks, Neha explains shadows, the Earth's movement and the changing seasons to younger children.

At the science fair Neha makes clear that a sundial cannot work at night or beneath thick cloud, nor can it show civil time accurately to the minute. The school gives it a permanent place in the science garden. Her grandmother's experience, joined to new measurements, teaches Neha that a clock displays the numbers of time, while a sundial awakens curiosity about the forces that make time's passage visible.

Story 835 · The Friends Who Set Out to Save the River

Seeing increasing amounts of plastic and other refuse on the banks of an old course of the Kosi, Meena decides to investigate the river's condition with her friends Aarav, Sonam, Tamay and Kavya. Their science teacher, Malati Didi, shows them how to keep dated records at five different

locations of the water's colour and smell, floating rubbish, aquatic creatures and riverbank plants. The group understands the limits of simple school tests and does not pronounce the entire river either safe or unsafe.

They listen to the experiences of boatmen, washerwomen, farmers and people living along the banks, and discover that the market, household drains and rainwater runoff all carry waste into the river. With support from the panchayat and adults, a safe clean-up is organised on the bank. Cloth bags and sturdy waste-collection bins are introduced in the market. Instead of trying to block a drain themselves, the young people submit written evidence to the panchayat, prompting the appropriate officials to begin an inspection.

After the rains, they plant local vegetation on a safe stretch of eroded bank and continue regular observations. Although some improvement is visible, the group does not claim that the river has become completely clean. Meena and her friends come to understand that saving a river is not the work of a single day's cleaning, but an enduring responsibility involving people's habits, local administration, scientific patience and care for the future.

Story 836 · A Map of the Moonlit Night

Curious about finding directions by the night sky, Anvi begins observing the stars with her friends Neel, Madhav, Champa and Raghav under the guidance of their science teacher, Sudhanshu Sir. With their parents they choose a safe place on the embankment beside the pond. The teacher shows them how to find the Pole Star using the constellation of the Great Bear. The first caution is that the Pole Star points approximately north, but not with absolute precision.

Anvi draws a star map on paper, but a question from her grandmother makes her realise that the sky appears to change through the night because the Earth rotates. For four weeks the group records moonlight, clouds, mist and the positions of stars from the same place at the same time. They respectfully write down older local knowledge of the sky, while clearly distinguishing it from scientific measurement. At the exhibition Anvi warns that it would not be safe to rely on this practice map for travel through unfamiliar country.

Devkant Kaka, an elderly boatman, reminds them that on the river, direction depended not on stars alone but also on the current, the wind and familiar landmarks on the banks. Anvi comes to see that a map records a moment in time, and that changing circumstances also change the limits of

its usefulness. The story joins knowledge of the heavens to evidence, caution and judgment grounded in the world below.

Story 837 · The Cheerful Watchman and the Missing Key

A brass key with a yellow cord, used for the school archives room, disappears from the bunch carried by the cheerful watchman Bisesar Kaka. Preparations for the annual book display come to a halt. Meena, Ishan, Ranjana and Tushar ask him, step by step, about his work the previous evening, without suspecting anyone of theft. A loosened metal ring on the key bunch and a strand of yellow thread caught in it suggest that the key may simply have fallen off.

Tushar proposes using a magnet, but the teacher explains that brass is not attracted by an ordinary magnet. The previous day Bisesar Kaka had placed an old wooden seat beneath a neem tree. Yellow thread is found caught on a projecting nail there. Some younger children moved the seat in the morning. Reconstructing the sequence, the group discovers the key hidden between the seat's plank and its base.

Finding the key is not the end of the matter, and the children do not simply laugh and walk away. They provide a stronger ring, a secure hook, a coloured cord and a register for signing keys out and back in. Before the headmaster they state what the incident has taught them: learn the properties of things, examine evidence before accusing anyone, and improve arrangements so that small mistakes do not recur. The story joins humour to the practice of reasoned investigation.

कथा-संसार

STORY-WORLD

एकटा खिड़कीक गमला, देरी सँ आयल चिट्ठी, साँझक बस, चाबी सौंपबाक दिन, दू कप चाय — साधारण वस्तु आ साधारण दिनक भीतर बसल असाधारण जीवन। गजेन्द्र ठाकुरक दस मैथिली कथासंग्रहक ८३७ कथाक सार एके पोथीमे — भाग I मे मूल मैथिली, भाग II मे ओकर अंग्रेजी अनुवाद।

A window-sill plant, a letter that arrives late, the evening bus, the day the keys are handed over, two cups of tea — ordinary objects and ordinary days holding extraordinary lives. Summaries of 837 stories from ten Maithili collections in one volume: Part I in the original Maithili, Part II in English translation.

भीतर : दस कथासंग्रह

कथा-शतत्रयी · खण्ड १–३
कथा-त्रिधारा · खण्ड १–३
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल
इजोत — जनम-जनमक कथा
स्मृतिक दोसर दिस
नव पाँखि

SCAN · VIDEHA WEBSITE
www.videha.co.in

SCAN · VIDEHA E-JOURNAL
videha-ejournal.github.io/videha

VIDEHA · ISSN 2229-547X

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर · सर्वाधिकार सुरक्षित

© 2026 Gajendra Thakur / Preeti Thakur. All rights reserved.